श्रीः ।

रागरत्नाकर

तथा

श्रीयुत लाला भक्तराम मेम्बर धर्मसभा जालंधरने
सज्जनोंके विनोदार्थ संग्रह किया ।

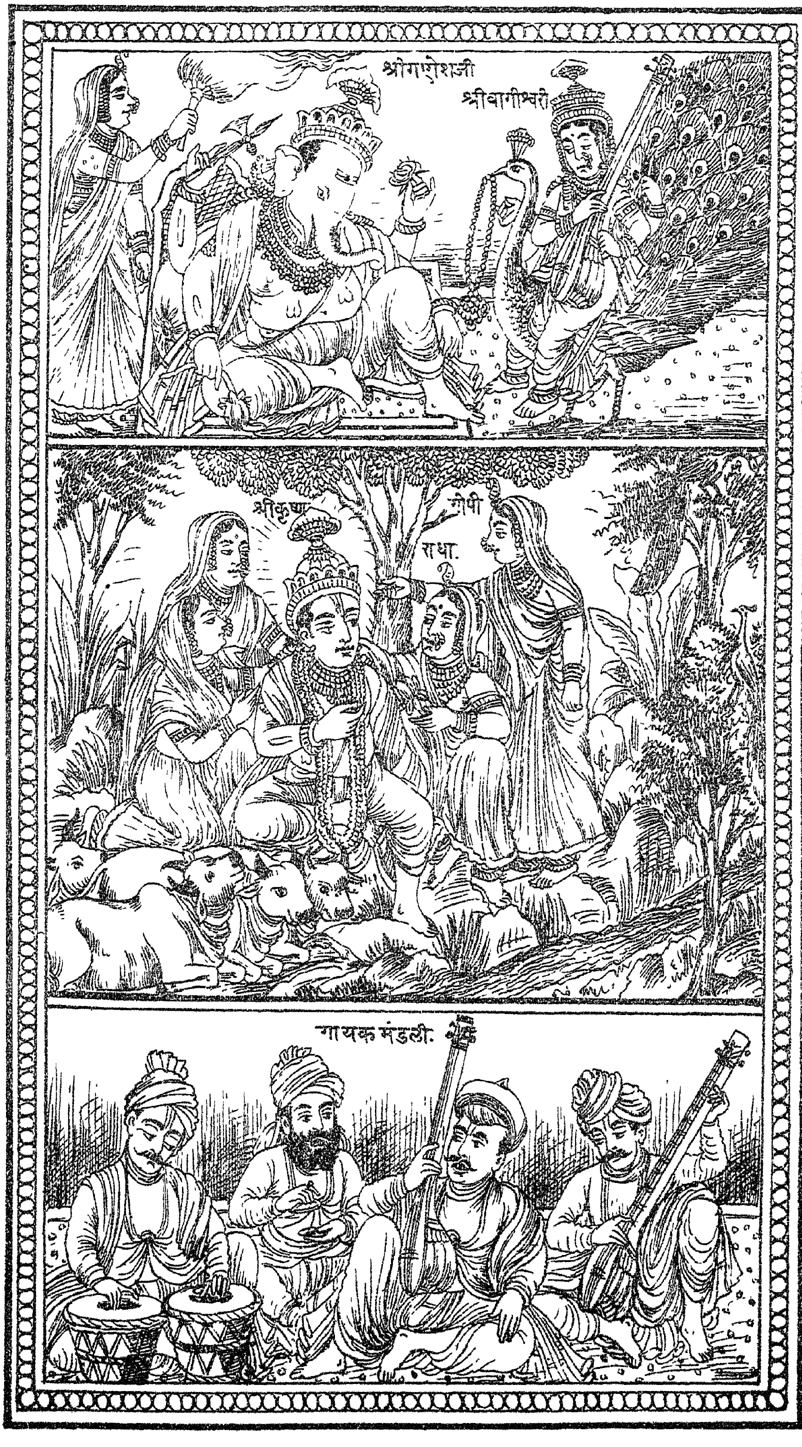
छठवींबार—विस्तारपूर्वक

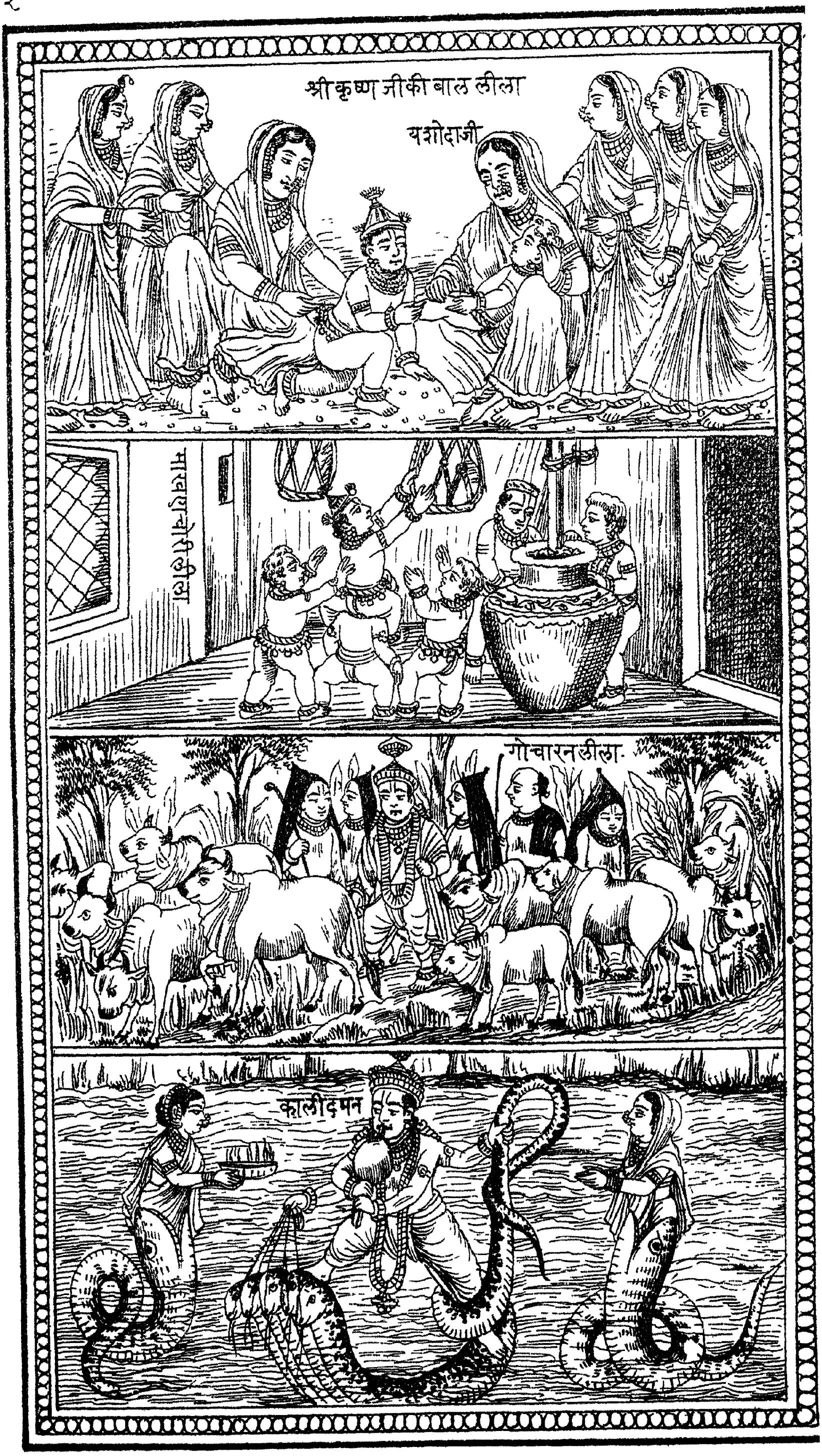
बंबई

मुद्रितकर प्रसिद्ध किया ।

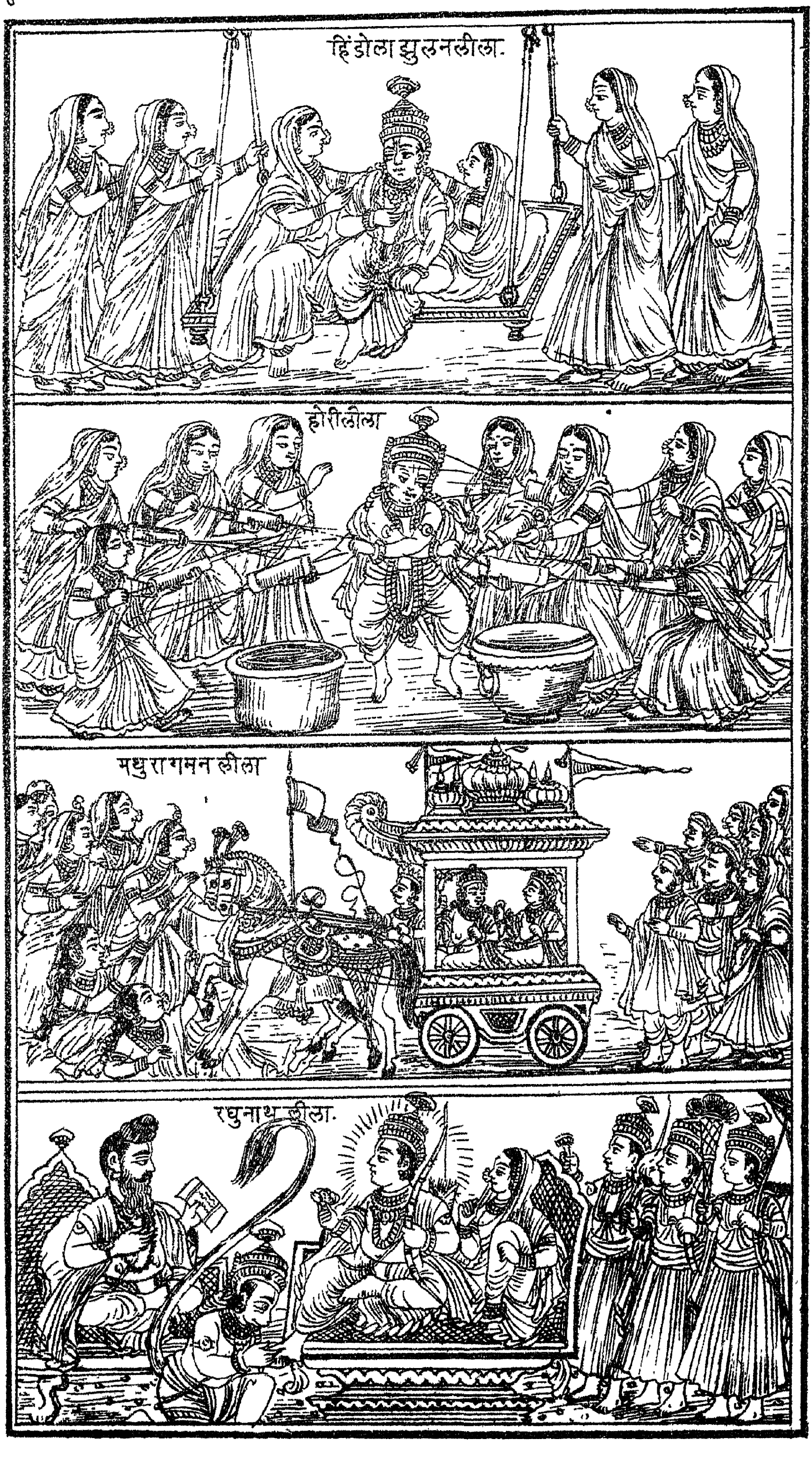
संवत् १९५८, सन् १९०१ ई०

S.V.P. BOMBAY.


श्रीगणेशजी
श्रीवागीश्वरी
श्रीकृष्ण
गोपी
राधा.
गायक मंडली.


श्री कृष्ण जीकी बाल लीला
यशोदाजी
माखनचोरीलीला
गोचारनलीला
कालीदमन


गोवर्धनलीला
बन्सीलीला
रासलीला


हिंडोला झुलनलीला.
होरीलीला
मथुरागमन लीला
रघुनाथ लीला.

श्रीः।

रागरत्नाकर।

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद.	पृष्ठांक.
(अ-आ)	
अब मेरी खेलन जात बलैया	१७
अब घर काहूके जनि जाहु	३१
अबकी राखि लेहु गोपाल	४३
अब आये प्रात क्यों मेरे धाम	६८
अलबेली लख लटक मुकुटकी ..	७७
अब पौढ़न को समयो भयो	८१
अपनी डगर चल्योजा रे ब्रजवासी	८४
अटपटी पाय सूधे बाबा कैसे रहौ	८८
अच्छा लेहु ब्रजबासी कन्हैया	९३
अपने गृहसे निकसीं अबला	११४
अँखियां लागीं सामलिया प्यारेसों	१२१
अँखियन यह टेव परी	१२२
अब तो प्रगट भई जगजानी	१२५
अब तुम सांची बात कही	९०
आदि सनातन हरि अविनाशी	७
आज बधाइयां वे बाबानंददे दरबार	९
आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी	१०
आज नंदजू तुमरे घरमें पुत्रजन्म सुनि आयो	११
आउ गुपाल शृंगार बनाऊँ	१६
आज सखी मणि खंभ निकट वीरजहैं....	२३
आयाकर सांवरे इन गलियों में रूमझूम....	२४
आज कौनेधो बन चरावत गाय	३८
आवरी बावरी ऊजरी पागपै	६४
आलीरी रास मंडल मध्य निर्तत	६४
आज बनवारी बन्यो है मुरारी	६६
आज हरि रैनि उनींदे आये	६९
आय क्यों न देखो लाल	८२
आज कछु कुंजन में वरसासी	९३
आई बदरिया बर्सन हारी	९४
आयोहै मास सावन इक मान कह्यो प्यारी	”
आज बन्यो रस रंग हिंडोला कदमतरे....	९५
आज हिंडोरे झूलें झूलन	९८
आज दोउ झूलत रंग भरे .. .	९९
आलीरी तू क्यों रही मुर्झाय	१०९
आज ब्रजराज की देख शोभा नई	१११
आज नंदलाल मुखचंद नयननिरख	”
आंखन में दुराय प्यारी	१२२
अब नंद गैयां लेहु सँभार	१४९
अँखिया हरि दर्शन की प्यासी	१५८
अब बिलंब जिन करो लाडिली	१६३
अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल	१७०
अब देखो रामध्वजा फहरानी	२३७
अवध आनंद भये घर आये हैं	२३८
अँखियां लागीं थारे रूप रँगीले रामा....	२४०
अवध नगर सुंदर समाज लिये	२४३
अस कछु समझ परै रघुराया	२५४
अपनी ओर निबाहिये	२६०
अँखियाँ राम रूप अनुरागीं	२४०
अरी अरी एरी माई	२८५
अबतो जाग मुसाफर प्यारे	२८५
अपने संग रलाई वे मैंनू	१८३
अनुसार स्तुति युगल	२१५
अविगति गति जानी न परै	१८४
अपने बिरद की लाज विचारो	१८५
अनोखा लाडला खेलन मांगत चंद्र	२१३
अपने लालको जिमावत मैया	२१८
अफसोस भरी नाथ सुनोगेरीभी हालत....	१८२
अकेली मत जैयो राधे यमुना तीर	२०४
अबके माधो मोहिं उधार	१६९
अपनै न दोष देखै	२६९
आनन की छबि	२७६
आपनो रूप पिछान	२७७

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.
आये कहांते कहो तुम	.... २७९
आरती सदाही होत संतन घट माहीं	.... २९२
आयो आयो भयो ऊधो	.... १५३
आप सभ नेरे और दूर की	.... १६६
आनंद कंद सुखनिधान	.... १७३
आये आयेजी महाराज	.... १७९
आचारज ललिता सखी	.... १८६
आरती लीजो श्रीनंदकेलाला	.... १९१
आरती युगल किशोर कि कीजै	.... "
आज नीकी बनी श्रीराधिकानागरी	.... १९८
आज उज्यारी भई लोरात....	.... "
आज वन राजत युगलकिशोर	.... "
आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो	२०७
आदि मणि ब्रह्म	.... २१०
आज सुदिन शुभ घरी सुहाई	.... २२२
आज तो निहार रामचन्द्रको	.... २२५
आली सियाबर कैसा सलोना	.... २२९
आगम वेद पुराण बखानत	.... २४८
आनंद बन गिरिजापति नगरी	.... २२२
आरती कीजे श्यामसुन्दरकी	.... १९१
आरती कीजे सुंदरबरकी	.... "
आज अति राजत दंपतिभोर	.... १९८
आज इन दोउअन पै बलिजैये	.... १९८
अतिलोक कि लाज समूह में	.... ३१६
अबहीं गई खिरक	.... ३१७
अब मैं कैसे करूंरीवीर	.... ३२८
अब नंद भवनमें चलोरी वीर	.... "
अवधेशके द्वारे सकारे गई....	.... ३४१
अति कोपसों रोप्यो है पाँव सभा	.... ३४९
अपराध अगाध भये जनते	.... ३५१
अवनीश अनेक भये अवनी	.... ३६६
अब चित चेत चित्रकूटहिचल	.... ३७१
अतिआरत अतिस्वारथी	.... ३७२
अमिय विलोकन करकृपा	.... ३७८
अवध आज आगमी यक आयो	.... "
अलफ आपणे आपनू समझ....	.... ३८४
अलफ अज्ज बणिया	.... ४८९
अस्सु ओड़क चलना प्योरे	.... ३९०
अब म कौन उपाव करूं	.... ३९९
अब हम गुमहुये	.... ४०८
अजब तेरा कानून देखा	.... ४१२
अय चिहरये	.... ४१०
आज गई हुती भोराह हौं....	.... ३१४
आज सखी नंद नंदनरी	.... ३१६
आज अली इक गोपलली भई	.... ३१९
आयो हुतो नियरे रसखान	.... ३२०
आज सखी इक गोपकुमार ने	.... ३२०
आज री नंदलला निकसो	.... ३२१
आवत हैं वन ते मनमोहन....	.... ३२२
आज अचानक राधिका रूप	.... ३२४
आज महरिवर देउरीवधाई....	.... ३२६
आज सखी प्रातकाल	.... "
आप भले गुणवान् बनो	.... ३२७
आज सखी प्रातकाल	.... ३२९
आवोरी यह शोभा निहारैं....	.... ३३२
आज बंशी बट बरसत रंग	.... "
आज श्याम मग धूम मचाई	.... ३३३
आज सखी प्रीतम जो पाऊं	.... ३३४
आज रचो रस रास विहारी	.... ३३५
आज सखी सुपनो मैं देख्यो रैन	.... "
आई सबै ब्रज गोपलली	.... ३३६
आपनो सो ढोटा हम	.... ३३७
आगे सोहै साँवरो	.... ३४५
आय हनुमान प्राण	.... ३४८
आगे परे पाहन	.... ३५३
आरत पाल कृपाल	.... ३६५
आज महा मंगल कोशलपुर	.... ३७५
आज अनरसे हैं भोरके	.... ३७७
आज बनी छबि भारी श्री रावो जूकी	३८३
आज बनी छबि भारी श्री रावो जूकी	३८४
अब मोहिं जलत राम जल पाया	.... ४२२
अवर मूए क्या सोग करीजै	.... ४२३
अह निशि एक नाम	.... ४२५
मोको भये राजा राम सहाई	.... ४२५
अग्नि नद है	.... ४२७
अब हम चली ठाकुर पहिं हार	.... ४३४

पद.	पृष्ठांक.
अविनाशी जीवन को दाता	४३७
अवतर आय कहा तुम कीना	४४८
अमल सिरानो लेखा देना	”
अचरज कथा महा अनूप	४५३
अश्वमेध जगने	४५४
अब मैं कहा करूंरी माई	४६०
अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अन्तर्यामी	”
अपने जनका परदा ढाकै	४८९
अज्जदा कम्म न वत्तीं	५०१
अब मैं अपने रामको रिझाऊं	५१४
अपने हित त्याग करे परको	५३२
अबके राखलेहु भगवान्	५५७
अपनो आप मैंने जो विसरयो	५६७
आपे पावक आपे पवना	४२५
आस पास घन तुलसी क बिरवा	४२८
आठ पहर निकट कर जानै	४३०
आपे सेवा लांयदा प्यारा	४३४
आनीले कागज	४५७
आउ कलंदर केशवा	४७३
आदि अंत जो राखन हार	४८६
आप कथै आप सुनने हार	४९१
आज नीकी बनी श्रीराधिकानागरी	४९५
आली मोहिं लागत वृंदावन नीको	५२०
आज अति बाढ्यो है अनुराग	५२१
आज माई गोकुल भयोरी आनंद	५२२
आनंद मंगल गावो मेरी सजनी	५२३
आपनी ओरकी चाहें लिखी	५२५
आपे खेल खिलारी सतगुरु	५३२
आपन चालिये महराज	५४३
आशिक हुआ हूं उसपै जो	५५१
आली दशरथ सुत सुखदैना	५५८

(इ-ई)

पद.	पृष्ठांक.
इस नंदके फरजंदने बाँकी अदाधरी	१७
इक अरज हमारी सुन भानुकी दुलारी	७२
इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी	७७
इत मत निकसै तू	८४
इस सामलिया की लटकचाल	१२३
इस दुनिया पर रोज मुसाफिर	२८४
इंद्रियोंके भोग सारे	२७२
इंद्रियजीत करै वश अपने	२७६
इंद्रिन को सुख मानतहै शठ	२६५
इंद्राणी शृंगार कर	२७०
इक ओर क्रीट लसै दुसरी दिशि	३३९
इक दिन होगा कूच जरूर	३९२
इशक दी नवी ओ नवी बहार	४०९
ईश न गणेश	३५८
ईशन के ईश	३६५
इंद्रलोक शिवलोकहि जैबो	४४३
इस तन मन मध्ये मदन चोर	४७६
इक रामे नूं नहीं संभालदा	५२२
इक देवहिं वदतहौं	५३४
इह धन मेरे हरिको नाउँ....	४६८

(उ-ऊ)

पद.	पृष्ठांक.
उठो अब मान तजो गोरी	७३
उलट पग कैसे दीनो नद....	१५०
उर में माखन चोर गडे	१५५
उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां	१९८
उपजे निपजे निपज समाई	२८८
उठ चले ग्वांढों यार	१३९
ऊधो मोहिं ब्रज विसरत नाहीं	१५०
ऊधो ब्रजको गमन करो	”
ऊधो धनि तुमरो व्यवहार	१५४
ऊधो कर्मन की गति न्यारी	१५५
ऊधो सो मूरत हम देखी	१५५
ऊधो प्यारे कारे सबै बुरे	”
ऊधो माधो सों कहियो जाय	१५६
ऊधो चलो बिदुर घर जैये	२०६
ऊधो हौं दासनको दास	१९४
उबरत राजारामकी शरण	४२१
उक्ति सयानप कछू न जाना	४३०
उड़रे पखेरू दिन तौ रहगया थोड़ा	५०४
उठजाग घुराडे मार नहीं	५५७
ऊंचे मंदिर साल रसोंई	४४९
ऊधो इतनी कहियो जाय	५२६
ऊंचो गोकुल ग्राम जहाँ हरि खेलतहोरी	”

(ऋ)

पद.	पृष्ठांक.
ऋषि नारि उधारि कियो शठ केवट	३५

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.
(ए-ऐ)	
एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी	५८
एजी अब तो जान नदूंगी शकुनभले जी	६७
एतो श्रम नाहिन तबहुँ भयो	७२
एक समय ब्रज कुंजन मेरी	७४
एरी यह को है री याहे दान देत	८९
एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे	९९
एक गाम को वास धीरज कैसे के धरों	१२५
एरी मैं तो सहज स्वभाव गई	११३
एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारिडारों	१६३
ऐसी है कोइ सखी हमारी....	१५९
ऐसे बसिये ब्रज की बीथन....	१६४
ऐसो कब करिहै मन मेरो	”
ऐसी कब करिहो गोपाल	१७३
ऐसी मूढता या मनकी	२४९
ऐसे राम दीन हितकारी	२५१
ऐसी हरि करत दासपर प्रीति	२५२
ऐसी कौन प्रभुकी रीति	”
ऐसो को उदार जगमाहीं	”
ऐसे जन्म समूह सिराने	२६१
ऐसी चतुरता पर छार	२९४
ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो	२५३
एक ते एक अनेरे रहे	३१५
एक दिना मुरली धुनिमें	३१७
ए सजनी वह नंदको साँवरो	३१९
एरी आज काल्ह	३२५
एक समै यमुना जलमें	”
एक सखी उठ बड़े भोरहीं....	३२९
एक समै इक सुंदरीको	३३७
ऐसी आरति राम रघुवीरकी	३७३
ऐसे हूं साहिबकी सेवा सों होत चोररे	३७५
ऐन ऐन ही है	३८७
ऐसो है रे भाई....	४०१
ऐसा नाम रत्न निर्मोलक	४०५
ऐसो नाम तुमारो निर्मोलक	४०५
एक ज्योति एका मिली	४२६
एक अनेक व्यापक पूरक	४३२
एक भरोस जानकी वरको....	४९३
एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी	५०१
एक घड़ी मैं नाम न जप्या	५०४
एक ब्रह्म मुखसों	५३४
एकनके वचन सुनत	५३५
एक तो श्रवण ज्ञान	५३७
ऐसी लाल तुझबिन कौनकरै	४६२
ऐसी मोसों कीनीरी	४९६
ऐसी तो व्याकुल वाजी	४९७
ऐसो बालक खेले नंदद्वार....	५४५
ऐसो नाम तुम्हारो सुकुर	४०८
(ओ-औ)	
ओल्हे बहबह	२८०
और कोई समझो तो समझो	१८६
और कौन मांगिये को मांगिवो	२४९
औचक दीठ परे कहुँ कान्हजू	३२२
और तो वचन ऐसे	५३५
(अं)	
अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधिलीना साँवरो	३५
अंत ते न आयो याही गाँवरेको जायो	९२
अंत तो मलीन दीन	२७७
अंगी अरधंगी....	२७९
अंग ही अंग जराव जरी	३२३
अंतर्यामि हुते बड़ वाहिर	३६५
अंतर्मल निर्मल नहिं कीनी	४०५
अंतर की गति तुमहीं जानी	४२०
अंधकार सुख कभू न सोइ है	४२२
अंतर मैल जो तीरथ न्हावै	४३२
अंतर मल निर्मल नहिं कीना	४३३
अंतकाल जो लक्ष्मी सुमरै....	४३४
अंगुरी पै गिरिधारचो	५१४
(क)	
कर पग गहि अंगुठा मुख मेलत	१३
कहन लागे मोहन मैया मैया	१६
कर विचार बृपभानु दुलारी	५६
कहो क्यों न मानत मेरो	७८
कर नेह नयन लगायके	८०
कहत श्माम श्यामाजू मोको दर्शन देत	९९

पद.	पृष्ठांक.
कमल सी अँखियाँ लाल तिहारी	११९
कभी गली हमारी आवरे	१२३
कहा करते मुंदरिया डारी	१२७
कृष्णनामरसना रटत सोई	१३४
काहू जोगिया की लागी नजर	१२
कान्ह नित नये उरहनो लावे	२९
काली के फनन ऊपर निर्तत गोपाल लाल	४१
काल्ह सखी यहि ठौर बाँसुरी भूल बिसारी	५१
कान्हारे बंसुरिया वारे रे तू ऐसेजिनबतराय	८४
कांकडली ना घालो म्हारी फूटे गागडली	८९
काहेको वैद बुलावत हो मोहिं	१०९
कान्हर कारो नंद दुलारो	१३२
किन लई देहु बताय मुरलिया	५०
किन श्वास उसास भई सजनी	८२
किया बिसमिल मुझे उसकी	१३१
कीरति महारानी वृषभानु आदि गोप गोपी	४६
कुंजन पधारो राधे रंग भरी नैन	८१
कैसे रास रसहि मैं गाऊं	६०
कैसे झूलों हिंडोरे बतियां मानेनाहिं हरी....	१००
कोई कहे मेरे आगे नेकतूनाच लाला	२५
को माता को पिता हमारे	९१
कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोई	१०९
कोई माई लैहेरी गोपालहि	१२८
दिलवर की डगर बतायदेरे	१३२
कौन परी नँदलालहिं वानि	१४
कौन बसत या बृंदावन में मों मुरलीको चोर	५०
कौन समय रूठन को प्यारी झूलो ललित हिंडोरे	१०१
कौन चढे पहिले सुरँग हिंडोरे	१०३
कौन रूप कौन रंग	१३८
कहीं देखेरी घनश्याम	१५८
कृपाकर दर्शन दीजो हरी	१५९
कबलग तरसाए रहिये पलक	१६०
कहाकरूं बैकुंठहि जाय	१६४
कबहूं नाहिंन गहर कियो	१६९
कहोजी कैसे तारोगे	१७२
करुणानिधान सुनियोजी कछु	२४५
कबके बांधे ऊखल दाम	२१४
कब तुरहो रघुनाथ हमारे	२४८
कभी भूमि आसन	२७४
कामरी लकुट मोहिं भूलत न एकपल	१५१
कामिनी निहारचो काम	२०६
काहेको बांधे तीर कमनियां	२४१
क्या बुलाक अधरन पर सोहै	"
क्या देख दिवाना हूआरे	२९०
कालीके नथन काज कालीनाथ	२१९
काहेको बिसारीरे जपाकर माला	२९२
काल निहारत काल सदा	२८३
काशी गंगा के किनारे	२७३
काहूसों न रोष तोष	२६३
कान के गयेते कहा	२६५
काहेको दौरत है दशहूं दिशि	२६८
कामिनीको अंग अति	२६८
काक अरु रासभ	२७०
किन तेरो गोविंद नाम धरचो	१८०
किहिं मिस यशुमति के जाउँ	२१३
कदम कुंज ह्वै हों कबै	१६२
किन्हीं राहीं जानगे	२८५
कीजे गवन भवन में वृषभानुकी दुलारी	२००
क्रीट मुकुट शीश धरे	२३०
कुब्जाने जादू डारा	१५४
कुंवर दशरथके रंग भरे	२३०
कुटुंब तज शरण राम तोरी आयो	२३६
कुम्हारी मनमें अति शोच चली	२०८
करुणानिधान सुनियोजी कछु	२४५
केशव कहि न जाय का कहिये	२५५
केते दिन हरि सुमिरण विन खोये	२९३
केती हजारां आलम हैं	२८३
कैसे तुम गणिका के	१७९
कै यह देह जरायके छार	२६६
कोइ फुलवा लेहुरी फुलवा	२०३
क्यों सोया गफलत का माता	२५९
कोयलिया बोलन लागीरे	२०३
क्यों वे बीबा मान भरया	२८७
कोऊ देत पुत्रधन	२६४
कोउक निंदत कोउक वंदत	२०७

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र।

पद.	पृष्ठांक.
कोई मोड़ो दिलां दिया	.... २८०
कौन विधि पावे यह कर्म बलवान उदय	१५१
कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना	२२३
कौन यतन विनतीं करिये....	.... २४७
कंचन सिंहासन रत्न जटित	.... १९२
कंदराते कंदमूल कहा निर्मूल भये	.... २७५
कमला निवास निज दासनकी	.... ३१०
कबको पुकारत हों	.... ३११
करत अपराध भोर	.... ३१३
कर मन नंद नंदन को ध्यान	.... ३२६
कहा रसखान सुख संपति....	.... ३४०
कबहूं शशि मांगत आरि करैं	.... ३४१
कनक गिरि श्रृंग चढ देख....	.... ३४९
कह्यो मत मातुल	.... ३५०
कृपा जिहिं की कछु काज नहीं	.... ३५५
कस न दीन पर द्रवहु उमावर	.... ३६९
कबहुंक अंब अवसर पाय	.... ३७२
कबहुं समय सुध द्यायवी	.... ३७३
कह्यो शुक श्रीभागवत विचार	.... ३८१
कृपा सो कहां बिसारी राम	.... ३८३
कत्तक किसमत	.... ३९०
काहूके आधार सेवा	.... ३१०
कानन दै अंगुरी रहि हों	.... ३१७
कानन कुंडल मोर पखा शिर	.... ३१८
काल्ह पऱ्यो मुरली धुनिमें....	.... ३२२
काहूको माई कहा कहिये....	.... ३३८
काल कराल नृपालनके	.... ३४३
कीरके कागर ज्यों	.... ३४३
कानन वास दशानन सों रिपु	.... ३५०
कानन भूधर बारि बयारि....	.... ३५५
काल ही तरुण तन	.... ३६२
काढ कृपान कृपा न कहूं	.... ३६५
काहेते हरि मोहिं विसारो....	.... ३८३
काफ कौन जाने	.... ३८८
काया हरिके काम न आई	.... ४०३
काफरे इशकम	.... ४०९
कागर कीर ज्यों	.... ३४३
कीजे कहा जीजे	.... ३४४
कीवे को विशोक लोक लोक	.... ३५२
कीवे कहा पढ़वेको	.... ३६०
केऊ कर्म वादी	.... ३१०
केऊ प्रेम लक्षणा	.... ”
केऊ ध्यान धारना	.... ३११
कैसे जांऊरी बीर घटभरवे नीर	.... ३२६
को रिझवारिन सों रसखान....	.... ३३६
क्योंरे छैल मोरी मटुकिया पटकी	.... ३२७
कोऊ माई भूल्यो मन समुझावै	.... ३८०
क्यों सोयाहै जाग मुसाफर	.... ३९६
कोई एक पंडित हो	.... ४०६
क्यों मन भूलाहै संसारा	.... ४११
कोऊ हरि समान नहिं राजा	.... ४००
कोऊ कहे करत	.... ३६१
को न क्रोध निरदह्यो	.... ३६२
को याचिये शम्भु तज आन	.... ३६८
कौन को लाल सलोना सखी	.... ३१६
कौन ठगौरी करी हरि आज....	.... ३१९
कौशलराजके काजहौं	.... ३४९
कौशिक विप्र बधू	.... ३५१
कंस के कोप की फैलगई	.... ३३७
कंचन मंदिर ऊंचे बनायकै....	.... ३३९
कंचन के मंदिरन	.... ३४१
कंसकरी ब्रजवासिनपै	.... ३६५
करों विनती	.... ४१७
कहा श्वान को सिमृतकहाये	.... ४३२
कहौं कहा अपनी अधमाई....	.... ४४५
कवन काज माया बढ़ि आई	.... ४४७
कवन काज सिरजे जगभीतर	.... ४५७
कबहूं खीर खांड घिव न भावै	.... ४७१
कहा भूल्योरे झूठेलोभलाग	.... ४७५
कत जाइये रे घर लागोरंग	.... ४७६
कहा मन विषयनसों लपटाई	.... ४७८
कहा नर अपनो जन्मगवाँवै	.... ”
कहा नर गर्बत थोरी बात	.... ४७८
कई कोटि राजस तामस सात्विक	.... ४८८
करीहै गरीबी तो	.... ४९३
काल्ह हवस इसतरहसे	.... ५०२

पद.	पृष्ठांक
कहां लगाई एती देर	.... ५१५
कहि नजाय छवि राधावरकी	.... ५१८
कथा यथा शुकदेवकी	.... ५२९
कदम चढ़ लाल बुलावत गैयां	.... ५४१
कब आवेंगे मम ऊपरते	.... ५५०
काहेरे मन खोजन जाई	.... ४४२
कालबूतकी हस्तिनी	.... ४२७
क्या पढिये क्या सुनिये	.... ४३९
काहेरे मन	.... ४१६
कायो देवा	.... ४४४
काम क्रोध तृष्णाके लीने	.... ४६४
काहेरे मन विषयावन जाय	.... ४७८
कारी रैन दुखदैन	.... ४९६
क्या कहें आलम में हम	.... ५१९
क्या करनाहै संतति संपति....	.... ५२४
काहूको पूछत रंक धन	.... ५३८
कारे मोहन कारे सोहन	.... ५४२
तै प्रकार न टूटो प्रीति....	.... ४२०
कियो श्रृंगार मिलनकेताईं....	.... ४३२
किनहीं वनज्या कांसीतांवा....	.... ४६३
किरपा देह अध्यास की	.... ५३०
कीता लोडिये	.... ४१९
की कुछ भेट सुदामा आंदी....	.... ५१४
कीन पीछले धोयके	.... ५२९
कुंचित हैं अलकां श्रुति ऊपर	.... ५५०
कूड़ राजा कूड परजा कूड सब संसार....	४३१
कैसे करूं कछु कह नहिं आवत	.... ५५४
कैसी बँसिया वजाय जादूडारारे	.... ५१५
कैसे होरी खेलों पियासंग	.... ५६४
क्यों लीजै गढलंका भाई	.... ४६९
कोटि सूर जाके परकाश	.... ४७०
कोई असां नाल चल्ले	.... ५२२
कोई सफा	.... ५५२
कोई सुष्टमस्त कोइ तुष्टमस्त	.... ५६५
कोई ऊर्द्धमस्त कोइ अधःमस्त	.... "
कोई साक	.... ५६५
कोई दमदा यहां गुजारा रे....	.... ५५५
कोइ हालमस्त कोइ मालमस्त	.... ५६४
कोइ अकलमस्त कोइ शकलमस्त	.... ५६५
कोइ पाठमस्त कोइ ठाटमस्त	.... ५६५
कोइ हाटमस्त कोइ वाटमस्त	.... "
कोइ राजमस्त गजवाजिमस्त	.... "
कौन को पूत पिता को काको	.... ४२५
कौड़ी बदले त्यागै रतन	.... ४५६
कंचन सों पाइये नहीं तोल	.... ४२३

(ख)

पद.	पृष्ठांक
खेलन में को काको गुसैयां....	.... ३७
खेलन के मिस कुँवरि राधिका	.... ४६
खेलत वसंत राजाधिराज .. .	.... २४३
खेलत रघुराज आज रंगभरीहोरी	.... "
खोलोजी किंवार कोहै एतीवार	.... २२०
खाक आपको समझना	.... ३८९
खे खबर ना आपणी	.... ३८५
खंजन नैन फंदे छविपिंजरा....	.... ३६१
खान मिला अरु पान मिला	.... ५३१
खेलत विपिन वसंत लाडिले	.... ५६१
खोजत खोजत खोज विचाऱ्यो	... ४३५

(ग)

पद.	पृष्ठांक
गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर	२२
गली वे हमारी क्योंनहीं आमदा	.... १२४
गहनो चुरायो तैंने तो	१३७
गली गली में कहत फिरत	.... १४२
गले तौंक पहिरावो पावँबेरीलैभगवो	११०
ग्वालिन घर गये श्याम साँझकी अँधेरी....	२३
गारी मत दीजो मो गरीबिनी को जायोहै	२९
गागर ना भरनदेत तेरो कान्हमाई	३४
गावें दैदे तारियां होव्रजकीनारियां सुकुमार	४६
ग्वालिन दान हमारोदे	.... ८७
गाय चरायके गिरिधाऱ्यो	.... १०३
ग्वालिन क्यों ठाढी नंदपौरी	.... १२९
गिरिधर लोरी लै मथुराके वासी	.... १०
गिरिवर धऱ्यो आपने करते	.... ९०
गुण सुन बृषभानु कुवँरिके	.... ५६
गूंजेगे भ्रमरा विराग भरे वन	.... ८०
गेंदके संग कूद बालक	.... ४०
गोपी गोपाल लाल रासमंडलमाहीं	.... ६५
गोपी प्रेमकी धुजा	.... १३६
गौर श्याम वदनारबिंदपर....	.... १३३

पद.	पृष्ठांक.
गजकी वाणी सुनके	.... १७४
गाइये गणपति जगवंदन	.... २२१
गालैरे गोविंद गुणारे	.... २५९
गायो न गोपाल मन	.... २९४
गज वाजी मिला षट्टु ताजी मिला	.... ५३१
गावो वसंत वसंत पञ्चमी	.... २४२
गिरि कीजे गोधन मयूर नवकुंजन को....	१६२
गुरु बिन ज्ञान नाहिं	.... २६४
गोविंद के किये जीव	.... "
ग्रंथन के ज्ञाते माते	.... २७१
गंगा तीर पर हिम गिरि शिलापर	.... २७३
गज वाजिवटा भलेभूरिभटा	.... ३५५
ग्वालन के संग जबै ऐबो औ....	.... ३३८
गाफ गुजर गुमान	.... ३८८
गिरिको उठाय व्रज गोपको बचाय लियो....	३०९
गैन गम्मने मार	.... ३८७
गोरज विराजै भाल	.... ३१७
गोरी कुंजन में आज होरीमची	.... ३३३
गोकुलको ग्वाल एक	.... ३३६
गौतमकी नारी ताकी	.... ३१२
गुंज गरे शिरमोर पखा	.... ३१४
गगन मय थाल	.... ४१७
गहरी करके नीवखुदाई	.... ४४३
गृह तज वनखंड जाइये	.... ४५०
गऊको चारे शारदूल	.... ४५६
गही दाम श्याम मथन देत	.... ४९७
गर्वते सुलखजाय	.... ५४१
गह तंदुल ब्राह्मणके करसे	.... ५४९
गगनके मंडल में चन्द्रमा	.... ५६१
गाइये महारानी श्रीराधे	.... ४९८
ग्वारन जान उराहनोदय	.... ५६२
गुण गावो पूरण अविनाशी	.... ४३६
गुरुकी मूरत मनमें ध्यान....	.... ४५२
गुरु सेवा ते भक्ति कमाई	.... ४६९
गुण गावत मन होय आनंद	.... ४८२
गुरु की मति त लेह अयाने	.... ४९०
गुणके गाहक सहसनर	.... ५२७
गुण थोरहिते प्रभु रीक्षरहो	.... ५४९
गोविंदजी तू मेरे प्राणअधार	.... ४७७
गिरिको उठाय व्रजगोपको वचाय लियो	३०९
गोविंदा नहीं गाया तैंने	.... ५०७
गोविंद लीना मोल	.... ५१९
गंगाके संग सरिता बिगरी....	.... ४६८
गंग गुसाँइन	.... ४७०

(घ)

पद.	पृष्ठांक.
घर तजों वन तजों नागर नगर तजों	११०
घर घर ते बनिता जो वन	.... २१८
घरी घरी घटत छीजत जात छिन २....	२६५
घरकी नारि त्यागै अंधा	.... ४७१
घूंघट चक सज्जना	.... ५१६

(च)

पद.	पृष्ठांक.
चलरे योगी नंदभवनमें	.... १२
चले आतेहैं मोहन वनसे धेनु चराये हुये	३९
चलो तो बताऊं विहारी जी	६७
चलोरी क्यों ना मानिनी कुंज कुटीर	७५
चलोरी ऐसो मान न करिये मानिनी	७९
चल परे हटरे काहेको इतरावे	९२
चल झूलिये हिंडोरे श्रीवृषभानुकी लली	९५
चलो इकेले झूलैं वनमें प्यारी मेरे प्रान	"
चलो पिया वाही कदमतरे झूलें	९६
चकोरी चख हमारे हैं	.... १२२
चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह	१३४
चारों ही वेद पुराण अठारहों....	
चाहे तू योगकर	
चीराकी चटक औ लटक नष कुंडलकी	२४
चैन नहीं दिन रैनपरै	.... ५३
चोरो सखी बंसी आज दांव भलो पायोहै	६०
चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी	.... १९
चंदा सो बदन जामें चंदनको विंद्रादिये	५४
चले गये दिलके दामनगीर	.... १५६
चल वृषभानु कुमारी बाग	.... २०१
चले गये छांड	.... २८२
चार बीस अवतार धर	.... १८७
चाहे जितो चित	.... २७९
चितहिंराम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं	२४५
चूके कबहुँ न चुगुल नर	.... ५२७
चंचल दृग रतनारे तेरे	.... २२९

पद.	पृष्ठांक.
चुनरी मेरी रंग डारी	.... ४०१
चेचानणा कुछ	.... ३८५
चेतरे चित बिच	.... ३८९
चरण कमल की आश प्यारे	.... ४३०
चरण शरण गोपाल तेरी	.... ४८१
चले गये सब अजलके मुँहमें	.... ५०२
चल हरि तोहिं बुलावे श्रीराधे	.... ५४२
चलरी नई कुंज बुलाइ राधे	.... ५४४
चलोरी आली वंशीबटतीरें	.... ५४९
चार पुकारैं ना तू मानहिं	.... ४५५
चार मुक्ति चारे सिद्धि	.... ४६२
चार दिन अपनी नौबत चले बजाय	४६४
चार वर्णमें सोई बड़ा जिन राधाकृष्ण रटा	५६४
कबहुँ न चुगुल नर	.... ५२७
चेतना है	.... ४४५
चोआ चंदन मरदन अंगा	.... ४२३

(छ)

पद.	पृष्ठांक.
छवि अच्छी बनी बनवारीकी	.... ११२
छवि आगरी कोविद राग....	.... १४४
छांडो मेरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊंगी	३१
छांडदे माननी श्याम संग रूठिवो	७६
छांडो लंगर मोरी बहियां गहो ना	३२
छैलगैल मत रोकै तू हमारीरे ..	"
छैल रंग डार गयो मोरी वीर	.... १०७
छतियां लेहु लगाय	.... १५९
छवि रघुवीर की चित चोरन	.... २४०
छबीले बंसी नेक बजाओ	.... २१७
छांडो कृष्ण युगल बैयां	.... १९९
छोटी सी धनुहियाँ	.... २२६
छोड़के आश सभी	.... २८३
छार ते सँवारके....	.... ३५६
छोड़ बिस्तरा उठरे गाफल....	.... ३९४
छवि पर वारियां प्यारे	.... ५१३
छिनमें नीच कीटको राज....	.... ४८८
छली मोको यमुना जान न देइ	.... ५२५

(ज)

पद.	पृष्ठांक.
जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयो	४२
जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो	५७
जब ते मोहिं नंदनंदन दृष्टि परो माई....	११८
जहां ब्रजराज कल्ह पाये	.... १३१
जागिये गोपाल लाल जननी वलिजाई	१३
जागिये ब्रजराज कुंवर कमलकोशफूले	"
जागो बंसीवारे ललना जागो मेरे प्यारे....	१४
जागो हो मोरे जगत उज्यारे	"
जागो जागो हो गोपाल	"
जाके पद परसन को तरसतहैं विश्वब्रज....	२५
जामा बन्यो जरीतास	६३
जागत जागत रैनि विहानी....	६८
जाके दरशको जग तरसतहै	७५
जादूगर रे थारे नैन	१२०
जाको मन लाग्यो गोपाल सों	१३३
जादूगर नयन नयन बड़े विशाल	१२०
जानि जाओरी आज कोउ पनियां भरन....	१०६
जिन जानो वेद तेतो षादकी विदितहोय	११०
जैसी है मृदु पद पटकन	६३
जयति नव नागरी सकलगुण सागरी	७८
जो तुम सुनो यशोदा गोरी....	२६
जोबन की मदमाती डोलैरी गुजरिया	८८
जब पट गह्यो दुशासन करसों	१७६
जगके रूसे ते क्या भया	२५४
जगमें देखतहूं सब चोर	२१४
जननी विष मोहिं दे पिलाय	२०९
जहां देखो वहां मौजूद	१८०
जरा कर श्वेतबार	२७६
जाकी कोखजायो ताको	१५३
जाजारे भँवरा दूर दूर	१५७
जानत प्रीति रीति रघुराई	२५०
जादिनते वंशी अवतंशी	४९
जागिये कृपानिधान जान राय रामचंद्र	२२५
जालम नयन मेरे नाहिं रहिंदे	२३०
जाऊं कहां तजि चरण तिहारे	२४५
जाही हाथ धनुष चढ़ायो है सीतापति....	२४८
जानत प्रीति रीति यदुराई	१८८
जानकी नाथ सहाय करैं जब	२५४

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
जाग जाग जीव जड	.... २५९	जप योग विराग महामख साधन	.... ३५६
जाको प्रिय न राम वैदेही	.... २६०	जप की न तप खप	.... ३५८
जाको लगन रामकी नाहीं	"	जगत में झूठी देखी प्रीति	.... ३६३
जाहि मात पिताते मैं भयो....	.... २७३	जब नैनन प्रीति गई ठग श्यामसों	.... ३६६
जाके बामे दाहिने सुमंत चक्र	.... "	जहां बाल्मीकि भये	.... ३६७
जाको जाको चाहै	.... २७९	जहां वन पावनो सुहावने विहंग	.... ३६७
जित देखों तित श्याम मई है	.... १५४	जगत सब गैर है लोको	.... ३९५
जिन प्रेम रस चाखा नहीं	.... २८७	जप जाप मन हरि नामका	.... ३९६
जिनको नित मैं चितमों चितमों	.... २७१	जबलग मेरी मेरी करै	... ४०१
जे जन शरण गये ते तारे	.... १६९	जलवए हक जहां	.... ४१२
जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं....	१५१	जा दिन ते निरख्यो नँदनंदन	.... ३१५
जै मनमोहन श्याम मुरारी	.... १८८	जा दिन ते मुसकान चुभी....	.... ३१६
जै नारायण ब्रह्म परायण	.... "	जात हुती यमुना जलको	.... ३२५
जैति श्रीराधिके....	.... १९५	जाहि लगन लगै घन श्यामकी	.... ३२८
जै भगीरथ नंदिनी	.... २२१	जानतहौं न कछू हम ह्यां	.... ३३८
जै जै जै रघुवंश दुलारे	.... २३८	जानैं कहा हम सबै	.... "
जै श्री जानकी वल्लभ लालहिं	.... २४१	जाके बिलोकत लोकप होत	.... ३५३
जै जै युगल किशोर विहारी	.... २९६	जातिके सुजगतिके	.... ३५८
जो हरि मथुरा जाय बसे	.... १५३	जागिये न सोइये	.... ३५९
जो कोउ बृंदावन रस चाखै	.... १६३	जागे योगी जंगम	.... ३६१
ज्यों भावै त्यों राख गुसाँईं	.... १८५	जाय सो सुभट समर्थ	.... ३६२
जो जन ऊधो मोहिं न विसारे	.... १९४	जाते जरे सब लोक विलोक	.... ३६८
जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं....	.... २०६	जाके गति है हनुमानकी	.... ३७२
जो मैं पारथ नाम कहाऊं	.... २०७	जानकी जीवनकी वलिजैहौं	.... ३८४
जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत....	२६४	जाल जग भी	.... ३८६
जो दशबीस पचास भये	.... २६८	ज्वाद जिकर अरु	.... ३८७
जो मन नारीकी ओर निहारत	.... २६९	जिन मग रोको नंदकिशोर	.... ३२७
जौन हाथ बामन हो	.... १६७	जिनको पुनीत वारि	.... ३४४
जन्मे श्रीकृष्ण मुरारि भक्तहित कारने....	३१३	जिहिं मरने ते सभ जग त्रासा	.... ४०२
जलकी न घट भरैं	.... ३१४	जिहिं तनु ना हरि भजन कियो	.... ४०३
जब कान्ह भये वश बाँसुरीके	.... ३२०	जीम जीवणा भला	.... ३८५
जलको गये लक्ष्मण हैं लरिका	.... ३४५	जीवन सार बिसारा क्यों मन	.... ४०७
जलज नैन जलजानन	.... "	जे जावणा आवणा	.... ३८६
जनम्यो जिहिं योनि अनेक क्रिया	.... ३५४	जेठ मायादा मान न करिये	.... ३९०
जबै यमराज रजायसु ते	.... ३५६	जैसे खग बालक को	.... ३१०
जहां यम जातन घोर नदी....	.... "	जय जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा	.... ३१३
जहां हित स्वामि न संग सखा	.... "	जयं ताड़का सुबाहु	.... ३६१

पद.	पृष्ठांक.
जय जय जग जननि देवि	.... ३६९
जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी	.... ३७०
जैसे भूखे प्रीति अनाज	.... ४०३
जो रसना रस ना विलसै	.... ३४०
जोय जुदा नहीं	.... ३८७
जत्त पहारा	.... ४१५
जब हम एको एक कर जाना	.... ४२२
जम ते उलट भये हैं राम....	.... ४२३
जबलग तेल	.... ३४१
जब जरिये तब होय भस्मतन	.... ४३९
जब हम होते तब तू नाहीं	.... ४४०
जहिं मात पिता सुत मीत न भाई	.... ४८५
जरा टुक सोच अय गाफिल	.... ५००
जन्म तेरो बातों में बीतगयो	.... ५११
जब पलाश फूलन पर आवें	.... ५१४
जन्म गँवायो ऊआबाई	.... ५१८
जग मानव देह मिलै न सदा	.... ५३८
जग रूखन सूखन भोजन कै	.. "
जबकि श्याम तैं बंशी बजाई	.... ५६०
जगदाता सोइ भक्त	.... ४९१
जबहीं जिज्ञासा होय	.... ५३८
जप मन रामनाम पढ सार	.... ४७७
जय जगदीश हरे	.... ५६७
जाका मुशकल	.... ४१८
जाके वश खान सुलतान	.... ४१९
जाके हरिसा ठाकुर भाई	.... ४२४
जामें भजन रामको नाहीं....	.... ४५०
जप तप ज्ञान सब ध्यान....	.... ४८५
जाकी लीला की मिति नाहिं	.... ४८९
जात पात न्यारी करी	.... ४९४
जाग जानी कछु मसलत	.... ५१६
जानु भुजा कटि केहरि	.... ५३२
जाहि के विवेक ज्ञान	.... ५३७
जा दिन मन पक्षी उड़ जैहै	.... ५४६
जा जल को विधि पालकरयो	.... ५५०
जिहिं मरने सब जगत् त्रासा	.... ४२४
जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारा	.... "
जिहिं मुख पांचो अमृतखाये	.... ४२४
जिहिं शिर रच रच बांधतपाग	.... ४२५
जिस नीच को कोई न जानै	.... ४३०
जिहिं कुल साधु वैष्णव होइ	.... ४५१
जिन गढ कोट किये कंचन के	.... ४६२
जिहिं मारग के गिने जाहिं न कोश	.... ४८५
जिहिं प्रसाद घर ऊपर सुखवसाहिं	.... ४८६
जिसके अंतर राज अभिमान	.... ४८८
जिनके रथ नेमि	.... ५३०
जिन पायो ऊधो प्रेमहींसे पायोरे	... ५४८
जिन्हांनूं शौक साईदा	.... ५५९
जिन्हां नू लग्गे प्रेम तमाचे	.... ५६२
जीव जंतु सब ताके हाथ	.... ४९१
जे युग चारे आरजा	.... ४१५
जेते यतन करत ते डूबे	.... ४२६
जेती सामग्री देखहुरे	.... ४३६
जे ओह अडसठ तीरथ न्हावे	.... ४५५
जे चतुराननके सुतचार	.... ५३४
जो जन परमित परम न जाना	.... ४२२
जैसारंग कुसुंभका	.... ४२७
जिन तन मन प्राण	.... ५३६
जो जन लेहिं खसमका नाउँ	.... ४२४
ज्यों कपि के कर मुष्टि चननकी	.... ४२७
जो राज देहिं तो कवन बड़ाई	.... ४३३
जो नर दुख में दुख नहिं माने	.... ४३८
जो हम बांधे	.... ४४०
जो जन भाव भक्ति कछु जानै	.... ४४३
जो दिन आवैं सो दिन जाहीं	.... ४४८
जो गुरुदेव तो मिलै मुरार....	.... ४७३
जो तू राम नाम चित धरतो	.... ५०५
जो सुख है सतसंगति में	.... ५३२
जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत	.... ५३६
जौलौं भाव अभाव यह मानै	.... ४३५
जंगल में अब रमते हैं	.... ५२५
जंगलमें मंगल तुझे	.... ५२९

(झ)

पद.	पृष्ठांक.
झूलो प्यारी आज निकुंजहिंडोलना	.... ९५

पद.	पृष्ठांक.
झूलन चलो हिंडोलने वृषभानु नंदिनी	९६
झूलो मेरी राधाप्यारी रंगीलो हिंडोरना	”
झूलन युगल किशोर की दिलमें मेरे बसी	९७
झूलत तेरे नयन हिंडोरे	”
झूलत श्याम श्यामा संग	९८
झोका दीजो सम्हार के मेरी सारी न लटके	९९
झूलनहार नई कौन है	१०२
झूलत को श्यामाके संग सखी सामरी प्यारीहै	१०२
झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ	१०४
झूलत सीताराम अवध पुर	२४२
झूठो है झूठो है झूठो सदा....	३५५
झटक्यो मोरा चीर मुरारी	५१२
झगड़ा तैंने पाइया	५२९

(ट)

पद.	पृष्ठांक.
टेढे सुंदर नयन ढेढेमुख कहत वैन	१२
टेढी कला चंद्रकी सकल जग....	”
टुक नजर मिहरदी देख	१७१
टुक बंगलामें बैठो बागकी बहारहै	२००
टेर सुनो ब्रजराज दुलारे	१९३
टुक देई ग्वारन मक्खन कुडे	४९५
टुक बूझ कवन छिपआया है	५०१
टूटी गांठनहार गोपाला	४८८
टेढीपाग टेढे चले लागे वीरे खान	४६४

(ठ)

पद.	पृष्ठांक.
ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं....	६१
ठाढी रहरी गूजरी तू देजा मेरोदान	८८
ठुमक गति चलत अनोखी चाल	३८
ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनंदिनी	२२६
ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियां	२२४
ठाढे हैं नव द्रुम डारगहे	३४५
ठाकुर तुम शरणाई आया	४७७

(ड)

पद.	पृष्ठांक.
डगर मोरी छांडो श्याम	१०६
डरपै धरती अकाश	४५९
डरदा डरदा अर्जइक करदा....	५४०
डगर में प्यारी आजमिले कहीं श्याम....	५४२

(ढ)

पद.	पृष्ठांक.
ढाढन चल दशरथ घर जाइये	२२३
ढिग बैठ धनी नरकेहरिजी	५३४

(त)

पद.	पृष्ठांक.
तनक हँस हेरो मेरी ओर.... ..	७४
तनक हरि चितवो मेरी ओर	८४
तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली....	४२
तालन पै ताल पै तमालनपै मालन पै....	६१
तुम जाओजी जाओ जाके रहे हो रात....	
तुम सुनो राधिका विनय कान	७३
तुम काहेको लाडली मान करत	७६
तुम टेढो म्हारी ठेढी गगरिया	८९
तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचनहार....	९१
तुम्हें कोउ टेरत हैरे कान्ह....	१२९
तुम या ग्राम कहां रहो आली	१३८
तुम कहुँ देखी रे इतजात	५५
तूहै मुख कमल नयन अलि मेरे	५३
तूतो मोहिं प्राणन हूंते प्यारी	८०
तू मेरा मनमोहा समलिया	१३०
तूहै सखी बडभागभरी	७९
तेरोरी कन्हैया बल	२६
तेरो मुख नीको कि मेरो राधाप्यारी	५२
तेरी झमक झूलन कटि लचकजात	९६
तेरो मुखचन्द्र री चकोर मेरे नयना ..	५३
तेरी झूलन अतिरस सानी सुखदानी	१०३
तेरी हँसन बोलन लाल मेरेमन वसिया	१२३
तैंने वंसीमें जो गाया मेरा जी जानता है	११६
तोसी त्रिया नहीं भवन भटूरी	७६
तोसी नहीं कोउ देखीरी हठीली	७७
डगर चलत का भयोरी वीर	१०८
तोरेजी नैना कारे अनियारे मतवारेप्यारे	१२०
तजोमन हरि विमुखनको संग	२९३
तन मन रंग बनाय पिया सँग	२७८

पद.	पृष्ठांक.
तजें दुराराध्य स्वामी	.... २७४
तनु वृद्ध भये ते....	.... २७६
तारो पतित जानके	.... १६६
तातको शोच न मात कि शोचरु	.... २३७
तात मिलै पुनि मात मिलै....	.... २७
तीर्थानके माहिं सनान	.... २७७
तुम्हारें आगे हौं बहुत नच्यो	.... १७०
तुम गोपाल मोसों बहुत करी	.... १७१
तुम विन श्रीकृष्णदेव और कौन मेरो	.... १७८
तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे	२४१
तुंग भोग इंद्रलोक	.... २७५
तूदयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी	.... २४६
तु खुश भर नींद क्यों सोया	.... २८४
तू ममता मद माहिं	.... २८३
तू कछु और विचारत है नर	.... २६७
तेरे रतनारे नयन लगे	.... २३०
तेरी नजरोंकी	.... ”
तेरी होरीकी झलक	.... २४४
तेरा राम बसताहै	.... २८१
तोसों कहा धुताई करिहौं	.... २१९
तब तो भगतन सहायकाज	.... ३११
तनु की द्युति श्याम सरोरूह	.... ३४१
तिनते खर शूकर	.... ३५५
तुम्हें धन्यवाद है ईश्वर	.... ३९४
तुम मेरी राखो लाज हरी	.... ४०२
तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी	.... ४०७
तुझसे मैंने दिलको लगाया	.... ४१०
तू रजनीचर नाथ महा	.... ३४९
तू गोविंद है और तू गोपाल है	.... ३९८
तू बात चलन दी करेरे	.... ४१०
तूही एक मेरा मददगारहै	.... ४१४
तेरी गलीन में जादिन ते....	.... ३२१
त तनक छिद्र....	.... ३८५
तैं शोह मनमें कियारोस	.... ४०५
तोसों कहों दशकंधररे	.... ३४९
तोय तौर महबूब	.... ३८७
तौलौं लोभ लोलुप	.... ३६४
तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपनेन....	३६५
तन संतन का धन संतन का	.... ४३५
तन मन धन वारों सांवरी सूरत	.... ५६०
तर तीव्र भयो वैरागतो	.... ५६६
तत्पद त्वंपद	.... ”
ताती बाउ न लागई	.... ४४९
तातको आयसुमान चले	.... ५३४
तिहिं योगी को जुगत नजानो	.... ४४२
तिन करते इक चरित उपाया	.... ४६७
तिल तेल के संग लेह दुखको	.... ५३०
सुझंता कछु नाहिं	.... ४७६
तुम ठाकुर	.... ४८६
तू न भयो अपनारे लोभी मन	.... ५४७
तू घट घट	.... ४१६
तू मेरा पिता तूही मेरी माता	.... ४६५
तेरी खातर श्यामां वे मैं	.... ५२५
तैं नर क्या पुराण सुन कीना	.... ४७९
तेरीखाक फकीरी दिल से चाह न	.... ५५२
तुम सुनिये हो बलि राजा....	.... ५५३

(थ)

पद.	पृष्ठांक.
थारे करूंगी कपोलन लालजी	.... १०६
थिर घर बैसो हरिजनप्यारे....	.... ४२०
थिर संतन सुहाग मरै नजावेहे	.... ४३१

(द)

पद.	पृष्ठांक.
दर्श तो दिखाजा छैला दर्श तो दिखाजा	१२
दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं	१५
दर्शन देना प्राणप्यारे	.... १०८
दधि पीगयो रीमाई आज....	.... २८
द्वारके द्वारिया पौरिके पौरिया	.... ६८
द्वार पौरियाको रूप राधे को बनायलाई	८९
दिल लेगयो हमारो नँदलाल हँसते २	११५
दिलदार यार प्यारे गलियों में मेरे आजा	१२४
दीनहूं के बंधु द्याल मोचो दुःखतत्काल	२५
देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति	७
देखोरी यह कैसो बालक रानी यशोमति	८

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
देख चरित मोहिं अचरज आवै	३०	देव एक महादेव	.... २७४
देखोरी मथनियां कैसे फोरीनँदलालने	३४	देखतके नर दीखतहैं	.... २६६
देखन दे मोरी बैरन पलकैं....	३९	देहतो स्वरूप तौलों	.... २६७
देखो माई बादर की बरियाई	४३	देखवेको दौरितो	.... २६९
देखी कहूं गलिन में मो प्राण जीवनी	५४	देवहूं भयेते कहा	.... २७०
देखोरी या मुकुट की लटकन	६६	दैने दई फल फूल अनेक औ	.... २७९
देजा गुजरिये दधि माखन....	८६	द्रौपदी धारचो ध्यान	.... १७४
देखत की मुख ऊजरी गूजरी	८८	दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं	.... ३२४
देख युगल छबि सावन लाजै	९४	दम दुर्मद दान दया	.... ३६०
देखोरी यह नंदका छोरा बरछीमारेजाताहै	१२१	दास सुदामा को संपति दै....	.... २१२
देखियत गुणन गरूर	१४३	दानी भये नये मांगत दान	.... ३२६
देखरी आज नव नागरी वेष धर	७८	दानि जो चार पदारथको	.... ३६८
दंपति दर्पण हाथ लिये	१३०	दानी कहुं शंकरसे नाहीं	.... ३६८
दर्मादे ठाढे दर्बार	१८५	दाल दिलगीरना होय भूले....	.... ३२६
दशरथ राज छवीलो छैलहोरी	२४३	दिलों मुहब्बत जिन्हां	.... ४०५
द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे	२०४	दीनबंधु दयासिंधु	.... ३११
दाताऊ महीप मान्धाता दिलीप	२८२	दीनदयालु दिवाकर देवा	.... ३६८
दास अनन्य मेरो निज रूप	१९४	दूध दुह्यो सीरो परचो	.... ३१८
दीनबंधु दीनानाथ	१६२	दूर ते आय दुरेही दिखाय	.... ३३७
दीनानाथ दयासिंधु	१६६	दोउ भैया मैया सों मांगत	.... २२
दीनदयालु सुने जबते	१६७	दूब दधि रोचना कनकथार....	.... ३४२
दीनन दुख हरण देव संतन हितकारी....	१७०	दूलह श्रीरघुनाथ बने	.... "
दीन हित बिरद पुराणनगायो	२३६	दूषण विराध खर	.... ३४८
दीनको दयालु दानि दूसरो नकोई	२४६	दूध पिये सिद्ध	.... ३८९
दीनभयो गजराज	१७४	देखन को सखी नैन भये	.... ३१५
दीजै दरश मोहिं	१७८	देख सखी नव छैल छबीलो....	.... ३२९
दीपमें पतंग परे	२७२	देख सखी वृषभानु किशोरी	.... ३३३
दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो....	१७६	देश विदेशके देखे नरेश	.... ३४०
दुनियाके परपंचोंमें	५२४	देख ज्वाला जाल	.... ३४७
दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे	२१३	देवधुनि पास मुनिवास	.... ३६७
देखा देखी रसिक न होइहै	२०६	देखोरे मेरी मति बौरानी	.... ४०७
देख सखी शिरपाग रामके	२४९	द्रौपदी औ गणिका गज गीध	.... ३४०
देखोरी छबि राम वदनकी	२२९	दरश अपना जो तुम रघुवर	.... ५०६
देखोरी यह नैनन भर भर	२३२	दशचार सो भवन रचे	.... ५३२
देख सखी आज रघुनाथ शोभा बनी	२३९	दस्सीयो मोहन किस दानी....	.... ५१८
देख सखि आज वन्योश्री	२०२	दया चट्ट होगई	.... ५२८
देवदृग तारे	१६८	दारिद देख सबको यहँसे....	.... ४५१

पद.	पृष्ठांक.
दासतो तिहारेजी	.... ५१७
द्वारकाके बीच पासा खेलत हरि	.... ५६३
दिनते पहर	.... ४४२
दिला यकदम नहो गाफिल....	.... ४९९
दीन बिसारचो दिवाने तैंने....	.... ४६२
दीजिये दर्श मोहिं चतुर भुजनकर	.... १७८
दीनानाथ अब वार तुम्हारी	.... ५१५
दीन मलीन दुखी अंग हीन	.... ५५६
दीनबंधु दीनोंकी हरतेथे पीर	.... ४९३
दुख हरता हरिनाम पछानो....	.... ४४९
दुनिया झूठी तैं साँई सच्चा	.... ६००
दुनिया झूठी ते लोकभी झूठ	.... ५०१
दुनियाको दौरनाहै	.... २६६
दुर्लभजन्म पुण्य फल पायो....	.... ४४१
दूध तो बछेरे थनों विटारचो	.... ४३३
दूध कटोरी गडेव पानी	.... ४७१
दूर रहो रघुवीर खेरे मम	.... ५१२
देबापाहन तारी पले	.... ४२८
दीजिये दर्शन मुझे वंशीके बजानेवाले....	५०७
देखो आली ठाढे कदमकी छैयां	.... ४९९
देखके जाना फाग मोहन	.... '
देह सों ममत्व पुनि	.... ५३५
देखें तो विचारकर	.... ५३५
देखो देखो ब्रजवासिनके भाग	.... ५४४
देखो वृंद्रावनके कैसे भाग	.... ५४५
देखोरी या वेनी गूंथी नंदकेकुमार	.... ५४५
दौलत पाय न कीजिये	.... ५२७

(ध)

पद.	पृष्ठांक.
धन मेरे भागकी शुभघरी	.... ८२
धवल महल चढ़ रत्न बंगला	.... ९६
धूर भरे अंग खेलत मोहन	.... १६
धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके	.... २४
धनि धनि श्रीवृंदाबन धाम....	.... १६४
धनि यह राधिकाके चरण	.... १९५
धर्म मणिमीन मर्य्यादमणि रामचन्द्र	.... २११
धन धन धन मातगंग	.... २२१
धरे टेढी पाग टेढी चन्द्रिका	.... २१८
धर धीर कहैं चल देखियजाय	.... ३४७
धर्म को सेतु जग	.... ६६४
धूर भरे अति शोभित श्यामजू	.... ३१४
धन धन्य रामवेणु बाजै	.... ४५९
धनवंता होय कर गर्वावे	.... ४८८
धृग धृग नर नारी नाम विना	.... ५०४
धन ईश दियो जग भीतर जो	.... ५३२
धन धन केशवा कटत कलेशवा	.... ५३३
धन्य भई तिनकी जननी	.... ५३९
धायोरे मन दुहुँ दिशि धायो	.... ४४४
धूप दीप घृत साज आरती....	.... ४४३
धूत कहो अवधूत कहो	.... ५२३
धूल जैसो धन जाके	.... ५३६
धौरे मोहन धौरे सोहन	.... ५४२

(न)

पद.	पृष्ठांक.
नट नागर चित चोर गेंदतक मारी सवलिया	३५
नहिं बिसरत सखी श्यामकी सरतिया	११९
न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां	३८
नाचत छैल छबीलो नंदका कुमारहै	६६
नारी हूं न जानै बैदा निपट अनारीरे	१०९
निशि काहेको वन उठधाई	.... ५९
निर्तत गोपाल संग राधिका बनी	.... ६५
निरख सखी चार चंद्र इक ठौर	.... १३०
नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोइगाहकहोय	८२
नीको लगे राधावर प्यारो	.... १२९
नेक मेरे बारे कान्ह छाँडि दे मथनियां....	२२
नैनों की मारी कटारी मेरे	.... ३५
नैनन चकोर मुख चन्द्रहूको वारिडारों	६४
नैनन की चंचलता कहा कीने	.... ६९
नैनोंरे चितचोर बताओ	.... ११९
नैनन की कौरैं को लैहै	.... १२८
नैना मान अपमान सह्यो	.... १२१
नंदनंदन बृंदाबन चंद	.... १५
नंद भुवनको भूषण माई	.... १८
नंद बुलावत हैं गोपाल	.... २०
नंदलाल निठुर होय बैठ रहे	.... ८३

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.
नमो नमो बृंदावनचंद	.... १६६
नव कुँवर चक्रचूड़ा नृपति	.... १९६
नई बहार आई मनभाई	.... २०२
नृपति कुँवर राजत मगजात	.... २३४
नंदके आनंद हो मुकुंद परमानंद	.... १६६
नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी	.... २४२
नहीं छोडूँरे बाबा रामनाम	.... २१०
नमामि भक्त वत्सलं कृपालुशीलकोमलं	२६२
नाहिन रह्यो मनमें ठौर	.... १५७
नाथ अनाथनकी सुध लीजै....	.... १५८
नामकी पैज राखो धनी	.... १७३
नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो	.... १८०
नाथ तुम दीनन हितकारी....	.... १८९
नाजानूं मेरा राम कैसाहै	.... २८८
निरखत रूप सिया रघुवर को	.... २३३
निरख श्याम हलधर मुसकाने	.... २१५
निशिदिन बर्षत नयन हमारे	.... १५७
नैननकी पलही पलमें	.... २६८
नंदराय के नवनिधि आई	.... २१२
नंदजू मेरे मन आनंद	.... "
नवरंग अनंग भरी छविसों....	.... ३२२
नर नारि उघारि सभा महँ होत	.... ३५१
न मिटै भव संकट दुर्घट है....	.... ३५९
नर अचेत पाप से डररे	.... ३९८
नागर छैल है गोकुलमें	.... ३२५
नाम अजामिलसे खलकोटि	.... ३४४
नाम लिये पूत को पुनीत कियो	.... ३५२
नाम महाराज के	.... ३६४
नाचतही निशि दिवस मरचो	.... ३८२
नारि के विकार सब	.... ४०६
नाम जपन क्यों छोंडदिया....	.... ४१३
नाहीं मेरे जाति पाँति	.... ३६०
नून नाम अरु रूप	.... ३८८
नैन लख्यो जब कुंजनते	.... ३१७
नैनन बंक विशाल के बाणन	.... ३१८
नंदनंदन के ऐसे नैन	.... ३३४
नृप कन्या के कारणे	.... ४५१
नरू मरै नर काम न आवे	.... ४५३
नहिं कछु जन्मै नहिं कछु मरै	.... ४८८
नहीं ऐसो जन्म बारंबार	.... ५१८
नभमें सुरलोक रचे हरिजी....	.... ५३१
नवल वसंत नवल श्रीवृंदावन	.... ५४४
नहीं हम वेदके वादी	.... ५५०
ना मैं योग ध्यान चित लाया	.... ४२५
नाथ कछुअ न जानौं	.... ४४४
ना इह मानस ना इह देह....	.... ४५४
नाद भ्रमे जैसे मिरगाये	.... ४५४
नाम लेत कछु विघ्न न लागै....	.... ४६६
नांगे आवन नांग जाना	.... ४६८
नागर जनां मेरी जाति	.... ४८१
नाना रूप नाना जाके रंग....	.... ४८९
नाम को आधार तेरे	.... ५०७
नाचत दे दे तारी ग्वाल	.... ५१२
नाद के लोभ तजे मृग प्राण सो	५३१
नाहिं फले जगमाहिं निशेश....	.... ५३३
नित उठ कोरी गाजर आनै	.... ४५१
निमाने को जो देतो मान	.... ४५२
निर्धन को धन तेरो नांउ	.... ४८५
निर्धन आदर कोइ न देय....	.... ४६८
निर्गुण आप सगुण भी ओही	.... ४८९
निरख सखी शोभा श्री रामकी	.... ५२०
निपट बंकट छबि अटके मेरे नैना	.... ५६१
नीच जाति	.... ४४६
नीकी कीरी मैंकल राखै	.... ४८९
नीर बिन मीन दुखी	.... ५३१
नीर भरे नैन	.... ५५६
नेह जुरचो नंद नंदनसों	.... ५४८
नैनो नीर बहै तनुक्षीना	.... ४४१
नैना की नोकें बुरी	.... ५२८

(प)

पद.	पृष्ठांक.
प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो	४५
परम धन राधानाम अधार	६०
पहिले तो देखो आय मानिनीकी शोभा लाल	८०
पहिले मेरो दान चुकारी	.... ८७

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई....	.... १३५	प्यारेजी गिनती कईहजार पढे	.... २०९
पांडे भोग न लागन पावे	.... १९	प्यारेजी फूलों कीसी सेज	.... "
प्यारे जिन मेरी बांह गहो	.... ३२	पाती सखि मधुवन से आई	.... १५२
प्यारीको शृंगार करत नँदलाला	.... ५२	पिया बिन नागिन कालडी रात	.... १५८
प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम	.... ५९	पिया तोरी नजरिया जादूभरी	.... २३०
प्यारे तेरे जीयाकी न जानो जात बातरे	६८	प्रीतम नूपुर मति न उतारो	.... १९९
प्यारे मेरे गरवामें जिनडारो बैयां	७०	प्रीतिकी रीति रंगीलोई जानै	.... २००
प्यारीजी तिहारे विन कल ना परत है....	७१	पांडेजी मोहिं रामनाम लिखदेह	.... २०९
प्यारी प्रीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना	९८	प्रीतिकी रीति रघुनाथ जानै	.... २४९
प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे....	.... ११९	पीलैरे अवधू हो मतवारा प्याला	.... २९०
प्यारी नैना लगाय छिपजामदा	.... १३२	प्रीतम जान लेहु मनमाहीं....	.... २८९
प्यारी इक मालिन पौर तिहारी	.... १३८	पुण्यनके वशते सुभोग चिर	.... २७३
प्यारो पैये केवल प्रेममें	.... १३६	पूतना बिषदे अमृत पायो	.... १८४
प्यारी पिया दोउ खेलत होरी	.... १०४	पूंछत ग्राम बधू मृदुवानी	.... २३५
प्रीतम तुम मो दृगन वसतहौ....	.... ५३	पूर्ण ब्रह्म बताय दियो जिन....	.... २६३
प्रीतम रहे प्रिया मनलीये प्रियारहे मनपीको	६१	पेटते बाहर होतहीं बालक....	.... २६६
पूत सपूत जन्यो यशुदा	.... ९	पग नूपुर औ पहुंची कर कंजन	.... ३४१
पौढे श्याम जननि गुणगावत	.... ४०	पद पंकज मंजु बनी पनहीं	.... "
परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो	१५१	प्रभु रुख पाय कै	.... ३४५
पतित पावन हरिनाम तिहारो	.... १८०	पद कोमल श्यामल गौर कलेवर	.... ३४७
परम पुनीत प्रीति नँदनंदन....	.... १९३	प्रभु सत्य करी प्रह्लादगिरा	.... ३५१
पगिया शिर लाल हरी कँलगी	.... २२६	पठयो है छपद छबीले कान्ह	.... ३६६
प्रथमे गुरुजीके चरण वंदों	.... १९०	पगन कब चलिहौ चारो भैया	.... ३७६
पति राखो मोरी श्याम विहारी	.... १७५	प्रभु हौं सभ पतितनको टीको	.... ३७९
पापके कारणते	.... २८२	प्रभु तेरी लीला अगरंपार अगमअपार....	३९२
परिवारके सनेहको	.... २७२	प्रभु मेरी नाव उतारो पार	.... "
प्रतिकानन बिरछनते मन वाछत	.... २७५	प्रभु प्रेम एक शरबतेदिलकशाहै	.... ४१२
प्यारीजी मोतन हूं टुक हेरो....	.... १६३	प्राण वही जुरहें रिझवापर....	.... ३३९
पाती मोरी द्वारका लेजाय....	.... १७९	पात भरी सहरी	.... ३४४
प्यारीजी तेरे अंगमें फूलनकी बहारहै....	२०१	पाप हरे परिताप हरे	.... ३५६
प्यारी तुम कौन होरी फुलवा बोननहारी	२०३	पाय सुदेह विमोह नदी	.... ३६०
प्यारी मैंतो तिहारी मालिनियां	.... "	प्राणीको हरि यश मन नहिं आवै	.... ३७९
प्रात समय रघुवीर जगावे....	.... २२४	प्यारे गम छोड़ दुनियाका....	.... ४०९
प्रात समय उठ जनकनंदिनी....	.... २३९	पिय प्यारी आज होरी खेलतयमुनातीर....	३३३
पारब्रह्म परमेश्वर	.... २१५	पीरे बन बाग अनुराग भरे	.... ३२३
पांच बरसके भये कुमरजी....	.... २०८	प्रीतम तुम मोहिं प्राणते प्यारो	.... ३२७
पांडेजी मैं नहिं रखता प्यार....	.... २०९	पूर्व पुण्यनते चितई जिन	.... ३२१

पद.	पृष्ठांक.
प्रेम पगे जुरँगे रँगसाँवरे	.... ३२२
पोह प्यारा याद	.... ३९१
पंचवटी बर पर्ण कुटी तर	.... ३४७
पवन गुरु पानी पिता	.... ४१५
प्रभुजी तू मेरे प्राण अधारे	.... ४४९
प्रभु एही मनोरथ मेरा	.... ४३४
पढें वेद सारे जपतप व्रत धारे	.... ५०६
पढिये गुनिये	.... ४५८
पवन उपाय धरी सब धरंती	.... ४२९
प्रथमे छोडी पराई निंदा	.... ४६५
परधन परदारा परहरी	.... ४७०
प्रभुकी सेवा जनकी शोभा....	.... ४८२
प्राण पुत्र दोऊ बड़े	.... ५२७
प्रभुका सुमिरै सो पर उपकारी	.... ४८४
प्रभुके सुमरण	.... ”
प्रभुको सुमिरण सुमिर मन मेरे	.... ४१३
प्रभु बखशिंद दीनदयाल	.... ४९०
पढले इशक किताब	.... ५०३
प्रभु हो कब लौं नाच नचैहो	.... ५२६
प्रथम हिये विचार	.... ५३५
पढो भैयारे कृष्ण गोबिंद मुरार	.... ५६१
पारब्रह्म अपरंपर देवा	.... ४१९
प्राणी कौन	.... ४३७
पार परोसन पूछ ले नामा....	.... ४४०
प्राणी नारायण सुधलेहु	.... ४५७
पांच वर्ष को	.... ४६०
पापी हिये में काम बसाय	.... ४७४
प्यारी लाल तोरेरी आधीन	.... ५४३
प्यारी लाल	.... ”
प्यारी नेक निरखो नवरंग लालहि	.... ५४३
प्यारी हौं कैसे कर मान रचाऊं	.... ५५३
प्रातकाल नंदलाल खेलतहैं होरी	.... ५५८
पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम....	.... ५६२
पिया प्रेम नगरमें	.... ५१२
पिया ते मैं क्यों कीनो मान	.... ५५३
पीत वसन कुंद दशन	.... ४८४
प्रीति की रीति कछू नहिं राखत	.... ५३६
पीरो कुंडल पीरो नूपुर	.... ५४२
प्राण पुत्र दोऊ बड़े	.... ५२७
पूरे गुरु का सुन उपदेश	.... ४९१
पूंछ पूंछ वदन	.... ५३०
पूरी न परत प्रह्लादकी	.... ५४१
प्रेम लग्यो परमेश्वरसों	.... ५३१
पंडित जन माते पढ़ पुराण....	.... ४७५
पंजे मेरे वीर प्यारे नांउ पंजांदाछेया	.... ५३३

(फ)

पद.	पृष्ठांक.
फूल गये गोप गृह गोपिकन भूलगये	१०
फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी....	१००
फूलनकी चंद्रकलाशीशफूल फूलनको....	”
फूलन चंदोआ तने फूलन फरशबिछे	१०१
फूलनके बंगलेमें राजैं पियाप्यारीहो	१००
फिर फिर राम सियातन हेरत	.... २३५
फागुन पकड्यो	.... ३९१
फूल फूल फूलनके	.... ३२३
फे फिकर गिया	.... ३८८
फरजिंद नंद जूका मन बीचभामदा	५१८
फूली बनराई बेलरियां	.... ५६१

(ब)

पद.	पृष्ठांक.
बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो	१५
बलि बलि जाउँ छबीले लालके	”
ब्रह्माहूंके ध्यानमें न आवें कभू एक क्षण	२५
ब्रजकी अहीरनीके भाग्य भले देखो भैया	२६
बर्जे लेरी महरी मोहनको	२९
बरजो नहिं मानत बार बार	३२
बडो ढोटा खोटा नंदको आली	”
ब्रजबासिन पटतर कोउ नाहीं	३८
बन ते आये बनवारी	३९
वृषभानु कुँवारि जब देखौं	५४
बनत बनाऊं कछु वन नहिं आवे	८१
ब्रज पर नीकी आज घटा	९३
बलिबलि जांदियां झूलनपर	९८
बटतर सांवरो ठाढो	११८
बसे मेरे नैननमें नंदलाल	१२७
बसे मेरे नैननमें दोउ वीर	१२८

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
बँसुरिया विषभरी बाजी	.... ४८	बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे	.... १५५
बांसुरी बजे तो ब्रज हम न बसेंगी वीर	४९	बिन गोपाल बैरन भई कुंजैं....	.... १५७
बाधा दे राधा कितगई	.... ५५	बिहरत बागवा में देखे कुल भानवा	.... २२७
बाजी घर आई बाजी देखवेको धाई	५८	बिना रघुनाथके देखे	.... २३४
बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी ..	"	बिरहों ने नोकां झोकां वेलाइयां	.... १६०
बांकी छबिसों झूलत प्यारी....	.... १०३	बिद्या पढने गये गुरुकि चटशाला	.... २०९
बिलंब तज माखन देरी माई	.... २१	बीत गये पिछले सबहींदिन	.... २६७
बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान ३	७१	बैठरे मन सबरके हुजरे	.... २८५
बिन देखे मन मान न मेरो	.... ११९	बैरी घर माहिं तेरे	.... २६५
बूझत श्याम कौन तू गौरी....	.... ४५	बोलत अवनिप कुमार	.... २२५
बेनी गूंथ कहा कोइ जाने	.... ५२	बंधन काट मुरारी हमरे	.... १७८
बेसर कौन की अति नीकी....	.... ५३	वृंदावनके राजाहैं	.... १९७
बेदरदी तोहिं दरद न आवे....	.... ११९	वंदों रघुपति करुणानिधान	.... २४४
बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी	.... १२	बृंदाबन विपिन सघन वंशीवट	.... १६५
बंदों श्री हरिपद सुखदाई	.... ६	बड़ो विकरालवेष	.... ३४८
बंसीवारे तू मेरी गली आजारे	.... २४	बजी है बजी रसखानबजी....	.... ३१९
बंदौं मैं चरण सरोज तिहारे	.... ४२	बसीरहै शशि छवि ज्यों	.... ३२६
बँसुरी तू कौन गुमान भरी	.... ४९	बलकल वसन	.... ३४६
बंसी मेरी प्यारी दीजै प्रान प्रान प्रान	५१	बनिता बनि श्यामल गोरेके बीच	.... "
बंसी यमुना पै बाज रही	.... ५८	वचन विकार करतबहु	.... ३५७
बृंदाबन सघनकुंज माधुरीलतानतरे	५८	वरण धरम गयो	.... ३५९
वृंदावन कुंज धाम विचरतपियप्यारी....	५९	बबुर बहेरको बनाय	.... ३६०
बृंदावन धामनीकोब्रजकोविश्रामनीको	६२	ब्रह्म जो व्यापक वेदकहैं गम	.... ३६७
बरदंतुकी पंगत कुंदकली	.... २२३	बड़ी है राम नाम की ओट	.... ३८१
बतादे सखी कौन गली गये श्याम	.... १५८	बस्स करजी हुनबस्सकरजी	.... ४०८
बहुत दिनानमें विदेशह्वै आये	.... १६१	बस अब मेरे दिलमें	.... ४११
ब्रज रज मोहनी हम जानी	.... १६४	ब्रह्मा महेश शेष नारद गणेश	.... ३१२
ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन वेदन....	.... १९६	बांकी विलोकन रंगभरी	.... ३१५
ब्रज नव तरुणि	.... १९७	ब्याही अन ब्याही	.... ३१८
बन्यो सिया प्यारीको वनरा....	.... २२८	बांकी कटाक्ष चितैवो सिख्यो	.... ३२१
बन्यो सखी दूलह अवध रँगीलो	.... २२९	बारहीं गोरस बेंच री आज तू	.... ३२४
बरज यशोदे तू अपनो बाल	.... २१६	बालि दल कालि	.... ३५
बजावै मुरलीकी तान सुनावै	.... "	ब्याल कराल महाविष पावक	.... ३५५
बांको हमारो यार सँवालिया ...	.... २४१	बालक बोल दियो बलि काल	.... ३६५
बार बार समुझाय रहीमैं	.... २९०	बावरो रावरो नाह भवानी	.... ३६९
बात चलनदी करहो	.... २८५	ब्राह्मण वैश्य शूद्र	.... ४०४
बार बार कह्यो तोहिं	.... २६५	विश्व जयी भृगुनायक से विन	.... ३४८
		।बसाख बिसारचो	.... ३९०
		बिथा कहों कौन सों मनकी	.... ३९८

पद.	पृष्ठांक.
बेर बेर टेर टेर	.... ३१२
वेद औ पुराणन में	.... ”
बेणु बजावत गोधन गावत....	.... ३१९
वेद न पुराण गान	.... ३५७
बे बन्ह अँखी	.... ३८५
वैरिन तैं बरजी नरहै	.... ३२१
बैदकी औषध खात कछू न....	.... ३३९
बंक विलोकन है दुखमोचन	.... ३१६
बंसी बजावत आन कढ्योरी	.... ३२२
बंसीबट यमुना तट निरतत वनवारी....	३३५
बडे बड़े जो दीसहिं लोग....	.... ४२०
ब्रह्मै गर्ब किया नहिं जाना	.... ४२१
बहु प्रपंच कर परधन ल्यावे....	.... ४४०
बडे बड़े राजन अरु	.... ४४१
बदो क्यों ना होड माधो मोसों	.... ४७९
ब्रजबासी कन्हैयालाल	.... ४९५
ब्रजराज के सखि	.... ५०८
बसोजी म्हारे नयननमें सियराम	.... ५०९
बदियां नाकर गाफिल	.... ५१३
ब्रजमोहन आयोरे	.... ५२०
बरकौन भँगो तुमते हारिजी	.... ५३१
बलि बासव	.... ५४५
बहुत तुम कहत सब	.... ५४८
बन पड़े तो नेकी करना	.... ५५१
बाजीगर जैसे बाजी पाई	.... ४४६
बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे	.... ४५८
बाँके सांवरिया ने घेरी मोहिं आनके	.... ४९५
बांकीयां पग्गां ते	.... ५०१
बाएनी तूं वग्ग सवेले	.... ५६०
बागों नाजारे तेरी कायामें....	.... ५०९
बाणी बहुत प्रकारहै	.... ५३१
बादल दौरे जातैहैं	.... ५३९
बांको छैल गुमानी मैया तेरा	.... ५४७
बिन सत सती होय कैसे नारि	.... ४२४
विषया व्याप्या सकल संसार	.... ”
विसरत नाहिं मनते हरी	.... ४६३
बिरथी शाकत कीआरजा....	.... ४८७
विना विचारे जो करै	.... ५२८
बीतजैहै बीतजैहै जन्म अकाजरे	.... ४८३
बीती ताहि विसारदे	.... ५२८
वीर यह पीर न जानेरी	.... ५५८
बुरे कामको	.... ४४७
बेटा बेटी भार्या भाई सुत संसार	.... ५२९
वेद विरुद्ध महामुनि सिद्ध	.... ५५६
बैठे हरि राधासंग	.... ५५१
बैठिये ना जहाँ तहाँ	.... ५०९

(भ)

पद.	पृष्ठांक.
भृकुटी तनीको नकबेसर बनीको	.... ६३
भक्त हेतु अवतार धरोंमैं	.... ९१
भलारे रँगीले छैला तैं जादूमोपै डारा	११५
भयो जयकार जन्मे मुरारी....	.... ६
भवन ते निकसे नँदकुमार....	.... ११३
भाग्यवान वृषभानुसुता सी को	.... ६२
भीगत कब देखूं इन नयना	.... १०४
भीगत कुंजनमें दोउ आवत	.... ”
भूषण अपने लैरी मैया	.... ४७
भोर भये उठ आये मोहन....	.... ६९
भजन भावना हियना परसी	.... २०५
भरत कपिसे उऋण हम नाहीं	.... २३९
भजमन रामचरण सुखदाई	.... २५७
भजमन रामचरण दिन राती	.... २५८
भजमन श्रीराधा गोपाल	.... २९५
भरोसो कृष्णको भारी	.... १८६
भजो मन बृंदावन सुखदाई	.... १६५
भावीके भाव अभाव यथा न	.... २७१
भाजन आप गढ्यो जिनने	.... २६८
भुजन पर जननी वार फेर डारी	.... २३२
भूमि सेज मूल फल	.... २७२
भूमि हूं की रेणुकी तो	.... २६४
भेजा तुम योग हम लीया धर शीशपर....	१५१
भेडिन में जिमि सिंहको सावक	.... २७८
भोगन में रोग भय	.... २७७
भोरभयो जागो रघुनंदन	.... २२४
भोरभयो जागोमनमोहन	.... १९९

पद.	पृष्ठांक.
भले भूप कहत भले भदेश भूपनसों	३४२
भल भारत भूमि भले कुल जन्म	३५४
भलो भली भांति है जो मेरे कहे लागिहै	३७५
भले बुरे तो तेरे	४०३
भयो नति काल तिहूं	३६३
भादों मार पिया	३९०
भ्रातृगण यह उपदेश हमारा	३९७
भिक्षुक तिहारो कहां	३१४
भूमिपाल व्याल पाल	३५३
भूल्यो मन माया उरझायो	३९९
भेष सुवनाय भले वचन	३६२
भोग में रोग वियोग संयोगमें	४०६
भौंह भरी बरुनी सुथरी	३१५
कमान सँधान सुठान जे	३६२
भई प्राप्त मानुष्य देहुरिया	४१७
भक्त वत्सल	४३१
भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये	४४७
भला जाग रे सारीरैन विहानी	५२३
भव हारक के चित नेम कहे	५३८
भरोसो दृढ़ इन चरणन केरो	५६३
भाई तैंने सितम गुजारारे....	५०५
भुजा बांध मिलाकर डारयो	४५३
भूखे भक्ति न कीजै	४४०
भूर भाग्य भाजन भई	५०६
भोजनकी बात सुन	५३७
भाई वंधु संवंधी सारे	६००

(म)

पद.	पृष्ठांक.
महराने ते पांडे आयो	१८
महारानी श्रीराधे रानी	६०
मनावत हार परी मेरी माई	७९
मन मोहनी मनमोहना मन मोहिबो करो....	८०
मृदु मुसकन कीजे थोरी थोरी	८४
मनभावन हर्षावन आवन सावन	९८
मची है आज वंसीवट पै होली	१०७
मन हर लियो है मेरो वा नंदके दुलारे....	११४
मन मोह लिया श्यामने	१३२
मन माने की बात नहीं कछु जातिको	१३६
मनमोहन लाल बड़ो छलिया	१३८
मन अटक्या बेपरवाहे नाल	१२७
मानो बात लालन मोरी	१८
माखन तनक देरी माय	२१
माखन चार री हैं पायो	२३
माखनकी चोरीरे	२६
माई विधि हूं ते परमप्रवीन	४८
माथे पै मुकुट देख चन्द्रिका चटकदेख....	६२
मामियं बलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन	७४
मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावेरी	७६
माईरी आज और काल्ह	११२
माईरी आजको श्रृंगार सुभग ..	"
माथे पै मुकुट अति कुंडल....	१३७
मालिन मधुभरे नैन रसीले....	१३८
माधव केवल प्रेम पियारा	१३६
मिलना वे महबूब विहारी	१२४
मिलना वे दिलदार सांवरे....	१२५
मिठ बोलनी नवल मनिहारी	१३९
मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं	५०
मुकुटके रंगनपै इन्द्रको धनुषवारों	६४
मुकुट माथे धरे खौरचन्दनकरे	११२
मेरी भरी मटुकिया लैगयोरी	२७
मेरी सुधि आन लियो प्यारी राधा	५५
मेरी तो जीवन राधा विन देखे नहिं चैन	५५
मेरे कर महिंदी	८२
मेरा छांडदे अँचरवा	१०१
मेरे नैनों का ताराहै	१२५
मेरे जिया ऐसी आन बसी	१२६
मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई	"
मैं योगी यश गायारी बाला....	११
मैया मोहिं बड़ो करलैरी	१६
मैया मेरी कब बाढ़ैगी चोटी	१७
मैया मोहिं दाऊने वहुत खिझायो	१७
मैयारी मोहिं माखन भावै	....२२
मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो	२९
मैया मैं गाय चरावन जैहौं	३७
मैया मोरी कमरी चोरलई	४०
मैया मोहिं ऐसी दुलहिनि भावै	४७
मैं तो थांपे वारी हो विहारी जी	८५

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
मैंही तो हूं नंदको लाला	९१	मास ग्रंथि कुचनको	२७५
मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय	१०९	मान लियो तात भ्रात	२८०
मैंने देखीरी आज मोहनकी हँसन	१११	मात पिता युवती सुत बंधव	२६७
मैं गिरिधर सँग राती ग्वैयां	१२६	मिलजाना हो प्यारे नंद किशोर	१६०
मैंनू हरदम रहिंदा	१२७	मिलजाना राम प्यारे	२३४
मैंनू वरज ना भोलडीमाँ	"	मुकुट पर वारी जाऊं नागरनंदा	२१०
मोको रंगमें बोर डारीरे	१०७	मुरलीकी टेर सुनावैरी माईको	२०४
मोहिं नंद घर लै चलो ढाढिनियां मचलरही	९	मूरख छांड वृथा अभिमान....	२९५
मोहन जाग हौं वलिगई	१४	मूठीएक माटीकी	२७८
मोहिं दधि मथनदे वलिगई....	२२	मूएते मोक्ष कहैं सब पंडित....	२७०
मोको डगर चलत दीन्हीं गारीरे	३३	मेरीतो विहारीजी प्यारे तोहिं लाज	१६८
मोहिं मत रोकैरी तू एरी ब्रजनागरी	६७	मेरी सुध लीजो श्रीनंदकुमार	१७१
मोहन मैं गूजर वरसानेदी....	८७	मेरी सुध लीजो श्रीब्रजराज	"
मोर पखा मुरली वनमाल....	११०	मेरे माधोजी आयो हौं सरे	१७६
मोर मुकुट बंसीवोरेने	११४	मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो	१९५
मोहनी रूप बनायो हरिने बाना	१३७	मेरे गिरिधारीजी सों कौन लरी	२०४
मोसों बात सुनो ब्रजनारी....	९०	मेरीसुध आनलियो रघुराया	२३३
मंडल रास विलास महा रस	६३	मेरीसुध आनलियो सियाप्यारी	२३५
मधुकर श्याम हमारे चोर....	१५७	माताजी दूंगा द्रव्य अघाय....	२०८
मनमें मंजु मनोरथ होरी	२२८	मेरी प्रीति गोबिंदसों ना घटे	२६१
मन पछतैहै औसर बीते	२९०	मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा	२४०
मनरे प्रभुकी शरण विचारो	२८९	मेरी आँखि दया हो लाज	२८६
मतले तू रामको नाम	२०८	मेरो देह मेरो गेह	२६७
मदनगुपाल हमारे राम	२११	मैंतो हूं पतित आप	२६७
महलन चलो नवल अलवेली	२०१	भैया मोको वैरन धनुष भयोरी	२२७
मतले रामको नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी	२०८	मैं किहिं कहों विपति अति भारी	२४६
मनही के भ्रमते	२६९	मैं कौन वन ढूंढ़ौंरी	२३४
मानस हूं तो वहीं	१६२	मैंतो पतित उधारो श्री रामा	२४७
माधो जू जो जनते विगरै	१६८	मैंनू तारीं वे रब्बा वंदी अवगुण हारी	१८३
माने पार उतारो जी	१७२	मोर मुकुट वारो धरे	१६७
मुहारी सुधलीजो हो त्रिभुवन धनी	१७७	मोसम कौन कुटिल खल कामी	१७०
म्हारो काँई विगरेगो	१७९	मोसम कौन अधम जगमाहीं	"
मालक कुल आलमके हौ तुम	१८३	मोमन बसो श्यामा श्याम	१७७
माधव गति तेरी ना जानी	१८४	मोह जनित मल लाग विविध विध	२६१
माई नित उठ	२१७	मोहन जानी तिहारी बात	२१९
मात पिता हितबंधु	२८३	मंगल रूप यशोदा नंद	२१०
माटी खुंदी करेदीयार	२८६	मंगल आरती गोपालकी ...	१९

पद.	पृष्ठांक.	पद.	पृष्ठांक.
मकराकृत कुंडल गुंज कि माल	३१८	मोपै कैसी यह मोहनी डारी	३३१
मन मोहन जाकी दृष्टि परत	३२९	मोहन बसगये मेरे मनमें	३३१
मतमारो पिचकारी श्याम अब देउँगी....	३३३	मोर पखा शिर ऊपर राखिके	३३६
मन मोहन सम सुंदर कोहै	३३४	मोहनजूके वियोगकी ताप	३३८
मख राखवेके काज	३४३	मंगल मूरति मारुतनंदन	३७२
महा बलि बालि दलि	३५२	मंडन है ऐश्वर्यको सज्जनता सन्मान....	४०६
महाराज बलि जांउ	३६१	मनरे गह्यो न गुरु उपदेश	४३८
मनकी मनहीं माहिंरही	३६३	मनरे सांचा गहो विचार	४४४
मनरे कौन कुमति तैं लीन्ही	३६४	मनमें सिंचो हरि हरि नाम	४४९
मर्कत बरन परन	३६७	मन कहा बिसाऱ्यो रामनाम	४७५
मन इतनोई या तनुको परमफल	३७४	मन कर कबहुँ न हरिगुण गायो	४७८
मनरे कहा भयो तैं बौरा	३८०	मनमें क्रोध महा अहंकारा	४८२
मन माधवको नेक निहारहि	३८२	मन मूरख काहे विललाइये	४८९
मगहर मस्त होया	३९१	महाराज धन धन कुबरी	४९७
मन राम सुमिर पछतायगा	४००	माई मैं मनको मान न त्यागो	४६४
मन मेरो गज जिह्वा काती	४०३	माथे तिलक हथ माला बाना	४६८
मणि की औंधि है आधी वरी	३३५	माई मैं धन पायो हरि नाम	४७४
मांगिये गिरिजापति काशी	३६९	माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई	४७९
माथे हाथ जब	३७९	मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने....	५०६
मातु सकल कुल गुरुवधू	३७८	मन मस्ताइयाँ छडहो यारा	५१६
मुरली मुकुट दुरायके	२२०	माथे हाथ जब दियो	३७७
माधोजू मोसम मंद न कोऊ	३८२	मायनी सुन मेरीये माएकी	५६०
माघ मान ना	३९१	मान मनायो राधा प्यारी	४९६
माणि मृग खंजन	३२३	माधो हरि हरि मुख कहिये	४२१
मीत पुनीत किये कपि भालुको	३५१	माल जिन्होंने जमाकिया	५००
मीम मौजूद हरजाय	३८८	माधौ जलकी प्यास न जाय	४२२
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु	३४७	माये खेलन दे दिन चारनी	५०५
मुकुंद जपो संसार	४०४	माया मोह मगन अँधियारे....	४३७
मेरो सुभाव चितैबोको माईरी	३२०	मानती ना प्यारी सखियां	५४०
मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई	३७५	माई मैं किहि विधि लखों गुसाँई	४३८
मेरे मन रामको नाम अधारा	३९७	माये नी मैं रहां कुआंरी	५५९
मेरे रानीजी मैं गोंविदके गुण गाना	४०२	माई मन मेरो वश नाहिं	४३८
मैन मनोहर वेणु बजै	३१७	माये नी सुन मेरिये	५५९
मैं मन तेरी टेक प्यारे	४०८	मांगोदान ठाकुरनाम	४४५
मोहनकी मुरली सुनिकै	३१९	मिथ्या श्रवण परनिंदा सुनहिं	४८७
मो मनमोहन सों मिलिकै	३२२	मिल लेहु नी	५०२
मोरकी चंद्रिका मोर लसैं	३२४	मिथ्या तन धन कुटुंब सवाया	४८७
मोहनके मन भाय गयो	३२५	मिथ्यानाहीं रसना परश	४८७

पद.	पृष्ठांक.
मुखड़ा क्या देखे दर्पणमें	.... ५०८
मुसमुस रोवै कवीरकी माई	.... ४३३
मुनि मख राख्यो मार	.... ५२५
मुखसों राधाकृष्ण बोल तेरा क्या	.... ५५२
मेरेही आंगन बरसे	.... ४९४
मेरे सर्बस नाम निधान	.... ४५९
मेरे मन वसगयो सीताराम....	.... ४९५
मेरो बाप माधो तु	.... ४५'
मेरो यासों लागा	.... ४९६
मेरी पट्टीयाँ लिखहु	.... ४६५
मेरी फरियाद है महाराज	.... ५०४
मेरी कौन गति ब्रजनाथ	.... ५२५
मेरे प्रीतम प्राणपियारे	.... ४७९
मेरीगति जानकी जीवन राम	.... ४९६
मैं तुमरी शरणागत प्यारे....	.... ४९९
मैं अंधलेकी टेक	.... ४४६
मैंने थारा काई बिगारचो काज	.... ५२१
मैं बहुरी मेरा राम भरतार....	.... ४७१
मैंतो तुमसों होरी खेलों	.... ५४०
मैंतो थारे दामन लगी जुगुपाल	.... ५४८
मैंनू अयानी सँदेशा श्यामदा	"
मैं विरागन श्यामदी लाल....	.... ५५९
मैं न जाऊं हरि पासरी	.... ५४४
मोहनाचलो चलो कदमकी छैयां	.... ४९७
मोती तां	.... ४१७
मोहिं बिसरत नाहिं सुध सनम	.... ५१०
मोकों तार ले रामा तारले....	.... ४५४
मोहन छबीला मनभामदा	.... ५४५
मोको तूं न बिसार तू न बिसार	.... ४८१
मोहिं लगेरी श्यामके नयन बाण	.... ४९८

(य)

पद.	पृष्ठांक.
यहांलौं नेकचलो नँदरानी जू	२७
यशोदा तू बड़ी कृपणरी माई	३०
यमुना न जानपावें भरने न देत पानी	३४
यशोदा तेरो काठिन हियोरे माई	३०
यशोदाने कारी अँधेरीमें जायो	४७
युगल छबि आज अनूपबनी	८३
यगल बर झूलत दे गलवाहीं	९७
युगल बर झूलत डार गलबाहीं	९८
यह कहके प्रिय धामगई	.... ५४
यह कमरी कमरी कर जानत	९०
यह सुनिकै हलधर तहँ आये	३१
यह रस रीति	.... १४७
यह जानत तुम नंद महासुत	९०
याही मेरा प्यारा रे दान मांगे	८७
या ऋतु रूस रहनकी नाहीं	.... १०२
या ब्रजमें कैसी धूम मचाई....	.... १०५
या मोहना मोहिं आन ठग्योरी	.... १०८
या सांवरे सों मैं प्रीति लगाई	.... १२५
या ब्रजमें कछु देख्योरी टोना	.... १२८
योगियाधर ध्यान रहैं जिनको	२४
यह दोऊ चंद बसे उर मेरे	.... २४१
यह जगदर्शन मेला है	.... २९१
यह मन भूल रह्यो है कहा	.... २८३
यह रसरीत प्रिया प्रीतमकी	.... १४७
यह श्रुति ज्ञान सुजाननके....	.... २७२
ये मेरे देश विलायतहैं गज	.... २६६
याही कुंज कुंजन तर	.... १५३
या जग मीत ना देख्यो कोई	.... २८९
याद करेगा इस जीवननू....	.... २८४
या शरीर माहिं तू	.... २६८
योगी तजे जगत हम जगत योग	.... १५३
यशोदा कान्ह हूंते दधि प्यारो	३०
याद आता है वही वंसी क बजाना तेरा	११६
यशुमति बार बार यह भाषै....	.... १४९
यमुना पुलिन कुंज गहवर की	.... १६३
योग देन गयो हौं	.... १६१
यह नैना रिझवार नयेरी	.... ३२८
यही मोहन जिन मोहीं ब्रजवाला	... ३२९
यह देख धतूरे के पात चबात	.... ६३९
यह मन नेक न कह्यो करै	.... ३६३
यही घडी यह बेला साधो....	.... ४०२
यहि घाटते थोरिकदूर अहै	.... ३४४
या शिशुके गुण	.... ३७८
यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो....	३५१
ये दोऊ झूलें री मनकी मोहनहार	.... ३३१

पद.	पृष्ठांक.
ये यार पाया	३८९
योगकथा पठई ब्रजको	३६६
यक अर्ज	४४५
या मोहन के मैं रूप लुभानी....	५४७
यह दोऊ झूलत रंग हिंडोरे....	५५८
यह लौकिक मस्त	५६६
यशोदा जी के द्वारे पर	५२१
यह मन	५३३
योग न विराग	३५८
यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी	५४९

(र)

पद.	पृष्ठांक.
रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद	६०
रहरी माननी मान न कीजै....	७८
राजधानी तुमरे चित नीकी....	९२
रसियाको नारि बनाओरी....	१०५
रानीजू लीजिये यह गाम	२७
राखि लेहु गोकुलके नायक	४३
राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो	५३
राधाजू की सहज अटपटी बोलन	७०
राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो	७१
राधा प्यारी बात सुनो इकमेरी	७१
राधा सों माखन हरि मांगत	९३
राधा नंद किशोररी सजनी	११६
राधा रमण मनोहर सुंदर	१३३
रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी	१२६
री वंसी कौन तप तैं कियो	४९
ां तो या मग निकसी आय	११३
रंगनभीग गई हो मोहन सारी सुरखनई	१०७
रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दांव लगा	१०८
रूप रसिक मोहन मनोज मन हरण	२०
रैन गईरी प्यारी छांडो हठेरी	७६
रैन मोहिं जागत विहानी	८१
रोके मोरी गैलवा मैं केसे जाऊँ पानिया	३४
रंग रहे लाल उनहीं त्रियन संग	६९
रघुबर आज रहो मेरे प्यारे	२३३
रघुबर तुमको मेरी लाज	२४४
रचके सँवारे नाहिं	२९४
रहुवे बाबा रहुवे	२८६
रटत रटत राधा मनमोहन	२९४
रविको प्रकाश जैसे	२७८
राधा रमण चरण जो पाऊं	१७३
राधाजी सुहागन राधे रानी	१९६
राजत निकुंज धाम ठकुरानी	१९६
राम कुमार लाल दशरथके....	२३१
राम जप राम जप राम जप बावरे	२५५
राम नाम जप जिया सदा सानुरागरे	,,
राम सुमर राम सुमर यही तेरो काजहै....	२५६
राम सुमरले सुमरन करले कोजाने कलकी	२५६
रामचरण अभिराम कामप्रद	२५७
राम ज्यों राखै त्यों रहिये	२६०
रामकृष्ण उठि कहिये भोर....	२६२
राधाकृष्ण क्यों नहिं बोले पीछे पछतावोगे	२९३
राम रंग लागा हरी रंग लागा	२८८
राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई....	२५७
रुचत सुमेरु मों न आवै	२७४
रेनिरमोही छवि दर्शाय जा....	१६०
रेमन क्यों न भजो रघुवीर....	२५८
रमन रामसाकर प्रीत	
रेमन समझ सोच विचार....	५११
रेमन राम भरोसो भारी	२५३
न कोइ यहां	४०६
रावरे दोष न	३४४
रानी मैं जानी अयानी महा	३४६
राम है मातु पिता सुत बंधु	३५४
रावरो कहावों गुण गावों	३५७
राग को न साज	३५७
राम विहाय मरा जपते	३६०
राम मात पितु बंधु सुजन	३६१
राम राम रम राम राम रट....	३७४
राम शिशु गोद महामोद भरे	३७७
राम बिना तेरा कोई ना सहाई	३९८
राम जपो जिया ऐसे ऐसे	४०२
रूप शील सिंधु गुण	३५२
रे नीच मारीच	३४९

पद.	पृष्ठांक.
रे रंग जहान दे	.... ३८६
रे प्राणी क्या मेरा क्या तेरा	.... ४०४
रोषो रण रावण	.... ३५०
रंग भरो मुसकात लला	.... ३२०
रघुभूप दिलीप तजी	.... ५३४
रघुबर तेरोही दास कहाऊं	.... ५४०
रत्नछांड कौडी सँग लागे....	.... ४३६
रत्नत्याग कौडी सँगरचै	.... ४८६
रहत अवर कछु अवर कमावत	.... ४८७
रघुनाथ नाथ मेरे	.... ४९८
रघुवर चरण शरण सुखदायक	.... ५२१
रही न रानी कैकयी	.... ५२७
रकम भुलाई बदवखत	.... ५२९
रास फकीरी उन्हांदी	.... ५३३
राजत राम जानकी जोरी	.... ५४६
राम नाम परमधाम	.... ४८४
राम प्रताप न जाने पिता तू	.... ५५४
राख लेहु हमते विगरी	.... ४५१
राजमिलक जोवन गृह शोभा	.... ४२९
रामदास सरोवर न्हाते	.... ४३७
राख लेहु भगवान अबकी	.... ५५५
राम राम सँग कर व्यवहार....	.... ४५२
राम भज राम भज जन्म सिरातहै	.... ४८३
राम नाम परम	.... ४८४
राम नाम इक सार	.... ५५४
राजन कौन तुम्हारे आवे....	.... ४६२
राम हौं क्या जाना क्या भावै	.... ४५८
राघोजू महाराज साँवल वनरा	.... ४९६
राम भज गूजरिये ऐसा दही वरोल	.... ५०२
राधावर खेलत होरी	.... ५२४
रूठे क्यों न राजा	.... ५५७
रूखडी ना खाइयो स्वामी	.... ४९२
रेमन जन्म पदारथ जात	.... ५६६
रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं	.... ४२५
रे नर यह सांची जिय धार....	.... ४३८
रे मन कौन गति होय है तेरी	.... ४८३
रे मन ओट लेहु हरि नामा	.... ४५६
रे जिह्वा करों शतखंड	.... ४७०
रे मन मूरख जन्म गँवायो....	.... ५१५
रंगीली रघुवरकी होरी	.... ५१२
रे मन समझ ऐसी वात	.... २९२
रोना तेरा तब मिटै	.... ५३०
राम कृष्ण रस रसिक	.... ५६८

(ल)

पद.	पृष्ठांक.
लटक लटक चलत चाल मोहन आवै....	३९
लटकत चलत युवति सुखदानी	४०
ललिता राधा नेक मनायदे....	७५
लगाहै इश्क तुमसेती निबाहोगे	.... १३०
ललित छबि निरख अवात न नयन....	१२१
लालको नाचन शिखवत प्यारी	६५
लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात....	६७
लाल तुम कहांसे आये जगे....	७०
लागगई तब लाज कहारी	.... १११
लागी रे लागनियां मोहनासों	”
लाल तेरे चपल नयन अनियारे	.... ११९
लिये फिरत सँग सँग सखियनको	३७
लोचन भये श्यामके चेरे	.... १२१
लंगर मोको गारियां देदे जारी	३४
लंगर मोरी गागर फोर गयो	३५
लज्जा मोरी राखो श्याम हरी	.... १७५
लटकत आवत कुंज भवनते	.... १९९
ललित लवंग लता परिशीलन	.... २०२
लाज न लागत दास कहावत	.... २४७
लाल गुलाल जिन डारो	.... २४३
लाज मूल न आईया नाम धरायो फकीर	२८६
लेहुरी लोचननको लाहु	.... २२८
लोचन भर लाहू....	.... २३२
लोहको ज्यों पारस	.... २६३
लगन नहीं छूटे एरी वीर	.... ३३१
लाडली लाल लसैं लखिये आलि	.... ३२४
लाजके लेप 'चढायकै अंग	.... ३३७
लाम लग्ग आखे	३८८
लीला अगाध ब्रजवासिनके	.... ३११

पद.	पृष्ठांक.
लीने अबीर भरे पिचका	.... ३३६
लोक कि लाज तजी तबहीं....	.... ३१५
लोग कहैं ब्रजके रसखान	.... ३३७
लोचनाभिराम वन	.... ३४२
लोक कहैं अरु हौं हूं कहौं....	.... ३५६
लख चौरासी जीव योनिमें....	.... ४२८
लाजं मरै जो नाम न लेवै....	.... ४६६
ल्यावो मैया मोहिं चन्द्र खिलौना	.... ४९२
लालन प्यारो झूलत वट संकेत	.... ४९४
लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक	.... ५१५
लाजका जहाज डूब्यो	.... ५२४
लालहीं लालके	.... ५४२
लाडली प्यारी दर्शनदेहु	.... ५४३
लाल तोंहि हौंहीं आज मनाऊं	.... ५५३
लीजिये करुणानिधान	.... ५५५
लकासा काट समुद्रसी खाई....	.... ४३२
लाल तेरे जादू भरे दोउ नैन	.... ३३

(व)

पद.	पृष्ठांक.
वार डारों शरद इंदु मुख छबि गोविंदपर....	६४
वारियां वे लाल वारियां	.... ६७
वह नाथ अपनी दयालुता	.... १८१
वह गोधन गावत गोधनमें....	.... ३२१
वह सांवरो नंदको छैल अली	.... ३३६
वह लकुटी अरु कामरियापर	.... ३४०
वा पट्ट पीतकी फहरानि	.... २०७
विविध प्रकार वेद अर्थ	.... २७६
वेदहूं पुराण कही	.... ३५८
वेद पुराण विहाय सुपंथ	.... ३५९
वातरागको	.... ५६६
वचन ते आन मिले	.... ५३५
विधि एक अनीति रची जगमें	.... ५३१
विश्वपतिके ध्यानमें	.... ५६७
विद्या न पढों वाद नाहिं जानो	.... ४५०
वेद पुराण सभीमत सुनके	.... ४३९
वाउ बखत इह	.... ३८९
वाहि गुरू वाहि गुरू	.... ४८३
वह झलक जो मोर मुकुट कीथी	.... ५०९
वेल विरागको	.... ३६६

(श)

पद.	पृष्ठांक.
शरद निशि देख हरि हर्ष पायो	.... ५७
श्याम कमल पद नखकी शोभा	.... ४३
श्याम तिहारी मदन मुरलिया	.... ४९
श्यामकी बंसी वन पाई	.... ५२
श्याम तेरी बंसी नेकबजाऊं	.... ८३
श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी	.... ”
श्याम सुन नियरेही आयो मेह	.... ९४
श्यामा जी झूलें पीरी पोखर पार	.... १०२
श्याम मोसे खेलो न होरी पालागों करजोरी	१०६
श्याम मोरी आंखन बीचबसो	.... १२२
श्याम भुजाकी सुंदरताई	.... १३२
श्यामा श्याम सों होरी खेलत	.... १०५
शीश मुकुट मणि विराज	.... ३७
श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर....	५५
श्रीवृंदाविपिन सुहावनो	.... ८५
श्रीवृंदावन रज दरशावै	.... १२९
श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशि दिनानारी माई	११७
शूकर होय कब रासरच्यो....	.... ६१
शोभित कर नवनीत लिये....	.... १३
शरण गहु शरण गहु	.... २३७
शरण गये प्रभु कौन	.... १६९
श्रवण लैजाय कर	.... २६५
श्याम का संदेशा ऊधो पाती लैके आयोरे	१५२
शांत निजांतर किंनगहै	.... २७१
श्याम तनु श्याम मन	.... १५३
श्याम वन तन पर	.... १६७
श्याम सुंदर मनमोहनी मूरत	... १६८
श्यामके भरोसे	.... २८२
श्रितकमला कुचमंडल धृत कुंडलये	.... १९२
श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे	.... २०४
श्रीरघुवीर की यह बानि	.... २५०
श्रीरामचंद्र कृपालु भजुमन....	.... २६२
श्यामा मोरी आंखिनवीच बसो	.... १२२
शिरधर मटकी जानीयां लटकी	.... ५६०
श्वासो श्वासीं कर गुजारा	.... ५३३
शालग्राम वियपूज	.... ४७४
शिला शाप पाप गुह	.... ३५३
शूर शिरताज महाराजनके महाराज	.... ३५२
शेष सुरेश दिनेश गणेश	.... ३४०

पद.	पृष्ठांक.
श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र	.... १९०
श्रीराधे देडारो ना वँसुरी	.... २२०
शुचि वनके निवासी	.... २७४
शुचि गंग तरंगकी....	.... २७५
शुभ शत संवत	.... २७६
शर चारिक चारु बनायकसे	.... ३४७
श्याम दृगनकी चोट बुरीरा	.... ३३०
श्याम बलराम गुण सदा गाऊँ	.... ३८१
शीन शुबा नहीं....	.... ३८६
शीश जटा उर वाहु विशाल	.... ३४६
शेश महेश गणेश दिनेश	.... ३१४
शोक समुद्र निमज्जन काढि	.... ३५०
श्रीकृष्णचन्द्र महाराज ने	.... ४९४
श्रीवृन्दाबनवास दीजिये	.... ४९८
श्रीरामचंद्र दशरथसुतनंदन....	.... ५०८
श्रीराधे नामकी वलिहारी....	.... ५४३
श्रीराधे राधे हो श्रीराधे राधे	.... ”
श्यामकी वंसी ना देउँगी....	.... ५०५
श्यामा तेरी वंशी सितम करेंदी	.... ५२०
श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं	५१७
शोभा सदन वदन दोउ देखे	.... ५५८
शेश धरे धरणी शिरमें	.... ५३४
शैल शिला तल सेज करे....	.... ५३९
शैल कपीचर पार परे यहि भाँति	.... ५४९

(ष)

पद.	पृष्ठांक.
षटकर्म	.... ४६४

(स)

पद.	पृष्ठांक.
सखी मोहिं हरि दर्शनको चाव	.... २४
सखी याकी बंशी लीजै चोर	.... ५०
सखा तुम बोलो न वात विचारी	.... ५७
सखीरी मैं हूं नंदकिशोर	.... ”
सखी नंदलाल आवन नहिं पावें	.... ६७
सखी मोहिं मोहन लाल मिलावे	.... ५२
सखी कैसे करूं मैं हाय न कछु वश मेरो	११८
सखी राधावर कैसा सजीला	.... १२९
सभसे ऊंचो प्रेम सगाई	.... १३३
सफल जन्म मेरो आज भयो	.... १९
सांवरे शरणागत तेरी	.... ४४
सानूं मुड़ घर वंजन कह्यो वे श्यामा	६०
सारी सम्हारी है	.... ६२
सांची कहो रँगीले लाल....	.... ६९
सांची कहो किधौं हाँसी करोजी	.... ७१
सांची कहो कि प्यारी हाँसी	.... ७३
सांवरे सों ध्यान मेरो निशि दिनारी माई	११७
सांवरे दी भालन माये सानू प्रेमदी कटारियां	१२३
साख मुनि जन भरें	.... ८
सांवरे की जिन निरखी मुसकान	.... १३३
सीखेहो छल बल नट नागर	.... ७०
सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी	.... २०
सुनिये यशोदारानी छोडैं ये ब्रज तिहारो	२८
सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने	.... ३३
सुनरी गुण कान्ह कुँवरके....	”
सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई	३६
सुनिये यशोदा कानदे अरजी यही हमारी	”
सुन धुन मुरली वैनवाजै हरिरासरच्यो	६१
सुंदर सुजान कान्ह सुंदरही पगियाशीश....	६३
सुहावन सावन राधा सुखातिहारे वाटपरचो	९९
सुन सखी आज झूलन नहिंजैहों	.... १०१
सुंदर मूरति दृष्टि परी	.... ११०
सुंदर मुख सुख सदन श्यामको	.... ११४
सुंदर अनूप जोरी अति मनकी भावती	११६
सुंदर सांवरे सलोने ढोटा	.... १२३
सुपने में दरश दिखाय मोहन मन	.... ११३
सो तू राखलैरी झूटा तरल भये	.... १०१
सौनजुहीकी बनी पगिया	.... ६२
संग चली ब्रजबाल लाल करतालन लै लै जोरी	६२
सजन मुखडा दिखला जारे	.... १५९
सखी सुपनेमें घबरानी	.... २९५
सखीरी मुनि संग बालक काके	.... २२६
सखी रंग भीने दोउ राजकुमार	.... २२७
सखी लखन चलो नृपकुँवर....	.... २३१
सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाव	.... २३६
सखी वह देखो रघुराई	.... २३८
सब मतको मत यह उपदेशू	.... २५६
सब दिन गये विषयके हेत....	.... २९३
सभ दिन होत न एक समान	.... २९५
समता गहै सचको जाने	.... २७७

पद.	पृष्ठांक.
सर्फ डसे सो नहीं	.... २६९
सतगुरु पूरा पाया भला मैं	.... २८१
सुभग सेज सोहत कौशल्या	.... ३७६
सावन घन गरजें घूम घूम	.... २४२
सांझ परी घर आये न कन्हैया	.... १५०
सांवरे सों कहियो मोरी	.... १५२
सांवरो जग तारन आयो	.... १८७
सांचे श्रीराधारमण झूठो सब संसार	.... २०५
सुमिरणकर श्रीराम नाम	.... २९१
सिया राम बिना बीतेजात दिना	.... २६१
सुरतिया रें लाग रही हरिसों	.... १६१
सुन लीजे विनती मोरी	.... १७२
सुन अलकांवाले कृष्णजी	.... १७७
सुन मन मूढ शिखावन मेरा	.... २५८
सुमिर सनेह सों तू नाम राम रायको	.... २५६
सुनलेहु बात हमारी नगर सब	.... २०७
सुपने में सती यती	.... २७८
सुंदर श्याम देखन दी आशा	.... १५९
सूरज बंसी नमो	.... २२३
सोम नाम विप्र वर	.... २७१
सोय रह्यो कहाँ गाफिल ह्वैकर	.... २६७
संकट काट मुरारी हमरे	.... १७८
संतन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी	.... १७७
संत सदा उपदेश	.... २८३
संतनकी गहो रीत	.... २८२
समझी न कछू अजहूं हरिसों	.... ३२१
सखी जबसों नंदलाल निहारे	.... ३२८
सखी मेरे मनकी को जाने	.... ३२९
सखी तबसों चैन नहिं आवै	.... ३३०
सखी यह दृग वा रूप लुभाने	.... ”
सखीरी यह मेरो चित चोर	.... ३३१
सखीरी यह सावन मनभावन	.... ३३२
सघन बन झूलें दोउ सुकुमार	.... ३३२
सरयूबर तीरहिं तीर फिरैं....	.... ३४२
सभ अंगहीन	.... ३५८
सब कछु जीवत को व्यवहार	.... ३६३
सब सोच विमोचन चित्रकूट	.... ३७१
सब सुख राम नाम लव भाई	.... ४००
स्वराथको साज न समाज....	.... ३५७
स्वारथ सयानप	.... ३५९
साधो यह मन गह्यो न जाई	.... ३७९
संतनको यह परमधन	.... २९६
साँवरे क्यों मोसों रिसमानी	.... ३३०
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन	.... ३१८
साधो गोविंदके गुणगावो	.... ३८०
साधो राम शरण विश्राम	.... ३८०
स्वाद सबर करना	.... ३८७
सावन शौक माया दा	.... ३९०
सांची प्रीति हम तुम संग जोड़ी	.... ४०४
सांवरे क्यों मोसों रिसमानी	.... ३३०
सारकी सारी सोभारी लगै....	.... ३३८
सांवरे गोरे सलोने सुभाव	.... ३४६
सिथिल सनेह कहैं कौशल्या	.... ३४३
सिय राम स्वरूप	.... ३५४
सीन सितम करना	.... ३८६
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन	.... ३१८
सुनरी पिय मोहन की बतियां	.... ३२०
सुंदर पलाश और सुंदर अँध्यारे वन	.... ३२३
सुनिये सबकी कहिये न कछू	.... ३३९
सुंदर बदन सरसीरुह सोहाये नैन	.... ३४६
सुन सुंदर बैन सुधारस साने	.... ३४६
सुन कानदिये नित नेम लिये	.... ३५३
सुत दार अगार सखा परिवार	.... ३५४
सुरराजसों राज समाज समृद्ध	.... ३५५
सुनोरे भाइयो तुमको	.... ४११
सुन सुन जीवां सोहले	.... ४०८
सेइये सहित सनेह देहभर	.... ३७०
से समझ हिसाब कर बैठ अंदर	.... ३८५
सोहत हैं चंदवा शिर मोरके	.... ३१५
सोई है रासमें नेसुक नाचिकै	.... ३२४
सो सुकृती शुचि मंत सुमंत	.... ३५४
सो जननी सो पिता सोइ भ्रात	.... ”
सोई बड़ो जो हरिगुण गावै	.... ३८२
संपति सों सकुचावे कुवेरहिं	.... ३३९
संतो ऐसा धुंध पसारा	.... ४०१
स्वर्ग वास नहिं बांछिये	.... ४२८

पद.	पृष्ठांक.
सतयुग सत त्रेता	.... ४२९
सकल वनस्पति में वैसंदर	.... ४३७
सुभग सेज सोहत कौशल्या	.... ३७६
साधो मनका मान त्यागो	.... ४१३
समझ बूझ दिल खोज पियारे	.... ४१३
साधो रचना राम बनाई	.... ४१४
सेवीले गोपाल राय अकुळ निरंजन	.... ४८०
सभ कोई चलन कहतहै वहां	.... ४६९
सकल पुरुष में पुरुष प्रधान	.... ४८५
सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म	.... ४८६
सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पाये	.... ४९०
सखीरी मोहन मुसकाने	.... ५१३
सभ कोऊ ऐसे कहैं	.... ५३९
सखीरी मुझे आज मिला नँदलाल	.... ५४१
सब मति हूं ते यह मति भावे	.... ५६२
स्थावर जंगम कीट पतंग	.... ४२३
साधो यह जग भर्म भुलाना	.... ४४२
साधो कौन जुगत अब कीजै	.... ४५७
साधो एह तनु मिथ्या जानो	.... ४७४
साई षैर न कीजिये	.... ५२७
साई अपने चित्तकी भूल न	.... ५२८
साई अगर उजार मैं	.... "
साजन संत करो यह काम....	.... ४९०
सुमर सुमर	.... ४८४
सुमरो सुमर	.... ४४७
सुख सागर सुरतरु चिंतामणि	.... ४४१
सुखसागर सुरतरु चिंतामणि	.... ४६३
सुख नाहीं बहुते धनखाटे	.... ४६६
सुलतान पूछे सुनवे नामा	.... ४७२
सुन साखी मन जप प्यार....	.... ४७५
सुरहिं की जैसी तेरी चाल....	.... ४७६
सुदामातन हेरे तो रंकहूते रावकीने	.... ५१७
सुन मैया मेरी तू	.... ५४६
सुवा चल वा वनको रसलीजै	.... ५६३
सूरके तेजते सूरज दीखत	.... ५३७
सुमर मन गोपाललाल	.... ५६३
सेवा थोरी मांगन बहुता	.... ४४७
सेवीले गोपाल	.... ४८०
सेवक गणी जनके	.... ५२३
सोदर तेरा	.... ४१५
सोचकर चलना मुसाफिर यां	.... ५०७
सोजन मस्ताना....	.... ५११
सोलाहूं श्रृंगार वारों	५१३
सोइजन रामको भावेहो	.... ५३९
स्तुति निंदा दोउ विवर्जित	.... ४६३
सांचे उपदेश देत	.... ५३६
संतनके सहाई सदा	.... ५६३
संग न चालै तेरे धना	.... ४९०
संभलके नेह लगावे	५०३
संग सहाई सो आवै न चीत	.... ४८६
संडा मर्का जाय पुकारे	.... ४७२
संत मिले कछु सुनिये	.... ४५३
संतां के कारज आप	.... ४४८

(ह)

पद.	पृष्ठांक.
हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी	७२
हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिबो करो....	७२
हमसे न बोलो सँवलिया तू मतवारोरे	८४
हमारो दान देहु ब्रजनारी....	८७
हर्ष झुलाइये मनभावन	.... ९७
हम तेरे इश्क में श्याम बहुत दिन भटके	१३१
हमींको प्यारे दरश दिखायदे	.... १२८
हमरे गोरस दान नहोय	.... ८६
हर हर जिनके मुख सों निकले	.... १३५
हर हर हर हर हर हर हरे....	.... "
हाहा लेहु एको कोर	.... १८
हिंडोरे आजु झूलत रंगरयो	.... ९७
हिंडोला में काईछैं झूलो राज	.... १००
हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर	.... ४६
होरी रे मोहन होरी रंग होरी	.... १०८
हौं इक नई वात सुनि आई	.... ८
हौं लालको मुख देखन आई	.... १६
हौं गई यमुना जल लेन माई	.... ११४
हँसके मारी मेरो मन लेगयो	.... ११३
हरिके संग मैं क्यों न गई....	.... १५६
हरिमें सनेह तर	.... २७६
हरि नाम लाहा लेतरे	.... २८९
हलधरसों कह ग्वालि सुनायो	.... २१४
हम रघुनाथ गुणनके गवैया....	.... २४७

पद.	पृष्ठांक.
हरि परदेश बहुत दिन लाये	१५८
हमारे श्रीवृंदावन उर ओर....	१६४
हरि हौं बडी बेर को ठाढो	१८०
हरि हरि हरि हरि सुमिरण करो	२१२
हरिकी लीला कहत न आवै....	२१९
हरिकी गति नहिं कोऊ जानै	१८५
हमरी फेंट छोंड श्रीदामा	२१९
हरि अब बनि है नाहिं बिसारे	१८५
हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो	१७२
हमरी आँखनके दोउ तारे	१८६
हम नंदनंदन मोल लिये	१८७
हरि संतनकी पैज राखत....	”
हम भक्तनके भक्त हमारे	१९४
हमारे माई श्यामाजीको राज	१९५
हम श्रीश्यामाजीके बल अभिमानी	१९६
हरएक तरफ चमन में कैसी बहार छाई	२००
हरिजू मेरो मन हठ न तजै....	२४९
हिंसा नाहिं करें....	२७४
हे हरि कस न हरौ भ्रम भारी	२५५
हे प्यारी नाहिं फोरी गागरिया	२१७
हे अच्युत हे पारब्रह्म	१८९
हैं हम रसिक अनन्य	१८६
होगये श्याम दूजके चंदा	१५६
हौं हरि पतित पावन सुने	२४४
हौं तो रघुवंशिनको ढाढी	२२३
छैं जनकपुरकी नारी	२३१
गुजार दम	२८६
हनुमान है कृपालु	३६६
हरत सब आरति आरती रामकी	३७३
हरि हौं सब पतितनको राऊ	३८०
हरि हौं सब पतितनको नायक	३८१
हरि नाम कभी न पुकारा	३९३
हरिसेभी मन प्रीति लगायरे	३९५
हमें इक दिन फिर आखरको	३९७
हरियश रेमन गायले जो संगीहै तेरो	३९९
हरिजू राखि लेहु पति मेरी	”
हाट बाट कोट ओट	३४८
हरिसे लाग रहोरे भाई	४००
हाथिन सों हाथी मारे	३५०
हाड़ होशकर	३९०
हेरत बारहिं बार उतै	३२०
हे हिरस हैरान वार	३८५
हे होय हरतरां	३८९
हैहो लाल कबहिं बड़े वालि मैया	३६७
है कोई दमकी बात जगतमें	३९१
होरी हो ब्रजराज दुलारे	३३४
हौंतो पतित शिरोमणि माधो	३७९
हौं कुरबाने जांऊ प्यारे	४०७
हरि नामते सुख ऊपजै	५३९
हरिके पद पंकज प्रेमकरे	५५०
हरि नाम भजे जग भीतर जो	”
हरिसों लागा रहुरे भाई	५५२
हरि बिन को राखे पति मेरी	५५५
हटडी छोड चल्या वनजारा	५६०
हरिके नाम विना दुख पावे	४४९
हरिको नाम सदा सुखदाई	४६०
हरि यश सुनहि न हरि गुण गावे	४२६
हज्ज हमारी गोमती तीर	४३४
हरि राम नाम जप लाहा	४३४
हरि एक	४४२
हमसर दीनदयालु न तुमसर	४४६
हले यारां	४४६
हरि हरि करत मिटे सब भर्म	४५५
हरि बिन जन्म अकारथ जात	४६३
हसँत खेलत तेरे देहु रे आया	४७१
हरि बिन तेरो कौन सहाई	४७७
हरि बिन कौन सहायक मनका	४७९
हरिके भजन कौन कौन न तारे	४८०
हरि जपत तेऊ जनां	४८१
हरि हरिजनके माल खजीना....	४८५
हम होरहीं अधीन सखी श्याम नहीं आये	४९४
हमनहैं इश्कके माते	५१०
हमनसे मत मिलो लोगो	५२०
हमरी प्रणाम बाँके बिहारी....	५२२
हर हर हर	”
हृदय कपट मुख ज्ञानी	४३९
हे माता मन शोच न कीजै....	५५४
हे गोविंद हे गोपाल हे दयाललाल	४८०
दिलमें दिलदार सही	५३७
होरी नंदनंदन खेलें अब	५४१
होयरी त्यार वसंत खेलनको	५४६
होरीको छैल मोहिं ढूँढत डोलै	५४७
होत सो जो रघुनाथ ठटी	५६६
(क्ष)	
क्षीर जु चाहत चीरगहे अजू	३२५

इति रागरत्नाकर विषयसूची समाप्त ।



खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” (स्टीम्) यन्त्रालय—बंबई.

श्रीः

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः।

रागरत्नाकर।

मङ्गलाचरणश्लोकाः।

अंसालंबितवामकुंडलधरंमंदोन्नतभ्रूलतं
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटंसाचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतंमुदा
मूलेकल्पतरोस्त्रिभंगललितंध्यायेजगन्मोहनम् ॥ १ ॥
जातुप्रार्थयतेनपार्थिवपदंनैन्द्रेपदेमोदते
संधत्तेनवयोगसिद्धिषुधियंमोक्षंचनाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनिस्थिरतडिन्मेघद्युतौकेवलं
शुद्धेब्रह्मणिबल्लवीभुजलताबद्धेमनोधावति ॥ २ ॥
ज्ञातंकाणभुजंमतंपरिचितैवान्वीक्षिकीशिक्षिता
मीमांसाविदितैवसांख्यसरणिर्योगेवितीर्णामतिः ॥
वेदांतःपरिशीलितःसरभसंकिंतुस्फुरन्माधुरी-
धाराकाचननंदसूनुमुरलीमच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
काषायान्नचभोजनादिनियमान्नोवावनेवासतो
व्याख्यानादथवामुनिव्रतभराच्चित्तोद्भवःक्षीयते ॥
किंतुस्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषुविक्रीडतो
गोविंदस्यपदारविंदभजनारंभस्यलेशादपि ॥ ४ ॥
मेघैर्मेदुरमंबरंवनभुवःश्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमंराधेगृहंप्रापय ॥
इत्थंनंदनिदेशतश्चलितयोःप्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहःकेलयः ॥ ५ ॥

फुल्लेंदीवरकांतिमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरंपीतांबरंसुंदरम् ॥
गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुंगोगोपसंघावृतं
गोविंदंकलवेणुवादनपरंदिव्यांगभूषंभजे ॥ ६ ॥

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीतांबरादरुणबिंबफलाधरोष्ठात् ॥
पूर्णेंदुसुंदरमुखादरविंदनेत्रात्
कृष्णात्परंकिमपितत्त्वमहंनजाने ॥ ७ ॥

ध्यानाभ्यासवशीकृतेनमनसायन्निर्गुणंनिष्क्रियं
ज्योतिःकिंचनयोगिनोयदिपरंपश्यंतिपश्यंतुते ॥
अस्माकंतुतदेवलोचनचमत्कारायभूयाच्चिरं
कालिंदीपुलिनेषुयत्किमपितन्नीलंमहोधावति ॥ ८ ॥

कुर्वंतिकेपिकृतिनःक्वचिदप्यनंते
स्वांतंविधायविषयांतरशांतिमेव ॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु-
मास्वाद्यमाद्यतिमुहुर्मधुलिण्मनोमे ॥ ९ ॥

केचिन्निगृह्यकरणानिविसृज्यभोग-
मास्थाययोगममलात्मधियोयतंते ॥
नारायणस्यमहिमानमनंतपार-
मास्वादयन्नमृतसारमहंतुमुक्तः ॥ १० ॥

दोहा—श्रीगुरु श्रीगोविंदपद, मंगलहित करूँध्यान ।
मंगल श्रीब्रजराज घर, जो पाऊँ सन्मान ॥ १ ॥
गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति ।
तिनकेपगवंदनकरूं, करीकृष्णसोंप्रीति ॥ २ ॥
हाथ जोरि विनती करों, सुनो गरीबनिवाज ।
अपनोही करि जानिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ३ ॥
नंदरायके लाड़िले, भक्तन प्राणअधार ।

भक्तरामके उरबसो, पहिरे फूलनहार ॥ ४ ॥
भक्ति भक्त भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक ।
तिनके पगवंदन किये, नाशत विघ्न अनेक ॥ ५ ॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटकि रहै मन मोर ।
भक्तराम कबहूँ नहीं, चितवै काहू ओर ॥ ६ ॥
हर्षि देहु वर मांगहूँ, यशुमति जीवनमूर ।
निज दासनके पगनकी, भक्तरामको धूर ॥ ७ ॥

समाजी वचन ।

श्रीब्रजराजकुमारवरगाइये, आनंदकीनिधिवरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइये,श्रीलाड़िलीललनवरगाइये ॥
दोहा—नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिक श्रृंगार ।
ताहूमें अतिसरस पुनि, सो यह रासविहार ॥ १ ॥
नवहि अंग श्रृंगारके, होरी चोरी दान ।
छलहिकरनवनऋतुगमन, विरहमिलनअरुमान ॥ २ ॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास ।
पल पल वारों हेसखी, नित नव नागरिदास ॥ ३ ॥
चंद्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार ।
दृढव्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ ४ ॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार ।
व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसार ॥ ५ ॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर ।
कृष्णदास बाजतसुनी, कालिंदीके तीर ॥ ६ ॥
सुख मन रूप अनूपहै, कह बरणैं कविवृंद ।
अब वृंदावन वरणिहौं, जहँ बृंदावनचंद ॥ ७ ॥
वृंदावन आनंदघन, कछु छवि वरणि न जाय ।
कृष्णललितलीलाकरण, धारिरह्योजड़ताय ॥ ८ ॥
मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय ।

ब्रज रज उड़ मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय ॥ ९ ॥
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावैं माथ ।
जहाँ आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ॥ १० ॥
धनि बृंदावन धाम है, धनि बृंदावन नाम ।
धनि बृंदावन रसिक जो, सुमिरैं राधाश्याम ॥ ११ ॥

श्रीठाकुरजीको वचन ।

दोहा—राधे मेरी लाड़िली, मेरी ओर तु देख ।
मैं तोहिं राखों नयनमें, काजरकीसी रेख ॥ १२ ॥
राधे आधे नयनसों, तिरछी चितवन चाय ।
जो निशान आगेचलै, पाछेको फहराय ॥ १३ ॥
लटसम्हारु प्रियनागरी, कहा भयोहै तोहिं ।
तेरीलट नागिनि भई, डसा चहतहै मोहिं ॥ १४ ॥
राधेजूके वदनपै, बेंदी अति छवि देय ।
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासन लेय ॥ १५ ॥
प्यारीजूके वदनपै, बसत चालिसौ चोर ।
दशसारस दशहंसहैं, दशचातक दशमोर ॥ १६ ॥
गोरे मुखपै तिल बन्यो, ताहि करूं परणाम ।
मानो चंद्र बिछायकै, पौढे शालिग्राम ॥ १७ ॥
लट छूटी तियशीशते, रहि कपोल लपटाय ।
मानो छौना नागको, पीपी अमी अघाय ॥ १८ ॥
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्हैं न नेक बिसारिहौं, मोहिं नंदकीआन ॥ १९ ॥
ब्रज तज अनत न जाइ हौं, मेर है यह टेक ।
भूतल भार उतारिहौं धरिहौं रूप अनेक ॥ २० ॥

श्रीप्रियाजीको वचन ।

मैं बेटी वृषभानुकी, राधा मेरो नाम ।
तीनलोकमें गाइये, बरसानो नँदगाम ॥ २१ ॥

वंशीवारे मोहना, वंशी नेक बजाय ।
तेरी वंशी मन हरचो, घर अँगना न सुहाय ॥ २२ ॥
आउ पियारे मोहना, पलक झाँप तोहिं लेवँ ॥
ना मैं देखौं औरको, ना त्वहिं देखन देवँ ॥ २३ ॥

सखियनको वचन ।

एरे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तव मुख दर्शन कारणे, छाँडि दई कुलकान ॥ २४ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबर वनमाल ।
यह मूरति मम मनबसो, सदा बिहारीलाल ॥ २५ ॥
करमुरली लकुटी गहे, घूँघरवारे केश ।
यह बानिक नयनन बसो, श्याम मनोहर वेश ॥ २६ ॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मोमन रही समाय ।
ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी नजाय ॥ २७ ॥
मनमोहन मनमोहना, मनमोहन मनमाहिं ।
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमें नाहिं ॥ २८ ॥
चलो सखी तहँ जाइये, जहाँ बसैं ब्रजराज ।
गोरस बेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज ॥ २९ ॥
मोरमुकुटकी लटक पर, अटकरहे दृग मोर ।
कान्हकुँवर सखि यमुनतट, नटवर नंदकिशोर ॥ ३० ॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश ।
तिनके भागनकी सखी, कौन करसकै रीश ॥ ३१ ॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जानै कोय ।
डार पात फल फूलमें, राधे राधे होय ॥ ३२ ॥
वृंदावन बानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिनिप्यारीराधिका, दूलहनंदकुमार ॥ ३३ ॥
ब्रज चौरासी कोशमें, चार गाम निज धाम ।
बृंदावन औ मधुपुरी, बरसानो नँद गाम ॥ ३४ ॥

नँद नंदीश्वर राजहीं, बरसाने बृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥
ब्रजसमुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ।
ब्रज वनिता सम पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचंद ॥ ३६ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल ॥ ३७ ॥
प्रेम सरोवर प्रेमको, भरयो रहै दिन रैन ।
जहँ पिय प्यारी पग धरैं, लाल धरैं दोउ नैन ॥ ३८ ॥
मोर मुकुट की निरखि छबि, लाजत मदन करोर ।
चंद्र बदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥ ३९ ॥
कमलन को रवि एक है, रवि को कमल अनेक ।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ४० ॥
जल में बसै कुमोदनी, चंदा बसै अकाश ।
जो जाके मन में बसै, बसै सु ताके पास ॥ ४१ ॥
बाहँ छुड़ाये जात हौ, निबल जानिके मोहिं ।
हिरदै ते जब जाउगे, सबल सराहौं तोहिं ॥ ४२ ॥
जो मोसों मोसी करो, तो नहिं कहौं कठोर ।
तुमहौ तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिरमौर ॥ ४३ ॥
पाग बनो पटुका बनो, बनो लाल को भेख ।
श्रीराधावल्लभ लालकी, चल दौर आरती देख ॥ ४४ ॥

अथ बाललीलाके पद ।

राग भैरव ।

बंदौं श्रीहरिपद सुखदाई । जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सब कछु दरशाई । बहिरो सुनै गूंग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करुणामय वारंवार नमो तिहिं पाई ॥ १ ॥

राग रामकली ।

भयो जयकार जन्मे मुरारी ॥ शीश वसुदेव लै चले हैं

कृष्णको शूपमें खेलत विहारी । लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हमेल छबि ललित पियारी । सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मँझारी ॥ २ ॥

रागआसावरी ।

देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति कैसो रूप धरचो है । तीनलोक जाके उदर भवनमें शूपके कोन परचो है ॥ जामुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है ॥ सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लपटानी है ॥ जिन कानन गजकी विपदा सुनि गरुडासन बिसरायोहै । तिन काननके निकट यशोदा हुलरायो गुणगायो है ॥ जिन्हीं भुजा प्रहलाद उबारचो प्रगटहोय खँभ फारचो है ॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारचोहै ॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ॥ ताको धाय नंदकी रानी ऊखल सों गहि बांध्यो है ॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ॥ सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारी है ॥ ३ ॥

रागबिलावल ।

आदि सनातन हरि अविनासी । सदा निरंतर घट घट बासी ॥ पूरणब्रह्म पुराण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ महिमा अगम निगम जिहि गावै । सो यशुदा लिये गोद खिलावै ॥ एक निरंतर ध्यावै ज्ञानी । पुरुष पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको नाम अधारा । नारद शेष न पावैं पारा ॥ जप तप संयम ध्यान न आवे । सोइ नंदके आँगन धावे ॥ लोचन श्रवण न रसना नाशा । बिन पद पाणि करै परकाशा ॥ अरुण असित सित वरण न धारे । मुनि मनसामें कहा विचारे ॥ विश्वंभर निज नाम कहावे । घर घर गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलसाई । परमानंद सदा सुखदाई ॥ ज्ञानरूप हिरदैमें बोलै । सो बछरनके पाछे डोलै ॥

जलथल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥ लोक रचै पालै अरु मारै । चौदह भुवन पलकमें धारै ॥ कालडरै जाके डरभारी । सो ऊखल बाँध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जगमोहै । करण अकरण करै सोइ सोहै ॥ जाकी माया लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपु दोई ॥ शिव सनकादिक अंत न पावै । सो गोपनकी गाय चरावै ॥ गुण अनंत अविगतिहिं जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ चरण कमल नित रमा पलोवै । चाहत नेक नयनभर जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधा वश कुंजविहारी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहिं पायो । सो रस गोकुल गलिन बहायो ॥ बड़भागी यह सब ब्रजवासी । जिनके सँग खेलें अविनाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंद की गति गोविंद जानै ॥ ४ ॥

साख मुनिजन भरैं देव अस्तुतिकरैं स्मृति पुराण गुण वेद गावैं । तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जग जंतु नहिं अंत पावैं ॥ शेष महेश गंधर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहिं पार पावैं । चरण पाताल औ शीश आकाश में चंद्र सूरज दोउ दृग सुहावैं ॥ यही परतीत तेरी चहुँ युगन में भक्तके हेतु धरि देह धावैं । कहत मिहर दास नीवास लियो नंदगृह कान्ह सुत जान यशुमति खिलावैं ॥ ५ ॥

राग रामकली ।

हौं इक नई बात सुनि आई ॥ महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर बजत बधाई । द्वारे भीर गोप गोपिन की महिमा वरणि न जाई । अति आनंद होत गोकुल में रत्न भूमि निधि छाई । नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई । सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई ॥ ६ ॥

राग भैरव ।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायाहै । सुंदर वरण

कमलदललोचन देखत चंद्र लजाया है ॥ पूरण ब्रह्म अलख अवि-नाशी प्रगट नंद घर आयाहै । मोर मुकुट पीतांबर सोहै केसर तिल-क लगाया है ॥ कानन कुंडल गल विच माला कोटि भानु छवि छाया है । शंख चक्र गदा पद्म विराजै चतुर्भुज रूप बनायाहै ॥ पर-मेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलायाहै । मच्छ कच्छ वाराह औ वावन राम रूप दरशायाहै ॥ खंभ फारि प्रगटे नरहरि वपु जन प्रहलाद छुडायाहै । परशुराम बुध निहकलंक ह्वै भुविका भार मिटाया है ॥ कालियमर्दन कंसनिकंदन गोपीनाथ कहाया है । मधुसूदन माधव मुकुंद प्रभु भक्तबछल पद पायाहै । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गायाहै ॥ सो परब्रह्म प्रगट ह्वै ब्रज में लूट लूट दधि खाया है ॥ परमानंद कृष्ण मन मोहन चरण कमल चित लायाहै ॥ ७ ॥

राग बड़हंस ।

मोहिं नंदघर लै चलो ढाढ़िनियाँ मचल रही ॥ पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥ मोहिं मिलै नख शिखलौं गहनो लाऊं तो बात सही ॥ जरदोजीके वस्त्र मिलैंगे फरिया चोलीनई । कृष्ण कृपा बिन को या जगमें जिन मेरी बाहँ गही ॥ ८ ॥

राग आसावरी ।

आज बधाइयांवे बाबानंद दे दर्बार ॥ हुआ सुत सोहना वे मन-दा मोहना सुकुमार ॥ आईमिल गोपियां वे गावें हर्ष मंगलचार । गुणीजन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥

सवैया ।

पूत सुपूत जन्यो यशुदा इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी ।
देवन को आनंद भयो सुन धावत गावत मंगल गौरी ।
नंद कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुँकी मति बौरी ॥
मोहिं देखत ब्रजहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी १०

घनाक्षरी ।

फूल गये गोप गृह गोपिकन भूल गये हुलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमें । कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलनमें कीकन दै सबै पगे आनँद बधाईमें ॥ छोटी सी चोटी कछोटी कटि मोटी भई फैल गई थौन बडे स्वेद की अवाईमें ॥ राजी दिलमोदन विनोदन जो विहँसिनंद नाचे आज आँगन कन्हाई की बधाई में ॥ ११ ॥

राग प्रभाती ।

गिरिधर लोरी लै मथुराके बासी ॥ चिरजीवो वसुदेवके नंदन बलि बलि माता वोरी । भूपर भार भयो अति भारी सुर समूह सब जाय पुकारी जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म्म कथा जग थोरी ॥ गगन गिरा सों यों हरि भाषो असुर मार संतन पतिराखों आदिपुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्त हित खोरी । वसुदेव देवकि अति हर्षाने पूरणब्रह्म जान सन्माने स्तुति करत बहोर बहोरी कंसके भय चित चोरी ॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन पायो निर्द्धन मनहुँ परमधन आदि युगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी । ब्रजवधुआं मिल नँद गृह आई भाग भले हरि दर्शन पाई हिल मिल पलना देत झुलाई हाथ गहे पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कंस पठाई कर छल विष स्तन पर लाई बनि वरांगना अति छबि सुंदर ब्रज बधुआं चितचोरी । पलना सों हरि जाय उठाये चूमि नयन स्तन मुख लाये ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण निचो- री ॥ यमलार्जुनको दर्शन दीनो नारद वचन सफल करलीनो ऊखल सों प्रभु आप बँधाये विमल वृक्ष दोउ जाय गिराये शब्दभयो घन घोरी । तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे कहा कहों अगणित गुण तोरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ १२ ॥

राग पीलो ।

आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी । यशुमति नँदलाल पायो कंसराज कालपायो गोपनने ग्वालपायो वनको शृंगाररी ॥ गौअन

गोपाल पायो याचकन भाग पायो सखियन सुहाग पायो प्रिया वर साँवरारी। देवनने प्रान पायो गुणियन ने गान पायो भक्तन भगवान पायो सूर सुखदावरारी ॥ १३ ॥

राग आसावरी।

आज नंदजू तुम्हरे घरमें पुत्र जन्म सुनि आयो। लग्नशोधि ज्योतिषको गिनिकै चाहत तुम्हैं सुनायो ॥ संवत् सरस भाद्रपद मासे आठैं तिथि बुधवार। कृष्णपक्ष रोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार ॥ वृष है लग्न उच्चके निशिपति तनय बहुत सुखदैहै। चौथे सिंह राशिके दिनपति जीति सकल में ह्वैहै ॥ पाँचैं बुध कन्याके जो है पुत्रन बहुत बढैहै। छठेहैं शुक्र तुलाके बलयुत शत्रुरहन नहिंपैहै ॥ ऊंच नीच युवती बहु करिहै सातें राहु परैहैं। भागभवनमें मकर महीसुत पूर्णैश्वर्य करैहैं। कर्म भवन में ईश शनीचर श्याम वर्ण तनु ह्वैहै ॥ लाभभवन में मीन बृहस्पति नौनिधि घरमें ऐहै ॥ आदि सनातन हरि अविनाशी घट घट अंतर्यामी। सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भये सूरदासके स्वामी ॥ १४ ॥

राग भैरव।

मैं योगी यश गाया री बाला मैं योगी यश गाया ॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तजि धाया ॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जामाया। अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिरिआया ॥ धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया। गुणन बड़े छोटे मतभूलो अलख रूप धरआया ॥ जो भावै सो लीजिय रावल करो आपनी दाया। देहु अशीश मेरे बालकको अविचल बाढै काया ॥ नामैं लेहौं पाटपटंबर नामैं कंचन माया। मुख देखों तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया ॥ कर जोरे विनवै नँदरानी सुन योगिनके राया। मुख देखन नहिं देहौं रावल बालक जात डराया ॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया। तीन लोकका साहब मेरा तेरे

भवन छिपाया ॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर अंचर मुख छाया । गोद पसार चरणरज वंदी अति आनंद बढाया ॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नयनन नीर बहाया । सूरश्याम परिकर्मा करके शृंगीनाद बजाया ॥ १५ ॥

दर्श तो दिखाजा छैला दर्शतो दिखाजा ॥ दिलदा महरम साँवरा यार ॥ जांघनि काछनि कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट अरु घूँघरवारी अलकैं झलकैं नयनोंमें समाजा ॥ बंशीधुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नंदजूके किशोर मेरी तपन बुझाजा । जानकीदास भये निराश निकसत नाहीं पापी श्वास स्वप्नहूं में दर्श देके सकल दुख मिटाजा ॥ १६ ॥

रागभूपाली ।

बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी बोलता क्यों नहीं रे ॥ शिर तेरे ककेरजी चीरा गल मोतियन की मालरे । हाथमें दुधारा खांडा मारता क्यों नहीं रे ॥ १७ ॥

रागविलावल ।

काहू जोगिया की लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवैरी । मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलैरी ॥ घर घर हाथदिखावे यशोदा बार बार मुख जोवैरी । राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवैरी ॥ १८ ॥

रागभैरव ।

चल रे योगी नंद भवन में यशुमति तोहिं बुलावै । लटकत लटकत शंकर आवैं मन में मोद बढ़ावै ॥ नंद भवन में आयो योगी राइ लोन कर लीनो । वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीशपै दीनो ॥ व्यथा भई सब दूर बदनकी किलकि उठे नँदलाला । खुशी भई नँदजू की रानी दीनी मोतिन माला ॥ रहुरे योगी नंद भवन में ब्रज में बासो कीजै । जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजै ॥

तुम तो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानै। बूढो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जानै॥ १९॥

रागविलावल।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत। प्रभु पौढे पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत॥ शिव शोचत विधि बुद्धि विचारत बटु वाढ्यो सागर जल झेलत। विडरि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिग दंतौ न सकेलत॥ मुनि मन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसौं फण पेलत। सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत॥ २०॥

शोभित कर नवनीत लिये। घुटुरनचलत रेणु तनु मंडित मुख दधि लेप किये॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिये। लट लटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहिं पिये॥ कठुला कंठ वज्रकेहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एको पल यह सुख का शतकल्प जिये॥ २१॥

राग भैरव।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई॥ उठो मेरे आनँदकंद किरणचंद मंद २ प्रकट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई। संगी सब पुरत वेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर बर राई॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि माँगि लियो विविध रस मिठाई। जेंवत दोउ राम श्याम सकल मँगल गुणनिधान जूठनि रहिथारमें सो मानदास पाई॥ २२॥

जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कोश फूले। कुमुद वृंद सकुच भये भृंग लता झूले॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत वनराई। राँभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत ब्रज नारी। सूरश्याम प्रात उठे अंबुज कर धारी॥ २३॥

रागरामकली ।

मोहन जाग हौं बलि गई । ग्वाल बाल सब द्वार ठाढे बेर बन को भई । पीतपट कर दूर मुखते छाँड दे अलसई ॥ अति अनंदित होत यशुमति देख द्युति नित नई । सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण कीरण छई ॥ २४ ॥

रागभैरव ।

जागो बंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे । गोपी दही मथत सुनियत हैं कँगनाके झनकारे ॥ उठो लालजी भोर भयो है सुर नर ठाढे द्वारे । ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें लीन्हीं गौअनके रखवारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण आयाँको तारे ॥ २५ ॥

जागो हो मोरे जगत उज्यारे । कोटि मदन मुसुकुन पर वारत कमल नयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल बच्छ सबरे सँगलैकै यमुन तीर बन जाउ सवारे । परमानंद कहत नँदरानी दूर जिन जाउ मेरे ब्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

रागललित ।

जागो जागो हो गोपाल । नाहिन अति सोइयतहै प्रात परम शुचिकाल ॥ फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपनके बाल । बिन बिकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकर की माल ॥ जो तुम मोहिं पतियाउ न सूर प्रभु सुंदर श्याम तमाल । तो उठिये आपन अवलोकिये तजि निद्रा नयन विशाल ॥ २७ ॥

रागबिलावल ।

कौन परी नँदलालहिं बानि । प्रात समय जागन की बिरियाँ सोवत है पीतांबर तानि ॥ मात यशोदा कब की ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सानि । उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुंदर बदन

दिखावो आनि ॥ संग सखा सब द्वारे ठाढे मधुबन धेनु चरावन जानि । सूरश्याम सुंदर अलसाने सोवत हैं अजहूं निशि मानि॥२८॥

राग भैरव ।

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकैं । शीश मुकुट लटें छुटीं और छुटीं अलकैं ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढे दरश कारण किलकैं । नासिका को मोति सोहै बीच लाल ललकैं ॥ कटि पीतांबर मुरली कर श्रवण कुंडल झलकैं । सूरदास मदनमोहन दरश देहु भलकैं ॥ २९ ॥

राग बिलावल ।

नंदनँदन वृंदावनचंद । यह कहि जननि जगावत लालन जागो मोरे आनँदकंद ॥ आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमंद । पोंछि बदन अंचलसों यशुमति उरलगाय उपज्यो आनंद। सब ब्रजयुवती आई देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । ब्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुतिछंद ॥ ३० ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो । अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नंदहि नाच दिखावो ॥ तारी दैदै अपने करकी परम प्रीति उपजावो । आन जंतु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावो ॥ जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो । बाँह उठाय काल्हकी नाईं धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो । रत्न जटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो ॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो । परमदयालु सूरके उरते टार नेक न जावो ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके । धूसर धूर घुटरुवन डोलन बोलन वचन रसालके ॥ छिटकरहीं चहुँ दिशि जो लटुरियां लटकानि लटकन भालके । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमल दल मालके । कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके।सूरदास प्रभु प्रेम मगनहै ढिग न तजत ब्रजबालके ॥३२॥

आउ गुपाल शृँगार बनाऊँ । अति सुगंध को करूं उबटनो उष्णोदक नहवाऊँ ॥ अँगअँगोछि गुहों तेरी बेनी फूलन रचि रचि भाल बनाऊँ । सुरँगलाल जतोरी चीरा रत्न खचित शिर पेंच बनाऊं ॥ बागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण चरचाऊं । पटुका सरस बैंगनी रँगको हसुली हेम हमेल धराऊं । गज मोतिनके हार मनोहर वनमालालै उर पहिराऊं । लै दर्पण देखो मेरे बारे निरखि निरखि छबि नयन सिराऊं ॥ मधु मेवा पकवान मिटाई अपने कर लै तुम्हैं खवाऊं । विष्णुदासको यही कृपाफल बालचरित्र हौं निशि दिन गाऊं ॥ ३३ ॥

राग देस ।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी बनी शिर सुंदर चोटी । देखोरी कागके भाग भले हैं हाथ सों लै गयो माखन रोटी । खात पियत कूदत भये अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी । सूरदास प्रभु या छबि निरखत वार डारों शिर रवि शशि कोटी ॥ ३४ ॥

रागगौरी ।

कहन लागे मोहन मैया मैया । नंदराय सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत बधैया । परमानंद दास को ठाकुर ब्रजजन केलि करैया ॥ ३५ ॥

राग रामकली ।

हौं लालको मुख देखन आई । कल्ह मुख देख गई दधि बेचन जातहि गयो बिकाई ॥ दिन सों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई । आईहों धाय थमाय संगकी मोहन देहु जगाई ॥ इतनी सुनत बिहँसि उठ बैठे नागरि निकट बुलाई । सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनी सैन सँकेत बताई ॥ ३६ ॥

राग बिलावल ।

मैया मोहिं बड़ो करलैरी । दूध दही घृत माखन मेवा जब मांगों तब देरी । कछू हौंस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचैरी । होउँ

सबल सबहिनमें जैसे सदा रहौं निर्भयरी । सूर कंस गहि केश पछारों करिहौं मथुरा जयरी ॥ ३७ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी कब बाढ़ैगी चोटी । किती बेर मोहिं दूध पियत भइ यह अजहूं है छोटी ॥ तू जो कहत बलकी बेनी ज्यों हो है लांबी मोटी । काढ़त गुहत न्हवावत जैहैं नागिन सी भुइँ लोटी ॥ काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी । सूर मैया याही रस रिझ-यो हरि हलधरकी जोटी ॥ ३८ ॥

अब मेरी खेलन जात बलैया । जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया ॥ मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया । मोललियो कछु दे वसुदेवहिं कर कर यतन बढैया ॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तब हँस हँस उर लैया । सूर नंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया ॥ ३९ ॥

सारंग ।

मैया मोहिं दाऊ ने बहुत खिझायो । मोसों कहत मोलको लीनो कब यशुमति ने जायो ॥ कहा करूं या रिसके मारे खेलन हौं नहिं जात । पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर । तारी दै दै ग्वाल हँसत हैं सीख देत बलवीर ॥ तू मोहींको मारन सीखी दाउहिं कभू न खीझै । मोहनको मुख रिस समेत लखि सुनि सुनि यशुमति रीझै ॥ सुनो कान्ह बलभद्र चबाई जन्महिको वह धूत । सूरदास मोहिं गोधन की सौं हौं जननी तू पूत ॥ ४० ॥

राग सोरठ ।

इस नंदके फरजंदने बांकी अदा धरी । भौंहें कमान झुकरही गोशे से आ मिली ॥ तिरछा मुकुट धर शीशपर मुरली अधर धरी । कानों में कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी ॥ चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी । शिर मुकुट सोहै मोर का और

धाग जरकरी ॥ इमि सूर कहै श्याम सों आन आज की घरी ॥४१॥

राग बिलावल ।

नंदभवनको भूषण माई । यशुदाको लाल वीर हलधरको राधारमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई । इंद्रको इंद्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई । नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुँवर कन्हाई ॥ ४२ ॥

राग रामकली ।

हाहा लेहु एको कोर । बहुत बेर भई है भूखे देख मेरी ओर ॥ मेल मिश्री दूध औट्यो पीउ ह्वैहै जोर । अबहिं खेलन टेरि हैं तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर । खेलवेको उठि भजोगे मान मोर निहोर ॥ लेहुँ ललन बलाय तेरी जोर अंचल ओर । वदन चंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥ बैठ जननी गोद जेवन लगे गोविंद थोर । रसिक बालक सहज लीला करत माखन चोर ॥ ४३ ॥

मानो बात लालन मोरी । करो भोजन रोष भूलो हौं जो मैया तोरी ॥ दूध दधि नवनीत घृतपक परासि राख्यो थार । कहा लोटत धरणि में मेरे लाल होत अबार । गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत । खेलबेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाको ताहि टेरूं बैठें तेरे पास । करों दधि मंथान उदयो सूर कमल विकास ॥ मायके सुनि वचन हँसिउर आय लगे गुपाल । कियो भोजन दियो अति सुख रसिक नयन विशाल ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री ।

महराने ते पाँडे आयो । ब्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिकै उठधायो ॥ पहुँच्यो आय नंदके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढ़ायो । पांव धोय भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो ॥

जो भावै सो भोजन कीजै विप्र मनहिं अति हर्ष बढायो । बडी वैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे रुचिकर खीर चढायो ॥घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि परासि कृष्ण हित ध्यान लगायो ॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो । देखो आय यशोदा सुतकृत सिद्ध पाक यह आन जुँठायो ॥ महरि विनयकरि दोउ कर जोरचो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो । सूरश्याम कत करत अचगरी बार बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥ ४५ ॥

राग रामकली ।

पांडे भोग न लागन पावै । कर कर पाक जभी अर्पत है तभी ताहि छुइ आवै ॥ इच्छा कर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावै । वह अपने ठाकुरहिं जिमावत तू तबहीं छुइ आवै ॥ जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै । नयन मूंदि कर जोर नाम लै बारंवार बुलावै ॥ यह अंतर नहिं होत भक्त सों क्यों मेरे मन भावै । सूरदास बलि बलि विलास पर जन्म पाय यश गावै ॥ ४६ ॥

राग बिलावल ।

सुफल जन्म मेरो आज भयो । धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट भयो अब पुण्य सुकृत फल दीनबंधु मोहिं दर्श दियो । बारंवार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो बिन जाने को जाने किहिं वेष जियो । सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमतिके अवतार लियो ॥४७॥

राग झँझोटी ।

चंद्र खिलौना लैहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लैहौं ॥ धौरीको पय पान न करिहौं वेणी शिर न गुथैहौं । मोतिन माल न धरिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अभी धरणी पर तेरी गोद न ऐहौं । लाल कहैहौं नंद बबाको तेरो सुत न कहैहौं ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहिं सुनैहौं । चंदाहू ते अति सुंदर तोहिं नवल

दुलहिया ब्यैहौं ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अबहीं ब्याहन जैहौं । सूरदास सब सखा बराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ४८ ॥

राग बिलावल ।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी । कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी ॥ दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी । तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताकी वर नारी ॥ तात वचन सुनि राज्य तज्योहै भ्राता सहित भये वनचारी । तहँ तिन जाय कनक मृग मारचो राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण सियाको कीन्हों सुनत श्यामघन नींद बिसारी । सूरश्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननि भ्रमभारी ॥ ४९ ॥

राग सारंग ।

नंद बुलावत हैं गोपाल ॥ आवो वेगि बलैया लेहौं मोहन श्याम तमाल । परस्यो थार धरचो मग जोवत क्यों न चलो ततकाल ॥ हौं वारी इन प्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल । छांड देहु तुम लाल लटपटी यह गति मंद मराल ॥ सो राजा जो पहिले पहुँचै सूर सो भवन उताल । जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल ॥ ५० ॥

लावनी ।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुण गरबीले । छैल छबीले, चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥ रत्नजटित शिर मुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघुरारी । बाल बिहारी, कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी । लोलक मोती कान कपोलन झलकवनी निर्मल प्यारी । ज्योति उज्यारी, हमैं हरबार दर्शदे गिरिधारी ॥ दंत छटा सी बिज्जु घटा मुख देख शरद शशि सरमीले ॥ छैल० ॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे वय किशोर भोली भाली । करत चोचले, अमोलिक अधर पीक रच रहि लाली ॥ फूल गुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कंठ छबि वनमाली ।

करसरोजमें, बुंद मेहँदी अमंद है बहु प्रतिपाली॥ फूल छरी सी नरम कमर करधनी शब्द भये तुरसीले ॥ छैल० ॥ झँगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले । चाल निराली, चरण कोमल पंकजके पात भले ॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले । संग सखनके, निकट यमुना बछरान चरात भले ॥ ब्रज युवतिनके प्रेम भोर भये घर घर माखन गटकीले ॥ छैल० ॥ गावैं बाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करैं । मुनिजन मोहे, कृष्ण कंसादिक खल दल नास करैं ॥ गिरिधारी महराज सदा श्रीब्रज वृंदावन बास करैं । हरिचरित्र को, श्रवण सुन सुन कर मन अभिलास करैं ॥ हाथ जोर कर करैं वीनती नारायण दिलदरदीले ॥ छैल० ॥ ५१ ॥

माखनचोरीलीला ।

राग रामकली ।

माखन तनक देरीमाय । तनक कर पर तनक रोटी माँगत चरण चलाय ॥ कनक भूपर तनक रेखा करन पकरयो धाय । कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि अति अकुलाय ॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं बलाय । तनक मुखपर तनक बतियां बोलत हैं तुतराय ॥ यशोमतिके प्राण जीवन धन लियो उरमें लाय । नंद कुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ५२ ॥

राग भैरव ।

बिलँब तजि माखन देरी माई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि मथती देर लाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चारूं हौं नहिं विपिन को जाई । यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ॥ इतनी कह हरि अतिहिं रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूर सहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूम दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥ ५३ ॥

राग भैरवी ।

दोउ भैया मैया सों माँगत दे मा माखन रोटी ॥ बलदाऊ गही नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी । मानो हंस मोर भखु लीन्हों कवि कृत उपमा छोटी ॥ यह छवि निरखि नंद आनंदे प्रेम मगन गये लोटी । सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कर्मन की मोटी ॥ ९४ ॥

राग रामकली ।

मोहिं दधि मथन दे बलिगई । जाउँ बलि बलि बदन ऊपर छांड मथनी रई ॥ देहुँ त्वहिं नवनीत लौंदा और कित यह ठई । सुतसनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई ॥ लै उछंग लगाय उर सों प्राणजीवन जई । बालकेलि गुपाल की ब्रज आसकर नित नई ॥ ९५ ॥

राग बिलावल ।

नेक मेरे बारे कान्ह छाँड़िदे मथनियां ॥ कंठमें बघनहा सोहे नाक में नथुनियां । नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां ॥ नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां । और जिन करो मेरे छगन मग-नियां ॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियां । सूर सुत देख सुख लेत नंदरानियां ॥ ९६ ॥

राग गौरी ।

मैयारी मोहिं माखन भावै । जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचि आवै ॥ ब्रज युवती इक पाछे ठाढी सुनत श्यामकी बात । मन में कहत कभूं अपने घर देखौं माखन खात ॥ बैठे जाय मथनियांके ढिग तब मैं रहों छिपानी । सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ९७ ॥

गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर । देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर ॥ हरि आवत गोपी जब जान्यो आपन रही छिपाई । सूने सदन मथनियांके ढिग बैठि गये

अरगाई ॥ माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान । चितै रहे मणि खंभ छाँह तन तासों करैं सयान ॥ प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो बन्यो है संग। आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग ॥ जो चाहो सब देहुँ कमोरी अति मीठो कत डारत। तुम्हें देख मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुन सुन बात श्यामके मुख की उमँग हँसी सुकुमारी । सूरदास प्रभु निरखि ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारी ॥ ५८ ॥

राग बिलावल।

आज सखी मणि खंभ निकट वीर जहँ गोरसकी खोरी । निज प्रतिबिंब शिखावत या शिशु प्रगट करै जिन चोरी ॥ अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भली बनी है जोरी। माखन खाउ कतहिं डारतहो छाँड़ि देहु मति भोरी॥ हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बात है थोरी। मीठो परम अधिक रुचि लागै देहौं काढ़ि कमोरी ॥ प्रेम उमँग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम सांझकी अँधेरी ॥ मंदिर में गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय देह महरूप कहो को करै निबेरी। दीपक गृह दान करयो भुजा चार प्रगट धरयो देखत भइ चकित ग्वालि इत उतको हेरी ॥ श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि बिंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल बालकही वेरी। युवती अति भइ निहाल भुज भरदे अंकमाल सूरदास प्रभु कृपालु डारयो तनु फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली।

माखन चोर री हौं पायो॥ जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिननही खायो। श्रीमुखते उघरी द्वै दतियां तब हँसि कंठ लगायो॥ परमानंद प्रभु प्राण जीवन धन वेद विमल यश गायो ॥ ६१ ॥

सखि मोहिं हरि दर्शनको चाव॥सांवरे सों प्रीति बाढ़ी लाख लोग रिसाव । श्याम सुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव ॥ सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके नंदके ललैया मोरे अँगनामें आउरे । दही दूध बहुत प्याऊं माखन घनो सो लाऊं मीठी मीठी तान नेक गायकै सुनाउरे । नंद जूके किशोर मेरे चित्तहूके चोर नेकतो अधर धर बाँसुरी बजाउरे । या छबि ऊपर कोटि काम वारि डारों दयासखी प्रेम वश हिय में समाउरे ॥ ६३ ॥

आया कर साँवरे इन गलियोंमें झूम झूम साँझ औ सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर । जायाकर यमुनाके तट रोज रोज प्यारे बांसुरी अनोखी इक लहजातो सुनाया कर । कादर कहै छाया कर नयनों बिच मेरे आय रूखा सूखा थार हम गरीबोंका पायाकर ॥ खायाकर माखन मलाई दधि लूट लूट कर हाव भाव मेरे हिय में समाया कर ॥ ६४ ॥

चीरा की चटक औ लटक नव कुंडल की भौंहकी मटक मोहिं आँखि न दिखाउरे । जादिना सुजान गुण रूप के निधान कान्ह बांसुरी बजाय तनु तपन सिराउरे । एहो बनवारी बलिहारी जाउँ तेरी आज मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउरे ॥ नंदके किशोर चित्त चोर मोर पंखवारे बंशीवारे साँवरे पियारे इत आउरे ॥ ६५ ॥

राग पीलू ।

बंशीवारे तु मेरी गली आजारे । तेरे बिन देखे कलना परतहै टुक मुखडा दिखलाजारे ॥ रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो बंशी की टेर सुनाजारे । चरणदास सुखदेव पियारे मेरोहि माखन खाजारे ॥ ६६ ॥

सवैया ।

योगिया धर ध्यान रहैं जिनको तपसी तनु गारके खाक रमावें ।
चारहु वेद न पावत भेद बड़े तिवेंदी नहीं गति पावें ॥

स्वर्ग मृत्यु पातालहूमें जाको नाम लिये ते सभी शिरनावैं।
चरणदास कहै ताहि गोपसुता करमाखन दे दे नाच नचावैं ॥६७॥
शंकर से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारिहु आनन गावैं।
जो हिय नेसुक आवतही रसखान महाजन मूढ़ कहावैं ॥
जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन बार न लावैं ॥
ताहि अहीरकि छोहरियां छछिया भरि छाँछ पै नाच नचावैं ॥६८॥

कवित्त ।

ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवें कभूं एकक्षण शंकर समाधिलाय ध्यान धरत गाढ़ोहै ॥ ऋषि और मुनि जाको रैनि दिन धरैं ध्यान ध्यानमें न आवैं कभूं तासों हेत बाढ़ोहै ॥ सोई है निरंजन जाकी माया को न आवै अंत ध्यानी ध्यान लाय रहत सहत धूप जाड़ो है ॥ देखोरी भाग्य ब्रजवनितनके आज आली ह्वैकै अनंत नवनीत मांगै ठाढो है ॥ ६९ ॥ जाके पद परसनको तरसत हैं विश्व ब्रज ग्वालनको खेल माँझ कंधन चढाये हैं ॥ जाकी यह माया सुर नर मुनि बांधि राखे सोई गर यशुदा पै ऊखल बँधाये हैं ॥ जाको देव यज्ञ में बुलावें नाहिं आवें सोतो नंद एक थार माँझ जेमके सिहायेहैं ॥ जाने लै नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यों प्रेमवश गोपिन के हीय में समाये हैं ॥ ७० ॥ दीनहूं के बंधु ब्याल मोचो दुःख तत्काल अविनाशी नंदलाल वेदनमें गाये हैं ॥ गावत हैं नेति नेति नेति कहि पुकारें वेद शेषके सहस्र मुख पार नहीं पाये हैं ॥ ब्रह्माते आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान शंकर समाधि लाय हीय में बसा-येहैं ॥ कहत मयाराम देखो भाग्य ब्रजग्वालिनिके ऐसे घनश्याम दै दै माखन नचाये हैं ॥ ७१ ॥ कोऊ कहै मेरे आगे नेक तू नाच लाला लोन मिली छाँछ दूंगी आछी सी धुंगारके । भोर भयो वाके गयो वासों मेरो वैर भयो धींगीसी गुजरियाने आन लियो धायके ॥ खिरका सब तोर डारे बासन सब फोर डारे दूध ढकाय दियो बंदरा बुलायके । नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकु-चानी सूरश्याम उलँभा लियो शीश पै चढायके ॥ ७२ ॥

राग कल्याण ।

व्रजकी अहीरनाके भागभले देखो भैया देवनाको देव कैसी सेवना कर पायो है॥शिव औ विरंचि जाको पार नहीं पावें ताहि गोकुलाकी नारी करतारी दै नचायो है ॥ नारद मुनीसे तुंबरूसे पढ़ि पचिहारे व्यास जूकी वाणीसों विमल यश गायो है ॥ कहै रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके प्रेमको पयोधि व्रज वीथिन वहायोहै ॥ ७३ ॥

उराहनो लीला ।

दोहा—योग ध्यान आवें नहीं, यज्ञ भाग ना लेयँ ।
ताको व्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखनदेयँ ॥

राग कान्हरो ।

माखनकी चोरी रे, तुम सीखे हो करन, जब लागे करन चितचोरीरे । जब ते दृष्टि परे नँदनंदन पाछे फिरों दौरा दौरीरे ॥ लोक लाज मर्यादा तोरी वन वन विहरत नवल किशोरीरे ॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तोरीरे ॥ ७४ ॥

राग देवगंधार ।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी । नंदनँदन मेरे मंदिर में आज करत हैं चोरी ॥ हौं भइ आन अचानक ठाढी कह्यो भवन में कोरी । रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनोभई मति भोरी ॥ मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी । जब गहि बाहिं कुलाहल कीन्हों तब गहि चरण निहोरी ॥ लागे लेन नयन जल भर भर मैं हरि कान न तोरी । सूरदास प्रभु देत निशा दिन ऐसे अल्प सलोरी ॥ ७५ ॥

राग ठुमरी ।

तेरोरी कन्हैया वलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो । दधि मेरो खायो मट्टुकिया फोरी रह्यो सह्यो ढरकायो ॥ जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूंढ फिरी नहिं पायो । जानकी दास याहि बरजो क्यों ना पूत अनोखो जायो ॥ ७६ ॥

राग मल्हार ।

यहां लों नेक चलो नँदरानीजू । अपने सुतकेकौतुक देखो कियो दूध में पानी जू ॥ मेरे शिरकी चटक चूनरी लै गोरस में सानीजू । हमरो तुमरो वैर कहाहै फोरी दधि कि मथानी जू ॥ या ब्रजको वसिबो हम छाँड़ें यह निश्चय कर जानी जू । परमानंद दास को ठाकुर गोकुल कियो रजधानी जू ॥ ७७ ॥

राग ईमन ।

रानीजू लीजिये यह गाम ॥ दीजिये हमको विदा राम राम है जु हमारी । वसि हैं अनतहिं जाय वात लखि लई है तुम्हारी ॥ आपन तो नाहीं करत री सुतको देत पठाय । तीस दिना की वात है यह कापै सहियो जाय ॥ रानी० ॥ मेरे शिर पर बसो गाम काहेको छोरो । श्याम आपनो जान मानले मेरो निहोरो ॥ जो कछु तुम ते सुत कही मोहिं कहो समुझाय । मैं तो यह जानो नहीं तुम लीजो सौंह धराय ॥ ग्वालिन गामको मत छोरे ॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं । वाने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ बछरा छोरे खरिक ते बांधन को ना जाय । सखा भीर लै द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खायो दही दूध करलेयो मोते लेखो । दुगनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेहु विशेखो ॥ माट भरे दधि दूध के घर में चाखत नाय ॥ मोहिं यही अचरज बड़ो पावत तुम घर जाय ॥ ग्वालिन० ॥ काहेको घरको छुये जौलौं कहुँ मिलत परायो । अपनो सुंदर माल काहू पै नजात लुटायो ॥ आप खाय तौहूं सहें मर्कट देत खवाय । जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय ॥ रानी० ॥ ७८ ॥

राग भैरवी ।

मेरी भरी मटुकिया लै गयोरी । कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीती कर मोहिं दै गयोरी ॥ वृंदावनकी कुंजगलिन में

ऊंची नीची मोते कहि गयोरी । परमानंद ब्रजवासी साँवरो अँगुठा दिखाय रस लै गयोरी ॥ ७९ ॥

राग जंगलाकाफी ।

दधि पीगयोरी माई आज ॥ तेरो नट खट करगयो चट पट ॥ यह कहा सीख तैं दई कृष्णको ब्रजनारियोंके पट खोलनकी री ॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नहीं ॥ एक रोज गूजरीका दांव जो लगा लहिंगे में पकर वाको दाब लाई री ॥ तू जो कहे थी मेरो नट नहीं चोर अब याहि लेरी माई ॥ ब्रजकी सखी सब देखनको धाई आज पकरे गये हैं यादव राईरी ॥ खोलके दिखाओ इतवार नहीं आवे जाने किसको पकर लाईरी ॥ भीतर प्रभूने ऐसो रूप लियो धार गूजरी को पति-भतार बनोरी ॥ गूजर जैसी पगडी और तगडी गूजर जैसी डाढी गोडों लौं लटकाईरी ॥ बोली ब्रजनारी ऐसी बावरी भई तू आपनी तो ताली तैंने बजवाईरी ॥ तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजर को पकर लाईरी ॥ छल कृत रूप देख गूजरी विहाल भई काढके घुंघट बड़ी शर्माईरी ॥ दूसरी कोठरी में आप रहे बोल मैं तो यहां बैठो माईरी ॥ एक बोली ब्रजनारी तू तो बावरी भई आपनी तो हाँसी तैंने करवाईरी ॥ कहे जियाराम यह तो पूर्ण ब्रह्म गति ऋषियोंने नहीं पाईरी ॥ ८० ॥

राग रेखता ।

सुनिये यशोदा रानी छोडैं ये ब्रज तिहारो । कहिं जायके बसैंगी अतिही करैं किनारो ॥ नित कहाँ तलक सहिये नुकसान तेरे सुतको । घर जायके हमारे माखन चुरावे सारो ॥ तेरेही पास बालक यह बनके आय बैठे । जब जाय घर सखिनके सुंदर तरुण निहारो ॥ छींके पै हो कमोरी लठिया ते फोरडारे । दधिकी मथनियां तोरके माखन सभी बिगारो ॥ नित करे हानि हमरी रंगीनयाहि बरजो । ऐसो चपल यह ढीठ है यशुदाजी सुत तिहारो ॥ ८१ ॥

राग देस ।

गारी मत दीजो मो गरीबिनीको जायो है । तेरा जो बिगारयो सो तो मोसों आन कहौ वीर मैं तो काहू बातको नहीं तरसायो है ॥ दधि की मटुकिया भरी अँगनामें आनिधरी तोल २ लीजो वीर जेतो जाको खायोहै । सूरदास प्रभु प्यारे नेकहू न हूजे न्यारे कान्हरा सो पूत मैंने बड़े पुण्य पायो है ॥ ८२ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी मैं नहिं माखन खायो ॥ भोर भयो गैयनके पाछे मधुबन मोहिं पठायो । चार पहर बंशीवट भटक्यो सांझ परी घर आयो ॥ मैं बालक बैंयनको छोटो छीको किस विधि पायो । ग्वाल बाल सब बैर पड़ेहैं बरबश मुख लपटायो ॥ तू जननी मनकी अति भोरी इनके कहे पतियायो । जिय तेरे कछु भेद उपज है जान परायो जायो ॥ यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुतहिं नाच नचायो । सूरदास तब हँसी यशोदा लै उर कंठ लगायो ॥ ८३ ॥

राग काफी ।

बर्जरी महरी मोहनको चंचल चोर चतुर सुत तेरो ॥ आंगन आवै गोरस खावै दधि मटकी भूपर पटकावै बाल रुआवै धूम मचावै ऐसो नित उठ करत बखेरो ॥ पलनापर ऊखलहिं टिकावै तापर चढकर माखन लावै कपि बालनको टेर खिलावै देखत दुखित भयो मनमेरो ॥ छिप कर भीतर जाय निकासै अंधकार में मणी प्रकाशै ना पावै तो गारी देवै आग लगो उजरो घर तेरो ॥ सांझहिं धेनु वत्स लैआवै यशुदाजू दुख सह्यो न जावै राख गाम अपनो हम जावें केशव जन मन प्रेम घनेरो ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

कान्ह नित नये उरहना लावै । दूध दही घर काहू की कमी नहिं नाहक धूम मचावै ॥ तनक दहीके कारण मोहन माखनचोर कहावै । सूर श्याम को यशुमति मैया वारंवार सिखावै ॥ ८५ ॥

राग सहानो ।

देख चरित मोहिं अचरज आवै । जो करता जग पालक हरता सो अब नंद को लाल कहावै ॥ बिन कर चरण श्रवण नासा दृग नेति नेति जाको श्रुति गावै । ताको पकर महरि अँगुरी ते आंगनमें चलिबो सिखरावै ॥ ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनंत कहावै । सो शशि बदन सदन शोभाको नँदरानी निज गोद खिलावै ॥ जाके डर डोलत नभ धरणी काल कराल सदा भय पावै । सो ब्रजराज आज जननी की भौंह चढीको निरखि डरावै ॥ जाके सुमिरण ते जीवनको भव बंधन छनमें छुटजावै । सोई आज बँध्यो ऊखल ते निरखन को सगरो ब्रज धावै ॥ पूरण काम क्षीरसागर पति माँग माँग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥ ८६ ॥

राग रामकली ।

यशोदा तू बडी कृपण री माई । दूध दही सब विधि को दीन्हों सुतडर धरत छिपाई ॥ बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई । सोऊ तो घरही घर डोलै माखन खात चुराई ॥ वृद्ध बैस पूरे पुण्यन ते तैं बैठी निधि पाई । ताहूके खइबे पीबेको कहा इती चतुराई ॥ सुनोन वचन चतुर नागरके यशुमति नंद सुनाई । सूर-श्यामको चोरीके मिस देखनको यह आई ॥ ८७ ॥

राग गूजरी ।

यशोदा कान्ह हूं ते दधि प्यारो । डार देहु कर मथत मथानी तरसत नंददुलारो ॥ दूध दही माखन ले वारौं जाहि करत तू गारो । कुम्हिलानो मुख चंद्र देख छबि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो । सूर श्याम पर बलि बलि जैये जीवन प्राण हमारो ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ।

यशोदा तेरो कठिन हियोरी माई । कमल नयन माखनके

कारण बांधे ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई । याही ते तू गर्व भरी है घर बैठे निधि पाई ॥ तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई । अब काहे घर के लरिका सों करत इती जडताई ॥ वारंवार सजल लोचन भरि जोवत कुँवर कन्हाई । कहा करूं बलि जाउँ छोरती तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरत जल थल में व्यापक निगमन खोजि न पाई । सो यशुमति अपने आँगन में दै करतार नचाई ॥ सुरपालक प्रभु असुर सँहारक त्रिभुवन जाहि डराई । सूरदास स्वामीकी लीला निगम नेति नित गाई ॥ ८९ ॥

राग सारंग ।

यह सुनिकै हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखल सों बांधे तबहिं दोउ लोचन भर आये ॥ मैं बरज्यो कइ बेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूं छाँडोगे लँगराई दोउ कर जोर जननि पै आये ॥ श्यामहिं छोर मोहिं बरु बांधो निकसत शकुन भले नहिं पाये । मेरो प्राण जिवन धन माधो तिनकर भुज मोहिं बँधे दिखाये । माता सों कह करों ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनाये । सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इक है आये ॥ ९० ॥

अब घर काहूके जनि जाहु । तुम्हरे आज कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ जरै जेवरी जिन तुम बांधे बरै हाथ महराय । नंद मोहिं अति त्रास करैगो बांधे कुँवर कन्हाय ॥ बलि जाऊँ अपने हलधर की छोरत है जो श्याम । सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि तुम धाम ॥ ९१ ॥

मगरोकन लीला ।

राग आड़ा कालिंगड़ा ।

छाँडो मोरि गैल नातो गारी मैं सुनाऊंगी । औरनके भूले कहूँ मोते जिन अटको अभी यशुमति पै पकर लैजाऊंगी ॥ पहले ही सों अपनी बड़ाई कहा कहूं मैं देखियो तो कैसो तुम्हैं नाच नचा-

ऊंगी । जो मैं तुम्हैं सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निज बाप की न आजसे कहाऊंगी ॥ ९२ ॥

राग दादरा ।

प्यारे जिन मेरी बाहँगहो ॥ मारग में सब लोग देखतहैं दूरी क्यों न रहो । मनमें तुम्हरे कौन बात है सोई क्यों न कहो ॥ कहिहौं जाय आज यशुमति सों हमरी बाट रोकत हो । इतने पै नहिं मानत आनँद्घन लरकाही तुम हो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ।

छांडो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घर की मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बैहां गहत हो नैन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥ वृंदावनकी कुंजगली में रीत छोड अन-रीत करो ना । मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चित टारे टरो ना ॥ ९४ ॥

राग मलार ।

छैल गैल मत रोके तू हमारी रे ॥ चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करैं सब पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी काँपत हैं शिरपर दधि की मटुकिया भारी रे ॥ नारायण ब्रज कौन बसैगो ऐसी अनीति जो करनी विचारीरे ॥ ९५ ॥

राग विहाग ।

बरजो नहीं मानत बार बार ॥ जब मैं जात सखी दधि बेचन भाजत कंकर मार मार । ले लकुटी मटुकी माहि पटकत घूंघट देखत टार टार ॥ हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥ कपटी कुटिल कठोर श्याम घन देखत छवि तरु डार डार । हरि विलास ब्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥ ९६ ॥

राग झँझोटी ।

बड़ो खोटा ढोटा नँद को आली । जाको नाम कहत बनमाली ॥ मिल्यो यमुन तट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटकी चट

दधि गट नट खट कठिन हियो मोहिं देत चला गयो गाली ॥ माथे पै मुकुटधरे कानमें कुंडल पहरे भाल पर तिलक गोरोचन को करे गल बैजंती मुक्तमाल आली मुख तमोल की लाली। कटि पीत वसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणै छबि को कवि देखतही मन हरचो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ ९७ ॥

लावनी।

सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी। मैं देत दुहाई बबा नँदजूकी हाहाखाके छूटी ॥ मैं दधि बेचन जात वृंदावन शिर धरे गोरस की मटकी। आन अचानक, तेरे कान्हा ने मेरी बैहां झटकी ॥ जब झटकी हिरदै में खटकी लटकी शिर में आ अटकी। मैं व्याकुल ह्वै गई, रहीना सुरत मोहिं घूँघुट पटकी। ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं धरन मेरी मटुकी फूटी ॥ मैं देत०॥ एक सखी कह चुकी दूसरी कहै सुनो यशुदारानी। आज या ब्रज में, तेरे कान्हा ने धूम ऐसी ठानी ॥ घाट बाट पै रोकत डोलै नहीं भरन देवेपानी। पानी भरत में, दान माँगत ऐसो दधिको दानी ॥ कर की चूरी गई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी ॥ मैं देत०॥९८॥

राग देस।

सुनरी गुण कान्ह कुँवरके॥ तेरो री सुत चपल कहावे यमुनाके तट बंशीबटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ बदन की छबि कान्हा मुकुटको शिर धर कदमके तरु तर कुँवर दुरचो॥ बाँसुरी बजाई मेरी सुध विसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकरचो ॥ ९९ ॥

ठुमरी।

मोको डगर चलत दीन्हीं गारीरे। ऐसो री ढीठ बनवारी री गोइयां विनती सकल कर हारी रे ॥ नीर भरन मैं चलीहूं धामसों बीच मिले पनघटमें कान्हरे। वहतो जाने नदे पनघटको सनद पिया निर्खत सगरी पनिहारी रे ॥ १०० ॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियां कैसे फोरी नँदलालने ॥ वन में निवासी भयोरी नंदको करत फिरत बरजोरी ॥ नंदलालने० ॥ जित जाऊँ तित आडोइ आवे एरी दैया मोते जोर जनावे री ॥ यह ब्रज कैसे बसेगोरी । सासुरे जाऊं तो सासलरे इत यह घर घाले री । आत्मा-राम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाऊं हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १०१ ॥

रागटोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूँघटपट खोल खोल साँवरो कन्हाई । यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर बगर झगर करत रार तो मचाई । हौं तो बीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधरके चरण ऊपर मीरा बलिजाई ॥ १०२ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोको गारियां दे दे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर ॥ गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी । आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥ मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे कुंडलकी छबि न्यारी न्यारी ॥ दोउ कर जोरे विनती करतहों सूर शरणागत तिहारी तिहारी १०३

राग सिंध ।

रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊं पानियां ॥ शीश मुकुट कंच-नको झलकै मकर मनोहर कुंडल अलकै माथे खौर चँदनकी राजे उर बैजंती माल विराजे पीतांबर कटि कस्योरी चौतानियां ॥ अधर सुधारस वेणु बजावै ग्वाल बाल लिये सँगही आवे कहा न माने नंद महरको माखन खात फिरत घर घरको ऐसो री निडर झकझोरी मोरी बैनियां ॥ कर किंकिणियां नूपुर बाजैं रुनुझुनात बहु मुनि मन राजैं पग पैंजनियां सुंदर साजैं दर्श देख अघ दूर ते भाजैं

अति चंचल अलबेली चितवनियां ॥ गागर फोर मोर मुख हँसके करते गह निज उर ते लचके सूरश्याम प्रभु नागर नटको बरज रही मानत नहीं हटको काहेना बरजोरी यशोदा महारानियां १०४

राग रेखता ।

यमुना न जान पावें भरने न देत पानी । ढोटा बड़ा अनोखाहै नंदको गुमानी ॥ लेकर जो गागर गृह से यमुना पै भरने आई । आगे जो ठाढो मग में वह साँवरो कन्हाई ॥ देखी सखी अकेली बैंहां पकर मरोरी । छाती सों कर लगावे गल हीर हार तोरी ॥ निरखी अली नवेली या कुंज वाट पाई । हँस हँसके ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई ॥ १०५ ॥

राग छायानट ।

अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो ॥ हौं जो जात कुंजन दधि वेचन बीच मिले गिरिधारी ॥ अगरसुने मोरी वगर सुनेगी सास सुने देवे गारी ॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणन बलिहारी ॥ १०६ ॥

राग श्यामकल्याण ।

नट नागर चितचोर गेंद तक मारी सँवलिया ॥ भयो निशंक अंक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो ऐसो जालिमजोर ॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर १०७

नयनोंकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियोरी मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी ॥ यमुनाके तट भेट भई मोसों ऐसो छैल बिहारी । सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जाने कहांसों अचक आय लंगर ० ॥ नई चुँदरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आँख दिखावे देख वीर अति कोमल बैहां दोउ कर पकर मरोर

गयो ॥ मोसों कहे सुन एरी सुंदरी तो समान ब्रज सुघर न कोऊ नख शिख लों छविपरख निरख मुख सघन कुंज की ओर गयो ॥ कहँ लग कहों कुचाल ढीठ की नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो वरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता ।

सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई । सब लोक लाज वान यमुना में धो बहाई ॥ भोरैहि मैं गई जो जल भरवेकाज भयना । पीछे सों आ अचानक उन मूँदे मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे बैना । हौं तो रही अकेली वा संग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई । सुनले० ॥ हँस हँसके छैल मोसों करवे लगो ठठोली । वह छवि तिहारे मुख की अब कासों जावे तोली ॥ निरखे कबू बदनको कबहूं व छूवै चोली । मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि बैहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई । सुनले० ॥ कबहूं कहे बतारी तू क्यों अकेली आई । कै घर में तेरे पतिकी तोसों भई लराई ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधना ने तेरी मेरी जोरी भली बनाई॥नारायण वाकी बातें सुनके मैं अति लजाई॥ सुनले०॥११०॥

सुनिये यशोदा कान दे अरजी यही हमारी । हम छांडजाँय ब्रजको मरजी यहीं तुम्हारी ॥ नित घाट वाट नट खट जेहर झडाक पटकै । बैया मरोरे झटपट छातीसों हार झटकै ॥ पुनि कूद कर कन्हाई घूंघट सम्हार खोलै । ठोढी सों कर लगाके रस कीसी बात बोलै । निज दृष्टि बाण करके भौं हैं कमान ताने । चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥ चोरी करे सो चोरी घरमें डगर में पावे । भाजन को देत फोरी माखन दही लुटावे ॥ कोई सखी इकेली घर में बगर में पावे । हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥ हम बार बार तुमपै करती पुकार हारी । तुमने दया हमारी कबहूं नहीं विचारी ॥

कीजे कृपा शिताबी हम गोपकी कुमारी । दीजे निकास देखूं कैसो रसिक विहारी ॥ १११ ॥

राग झूलनाके स्वरमें ।

लिये फिरत सँग सँग सखियनको जाने मोहनी डारी है । ढूंढ़त डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारी है ॥ आप अमृतवट आपहिंपीवै आपहि प्यावन हारीहै । आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है ॥ बंशी बजन दिशा अवलोकन घूँघट ओट निहारी है । सब सखियन में चतुर राधिका श्रीवृषभानु दुलारी है ॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु धारी है । लीजै पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक बनवारी है ॥ ११२ ॥

गोचारनलीला ।

राग रामकली ।

मैया मैं गाय चरावन जैहों । तू कह नंद महर बाबा सों बड़ो भयो न डरैहों ॥ श्रीदामा आदि सखा सब अपने औ दाऊ सँग लैहों । बंशीवटकी शीतल छैयां खेलत अति सुख पैहों ॥ देहु भात कामर भर लैहौं भूख लगै तब खैहों । परमानंद प्रभु तृषा लगे जब यमुनाजलहि अचैहों ॥ ११३ ॥

राग सारंग ।

शीश मुकुट मणि विराज कर्ण कुँडल अधिक साज अधर लाल चिबुक सुँदर यशुमतिको प्यारो । कमल नयन कुँवर लाल कुंकुम को तिलक भाल गुंज माल कंठ धार कान्ह कमरी वारो ॥ चारन वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपिनको चित चुरात कहियत नँदवारो । अति स्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात मिहर दास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो ॥ ११४ ॥

राग बिलावल ।

खेलन में को काको गुसैयां। हरि हारे जीते श्रीदामा बरबश ही

कत करत रुसैयां ॥ जाति पाँति हम ते बड़ नाहीं ना हम बसत तुम्हारी छैयां । अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासों को खेलै हाहाखात परत तब पैयां । सूरदास प्रभु खेल्यो ही चाहें दाँव दियो कर नंद दुहैयाँ ॥ ११५ ॥

राग जंगला सिंध ।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां । नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दशगैयां अधिकैयां ॥ ना हम चाकर नंद बबाके ना तुम हमरे नाथ गुसैयां । आपन रहत नींद को माते हम चारत तेरी वन वन गैयां ॥ कबहूं जाय कदम चढ़ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां । मानी हार सूरके प्रभुने अब नाहिं जाऊं मोहिं नँदकी दुहैयां ॥ ११६ ॥

राग टोडी ।

आज कौने धों बन चरावत गाय कहा धों भई बड़ी बेर । बैठे कहँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर ॥ वृन्दावन आदि सकल बन ढूंढ्यो जहिं गायनकी टेर । सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुराए दुरत डुँगरन की ओट सुमेर ॥ ११७ ॥

राग सारंग ।

ब्रज वासिन पटतर कोउ नाहीं । ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूठन लै लै खाहीं ॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई । धन्य धन्य वृंदावनके तरु जहँ विहरत प्रभु त्रिभुवन राई ॥ हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई । सूरदास प्रभु विश्वंभर है ग्वालन कौर अघाई ॥ ११८ ॥

राग अंबीर कल्याण ।

ठुमक गति चलत अनोखी चाल । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर बेंदी भाल ॥ आगे गैयां पाछे गैयां सँग सोहैं ब्रजबाल । विष्णुदास मुरलीधरकी छबि देखत भई निहाल ॥ ११९ ॥

राग केदारा ।

बन आये बनवारी। शिर धार चंदन खौरि मोतियनकी गल माला मोर मुकुट पीतांबर सोहै कुंडलकी छबि अति न्यारी ॥ वृंदावन की कुंजगली में चाल चलत गति अति प्यारी । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरण कमल पर बलिहारी ॥ १२० ॥

राग जंगला ।

चले आते हैं मोहन वनसे धेनु चराये हुए। लिये बंशी अधर पर धर मधुर सुर गाये हुए ॥ उडी गोरज परी मुख पै छबीले लाला हूंके । लटकता नाक में मोती कुंडल झलकाये हुए ॥ मुकुट की लटक पै अटकीं मोरी अँखियां यह लाला । लेगई जो मन मेरा ज़ुल्फें नागिन बल खाये हुए ॥ नयननकी सैन दे मोही सकल ब्रज हू की बाला । परी वश प्रेमके ऐसी छुटती नहीं छुडाये हुए ॥ अपने कृष्णदास पै कीजिये कृपा नंदजूके लाला । दीजिये दर्शन चरणसों रहूं लिपटाये हुए ॥ १२१ ॥

राग कान्हरो ।

देखन दे मोरी बैरन पलकें । निरख स्वरूप मदन मोहनको बीच परत बज्जर सी सलकें ॥ आगे आगे धेनु पाछे नँदनंदन गोचरणन रज मंडित अलकें । कुंडल कर्ण कोटि रवि पसेरे परत कपोलन में कछु झलकें ॥ ऐसो स्वरूप निरख मोरी सजनी कहारी कियो इस पूत कमल के । नंददास जननकी यह गति तरफत मीन भाव बिन जलके ॥ १२२ ॥

राग खम्माच ।

लटक लटक चलत चाल मोहन आवै।भावै मन अधर मुरली मधुर सुर बजावै ॥ चंदन कुंडल चपल डोलन मोरमुकुट चंद्रकलन मंद हँसन जियाकी फँसन मोहनी मूरत राजै । भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुरे बैन गति गयंद चारु तिलक भालपर

विराजै । लछनदास श्याम रूप नख शिख शोभा अनूप रसिक भूप निरखि बदन कोटि मदन लाजै ॥ १२३ ॥

राग गौरी ।

लटकत चलत युवति सुखदानी । संध्या समय सखा मंडल में शोभित तनु गोरज लपटानी ॥ मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुबानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आये वन ते ले आरती वारत नँदरानी ॥ १२४ ॥

राग गौरी ।

मैया मोरी कमरी चोर लही । मैं वनजात चरावन गैयां सूनी देख गही ॥ एक कहै कान्हा तेरी कामर यमुना में जात बही । एक कहै श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई ॥ एक कहत नाचो मेरे आगे लेदेहों और नई । सूरदास यशुमतिके आगे अँशुअन डार दई॥

राग कान्हरो ।

पौढे श्याम जननि गुणगावत । आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत ॥ कौन पुण्य तप ते मैं पायो ऐसो सुंदर बाल । हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल ॥ १२६ ॥

कालीदमनलीला ।

छंद ।

गेंदके सँग कूद बालक यमुना जल पैठे धायके । नाग नागिन करत क्रीडा हरि उतरे तहां जायके ॥ कौन दिशा ते आयोरे बालक कहाँ तुम्हारो गामहै । कौन सखीके पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नाम है ॥ पूर्व दिशा ते आयेरी नागिन गोकुल हमरो गाम है । मात यशोदा पिता नंदजू कृष्ण हमरो नाम है ॥ प्रभुके सन्मुख कहत नागिन जारे बालक भागके । तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारै जागके ॥ भागे कुलको दाग लागे अब भागे कैसे बनै । होनी होय सो होय री नागिन नागतो नाथे बनै ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बन आइयां । कंस सेती द्वंद्व कीनो

नाग नाथन आइयां ॥ कै बालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयां । कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयां । ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां ॥ ले बालक गलहार माला सवा लखकी बोरियां । सो तौ लै घर जाउ रे बालक नागसों देउँ चोरियां ॥ कहा करों गलहार माला सवालखकी बोरियाँ । वृंदावन में गडो हिंडोरा नागकी करों डोरियां ॥ चौंसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयां । जागो हो बलवंत योधा बालक जूझन आइयां ॥ जब उठे हो जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां । प्रभुके मुकुटको झपट कीनो शब्द ताल बजाइयां ॥ दोऊने मिलके द्वंद्व कीनो राग भेद सुहाइयां । सहस फण प्रति निर्त कीनो थेइ थेइ शब्द उचारियां ॥ कर जोर नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां । नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां ॥ बावन बलिके द्वार हरिजू आप रूप बढाइयां । मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह राम रूप दिखाइयां ॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोडो नागको । प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको ॥ नंदनँदन तब भये राजी दियों काली छोडके । करि अनुग्रह दास कीनो ताके मदको तोडके ॥ कालीदह में नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां । प्रभु मदन मोहन रहस मंगल याहि विधि सों गाइयां ॥ १२७ ॥

राग काफी ।

कालीके फनन ऊपर निर्त्तत गोपाल लाल अद्भुत छबि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहें । तत्ता थेईथेई करत हरत सबके चित्त जात गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहें ॥ रुनक झुनक नूपुर धुन उठत उठत पैजनी पग ठुमक ठुमक किंकिणी कटि बाजत चित करखें । विद्याधर किन्नर गंधर्व जहां उघटत गत जय जय जय भाषत सुर बधू पुष्प बरषें ॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे

करत त्यों त्यों कृष्ण मारें लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गतिधीमें । तरुण वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक पटकत पग ललित रंग भीने ॥ नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोइ उरग शीश धारें । विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग विसरत न विसारें ॥ १२८ ॥

तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली । पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर बिंबिंबिं विनती करत नाग बधूआली ॥ संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली ॥ सूरदास प्रभुकी बानी किंकिंकिं किनहूं न जानी चंचंचं चरण धरत अभय भयो काली ॥ १२९ ॥

राग कान्हरो ।

जबहिं श्याम तनु अति विस्तारयो । पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण शरण अहिराज पुकारयो ॥यहवाणी सुनताहिं करुणामय तबाहिं गये सकुचाये । यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनो वसन बढाये ॥ यही वचन गजराज सुनायो गरुड छांड तहँ धाये । यही वचन सुन लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये ॥ यह वाणी सहिजात न प्रभु पै ऐसे परमकृपाल । सूरदास प्रभु अंग सकोरयो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ १३० ॥

वंदौं मैं चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे ॥ जेपद पद्म सदाशिवको धन सिंधु-सुता उरते नाहिं टारे । जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे ॥ जे पद पद्म फिरत वृंदावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे । जे पद पद्म परस ब्रज युवती सर्वस दे सुत सदन विसारे॥ जे पद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघभारे । जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे ॥ जे पद

पञ्च फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज सँवारे । ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे ॥ १३१ ॥

श्याम कमल पद नख की शोभा । जे नख चंद्र इंद्र सुर परशें शिव विरंचि मनलोभा ॥ जे नख चंद्र सनक मुनि ध्यावैं नाहिं पावत मर्माहीं । जे नख चंद्र प्रगट ब्रज युवती निरखि २ हर्षाहीं ॥ जे नख चंद्र फणिंद्र हृदय ते एको निमिष न टारत । जे नख चंद्र महामुनि नारद पलक कहूं न बिसारत । जे नख चंद्र भजत खल तारत रमाहृदय नित पर्शत । सूर श्याम नख चंद्र विमल छबि गोपी जन मिल दर्शत ॥ १३२॥

राग बिहाग ।

अबकी राखि लेहु गोपाल । दशो दिशा ते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल ॥ पटकट बांस कांस कुश चटकत लटकट ताल तमाल । उचटत अति अंगार फुटत फिर झपटत लपट कराल ॥ धूम धुंधि बाढी धुर अंबर चमकत बिच २ ज्वाल । हरिन वराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिन जिय डरो नयन सब मूंदो हँसि बोले नँदलाल । सूर अनल सब बदन समानी अभय करे ब्रज बाल १३३ ॥

गोवर्द्धनलीला ।

राग मलार ।

देखो माई बादर की बरिआई । मदन गोपाल धर्‍यो कर गिरिवर इंद्र ढीठ झर लाई ॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको अमन बडाई । सेवक करै स्वामिसों सरवारि इन बातन पति जाई ॥ इंद्र ढीठ बलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई । सूरदास तिनको काको डर जिहिं वन सिंह कन्हाई ॥ १३४ ॥

राग बिलावल ।

राखि लेहु गोकुलके नायक । भीजत ग्वाल माय गो सुत सब

विषम बूँद लागत जनु सायक ॥ वर्षत मूशल धार सैनपति महा-मेघ मघवाके पायक । तुम बिन ऐसो कौन नंदसुत यह दुख दुसह मेटिवे लायक ॥ अघमर्दन बकबदन बिदारन वकी विनाशन सब सुखदायक । सूरदास तिनको काको डर जिनको तुमसे सदा सहायक ॥ १३९ ॥

राग लावनी ।

साँवरे शरणागत तेरी । इंद्र ने आय ब्रज घेरी ॥ देखोजी यह बादर मिल आये । दामिनी दमकत भरलाये ॥ मेघभर लोकां वरसावें । भाग अब कहो कितको जावें ॥ कहोजि अब कैसे बने पर्‍यो इंद्रसों वैर । कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर ॥ जुगत हम बहुतेरी हेरी ॥ साँवरे०॥ कही हम तुमरी सब मानी । भेट गिरिवर की मन ठानी ॥ इंद्रकी झूंठ सभी जानी । लखी हम तुमरी नादानी ॥ गोकुल राजा नंदजू जाघर कुँवर कन्हाय ॥ व्रथा वचन अब होत तिहारो जनकी करो सहाय ॥ यतन में नहिं लाओ देरी ॥ साँवरे० ॥ कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पूतना बालकपन मारी ॥ दुष्टनी माया विस्तारी । बनी आप सुंदर नारी ॥ कुच में जहर लगायकै दियो कृष्ण मुखमाहिं । एक मासको रूप तिहारो जीवत छोडी नाहिं ॥ मारकर मारग में गेरी ॥ साँवरे०॥ जो निर्मल जल यमुना को कियो । तुरतही दावानल तैं पियो ॥ अभय ब्रजबासिन को करदियो । खैंच कर मन सबको हर लियो ॥ ब्रज तरीको साँवरे करै इंद्र बेहाल । अबके सहाय करो नँदनंदन करुणासिंधु गोपाल ॥ शरण यह ब्रज मंडल तेरी । साँवरे०॥ अधर हरि आपन मुसुकाये । वचन यह मुखते बतलाये ॥ कहो तुम ह्यां कैसे आये । सबी मिल गिरिवर पै धाये ॥ नख पर गिरिवर धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्द्धनके शीश पर दियो सुदर्शन मेल ॥ अधर धर बंशीको टेरी ॥ साँवरे०॥ सोहे शिर पचरंगी चीरा । लगे

मुख पाननको बीरा। गले मोतिनकि माल हीरा॥ सोहै कटि पीतांबर पीरा। सात कोसके बीच में गोवर्द्धन विस्तार। सात वर्ष को रूप हरीको लीनो पुष्प समान॥ अशीशां दे रही ब्रजसारी॥ साँवरे ०॥ इंद्रकर कोप कोप गरजे। नहीं जल गिरिवर पर बरसे॥ दामिनी घन घन में चमके। कि मूशलधार परी बरसे॥ वर्ष वर्षके हारचो सुरपति तब जान्यो जगदीश। दोनों हाथ पसारके धरचो चरण में शीश॥ मेरी बुधि माया ने फेरी॥ साँवरे ०॥ अचंभव याको कछु नाहीं। इंद्र तो लाख कोटि ताईं॥ बनावत पल छिनके माहीं। बिगारत देर कछू नाहीं॥ उत्पति परलै जगतकी गिरिधारीको खेल। गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावें इंद्र विचारो कौन॥ नामते काटो यम बेरी॥ साँवरे॥ १२६॥

प्रथम सनेहलीला।

राग गौरी।

बूझत श्याम कौन तू गोरी। कहां रहत काकी है बेटी देखी नहीं कबहुँ ब्रज खोरी॥ काहेको हम ब्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी॥ सुनत रहत श्रवणन नँद ढोटा करत फिरत माखनकी चोरी॥ तुम्हरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिल जोरी। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरै राधिका भोरी॥१२७॥

राग धनाश्री।

प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यो। नयन सैन बातें सबकीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो॥ खेलन कभूँ हमारे आवो नंद सदन ब्रजधाम। द्वारे आय टेर मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाम॥ जो जानो घर दूर हमारो बोलत लेहों टेर। तुम्हैं सौंह वृषभानु बबाकी प्रात सांझ इक बेर॥ सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ। सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि मिल गाथ॥ १२८॥

राग आसावरी ।

खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहर घर आई हो । सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि वाणी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु कलह करत हरि डारयो रिस बिसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति वारंवार बताई हो । यमुना तीर काल्हि मैं भूल्यो बाहँ पकरि मेरी लाई हो ॥ अब तो यहां तोहिं सकुचति है मैं दै सौंह बुलाई हो । सूरश्याम ऐसे गुण आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ १३९ ॥

कवित्त ।

कीरति महरानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कालि माहिं धन्य कहलावते ॥ कौन तप करतो यहि ब्रज माहिं बसबेको कौन बैकुंठहूके सुख बिसरावते ॥ नागरिया जोपै श्री राधे प्रगट नहोती तो श्याम पर कामहूं के बिपती कहावते ॥ छायजातीजडता बिलाय जाते कवि सब जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥

आँख मिचौनीलीला ।

राग गौरी ।

हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर । लुक लुक खेलत आँख मिंचौनी चरण पहारी बगर ॥ सात पांच मिल खेलन निकसीं कोकिला वन की डगर । परमानंद प्रभुकी छवि निरखत मोहि रह्यो ब्रजसगर ॥१४१॥

राग आसावरी ।

गावैं देदे तारियांहो ब्रज की नारियां सुकुमार । नंदके नंदन हो ब्रजके चंदन रस गार ॥ मिलि बर्सानेकी गोरी । गारी गावैं नवल किशोरी ॥ तुम सुनौ नंदके नंदा । तुमको पूछैं सब ब्रज चंदा ॥ तेरी बहन छैल छिनगारा । हमारे श्रीदामा ते यारी ॥ तेरी बडी बिनोदनताई । जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नँदनंदन तेरी बूआ । सो करै झूठके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी । सो कामकला में पाकी ॥

नँदनंदन तेरी मौसी। सोरहत सदा मन हौसी ॥ नँदनंदन तेरी मामी। सो सब अबलन में नामी॥नँदनंदन तेरी नानी। वाकी बात न हमते छानी ॥ नँदनंदन तेरी दादी। सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नंद यशोदा मैया। तुम कोरे कौनके दैया ॥ सुध न्हाय यशोदा रानी। काहू कोरे ते रति मानी ॥ अपनी यशुमतिको गहि आनो। सो आय मिलै वृषभानो ॥ यह नँद वृषभानु सनेही। यह एक प्राण द्वैदेही ॥ वे नंदगामकी बाला। याँ बर्सानेके लाला ॥ गठ जोरे आनि करावो। हथरेलो हमैं दिवावो ॥ यह रहस किशोरी गायो। सो बास सदा ब्रज पायो ॥ १४२ ॥

राग जंगला।

यशोदा ने कारी अँधेरी में जायो। याते कारो रूप हरि पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढायो। रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधेको रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घन-श्यामके जब से गर्ग गृह आयो। ना हमने वसुदेव सुने वासु-देव कहांते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटै ना सजनी वेद पुराणन गायो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यशगायो॥१४३ ॥

राग काफी।

भूषण अपने लेरी मैया। मोरकि चंद्रिका काँच कि मणियां गुंजा फल मोहिं देरी ॥ दुरादुरी में खेलत सजन सँग खेलन मैं नहिं पैहौं। मुख शशि प्रभा बारही राखों इनको कहां दुरैहौं ॥ आज सदन वृष-भानु गोपके खेलन मैं जो गयो ॥ सगरे सखा अगमने भागे मैं ही चोर भयो॥ जबहिं महरि वृषभानु गोपघर गहि अंचर मोहिं रोक्यो। वदन चूमि मिष्टान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो ॥ तब वृषभानु सभा ते आये नंदकुमार न होई। परमानंद कुँवरि को दूलह कहत रहे सबकोई ॥ १४४ ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै। काहू गोपकी तनक ढोटनियां रुनक झुनक चलि आवै ॥ कर कर पाक रसाल अपने

कर मोहिं परोसि जिमावै । करअंचर पट ओट बबाते ठाढी ब्यार ढुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारै कर मनुहार मनावै ॥ अहो मेरे लाल कहो बाबा ते तेरो ब्याह करावै ॥ नंदराय नँद-रानी दोउ मिलि मोद समुद्र बढावै । परमानंद दासको ठाकुर वेद विमल यश गावै ॥ १४५ ॥

बंशीलीला ।

राग गौरी ।

माई विधि हूं ते परम प्रवीन जिन जगत कियो आधीन ॥ लाल की बांसुरिया ॥ चारवदन उपदेश विधाता थापी थिरचर नीत । आठ बदन गर्जत गरबीली क्यों चलि है यह रीत ॥ एक बेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उर ज्ञान । याके तो ब्रजराज लाडिलो लग्योही रहत नित कान ॥ अतुल विभूति रची चतुरानन एक कमल करठाम । हरि कर कमल युगल पर राजत क्यों न बढै अभि-मान ॥ एक मराल बैठ आरोहन विधि भयो महा प्रशंस । इन तो सकल विमान किये गोपीजन मानस हंस ॥ श्रीवैकुंठनाथ पुरबासिन सेवत जापद रेन । याके तो मुख सुख सिंहासन कर बैठी निज ऐन ॥ अधर सुधा लग कुल व्रत टारे नहीं शिखा नहिं ताग । तदपि गदा-धर नँदनंदनको याही ते अनुराग ॥ १४६ ॥

राग कान्हरो ।

बँसुरिया विष भरी बाजी ।

दोहा—बंशी बंशी नामहै, काहू धरयो प्रवीन । तान तानकी डोरसों, खैंचत है मनमीन ॥ अहो बांसकी बँसुरिया, तैं तप कीन्हों कौन । अधर सुधा पिय को पियै, हम तर्सत बिच भौन ॥ अरी क्षमाकर मुरलिया, परिहैं तेरे पाय । और सुखी सुन होतहैं, महा दुखी हम हाय ॥ अहो बांसकी बँसुरिया, निकसी पर्वत फोर । जोमैं ऐसी जानती, डारत तोर मरोर ॥ ए अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम ॥ अरी चलाये सबन पै, भले चामके दाम ॥

तू है ब्रजकी मुरलिया, हमहैं ब्रजकी नार ॥ तीन लोकमें गाइये, वंशी औ ब्रजनार ॥ नयननके चल तीर तनु, रह्यो परत नहिं भौन ॥ तापर वंशी बाज मत, देत कटे पर लौन ॥ १४७ ॥

कवित्त।

बाँसुरी बजे तो ब्रज हम न बसेंगी बीर बाँसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये ॥ जेते राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये॥तानके तिरीछे बान लागतहैं मोहिंआन श्रवणन सुनत जाय वनमें वसीजिये ॥ वंशीको छोड़ो श्याम विनय करत ब्रजकि बाम ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसीहूं न कीजिये ॥

जा दिनते वंशी अवतंशी यहि गोकुलमें तादिन ते कीन्ह्यो श्याम अधर निवासुरी । कुंज २ डोलैं याहि सँगमों किलोलैं किये लीन्ह्यो सौति राग भाग सुखसों विलासुरी ॥ बंदीदीन दीन ह्वै रही हैं हम मोहन विन एक छिन पावत न बोलिबो सुपासुरी । बाँसुरी सुनत नैन आँसु आय जात पीर पाँसुरी समात औ पिरात गाँसु गाँसुरी ॥ १४८ ॥

राग परज ।

बँसुरी तू कवन गुमान भरी ॥ सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रतन जरी । जात सिफत तेरी सब कोइ जानै मधुबनकी लकरी ॥ क्यारीं भयो जब हरि मुख लागी बाजत विरह भरी । सूरश्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागतरी ॥ १४९ ॥

राग भूपाली कल्याण ।

री वंशी कौन तप तैं कियो । रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरनको रस पियो ॥ श्याम सुंदर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो । सूर श्रीगोपाल वश भये जगत में यश लियो ॥ १५० ॥

राग देस ।

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो । यह सब जीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो ॥ धरणी ते गोवर्द्धन धारयो कोमल प्राणअधार । अब हरि लटक रहत हैं

टेढ़े तनक मुरलिया भार ॥ हमें छुड़ाय अधर रस पीवे करे न रंचक कान । सूरदास प्रभु निकस कुंज ते चेरी सौत भइ आन ॥ १५१ ॥

राग दादरा ।

चोरो सखी बंशी आज दावँ भलो पायो है । यह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गौरीराग रसिक साँवरो रिझायोहै ॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरली बीच दिन दिनकी कसक आज काढ़ पायो है । रसिक पीतम जोपै विनती करैं हजारबार तौहू या बांसुरीको भेद ना बतायो है ॥ १५२ ॥

राग देस ।

सखी याकी बंशी लीजै चोर ॥ जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सभन सों तोर । अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशिभोर ॥ छिनइक घर भीतर निशि बासर धरत न कबहूं छोर । कबहुँक कर कबहूं अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥ नाजानूं कछु मेल मोहनी राखी सब अँग कोर । सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो है नादकी डोर ॥ १५३ ॥

कौन बसत या बृंदावनमें मो मुरलीको चोर ॥ जानी नहीं लई काहू करमें कटि में उरसी जोर । चोरी नहिं बरजोरी एरी प्यारी मो मुरलीको चोर ॥ राजाही को दिये बनेगी यही न्यावकी तोर । वृंदावन हित रूप सुघर पिया बाट गँवाई ढूँढो काननके कछु देहु अकोर ॥ १५४ ॥

राग खमाच ।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधा ॥ प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुणगाय ॥ सप्त सुरन सुर नर मुनि मोहे बँसुरी नेक बजाय॥ यह विनती बलिहार सुनो क्यों ना प्यारीजी हेत सहाय १५५

राग काफी ।

मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं । सुनहो कुँवारि किशोरी श्री राधे राधे राधे गाय सुनाऊं ॥ चरण छुवाय कहतहों

तुमसों तेरोहि ध्यान लगाऊं । यह विनती बलिहार बिहारन तेरे हि हाथ बिकाऊं ॥ १५६ ॥

राग भूपाली ।

बंसी मेरी प्यारी दीजै प्रान प्रान प्रान । यहि ठौर काल्हि भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहिं कामकी तिहारी दीजै आन आन आन । जाते करूं मैं तेरोरी गुण गान गान गान ॥ विनती सुनो हमारी देकान कान कान।कीजै कृपारसिक पै जन जानजानजान १५७

राग ईमन ।

काल्ह सखी यहि ठौर बांसुरी भूल बिसारी । ले जोगई तुम धाम बात हम सुनी है तुम्हारी ॥ तुमरे काम न आवही बंसी हमरी देहु । हम आतुरहोय मांगते तुम नाहिं जु नाहिं करो ॥ बांसुरी दीजिये ब्रजनारि ॥ बंसी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी । पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट विशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरौ वाहीं भूलरही । सांच शपथ बाबा कीसौं तेरी बँसुरी नाहिं लई ॥ बाँसुरी कैसी है ब्रजनाथ ॥ बंसी हमरी देहु काहेको रारि बढावो ॥ समझ बूझ मन माहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोग हँसैं चर्चा करैं प्यारी मनमें शोच विचार । यह बंसी मनमोहनी तुम देती क्यों न गवाँर ॥ बंसी दीजिये०॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत बड़ाई। मारूं गुलचा गाल तोहूं बाबाकी जाई ॥ तुम से केते ग्वारिया मांगत हम पै आय । चतुराई तुम छांडिकै जाय चरावो गाय ॥ बंसी कैसी०॥ या बंसी की सार कहा तुम ग्वालिनि जानो । तीन लोक पटतार तासों मेरो मन मानो ॥ या बंसी खोजत फिरैं शिव विरंचि मुनिनाथ । परचावो परचें नहीं तुम कहा नचावत हाथ ॥ बंसी दीजिये०॥नंद महरके कुँवर कान्ह तोहिं कौन पतीजे । भूल गये कहुँ अनत दोष दमको नाहिं दीजे ॥ ले लकरी मुखपै धरी बँसुरी याको नाम । जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ बंसी कैसी ० ॥ बसौ कि ऊजर जाउ तुझे क्या परी हमारी । तुमसीहैं लखचार नंद

घर गोबरहारी ॥ इकलख मेरे सँग चलैं लखआवैं लखजाँय ॥ लखठाढी दर्शन करैं लख खडी खडी ललचायँ ॥ बंसी दीजिये० ॥ सुघरसयानी नारि हाथगहि बंसीलाई । पूरण परमानंद साँवरे मुखहि बजाई ॥ लै बंसी ग्वालिन मिली घूंघट बदनछिपाय । सूरदास हारी गूजरिया जीते यादवराय ॥ बाँसुरी लीजिये ब्रजनाथ ॥ १५८ ॥

राग कल्याण ।

श्यामकी बंसी वन पाई । उठो यशोदा मैया खोलो किंवरिया मैं बंसी गृह देनेको आई ॥ बहुत दिननके उनींदे मोहन सोनेदे वृषभानुकि जाई । इतनी सुनत निकसि आये मोहन अंतर्यामी प्रभु कुँवर कन्हाई ॥ मुरलीके सँग पहुँची हमारी दे राधे वृषभानुकिजाई । हमजानी कछु मान बढ़ेगो तुम हरि हमको चोरी लगाई ॥ श्रवण न सुनी नयन नहिं देखी चलो ठौर हम देहिं बताई । सूरदास गुण कहँ लग वरणे दोनों में एकै चतुराई ॥ १५९ ॥

वेणीगूँथनलीला ।

राग कल्याण ।

वेणी गूंथ कहा कोइ जाने ॥ मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ बिच बिच फूल श्वेत पित राते को करसके एरी सौंह राधे ॥ बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर कँगही सों साधे । हरीदासके स्वामी श्यामा नख शिखलौं बनाइ दे काजर नख ही सों आधे ॥ १६० ॥

राग दादरा ।

प्यारीको शृंगार करत नँदलाला । बार बार में मोती पोहे कन बिच झलके बाला ॥ कलीदार जरीको लहँगा ऊपर सुर्ख दुशाला । पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत ब्रजबाला ॥

राग गौरी ।

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी । दर्पण हाथ लिये नँदनंदन साँची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहैं तुमहीं क्यों ना देखो मैं गोरी तुम श्याम बिहारी । हमरो बदन ज्यों चंदा की उजारी

तुमरो बदन जैसे रैनि अँध्यारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट विराजै हमरे शीश पर तुम गिरिधारी । चंद्र सखी भज बालकृष्ण छवि दोउ ओर प्रीति बढ़ी अति भारी ॥ १६२ ॥

राग विहाग ।

. बेसर कौनकी अति नीकी । होड परी लालन औ ललना चौंप बडी अति जीकी ॥ न्यावपरो ललताके आगे कौन ललित कौन फीकी।दामोदर हित बिलग न मानो झुकन झुकी प्यारीजीकी॥१६३॥

राग श्यामकल्याण ।

राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो । मेरी प्यारी तन मन धन छवि ऊपर वारों नाम उचारों मैं तेरो ॥ हँस मुसकाय बदन तन हेरो मोहिं करो चरणनको चेरो । अली किशोरी एक बार कहो लाल बिहारी मेरो ॥ १६४ ॥

राग खेमटा।

तेरो मुख चंद्ररी चकोर मेरे नैना । पलहूं न लागे पलक बिन देखे भूल गये गत पलहूं लगैना । हर्बरात मिलबेको निशि दिन ऐसे मिलें मानो कबहूं मिलैना ॥ भगवत् रसिक रसकी यह बातें रसिक बिना कोइ समझ सकैना ॥ १६५ ॥

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे । अति आरत अनुरागी लंपट हर्बरात इत फिरत न फेरे ॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे । भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे ॥ १६६ ॥

प्रीतम तुम मो दृगन बसतहो । कहा भोरेसे है पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो ॥ लीजै परख स्वरूप आपनो पुतरिन में तुमहीं जो लसतहो । वृंदावन हित रूपरसिक तुम कुंज लडावत हिय हुलसतहो ॥ १६७ ॥

राग जंगला सवैया ।

चैन नहीं दिन रैन परै जबते तुम नैनन नेक निहारे । काज

बिसार दिये घरके ब्रजराज मैं लाज समाज बिसारे ॥ मो विनती मनमोहन मानियो मोसों कहूं जिन हूजियो न्यारे ॥ मोहिं सदाचित सों अति चाहियो नीकेकै नेह निबाहियो प्यारे ॥ १६८ ॥

गोरे ग्वालकी लीला।

ठुमरी ।

चंदा सों बदन जामें चंदन को बिंदा दिये चंदा तन चितवत चंदा छबि छाई प्यारी । चंदनकी सारी सोहै चंदनको हार हिय चंदनको लहँगा सोहै चंदा मुख भाई प्यारी ॥ चंदनकी कंचुकी चंदनकी बंदनी चंदनकी बँगली चंदा तनु भाई प्यारी । कहा कहूं कछु कहत न आवे तिहारो मुख देख चंदा गयोहै लजाई प्यारी ॥१६९॥

राग विहाग ।

यह कहिकै प्रिय धाम गई । चौंक परे हरि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोष न होय कछू सखि मेरो उपमा चंददई । रिसन भरी नख शिख लौं प्यारी यौवन गर्व मई ॥ लावो वेगि मनाय सखीरी यामिनि जात बही । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत लावो वेगि सही ॥ १७० ॥

राग गौड मलार ।

वृषभानु कुँवरि जब देखों । तब जन्म सफल करि लेखों ॥ मैं राधा राधा गाऊं । राधा हित वेणु बजाऊं ॥ मैं राधारमण कहाऊं काहे दूजा नाम धराऊं ॥ जहँ राधा चर्चा कीजै । तहँ प्रथमजान मोहिं लीजै ॥ जहँ राधा राधा गावैं । तहँ सुनवेको हम आवैं ॥ श्री राधा मेरी संपति । श्रीराधा मेरी दंपति ॥ श्रीराधा मेरी शोभा । श्रीराधाको चित लोभा ॥ मैं राधाके सँग नीको । राधा विन लागत फीको ॥ १७१ ॥

राग खेमटा ।

देखी कहूं गलिनमें मो प्राण जीवनी । एहो सुजान प्यारी मम चूक क्या विचारी क्यों दुरगई लतनमें दे दर्श आनंदनी ॥ जब

चलत चाल छविसों तब हलत हार उरसों ठुम ठुम चरन धरन पै तू गति गयंदनी ॥ तेरी छटा चरणकी निंदत रवी किरणकी हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी । यह सुनत वचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हित रूप लाल चेरो एहो दुख निकंदनी ॥ १७२ ॥

राग देश ।

बाधा दे राधा कित गई । वृंदा विपिन अछत प्यारी बिन सब विपरीत भई ॥ मेरे मंद भाग्य सों काहू पोच प्रकृति सिखई । व्यास स्वामिनी वेगि मिले तो बाढै प्रीति नई ॥ १७३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा । तनहूं लडैती राधे मनहूं लड़ैती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंजमहल में सदाही बसतहो सुख संपति लिये साधा । विठ्ठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७४ ॥

राग सोरठ ।

श्रीराधा प्यारी देखी है चितकी चोर । लागी काहू ठौर मैंने देखीहै चितकी चोर ॥ चंद्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चंद्र चकोर । नई प्रीति सों सबरस बाढ्यो जोबना करतही जोर ॥ पाँयनमें नूपुर धुनि बाजै गजगति चलती तोर । या छबि निरखके मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ १७५ ॥

राग विभास ।

मेरी तो जीवन राधा विन देखे नाहिं चैन । मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥ पैयां परूं मैं तोरे ललता तोरे विशाखा तुम जैयो प्यारी लैन । धीरज प्यारीजूके देखे श्रीराधा जूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन ॥ १७६ ॥

राग विहाग ।

तुम कहुँ देखी रे इत जात रूप गरविनी प्यारी राधा ॥ चंपक वरण गात मन रंजक खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल

मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा ॥ अहो सुगंध मृग शावक नयनी कहुँ देखी प्यारी पिकबैनी सुषमा सिंधु अगाधा ॥ अहो मराल मानसर बासिक अहो अलिंद मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं दाया करि होत अपत अपराधा ॥ अहो कदंब अहो अंब निंब बट सोहत सुखद छाँह यमुना तट हरत तापकी बाधा ॥ संतत देत गोप गोधन सुख कबहूं नहिं सहिसकत मेरो दुख उपकारी वपु वेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा ॥ आरत वचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो विरहीके हालन मदन जाल सों बांधा ॥ अतिशय विकल देखि बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा ॥ १७७ ॥

राग काफी ।

करविचार वृषभानु दुलारी । ग्वाल रूप धर छलन कृष्णको नंदगामकी ओर सिधारी ॥ जहँ हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चल आई । देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई ॥ अरे मित्र क्या नाम तिहारो बास कहां है तेरो । मैंतो तोहिं कभूं नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो ॥ गोरे ग्वाल भानपुरके हम गोधन बृंद चरावें । रासिक विहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावें ॥ १७८ ॥

राग देस ।

सुन सुन वृषभानु कुँवारि के ॥ जाके लाल तुम रहो अधीन । वह तो गृह से सटक वन रहत अटक नहिं मानत हटक इत उत ही फिरत ॥ ऐसी फिरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन मानें जित जात नहीं नेकहू डरत । बेटी बड़े की कहावै दधि बेचवे को जावै ताहि लाजहू न आवै सब नाम धरत ॥ इक मेरी सुन लीजै ऐसी नारि ना पतीजै व्याह कहूँ जासों कीजै तेरो चित्त हरत ॥ जाकी मुख उजियारी देख रीझोगे बिहारी पियो वारि वारि पानी जब प्रीति करत ॥ १७९ ॥

राग प्रभाती ।

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहो कौनसी बाल जगत में जैसी है भानुदुलारी ॥ भानुनगरके बसन हार तुम प्यारीकी अनुहारी ॥ रवि शशि कोटि मदन हूँ की छवि दीजै तुम पर वारी ॥ कहो कौनसे मैं ब्याह कराऊं रची कवन विधि नारी । करत बास हिरदे मेरे में कीरति कुँवरि दुलारी ॥ प्रेम विवस कछु सुरति रही ना तनु की दशा बिसारी । लिये लगाय वेग उर प्यारी तब हँसि रसिक बिहारी १८०

राग देस ।

सखी री मैं हूं नंद किशोर । मैं दधि दान लेत बृंदावन रोकतहूं बरजोर ॥ यह जो माननी मान कर बैठत विनती करूं कर जोर । पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूं रसिक वर यह मेरी चितचोर ॥ १८१ ॥

रासलीला ।

राग गौड मलार ।

शरद निशि देख हरि हर्ष पायो । विपिन बृंदावनहिं सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्ज्वल रैनि चमक रहि भूमि पर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागै । तैसोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध बहै पवन आनंद जागै ॥ राधिका रमण वन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित माई । नाम लै लै सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भई विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चलीं उठ सभी भवन जन नेह तज घोष नारी ॥ १८२ ॥

राग कल्याण ।

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो । निशि हरि कल्प समान बढाई गोपिनको सुख

दीनो ॥ भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूर श्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ १८३ ॥

राग झँझोटी ।

बंसी यमुना पै बाज रहीरे लाल छबि निरखन कैसे जाऊं री आज ॥ बंसीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरीरे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै चंदन खौर लगीरे लाल । चंद्र सखी भजु बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८४ ॥

राग यमन ।

वृंदावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमुना पुलिन में मधुर बाज बांसुरी । जब से धुनि परीकान मानो लागे मयन बान प्राणनकी कहा चले पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग तामें अंग सुध भूल गई कोई कछू कहो कोई करो उपहासुरी । ऐसे ब्रजाधीश जीसों प्रीति नई रीति बाढी जाके उर बस गई प्रेमपुंजगांसुरी ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौरी सुध रही नांहिं तनमें ॥ एक खुले बार एक छतियां उघार एक भूषण को डार चली दामिनि ज्यों घनमें ॥ एक उजियारी गोपी-नाथ ने निहारी बारी एक भई बौरी डोलै मदनके उमंगमें ॥ ऊधम भयो है घरी चार ब्रज मंडल में बांसुरी बजाई कान्ह जभी वृंदावनमें ॥ १८६ ॥

बाजी घरआई बाजी देखबेको धाई बाजी मुरझाई तान सुनि गिरिधरकी ॥ बाजी हँस बोलें बाजी करत कलोलें बाजी संग लाग डोलें सुध बिसरी सभ घरकी ॥ बाजी ना धरें धीर बाजी ना सम्हारें चीर बाजिनके उठी पीर दावानल भरकी ॥ बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं बाजी बंसी साँवरेसुघरकी १८७

राग भैरव ।

बांसुरी बजाई आज रंगसों मुरारी । शिव समाधि भूल गई

मुनिजन की तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी । सुनत ही आनंद भयो लगी है करारी । रंभा सब ताल चूकी भूली नृत्यकारी । यमुना जल उलट बह्यो सुध ना सँभारी ॥ श्रीवृंदावन बंसी बजी तीन लोक प्यारी । ग्वाल बाल मगन भये ब्रजकी सभ नारी ॥ सुंदर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सूर किशोर मदन मोहन चरणों बलिहारी ॥ १८८ ॥

राग जंगला ।

बृंदावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी । कातिककी शरद रैनि चंद्रकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुलवारी । विकसे सर कमल फूले शोभा अतिभारी ॥ झरना चहुँ ओर झरत यमुना सुखकारी । आनँदकी रैनि जान मुरली मुखधारी॥लै लैके नाम सकल टेरी ब्रजनारी । सुनके धुन भवन त्याग धाईं सुत डारी॥उलटे तनुचीर पहर आईं मिल सारी । वीणा मृदंग चंग बाजत करतारी ॥ दास सुखानंदप्यारे चरणनबलिहारी ॥ १८९ ॥

राग कल्याण ।

प्यारी मैं ऐसे देखे श्याम ॥ बांसुरी बजावत गावत कल्याण ॥ कबकी मैं ठाढी भैयां सुध बुध भूल गैयां छौने जैसे जादू डारा भूले मोसे काम ॥ जब धुन कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन हर लीनो विरहों वाले कान्ह ॥ मीरा वाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया देह सों विदेह भैयां लागो पग ध्यान ॥ १९० ॥

राग विहाग ।

निशि काहेको वन उठ धाई । हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि की तुम ब्रज मारगहिं भुलाई ॥ गई रही दधि बेचन मथुरा तहां आज अवसेर लगाई । अति श्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कह सबन बताई ॥ जाहु जाहु गृह तुरत युवति गण खीझत गुरु जन लोग लुगाई । की गोकुल ते गमन कियो तुम इन बातन कछु नाहिं भलाई ॥ यह सुनिके ब्रज बाम चकित भई कहा करत गिरिधर

चतुराई । सूर नाम लैलै सबहिनको मुरलीवारंवारबजाई ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

सानूँ मुड घर वंजन कह्यो वे श्यामां । साईं साईं वै करें दया सारा जग वे ठगें दया असां माप्यां ते चोरी इक न्योहडा लगाया, यमुना किनारे श्यामां ॥ वचन की तोई जब चीर हमारे हरे वे श्यामां ॥ यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जव मुरली की धुनक सुनाइया वे श्यामां ॥ सूरके स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्जा हमारी राखो वे श्यामां ॥ १९२ ॥

राग कान्हरा ।

कैसे रास रस हि मैं गाऊं । श्री राधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी कृपा वास ब्रज पाऊं ॥ आनदेव स्वपने नहिं जानूं दंपतिको शिर नाऊं । भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं ॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट आनँदकुटी छवाऊं । सूरदास प्रभु तिहारे मिलनको वेद विमल यश गाऊं ॥ १९३ ॥

महारानी श्री राधे रानी । जाके बल मैंने सबते तोरी लोक वेद कुल कानी ॥ प्राण जीवन धन लाल विहारीको वार पीवत हैं पानी । भगवत रसिक अनन्य सहायक सब ऊपर सुखदानी ॥ १९४ ॥

परम धन राधे नाम अधार । जाहि श्याम मुरली में टेरत सुमिरत वारंवार ॥ यंत्र मंत्र और वेद तंत्रमें सभी तारको तार । श्रीशुक प्रगट कियो नहिं याते जानि सारको सार ॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तऊ न पायो पार । व्यासदास अब प्रगट बखानत डार भारमें भार ॥ १९५ ॥

राग देस ।

रच्यो श्रीवृँदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चलिये नवलअनंद ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध । त्रिविध पवन डोलैं अति गति मंद ॥ खँजरी सरंगी बाजै ताल मृदंग । वीण उपंग मुरली मोहर मुहचंग ॥ भाल में तिलक सोहै मृगमद रेख । मुरली मनोहर जीको नटवर भेख ॥ ब्रह्मा देखें विष्णुदेखें नारी नरेश ।

देखन आये शंभु गौरी गणेश ॥ वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास। गुण गावें स्वामी माधुरी दास ॥ १९६ ॥

राग केदार।

सुन धुन मुरली वैन बाजै हरि रास रच्यो। कुंज कुंज द्रुम वेलीं प्रफुलित मंडल कंचन मणिन खच्यो ॥ निर्तत युगल किशोर युवति जन रास में राग केदाररच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंज विहारी नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥ १९७ ॥

कवित्त।

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै वृंदावन बीथिन विहार बंसीबटपै। क्षिति पै छवाननपै छाजत छटाननपै ललित लताननपै लाडिलीकी लटपै ॥ कहै पदमाकर अखंड रास मंडल पै मंडत उमंड महा कालिंदीके तट पै। कैसी छवि छाई आज शरद जुन्हाई आली जैसी छवि छाई या कन्हाईके मुकुट पै ॥ १९८ ॥

सवैया।

शूकर ह्वै कब रास रच्यो अरु बावन ह्वै कब गोपी नचाई। मीन ह्वै कौनके चीर हरे कछुवा ह्वैकै कब बीन बजाई ॥ होय नृसिंह कहो हरि जू तुम कौनकी छातिन रेख लगाई। वृषभानु सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई॥१९९॥

राग पील।

ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं। नकबेसरकी ग्रंथ जो ढीली ताहू सुभग बनाऊं ॥ एरी टेढी चाल छाँड़ मैं सूधी चलन सिखाऊं। वृंदावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊं ॥

प्रीतम रहे प्रिया मन लीये प्रिया रहे मन पीको । सखी रहैं दोउअन मन लीये रंग बढै नित हीको ॥ कानन छवि ते नये दिखावें प्राण बढे नित हीको। वृंदावन हित रूप विहारन सकल त्रियन शिर टीको ॥ २०१ ॥

सवैया ।

सोनजुही की बनी पगिया औ चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकिन्यारो । दो दल फूल कदंबके कुंडल सेवतीको जामा घूम घुमारो ॥ नव तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब इजार चमेलीको नारो । फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो शृँगारचो है प्यारीने प्यारो ॥२०२॥

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूही की तापै लगाई किनारी । पंकजके दलको लहिंगा अँगिया गुलाबास की शोभित न्यारी ॥ चमेलीको हार हमेल गुलाबकी मौरकी बेंदी दै भाल सँवारी । आज विचित्र सँवारिकै देखिये कैसी शृँगारी है प्यारेने प्यारी॥२०३॥

राग पीलू ।

संग चलीं ब्रजबाल लाल कर तालन लै लै जोरी । लाई गति मृदंग उपजाईं झाईं वन घनघोरी ॥ ततथेई धुमकिट ततथेई यह धुन सुन ले जोरी । वल्लभ रसिक बिहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी ॥ २०४ ॥

कवित्त ।

माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छबिकी लटक देख रूप रस पीजिये । लोचन विशाल देख गरे गुंजमाल देख अधर सुलाल देख चित्त चौंप कीजिये ॥ कुंडल हलन देख अलकैं वलन देख पलकैं चलन देख सरवस दीजिये । पीतांबर कि छोर देख मुरली की घोर देख साँवरेकी ओर देख देखबोही कीजिये ॥२०५॥

राग पीलू ।

भाग्यवान वृषभानु सुतासी को तिय त्रिभुवन माहीं । जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गल बाहीं ॥ ह्वै अधीन संगहि सँग डोलत जहाँ कुँवरि चल जाहीं । रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवन में नाहीं ॥ २०६ ॥

कवित्त ।

वृंदावन धाम नीको ब्रजको विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम

नीको मंदिर अनंदको । कालीदह न्हान नीको यमुना पय पान नीको रेणुकाको खान नीको स्वादनीको कंद को ॥ राधा कृष्ण कुंड नीको संतनको संग नीको गौरश्याम रंगनीको अंग युग चंदको । नील पीत पट नीको बंसीवट तट नीको ललित किशोरी नीकी नट नीको नंदको ॥ २०७ ॥

भ्रुकुटी तनीको नकबेसर बनीको लट नगन फनीको लखि फूल्यो कंज फीको है ।मैनकी मनीको नयन बानकी अनीको चोखे सैन रजनीको हौंस हुलसन हीको है ॥ रूप रमनीको कैधों रमारमनीको गजगती गमनीको कैधों सिंधु मूर जीको है । बेनी बंदनीको मृदुहास फंद नीको मुख चंद हूसे नीको वृषभानु नंदनीको है ॥ २०८ ॥

छंद ।

जैसी है मृदु पद पटकन चटकन कटतारन की । त्रियतन मोर मुकुट की लटकन कल कुंडल हारन की ॥ साँवरे पिय संग निर्तत ब्रजकी चंचल बाला । मानो घन मंडल मंजुल खेलत दामिनि सी बाला ॥ २०९ ॥

सवैया ।

मंडल रास विलास महारस मंडन श्रीवृषभानु दुलारी । पंडित कोक सँगीत भरी गुण कोटिक राजत गोपकुमारी ॥ प्रीतमके भुजदंडमें शोभित संगमें अंग अनंगन वारी । तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधवकी बलिहारी ॥ २१० ॥ जामा बन्यो जरीतासको सुंदर लाल बंद अरु जर्द किनारी । झालर दार बन्यो पटुका अरु मोतिनकी छबि जात कहां री ॥ जैसी चाल चलै गजराज कहै बलिहारी है मौज तिहारी ॥ देखत नयनन ताक रही झुक झाँक झरोखन बाँके बिहारी ॥ २११ ॥

कवित्त ।

सुं[illegible] सुजान कान्ह सुंदर ही पगिया शीश सुंदरसे नयन अधर सुंदर बाँ[illegible]सुंदर भ्रुकुटी कमान सुंदर पलकनके बान सुंदर मुसकान मंद

चितवन चितहरिया॥सुंदर बाजू बिराजैं सुंदर वनमाल साजैं सुंदर गल हार मोती जामा जो केसरिया । सुंदर कंकन अमोल सुंदर कुंडल कपोल सुंदर नारायण बोल दीन दरद हरिया ॥ २१२ ॥ वारि डारों शरद इंदु मुख छवि गोविंद पर दिनेशहूको वारि डारों नखन छटान पर । कोटि काम वारि डारों अंग अंग श्याम लखि वारि डारों अलिन अली कुंचित लटान पर ॥ नयनन की कोरन पै कंज हूको वारि डारों वारि डारों हंस हू को चाल लटकान पर । देख सखी आज ब्रजराज छवि कहा कहूं कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटी मटान पर ॥ २१३ ॥ नयनन चकोर मुख चंद्र हूको वारि डारों वारि डारों चित मनमोहन चितचोर पै । प्राण हूको वारि डारों हँसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोर पै ॥ वारि डारों मैन रंग अंग अंग श्याम श्याम हिलन मिलन रस रासकी झकोर पै । अति ही सुघर बर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वस वारि डारों ग्रीवाकी मरोर पै ॥ २१४ ॥ मुकुट के रंगन पै इंद्र को धनुष वारों अमल कमल वारों लोचन विशाल पर । कुंडलप्रभापै कोटि प्रभाकर बारि डारों कोटिक मदन वारों बदन रसाल पर ॥ तनुकी तरुण पर नीरद सजल वारों चपला चमक उर मोतिन की माल पर । चाल पै मराल वारों मनहूको वारि डारों और कहा कहा वारों छबि नंदलाल पर ॥ २१५ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्योहै मंजन चोटा । चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अबै गहि खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागत ऐन मैन मानो कमल के जोटा । नंददास रस रास कोटिन वारों आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ २१६ ॥

राग बिलावल ।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडिली रूप निधान । चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति

भाँति भाँति भ्रू विलास मंद हास लेत नयनन हीमें मान ॥ दोऊ मिलि राग अलापत गावत होडा होडी उघटत देकर तारी तान । परमानंद निरख गोपी जन वारतहैं निज प्रान ॥ २१७ ॥

राग भैरव ।

निरतत गोपाल संग राधिका बनी । बाहुदंड भुजन मेलि मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भामिनी ॥ मोर मुकुट कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार विमल थकित चांदनी । परम मुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी ॥ २१८ ॥

राग झिंझोटी ।

गोपी गोपाल लाल रास मंडल माहीं । तत्ताथेई ता सुधंग निरतत गहि बाहीं ॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग दगता दगता लतंग उघटत रसनाईं । बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दग सराहीं ॥ श्री राधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनंद श्री ब्रज चंद लटक करत मुकुट छाहीं ॥ तत्तत तत सुघर गात सरिगम पदनी ग ठाठ और पदहिं प्रलाद दांप दंपति अति सादहिं । गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमँगत छबि अति अनंद रीझत हरि राधाहिं ॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगना निधान रीझि प्राण वारहिं । चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग शरीर धन नँदके कुमार बलि बलि जाय सूरदास रास सुख तिहारहिं ॥ २१९ ॥

राग देश ।

लालको नाचन शिखवत प्यारी। जैसोइ सुभग बन्यो श्रीवृंदावन तैसी शरद उजियारी॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी डरपत कुंजबिहारी। थेईथेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी ॥ वंशीवट यमुना तट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी । कोऊ मृदंग कोऊ वीण

बजावत कोई हँसत देतारी ॥ छबिसों गावत खडी नचावत रोम रोम बलिहारी । देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज शोच विचारी ॥ व्यास स्वामिनी सो छबि निरखत रीझ देत करतारी ॥ २२० ॥

राग काफी ।

देखो री या मुकुट की लटकन । निरतत रास लिये राधा संँग बैजंती बेसरकी अटकन ॥ पीतांबर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पगनकी पटकन । सूरश्यामकी या छबि ऊपर झूठो ज्ञान योग को भटकन ॥ २२१ ॥

राग बिहाग ।

आज बनवारी बन्योहै मुरारी । सखी कुंजाविहारी गिरिधारी सँग सोहे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी ॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी । मोरको मुकुट धारी चंदनकी खौर न्यारी भ्रुकुटी कुटिल अलकैं घूँघरवारी ॥ टेढी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सत सुरन उचारी । मोहि लीनी ब्रजनारी देहकी दशा बिसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी ॥ २२२ ॥

राग रेखता ।

नाचै छली छबीलो नँदका कुमार है । गल बाँहि दै प्रियाके सुंदर शृँगार है ॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है । उत पायजेब पायल घन कीसी गाज है ॥ पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लालहै ॥ भ्रुकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है ॥ कटि काछनी सुचोली पटुका किनारका । कानों जड़ाऊ झुमका गल हीर हार है ॥ दामिनि सुरंगी सेला कीरति कुमारिका । मोतिनकी माल सुंदर शोभा अपार है ॥ गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है । छतियां लगी लला सों वंसी रसाल है ॥ नासा बुलाक बेसर माथेपै मुकुट सोहै । दोनों झुके परस्पर छबि बेशुमार है ॥ प्यारीके नख छटापर रवि चंद्र कोटि मोहै । केशव खड़ा विलोकै प्राणन अधार है ॥ २२३ ॥

मानलीला

राग सोरठ ।

चलो तो बताऊं विहारी जी म्हारे महलों फूलीछै केसर क्यारी । अति सुंदर बहुत अमोलक रंग रँगीली हैं छै बारी ॥ यों मत जानो झूठ कहत है म्हाने सौंह तिहारी । ब्रजनिधि तुम सों लगन लगी है प्रीतिपुरातन यारी ॥ २२४ ॥

राग कान्हरो ।

लालन मेरे ही आये आज सुहावनी रात । तन मन फूली अंग न समावत कुंजन करत बधाये ॥ इक रसना गुण कहँ लग वरणों नख शिख रूप मेरे हीय में समाये । गिरिवरधर पिया रस वश कर लीनो कृष्णदास बलिजाये ॥ २२५ ॥

राग कान्हरो ।

एजी अब तो जान न दूंगी शकुन भलेजी ॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर राखों उर हार । श्याम सुंदर पिया अतिही रँगिलवा साँची तो कहो तुम काके बसोजी ॥ २२६ ॥

राग कमोद ।

वारियां वे लाल वारियां ॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुंज हमारियां ॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां ॥ ऊंची अटारियां ते लाल किवारियां तक रहियां बाट तिहारियां ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छबि पर बलिहारियां ॥ २२७ ॥

राग दादरा ।

सखी नँदलाल आवन नाहिं पावैं । भीतर चरन धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावैं ॥ ऐसेनको विश्वास कहां री कपटकी बात बनावैं । नारायण इक मेरे भवन बिन अंत चाहे जहां जावैं ॥ २२८ ॥

राग झिंझोटी ।

मोहिं मत रोकै तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधानहै तू सभी

गुणखानहै तू तेरे सम कौन आज तेरो बडो भाग री ॥ कहे तो मैं नृत्य करूं बांसुरी में रागभरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहागरी । तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखै लाग री ॥ २२९ ॥

सवैया ।

द्वारके द्वैरिया पौरिके पौरिया पाहरुवा घरके घनश्याम हैं ॥
दासके दास सखीनके सेवक पार परोसनके धन धाम हैं ॥
श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बाम हैं ॥
चूक अचूकहि माफकरौ वृषभानु ललीके गलीके गुलामहैं ॥ २३० ॥

राग पंचम ।

जागत जागत रैनि बिहानी । कहि गये सांझ आवन मेरे गृह बसे अनत अनते रति मानी ॥ उर विच नख क्षत प्रगट देखियत यह शोभा अति बानी । भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुम्हरे मन मानी ॥ २३१ ॥

राग ठुमरी खमाच ।

प्यारे तेरे जियाकी नजानी जात बात रे । कहूँ तो सांझ आधीरात रहत कहूं पिछलीरात कहूं प्रात रे ॥ उन हीं सों जाओ बतराओ सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे । अब तोसों भूलके न बोलूं नारायण जहां लग अपनी बसातरे ॥ २३२ ॥

रागदेश ।

अब आये प्रात क्यों मेरे धाम । तुम जाओ जहां जाके जागेहो याम वश किये तुम्हैं सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम । अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल बिन गुनकि माल कहाँ पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो बाल मैं परखी रसिक बिहारीलाल अब कीजै पिया वा घर अराम ॥ २३३ ॥

राग भैरव ।

सांची कहो रँगीले लाल । जावक में कहां पाग रँगाई रँगरेजिन कोइ मिली है ग्वाल ॥ बंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये श्याम तमाल । माला कहां मिली बिन गुनकी नख शिख देखत भई बिहाल ॥ जिन तुमरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे बाल । सूर श्याम छवि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल २३४

राग रामकली ।

आज हरि रैनि उनींदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ शिथिलत वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये । लटपटी पाग अटपटे भूषण बिन गुन हार बनाये ॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदन लाये । सूरदास प्रभु यही अचंभो तीन तिलक कहाँ पाये ॥ २३५ ॥

राग बिलावल ।

नयननकी चंचलता कहा कीने भीने रंग कौनके हो श्याम हमसे कहा दुरावत । औरके बदन देखनको नेम लियो किधों पलकन मध्य राखी प्यारी ताके भार भये नहिं आवत ॥ मधुप गंध लुब्ध सेज समीप निशि बसे संग लागे आवत रति कीरति गावत । सूरदास प्रभु मदनमोहन तनुकी प्रीति प्रगट भई है मुख नहिं बनत बनावत ॥ २३६ ॥

राग भैरवी ।

भोर भये उठि आये मोहन कहा बनावत बात । बिन गुन माल विराजत उर पर सब अँग चिह्न लखात ॥ बंदन रंग कपोलन दीये सोहत चंद्र दुरात । धौंदी के प्रभु वाहीं जाओ तुम जहँ जागे सारीरात ॥ २३७ ॥

राग जैजैवंती ।

रंगरहे लाल उनहीं त्रियन संग छवि निरखत गति परत और और । ले दर्पण छवि वदन निहारो प्यारे अधरन अंजन लाग्यो

ठौर ठौर ॥ हमसों अवधि बद अनत विरम रहे करत फिरत प्रीति नई पौर पौर । जाओ जी जाओ तुम जहां सारी रैन जागे काहेको आवत प्रात मेरे दौर दौर ॥ २३८ ॥

राग बरवा ।

तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात । म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनींदेसे नयना डगमग डगमग डगमगात । कपटी कुटिल मैं तोही ते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी एक बात ॥ हाहा करतहौं पैयाँ परत हौं अबकीचूक मेरी करो जी माफ । जुगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जावो जाके लगे हो गात ॥ २३९ ॥

राग प्रभाती ।

लाल तुम कहांसे आये जगे ॥ सगरी रैनिके हमने पछाने थारी नजर खुमार भरी अँखियाँ ॥ नयन घुमावत लट लटकावत होठन बिन बोलन लगे।अधरन अंजन भाल महावर चरण धरत डगमगे ॥ आनँद घन पिया वाहीं जाओ तुम जहां तुम्हारे सगे ॥ २४० ॥

ठुमरी खमाच ।

प्यारे मेरे गरवा में जिन डारो बैयां । छूओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छांडो अब कपट बलैयां॥ जाओ पिया वाही मन भाईके भवन में जाके निशि परत हौ पैयाँ । झूठी झूठी सौहें क्यों खाओ नारायण जानूं मैं तिहारी चतुरैयां ॥ २४१ ॥

राग केदार ।

सीखे हो छल बल नट नागर ॥ मदन मोहनकी माधुरी मूरत सब गुणमें हो आगर ॥ ऐसी निठुराई काहू ना बदीयन चतुराई गुणसागर ॥ २४२ ॥

राग मलार ।

राधा जूकी सहज अटपटी बोलन । अहोपिया कौन बसत त्रिया उर पाई कहां बिन मोलन ॥ मोहूँ सों गुण रूप आगरी नीले अंगन

चोलन । बडे बडे नयन अरुण कजरारे सुंदर अधर कपोलन ॥ उमग उमग पिया सन्मुख आवे मनभावत करत कलोलन । भगवत रसिक कहो क्यों ना साँची नाहिं करो अनबोलन ॥२४३॥

राग ठुमरी ।

प्यारी जी तिहारे बिन कलना परत है । मंदिर अटारी चित्रसारी और फुलवारी मोहिं कछू प्रिय ना लगत है ॥ घनो समझायो इत उत बहलायो पुनि तौहू मन धीरना धरत है । एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है ॥ २४४ ॥

राग जोगिया ।

सांची कहो किधों हांसी करोजी । आज कहा कारण जो मोसों बेर बेर कहो यहां से टरो जी ॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहिं दोष धरोजी । नारायण यह अचरज मोको झूठ कहत नाहिं नेक डरो जी ॥ २४५ ॥

राग जंगला ।

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो । जबते तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो॥भीतर बाहर द्वार पौंरि लौं राधा नाम न पायो। किशोरी गोपालकी यह इक विनती हाहा करत हरायो ॥ २४६ ॥

राग पीलू ।

राधा प्यारी बात सुनो इक मेरी । मैं आयो चाहतहो तुम पैं बीच लियो उन घेरी ॥ जतन अनेक विनती कर हारचों कैसे जात न फेरी । परवश परचो दास परमानँद काहि सुनावों टेरी ॥२४७॥

राग भूपाली ।

विनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान । बिन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान ॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहैं तान तान तान। तूही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान॥मेरे हिया कि पीरको तू जान जान जान । जन जान रसिक लीजै दीजै दान दान दान ॥ २४८ ॥

राग विहाग ।

एतो श्रम नाहिंन तबहुँ भयो । सुन राधिका जेतो श्रम मोको तैं यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधु सों शत्रु हयो । द्विज नृप किये दुसह दुख मेटे बलिको राज्य लियो ॥ तोरयो धनुष स्वयंकर कीनो रावण अजित जयो । अघ बक वच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥ त्रिय वपु धरयो असुर सुर मोहे को जग जो न द्रयो । गुरुसुत मृतक ज्यायबे काजे सागर शोध लियो ॥ जानूं नहीं कहा या रिस में सहजहिं होत नयो । सूर सो बल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसर गयो ॥ २४९ ॥

राग पूरवी ।

हम से रूठ रहत क्यों प्यारी । कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयों सखन सँग मैं यमुना तट जहँ जल भरत रहीं ब्रजनारी । मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मैं न सुनी जब कही सबन मिल लेंगी समझ तुम्हें बनवारी । देहैं मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी ॥ जो वे कहत करतहो सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी । एककी सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक विहारी ॥ २५० ॥

राग खमाच ।

इक अरज हमारी सुन भानकी दुलारी मान तज कीरति कुमारी प्यारीहो । ऐसी चूक क्या किशोरी मोते साँची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारीहो ॥ कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो । कहै रसिक विहारी चरण शिर धारी कुँवरि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो ॥ २५१ ॥

राग भूपाली ।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिवोकरो । वृषभानुकी दुलारी चित चोरिवो करो ॥ कछुदोष नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये । रजनी विहात सजनी री रिस छांड़ि दीजिये ॥ मोतन निहार गोरी

मैंतो हूं शरण तोरी। आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधर सुधारी। लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिक विहारी॥ २५२॥

राग देश।

तुम सुनो राधिका विनय कान। नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥ अब करो कृपा जन अपनो जान। ऐसी काहेकी रही हो मौन ठान॥ मेरे तूही है जीवन अधार अब वेगि मिलोनहिं जातप्रान॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान। सुन रसिक विहारीजूकी बात मेरे आनँद उर में नहीं समात हँसि मिलिये कंठ में डारि पान॥२५३॥

राग धनाश्री।

सांची कहो कै प्यारी हांसी। काहेको इतनी रिसपावत कत तुम होत उदासी॥ पुनि पुनि कहत कहा तब हीं ते कहा ठगीसी ठाढी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढी॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे। सूरश्याम अति भये आतुर भुजा गहन तब लागे॥ २५४॥

लावनी।

उठो अब मान तजो गोरी। रही है रैनि बहुत थोरी॥ सदा सों तुम मनकी भोरी। कहूं मैं शपथखाय तोरी॥ दोहा—औरन के बहँकाए ते, करि बैठतहो रोष। झूंठ साँच परखत नहीं, वृथा देत हो दोष॥ यही मोहिं अचरज है भारी। तनक हँस चितवो सुकुमारी॥ शशि मुख पै हौं बलिहारी॥ दोहा॥ अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान। क्षमाकरो सब चूक अब, जो कछु भई अजान॥ इती विनती मानो मोरी। तिहारे गुण नित प्रति गाऊं। बिना आज्ञा न कहूं जाऊं॥ दोहा—ताहू पै दृग अरुण कर, भ्रुकुटी लेत चढाय। जोरावर सों निबल की, काहू विधि न बसाय॥ हारेहू हार जीतेहूं हार॥ जिन्हें तुम समझो हितकारी॥सोई

अति कपटी ब्रजनारी । दोहा-हम में फूट करायके, आप अलग मुसक्यात । नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भले को दंड बुरे पै प्यार ॥ २५५ ॥

राग विहाग ।

तनक हँस हेरो मेरी ओर । हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भईहो कठोर ॥ निशिदिन तुमरोही नाम रटत हों चातक ज्यों घन घोर॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसे चंद्र चकोर॥२५६

सवैया ।

एक समय ब्रज कुंजन में री नाचत ग्वाली सभी दैतारी ॥ नाचत चंद्रभागा ललतादिक नयनकी सैन सों ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जिय में उन रूठ परी वृषभानु दुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु उन्हें जानकर लाओ मनायकै प्यारी हमारी॥२५७॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते ।

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ ध्रु० ॥ किं करिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रु-रोषभरेण ॥ शोणपद्म मिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ हरि हरि० ॥ तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि ॥किंविनेनुसरामि ता-मिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० । तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेनतेनुनयामि ॥ हरि हरि०॥ दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ॥ किंपुरेव स संभ्रमं परिरंभणं न ददासि ॥ हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ॥ देहि सुंदरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि० ॥ वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रणतेन ॥ किंदुबिल्वसमुद्र संभवरोहिणीरमणेन ॥ हरि हरि० ॥ २५८ ॥

राग देश सोरठ ।

ललता राधा नेक मनायदे ॥ मैं बलिजाउँ नाम तेरे पै दुखमें सुख सरसायदे ॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मनकी प्रीति जतायदे । व्यास स्वामिनी रतिगुनगतिले सरबस पियाको रिझायदे॥

राग बरवा ।

चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर । तुम बिन कुँवर कोटि वनिता युत मथत मदनकी पीर ॥ गदगद सुर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर । क्वासि क्वासि वृषभानुनंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥ बंसी विशद व्यालमाला उर पंचानन पिक कीर । मलै जो गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर ॥ हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पियतीर । सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरत शूर रणवीर ॥ २६० ॥

राग केदार ।

जाके दरशको जग तरसतहै ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी । जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पगपरसैरीप्यारी । सूर-दास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश हैं मेरी प्यारी ॥ २६१ ॥

राग विहाग ।

अलबेली लख लटक मुकुटकी । मान छाँड़ वृषभानुनंदिनी मान किये क्या नागर नटकी ॥ है कछु सुरत तोहिं वा दिनकी जब वनमाल सों बेसर अटकी । करगह कमल कमल मुख मोहन सुर-झाई तब नेक न हटकी ॥ सो मुखलियो छिपाय सुंदरी नयन ओट कर घूंघट मटकी । नख भौं लिखै सिखै क्या सजनी कीन चहत कछु टोना टटकी ॥ करगह बाहिं मनावत मोहन मानत नाहिं मान मद अटकी । युगल युगलको वदन विलोकत भुजभर भेट मेट तप घट की ॥ २६२ ॥

राग बरवा ।

मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावें री । हाहा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावे री ॥ जो हमरे सँग चलो न भामिनि वहतो आपहि आवे री । घन छाया सम जोबन जानो पल छिन में यह जावे री ॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपीसंग नचावे री ॥ मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री ॥ २६३ ॥

राग केदार ।

छांडदे माननी श्याम संग रूठिबो । रहत तू अलीन जलमीन लौं सुंदरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिबो ॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुंज में केलिकर अमीरस घूटिबो ॥ बालकृष्ण दास नवनाथ नंदन कुँवर सेज चढ ललन सँग मदन गढ लूटिबो ॥ २६४ ॥

राग दश ।

तुम काहेको लाडिली मान करत । वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत ॥ ताहीसों कीजिये कोप कुँवारि बिन कारण बैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नितही डरत । व्यास स्वामिनी चतुर नारि मैं तोहिं मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पियासे तोको अंक भरत ॥२६५॥

राग जिलेमें ।

तोसी त्रिया नहीं भवन भटूरी । रूपराशि रसराशि रसिक वर तोहिं देख नँदलाल लटूरी ॥ लेकर गांठ दई जो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूँदरी वाको पीतपटूरी । नंददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटूरी ॥ २६६ ॥

रैनि गई री प्यारी छाँडो हठे री । सुन वृषभानु कुँवरि हरि तो वश निशिदिन तेरोहि नाम रटेरी ॥ मदनगुपाल निरख नयनन भर वेगि चलो अब काहे न टेरी ॥ दास गोविंद प्रभुकी छवि निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटेरी ॥ २६७ ॥

कवित्त ।

हाहारी हठीली हठ छाँडदे छबीली अली भूलें हू कान्ह आज पान हू न खात है ॥ तेरी चितवनको चाहत गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोही में बसात है ॥ मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी वे ठाढे बनवारी अब देर क्यों लगात है॥कर कर शृंगार तू उतारति है बार बार तू तो इतरात उत रात बीती जात है ॥२६८॥

राग जिलामें ।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली । ज्यों ज्यों मैं अब तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवै अति गरवीली ॥ ऐसे समय बल रोष न कीजै भौंहैं कमान तनक कर ढीली । नारायण उठ मिल प्रीतम सों तजदे मानकी बान छबीली ॥ २६९ ॥

राग रेखता ।

इतनो न मान कीजै वृषभानुकी दुलारी । तेरे मनायवे में मोहिं श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतमको आज तो बिन पल छिन न चैन आवे । नहिं जी लगै भवन में नहिं बन कि छवि सुहावे ॥ हँस बोलिबो कहांको नहिं खान पान भावै । हाथन में चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावे ॥ अति विकल ह्वै रह्योहै वह साँवरो विहारी । इतनो० ॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बडाई । तेरे मनायवे को बीरा उठाके आई ॥ बल बुद्धि मोमें जितनी तितनी मैं सभ लगाई । पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधिसों राजनीती में कहके तोसों हारी ॥ इतनो० ॥ तेरी तो नित बडाई सभ सखी जन बखाने । प्यारी हियेकी कोमल सपनेहूं रिस न जाने ॥ यह आजका भयोहै बैठी हो भ्रुकुटी ताने । उन सखी जनको कहबो अब कौन साँच माने ॥ सब झूठही बडाई भामिन करे तिहारी ॥ इतनो०॥ लालनके साथ मिलके वन शोभा निरख प्यारी । कहुँ सघन ललित छाया कहुँ फूली फुलवारी ॥ जलसों भरे सरोवर झुकरहिं द्रुमन कि डारी । बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छवि तिहारी ॥ बल वेगही

सिधारो यह लालसा हमारी ॥ इतनो० ॥ एरी सुघर सयानी मो विनती मान लीजै । तजके ये मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजै ॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजै । फिर कर न उन सों रूठो बरदान यही दीजै ॥ नारायण याही कारण निज गोद मैं पसारी ॥ इतनो० ॥ २७० ॥

राग कान्हरा ।

देख री आज नव नागरी वेषधर ललीके छलन हित ललन कैसे सजे पहर भूषण बसन दृगन कजरा दियो निरखि शृंगार सुरबधू मनमें लजै ॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमकके मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजै । रूप अभिराम नारायण लख श्यामको कौनसी मानिनी मान जो ना तजै ॥ २७१ ॥

राग कमोद ।

जयति नव नागरी सकलगुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी । जयति हरिभामिनी कृष्णघनदामिनी मत्तगज गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्णअनुरागमणि सकल त्रिय मुकुटमणि सुयश लीजे । दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजै ॥ २७२ ॥

राग विहाग ।

कह्यो क्यों न मानत मेरो । मदन मोहन नव कुंजद्वार ठाढे पंथ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सब रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो । साज शृंगार हार अपने लै प्राणदान दे तेरो ॥ अजहूं समझ शोचरी आली और नहीं कछु केरो ॥ गोविंद प्रभुके हृदय की कौन मेटे तो विन विरह अँधेरो ॥ २७३ ॥

राग कान्हरो ।

रहरी मानिनी मान न कीजै । यह जोबन अंजलिको जल है जो गोपाल माँगै तो दीजै ॥ छिन छिन घटत बढ़त ना रजनी ज्यों ज्यों कला चंद्रकी छीजै । पूरब पुण्य सुकृत फल कीनो काहे न रूप

नयन भर पीजै ॥ सौंह करत तेरे पायँनकी ऐसे जिवन दशो दिन जीजै। सूर सुजीवन सफल जगतको वैरी बाँध विवश करलीजै॥२७४॥

राग बिलावल ।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे घेरे । तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूठी कहों मोहिं शपथ रामकी साँचकर वचन आली मान मेरे । छांड निठुराई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भये तेरे ॥ २७५॥

राग कान्हरा ।

तू है सखी बड़भाग भरी नँदलाल तेरे घर आवत हैं । निजकर गूंथ सुमनके गजरे हर्षि तोहिं पहरावत हैं ॥ तू अपनो शृंगार करत जब दर्पण तोहिं दिखावत हैं । आनँदकंद चंदमुख तेरो निरख निरख सुख पावत हैं ॥ जाके गुण सभ जगत बखानत सो तेरे गुण गावत हैं । नारायण बिन दाम आज कल तेरेहि हाथ बिकावत हैं ॥२७६॥

राग कान्हरा । (अंतर दोहा)

मनावत हार परी मेरी माई ॥ राधे तू बड़भागनी, कौन तपस्या कीन । तीनलोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन ॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ । ता हरिसों प्यारी राधिके, दे दे बैठत पीठ ॥ अहो लड़ैते दृग किये, परे लाल बेहाल । कहुँ मुरली कहुँ पीत पीट, कहूँ मुकुट वनमाल ॥ बिछुरे होय सो फिर मिलैं, रूसे लेहि मनाय । मिल्यो रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय ॥ तनक सुहागो डारके, जड कंचन पिघलाय । सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय ॥ मान कियो तैं भली करी, कैसो तेरो मान । जैसो मोती ओसको, तैसो तेरो मान ॥ तू चटते मट होत नहिं राधे उन मोहिं लेन पठाई । राजकुमारी होय सो जाने कै गुरु सीख सिखाई ॥ नँदनंदनको जान महातम अपनी राख बडाई । ठोडी हाथ दे चली दूतिका तिरछी भौंह चढाई ॥ परमानंद प्रभु करूंगी दुलहैया तो बाबा की जाई ॥ २७७ ॥

राग वसंत ।

गूंजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन बोलेंगे चातकवा पिक गायकै ॥ फूलेंगे केसू कुसुंभा जहांलौं मारेगो काम कमान चढायकै ॥ वहेगी सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगैगी साखसो साख मिल आयके ॥ मेरे कहे नचले बाबा की सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायकै२७८

राग विहाग ।

पहले तो देखो आय माननी की शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजे प्यारे गोविंद ॥ कर पर धर कपोल रही है नयनन मूंद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवाँमानो भौंरा बैठे अरबरात इन्दु तरे अरविंद भरयो मकरंद ॥ नंददास प्रभु प्यारो ऐसी न रुठैयेवल जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वंद ॥ २७९ ॥

राग देस ।

कर नेह नयन लगायके फिर मान करना किन वदा । तज रोष दोष लगायवो सज मोद में मंगल मुदा ॥ अपराध विन अपराध धरबो सीख तोहे किन दई । धर ध्यान गह मुख मौन बैठी मनो कोइ जोगिन नई ॥ रस रीति प्रीति प्रतीति बिसरी कठिन कुच संगत किये । यह जान अब परसोनहीं लग जाय कहुँ मेरे हिये ॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत् यूं कही । हँस कंचुकी बँद खोल लिपटी मनो घन दामिनि गही ॥२८०॥

राग पीलू ।

तूतो मोहिं प्राणन हूंते प्यारी । भूले मान न कीजिये सुंदरि हौंतो शरण तिहारी ॥ नेक चितै हँस बोलिये सुंदरि खोलिये घूंघट सारी । कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन बारी ॥ २८१ ॥

राग भूपाली ।

मन मोहनी मन मोहना मन मोहिबो करो । मुख चंद चख चकोरी सदा जोहिबो करो ॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो दामिनी । तज मान अधर पानकरो जात यामिनी ॥ कछु दोष ना पियाको

तू भूल क्यों गई । प्रतिबिंब देख आपनो तैं पीठ क्यों दई ॥ समझाय कही भगवत जब लाग कान सों । सुखदान उठी आतुर भेटी सुजान सों ॥ २८२ ॥

राग देश ।

कुंजन पधारो राधे रंग भरी रैन ॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पिया श्याम सुंदर सुखदैन ॥ रंग भरी सैनी बिछी सेज पर रंग भरचो उलहत मैन ॥ रसिक बिहारी पिय प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुखशैन ॥ २८३ ॥

राग विहाग ।

अब पौढनको समयो भयो । इत ढुर गई द्रुमनकी छैयाँ उत ढुर चंद गयो ॥ पौढ रहे दोउ सुखद सेज पर बाढत रंग नयो । रसिक विहारी बिहारन दोऊ पौढे यह सुख हगन लयो ॥ २८४ ॥

द्वितीय मानलीला ।

राग कान्हरा ।

रैन मोहिं जागत बिहानी मोहन सों मैं मान कियो ताते भई तनु अधिक तपत ॥ सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूं ते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत ॥ ऐसो अति व्याप्यो हो मन्मथ मेरोई जीया जाने मोहिं श्याम श्याम कह रैनि जपत ॥ वेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूं कबहूं नहिं मदन बाण ते कँपत ॥ २८५ ॥

राग जैजैवंती ।

बनत बनाऊं कछु बन नाहिं आवे साँवरे सजन बिन तलफत प्राण हमारे । सोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय समझाऊं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहूं ओर अगन दे तनुको जराऊं तो मैं पाऊं पिया प्राणप्यारे । सूर सकल विधि कठिन भई है बीतत रैनि गिनत गई दई के तारे ॥ २८६ ॥

राग काफी ॥

सखी मोहिं मोहन लाल मिलावे । ज्यों चकोर चंदाको इकटक भृंगी ध्यान लगावे ॥ बिन देखे मोहिं कल न परेरी यह कह सभन सुनावे । बिन कारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुखपावे ॥ हाहा करि करि पाँयन परि परि हरि हरि टेरि लगावे । सूर श्याम बिन कोटि करो जो और नहीं जिय भावे ॥ २८७ ॥

राग रामकली ।

धन मेरे भागकी शुभ घरी । श्याम सुंदर मदन मोहन भुजा ले उर धरी ॥ जासु चरण सरोज गंगा शंभु ले शिरधरी । जासु चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुकी भेट ते मेरी सकल आपदाटरी २८८ ॥

राग विभास ।

कित श्वास उसास भई सजनी, उत दौर गई इत दौरके आई ॥ टीकी जो मिटी अलकैं जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लालके पाँयन पर आई ॥ अरुणाई कहां गई होंठनकी प्यारी मैं ब्रजनाथ ने बहुत बकाई ॥ कहा पलटचो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ २८९ ॥

राग विहाग ।

आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारीको ख्याल चाँदनी में पौढी जाते चंदा हू गयो लजाय ॥ मंडप पुहप हार बहु विधि नीले पट नाशिकाको मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आयेहैं निकट लाल देख रीझे ब्रजबाल बारबार मुखकी लेत बलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥ २९० ॥

नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोइ गाहक होय । आये मोहन फिर गये अँगना मैं बैरिरन रहीसोय॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो आयो धन दियो खोय। लछीराम प्रभु अबके मिलें तो राखोंगी नयननसमोय २९१

मेरे कर मेहँदी लगीहै लट उरझी सुझाय जा । शिरकी सारी

सरक गई हैं अपने हाथ उठाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरी गिर जो परीहै हाहा करत लगायजा । नीलांबर प्रभु गुणना भूलूं बीरी नेक खवायजा ॥ २९२ ॥

परस्पर मानलीला ।

राग कल्याण ।

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊं । जो तुम तान कहो मुरली में सोइ सोइ गाय सुनाऊं ॥ हमरे भूषण तुम सभ पहरो हौं तुमरे सभ पाऊं । हमरी बिंदरी तुमहि लगावो हौं शिर मुकुट धराऊं ॥ तुम दधि बेचन जाहु वृंदाबन हौं मग रोकन आऊं । तुम्हरे शिर माखन की मटुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊं ॥ माननी होकर मान करो तुम हौं गहि चरण मनाऊं । सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं नँदलाल कहाऊं ॥ २९३ ॥

राग देश ।

युगल छवि आज अनूप बनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नख शिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख अनी । ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसक्यान घनी ॥ २९४ ॥

राग पीलू ।

श्याम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूंछत फिरत अपनी सखियन ते प्यारी कहां गई ॥ बृंदाबन बीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छवि निरखत रहीं सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावै क्यों न होय गति ऐसी । कहै भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥ २९५ ॥

राग विलावल ।

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत । आप हँसत पुनि पुनि उर लागत चकित होत

मुख जोवत ॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो ॥ सूरश्याम मुख चंद्र कोटि छबि हँस कर मोहिं दिखावो २९६ ॥

राग विहाग ।

तनक हरि चितवो मेरी ओर । मेरे तो मोहन तुमही इक हो तुमको लाख करोर ॥ कबकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनिये नंद किशोर।कृष्णप्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधिचितचोर ॥२९७॥

राग परज ।

मृदु मुसुकन कीजे थोरी थोरी । हमसों कहा रूसनो हम तुम नेह कुंजके चंद चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललित किशोरी । निठुराई सभ छांड छबीली वचन सुधा दीजै श्रुति ढोरी ॥ २९८ ॥

इत मत निकसे तू चौथके चंदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे । दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहिं तेरो श्याम रंग मोहिं लग जायगो रे ॥ हाहा खाऊं पैया परूं नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे । नागरिया लोभी फाग स्वार्थ हीको मीत मो मन निगोरो भूल लग जायगो रे ॥ २९९ ॥

कान्हरे बांसुरिया वारे रे तू ऐसे जिन बतराय । यों ना बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दबगई हाय ॥ मैं हारी तेरे खेलन हीं ते तू सहज चल्यो क्यों ना जाय । रसिक बिहारी जी सों नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ ३०० ॥

राग देश ।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारोरे । हट मोहन हटको नहिं मानै नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूं यशुदा सों हटको बारोरे ॥ कुबिजा सौत भली मनभावै हमैं बबंबर योग पठावै छोड़ दियो हम नाहक जियरा जारोरे ॥ ३०१ ॥

राग कालिंगडा ।

अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी । तू मेरे ढिग जिन ठाढ़ो

रह देखैंगे लोग करैंगे हांसी ॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डार गयो फांसी । पुरुषोत्तम प्रभु नीठ मिलेहो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ३०३ ॥

राग प्रभाती ।

मैंतो थांपै वारी वारी हो बिहारी जी मृदु मुसकन पर जावां बलिहारी जी । लोक लाज तज थारे लडलागी थैं काईं उर धारी गिरिधारी जी ॥ और तरां जिन जानोहो बिहारी जी लाखां भांति करो म्हाँसे प्यारी जी । ब्रजनिधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हाँ से यारी जी ॥ ३०३ ॥

दानलीला ।

दोहा—कछु माखनको बल बढ्यो, कछु गोपन करी सहाय ।
श्रीराधाजूकी कृपा सों, गोवर्द्धन लियो उठाय ॥

राग बिलावल ।

श्री वृंदाविपिन सुहावनो जहँ बंसीबट की छाँह हो । श्रीराधे दधिलै नीकसी कन्हैया रोंकत राह हो ॥ वृषभानु लड़ैती दानदे । नंदराय लला घर जानदे ॥ लाला सबही सयाने साथके अरु तुमहूं सयाने लालहो । लाला लिख्या दिखावो साँवरे कब दान लियो पशुपालहो ॥ नंदराय लला घर जानदे । प्यारी लिया है सो लेंहिं गे नई रीति न करते आज हो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला क्या लादे हम जातहो श्याम काहे भरे हम बैलहो । लाला तुम टेढे ठाढे भये मोरी रोक मही की गैल हो ॥ नंदराय ० । प्यारी अँग अँग बसन सुहावने मानो भरेहैं रतन भूपाल हो । राधे नीके रूप लड़ैती ये कोइ जोबन लादे जायहो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला याहीते कारे भये कोइ लैलै ऐसे दानहो । लाला कब छूटोगे भार सों सबरे तीरथ गंग नहायहो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी गोरज गंगा न्हात हौं और जपत गौअन के नामहो । प्यारी पावन पवित्र सदा रहों ऐसे दान ते ना सकुचात हों ॥ वृषभानु ० । लाला देश हमारे बापको

जाकी बाहँ बसे नँदराय हो । लाला वास जो राख्यो साँवरे याते सुख सों चरावो गाय हो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी देश तुम्हारे बाप को सो मैं ही दिया है बसाय हो । प्यारी सभ संकल्प्यो वा दिना जब पियरे कीने हाथ हो ॥ वृषभानु ० ॥ लाला दान ले दान ले दानले मन फूल्यो अति सुखपायहो । लाला लै रे मोहन दानलै कछु गाय बजाय रिझायहो ॥ नंदराय ० ॥ प्यारी नट ज्यों नाचे सांवरो कोइ पढत कवित जैसे भाटहो । श्री वृंदावन लीला रची यश गावत अलि भगवानहो ॥ ३०४ ॥

हमरे गोरस दान न होय मोहन लाडलेहो । हमारे मग मग फिरत ग्वाल ग्वालन दान देहो ॥ कबके तुम दानी भये लाल कब हम दीनो दान । गाय चरावो बाबा नंदकी तुम सुनो अनोखे कान्ह ॥ हम दानी तिहुँ लोकके तुम चारों युगकी ग्वार । दान न छाँडों आपनो तेरों राखों गहनो हार ॥ रत्न जटितकी ईडुरी मेरी हीरा जडीहो हार । सो तुम राखन कहतहो कामरके ओढन हार ॥ ब्रह्मा तानो पूरियो हो बुनी हो बैठ महेश । सो हम ओढी कामरी जाको पार न पायो शेष ॥ भौंहैं नचावत चातुरी ढोटा बोलत वड वड बोल । मेरो हार किरोरको तेरी सब गायनको मोल ॥ यह गाय तिहूं लोक तारनी चारों युग परमान । दूध दहीके कारणे तेरो हारलेहों रसदान ॥ काहेको बाद बदतहो ढोटा काहे करत अति सोर । जैसी बाजे तेरी बांसुरी मेरे नूपुर की घनघोर ॥ याबंसी की फूंक पै मैंने गिरिवर लियो है उठाय । ढीठ बहुत यह ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहों छडाय ॥ हमहैं सुता वृषभानुकी तुम नंद महरके कान्ह । प्रेमप्रीति रुचिमान कै ढोटा अब जिन करो गुमान ॥ वृंदावन क्रीडाकरी हो कीनो रास बिलास । सुर नर मुनि जय जय करत गुण गावें माधुरी दास ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी ।

देजा गुजरिये दधि माखन ॥ गूजरी ये गुजरेटरीये मेरे इलेक

मारग आउ री ॥ मैं हूं नंदमहरको ढोटा भरला मटुकी मैं मारूं सोटा तेरे विच विच धूम मचाऊं । मैं बृषभानु गोपकी बेटी मत जानो कोइ और सहेटी कंस राजाकी फौंजां लाऊं तेरे नंद समेत बँधाऊं ॥ ३०६ ॥

मोहन मैं गूजर बरसाने दी मोते नाहक मांडीरार ॥ पांच टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान ॥ गाय चरावत नंदकी मोपै मांगत दधिको दान ॥ रत्न जडित मेरी ईंडुरी हीरा लगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सब गायनको मोल ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चितै बलि जाऊं सांवरे मेरो विमल विमल दधिखाय ॥ ३०७ ॥

राग बिलावल ।

ग्वालिन दान हमारो दे । हम दानी या माल के ॥ देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहों चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज वन बीथिन गहबर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत बार बार ब्रजबाल कोरे ॥ ३०८ ॥

याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरेहो गौअन रखवारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे अरेहो नयनों रतनारा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

हमरो दानदेहुब्रजनारी । मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेचनहारी ॥ रूप तोहिं विधनाने दीयो ज्यों चंदा उजियारी । मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गलेमें राजै अलकैं घूंघरवारी । या ब्रज में जेती सुंदर हैं सब हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छवि पर नँदनंदन बलिहारी ॥ ३१० ॥

राग बरवा पीलूकाजिला ।

पहले मेरो दान चुकारी पीछे बतराइयो प्यारी । तो समान तूही देत

दिखाई नव जोवन नव सुंदरताई और कहां लौं करों बडाइ मोहन को मन मोहन हारी ॥ अति बांके हैं नयन तिहारे सान धरे पैने अनियारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नहिं बानकटारी । नारायण जिन भीर लगावो देहु दान अपने घर जावो क्यों मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥ ३११ ॥

राग मल्हार ।

जोवन की मदमाती डोले री गुजरिया । अंग अंग जोबन की उठत तरंग नई नयना कजरारे बाँके तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकवेसर करनफूल मुंदरी ललित छबि देत अँगुरिया । अबलों तोसी नहीं देखी नारायण दधिकी बेचनहारी नंदकी नगरिया ३१२॥

राग सोरठ ।

ठाढी रहरी गूजरी तू देजा मेरो दान । ढिग नहिं आवत बगद जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया तान ॥ कैसो दान माँगे लाला चतुर सुजान । या मारग हम नित प्राति आवत कबहूं नदीनो दधिको दान ॥ दानके काजहिं हम ब्रज आये छांड दियो वैकुंठ सो धाम । या गहवर में हमहीं बसत हैं ह्यां धौं कहा तिहारो काम ॥ क्या तुम ग्वालिन आँख दिखावो दावालनको कर गयो पान । सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहनको राख्यो मान ॥३१३ ॥

राग भैरव ।

देखतकी मुख ऊजरी गूजरी शीश विराजत बासन कोरो ॥ दान बिना कहो कैसके जान द्यों तू इत भोरी कि मैं इत भोरो ॥ गोरसकी सौंह सो रस छाँड़ देउँ तनक चखाय घनो है कि थोरो ॥ जैसे तुम लाईहो याहि निहोरो कर तैसे इक मान लेहु मेरो निहोरो॥

अटपटी पाय सूधे बाबा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधौं शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौं संक्रांति किधौं ग्रहणहूं लजायो है॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान मांगत हो कहा जगजीवन जू ऊधम मचायोहै ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजनसे नाचतहैं जानेतो यशोदा मैया कहा खायजायोहै३१५॥

राग जंगला।

द्वार पौरियाको रूप राधेको वनाय लाई गोपी मथुरा ते वृंदावन की लतान में। कह्यो टेर कान्ह सों बुलायो तोहिं कंसजी ने कौनके कहेते दधि लूटत हो दान में ॥ संगके सखा सब डगर भुलायगये कृष्ण सों सयाने गये पकर भुजा पान में। छूट गयो छल तो छवीली अवलोकन में ढीलीभई भौंह वा लजीली मुसकानमें२१६

राग बिलावल।

एरी यह कोहै री याहे दान देत गोवर्द्धन केरी ग्वैंडे ॥ हारन खेतन गाम मड़ैया कान्हर ठाढो ऐंडे ॥ बाप भरै कर कंस रजा को धूत जगाती पैंडे। या ब्रजकी अब रीति नई है औलाती को नीर बरैडे ॥ पराये बगर जिन देहु अडीठन कान्हर छैंड़ी छैंडै। कृष्णदास बरजो नहिं मानत तोरत लाजकी मैंड़ ॥ २१७ ॥

राग सोरठ

कांकड़ली ना चालो म्हारी फूटे गागडली। तू तो ठानो घर में ठाकड हौंभी ठाकडली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैंभी आकड़ली। मोंढे थानो कारी कामर हाथ में लाकडली ॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एकन बाखडली। माखन माखन आपने खायो रहगई छाछडली ॥ जाय पुकारूं कंसके आगे मारे थाप डली। बृंदावन में रास रच्योहै मोरकी पांखड़ली ॥ नरसीके स्वामी सामलिया दूधमें साकडली ॥ २१८ ॥

राग परज।

तुम टेढ़ो म्हारी टेढ़ी गगरिया। टेढी ढेढी चाल चलो त्रिभंगी काहे को दिखावे लाला टेढी पगरिया ॥ टेढी अलक में क्या बाँधूंगी कछु न सुहावे मोहिं थारी सगरिया। टेढो श्रीबृंदावन गोकुल टेढी वाहूसे टेढी वृषभानु नगरिया ॥ ठेढ़ो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और टेढी वृषभानु दुलरिया। सूरदास टेढेकी संगत टेढे होकर पार उतरिया॥

राग गुर्जरी ।

गिरिवर धर्यो आपने करको । ताहीके बल दान लेतहो रोक रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बडे कहावत हमहूं जानत तुमको । यह जानत पुनि गाय चरावत नित प्रति जातहो बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूषनको । सूर कांध कमरी हूं जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ३२० ॥

राग बिलावल ।

यह कमरी कमरी कर जानत । जाके जितनी बुद्धि हृदय में सों तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोम पर वारों कोटिन अंबर ॥ सो कमरी तुम निंदत गोपी तीन लोक आडंबर ॥ कमरीके बल असुर सँहारे कमरी ते सब भोग । जात पाँत कमरी है मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ३२१ ॥

अब तुम सांची बात कही । एते पर युवतिनको रोकत मांगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहतही सो श्री मुख प्रकटायो । नीकें जात उघारी अपनी युवतिन भले हँसायो ॥ तुम कमरीके ओढन हारे पीतांबर नहिं छाजत । सूर श्याम कारे तनु ऊपर कारी कामरि भ्राजत ॥ ३२२ ॥

मोसों बात सुनो ब्रजनारी । एक उपख्यान चलत त्रिभुवनमें सो तुम आज उघारी ॥ कबहूं बालक मोहन दीजे मोह न दीजे नारी ॥ जोमन आवै सोइ कर डारै मूंड चढतहैं भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी । सूर कहा ये हमको जाने छाँछकी बेचन हारी ॥ ३२३ ॥

यह जानत तुम नंदमहर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहिं जात खरकहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूंढत भांडे । मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबते छाँडे ॥ और सुनो यशुमति जब बांधे तब हम करी सहाय । सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ३२४ ॥

राग आसावरी ।

को माता को पिता हमारे । कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बांधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंद ढटोना नंद कहांते आये । मैं पूरण अविगत अविनाशी मायासबनभुलाये ॥ यहसुनिग्वालिसर्वमुसकानी ऐसेही गुण जानत । सूरश्याम जो निदर्यो सभही मात पिता नहिंमानत ॥

राग सोरठ ।

तुम का जानोरी गूजर दधिकी बेचन हार । कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुतिचार ॥ जो मेरो निज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेष न पावत पार ॥ ३२६ ॥

राग आसावरी ।

भक्त हेत अवतार धरों में ॥ कर्म धर्म के वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनों श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं ॥ भावाधीन रहों सभहीके और न काहू ते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौं व्यापक सभको सुख दे दुखहिं हरों मैं॥सूर श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहां भाव तहँते न टरों मैं ३२७॥

लावनी ।

मैंही तो हूँ नंद को लाला मात यशुदा को कन्हैया मैंहीं तो हूं। धर धरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंही तो हूं ॥ मथुरा में लियो जन्म ब्रज मंडलको बसैया मैंही तो हूं। प्रथम पूतना तृणा-वर्त शकटाको हनैया मैंहीं तो हूं ॥ कागाको मारके चोंचको फार फरैया मैंहीं तो हूं। ब्रजवासिनको प्रेम देख माखनको खवैया मैंही तो हूं ॥ यमला अर्जुन हेत ऊखल सों हाथ बँधैया मैंही तो हूं ।

मोहे गोपी ग्वाल बाल गौअनको चरैया मैंही तो हूं ॥ वत्सासुर को पटक अघाके प्राण कढैया मैंही तो हूं । नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तो हूं ॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंही तोहूं । चीर चोर चढ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैंही तो हूं ॥ गोवर्द्धन नख धरचो इंद्रको गर्व हरैया मैंही तो हूं । बंसीबटके तट अधरन धर बंसीको बजैया मैंही तो हूं ॥ श्यामाके संग रास में नीको तो नचैया मैंही तो हूं । पकरूं कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूं ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंही तो हूं । सब खेलनको खेल खेल खेलनको खिलैया मैंही तो हूं ॥ भक्तन हितकारी बलदेवको भैया मैंही तो हूं । मंझधार के बीच टेर गजकी सुनवैया मैं ही तोहूं ॥ कुंदन विप्र यों कहत नाम राधाको रटैया मैं ही तोहूं ॥ ३२८ ॥

कवित्त ।

अंत ते न आयो याही गांवरेको जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि बारे को ॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिचान जान लोचन नचावत नचैया द्वार द्वारे को ॥ भैयाकी सौं सोच कछु मटकी उतारे को न गोरसके ढारे को न चीर चीर डारे को ॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार बगर हमारे को ॥ ३२९ ॥

राग झिंझोटी ।

चल परे हटरे काहेको इतरावे । भूषण वसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे ॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सों झगरत निलज न नेक लजावे । नित प्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे ॥ ३३० ॥

राग कल्याण ।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी । मेरे दास दास दासनके तिनको लागत है अति फीकी ॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही

अगाध। कंस मार शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध॥ तबहीं लग यह संग तिहारो जबलौं जीवत कंस। सूरश्यामके मुख यह सुन तब मनमें कीनो संस॥ २३१॥

राग रामकली।

राधा सों माखन हरि माँगत। औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुमरो कैसो लागत॥ ले आई वृषभानु नंदनी सदलौनी है मेरो। लै दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो॥ सभहिन ते मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई। सूरदास प्रभु सुख उपजाये ब्रज ललना मन भाई॥ २३२॥

राग कालिंगडा।

अच्छा लेहु ब्रजवासी कन्हैया अच्छा लेहुरे॥ बरसाने से चलीरे गुजरिया आगे मिले महाराजरे॥ कोरी कोरी मटुकी में दहीरे जमाया चाख लेहु महाराजरे॥ दधि मेरो खायो मटुकियारे फोरी इंडुरी कहां डारी लालरे॥ हार शृंगार सभी मेरो तोरयो दुलरी कहां डारी लालरे॥ जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराजरे॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहाररे२३३

हिंडोरा झूलनलीला।

राग मलार।

ब्रज पर नीकी आज घटा। नान्ही नान्ही बूंद सुहावनी लागत चमकत बिज्जु छटा॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा। गावत सुरहि देत चातक पिक प्रगट्यो मदन भटा॥ सब मिल भेंट देत नँदलालहिं बैठे ऊंची अटा। चतुर्भुज प्रभु गिरि-धरन लाल शिर कसूमी पीतपटा॥ २३४॥

आज कछु कुंजन में बरसासी। बादर गण में देख सखी री चमकतहै चपलासी॥ नान्ही नान्ही बूंदन कछु धुरवा सी पवन बहत सुखरासी। मंद मंद गर्जन सी सुनियत नाचत मोर सभा सी॥ इंद्र धनुष में बग मिल डोलत बोलतहै कोकिला सी। इंद्रवधू

छवि छाय रहीहै गिरि पर श्याम घटा सी ॥ उमग महीरुह से माहि कंपत फूली मृगमाला सी । रटत व्यास चातककी रसना रसपी-वत हौं प्यासी ॥ २३५ ॥

आई बदरिया वरसनहारी । गरज २ दामिनि दमकावे ज्यों चूंदरमें झलक किनारी ॥ मधुर मधुर कोयल वन बोले भवन भवन गावत ब्रजनारी । चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी ॥ २३६ ॥

देख युगल छबि सावन लाजे । उत घन इत घनश्याम लाडलो उत दामिनि इत प्रिय सँगराजे ॥ उत वर्षत बूंदनकी लरियां इत गल मोतियन हार विराजै । उत दादुर इत बजत बांसुरी उत गर्जत इत नूपुर बाजै ॥ उत रँगके बादर इतबागे उतै धनुष वनमाल इत साजै । उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुख आजै ॥ २३७ ॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु । भीजेगी मेरी सुरँग चुनरिया ओढि पितांबर लेहु ॥ दामिनि सों डरपतहौं मोहन निकट आपने लेहु । कुंभन दास लाल गिरिधर सों बाढ्यो अधिक सनेहु ॥ २३८ ॥

राग रेखता ।

आयोहै मास सावन इक मान कह्यो प्यारी । चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी ॥ यमुनाके तीर बंसीबट कैसी छबि छाई । शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई ॥ करतीहै शोर यमुना उठते तरंग भारी । प्रति कुंज कुंज छाय रह्योहै परागरी ॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी । फूली लता द्रुमनकी धरणी झुकीहैं डारी ॥ जापै मलिंद घूमें मकरंद हेत छाये । नाचतहैं मोर वनमें लागत परम सुहाये ॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदमकी डारी । कालिंदियाके तट पै झूलतहैं सभ सहेली ॥ नवसत शृंगार साजे इक एक ते नवेली । तुमहूं प्रिया सिधारो कीजै न अब अवारी ॥ झूलें निकुंज अपनी अबहीं चलो पियारे । कीजै

बिहार हमसों तुम नंदके दुलारे ॥ तब संग ले पियाको सुनि कुंज में सिधारी। बैठो कुँवर हिंडोरे अब मैं तुम्हैं झुलाऊं। गाऊं तुम्हैं रिझाऊं छबि देख दृग सिराऊं॥ बैठो सुरंग पटली डोरीगहो सँभारी॥ बाढे न रमक मोहन टुक मंदही झुलाओ। डरपे हियो हमारो पिया पैग ना बढाओ॥ यह बात सुन प्रियाकी उरसों लई लगारी। भीजेगी लाल सारी कारीघटा जो आई॥ लीजे उढाय मोको कामर कुँवर कन्हाई। तब हँस रसिकबिहारी कामर उढाई कारी। चल०॥ ३३९॥

राग देश।

आज बन्यो रसरंग हिंडोरो कदम तरें। सघन लता झुक सुमन सुगंधन आलि गण गुंज करें॥ वर्ण वर्ण तनु भूषण चुंदरी श्यामा जू पहरें। लाल लडाय चाय हित चित सों रूप समुद्र भरें॥ ३४०॥

झूलौ प्यारी आज निकुंज हिंडोरना। बोलत चातक मोर पवन झकझोरना॥ सघन लता निधि वनकी आज सुहाई हैं। श्याम घटन सों परत बूंद सुखदाई हैं॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई है। मनो डरत तुव तेज लाज दरशाई है॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके। मनो बिछौना कियो मदन मद भानके॥ ३४१॥

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानुकी लली। तिहारे काज आज इक मैंने विरची कुंज भली॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरो कैसी झला झली। ब्रजवनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली। रसिक बिहारीकी सुन वाणी तुरतहिं कुँवरि चली॥ ३४२॥

चलो इकेले झूलें वनमें प्यारी मेरे प्रान। तुम नइ नागर रूप उजागर सुखसागर छबिखान॥ वर्ण वर्णके बादर छाये मानो गगन वितान। वर्षत बूंद सोई मोतिनकी झालर शोभावान॥ बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान। रंग रंगके फूल

खिले हैं भ्रमर करत रसपान ॥ ऐसे समय विपिन सुख बिलसें एरी परम सुजान । नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान३४३॥

राग खेमटा ।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नंदनी । सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूंद मंदनी ॥ सुंदर कदमकी डारी झूला परयोहै प्यारी देखो कुमर हहारी सभ दुख निकंदनी । पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुख चन्द्रकी उजारी मृदु हास फंदनी ॥ मम मान सीख लीजे सुंदर न देर कीजे हम तो विलोक जीजै तूहै गति गयंदनी । शोभा लखो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण वंदनी ॥ ३४४॥

राग सोरठ ।

झूलो मेरी राधा प्यारी रँगीलो हिंडोरना । डांडीचार सुदेश बनाई हीराखम्भनझुम्मकलाई जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना ॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिरआई रिमझिम रिमझिम बूंद सुहाई दमक दमक दामिनियां बोलें मोरना । गावत राग मलार अवाई शीतल मंद सुगंध सुहाई तान तरंगन ललित भान तृण तोरना३४५

धवल महल चढ रत बंगला झूलो सुरँग हिंडोर । नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर ॥ सुरँग कसूमी सारी प्यारी हरत झगाली कोर । हित अली रूप लाल रुचि औरै पिया छवि उठत हिलोर।

राग मलार ।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रँगीली अति सोहै । तू गुण रूप यौवन रंग रस भरी तेरी उपमा को कोहै ॥ हाथन चूरी महाउर मेहँदी चटक चौगुनी सोहै । रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनि मन मोहै ॥ ३४७ ॥

राग पीलू ।

चलो पिया वाही कदम तरे झूलैं । झुकि रहिं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिंदी के कूलैं ॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलिगण गुंजत भूलैं । ललित किशोरी मग बतरावें कहकह बतियाँफूलैं३४८॥

राग मलार ।

हर्ष झुलाइये मनभावन । उघर परचो हिय हेत गह गह्यो झूटा दियो चित चावन ॥ यह जो कल्पतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन । वृंदावन हित रूप बलि गई वह हरियाली सावन ३४९

राग खेमटा ।

हिंडोरे आज झूलत रंग रयो । अचल सुहाग सुभग श्यामा को दिन प्रति होत नयो ॥ हरित भूमि बंसीबट यमुना सो सुख हगन लयो । रसिक प्रीतम मिल गावत भावत ब्रज सभ रीझरह्यो ॥

राग रेखता ।

झूलन युगल किशोरकी दिल में मेरे बसी । बैठेहैं रँग हिंडोरना करते हैं रसमसी ॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोर दार। शिर पै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी ॥ बेसर बुलाक बेनी बेंदी जो भालपै । हीरोंका हार उरपै कटि काछनी कसी॥जोबनके जोर शोरसों रमकें बढावती । ललता किशोरी श्यामकी छबि देखके हँसी ३५१

राग मलार ।

झूलत तेरे नयन हिंडोरै । श्रवण खंभ भुहैं भई मयारी दृष्टि किरण-डांडी चहुँ ओरै ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रति जोरै । बरुनी चमर ढुरत चहुँ दिशिते लर लटकत फुँदना चित चोरै ॥ दुर देखत अलकावलि अलि कुल लेत है पवन सुगंध झकोरै । कच घन आड दामिनी दमकत इंद्र मांग घन करत निहोरै ॥ थकित भये मंडल युवतिनके युग ताटंक लाज मुख मोरै । रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत विविध कटाक्ष तान तृण तोरै ॥ ३५२ ॥

राग खेमटा ।

युगल बर झूलत दे गल बाहीं । बादर बरसें चपला चमकें सघन कदम की छाहीं ॥ इत उत पैंग बढावत सुंदर मदन उमंगन माहीं । ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ़ यमुना लौं जाहीं ॥ ३५३ ॥

राग देश।

झूलत श्याम श्यामा संग । अतितरंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्याम गोरे अंग । ललित किशोरी हिंडोरने पै आज वरसत रंग ॥ ३५४ ॥

राग जंगला सिंध।

बलि बलि जाँदियां झूलन पर । प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारे के मन भाँदियां ॥ चहूं ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झूटे खाँदियां । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन नयनसराँदियां॥

राग मलार।

आज हिंडोरे झूलें झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटता धादा किटता बजत मृदंग सखि सुवर तान गावें झननन नन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्री यमुनाजीके कूलें कूलें ॥ नवल किशोरी वृषभानुकी कुँवरि भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकवेसर अंग अंग भुज भूलें फूलें ॥ ३५६ ॥

राग देश।

मनभावन हर्षावन आवन सावन तीज सुहाई ॥ चावन गावन रीझ रिझामन दंपति रति दरशाई ॥ चढे हिंडोरे नयनन जोरे चित चोरें सुखदाई । युगल चंद रसकंद कोरनी लख रूपलाल बलिजाई॥

राग रेखता।

प्यारी पीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना । दो खंभ हैं जडाऊ जडे चितके चोरना ॥ डाँडी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना । पटली संदलकी साफ देखो खूब है बनी । लागेहैं उस्के बीचमें हीरा चुनी मनी ॥ चुंदरी घूँघटकी ओटमें नयना विशाल है । खंजन भुलामनेके घेरनको जालहै ॥ मुझको रसिक गोविंदकी छविही में झूलना । प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना ॥ ३५८ ॥

राग खेमटा।

युगल बर झूलत डार गल बाहीं । रत्न जडितको बन्यो है

हिंडोरा सघन कुंजके माहीं ॥ रेशम डोर पवन पुरवैया लख रति काम लजाहीं । सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं ॥ मध्य श्याम श्यामा दोउ हिल मिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं । ऊंची डार तोर कलियन दोउ निज निज कलिन सराहीं ॥ या छबि निरख प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाहीं ॥ २५९ ॥

आज दोउ झूलत रंग भरे । झूटा खरे लेत कबहुँक सखि कबहूं हरे हरे॥ कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनु शशि मीन लरे । चंद्रमाल हलकत उर राधे हरि वनमाल गरे॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे। ललित किशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अरन अरे ॥ २६० ॥

राग देश ।

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू । अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू ॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिंन वचन कहो जू। विहारन दास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥ २६१ ॥

सुहावन सावन राधा सुख तिहारे बाट परचो । यह जो शत गुणो रूप अंग संग झूलनमें उवरचो ॥ यह जो चौगुनो चाव कौन विधि भागनते जो बढ्यो । बृंदावन हित रूप रसिक प्रीतमको लहनो सुकृत करचो ॥ २६२ ॥

राग मलार ।

एहो लाल झूलिये तनक धीरे धीरे । काहेको इतनी रमक बढावत द्रुम उरझत चीरे चीरे ॥ जो तुम झुक झुक झूटनके मिस आवतहो नीरे नीरे । नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ॥ २६३ ॥

राग यमन ।

झोका दीजो सम्हारके मेरी सारी न लटके । सघन कुंज द्रुम डार कँटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन बातन अब भेंट नहीं

कछु और धोखे जिन भटके । ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ३६४ ॥

राग मलार ।

कैसे झूलों हिंडोरे बतियां माने नाहिं हरी । बरजो न मानत यह काहूको लोककी लाज टरी ॥ हाहा खात यह तो पैयां परतहै प्रेमके फंद परी । रसिक गोविंद अभिराम श्याम ने भुज भर अंक भरी ॥ ३६५ ॥

राग बड़हंस मलार ।

हिंडोलनामें काईं छै झूलों राज ॥ म्हारा झूलतहिया लरजे ॥ रत्न जडितके खंभ जडाये अगर चंदनके पटा । रेशम डोर पवन पुरवैया जुरआई सावन की घटा ॥ श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदीके तटा । उड़ उड़ अँचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा ॥ ३६६ ॥

राग सारंग ।

फूलनके बँगले में राजैं पिया प्यारी हो । फूलनके भूषण विचित्र सोहैं अंग अंग फूलनके वसन वदन छवि न्यारी हो ॥ फूल से मुखारविंद वचन फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लख भारी हो । जैसोही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवन में फूली फुलवारी हो ॥ ३६७

कवित्त ।

फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फुँदने फँदे हैं लाल डोरे में । कहै पद्माकर वितान तने फूलनके ललनकी झालरें सु झूलत झकोरे में ॥ फूल रही फूलन सुफूल फुलवारी तहाँ फूल हीके फरश फबे हैं कुंज कोरे में ॥ फूलझारी फूल भरी फूल जरी फूलन में फूल ही सी फूल रही फूलके हिंडोरे में ॥

राग कान्हरा ध्रुपद ।

फूलनकी चंद्रकला शीश फूल फूलनको ललनके झुमका

श्रवण सुकुमारीके। फूलनकी बंदनी विशाल नथ फूलनकी फूलन को बेंदा भाल राजत दुलारी के॥ फूलनकी चंपाकली हारगले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारी के। फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाडिली हमारीके॥ ३६९॥

कवित्त।

फूलन चँदोआ तने फूलन फरश बिछे फूलनकी सेज और फूलन छबिछै रही॥ फूलनकी गेरे माल फूलन करनफूल फूलन को टीको मांग फूलन भरै रही॥ फूलनके वस्त्र औ शृँगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत वसंत या वसंतऋतु ह्वै रही ३७०

राग पीलो।

सो तू राखलै री झूटा तरल भये। इत नव कुंज कदम लौं परसत उत यमुना लौं गये॥ आवत जात लता निरवारत कुसुम वितान छये। कल्याणके प्रभु रीझ विवस भये झूलत नयेनये ३७१

मेरो छांडदे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी। झूटन मिस मोहन लँगरैयाँ अजहूं टहोकत ना भूलोंगी॥ ललता संग रँगीले झूलें झूल झूल मनहीं मन फूलोंगी। ललित किशोरी तरल पैंग कर लालन तो सँग सम तूलोंगी॥ ३७२॥

राग दादरा।

सुन सखी आज झूलन नाहिं जैहों॥ श्यामसुँदर पिया रस लंपट है अतिही ढीठ्यो देत। झूटा तरल करे पाछे ते धाय भुजनभर लेत॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमैं जनावत नेह। रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों न जाय रस लेह॥ ३७३॥

राग सोरठ।

कौन समय रूठनको प्यारी झूलो ललित हिंडोरे। रंग बरंग घटा नभ छाई बिच बिच चपला चमक सुहाई परत फुहार परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविधभाँति पक्षी वन बोलें

मृगिन सहित मृग विहरतडोलें जीवजंतु मिल करत कलोलें यही अचरज मन मोरे । कुसुमचीर पहरे ब्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाउँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥ ३७४॥

राग मलार ।

या ऋतु रूस रहन की नाहीं । बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरष बढाहीं ॥ जे बेली ग्रीषमऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं । उमडी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलनको जाहीं ॥ यह संपदा दिवस चारककी शोच समझ मनमाहीं । सूर सुनत उठ चली राधिका दै दूती गलबाहीं ॥ ३७५ ॥

राग गौरी ।

झूलनहार नई कौनहै ॥ श्यामाके सँग रंग भरी सोहत सखी नवेल । अति सुंदर तनु सामरी मानो नील मणिनकी बेल ॥ श्वेत कंप रोमांच हो जान परत कछु और । झुक झुक झूटन में मिले हँस कुँवर लजोंई होत ॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर । हम जानी जानी सभी सखि यह झूलन कछु और ॥ सभी छकाई नागरी दृगन सुधारस प्याय । कपट रूप धर मोहनी प्रगट भई ब्रज आय ॥ ३७६ ॥

राग यमन ।

झूलत को श्यामाके सँग सखी सामरी प्यारी है । कजरे नयन सैन सों बतियाँ अँखियन कोर कटारी है ॥ जोबन जोर मरोर भौंह की ललित किशोरी वारी है । ललता करि परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३७७ ॥

राग झँझोटी ।

श्यामाजी झूलें पीरी पोखर पार । गावत हे ऊँचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूषण शोभा विपिन निहार । चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥ थरकत है अतरस अतरोटा शिर पर सूही सार। खुमक बनी उर पीत कंचुकी

मुख पर श्रम कण वार ॥सजनीरी इक सांवरि आई झूलनको रिझवार। ताके संग झुलत है प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारो कहिये कृपा विचार। तरुणिन में अति सुंदर प्यारी चतुरन में वरनार ॥ ललता कहै बोलरी सामर नातर देहुँ उतार। राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललता ने दोऊ दिये उतार। हँस पुनि चपल बलैयां लेवें कोउ पीवत जल वार ॥ सैननमें समझावत मुखसे वचन न सके उचार। नंदगामकी ओर बतावे ऊँचे हाथ पसार ॥ अँचरा की सरकन में कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार। हर हर हँसत सकल ब्रज सुंदरि यह वोही खिलवार॥ नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूंघट मार। वृंदावन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार ॥ ३७८॥

बांकी छबि झूलत प्यारी। बांकी आप विहारी बांके बांकी संग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहू की न्यारी। ललित किशोरी बांकी मुसकन बंक पैंग पर वारी॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें।

कौन चढे पहले सुरँग हिंडोरे। सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोराजोरे। गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे। रसिक प्रीतम यह होड पिया परी रीझ देत तृण तोरे ॥ ३८० ॥

राग सोरठ।

गाय चरायके गिरि धारचो तुम्हें झूलन समझ कहाहै। अति सुकुमार प्रिया गौरांगी तासँग झूलोहि चाहै॥ हम जो सिखावें तैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहै। वृंदावन हित रूप बलिगई ह्यां पायोके वां है ३८१ ॥

राग बरवा सारंग।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले। गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सभ मिल आवरे ॥

सभ शृंगार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चावरे । राधे वर कृष्ण याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जावरे ॥ ३८२ ॥

राग मलार ।

झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊं । मरुवे बयार करूं हित चित दे तन मन खंभ बनाऊं ॥ सुध पटली बुध डांडी बेलन नेह बिछौना बिछाऊं । अति अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊं ॥ गरजन कुहक किलक मिलवेकी नेह नीर बरसाऊं । श्रीविट्ठल गिरि-धरन लालको जो इकले कर पाऊँ ॥ ३८३ ॥

भीगत कब देखूं इन नयना । राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहन को उपरैना ॥ श्यामा श्याम कुंज तन चितयो यत्न कियो कछु मैना । श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥३८४॥

भीगत कुंजनमें दोउ आवत । ज्यों ज्यों बूंद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥ अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तर छिन बिलमावत । वे हँस ओट करत पीतांबर वे चुनरीजु ओढावत ॥ तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन बीच घन धावत । ले मुरली कर मंद घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छवि पावत । सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत ॥ ३८५ ॥

होरीलीला ।

राग जंगला ।

प्यारी पिया दोउ खेलत होरी । नंदनँदन ब्रजराज सांवरो श्री वृषभानु किशोरी ॥ परमानंद प्रेम रस भीने लिये अबीर भर झोरी । करत मनमें चित चोरी ॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन विच-रतहैं मिल जोरी । छूटी अलकां उरझीं कुंडल सों बेसर पीत फँस्योरी ॥ चलो सुझावो गोरी ॥ कर कंकण कंचन पिचकारी केसर भर लै दौरी । छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्री

बृंदावन जहँ यह फाग रच्योरी। औरसरंग रीझरहे ब्रज पर वारो वैकुंठ करोरी॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी॥ ३८६॥

राग होरीसारंग।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई। नंदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई॥ सखा सखी भये सखी सखा भईं यशुमति भवन गई। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ नाचत थेइ थेई॥ गोरे श्याम सामरी राधे या मूरत चितई। पलट्यो रूप देख यशुमतिकी सुध बुध बिसर गई॥ सूर श्यामको वदन विलोकत उघरगई कलई॥

राग जंगला।

या ब्रजमें कैसी धूम मचाई॥ इत ते आई कुवँरि राधिका उत ते कुवँर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छबि वरणि न जाई॥ घरै घर बजत बधाई॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई। उडत गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई॥ मनो मघवा झर लाई॥ राधे सैन दई सभ सखियन यूथ यूथ मिल धाई। पकरोरी पकरो श्याम सुंदरको गृह अब जान न पाई॥ करो अपने मन भाई॥ छीन लियो मुख मुरली पितांबर शिर पर चुनरी उढाई-। बेंदी भाल नयनमें काजर नकबेसर पहराई॥ मनो नई नारि बनाई॥ कहां गये तेरे पिता नंदजी कहां यशोमति माई। कहां गये तेरे सखा संगके कहां गये बल भाई॥ तुझे अब लेत छुड़ाई॥ फगवा लिये विन जान न दूंगी करियो कोटि उपाई। लेहों चुकाय कसर सभ दिनकी तुमहो चोर चुराई॥ छीन दधि माखन खाई॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीबृंदावन धनि यमुना यदुराई। राधा कृष्ण युगल जोरी पर नंददास बलिजाई॥ प्रीति उर रही न समाई॥ ३८८॥

राग सारंग।

रसिया को नारि बनावोरी। कटि लहँगा गल माहिं कंचुकी चुंदरी शीश उढावोरी॥ गाल गुलाल दृगन में अंजन बेंदी भाल लगावो री। नारायण तारी बजायके यशुमति निकट नचावो री ३८९

राग जंगला सिंध ।

श्याम मोसे खेलो न होरी पालागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन मैं निकसीहूं सास ननँदकी चोरी । सगरी चुँदरिया न रंग भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोर से बहियां मरोरी । दिल धडकत मेरो सांस चढत है देह कँपत गोरी गोरी ॥ अबिर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंगमें बोरी । सास हजारन गारी देवे अरु बालम जीती न छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनंद भयो उर लाज रही कछु थोरी ॥ ३९० ॥

राग जंगला ।

थारे करूंगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ ॥ यह अँगिया नहिं धनुष जनकको छुअत टुटो ततकाल । नहिं अँगिया गौतमकी नारी छुअत उडी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भ्रुकुटी कुटिल कर नहीं पूतना खाल । यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल ॥ गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो ब्रजबाल । जाओजी खाओ सुदामाके तंदुल गौवनके रख-वाल ॥ इतनी सुन मुसकाय सांवरे लीनो अबिर गुलाल । सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अँग सखियन कियो निहाल ॥ ३९१ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छाँडो श्याम बिंधजावोगे नयननमें । भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैनन में॥जो तोरे मनमें होरी खेलन को तो ले चल कुंजन में॥चोआ चंदन और अर्गजा छिरकूंगी फागनमें ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि लागीहै तन मनमें ॥ ३९२ ॥

राग जंगला ।

जनि जाओरी आज कोऊ पनियाँ भरन ॥ ठाढो मग में मोहन इक इकको मारत पिचकारी तक तक ॥ जिनको चाहत तिनको रँगमें भिगोय डारे गारियां देन लागो न्यारो बकबक ॥ उनको

देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक बारी ढक ढक ॥ शीश कँपन लागो पाँय थकन लागे छतियां करन लागीं न्यारी धक धक॥ आई बसंत विरहौंकी मौज सों सब रंग रह्यो बनवारी छक छक ॥ मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो संग चलनको मैं रही तक तक३९३

राग गजल ।

मची है आज बंसीवट पै होली । खडा नट गैल में भर रँग कमोली ॥ गईथी मैं अभी दधि बेचवे को, झपट मोहन मली मुख मेरे रोली ॥ पटक मटकी झपट अंचल झटक कर, लपट दरकाई चूनर और चोली ॥ अजब नटखट है नँदका हँस मटक कर, लगा बातोंमें मेरी नीवी खोली ॥ ये लख मैं ढीठता उस नंदके की, कहा मैं क्यों जी यह क्या है ठठोली ॥ अटकतेहो जो हरदम हमसे मगमें, चलो अब माफ कीजे होली होली । नहींहूं दासी मैं कछु कृष्ण तेरी, बस अब हमसे न बोलो टेढी बोली ॥ ३९४ ॥

राग बरवा होरी ।

मोको रंगमें बोर डारीरे इस नंदके छैल विहारी । ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे-ऐसो ढीठ विहारी ॥ कहा करूं कहाँ जाऊं मोरी आली या बन में अब भई कुचाली चितवन हँसन फांस गल डारे ऐंचतहै मोरी सारी। जे कर पाऊं पकरूं वाको हौंभी कसर कछू ना राखों ब्रह्मदास हियमें अभिलाषों मुख मीडों गिरिधारी ॥ ३९५ ॥

राग होरी ।

छैल रँग डार गयो मोरी बीर । भीगगयो अति अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर ॥ घालत कुंकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर। ललित किशोरी कर बरजोरी मुखसों मलत अबीर ॥३९६॥

रंगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई । बरजत ननदी पहिरत निकसी अबहीं मोल लई ॥ नेक अनोखी गारी गावे या मति किनहूं दई । दयासखी या गोकुल बसके ऐसी कभूं नभई ३९७॥

राग परज ।

होरीरे मोहन होरी रंग होरी । काल्ह हमारे आँगन गारी दे आयो सो कोरी ॥ आय अचानक भुज भर पकरी गहि बैयां जो मरोरी । दया सखी यह निठुर नंदको कीनी मोंसे जोरा जोरी३९८॥

रंग होरी में प्रीतम पाया मेरा दाँव लगा । सुनरी सखी तोहिं सांची कहत हौं तैं मेरा लाल बताया ॥ बहुत दिनन पाछे मोरी सजनीसुहाग भाग मैं पाया । दया सखी या गोकुल बसके किया अपना मनभाया॥

राग जंगला ।

या मोहना मोहिं आन ठग्योरी । सखीको रूप धर्यो नँदनंदन आयो हमारी पौरी ॥ मैं जान्यो कोइ परम सुंदरी आई हमारी ओरी । धायके मैं चरण गह्योरी ॥ चरण पखार मंदिर लै आई हँस हँस कंठ लग्योरी । सुंदर वर्ण मधुर स्वर सजनी तब मेरा जिया वश भयो री ॥ प्रेम तन होरही बोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुंजनमें कर छल बल बहुतेरी । निपट इकेली मोहिं जान मेरो तन मन आन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नँदको री ॥ ऐसो री यह कुंज-विहारी याते कोउ न बच्योरी । सूरदास ब्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री ॥ जाने सभको री ॥ ४०० ॥

अनुरागलीला

राग खंमाच ।

दर्शन देना प्राण प्यारे । नंद लला मेरे नैनोंके तारे ॥ दीनानाथ दयाल सकल गुण नव किशोर सुंदर सुख बारे । मनमोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगारे ॥ ४०१ ॥

राग सोरठ ।

तोहिं डगर चलत का भयोरी वीर । कहूं पगकी पायल कहूं शिरको चीर ॥ भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर । तेरे मतवारन सम झूमत नयन । मुख भाषत है तू अति विरहके बैन ॥ मानो

घायल काहू ने करी हगन तीर ॥ मोसों नारायण जिन रख दुराव ॥ जो तू कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाव ॥ जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ४०२ ॥

राग पीलू ।

आली री तू क्यों रही मुरझाय । पनिघट गई यमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चंद्र उजारो टोना डार गयो । करो उपाय सखी अब मेरो ब्रजनिधि वैद मँगाय ॥ ४०३ ॥

राग रामकली ।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय । शूली ऊपर सेज पियाकी किसविधि मिलना होय ॥ घायल घायलकी गति जानै जिस तनुलागी होय । मीराके प्रभु गिरिधर नागर वैद समलिया होय ४०४

राग देश ।

नारी हू न जाने बैदा निपट अनारी रे । बूटी सभ झूठी परी औषध न कारीरे ॥ जाउ वैद घर अपनेको मेरे पीर भारीरे । यमुना किनारे ठाढी ओढ कसूमी सारीरे ॥ नंदजूके ढोटा मोहिं नयना भर मारी रे । गोकुल में बैद बसै साँवरो विहारी रे । वाहीको बुलायकें दिखाओ मेरी नारी रे ॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे ॥ ४०५ ॥

सवैया ।

काहेको बैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय जिन नारी गहोरे ॥
वह मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहो कैसे जियोरे ॥
चंदन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरोरे ॥
और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिलें सो इलाज करोरे ॥ ४०६ ॥

कवित्त ।

कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूं ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैं तो लीनो है अलोक लोक लीकन ते न्यारी हूं ॥ तन जाओ धन जाओ देव

गुरुजन जाओ जीव क्यों न जाओ नेक टरत न टारी हूं ॥ बृंदावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी पीत पटवारी वाकी मूरति पै वारीहूं ॥ ४०७ ॥

घर तजों वन तजों नागर नगर तजों बंसी वट तट तजों काहू पैं न लजहों ॥ देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसे तजों आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयोहै लोक बावरी कहत मोको बावरी कहेते मैं काहू ना बरजहों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजहों ॥ ४०८ ॥

गले तौंक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो गाढे बंधन बँधावो औ खिचावो काची खाल सों ॥ विष ले पिलावो तापै मूठ भी चलावो मांझीधारमें बहावो बांध पत्थर कमालसों ॥ बिच्छू लै बिछावो तापै मोहिं लै सुतावौ फेर आग भी लगावो बांध कापर दुसालसों ॥ गिरिसे गिरावो कालीनागसे डसावो हाहा प्रीति ना छुडावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४०९ ॥

सवैया ।

मोरपखा मुरली वनमाल लगी हियमें हियरा उमग्योरी ॥
ता दिनते निज वैरनको मैं बोल कुबोल सभी जो सह्योरी ॥
अबतो रसखान सों नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहोरी॥
और ते रंग रहो न रहो इक रंग रँगीले ते रंग रहोरी ॥ ४१० ॥

कवित्त ।

निज जानो वेद तेतो वादकी विदित होय जिन जानो लोक लोक लीकन पर लरमरो ॥ जिन जानो तप तीनो तापन सों तप तप पंच अगन संगले समाधि धर धर मरो ॥ जिन जानो योग तेतो योगी युग युग जिये जिन जानो जोत सोऊ जोत ले जरमरो॥ हों तो देव नंदके कुमार तेरी चेरी भई मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर कर मरो ॥ ४११ ॥

सवैया ।

सुंदर मूरति दृष्टि परी तबते जिय चंचल होय रहा है ॥

शोच सँकोच सभी जो मिटे और बोल कुबोल सभी जो सहाहै ॥ रैनि दिना मोहिं चैन न आवत नयनन ते जल जात बहाहै ॥ तापै कहैं सखी लाज करो अब लाग गई तब लाज कहा है ॥ ४१२ ॥

राग भैरवी।

लाग गई तब लाज कहारी। जे दृग लागे नँदनंदनसों औरन सों फिर काज कहारी॥ भर भर पियें प्रेमरस प्याले ओछे अमल को स्वाद कहारी। ब्रजनिधि ब्रज रस चाख्यो चाहै या सुख आगे राज कहारी ॥ ४१३ ॥

राग पीलू।

लागीरे लगनियां मोहना सों ॥ सुंदर श्याम कमल दल लोचन नंदजूको छैल छकनियां । कछु टोना सा डार गयोरी कैसे भरन जाऊँ पनियां ॥ कृष्ण दासकी प्यास मिटे जब निरखों गिरिके धरनियां ॥ ४१४ ॥

राग गिरिनारी सोरठ।

मैंने देखी री आज मोहन की हँसन । अधरन पै अद्भुत अरुणाई मोतियनकी लर पांति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे पीने लगे भर भरके पसन । नारायण तब सों मोहिं सजनी सुध न रही निज बदन वसन ॥ ४१५ ॥

राग कान्हरो।

आज ब्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हौं बावरी ॥ अधर रंग पान मुसक्यान जादू भरी ताहूपै चित हरन दृगनके भाव री ॥ कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गज चाल वश करनके चाव री ॥ निरखके रूप नारायण हरष्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँवरी ॥ ४१६ ॥

राग खट।

आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरख परम मंगल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तबहीं जबहिं नेक

हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्षत वदन गोपवर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैस हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ ४१७ ॥

मुकुट माथे धरे खोर चंदन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥ पीतपट कटि कसे कर्ण कुंडल लसे निशि दिना उर बसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी ले कनक दोहनी खिरक नेरे ॥ लाल लोचन बने ललित रस में सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्न से मग्न मनमें बेसेरे॥

राग विलावल ।

माईरी आज और काल्ह और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन ॥ दिन प्रति नई छबि वरणे सो कौन कबि नितही शृंगार बागे वरन वरन ॥शोभासिंधु श्याम अंग छबिके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग विश्वको मनहरन॥चतुर्भुज प्रभु श्रीगिरि-धारीको स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ।

माईरी आजको शृंगार सुभग साँवरे गोपालजी को कहत न बने कछु देखेही बन आवै ॥ भूषण बसन भांति भांति अंग अंग अद्भुत कांति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावै ॥ मकर कुंडल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावै ॥ कंठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरन छबि हरष निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि कुंज द्वार हित चितकी बात कहत जो तेरे जिया भावै ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी को स्वरूप सुधा पीवत नयनन पुट तृप्त हूं न आवै ॥ ४२० ॥

राग भैरवी ।

छबि आछी बनी बनवारी की । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलकां घूँघरवारी की ॥ मृदु मुसुकान आन नयनन की को बरणे गिरिधारी की । कृष्णदास युगल जोरी पर तन मन धन सभ वारी की ॥ ४२१ ॥

राग कान्हरा।

री हौं तो या मग निकसी आय अचानक कृष्ण कुँवर ठाढेरी अपनी पौर। दृष्टि हूं से दृष्टि मिली रोम रोम शीतल भई मन में दीखत कछु काम रौर ॥ लाल पाग लिपटी भाल परी री भुजन पर पान खात मुसकरात और किये चंदन खौर। सूरदास मदन मोहन बाँके बिहारी लाल मनमें आवत कब मिलूंगी दौर ॥ ४२२ ॥

राग सिंदूरा।

एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नंदजूके तहां देख्यो सुख और। इकले श्याम नईकी धज सों ठाढे भवनकी पौर ॥ रतन शृँगार बहार हँसनकी माथे केसर खौर। नारायण सो छबि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥ ४२३ ॥

राग कालिंगडा।

भवन ते निकसे नंदकुमार। पँचरंगी चीरा शिर सोहै चितवन पै बलिहार ॥ कानों में मुतियनको चौकडा गल फूलनको हार। नारायण जे आपहि सुंदर तिनको कहा शृँगार ॥ ४२४ ॥

राग विहाग।

सुपने में दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो प्यारे। रैनि दिना मोहिं कल न परत है तलफत जिया अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयनन में रही छाय। कृष्ण प्रिया छबि देख मनोहर विन दामन गई हौं बिकाय ॥ ४२५ ॥

राग देश।

हँसके मारी मेरो मन लैगयो बडी बडी आँखनवारो कारो ॥ भौंह कमान बान जाके लोचन मेरे हियरे मारे कसके। रेजा रेजा भयो री कलेजा मेरा भीतर देखो धसके ॥ यत्न करो यंतर लिख ल्यावो औषध ल्याओ घसके। रोम रोम विष छायरहो है कारे खाइयां डसके ॥ जोकोइ मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके। चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि क्यारीकरूं घरवसके॥

राग खंमाच ।

सुंदर मुख सुख सदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो । बारिक होय बीथिन सों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो ॥ लालने इक चतुराई कीन्हीं गेंद उछाल गगन मिस ताक्यो । बहुरो लाज बैरन भई मोको मैं ग्वारन मुख ढाक्यो ॥ कछू करगये प्रेम चितवन सों ताते रहत प्राण मद छाक्यो । सूरदास प्रभु सर्वस लैगये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥ ४२७ ॥

राग देश ।

अपने गृहसे निकसीं अबलासी दूजको चांद चढ्यो ॥ कोऊ कहै काहूकी सुंदर कोऊ कहै काहूकी दासी । आगे मिले नंदजूके नंदन मारत गेंद मचावत हांसी ॥ घूंघटको पट छूट गयो री दूज की होगई पूरणमासी ॥ ४२८ ॥

राग प्रभाती ।

मोर मुकुट बंसीवारे ने मन मेरा हरलीना । हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना ॥ मुझको देख मुसकात सांवरा चितवन में कछु टोना । विवस भई जल भरन बिसर गयो घड़ा धरणि धर दीना ॥ लोक लाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना । कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारस पीना ॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना ॥ ४२९ ॥

राग अडाना ।

हौंगई यमुना जल लेन माईहौं सांवरे से मोही । सुरँग केसरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कंठ कनककी दुलरी ढुलकत पीतांबर की खोही ॥ नान्हीं नान्हीं बूंदन में ठाढोरी बँसुरिया बजावे गावे मालाकरी मीठीतान ने तोला की छबि नेकहू न जोही । सूरश्याम सुर मुसक्यान छबि री अँखियन में रही तब न जानौं हौं कोही४३०

राग रेखता ।

मन हरलियोहै मेरो वा नंदके दुलारे । मुसकाय के अदासों

नयनोंके कर इशारे ॥ इक दृष्टिही में वाने जाने कहा कियो है । नहिं चैन रैन दिनमें वाके बिना निहारे ॥ चीरेके पेच बांके शिर मुकुट झुक रह्यो है । कटि किंकिणी रतन की नूपुर बजत हैं प्यारे । बेसर बुलाक सोहै गले मोतियोंकी माला । कंकन जडाऊ करमें नख चंद्रसों उजारे ॥ छबि देत आरसी में सुंदर कपोल दोऊ । बरछी समान लोचन नई सान पै सँवारे ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई । कानों में मोती बाले कुंडल हूं झलकें न्यारे ॥ लख श्यामकी निकाई सुध बुध सकल गँवाई । बौरी बनाय मोको कित गये बंसी वारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तवीज टोना । स्याने तबीब पंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगन ने जबसे व रूप देखा । तबसों भयेहैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥ ४३१ ॥

दिल ले गयो हमारो नँदलाल हँस्ते हँस्ते । बृंदाविपिन की कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते ॥ वह आगयो अचानक जूरेको कस्ते कस्ते । चित छुट पडा बदन पर बालों में फँस्ते फँस्ते ॥ मुशकल से बची नागिन अलकों से डस्ते डस्ते । प्यारीके सँग खडाथा वह सांवरा बिहारी । दृग कोर मोर मेरे सैनों जडी कटारी ॥ सुध बुध रही न तनकी सब भुलगई हमारी । यमुनाके तीर सुंदर जहँ फूली फुलवारी ॥ कछनी कमर से काछे सुंदर सलोना ढोटा । कस पीत बसन आछे कटि बांधे वह कछोटा ॥ गैयान हूके पाछे दृग देखनेमें छोटा । चितवनके बाण मारे सभ भांतिसे है खोटा ॥ गोकुलकी गैल मुझसे हँस पूँछे आ बिहारी । थी संग उसके सुंदर वृषभानुकी दुलारी॥क्याहंस कीसी जोडी आँखों लगी पियारी ।मैं होगई दिवानी जबसे वह छवि निहारी ॥ बृंदा विपिन कि गलियों दो चांद से खडेथे॥ मुसकाके करत बातें नयनों से दृग लडेथे ॥ मद रूप छवि छकेसे टलते नहीं अडेथे । सखियोंके यूथ केते बेहोश हो पडेथे ॥ आई ललित किशोरी ब्रजबाल हँस्ते हँस्ते ॥ कुंजोंमें लेगया छल गोपाल हँस्ते हँस्ते ॥ कछु जादूकी सी पुडिया पढ डाल हँस्ते हँस्ते ॥ वह करगयो बेदरदी बेहाल हँस्ते हँस्ते ॥ ४३२ ॥

सुंदर अनूप जोडी अति मनकी भावती । देखी मैं आज मगमें कुंजन सों आवती ॥ अँग अंग देत शोभा भूषण जडाऊ आली । नयनन में सोहै कजरा अधरन पै पान लाली ॥ प्रीतमके कांधे कर धर प्यारी अनंद सों । हँस हँसके करत बातें मुख ललित चंद सों ॥ पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजैं । नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजैं॥या भांति सों मगन ह्वै क्रीडा करत हैं दोऊ । नारायण रसिकजन विन यह रस न जानै कोऊ ॥ ४३३ ॥

राग देश सोरठ ।

राधा नंदकिशोररी सजनी जो मिले कुंजन में दोऊ री ॥ शीतल सुगंध तीर यमुनाके बोलत शुक पिक मोर । ज्यों तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सावन घन घोर ॥ रसिक बिहारी बिहारन दोउ मिल नीर क्षीर इकठौर ॥ ४३४ ॥

राग भैरवी ।

भलारे रँगीले छैला तैं जादू मोपैडारा । रसभरी तान सुनाय मुरली में मोह लियो प्राण हमारा ॥ तांडी आन मोरे जीयामें बस-गई जानत है जग सारा । बिट्ठल विपिन विनोद बिहारन इक पल होत न न्यारा ॥ ४३५ ॥

गजल ।

तैंने बंसी में जो गाया मेरा जी जानताहै॥सैकडों बंसी सुनी और हजारों ताने वह मजा फेर नहीं पाया मेराजी० ॥ नाथ ने कूदके नाथ लिया कालीको । श्यामला श्याम कहाया मेराजी० ऐसे भार को कौन उठावे मोहन ।डूबता ब्रजको बचाया मेराजी०॥जब द्रौपदी को चीर खींचा दुशासन ने । अंबरको ढेर लगाया मेराजी०॥कहांतक सिफत करूं करुणाकर तेरी। कृष्णदासके मन भाया मेराजी ०४३६।

याद आताहै वही बंसी का बजाना तेरा । छा गया दिल पर मेरे तानका लगाना तेरा ॥ जिस दिनसे दिलमें समाया क्यों नजर आता नहीं । मैं पता कैसे लगाऊं चोर का ठिकाना तेरा ॥खुशनुमा

आवाज शीरीं सुनके मायल दिल हुआ। अब कहूं लगता नहीं फिरताहूं दीवाना तेरा ॥ कानों में कुंडल शिर मुकुट जुलफें तेरी क्या खूब हैं। यह अदा जीसे न भूले झलकें दिखाना तेरा ॥ दाम में ऐसे फँसे ग्वाल और गोपी सभी । यह बयां किस से कहूं गउओं का· चराना तेरा ॥ नाग नाथन केशी मथन इंद्र का तोडा गरूर । सात वरसके सिन में गोवर्द्धन का उठाना तेरा ॥ हों गुनहगार रोशन मुद्दत से दरपै पडा । यह सिफत जाहिर जहां में पार लगाना तेरा ॥ ४३७ ॥

राग भैरव ।

श्रीकृष्णजीको ध्यान मेरे निशिदिनारी माई। माधुरी मूरत सोहनी सूरत चित्त लियोहै चुराई ॥ लाल पाग लटक भाल चिबुक बेसर कंठ माल कर्णफूल मंदहास लोचन सुखदाई । मोरपंख शीश धरे मोतिनको हार गरे बाजूबंद पहुँची कर मुद्रिका सुहाई ॥ क्षुद्रघंटिका जेहर नूपुर बिछिया सुदेश अंग अंग देखत उर आनंद नसमाई। मुरलीधर अधर श्याम ठाढे ब्रज युवती माहिं सप्त सुर-न तान गान गोवर्द्धन राई ॥ निरख रूप अति अनूप छाके सुरनर विमान वल्लभ पद किंकर दामोदर बलिजाई ॥ ४३८ ॥

साँवरे सों ध्यान मेरो निशिदिना री माई । मनके महल प्रीति कुंज तामें यादवराई ॥ कोमल चरण श्याम वरण नख शिख चख चोंहदी होत पाँयन पर पैजनी सो विधना ने बनाई। दाहने पद पदम ताते टेढो कर धरत आली ऐसे चरण दुखके हरण हैं सदा सुखदाई ॥ लालसी इजार तामें कंचनको तार सखी काछनी पच-रंगी तापै किंकिणि छवि छाई। गुंजमाल मुक्तमाल कंठ बनी कौस्तुभमणि पीतांबरकी चटक तामें दामिनि द्युति पाई ॥ बाजू-बंद पहुँची मुंदरी नगनको अति चमत्कार अरुण अधर मुरली मधुर मधुर सुर बजाई । कमल नयन कुंडल कांति गंडन प्रतिबिंब होत आनँद सों मुख सम्हार रह्योरी मुसकाई ॥ मोर मुकुट अति

चटकत घूंघरवारी अलक झलक केसरको खौर उमँग चली सुंद-रताई । कहै भगवान हित रामराय प्रभुको निहार श्री गुपाल श्री गुपाल रसना लव लाई ॥ ४३९ ॥

राग जंगला ।

बट तर सांवरो ठाढो । पीत दुकूल गले बिच सेली चंद्र चीर बाढो ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै फेंटा कस गाढो । पुरुषोत्तम प्रभु तुम्हरे मिलनको मोहित अति बाढो ॥ ४४० ॥

राग टोडी ।

जब ते मोहिं नंदनँदन दृष्टि परो माई । कहा कहूं वाकी छबि वरणी नहिं जाई ॥ मोरनकी चंद्रकला शीश मुकुट सोहै । केसर को तिलक भाल तीन लोक मोहै ॥ कुंडलकी झलक कपोलन पर छांई । मनो मीन सुरवर तजि मकर मिलन आई ॥ ललित भ्रुकुटि तिलक भाल चितवन में टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृगछौना ॥ सुंदर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभु वेष धरे रूप अति विशेखा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी ॥ क्षुद्र-घंटिका अनूप वरणी नहिं जाई । गिरिधर प्रभु चरण कमल मीरा बलिजाई ॥ ४४१ ॥

राग लावनी ।

सखि कैसे करूं मैं हाय न कछुवश मेरो । विन देखे सांवरो चंद्र दृगन में अँधेरो ॥ सखि ऐसो सुंदर नाहिं कहूं मैं सभ जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखि कठिन छैल को विरह आन मोहिं घेरो । सगरी निशि तारे गिनतहि होत सबेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आज वो रूप उजेरो । जबलौं जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौनंद द्वारपै जाय करूंगी मैं डेरो ॥ ४४२ ॥

राग काफी ।

बेदरदी तोहिं दरद न आवै । चितवनमें चित वशकर मेरो अब काहेको आंख चुरावै ॥ कब सों परी तेरे द्वारेपै विन देखे जियरा घबरावै । नारायण महबूब साँवरे घायल कर फिर गैल बतावै४४३॥

नयनों रे चितचोर बतावो । तुमहीं रहत भवन रखवारे बाँके बीर कहावो ॥ तिहारे बीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंह खावो । अब क्यों रोवतहो दइ मारे कहूं तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी बैठ द्वार पै दिनमें घर लुटवावो । नारायण मोहिं वस्तु न चहिये लेने हार दिखावो ॥ ४४४ ॥

बिन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चित हरन लाडिलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर बोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्री वृषभानु कुँवरिको चेरो ॥ ४४५ ॥

राग मलार ।

नहीं बिसरत सखी श्यामकी सुरतियां । हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन चंदसे बदन सों अति मृदु बतियां ॥ कुंडल झलक लख लगेना पलक नकवेसरकी हलन चलन गजगतियां । नारायण जब निरखूं लालको सफल नयन शीतल ह्वै छतियां ॥ ४४६ ॥

राग देवगंधार ।

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे । ब्रज बनितन कानन में लग लग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनतहैं कहत बनत नहिं प्रेम प्रीति केडोरे । श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन मांगों यह करजोरे ॥ ४४७ ॥

कमलसी आँखियां लाल तिहारी । तिनसों तक तक तीर चलावत वेधत छतियां हमारी ॥ इन्हें कहा कोउ दोष लगावत यह अजहूं न सम्हारी । श्रीविठ्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी ॥ ४४८ ॥

राग बिलावल ।

लाल तेरे चपलनयन अनियारे । नंदकुमार सुरत रस भीने प्रेम

रंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चकित चहूँ दिशि नव बर जोबन-वारे । मानो शरद कमल पर खंजन मधुप अलक घुँघरारे ॥ एजो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे । गोवर्द्धन धर जान मुकुट मणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ४४९ ॥

राग खमाच ।

तोरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे । रतनारे कज-रारे मीन मृग छौना वारे अंजना सँवारे खंजन वार डारे ॥ नंदके दुलारे मोह लीनो बंसीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे । कृष्ण दास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूं न टारे ॥ ४५० ॥

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजे में बरछी सी घायल कीनी ऐन । देखी अजब गजब तेरी चितवन मोनेकन नाहिं रुकैन ॥ युगल बिहारीके बिन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन बडे विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नंद यशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटत हैं मेटत कालको ताला ॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी बिरहों वाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढी कला चंद्रकी सकल जग वंदित है टेढी तान मोहतहै मन्मथके जालकी ॥ टेढी कमान बान लागत ही बेध जात श्रीपति न चूकें चोट टेढी करवालकी ॥ टेढी लकडीको कोऊ वन में न काटि सकै टेढी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी ॥ टेढी जरकसी भाल टेढी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढी मूरत गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढे सुंदर नयन टेढे मुख कहत वैन टेढो मुकुट बात टेढी कछु कहगयो ॥ टेढे घुँघुरारे बाल टेढी गल फूल माल टेढो बुलाक मेरे

चित्तमें बसै गयो ॥ टेढे पग ऊपर नूपुर झनकार करैं बांसुरी बजाय मेरे चित्तको चुरै गयो ॥ ऐसी तेरी टेढीको ध्यान धरै मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लैगयो ॥ ४८४ ॥

राग भैरव ।

देखोरी यह नँदका छोरा बरछी मारे जाताहै । बरछी सी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख बेदरदी मंद मंद मुसकाताहै । ललित किशोरी जखम जिगर पर नोन पुरी बुरकाताहै ॥ ४८५ ॥

राग कालिंगडा ।

अँखियां लागीं सामलिया प्यारे सों । जब बरज्यो बरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल लगरही सांझ सवारेसों । मधुरअली दरशन विन तरसत नेह लगा बंसीवारे सों ॥ ४८६ ॥

राग रामकली ।

लोचन भये श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उनहीं । उनको वदन विलोकत निशिदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललितत्रिभंगी छबि पर अटके फटके मोसों तोरी । सूरदास यह मेरी कीनी आपुन हरिसों जोरी ॥ ४८७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखि जैसी तैही टेक रह्यो । ज्यों मर्कट मूठी नहिं छांडत नलिनि सुवास गह्यो ॥ जैसे नीर प्रवाह समुद्रहिं मांझ बह्यो सो बह्यो । सूरदास इन तैसइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४८८ ॥

राग विहाग ।

ललित छबि निरखें अघात न नयन । रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

निधि सुखऐन । कृष्ण प्रिया छिन बिलम न कीजै कल न परै दिन रैन ॥ ४५९ ॥

राग विभास ।

अँखियन यह टेव परी । कहा करूं बारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहिं बिसरत मोहिं एक घरी । यद्यपि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुक जो रही वा रूप जलधि में प्रेम पियूष भरी । सूरदास गिरिधर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६० ॥

राग भैरव ।

आंखन में दुराय प्यारी काहू देखन न दीजिये । हिये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये । निर्मल प्रभु नंद नँदन निरख निरख जीजिये ॥ ४६१ ॥

राग विहाग ।

श्यामा मोरी आंखन बीच बसो लोक जानन कजरो । दुरत नहीं घूंघट पट उरझ्यो प्रेम प्रीतिको झगरो ॥ जित देखूं तित माधुरी मूरत पीत बसन बनमाल गरे । बलि बलि जाऊं छबीली छबि पर मदन गोपाल लला के ॥ वरज रही बरज्यो नहिं मानत दिन दिन को अगरो । सूर सुधा सम रूप श्यामको याही परचोधगरो४६२

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चांदसे मुख पर । छुटे बिखरे से बालोंको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई । जरा टुक नयन ऊंचे कर निहारोगे तो क्या होगा ॥ तुम्हारे होचुके वारी हमारे हो न हो प्यारे । भला मुखपान का बीरा जो धारोगे तो क्या होगा ॥ ललित किशोरी करजोरी हहा यह है विनय मोरी । तडफते मुझ बिचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ४६३ ॥

राग बरवा ।

सुंदर सांवरे सलोने ढोटा । तेरी सानूं डाढी लगन लागी हाथ लकुटी कांधे कमरी काछनी बांधे कछोटा ॥ निशि दिन ही लागो रहत गोपिन के पाछे भर भर पीवत छाछा महरीके ढोटा । पुरुषोत्तम प्रभुके निरखनको फिर फिर खावत प्रेमकी चोटा ॥ ४६४ ॥

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन बसियां । चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल केसरके तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां ॥ मुरली अधरान धरे गुंजमाल सोहे गरे हरी हरी कुंजन में संग लिये सखियां । अरजी जुगरामदास सुनिये महाराज श्याम निरख निरख नयननकी कोर मांझ रखियां ॥ ४६५ ॥

राग देश ।

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम दी कटारियां । सखी पूछें दोऊ चारे व्याकुल क्यों भैयां नारे रंगके रँगीले मोसें हग भर मारियां ॥ व्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भूल गैयां अजहूं न आये श्याम कुंज बिहारियां । यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछाती बँसिया बजावीं कान्हा भैयां मतवारियां ॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर लाल ध्याया तू तो मेरा प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारियां ॥४६६॥

ठुमरी ।

इस साँवलियाकी लटक चाल जियमें मोरे बसगई रे ॥ मुकुट पितांबर अधिक सुहावे ले मुरली घढ फूंक बजावे लटकारी नागिनसी लपटें तन मन डसगई रे ॥ बिन देखे नहिं परत चैन अब विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरश गईरे ॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुंजन परवश होय फँसगई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे ॥ ४६७ ॥

राग जंगला ।

कभी गली हमारी आवेरे मोरे जियाकी तपन बुझावरे नंदजूके

मोहन प्यारे लाला । तेरे सांवरे बदन पै कई कोटि काम वारे ॥ तेरीयां जुलफा दिलदियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरश पै लाल नयन तरसते हमारे ॥ पिया पिया करे पपीहरारे निशिदिन सो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आशा दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नहीं कोई । मोहिं लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई॥ जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवे विचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरामाधो नंददुलारे॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरे आजा । आंखें तरस रही हैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सतारे । लाखोंही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा॥तेरेही हेत मोहन छानी है खाक बन बन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूं मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा ॥ मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सताओ ऐ प्राण प्यारे राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह विचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४६९ ॥

राग जंगला झिंझोटी ।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा विहारी प्यारे । दर्श दिखाय निहाल करोगे सुंदर रूप उजारे प्यारे॥तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आंखनके तारे । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन धन सब वारे ॥ ४७० ॥

राग काफी ।

मिलना वे महबूब बिहारी । भोर भये वृंदावन कुंजों जाना होकर गली हमारी ॥ मृदुमुसकन सानूं दिल विच भांदी झमक चलन नूपुर धुन प्यारी । ललित किशोरी सांवरी सूरत घुंघरी अलकों पर बलिहारी ॥ ४७१ ॥

मिलनावे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिललीता तें नकबका दावरे। बांकी अदा चश्मों बसदी दीठा परे न दूजा ठांव रे॥ ललित किशोरी नूं लख समझावो एक नहीं मेरे मन भाव रे॥ ४७२॥

रागदेश।

मेरे नयनों का तारा है मेरा गोविंद प्यारा है॥ व सूरत उसकी भोलीसी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी बोल दृग बाण मारा है॥ व घूँघरवारियां अलकें व झोंकेवारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घर बार सारा है॥ दरश सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अबतो नहीं छूटे प्राण हरिचंद वारा है॥ ४७३॥

राग रामकली।

एक गामको बास धीरज कैसे कै धरों। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि यत्न करों॥ वे यामग नित प्रति आवत हैं हौं दधि लै निकरों। पुलकत रोम रोम गदगद स्वर आनँद उमँग भरों॥पल अंतर चलजात कल्पभर विरहा अनल जरों। सूर सकुच कुल कान कहां लग आरज पंथ डरों॥ ४७४॥

राग गौरी।

अबतो प्रगट भई जग जानी। वा मोहन सों प्रीति निरंतर क्यों न रहेगी छानी॥ कहा करों सुंदर मूरत इन नयनन माँझ समानी। निकसत नहीं बहुत पचहारी रोम रोम उरझानी॥ अब कैसे निर्वार जात है मिले दूध ज्यों पानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी॥ ४७५॥

राग काफी।

या साँवरे सों मैं प्रीति लगाई। कुल कलंक ते नाहिं डरोंगी अवतों करों अपने मन भाई॥बीच बजार पुकार कहूं मैं चाहे करो तुम कोटि बुराई। लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे

चट आई ॥ बिनदेखे मन मोहनको मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुख-दाई ।नारायण तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई॥४७६॥

राग रामकली ।

मेरे जिया ऐसी आन बनी । बिना गुपाल और नहिं जानूं सुन मोसों सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हीरा एक कनी । मन बच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामीके कारण तजी जात अपनी ॥ ४७७ ॥

राग सोरठ ।

मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई । जाके शिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही । तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई ॥ छाँड दई कुलकी कान क्या करैगा कोई । संतन सँग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ अबतो बात फैल गई जाने सब कोई । अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनी होसो होई ॥ ४७८ ॥

राग बरवा ।

मैं गिरिधर सँग राती ग्वैयां ॥ पँचरंग चोला रँगादे सखी मैं झुरमट खेलन जाती । ओही झुरमट मेरो साँई मिलेगा खोल तनी गलगाती॥चंदा जायगा सूरज जायगा जायगी धरन अकाशी । पवन पानी दोनोंही जायँगे अटल रहे अविनाशी ॥ सुरत निरत का दीउडा सँजोले मनसा की करले बाती । प्रेमहटी का तेल मँगाले जग रह्या दिन ते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती । मेरे पिया मेरे माहिं बसत हैं ना कहूं आती न जाती ॥ पीहरे बसूं ना बसूंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी । ना घर तेरा ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ॥ ४७९ ॥

राग सोरठ ।

रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी । जबलग कंचन कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥ लोक लाज कुल कान जगतकी बहाय दीनी

जैसे पानी ॥ अपने घरको परदा करले में अबला बौरानी । तरकश तीर लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी ॥ मीराप्रभुजीके आगे नाची चरण कमल लपटानी ॥ ४८० ॥

राग जंगला ।

मैं नूं बरज न भोलडी मां पीया नाल मैं रत्ती यां ॥ ना तकीया ना आसरा माए ना कोई राह गली । मैं शौहर ढूंडा आपना माए कर कर बांहिं खली ॥ साई फूल गुलाब दा मेरी झोलडी टूट पया । बेसर भोले सुंघया मेरे रोमरच गया ॥ शाह सरफा मींहदी रंगुली माए लाई कुल्ह जहान । इकनां नूं रंग चढ गया इक रह गए अमना मान ॥ ४८१ ॥

राग विहाग ।

मन अटक्या बेपरवाहे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिलया लोडे मूरख लोक असानूं मोडे मेरा हरदम जांदा आहे नाल ॥ मुल्लां काजी नमाज पढावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूं की इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इशक कमावे जितबल प्यारा उतेबल जावे बुल्लेशाहजामिल तू अलाहे नाल॥

राग पहाड ।

मैंनू हरदम रहिंदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तैं कीता असांवल फेरा हार शृंगार पया भट मेरा सीने रडके सांग गुझडा इशक प्यारे दा ॥ रल मिल सैयां मारन बोली ओह मेरा साहिब मैं ओहदी गोली रखदींहां जान पछान जामिन हशर दिहाडेदा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना माही आया साहब आप बनके रूप सतारेदा ॥ मीरांशाह विभूति रमावां सांवरे दे दर अलख जगावां ओही है सिरताज आजज नीच नकारे दा॥ ४८२ ॥

राग देवगंधार ।

बसे मेरे नयनन में नँदलाल । सांवरी सूरत माधुरी मूरत

राजिव नयन विशाल ॥ मोरमुकुट मकराकृत कुंडल अरुण तिलक दिये भाल । अधरन बंशी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वनमाल ॥ बाजूबंद अभूषण सुंदर नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदन मोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल ॥ ४८४ ॥

बसे मेरे नयनन में दोउ चंद । गौर वर्ण वृषभानु नंदनी श्याम वरण नँदनंद ॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँद कंद । जय श्रीभट्ट युगल रस वंदों क्यों छूटे दृढ फंद ॥ ४८५ ॥

राग परज ।

या ब्रजमें कछु देख्योरी टोना । लेमटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नंदके छोना ॥ दधिका नाम बिसर गयो प्यारी लेलेहुरी कोऊ श्याम सलोना । वृंदावनकी कुंज गली में आंख लगाय गयो मनमोहना ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुंदर श्याम सुघर रस लोना ॥ ४८६ ॥

राग मलार ।

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं । दधिको नाम श्यामसुंदर वन मुख चढयो ब्रजबालहिं ॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहिं । उफनत तक्र चहूं दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं ॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं । सूरश्याम बिन और न भावत या विरहिन बेहालहिं ॥ ४८७ ॥

राग भैरव ।

नयननकी कोरैं कोऊ लेहै । है कोइ ऐसी रसिक रँगीली प्राण निछावर देहै ॥ नूतन मधु मैं मेल लेआई छुवत खुमारी ऐहै । ललित किशोरी तताछिन जियरा टूक टूक है जैहै ॥ ४८८ ॥

राग बरवा ।

हमीं को प्यारे दरश दिखायदे ॥ लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुट की छेयां ॥ मोहन प्यारे नंददुलारे तुम लीजो कांधे धर उनको ॥ सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहिं इन मोहनकी ॥

हमीं को० । हौं बृंदाबनजात हती शिर धर मटुकी माखन की । बैयां आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसकाय घरको सरकी ॥ हमींको० ॥ यह मटुकी अनवेध मोतिनकी मोल जो लागे नंद यशोदा दोऊ बिकैंगे ॥ सूरदास कहा ब्रजको बसबो नित उठ मांगत दान ॥ हमींको० ॥ ४८९ ॥

राग विहाग ।

तुम्हैं कोऊ टेरतहैरे कान्ह । गोरी सी भोरी थोर दिनन की वारी सी वैस उठान ॥ छूटी अलक लाल पट ओढे नागरी परम सुजान । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश विन धीर धरत नहिं प्रान॥४९०॥

राग गौरी ।

ग्वारन क्यों ठाढी नँद पौरी । बेर बेर इत उत फिर आवत विजया खाय भई बौरी ॥ सुंदर श्याम सलोने से ढोटा उन दधि लेन कह्यो री । हमको कह गयो नेक खडी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥ नौखल धेनु नंद बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री । जोबन माती फिरत ग्वारनी तैं मेरो लाल ठग्यो री ॥इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री । परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो विक्यो री ॥ ४९१ ॥

राग जिला ।

श्रीवृंदावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है । राधा मोहन छबी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है ॥ कालिंदी जलपान करावे सो उपकारी सारा है । ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियों का तारा है ॥ ४९२ ॥

राग देश ।

नीको लगे राधावर प्यारो । मोर मुकुट पियरो पटरा है लकुटी कर मतवारो ॥ रोकत गैल छैल अलबेलो नटवर वेष सँवारो । ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो ॥ ४९३ ॥

राग खेमटा ।

सखी राधावर कैसा सजीला । देखोरी गोइयां नजर नहीं लागे

कैसा खुला शिर चीरा छबीला ॥ वार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला । हरीचंद मिल लेहो बलैयां अँगुरिन कर चटकाय चुटीला ॥ ४९४ ॥

राग देश ।

दंपति दर्पण हाथ लिये । निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गल बाहिं दिये ॥ ललित किशोरी मदन तरंगें पर्श अंग सरसात हिये । छिनहूं यह छबि जिन न विलोकी कहा कोटि शत कल्प जिये ॥ ४९५ ॥

राग देवगंधार ।

निरख सखि चार चंद्र इक ठोर । बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूर सुताकी ओर ॥ द्वै विधु नील श्याम घन जैसे द्वै विधुकी गति गौर । ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर ॥ शशि शशि संग प्रवाल कुंद अलि तहँ उरझ्यो मन मोर । सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगलकिशोर ॥ ४९६ ॥

राग खेमटा ।

तू मेरा मनमोहा सामलिया । भौंह कमान तान कानन लौं नयन बान हँस मारे छलबलिया ॥ ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरे हँसन कर डारे बेकलिया । जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया ॥ ४९७ ॥

राग रेखता ।

लगाहै इश्क तुम सेती निबाहोगे तो क्या होगा । मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा ॥ हुसन चश्मोंके प्यालेभर पिलाओगे तो क्या होगा । चमन विच आन कर मुखडा दिखा ओगे तो क्या होगा ॥ भरम धर्ता है कुल आलम हँसाओगे तो क्या होगा । सजन तुमबिन तड़फता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा ।

अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा । जिगरके दर्द की दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक गोविंद सीने से लगाओगे तो क्या होगा ॥ ४९८ ॥

लावनी ।

हम तेरे इश्क में श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमैं तू सनम खुले पट घटके ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहिं भटके । सब दहिशत दिलकी निकल गई छट छट के ॥ कई लाख बजाके सनम दिये तूने झटके । पर गिरे न हरगिज कदम पकड हट हट के ॥ कइ बार गया शिर तेरे इश्क में कटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फांद जानकर लटके । तब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ ४९९ ॥

गजल ।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तड-पता छोडकर तेगे कजाके हाथ क्याआया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा । भला पूछे कोई उस महलकाके हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई बालाई बाला उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खून दिल चाहाथा मैंने उसके पाऊं से । वले इस पेश कदमी से हिनाके हाथ क्या आया ॥ फिरा शहरो बिया बां तालबे दीदार नारायण । बिठाया उसको परदे में हयाके हाथ क्या आया ॥५००॥

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखि आज वा वनमें । बिना वा रूपके देखे विरहकी दौ लगी तनमें ॥ न कल पडतीहै बेकल को न जी लगता है बिन जानी । भई फिरती हूं योगिन सी सरे बाजार गलियन में ॥ करूं कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूंगी । मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आंगन में ॥ नहीं कुछ गर्ज दुनिया से न मतलब लाज से मेरा । जो चाहो सो कहो

कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायन । जो सूरत का है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें ॥

राग नट ।

कान्हर कारो नंददुलारो मोनयननको तारो री । प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री ॥ दृगमें राजत हिय में छाजत एक छिना नहिं न्यारो री । मुरली टेर सुनावत निशि दिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरण कमल मकरंद लुब्ध है मन मधुकर गुंजारो री । रस रँग केलि छबीले प्रभु सँग हित सों सदा बिहारो री ॥

राग भैरव ।

प्यारा नयना लगाय छिप जामदा । यादतां रहिंदी हरदम तेरी मुखडा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जीया तर्सामदा ॥ जबते लग्न लगीहै मनमें गृह अँगना न सुहामदा । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को मन बिच क्योंना बस जामदा ॥ ५०३ ॥

राग देश ।

मन मोह लिया श्यामने बंसीको बजाके । बेखुद किया दिल-दार ने जुलफोंको दिखाके ॥ पट पीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया । चलते हैं लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त किया दममें ब्रजनारि को मोहन । मुरलीके साथ किंकिणी नूपुर को बजाके ॥ कुर्बान सनम् तुझ पै दिलो दीन हमारा । राखो ललित किशोरीको गरेसे लगाके ॥ ५०४ ॥

ठुमरी ।

कोई दिलबर की डगर बताय दे रे । लोचन कंज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदेरे ॥ जाके रंग रँग्यो सभ तन मन ताकी झलक दिखायदे रे । ललित किशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलायदे रे ॥

राग कान्हरो ।

श्याम भुजाकी सुंदरताई ॥ चंदन खौर अनूपम राजत सो छबि कही न जाई ॥ अति विशाल जानूं लौं परसत इक उपमा मन आई ।

मनो भुअंग गगन सों उतरयो अध मुख रह्यो झुलाई ॥ रत्न जडित पहुँची कर राजत अँगुरी सुंदर भारी । सूर मनो फणि शिर मणि सोहत फण फणकी छवि न्यारी ॥ ५०६ ॥

राग सारंग ।

जाको मन लाग्यो गोपाल सों ताहि और नहिं भावै । लेकर मीन दूध में राख्यो जल विन सचु नहिं पावै ॥ जैसे शूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावै । ज्यों गूंगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहू बतावै ॥ जैसे सरिता मिली सिंधु में उलट प्रवाह न आवै । तैसे सूर कमलमुख निरखत चित इतउत न चलावै ॥५०७॥

राग देश ।

गौर श्याम बदनारविंद पर जिसको वीर मचलते देखा । नयन बान मुसक्यान संग फँस फिर नहिंनेक सँभलते देखा ॥ ललित किशोरी युगल इश्क में बहुतों का घर घलते देखा । डूबा प्रेम सिंधु का कोई हमने नहीं उछलते देखा ॥ ५०८ ॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान। सोतो भई घायल ताही छिन बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज तडफत मीन समान । नारायण भूली सुध तनुकी बिसर गयो सब ज्ञान५०९

राग काफी ।

राधारमण मनोहर सुंदर तिनके सँग नित रहते हैं । छके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं ॥ चितवन हँसन चौट दशनन की निशि दिन हिय पर सहते हैं । ललित किशोरी करैं न ओटै फरी नहीं कर गहते हैं ५१० ॥

राग धनाश्री ।

सभसे ऊंचो प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूठे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेम के वश नृप सेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसू यज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ उठाई । प्रेमके वश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गये

ठकुराई ॥ ऐसी प्रीती बढी बृंदावन गोपिन नाच नचाई । सूर कूर इस लायक नाहीं कहँलग करौं बडाई ॥ ५११ ॥

कवित्त ।

चढे गजराज चतुरंगिनी समाज सह जीत क्षितिपाल सुरपाल सों सजत हैं ॥ विद्या अपार पढ तीरथ अनेक कर यज्ञ और दान बहु भांति सों करत हैं ॥ तीन काल में नहाय इंद्रियों को वश लाय कर संन्यास विषय वासना तजत हैं ॥ योग और जप और तप को अनेक करैं विना भगवंत भक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१२ ॥

चाहे तू योग कर भ्रुकुटी मध्य ध्यान धर चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार ले ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप रह्यो ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही बखान कर मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ॥ जौलों तोहिं नंदको कुमार नहीं दृष्टि परे तौलों तू भलेही बैठ ब्रह्मकोविचारले ॥

सवैया ।

चारोही वेद पुराण अठारहो चौंसठ तंत्रके मंत्र विचारे ॥
तीन सौ साठ महाव्रत संयम मंगल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन मैं हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोंही लोकनके सगरे फल मैं हरि नामके ऊपर वारे ॥ ५१४ ॥

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलि में । ताके पद पंकज की रेणुकी बलि में ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवंता । जाको निशि बासर रहै कृष्ण नाम चिंता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूं न बिसरिये । कृष्ण नाम लेले भवसागर को तरिये ॥ श्री गोवर्द्धन धरन प्रभु परम मंगलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५१५ ॥

राग माँझ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी। धूड तिन्हांदे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइयेजी॥ दुर्मति दूर करे निहकेवल शिव घर बासा पाइयेजी। दुनीदास हर साधु संगति मिल निर्मल महल समाइयेजी॥ ५१६॥

राग आसा।

हर हर हर हर हर हर हरे॥ हर सुमिरत जन बहु निस्तरे॥ हरि के नाम कबीर उजागर। जन्म जन्मके काटे कागर॥ जन रमदास राम सँग राता। गुरूप्रसाद नरक नहिं जाता॥ गोविंद गोविंद संग नामदेव मन लीना। आठ दामको छीपरो होयो लाखीना॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरा। नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया। हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तन में गिनिया॥ रामदास अधम ते बाल्मीकि तिन त्यागी माया। परघट होय साध संग हरि दर्शन पाया॥ यह विधि सुनके जाटरो उठ भक्ती लागा। मिले प्रत्यक्ष गुसाइयां धन्ना बडभागा॥ ५१७॥

राग मलार।

प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई। प्रेम भक्ति कर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई॥ कुलवंता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारचो। जाय विदुरके भाजी अरपी जात न जन्म विचारचो॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना। धन्ने जाटके शौच न काई होय प्रगट दुध पीना॥ ऊंचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मंदिर धावे। महा कुचील भील दे कर ते ले जूँठे फल खावे॥ जाय पंडे सब आगे बैठें ना किसे देत दिखाई। नामदेवको देहरा फेरचो लीनो कण्ठ लगाई॥ पारब्रह्म पूरण अविनाशी सब घटकी मति जानै। दुनीदास प्रभु भक्त वछल है कपट हेतु नहिं मानै॥ ५१८॥

राग कान्हरा।

माधव केवल प्रेम पियारा। गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहु जो जाननहारा॥ व्याधाचर्ण अवस्था ध्रुवकी गज ने शास्त्र कौन विचारा। भक्त विदुर दासी सुत कहिये उग्रसेन कछु बल नहिं धारा॥ सुंदर रूप नहीं कुब्जाको निर्धन मीत सुदामहुँ तारा। कहँलौं वरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा॥ सुन प्रभु सुयश शरण हौं आयो मोसे दीनको काहे बिसारा। भक्त-राम पर वेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा॥ ५१९॥

राग जंगला काफी।

मन मानेकी बात नहीं कछु जातिको कारन॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद। गति पाई जिन यशु-मति जैसी भये भुवन विख्यात॥ वाल्मीकि रयदास विदुर औ केशव कबीर किरात। सैन भक्त और सदन कसाई कहु इनकी क्या जात॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात। रसिक नाथ प्रभु इक रस साँचो भाव भक्ति पतियात॥ ५२०॥

राग जिला झिंझोटी।

गोपी प्रेमकी धुजा। जिनन गुपाल किये वश अपने उरधर श्याम भुजा॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव संत सराहीं। भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अति पुनीत जग माहीं॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहीं। श्वपच पुनीत दास परमा-नँद जो हरि सन्मुख जाहीं॥ ५२१॥

राग विहाग।

प्यारो पैये केवल प्रेम में। नहीं ज्ञान में नहीं ध्यान में नहीं करम कुल नेम में॥ नहिं भारत में नहिं रामायण नहिं मनु में नाहिं वेद में॥ नहिं झगरे में नहीं युक्ति में नहीं मतनके भेद में॥ नहिं मंदिर में नहिं पूजा में नहिं घंटा की घोर में। हरी-चंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोर में॥ ५२२॥

मुँदरियालीला.

ठुमरी।

माथेपै मुकुट श्रुति कुंडल विशाल लाल अलक कुटिल सो अलिन मद गंजनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट अंग सो विराजै द्युति वैजनी ॥ दिये गलवाहीं प्रिया प्रीतम विहार करैं अति अनुराग भर आई नई द्वै जनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मंद मंद बाजत गोविंद पायँ पैंजनी ॥५२३॥

राग कान्हरा।

कहां करते मुँदरिया डारी। मैं वलि जाऊं बताय किशोरी तैं कबते न निहारी ॥ आवतहैं भुज अंशन दीने एहो छैल विहारी। जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी ॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी। वृंदावन हित रूप दरश पडी लाल फेंट जब झारी ॥ ५२४ ॥

राग प्रभाती।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको। हाथकी अँगूठी लीनी तोरा लीनो पांयको ॥ माथेको शिरपेंच लीनो रतन जराय को। गाम तो बरसानो कहिये श्री सुखधाम को ॥ लालजी को सासरो श्रीराधेजू को माय को। लेके तो भाग आई फेर नहिं पायगो। सूरश्याम मदन मोहन नयो गढवायगो ॥५२५॥

राग आसावरी।

मोहनि रूप बनायो हरि बाना। बाहिं बरा बाजूबँद सोहे छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा लै दर्पण कान्हा मन मुसकाना। माय यशोदा यों उठबोली तू क्यों भयो जनाना। मोहिं छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलबेको वरसाने मोहिं जाना ॥ बरसानेकी कुंज गलिन में कान्हा फिरे दिवाना। भानराय की पौंर बूझके काहू गूजरिया सों जाय बतराना ॥ ५२६ ॥

राग दादरा ।

तुम या ग्राम कहांरहो आली । हम कबहूं देखी न सुनीहै यह शोभा छबि रूप निराली॥नख शिख लौं शृंगार मनोहर अधर रची पानन की लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो बीच बिचाली ॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बडो छलिया सखि बारूकी भीति उठावतहै ॥
करतोरतहै नभ की तरियाँ चट चंदमें फंद लगावत है ॥
जहां पौन नजाय सकै मुरली धुन की तहां दूती पठावत है ॥
कहुँ चोर कहूँ दधिदानी बने कहुँ शाह लली बनिआवत है ॥५२८॥

कवित्त ।

कौन रूप कौन रंग कौन शोभा कौन अंग कौन काज महाराज त्रिया वेष कीयो है ॥ नाकहूमें नत्थ हत्थ चूरिन भरे हैं लाल काननमें कर्णफूल बेंदी भाल दीयोहै ॥ चंद्रहार उर बिराजै चंपकली कंठसाजै मुकुटको उतार ओढ चूनरी को लीयोहै ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख खिल खिल खिल हँसत राधे अँचरा मुख दीयो है ॥ ५२९ ॥

छन्न.

मालिनलीला.

राग कालिंगडा ।

प्यारी इक मालिन पौर तिहारी ॥ टेक ॥ रंग साँवरो वा मालिन को नील मणिन अनुहारी । ठाढी है वृषभानु पौरिपै पूछत नाम दुलारी ॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर बेसरकी छबि न्यारी । चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री ॥ यह सुनके वृषभानु नंदनी बोली तब मुसकाई । ले आवो तुम वा मालिनको कैसी है वह आई ॥ लै आज्ञा प्यारीकी तबहीं सखी वेग उठधाई ।·चलरी मालिन याद करी तू दास चरण बलिजाई ५३०

मालिन मधुभरे नयन रसीले ॥ टेक॥ कहो कौन है तात तुम्हारो

कौन तुम्हारी माई । क्या है सुंदरि नाम तिहारो कौन गाम ते आई ॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई । श्याम सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई ॥ तुम्हरो रूप देख मन उमग्यो सुन मालिनकी जाई । हम लेंगी सभ वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई ॥ चंपाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई । सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई ॥ कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई । कौन बतायो नाम हमारो किन यह ठौर बताई ॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है अरु तुमरी ठकुराई । राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी जाई ॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई । फूलन हार बने अति सुंदर और कहो क्या लाई ॥ सुंदर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगंध मिलाई । जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी बेर भई मोहिं आई ॥ बेर बेर तू जनि कर मालिन देहौं माल अघाई । हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण बसन मँगाई ॥ बडे घरनकी मालिन हूं मैं धनकी रुचि कछु नाहीं । मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई ॥ फूल फुलेल कि बेचन हारी कहा अधिक इतराई । लेहु लेहु फूल करत कुंजन में हमपै करत बडाई ॥ सुकृत जन्म के फल ते भामिनि यह मेरे फूल सुहाई । पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल नपाई ॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनिराई । ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन बाग सों लाई ॥ त्रिभुवन पति जगदीश दयानिधि नंद कुँवर यदुराई । वा मोहनके बाग सों प्यारी नवल फूल चुनलाई ॥ यह सुनकै वृषभानु नंदनी तन मन सुख अधिकाई । आज कि रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई ॥ सांची प्रीति देख प्यारेकी रैन की शैन ठहराई । यह छबि निरख मगन भये सुर नर दास चरण बलिजाई ॥ ५२१ ॥

मनिहारीलीला

राग गौरी ।

मिठ बोलनी नवल मनिहारी । भौहैं गोल गरूर हैं याके नयन

चुटीले भारी ॥ टेक ॥ चूरी लख मुख ते कहै घूंघट में मुसकात । शशि मनु बदरी ओट ते दुर दर्शत यहि भांत ॥ चूरो बड़े जो मोल को नगर न गाहक कोय । मोफेरी खाली परी आई घर घर सभ जु टटोय ॥ चुरी नील मणि पहरबे नाहिन लायक और । भागवान कोइ लैचलो मोहिं दीसत है इक ठौर ॥ जिहिं नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय । वस्तु घनेरी गांठ में विन गाहक सो पछिताय ॥ रंग सांवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप । मुदित होत सभ देखके री यह पुर गोपी गोप ॥ काहू पै न ठगायहै तेरी बुद्धि विशाल । लाभ अधिक कर जायगी भटू बेच बडे घर माल ॥ मेरे मालहिं लेहिं सो जो मुहँ मांग्यो देय । ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय ॥ बेचन हारी काँच की कहा अधिक इतराय । पौर भूप वृषभानुकी लाखनकी वस्तु विकाय ॥ पुर बजार पेखे नहीं है गर्वीली नार । व्यापारिन अबहीं बनी कछु बात न कहत विचार ॥ तोहिंलै चलिहों नृप घरै क्यों जिय होत उदास । लेहिं लाडिली राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ यह सुनके ठोढी गही सुखित भई अँग अंग । भलो जो तेरो मानहों लैचल अपने संग ॥ लैगइ पौरी भानु की बात कही समझाय । गुणन प्रगट कर साँवरी तोहिं लैहैं वेग बुलाय ॥ हौं जो मुन्यारी दूरकी आई राजद्वार । बेचों चूरी चूरला कोउ बोल लेहु रिझवार ॥ सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर मांझ । प्रात चूरी पहराइये अब बसरह पर गइ सांझ ॥ अलभ लाभसों पायके हिय जिय पायो चैन । रूखे से मुख सों कहै गौं गर्जिन रच रच बैन ॥ पर घर बसत जुबलिगई खिझै सकल परिवार । बडे भोर ही आयहों मैं यह मन कियो विचार ॥ एक बार भीतर जुचल प्यारी सों बतराय । भली लगै सो कीजियो लगलाडली के पाय ॥ चली जो झूमत झुकतसी बेनी रुरकत पीठ । घूंट अमी को सो भरचो जब मिली दीठ सों दीठ ॥ बहुत हँसी नव नागरी देखी परम अनूप । कै बेंचत चूरीसखी तू कै बेचत है रूप ॥ मोहिं खिलौना जिन करो राजकुँवरि बलि जाउँ । तनथाक्यो बासरगयो

मोहिं फिरत फिरत सब गाउँ ॥ मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गात । थाकी कौन बतावही कछु ऊपर की सी बात ॥ हौं तो सूधे जीयकी घट बढ समझत नाहिं । तुम्हैं कछू दरइयो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहिं ॥ रँग पहराऊं चूरला चोखो बणिज कमाउँ । चोखीप्रीति जु आदरों नहिं कपटी जन पतियाउँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे देतहौं सांच । हौं भूखी सन्मानकी नहीं सहों झूंठकी आंच ॥ आउ आउ री निकट तू देखों बदन निहार । एक बातहीमें चिरी तू गुस्सा हिय ते डार ॥ शीतल हो व्यापारिनी तेरो ऐसो काम । तमक नई यह बैस की तज तोहिं फिरनो सब धाम ॥ हौं आई तक राज घर करन प्रथम पहचान । मणि लीयेही विन करी यह हांसी होय हितकी हान ॥ कासों है तैं हित कियो अबलग परी न दृष्टि । बात कहत उरझै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ अब अपनी कर हित कहो भूषण युवति समाज । सभ विधि पूरण होय तो प्यारी मोमन बांछित काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार । काढ चुरी अति सोहनी पहराई सुघर मुन्यार ॥ भुजा कढत मुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसंत । मन छुट चल्यो जु हाथते धीरज बांधत गुणवंत ॥ जबही करसों कर गह्यो शिव अरि कियो प्रताप । तनु गति बेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तुम लायक चूरी कुँवरि भूल जुआई गेह । निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यों कांपतिहै देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्तर देह जुकौन । रूप अमल तापै चढ्यो लाल क्यों न गहै मुख मौन ॥ ललता कह यह प्रेम है कोऊ परस्यो रोग । यत्न करो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग ॥ परम गुणीलो नंदसुत मैं देख्यो टकटोय । अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय । प्रेम गहर ते काढके सखी पुनि पुनि लेत बलाय ॥ यश दीयो सभही कुलन वनिता रूप बनाय । कौन बडाई कीजिये यश वर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक रूपी खेलमें रजनी बाढी शोभ । रासिकन हिये बढावनी यह नवल प्रेमकी

गोभ ॥ युगल प्रीति गाढी निरख भयो हिये अहलाद । वरणी लीला मोहनी यह श्री हरिवंश प्रसाद ॥ बलहित रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त । वृंदावन हित भीजहै दंपति रस ताको चित्त॥५३२॥

विसातनलीला.

राग परज ।

गली गली में कहत फिरत कोइ लालहिं लेहु मुल्याई । यों कहत विसातन आई ॥ टेक ॥ जबहिं गई वृषभानु पौर तब ऊंची टेर सुनाई । श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई ॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई । तनु ढाँपे पुनि घूंघट मारे लाज जुभीजत जाई ॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई । कौन अपूरव वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई ॥ कौन नगर तू बसत विसातन अबहीं दई दिखाई । तोसी भटू बडे घर चहिये धनि विधि जिन जुबनाई ॥ सबही भाँति ऊजरी तनुकी किहि मुख करों बडाई । तोहिं बसाऊँ राजद्वार जो मनमें होय सचाई॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई। है लघु बैस कौन पै सीखी परखन की चतुराई ॥ काँख माहिं ते गांठ काढ कर श्यामजू लरी गहाई । बडे मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई॥ जो जो रुचै वस्तु सो राखो बडे गोपकी जाई। औरो बात कहत सकुचतहों प्रीति जुदेख बिकाई ॥ नाना विधिकी डिबिया छल्ला आरसी मणिन जडाई। श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेंट चढाई ॥ तुम नृप अति लडी हो जुविसातन देखत कृपा अघाई। हौं भूखी याहीकी चाहों द्रव्य न बहुत कमाई ॥ श्याम पोतको गुंजा सुन्दर मो घर धरयो दुराई । मोसों प्रीति करै जो भामिनि ताहि देहुँ पहराई ॥ हौं हित करों वचन मन क्रम कर रह मोपास सदाई । प्राणनहूंते प्यारी मोको भाग्य बडे ते पाई ॥ बटुवा खोल दिखाई बेंदी नागरि के मन भाई । सुघर बिसातन अपने करलों माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरी ते दर्पण काढ्यो मुख शोभा दरशाई । उदित भालपर

मनु सुहाग मणि लख श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंक भर ताही बैठी मन खोल जबै बतराई । परशत अंग दशा बदली तब प्यारी मन में धरी भुराई ॥ बूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दबाई । तबलग परगई सांझ कहूं मोहिं बासो देहु बताई॥विसर न सकत प्रीति अति बढगई व्यारू संग कराई । रजनी गुण उघरे जब शय्या अपने ढिग पौढाई ॥ जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जान परी लँगराई । वृंदावन हित रूप छद्म तज सुखकी लब्धिमनाई ॥ ५३३ ॥

योगिनलीला.

राग देश ।

देखियत गुणन गरूर तेरो अति चटकीलो रूप । छकन और हीसी लगत काहू सुता बडेकी भूप ॥ टेक ॥ चलरी चल वर लैचलों तूकहदे मनकी लाग । योग लियो किहि कारणे दृग दरशत है अनुराग ॥ श्रीराधा नृप लाडिली मन आवत भाषत सोय । अंत लेत तपसीनको नहिं योग खिलौना होय ॥ तन साधैं मन वश करैं हम बन फल करैं अहार । क्यों ग्रेहिनके घर बसैं जिन तर्के तज्यो संसार ॥ भोजन भूखी हौं नहीं कछु मन न बासना और । प्रीति सहित आदर जहां हम बिलमैं ताही ठौर ॥आदर देहों अधिक तोहिं गुणहिं करों परकास । गिरि गहबर वन सेइये बरसानो निकट निवास ॥ गाम निकट ग्रेही बसैं योगी रमैं वन खंड । जिनके जप तप से थमैं सात द्वीप नौखंड ॥ हम जो सुनी यह शेश शिर तू कहत अनेती बात । सत्य बोल नहिं जानही विधि रचे जो साँवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न वचन की करो बैस सुता पुनि राज । दूर बैठो घर जायके तुम्हें योगिन से कह काज ॥ गोपनके गोधन परख तुम तिन गुण करो बखान । योगिनके घर दूर हैं अति दुर्लभ पद निर्वान ॥ राजसुता तुम करतिहो योगिन संग विवाद । सेवा कीने फल मिलै चर्चा उपजै विषाद ॥ हम सेवा बहुविधि करैं जो तुम मन थिरता होय । यह पुर बसै बड़ भागिनी

ब्रज सम लोक न कोय ॥ क्यों न बडाई कीजिये लायक कुल वृषभान । अब हौं निश्चय चाल हौं पायों मन वांछित सन्मान ॥ बाँहपकरके लेचली बैठारी जाय निकेत । अब छिन पास न छाँडिहौं समझ्यो उर अंतरको भेद ॥ पलँग देहु मोहिं बैठनो मन मिलनी सजनी पास । यहि विधि मोहिं बिलमाइये मैं कबहूं न होउँ उदास ॥ भूमि शयन योगी करैं तू कहत वचन विपरीत । भूलि न आदर पाइये तप मारग की रीत ॥ तुम मन मृदु कीरति लली यह सजनीको हियो कठोर । तपसिन को शिक्षा करै कछु आयो कलिको जोर ॥ भुज भरलीनी कुँवरि ने तू जिय जिन पावै खेद । वृंदावन हितरूप छद्मको समझ परयोहै भेद ॥ ८३४ ॥

वीणावारीकी लीला.

राग गौरी ।

छवि आगरी कोविद राग । वीणा अंक विराजही बैठी बाबाके बाग ॥ टेक॥ ऊंचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर । जाके अंग सुवास ते जहां ह्वैरही भँवरन भीर ॥ पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग॥आभा नील मणी मनो अस तनुको दरशत रंग॥जे देखन तरुणी गईं ते जो विलोई प्रेम ।बींध गईं रस नादमें सब भूली नित कृतनेम॥ तुम चलि लावो नगर में मिले अधिक सुख होय । भूखी वह जो सनेहकी प्यारी मैं देखी टकटोय॥गुणी न ऐसी देश यह रीझोगी सुन गान । औरन को जो छकावही वह आप छकै लैतान॥ कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति विकाय । जो अब आदर देहुगी तो फिर आवैगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाको सुनत अलाप । शिव समाधि टारे बली विधि को टारतहै जाप ॥ ब्रज मंडल ऐसी नहीं नहीं भरत के खंड । अति गुणवंती भामिनी यह आई परचंड ॥ यह सुन अति अकुलाय कै चली सखी लै संग । रूपसिंधु उमँग्यो मनो तामें नाना उठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी फूली सरवस पाय । दृग सों दृग मनसों जो लखि उरझे सहज सुभाय ॥

अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भये प्रशंस । राग अलाप सुनाइये सखी वीणा धरके अंस ॥ चपल करज नख द्युति बडी गौरी गाई बाल । रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥ मान बडी तानन बडी बढी रूप लहि लाह । प्रगटकरो सब चातुरी जाके मनमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजागरी धन तुम शिखवन हार । कोऊ दिन बर्साने बसो अब चलो हमारे लार ॥ सुनत कछू मोरयो बदन चुप ह्वै रही सुजान । वीणा धर दियो कंध ते रूखी ह्वै गई निदान ॥ ललता बूझत समझके का कारण बलि-जाउँ । तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे नाउँ ॥ मेरे छक हे गुणन की सुनो खोलके कान । परघर गये जो को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हें प्राण सम राखहैं लाड नयो नित होय । अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते खोय ॥ गुणगाहक विरचे नहीं दूर करो संदेह । जे गुणको समझैं नहीं परहरिये तिनके ग्रेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी सांवरी गात । चंपक वरणी धन्य तू कही निपट समझकी बात ॥ अब हौं निश्चय चलोंगी जान तुम्हारो हेत । तो मन थाह मिली भटू नृपसुता न उत्तर देत ॥ कहा न्याव सो करतहो कहत अतिलडी बैन । सुख पावो तो विरमियो नहीं करजैयो गौन ॥ मसक उठी कर वीण लै लगी कुँवरिके साथ । निपट मंद गमनी भई गह प्यारीजू को हाथ ॥ गोपनके मंदिर जिते सबको बूझत नाम । तनु श्रम अधिक जनावही कहै कितक दूर तुम धाम ॥ हम जो चढैं रथपालकी अतिही आदर योग । गुणी रीझ जानै कहा ये ब्रजके भोरे लोग ॥ कहौ मँगाऊं अश्वरथ कहौ पालकी रंग । आज्ञा पहले करी नहिं योंहिं उठ लागी संग ॥ हम जान्यो नियरे भवन यह तो निकस्यो दूर । याते खबर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर ॥ और सुनो मों वीणको नीके धरियो साज । मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सों रंग समाज॥ तुम मानतहो खेल सो सुन मो मुख रसरीत । नारद शारदके सदा अति या बाजे सों प्रीत ॥ हौं सीखी उनकी कृपा सों हिय की गाढी लाग । ता प्रताप ते करतहो

सखी तुम मोसों अनुराग॥लाई न्यारे भवन में बहुत करत सन्मान । अब एकांत सुनाइये सखी सुघर साँवरी गान ॥ बीणाके सुर साधके अंक लाय मुसकाय । गायो चित की चोप सों जिन लीनो सभन रिझाय ॥ जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोइ हिये हुलास । चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश ॥ अहो सहेली साँवरी कर इहि नगर निवास । असन वसन करहो सखी चल रह नित मेरे पास ॥ मोहिं अंशा यह नगर घर यामें शंक न कोय।आवत जात रहौं सदा जो शवर हित होय ॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर वीन । ग्रीव ढुराई साँवरी अस गायो कुँवरि प्रवीन ॥ जब उघरी संगीत गति प्यारी दे करताल । छदम बिसर गई साँवरी लगी निरतन गति नँद-लाल॥ह्वै त्रिभंग ठाढी भई कर मुरलीको भाव। फूंक चलै अँगुरीचलै गई भूल कपटको दाव ॥ राधा राधा रट लगी अधरन हीके माहिं । समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं॥भुजा अंश पर धरन को झुकी प्रियाकी ओर । सावधान होय साँवरी कह कौतुक रचत जुजोर ॥ राजभवन में आयके भूल न आदर पाय । स्यानी है कै बावरी तू अपनो रूप बताय ॥ यासों प्रीति न तोरिये हौं लाई जुबुलाय । भेद हियेको बूझके देहु सादर वेग पठाय ॥ प्रीतमको देख्यो कहूं इन लीनी गति चोर। परम चातुरी सीव यह गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नंदकिशोर । मैं लक्षण नीके लखे दृग चालत गौहीं कोर ॥ भटू बहुरि नीके परख बात न भाँडो फोर । लायकसों समझे बिना अति गरुवो नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतरकी लाई सखी सुजान । सबकी चोली लगायके तिहिं चोली परसे पान॥ वह अधरन ही में हँसी यह जो हँसी मुख खोल । है यह दूत शिरोमणि कह्यो सब सखियन सों बोल ॥ मेरीही भूलन सखी तब तुम लियो विलोक । प्रेमसिंधु उमँगन जहाँ कह छद्म जो तिनको रोक ॥ कबहुँ दूर कबहूं प्रगट आवत भान निकेत । मधुप अनत बिरमैं नहीं दृढ कियो कमल सों हेत ॥ वरण्यो कौतुक प्रेमको नेम नहीं मरयाद । लखी जुरसिकन की गली श्रीहरिवंश

प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलसैंहैं जामें अतिही चोज । वृंदावन हित वलिरुचै दंपति केलि मनोज ॥ ५३५ ॥

राग भैरव ।

यह रसरीत प्रिया प्रीतमकी दिव्य दृष्टि जल जैसेरी । विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसेरी ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसेरी । भगवत् कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसेरी ॥ ५३६ ॥

दोहा–जय जय जय व्रजचंदकी, जय जय जय सुखरास ।
निज चरणन में राखिये, एक तुम्हारी आश ॥

इति श्रीरागरत्नाकर प्रथमभाग समाप्त १.



इति

रागरत्नाकर प्रथमभाग

समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

द्वितीय भाग २.

मथुरागमन लीला.

राग विहाग ।

अब नँद गैयां लेहु सँभार । हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराईं दिन चार ॥ दूध दही तेरो बहुतही खायो बहुतहि कीनी रार । मातु पितु तेरे चरित उरसों डारिहौं न बिसार ॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत परार । तिहारे यशुमति आन विलमें दृग मत आंसू डार ॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार । सूरके प्रभु चले ब्रजतजि कपट कागज फार ॥ १ ॥

राग सोरठ ।

यशुमति बार बार यह भाखै । है कोऊ ब्रज हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै ॥ कहा काज मेरे छगनमगनको नृप मधुपुरी बुलाये । सुफलक सुत मेरे प्राण हरणको काल रूप हो आये ॥ बरु यह गोधन कंस लेय सब मोहिं बंदी लै मेलै । इतनो मांगत कमल नयन मेरि आँखन आगे खेलै ॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै । बहुरो इंद्र बरसि है ब्रज पर को गिरि नख पर लैहै ॥ बासर रैनि विलोकत जीयों संग लागि दुलराऊं । हरि विछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कंठ लगाऊं ॥ टेर टेर धर परत यशोदा अधर बदन बिलखानी । सूर सो दशा कहां लग बरणौं दुखित नंदकी रानी ॥ २ ॥

राग विहाग ।

उठ चले ग्वाँढों यार । रब्बा हुन की करीये उठ चल्ले हुन रहिंदे नाही होया साथ त्यार ॥ चारों तरफ चलन दी चरचा केही पडी

पुकार । डाढ कलेजे बल बल उठदी बिन देखे दीदार । बुल्लाशाह प्यारे बाझो ना रहसां घर बार ॥ ३ ॥

राग सोरठ ।

उलट पग कैसे दीनो नंद । छांडे कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमंद ॥ कै तुम धन जोबन मदमाते कै तुम छूटे बंद । सुफलक सुत वैरी भयो मोको लै गयो आनँदकंद ॥ राम कृष्ण बिन कैसे जीवों कठिन प्रीतिको फंद । सूरदास अब भई अभागन तुम बिन गोकुलचंद ॥ ४ ॥

राग बड़हंस ।

सांझ परी घर आये न कन्हैया । गोपी पूछे ग्वालनसों कहां गये मोरे ब्रजके बसैया॥घर रहे बछरू बन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया । जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया ॥ लालदास प्रभु कह कर जोरे चरण कमल पर चितको धरैया ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ।

ऊधो मोहिं ब्रज बिसरत नाहीं । हंससुताकी सुंदर कलरव अरु कुंजन की छाहीं ॥ वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खरिक दुहावन जाहीं । ग्वाल बाल सभ करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं । जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानंद निवाहीं । सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कह कह पछताहीं ॥ ६ ॥

राग विहाग ।

ऊधो ब्रजको गमन करो । मेरे बिना विरहनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सभनको ज्यों सुख पावें नारि । पूरण ब्रह्म अलख परचो करि डारैं मोहिं बिसारि ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थापि महंत। सूरश्याम कारण यहि पठवत है आवे गो संत ॥ ७ ॥

कवित्त।

कामरी लकुट मोहिं भूलत न एक पल घुँघची ना बिसारों जाकी माल उर धारे हैं ॥ जा दिन ते छाकें छूट गई ग्वालन की तादिन ते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भनै यदुवंश जो पै नेह नंदवंश हूं सों बंसी ना बिसारों जो पै वंश विस्तारे हैं ॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी लइयो चौगान गेंद मैयाते कहियो हम ऋणियां तिहारे हैं८

कौन विधि पावे यह कर्म बलवान उदय छाछ छछिया की ब्रज भामिन को भातेहैं ॥ मुक्तिहू पदारथ सो देचुके बकी को अब देहिं जननीको कहा याते पछतात हैं ॥ विधि जो बनाई आहि कौन विधि मेटैं ताहि ऐसे कर शोचत रहत दिन रात हैं॥ ऊधो ब्रज जैयो मेरी कहियो समुझाय मैया जापै ऋण बाढै सो विदेश उठ जात हैं ९

परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिये ॥ ब्रज की वे बाला जपैं मेरी जप माला बाढी विरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये ॥ मेरो विसवास मेरी आस रस रास मेरी मिलबेकी प्यास जान सावधान कीजिये ॥ प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों सो पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं तैसेही समाधि साध ध्यान धरवावोगी ॥ अलख अनाथ घट घटको निवास मोहिं जान अविनाशी योग युगत जगावोगी ॥ आसनके प्राणायाम साधि ध्यान धारणा ते ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ ऐसे चित लावोगी तो सुख में समावोगी औ मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजा तुम योग हम लीया धर शीश पर बड़ोही परेखो चेरी कौन की कहावेंगी ॥ अँसुअनकी माला लेके जपैं नित राम नाम लोचनके खप्पर ले भिक्षाको धावेंगी ॥ पहरेंगी कंथा गल डारेंगी सेली माल मरघट पै बैठके मशानहूँ जगावेंगी ॥ ऊधोजी एती बात हरि जीसों कहियो जाय एती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥ १२ ॥

राग देश ।

श्याम का सँदेशा ऊधौ पाती लैकै आयोरे । पाती तो उठाय लीनी छाती सों लगाय लीनी घूंघटकी ओट देके ऊधौ समुझायो रे ॥ बसती उजाड दीनी उजडी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहिं न सुहायोरे । सूरश्याम जू के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १३ ॥

राग टोडी ।

पाती सखि मधुबन से आई । ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरीं ले पाती उर लाई । नयनन नीर निरख नहिं खंडित प्रेम विथा न बुझाई ॥ कहा करूं सूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई । सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥ १४ ॥

राग जंगला होरी ।

साँवरे सों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो कर विनती कर जोरी । ऐसी चूक कहा परीमोसों प्रीति पाछली तोरी ॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण वसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री । विभूति रमाय योगिन होय बैठीं तेरोही ध्यान धरचो री ॥ अब मैं कैसे करों री ॥ निशि दिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी । बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री ॥ वेग चल आवो किशोरी ॥ रोम रोम विष छाय रहोहै मधु मेरे वैर परचो री । श्याम तुम्हें ढूंढत कुंजन में शीश लटा गह झोरी ॥ कहो हरि हो हरि होरी ॥ जादिन गमन कियो मथुरा में गोपिन सुध बिसरचो री । हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी ॥ कहा कछु कीनी चोरी ॥ सूरदास प्रभु सों जाय कहियो आय अवधि रही थोरी । प्राणदान दीजो नँद-नंदन गावत कीरति तोरी ॥ प्रीति अब कीजे बहोरी ॥ १५ ॥

सवैया ।

जो हरि मथुरा जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनी रही सोऊ ॥
ऊधो बडो सुख ये हू हमैं और नीके रहैं वे मूरत दोऊ ॥
हमारेहि नाम कि छाप परी और अंतर बीच अहै नहिं कोऊ ॥
राधाकृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरी कृष्ण कहै नहिं कोऊ ॥१६॥

कवित्त ।

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो धाय कर मारी नारी निठुर मुरारी हैं ॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी अनमिल हूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं ॥ सुनरी ए चेरी मैं तेरी सौंह कहत हौं वे तो हरि सरस नयन आंसुहू न ढारि हैं ॥ बडे हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी मारबेको नवल कन्हैया तलवारि हैं ॥१७॥

याही कुंज कुंजन तर गुंजरत भँवर भीर याही कुंज कुंजनतर अब शिर धुनत हैं ॥ याही रसना ते करी रसकी रसीली बातें याही रसना ते अब गुणगण गनत हैं ॥ आलम बिहारी बिन हृदय हूं अचेत भये एहो दई हित कहत कैसेके बनत हैं ॥ जेही कान्ह नयनन के तारे हुते निशि दिन तेही कान्ह कानन कहानी सी सुनतहैं॥१८॥

आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रज मंडलमें राग में कुराय योग रीत कह सुनायो है॥ झोली झंडा गूदडी औ भस्म मुद्रा कानन में हाथन में खप्पर यह स्वांगलै दिखायो है॥संयम नियम ध्यान धारणा हठासन हो ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशायो है ॥ कूबरी पै पढ आयो वेदको भुलाय आयो रथ चढ आयो अनरथ गढ़ लायो है॥१९॥

योगी तजे जगत हम जगत योग दोऊ तजे योगी लावें छार हम छारहूके मटिहैं॥योगी बेधें कान हम हीये और प्रान बेधे योगी कहैं नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं ॥ योगी कान मुद्रा हम भूषण बनाय राखे हमरे शिरकेश बहु योगी शिर जटिहैं ॥ जानके अजान आज कहा भयो ऊधोजी योगी की युगत सों वियोगी कहा घटि हैं ॥२०॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठों याम ऊधो

हमें श्यामही सों काम है ॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही हैं प्राणपति श्याम सुखदाई सों भलाई शोभाधामहै ॥ ऊधो तुम भये बौरे पातीलैकै आये दौरे योग कहाँ राखें यहाँ रोम रोम श्याम है ॥ २१ ॥

जित देखों तित श्याम मई है । श्याम कुंज वन यमुना श्यामा श्याम गगन वन घटा छई है । सभ रंगन में श्याम भरोहै लोग कहत यह बात नई है । मैं बौरन के लोगन हीकी श्याम पुतरिया बदल गई है ॥ चंद्र सार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है । नीलकंठ को कंठ श्याम है मनो श्यामता बेलि बई है ॥ श्रुति को अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है । नर देवन की मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छवि श्याम भई है ॥ २२ ॥

राग देश ।

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री । निशिदिन चलत रहत नाहिं राखे इन नयनन जलधारा री ॥ अबयह प्राण कैसे हम राखैं विछुरे प्राण अधारा री । ऊधो तबते कल न परतहै जबते श्याम सिधारा री ॥ अबतो मधुबन जाय ले आवो सुंदर नंददुलारा री । सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सभ वारा री ॥ २३॥

राग नट ।

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार । धन वे ठाकुर धन तुम सेवक धन धन परसन हार ॥ आम को काटि बबूर लगावत चंदन झोकत भार । शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार ॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार । हंस मयूर शुकापिक त्यागत कागनको इतबार ॥ तुम हरि पढे चातुरी विद्या निपट कपट चटसार । सूरश्याम कैसे निबहैगी अंध धुंध सरकार ॥ २४ ॥

राग रामकली ।

ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सभ नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी ॥ उज्ज्वल पंख दिये बकुलाको कोयल कित गुणकारी । सुंदर नैन मृगाको दीने वन वन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी । सूरश्याम मिलबे की आशा छिन २ बीतत भारी ॥ २५ ॥

राग आसा ।

ऊधो सो मूरत हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इंद्र नहिं पेखी ॥ खोजत फिरत युगो युग योगी योग युगत ते न्यारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम अगम विमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिल भर पारवार नहिं पायो कहि कहि नेति पुकारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूंढ रहे वन माहीं । वेष धरे धरती भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँगी श्याम रँग जाहु योग घर लेके ॥ २६ ॥

राग सारंग ।

बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजरकी कोठरी जे आवें ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे रत्न पवारे । यहां ज्ञानकी कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ २७ ॥

राग देश ।

ऊधो कारे सबै बुरे । कारेकी परतीत न करिये कारे विषके भरे ॥ कारो अंजन देत हगनमें तीखी सान धरे । नाग नाथ हरि बाहर आये फण फण निरत करे ॥ कोयलके सुत कागा पाले अपनोहि ज्ञान धरे । पंख लगे जब उडने लागे जाय कुटुंब रले ॥ सूर श्याम कारो मतवारो कारे से काल डरे ॥ २८ ॥

उरमें माखन चोर गडे । अब कैसे निकसत हैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदा नंदन तदपि न जात छडे । वहां कहत

यदुवंश महाकुल हमाहिं न लगत बडे ॥ को वसुदेव देवकीहै को जो माने सो बूझे । सूर श्याम सुंदर विन देखे और न कोऊ सूझे ॥ २९ ॥

राग बड़हंस ।

हो गये श्याम दूजके चंदा । मधुबन जाय भये मधुबनियां हमपर डारो प्रेमको फंदा ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर अबतो नेह पर्चो कछुमंदा ॥ ३० ॥

राग जिला ।

चले गये दिलके दामनगीर । जब सुधि आई प्यारे तेरे दरशकी उठत कलेजे पीर ॥ नटवर वेष नयन रतनारे सुंदर श्यामशरीर । आपन जाय द्वारका छाये खारी नदके तीर ॥ ब्रजगोपिनको प्रेम विसार्चो ऐसे भये बेपीर । बृंदावन बंसीवट त्याग्यो निर्मल यमुना नीर ॥ सूरश्याम ललता तब बोली आखिर जात अहीर ॥ ३१ ॥

राग वसंत ।

ऊधो माधो सों कहियो जाय । जाकी चपल बुद्धि तासों क्या बसाय ॥ उडियोरे भ्रमरा जइयो वादेश मेरे पिया से कहियो सुख सँदेश सखी फागुनके दिन बीते जात मेरी अँगिया तडक गई योवन भार । इक तो सतावे मोहिं ऋतुवसंत दूसरा सतावे मोहिं बाला कंत तीजी कोइल बोले अंबकी डार चौथा पपीहा पिया पिया करे पुकार ॥ इक बन फूल सकल बन फूले जैसे चंद्र चकोरन हूले तीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तजूंगी प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ३२ ॥

राग धनाश्री ।

हरिके संग मैं क्यों ना गई । हरि सँग जाती कंचन बन आती अब माटी के मोल भई ॥ बरजो न कोई इन दूतिन को जाती बेर मोहिं रोक लई । हरि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासी सँग प्रीति भई ॥ छल गयो काल वहुरि नहिं आवे अपने हाथसे मैं विदा दई । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ॥ ३३ ॥

राग वसंत।

जा जा रे भँवरा दूर दूर। तेरो सो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर॥ जब लग तरुन फूल महकत है तबलग रहत हजूर जूर। सूर श्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली रस घूर घूर॥ ३४॥

राग विहाग।

मधुकर श्याम हमारे चोर। मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर॥ पकरे हुते आन उर अंतर प्रेम प्रीतिके जोर। गये छुडाय तोर सभ बंधन दैगये हँसन अकोर॥ उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर। सूरदास प्रभु हरि मन मेरो सरवसलै गयो नंदकिशोर॥ ३५॥

राग केदार।

नाहिंन रह्यो मनमें ठौर। नंदनंदन अछत कैसे आनिये उर और॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात। हृदय ते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात॥ श्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास। सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास३६

राग सारंग।

विन गोपाल वैरन भईं कुंजैं। तब ये लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं॥ वृथा बहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंजैं। सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजैं॥ ३७॥

राग मलार।

निशिदिन बरसत नयन हमारे। सदा रहत पावसऋतु हम पर जब सों श्याम सिधारे॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूं उर बिच बहत पनारे॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे। सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे॥ ३८॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये । कारीघटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पालागों तुम वीर बटाऊ कौन देशते धाये । इतनी पतियां मोरी दीजो जहाँ श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोले सोवत मदन जगाये । सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग देस ।

नाथ अनाथनकी सुध लीजे । तुम विन दीन दुखित हैं गोपी वेगहि दर्शन दीजै ॥ नयनन जल भर आये हरि बिन ऊधो को पतियां लिख दीजै । सूरदास प्रभु आश मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजै ॥ ४० ॥

राग विहाग ।

पिया बिन नागिन कालडी रात । कबहूं याभिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात ॥ यंत्र न फुरत मंत्र नहिं लागत आयु सिरानी जात । सूर श्याम बिन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥४१॥

राग भैरव ।

अँखियां हरि दर्शनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके वासी । नेह लगाय त्यागगये तृण सम डार गये गलफांसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हासी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहौं करवँट कासी ॥ ४२ ॥

ठुमरी खमाच ।

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गये धन धाम ॥ गोकुल ढूँढ बृँदावन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी ।

कहीं देखेरी घन श्यामा॥मोर मुकुट पीतांबर सोहै कुंडल झलकैं

काना । सांवरि सूरत पर तिलक विराजे तिसशों लगे मोरे प्राना ॥ बरसाने सों चली गुजरिया नंदगामको जाना । आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके बाना ॥ सागर मुख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना । भौंरा रहगये प्रीतिके धोखे फेर मिलनको जाना ॥ वृंदा बनकी कुंज गली में नूपुर रुनझुन लाना । मीरा बाई को दरशन दीजो ब्रज तज अनत न जाना ॥ ४४ ॥

कृपाकर दरशन दीजो हरी । नित प्रति ठाढी अपने द्वारे निरखों पंथ खरी ॥ छिन छिन अंतर बाहर आवां शांत न होत घरी । विरहों अगिन रची प्रति रोमन दाहा दग्ध करी ॥ तेरी लगन लगी मोरे अंतर नाहिन जात जरी । दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणि परी ॥ ४५ ॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावेरी । तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री ॥ कर शृंगार मैं सेज बिछावों सो मोहिं कछु न सुहावेरी । अहनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री ॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मैं फिरतीहूं प्रेम प्यासी री । दुनीदास धीरज ना होवे बिन देखे अविनाशी री ॥ ४६ ॥

सुंदर श्याम देखन दी आशा नयनन बानपरी । चार याम मोहिं तलफत बीते रहगई एक घरी ॥ भूषण वसन भवन नहिं भावै विरह वियोग भरी । दया सखी अब वेग मिलो क्योंना हौं अकुलात खरी ॥ ४७ ॥

ठुमरी ।

छतियाँ लेहु लगाय सजन अब मत तरसावो रे । तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सों बहें जलकी धारे बाढी है तनु विरह पीर सूरत दिखलावो रे ॥ हरीचंद पिया गिरिवर धारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी अब जीया नहिं धरत धीर जलदी उठ धावो रे ४८

राग खमाच ।

सजन मुखडा दिखलाजारे । तेरे दरशनको तरसैहैं नयन ॥

बालेपन की लागी लगन छूटत नाहीं करों कोटि यतन दिखलाजा सूरत मोहन जरा बँसिया बजाजा रे ॥ ढूंढ फिरी सारा वन वन मैं तऊ न पाये नंदके नँदन विरमाय राखे काहू सौतन रसिया महाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई वदन सब छाँड उतारे भूषण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नंदन श्रीधर पिया आजा जलदी से मोहिं गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग ।

मिलजाना हो प्यारे नंद किशोर । देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥ तेरे दरश बिन फिरां दिवानी ढूँढती चहुँ ओर । जानकीदास तुसीं देख हर्षा जैसे चंद चकोर ॥ ५० ॥

राग परज ।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नँदनंदन ब्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक । बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरली की भनक ॥ श्यामसुंदर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक । जानकीदास बसो जो दृगन में कर राखों उर नयन पलक ॥ ५१ ॥

राग खेमटा ।

रे निरमोही छवि दरशायजा । कान चातकी श्याम विरह घन मुरली मधुर सुनायजा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखायजा । भयो चहत यह प्राणबटोही रूसे पथिक मनायजा ५२

राग बडहंस ।

विरहों ने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अजानी गल ला वे असानूं तिखीयां नोक चभोके ॥ वंज वे राही वंज माही वल खडी उडीकां वाटां ॥ मैं जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयां घातां ॥ मुख देखन नूं फिरां दिवानी दर दर देनींहां होके ॥ आंखीं माहीं गल

नाहिं तुसाडे अरज करां मैं खलोके ॥ इशक तुसाडे ने वायल कीती एह गल आँखीं रोके॥सूरत सोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे टुंब जगायाई मैनूं हँसके मुख दिखलाके ॥ जां मैं मोही तां तूं छिप्या विरहोंनूँ मोड़भुवाके ॥ इस विरहों मैं वल वल कुट्ठी हसदाहैं पास खलोके ॥ केदर कूकां कूक सुनावां लाया नेह मैं आपे ॥ जां मैं जग विच रोशन होइयां रहन नदेदे मापे ॥ दुःखां सूलांदा हार मैं पहिदा हत्थीं आप परोके ॥ मैं दरमांदी दरश तेरे दी मुख दिखला इक वारी ॥ तैं मुख डिठियां सभ दुख जाँदे तू तबीब है भारी ॥ मुख देखन नूं फिरां दिवानी तैं डी सुहागन होके ॥ बखश रब्बा वे मैं अवगुण हारी तूही बखश अलाही ॥ एकोनजर तुसाडी काफी दुःख न रहिंदा काई ॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्लिया देई दीदार खलोके ५३

राग पीलू ।

सुरतिया रे लागरही हरि सों । आवन कह गये अजहूं न आये बीत गैयां बरसों ॥ यहतो जोबन चार दिहाडे आज कल्ह परसों । अंबुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हौं वियोग वारि बारिधि में बूडत बच्यो हौं नाथ नारी नयना यूं बहे ॥ गंगा हू सहस्र धारा अधिकही सुधारा जान वर्षा नहोय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल अवनी न समाये कहूं वारिधि में मुनी पै न अच्यो जात कानखोल हौं कहे ॥ कवि प्रह्लाद जो मिलाप पाल बांधो नाहिं बटके बटूक पात साँवले भले रहे॥५५॥

राग खमाच।

बहुत दिनान में विदेश ह्वै आये मेरे प्यारे मनमोहन बधाये सभ गावोरी ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति लैलै कर नीकी नीकी भांतिन सों भावन बतावोरी ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुहचंगन सों घुंघुरू बजायके मृदंग सों मिलावो री ॥ नंदके कुमार रिझवारको रिझावो आज सकल समाज कर रंग सरसावोरी ॥ ५६ ॥

विनयके पद.

दोहा ।

कदम कुंज ह्वै हों कबै, श्रीवृंदावन माँह । ललित किशोरी लाडिले, विहरैंगे तिहि छाँह ॥ कब हौं सेवा कुंज में, ह्वैहों श्याम तमाल । लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लडैतीलाल ॥ सुमन वाटिका विपिन में, ह्वै हों कब हौं फूल । कोमल कर दोउ भावते धर हैं बीन दुकूल ॥ कालीदह कबकूल की, ह्वैहौं त्रिविध समीर । युगल अंग अँग लागि हौं, उडि है नूतन चीर ॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवन बीथिन धूर । परि है पद पंकज युगल, मेरी जीवन मूर ॥ कब गहबर की गलिन में, फिरि हौं होय चकोर। युगल चंद मुख निरखि हौं, नागरि नवल किशोर॥ कब कालिंदी कूल की, ह्वै हौं तरुवर डार । ललित किशोरी लाडिले, झूलें झूला डार ॥ श्यामा पद दृढ गह सखी, मिलिहैं निश्चय श्याम । नामाने दृग देखले श्यामा पद बिच श्याम ॥ ५७ ॥

कवित्त ।

दीनबंधु दीनानाथ ब्रजनाथ रमानाथ राधानाथ मोअनाथ की सहाय कीजिये । तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी नातो तुमहीं सों प्रभु विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूं दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये । कीजिये कृपा कृपालु साँवरे बिहारी लाल मेट दुख जाल बास बृंदावन दीजिये

गिरिकीजे गोधन मयूर नव कुंजनको पशुकीजे महाराज नंदके बगर को ॥ नर कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटै तट कीजे बर कूल कालिंदी कगर को ॥ इतने पै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह राखिये न आन फेर हठीके झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजे महाराज तृण कीजे रावरेई गोकुल नगर को ॥ ५८ ॥

सवैया ।

मानुषहोहुँ वहीं रसखानि बसौं मिलि गोकुल गावँके ग्वारन ।

जो पशु होउँ कहा वश मेरो चरौं पुनि नंदकि धेनु मँझारन ॥
पाहन होहुँ वही गिरिको जो कियो ब्रज छत्र पुरंदर धारन ।
जो खग होउँ बसेरो करौं वहि कूल कालिंदी कदंब कि डारन ॥५९॥

राग चैतीगौरी ।

यमुना पुलिन कुंज गहबरकी कोकिल ह्वै द्रुम कूक मचाऊं । पदपंकज प्रिय लाल मधुप ह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं ॥ कूकर ह्वै बन बीथिन डोलों बचे सीथ रसिकनके पाऊं । ललित किशोरी आश यही मम ब्रज रज तज छिन अनत न जाऊं ॥ ६० ॥

राग देश ।

अब विलंब जिन करो लाडिली कृपादृष्टि टुक हेरो । यमुना पुलिन गलिन गहबरकी विचरूं सांझ सबेरो ॥ निशि दिन निरखों युगल माधुरी रसिकन ते भट भेरो । ललित किशोरी तन मन अकुलत श्री वन चहत बसेरो ॥ ६१ ॥

राग यमन ।

प्यारीजी मोतनहूं टुक हेरो । श्री वन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहूं गान गुण तेरो ॥ आन न जानों अन्य न मानों तूही कृपापद साधन मेरो । ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो हहा अवसेरो ॥ ६२ ॥

कवित्त ।

एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों वारि डारों विश्व सेवा कुंजके विहार पै ॥ लतनके पतन पै कोटि कल्प वारिडारों रंभाहूको वारि डारों गोपिनके द्वार पै ॥ ब्रजकी पनिहारन पै शची रची वारि डारों वैकुंठहूको वारिडारों कालिंदी की धार पै । कहै अभयराम एक राधा जूको जानत हों देवन को वारि डारों नंदके कुमार पै ॥ ६३ ॥

राग झिंझोटी ।

जो कोउ वृंदावन रस चाखै । भवन चतुर्दश तिहूँ लोकलों

सुपनेहुँ नहिं अभिलाखै ॥ ललित किशोरी परे कोन में श्याम राधिका भाखै।युगल रूप बिन पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै६४

राग धनाश्री ।

हमारे श्रीवृंदावन उर ओर । माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रसिक शिरमोर ॥ छुट जात सत्य असत्य वासना मनकी दौरा दौर । भगवत रसिक बतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६५ ॥

ऐसे वसिये ब्रजकी वीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पैंडेके सभ वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन । कुंज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन ॥ निशिदिन निरख यशोदा नंदन अरु यमुना जल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग बिलावल ।

कहा करूं वैकुंठहिं जाय । जहँ नहिं नंद जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय॥ जहां न जल यमुनाको निर्मल और नहीं कदमन की छाय। परमानँद प्रभु चतुर ग्वालिनी ब्रज रज तज मेरी जाय बलाय।

राग गौरी ।

ब्रजरज मोहनी हम जानी । मोहन कुंज मोहन श्रीवृंदावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी बोलत अमृत वानी । श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधारानी ॥ ६८ ॥

राग सहानो ।

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम । जाकी महिमा वेद बखानत सब विधि पूरणकाम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुर ग्राम । लाडिली लाल जहां नित विहरत रति पति छवि अभिराम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठों याम । नारायण बिन कृपा युगल वर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग दादरा ।

ऐसो कब करिहै मन मेरो । कर करवा गुंजनके हरवा

कुंजन माहिं बसेरो ॥ ब्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाँछ महेरो । भूख लगे तब मांग खाय हों गिनों न सांझ सबेरो ॥ इतनी आश व्यासकी पुजिये मेरो गाँव न खेरो ॥ ७० ॥

राग परज ।

भजो मन वृंदावन सुखदाई । अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरंग चित्र छबि कालिंदी मणि कूलें । लतन रहे भर पाय सखी यह कंचनके द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहे विकस जहां तहँ बरण बरण छबि छाई । सहज रैन सुखदैन बिराजत वृंदाबन सुखदाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुंजहिं लालन निरख होत सुख पुंजहिं । निरख होत सुख पुंज कमल दल रची है सुंदर सैन । बहत समीर त्रिविध गुण लीने आकर्षत मन मैन डोलत केक कीर पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजहिं । रत्न खचित फूलन सों फूली राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुंज विहार । सखियन प्राणअधार ॥ सखियन प्राण अधार रसिक वर नवल किशोर किशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारे को सभ अँग नागर गोरी ॥ अति विलास नव नव रुचि उपजत बल किंकिणि झंकार । अति प्रवीन रति कोक कलन में करत निकुंज विहार ॥ भजो० ॥ निर्ख निर्ख बल जाई । श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कण रहे झलक बदन बिब कहुँ कहुँ पीक जो सोहै । हँस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसी को जुन मोहै ॥ चितहिं चिह्न रजनी के सजनी नयनन में मुसकाई । जैश्रीहित ध्रुव सखी सरस रँग भीनी निर्ख निर्ख बल जाई ॥ भजो ॥ ७१ ॥

राग बहार ।

वृंदावन विपिन सघन बंशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिलावन मोहन मन भावै । सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पिया प्यारी ललतादिक संग लिये उमग उमग गावै ॥ यमुना जल अति गँभीर कदमन की जहां भीर ललित लता कुसुम भार अपने

बरसावै। हंस मोर कोकिला पपीहा जहाँ शब्द करैं पशु पक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्ण गावै॥ ७२॥

राग धनाश्री।

नमो नमो वृंदावनचंद। आदि अनंत अनादि एक रस पियप्यारी विहरत स्वच्छंद॥ सत चित आनँद रूप घन खग मृग द्रुम बेली और वृंद। भगवत रसिक निरंतर सेवत मधुप भये पीवत मकरंद॥७३॥

कवित्त।

नंदके आनंद हो मुकुंद परमानंद हरि काटो जमफंद मोहिं भय सों बचाइये। नहीं जानों ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो भरयो मान ते हँकार प्रभु कैसे तोहिं ध्याइये॥ सुनो कृष्ण हरी जैसी करीसो करी दयालु तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये। सुखके निधान दान दीजे प्रेम भक्ति हू को अपने चरणारविंदमें चित्त मयारामको लगाइये॥ ७४॥

तारो पतित जानके सुधारो विरद आनके काढो भुजा तानके कहाँ देर डारी है॥ सुदामा यार तारयोहै प्रह्लाद तैं उबारयोहै द्रौपदी की लाज राखी सभादेख सारी है॥ गज ने ध्यायो प्रभु गरुड छोंड धायो ब्रज को बचायो ताते नाम गिरिधारीहै॥ दास तो पुकारे प्रभु काटिये कष्ट कोटि भारे अरजी हमारी आगे मरजी तिहारीहै॥ ७५॥

आप सब नेरे और दूरकी पहँचानतहो छिपी नाहिं कूर की और साहिब शऊर की॥ निकुता निवाजी कर राजी छिन ही में होत करत इतराजी नाहिं सुनके कसूर की। तुमसों न दूसरो दयालु श्री विहारी लाल जाहि लाज आवे निज जन के जरूर की॥ गरजी विचारे को तो अरजी कियेही बनै माननी न माननी यह मरजी हुजूर की॥ ७६॥

दीनानाथ दयासिंधु आरत हरण भारी द्रौपदी उबारी तैसे मोहू को उबार ल्यो। गणिका उबारी गज संकट निवारी प्रहलाद हित-

कारी दुख दारुण निवार ल्यो॥ गौतम तिय तारी चरणांबुज रज धारी गो ब्राह्मण हितकारी भवसागर उधार ल्यो। टेरत प्रभु नंदलाल दीनबंधु भक्तपाल करुणामय कृपालु लाल विरदको सम्हार ल्यो॥ ७७॥

मैं तो हूं पतित आप पावन पतितनाथ पावन पतित हो तो पातक हरोईंगे॥ मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ दीनबंधु हो तो दया जीमें धरोईंगे॥ मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीवन के तारक गरीब हो तो विरद बरोईंगे॥ मेरी करणी पै कछु मुकर न कीजै कान्ह करुणानिधान हो तो करुणा करोईंगे॥ ७८॥

श्याम घन तन पर विज्जुसे दशन पर माधुरी हँसन पर खिलत खगी रहै॥ खौर वारे भाल पर लोचन विशाल पर उर वनमाल पर जुगत जगी रहै॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुरवान पर श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगी रहै॥ नूपुर नगन पर कंजसे पगन पर आनँद मगन मेरी लगन लगी रहै॥ ७९॥

जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो जौन हाथ कूबरी मिलाई गह गात सों॥ जौन हाथ प्रह्लाद तात सों उबार लीनो जौन हाथ कंस मारयो बलभद्र साथ सों॥ जौन हाथ गोपनको गिरिवरकी ओट कीनो जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सों॥ हौंतो कहूं बार बार सुनो नाथ एक बार वही हाथ गहो मोको हाथी वाले हाथ सों॥ ८०॥

सवैया।

दीनदयालु सुने जब ते तबते मनमें कछु ऐसी बसी है॥
तेरो कहायके जाऊं कहां तुमरे हितकी पट खैंचि कसी है॥
तेरो ही आसरो एक मलूक नहीं प्रभु सों कोउ दूजो यसी है॥
एहो मुरार पुकार कहो अब मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है॥ ८१॥

कवित्त।

मोरमुकुट वारो धरे वेष नटवारो छुटी लोल लट वारो सोतो

जगत उज्यारो है ॥ सांवरे वरण वारो मुरली धरण वारो संकट हरण वारो नंदजूको प्यारो है ॥ दानव दलनवारो छविको छलन वारो मंदसी चलन वारो पोखी उर धारो है ॥ कंज से चखन वारो भृगु लता लख वारो मोरपक्ष वारो सो हमारो रखवारो है ॥ ८२ ॥

देव दृग तारे तोहिं ध्यावैं देवतारे तैंने एते पतित तारे जेते नभ में न तारे हैं ॥ तारे रतनारे जिन कई कोटि दीननके दुःखन बिदारे कहै श्रीपति पुकारे हैं ॥ नीरदवरन तनु कारे छविशोभधारे राधाके प्राणप्यारे यशुदाके बारे हैं ॥ नंदके दुलारे धराधर के धरन हारे मोरपक्षवारे सो हमारे रखवारे हैं ॥ ८३ ॥

राग जंगला ।

श्याम सुंदर मनमोहनी मूरत सुंदर रूप उजारी रे । चरण कमल पिंडुरी जंघन पर सोहत कटि लचकारी रे ॥ नाभि गँभीर हृदय अति कोमल कृपासिंधु बनवारी रे । भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छवि बलिहारी रे । नाशा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रज-नारी रे ॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिनि लट बलदारी रे । भाल विशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन सुखकारी रे ॥ युगल किशोर मोरपख धारी अब क्यों सुरत बिसारी रे ॥ ८४ ॥

राग भैरवी ।

मेरी तो विहारी जी प्यारे तोहिं लाज । माया फंद गले में डारयो जग भर्मायो बे काज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज । बलिहारी का बेडा पार उतारो अपनो जान ब्रजराज ॥ ८५ ॥

राग बिलावल ।

माधोजू जो जन ते बिगरै । सुन कृपालु करुणामय कबहूं प्रभु नहिं चित्त धरै ॥ ज्यों शिशु जननि जठर अंतरगत शत अपराध करै । तऊ तनय तनु तोष पोष चित विहँसत अंक भरै ॥ यदपि विटप जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील

सुशीतल रिपु तनु ताप हरे ॥ कारण करन अनंत अजित कह किहिंविधि चरण परे।यहकलिकाल चलत नहिं मोपै सूरशरणउबरे॥

राग भैरवी।

जेजन शरण गयेते तारे। दीनदयालुप्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नंद-दुलारे ॥ माला कंठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे । जितने रवि छायाके कनका तितने दोष हमारे ॥ तुमरे दरश प्रताप तेज ते ततक्षण ते सभ टारे । मानिकचंद प्रभुके गुण ऐसे महा पतित निस्तारे ॥ ८७ ॥

राग बरवा।

शरण गये प्रभु को न उबारे। जित जित भीर परी भक्तन को चक्र सुदर्शन तहां सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अंबरीषहिं दुर्वासा को कोप निवारे । ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुख टारे॥सूर श्याम बिन करै और को रंगभूमि में कंस पछारे॥८८॥

राग बिलावल।

अबके माधो मोहिं उधार। मगन होत भवसिंधु में कृपासिंधु मुरार॥नीर अति गंभीर माया मोहलहर तरंग। लिये जात अगाधको वर गहै ग्राह अनंग॥मीन इंद्रिय अतिहिं काटत पेट अघ शिर भार। भूमि पाइ न जात जितकित उरझ मोह सिवार ॥ क्रोध दंभ भयान तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर ॥ परचो बीच विहाल विह्वल सुनहु करुणामूल। श्याम भुज गह काढि डारहु सूर जन ब्रजकूल ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री।

कबहूं नाहिंन गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश भक्तन अभय दियो ॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल लियो। अघ अरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो॥ कंसवंश वध जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो । कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर आन छियो॥ काकी शरण जाउँ यदुनंदन

नाहिंन और वियो । सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुलहियो९०

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल । काम क्रोध को पहर चोलना कंठ विषयकी माल ॥ महा मोहके नूपुर बाजत निंदा शब्द रसाल । तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल ॥ मायाको कटि फेटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल । कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहिं काल ॥ सूरदास की सबी अविद्या दूर करो नँदलाल ॥ ९१ ॥

राग कल्याण ।

तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो । सुनिये दानि दयालु देव मणि बहु बड़ रूप रच्यो ॥ कियो स्वांग जल हूँ थल हूँ में एकौ तौ न बच्यो । शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अंतर हो जु सच्यो ॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसांई कह कछु जाय जच्यो । इतनी तो कहो सूर पुरोदै काहे मरत पच्यो ॥ ९२ ॥

राग टोडी ।

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी । अजामील गीध व्याह इनमें कहो कौन साध पक्षीहूं पद पढात गणिका सी तारी ॥ ध्रुव के शिर छत्र देत प्रहलादको उबार लेत भक्त हेत बांध्यो सेत लंक पुरी जारी । तंदुल देत रीझ जात साग पात सों अघात गिनत नाहीं जूठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतने हरि आयगये वचनन आरूढ़ भये सूरदास द्वारे ठाढ़ो आँधरो भिखारी ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरि जन छांड हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बडो है मोते सब पतितन में नामी । सूर पतितकी ठौर कहां है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ९४ ॥

राग झिंझोटी।

मोसम कौन अधम जग माहीं। भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निधि वन द्रुम वेलिन छाहीं॥ चिंतन करत न ललित किशोरी युगल लाल दीने गर बाहीं। निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं॥ ९५॥

राग धनाश्री।

मेरी सुध लीजो श्री नंदकुमार। अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार। शोभन जनकी तारन बिरियां लाई एती बार॥ ९६॥

मेरी सुध लीजो श्री ब्रजराज। और नहीं जग में कोउ मेरो तुमहिं सुधारन काज॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शबरी गजराज। सूर पतित तुम पतित उधारन बांह गहेकी लाज॥ ९७॥

राग बिलावल।

तुम गुपाल मोसों बहुत करी। नरदेही सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी॥ गर्भवास अति त्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी। पावक जठर जरन नहिं दीनो कंचन सी मेरी देह करी॥जग में जन्मि पाप बहुकीने आदि अंत लौं सब बिगरी। सूर पतित तुम पतित उधारन अपने बिरद कि लाज धरी॥ ९८॥

राग पीलो।

टुक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी। चरण सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुता की लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी सोच कहा मेरी बारी॥ भक्त सुदामाके दरिद्र विदारे जल डूबत गजराज उबारे अजामील से पापी तारे हमरी कहा विचारी। सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण तैं मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई बाहन तज पाँयन उठ धाई निज भक्तनके सदा सहाई सुध लेहु वेग हमारी॥ नाम सुजानराय तेरो कहिये निशि

दिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहिं सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ ।

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाले कहावत मैलो नीर भरो । जबमिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजा में राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो॥अबकी वेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो१००

राग सोरठ ।

म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन । हमरे अवगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान॥काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश भूल्यो पद निर्वान । अबतो शरण गही चरणनकी मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान । भवसागर में बह्यो जात हौं राखिये श्याम सुजान ॥ हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहिं सुमिरयो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान ॥ १०१ ॥

राग बडहंस ।

कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरयो शरीर ॥ रंका तारयो बंका तारयो तारयो सदन कसाई । सुआ पढावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धन्ने भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई । सैन भक्त कीविपति निवारी आप भये प्रभु नाई ॥ वृंदावनकी कुंज गलिन में लगीश्याम से डोर।अबकी बेर उबारो प्यारे लीनी कबीरा ने ओट१०२

राग देश सोरठ ।

सुन लीजै विनती मोरी । मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे । भवसागर पार उतारे ॥ मैं सब का नाम न जानूं । मैं कोइ कोइ भक्त बखानूं ॥ अंबरीष सुदामा नामा ।

पहुँचाये हैं निज धामा ॥ ध्रुव पांच बरस का बाला । तैं दर्श दियो नँदलाला ॥ धन्ने का खेत जमाया । कबीर घर बैल ल्याया ॥ शबरीके तैं फल खाये । सभ काज किये मन भाये ॥ सदना ते सैना नाई । तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्माकी खिचडी खाई । तैं गणिका पार लगाई ॥ मीरा तुमरे रँग राती । यह जानत हौं सब भाँती ॥ चरणदास तेरा यश गावे । फिर जन्म मरन नहिं पावे ॥ १०३ ॥

राग कान्हरो ।

ऐसी कब करिहो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणन जु निरंतर अनुरत रसना चरित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तनु कर कंजन दल माल ॥ ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम अपनो भायो भाल । सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल ॥ १०४ ॥

राग झिंझोटी ।

राधा रमण चरण जो पाऊं। शुक समान दृढ कर गह राखों नलिनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरंद कमल बर शीतल हीय लगाऊं । विरह जनित दृग तपन किशोरी सहजै निरख नशाऊं १०५

राग सारंग ।

आनंद कंद सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिंधु राखो मान अनेक विघन टारियेजी ॥ जहां जहां परी भीर तहां तहां धरी धीर गरुड छोड वेग धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी ॥ कहत है महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥ १०६ ॥

राग प्रभाती ।

नाम की पैज राखो धनी । संकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभा ते प्रह्लाद छुड़ाये द्रौपदी के पुनि चीर बढाये

गज के फंदन काट निकाले सुनतहि टेर कनी । नामदेव की गऊ जिवाई धन्नेके दुध पीया जाई सुदामाके मंदिर ऊंचे साजे सुरत सों सुरत बनी ॥ कबीर राख गैयर से लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी । जयदेवकी अष्ट-पदी विचारी मीराबाई की जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु प्रनी ॥ भीलनी ते लै वन फल खाये त्रिलोचन के त्रतिया हो धाये अंबरीष भक्तको बरत रखायो चक्रकी फेर अनी । कर्माबाई की खिचडी लीनी सैनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी धुरू राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ सुवा पढावत गणिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक वेदी कियो हजूरी राख्यो लायतनी । दुनीदास प्रभु संतसहाई असुर सँहारत वेगहि आई ताको नाम हृदय में राखो सुमिरो एक मनी ॥ १०७ ॥

राग भूपाली जंगला ।

गजकी वाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज । श्री श्री श्री चकृत भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज ॥ कटिको पीतांबर कहूं गिरोहै तनुकी सुध बिसराये महाराज ॥ ग्राह मार गजराज उबारयो सुरन सुमन झर लाये महाराज ॥ रत्न हरी प्रभु शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज ॥ १०८ ॥

राग विहाग।

दीन भयो गजराज हीन भयो बलहूंते टूट गयो मान टेरयो हरी हरी करके ॥ पौढे प्रभु रमा संग पीतपट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके ॥ आधीरात धाये नाथ चक्र सुदर्शन लिये हाथ तोड दीने तंदुवाको जरी जरी करके॥तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तनके सदा साथ गरुड छोड धाये नाथ करी करी करके १०९

चौपई छंद ।

द्रौपदि धारयो ध्यान जबहिं मन आतुर होई । तुम विन श्रीनँद लाल और मेरो नहिं कोई॥बूडत हों दुखसिंधु में, शरण द्वारकानाथ ।

मुरारी ॥ शूर समूह भूषण सब बैठे भीष्म द्रोण कर्ण व्रत धारी । कहि न सकैं कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी ॥ बल विहीन पांडव सुत डोलैं भीम गदा कर सों महि डारी । रही न पैज प्रबल पारथकी जबसे धरणि धर्मसुत हारी ॥ लाक्षा गृह ते जरत उबारचो नाथ तुम्हें छोड काहि हौं पुकारी । अब लग नाथ नाहिं कछु बिगरचो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज दास दासिनि की बहुरि आय का करिहो मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दरश देव फिरि पछितैहो देख उघारी ॥ ११२ ॥

भजन ।

जब पट गह्यो दुःशासन कर सों । इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिकाबर सों ॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहौं कुल परिवार सभापति घर सों । बूडत वेग बांह गह राखो दीनानाथ दुःखके सरसों॥हो भगवंत अंत पछितैहौ बहुरि मिलोगे आय नरहरि सों । युगल करी मानो वसन पूतरी लई लपेट शीश पद करसों॥११३॥

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु दीन ह्वैके द्रुपददुलारी यों पुकारी है ॥ आपनो सबल छाँड ठाढे पति पारथ से भीम महा भीम ग्रीवा नीचे कर डारी है ॥ अंबर लौं अंबर पहाड़ कीनो शेश कवि भीषम करण द्रोण सभी यों विचारी है । सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि सारी है कि नारी है कि नारी है कि सारी है ॥ ११४ ॥

राग देश ।

मेरे माधोजी आयों हौं सरे । तेरा बार बार यश गाऊं साँवरे आयों हौं सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवंती यह मन में उचरे । लिख पतियां द्विज हाथ पठाऊं द्वारका गमन करे ॥ लगन लिखाय चँदेरीको भेजा कागज मेल धरे । रुकमैया जब मानत नाहीं कूडे

वचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लंगर वेर खडे । पद्म के स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि यादकरे ॥ ११५ ॥

राग धनाश्री।

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी । छोनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूँ न सुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढी विपति बनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके सँग जीवत नहिं जैहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरी से बहुती कर जानो और कहांको धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये राख लीजै रुकमनी ॥ ११६ ॥

राग आसावरी।

संतन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी । पिता कहै मैं ब्याहूं द्वारका भैया कहत चँदेरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजै दासी तडफ रही तेरी । इतदल जोड शिशुपाल आयो ब्याहनको बर जोरी ॥ जब शिशुपाल बेदीपर बैठे जल बल हो जाऊं ढेरी । सिंहको शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी । जो मेरेको बरलै जावै क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंडिनपुरमें अंबिका देवी पूजन जात सबेरी । पदमके स्वामी अंतर्यामी वेग खबर लीजे मेरी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ।

सुन अलकां वाले कृष्णजी मोरे मनमें आन बसो । जरद बाना पहरके शिर मुकुटको कसो ॥ चलतेहो टेढ़ी चाल मत घायल मुझे करो । शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । महाराज तेरी कृपा से कई कोटि पतित तरे ॥ ११८ ॥

राग झपताल।

मोमन बसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर माल की मणि श्याम ॥ श्याम अंगन श्याम भूषन वसन हैं अति श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविंद जन भये श्याम ॥ ११९ ॥

राग आसावरी ।

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी । संकट में इक संकट उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग बावर जाय गडरिया इक ढिग श्वान विहारी॥इक ढिग जा अग साडी इक ढिग जा बैठ्यो फंद कारी ॥ उलटी पवन बावरको लागी श्वान गयो ससकारी । बरनी से भुवंग जो निकस्यो तिन डस्यो फंदकारी ॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदास प्रभु तुमरे दरशको चरण कमल बलिहारी ॥ १२० ॥

बंधन काट मुरारी हमरे बंधन काटमुरारी । ग्राह गजराज लडैं जल भीतर ले गयो अंबु मँझारी ॥ गजकी टेर सुनी यदुनंदन तजी गरुड असवारी । पांचाली कारण प्रभु मोरे पग धार्‍यो गिरिधारी ॥ पट शठ खैंचत निकसत नाहीं सकल सभा पचहारी । चरण सपर्श परम पद पायो गौतम ऋषिकी नारी ॥ गणिका शबरी इन गति पाई बैठ विमान सिधारी ॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुख सों भज्यो इक बारी । विधीचंद दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा ।

दीजै दरश मोहिं चतुर भुजन कर । शंख चक्र गदा पद्म धारिये ॥ पीतांबर ओढंबर साजे गल मोतियन की माल मनोहर ॥ १२२ ॥

राग टोडी ।

तुम बिन श्री कृष्ण देव और कौन मेरो । कई अनेक ऐरावत ऐसो बल मेरो ॥ मैंतो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो । भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो ॥ सभी कुटुंब छोड नाथ सागर पद गेरो । जल में पग बोरत ही आन ग्राह घेरो ॥ मैं तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो । मात पिता भाई बंधु कुटुंब तो घनेरो ॥ दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो । केते गज ग्राह फंद अतुलित बल श्रीमुकुंद काटो भव फंद प्रभू जरा नजर फेरो ॥

डूबत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबंधु दीनानाथ विरद जात तेरो । लडत लडत देर भई आयो अंत मेरो ॥ जब लग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो । गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो ॥ सूरदास गरुड छोड करदिये निबेरो ॥ १२३ ॥

राग कान्हरा ।

आये आयेजी महाराज अपने भक्तके काजसारे । तज वैकुंठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये॥जबके दृष्टिपरे नँदनंदन भक्तहेतु रूप धारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चितलाये ॥ १२४ ॥

राग देश ।

म्हारो काँई बिगरेगो थारोई विरद लजेगो । रुकमैया बंधू जो बैरी कूडी साख भरेगो ॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूप से भूप अडेगो । पदमके स्वामी अंतर्यामी करता कौन कहेगो ॥ १२५ ॥

राग देश सोरठ ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय । विप्र तुम वेग धायो जाय ॥ लिख लिख भेजूं चीठियां जी मैं लिखां दुराय दुराय । है कोई हितकारी हमरो सुनत ही उठ धाय॥कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग राख्यो हंस कारण काग पहुँचे आय॥लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय । रुकमैया शिशुपाल आये जरासंध सहाय ॥ अंबिका पूजन चली है रुक्मिणि संग सहेलियां नाल । जे अंबे बर देत हैं श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने विरदकी लाज राखी सूर बलिबलिजाय ॥१२६॥

कवित्त दण्डक ।

कैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ कैसे तुम भीलनीके जूँठे बेर खाये हो ॥ कैसे तुम द्वारका में द्रौपदीकी टेर सुनी कैसे तुम गजके काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामाके छिन में दरिद्र हरे कैसे तुम उग्रसेन बंदी ते छुडायेहो । मेरी बेर एती देर कान मूँद रहे नाथ दीनबंधु दीनानाथ काहेको कहायेहो ॥ १२७ ॥

राग बिलावल ।

किन तेरो गोविंद नाम धरचो । लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरचो ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तंदुल भेट धरचो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करचो ॥ संदीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ्यो । सूरकी बिरियाँ निठुर है बैठे कानन मूँद धरचो ॥ १२८ ॥

राग धनाश्री ।

पतित पावन हरी नाम तिहारो कौनेहूं धरचो । हौं तो दीनदुखित संसृत रत द्वारे रटत परचो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करचो । ना जानों यह सूर महाशठ कौनदोषबिसरचो ॥

राग देश सोरठ ।

हरि हौं बडी बेर को ठाढ़ो । जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं में लिख काढो ॥ युग युग बिरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते । मरियत लाज पंच पतितन में हौं घट कहो कहांते ॥ कै अब हार मान कर बैठो कै कर बिरद सही । सूर पतित जो झूठ कहत है देखो खोल बही ॥ १३० ॥

राग धनाश्री ।

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो । तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करम हीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो । तीन लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो ॥ तारीजात कुजात प्रभूजी मोपर कृपा धारो । पतितन में इक नायक कहिये नीचनमेंसरदारो ॥ कोटि पापी इक पा सँग मेरे अजामील कौन विचारो । नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठतारो ॥ मोको ठौर नहीं अब कोऊ अपनो बिरद सम्हारो । क्षुद्रपतिततुम तारे रमापति अबनकरो जिय गारो ॥ सूरदास साँचो तब माने जो होय मम निस्तारो ॥ २३१ ॥

ग़ज़ल ।

जहां देखों वहीं मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है । उसी का सब है

जलवा जो जहां में आशिकारा है ॥ भला मखलूक खालिककी सिफ़त समझे कहां मुमकिन । उसी से नेत नेत ऐ यार वेदों ने पुकाराहै ॥ न कुछ चारा चला लाचार चारों हार कर बैठे। विचारे वेद ने प्यारे बहुत तुझको विचारा है ॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा परकाश है वरना । किसे ताक़त जो मुँह खोले यहां हर शख्स हारा है ॥ तेरा है तेज हर शै में काह से कोह तक प्यारे । उसी से कहके हर हर तुझको सब जग ने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारै ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं । कहैं निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है ॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपनेही चरणों में । भला है या बुरा है जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझै । कहै कर जोड राधानाथ इक तूही सहारा है ॥ १३२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें यादहो कि न याद हो । वो जो कौल भक्तोंसे था किया तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ सुनि गजकी ज्यूंहीं आपदा न विलंब छिन का सहा गया । वहीं दौड उठके पियादे पा तुम्हें० ॥ य जो चाहा दुष्टों ने द्रौपदी से कि शर्म उसकी सभा में लें । बढाया वस्तर को आप जा तुम्हें० ॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरने पै बेटे का । वह नरक से जो बचा दिया तुम्हें० ॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हें तुमने ऊंचों का पद दिया तुम्हें० ॥ खाना भीलनी के व जूठे फल कहीं साग दास के घर पै चल । यूहीं लाखों किस्से कहूं मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन वानरों में न रूप था नतो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हैं भाइयों का सा मानना तुम्हें० ॥ वह जो गोपी गोप थे ब्रजके सभ उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें ० ॥ कहो गोपियों से कहा था क्या करो याद गीता की जरा । वैदा भक्त उद्धार का तुम्हें० ॥ यह तुम्हारा ही हरीचंद है गो फसाद में जग के बंद है । है दासजन्म से आपका तुम्हें ० ॥ १३३ ॥

अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत । पापी हूं मुझे अरज से आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोह के वश में । पाबंद किया लोभने वेदाना कफस में ॥ हर एक घडी गुजरी है दुनिया कि हवस में । इक दिन भी नहीं काम का हर माह बरस में ॥ इक वक्त का तोशा नहीं औ शिर पै सफर है । पापों का बहुत बोझ है शिकस्ता कमर है ॥ हूं आपके चरणों से लगा जानलो इतना । कुछ और नहीं चाहता पर मानलो इतना ॥ जिस दम मेरी उम्मैद से घर वालोंको होयास । सब दूर हों सरकारही सरकार हों इक पास ॥ फैलीहुई शृंगारके फूलों की हो बूबास । मुरलीकी सदा कान में आतीहो चपो रास ॥ होजाऊं फना पाऊं जो इतना मैं सहारा । जब बंद हों आंखें तो मुकुट का हो नजारा ॥ दम लब पै हो सीने में तसव्वुर हो तुम्हारा । मिट कर भी जुदाई नहो चरणोंकी गवारा ॥ जो ब्रजकी रज है वही खाके कफे पा है । मिट्टी यहीं रहजाय तो वैकुंठ में क्या है ॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकीं है । जो जर्रा है यां खातमें कुदरत का नगीं है ॥ उठाहै यहीं आके निकाबे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आताहै यां जलवएजावीद ॥ जो खाक में यां मिल गये किसमत है उन्हीं की । जो मिट गये यां आके हकीकत है उन्हींकी ॥ गलियों मे जो यां घिसटे हैं जिन्नत है उन्हींकी । जोभी-खको यां खाते हैं दौलत है उन्हीं की ॥ वह ताज शाही पर भी कभी हाथ न मारें । दुनिया का मिले तख्त तो इक लात न मारें ॥ कहसक्ताहूं क्या ब्रज की खूबी व लताफत । वह आंख नहीं जिसमें हो नज्जारे की ताकत ॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ । मैं यह भी नहीं चाहता बिगडी को बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ । इतना भी नहीं हूं जिसे चरणों से लगाओ नकशे कफे पाफूंक निकलने को तो मिलजाय ॥ दो हाथ जमीं ब्रज में जलने को तो मिल जाय ॥ देखो न खुदाईकी करामात बिगड जाय । ऐसा नहो शोले की कहीं बात बिगड जाय ॥ १३४ ॥

राग परज ।

मैंनूं तारी वे रब्बा बंदी औगुण हारी ॥ सभ सैयां गुन वालडियां वे मैं औगुण हारी ॥ जिस कारण शौह भेज्या लाल वे मैंनूं तारीं वे रब्बा सोईयो गल्ल विसारी ॥ पकड तुला मैं तर पैयां लाल वे मैंनूं तारी वे रब्बा सिर पर गठरी है भारी ॥ इकनां दाज रंगा लिया लाल वे मैंनूं तारीं वेरब्बा आईया साडड़ी वारी ॥ हुकुम साईं दे पर्वत तरदे लाल वेरे मैंनूं तारीं वेरब्बा बंदी कौन विचारी ॥ इकनां सेजां मानीयां लाल वे मैंनूं तारीं वे रब्बा बंदी रही है कुआरी ॥ कहै शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैंनूं तारीं वे रब्बा अमलां बाझ खुआरी ॥ १३५ ॥

राग बडहंस ।

अपने संग रलाईं वे मैंनूं अपने संग रलाईं ॥ राह पवां तां धाडी बेढ बेले लखाँ बलाईं ॥ चीते बाघे कौडल हारे भखँर करन अदाईं॥ भार तेरे जागत्तर चब्या वेडा पार लंघाईं ॥ हौल दिले दा थर हर कंबे झबदे पार लंघाईं ॥ पहलां नेह लगायासी ऐवें आपे चाईं चाईं ॥ मैं लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाईं ॥ जेकर आगे है लड लाया तीवें गले लगाईं ॥ बुल्ला शाह शहाना मुखडा घूंघट खोल दिखाईं ॥ १३६ ॥

राग सोरठ ।

मालक कुल आलम केहो तुम सांचे श्री भगवान । स्थावर जंगम पानी पावक धरती बीच समान ॥ सभमें जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरबान । सुदामाके दरिद्र खोये पाँडे की पहँचान ॥ दो मूठी तंदुलकी चाबी बखशे दो जहान । भारत में अर्जुनकी खातर आप भये रथवान ॥ उसने अपनी कुलको देखा छुट गये तीर कमान । ना कोइ मारे ना कोइ मरता तेरोही अज्ञान ॥ यह तो चेतन अचल अमर है यह गीता को ज्ञान । मुझ आजज पराकिरपा कीजे बंदा अपना जान ॥ मीर माधो मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १३७ ॥

माधव गति तेरी नाजानी ॥ मारन कारन चली पूतना स्तन विष लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गउअनको दान करत है राजा नृग सों दानी । ताको मुख किरले का दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलिराजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ बहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ बडे बडे राज भूपनकी बेटी तिनको योग दृढानी । कुब्जा मालन कंसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचो पांडव अधिक सनेही सो हिमअचल गिरानी । दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥ शेषनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी । चौदा रत्न मथन कर काढे तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी । सूरदास आनंद मगन भयो प्रेम भक्ति मन मानी ॥ १३८ ॥

राग कान्हरा ।

पूतना विष दे अमृत पायो । जो कछु देयत सो फल पैयत नाहक वेदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा बलि कीनो बांध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ रंक जन्मके मित्र सुदामा कंचन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेत कह गायो ॥ १३९ ॥

राग धनाश्री ।

अविगति गति जानी न परै । मन वच अधम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष सों मातो केहरि भूख मरै । तज उद्यम अकाश कर बैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुंक तृण बूडत पानी में कबहुँक शिला तरै । बागर से सागर कर राखे चहुँ दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाहीं जल में अगिन जरै । राजा रंक रंक ते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरजाय छिनक में जो प्रभु टेक करै ॥ १४० ॥

राग सोरठ ।

हरिकी गति नहिं कोऊ जानै । योगी यती तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं रावरंक करडारे । रीते भरे भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपै देखनहारा । नाना रूपधरै बहुरंगी सब से रहत नियारा ॥ अमित अपार अलक्ष निरंजन जिन सब जग भरमाया । सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ १४१ ॥

राग कान्हरा ।

ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं । हमरे संकट काटो जी सांवरे कृपा करौ प्रह्लादकी नाईं ॥ तोहिं त्याग और जो सुमिरे सो नर पैंदे नरकन माहीं । नंददासको दीजे अभयपद चरण कमल राख्यो मन माहीं ॥ १४२ ॥

राग सोरठ ।

दरमांदेठाढ़े दरबार । तुझ बिन सुरत करै को मेरी दरशन दीजै खोल किंवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार । माँगों कौन रंक सब देखों तुमही ते मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिन पर कृपा भई है अपार । कह कबीर तुम समरथदाते चार पदारथ देत न बार ॥ १४३ ॥

राग झंझोटी ।

हरी अब बनिहै नाहिं बिसारे । दीन दयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे । मोहन लाल आपनो पन सोइ बनिहै नाथ सम्हारे १४४॥

राग अडाना ।

अपने विरदकी लाज विचारो । सभ घटके तुम अंतर्यामी भवसागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछू न मानो ज्यों जानो त्यों पतित उधारो । जानकी दास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमन का दोष निवारो ॥ १४५ ॥

राग परज ।

भरोसो कृष्णको भारी ॥ ग्राह ने गजराज घेरयो बल कियो भारी । हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रह्लाद गिरि सों डार दीनो कीनी रखवारी । अगिनहूंसों राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कूबरी तारी । ध्रुवको दीनी अटल पदवी कियो घर वारी ॥ विभीषणको लंक दीनी रावणा मारी । आगे पतित अनेक तारे सूरकी बारी ॥ १४६ ॥

राग बिभास ।

और कोइ समझो तो समझो हमको एती समझ भली है । ठाकुर नंद किशोर हमारे ठकुरायन वृषभानु लली है ॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधा सँग ललिता जो अली है । नित को लाड चाव सेवा सुख भाग बेलि बढ सुफल फली है ॥ वृंदावन बीथिन यमुना तट विहरनब्रज रज रंग रली है । कहै भगवान हित रामराय प्रभु सभते इनकी कृपा बली है ॥ १४७ ॥

राग विहाग ।

हमरी आँखिनके दोउ तारे । राधा मोहन मोहन राधा यह दोउ रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर ब्रज बरसाने वारे । शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४८ ॥

कुण्डलिया ।

आचारज ललता सखी, रसिक हमारी छाप ॥ नित्त किशोर उपासना,युगल मंत्र को जाप॥युगलमंत्रको जाप वेद रसिकनकी बानी॥ वृन्दावन निज धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले बिना सिधि होय न कारज।भगवत सब सुखदेन प्रगट भये रसिकाचारज॥

राग धनाश्री ।

हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुंजमहलके वासी । नइ नइ केलि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ बीरी बसन

सुगंध आरसी रुचि ले करत खवासी । दत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस कह कह भगवत दासी ॥ १५० ॥

राग कालिंगडा ।

हम नँदनंदन मोल लिये । यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये ॥ सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिगत हिये । सूरदास प्रभुजूके चेरे जूँठन खाय जिये ॥ १५१ ॥

राग जंगला ।

साँवरो जग तारन आयो । निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरा में हरि जनम लियो है गोकुल जाय बसा यो, लाल यशुमति को कहायो ॥ भानुसुता में कूदि परे हैं विषधर जाय जगायो । फणपति लै पाताल पठायो तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारत में प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें बहायो । गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो, भर्म मनको जो मिटायो॥वृंदावन में रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो हरष निरखकर गायो, बहुरि इतना सुख पायो ॥

दोहा ।

चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय । रामकृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय ॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारें । सो अधरन पर मुरली धारें ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं । ताहि पूत कहि नंद बुलावहिं ॥ शिव सनकादिक अंत न पावैं । सो सखियन सँग रास रचावैं ॥ सकल लोक में आप पुजावैं । सो मोहन ब्रजराज कहावैं ॥ निरंकार निर्भय निरवाना । कारण संत धरे तिन जामा ॥ निर्गुण सगुण भेद नाकोई । आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा ॥ योगी पावै योग सों, ज्ञानी लहै विचार ॥ नानक पावै भक्ति सों, जाको प्रेम अधार ॥ १५३ ॥

राग धनाश्री ।

हरि संतनकी पैज राखत आप निरंकार भाषत ॥ खंभ से प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय रिसाय असुरनको उदर छेद

प्रह्लाद तिलक थापत ॥ गहरे रंभीर ग्रस्यो कालवश ले ब्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फंदन काटत । बीच सभा आन खडी द्रौपदी को भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौडके हरि आन खडे अपने जन काज करे विलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १५४ ॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति यदुराई । को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल विहाई ॥ कनक भवन में रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामाहिं धाय लियो उर लाई ॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई । तहिं तहिं ब्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई । सो तजि विदुर साग भोजन किय बहुत सराह मिठाई ॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु विसराई । श्रीरघुराज भली भारत में पारथ सारथि आई ॥ १५५ ॥

राग पूरवी ।

जय मनमोहन श्याम मुरारी । जय ब्रजनाथ मुकुंद विहारी ॥ जय नखपर श्री गिरिवर धारी । जय श्रीकृष्णचंद्र बनवारी ॥ मोसे नाथ कछु लखी न जाई । वरणों कहँ लग तोरिबड़ाई ॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई । थकित भये वर्णत श्रुति चारी ॥ है अपार अलख तव माया । ब्रह्मादिक ने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिन ने ध्यान लगाया । पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहां तलक गुण तुमरे गाऊं । कौन हृदय में ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं । शोच भयो जन उर यह भारी ॥ सुध लीजे अबतो प्रभु मेरी । निज जन समझ करो मत देरी ॥ दीनदयालु शरण हूं तेरी । कृपा करो भक्तन सुखकारी ॥ १५६ ॥

राग जंगला ।

जय नारायण ब्रह्म परायण श्रीपति कमलाकंतं । नाम अनंत

कहां लग वरणों शेष न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं । मच्छ कच्छ शूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंतं । जन्म लियो वसुदेव देवि गृह नाम धरचो नँदनंदं ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण फण निरत करंतं । बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिंतामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलियुग अंत अनंतत होकर कलकी रूप धरंतं ॥ दश अवतार हरिजूके गाये सूर शरण भगवंतं ॥ १८७ ॥

लावनी ।

नाथ तुम दीनन हितकारी । पतित पावन कलिमल हारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धारचो । नखन सों हरनाकुश मारचो ॥ ब्रह्मादिक थरहर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात । जन अपने प्रह्लाद के, धरचो शीश पर हाथ ॥ भक्तकी विपति कटी सारी ॥ नाथ० ॥ जुडे दल दोउ ओर भारी । करी जब भारत की त्यारी ॥ भरुही दीनहो पुकारी । खबर मेरी लीजो गिरिधारी ॥ ऐसोको या जगतमें, मेरो राखनहार । इतनी सुनत तब तुरतही, गज घंटा दियो डार ॥ करी अंडनकी रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी । करन जो लगे जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्म धारी । कर्ण भीषण द्रोणाचारी ॥ कहा भयो वैरी प्रबल, जो सहाय बलबीर । दश हजार गज बल घटचो, घटचो न दश गज चीर ॥ दुःशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राह ने गजको गहलीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनो । याद तब गोविंद को कीनो ॥ सुनतहि टेर गजेंद्र की, उठधाये ब्रजराज । सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज ॥ जनार्दन संतन दुख हारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १८८ ॥

राग देश ।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश । हे पूरण हे सर्व

में दुख भंजन गुण तास ॥ हे संगी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक । हे गोविंद हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ हे अपरंपर हर हरे है भी होवन हार । हे संतनके सदा सँग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय । नानक दीजै नाम दान राखौं हिये परोय ॥ १५९ ॥

छंद ।

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं ॥ मुकुट कुंडल कर लकुटिया सांवरे राधे वरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड वाहन चरण नित सुखसा- गरं ॥ करत केलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं । अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुंदर केशवं । वंसीधर वसुदेव छैया वलि छल्यो हरि वामनं । जल डूबते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने इक पलं । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौं उपमाकरं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशि दिन नाम जप नित नागरं ॥ १६० ॥

प्रथम गुरुके चरण वंदों जासों ज्ञान प्रकाशतं । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविंद माधव वासुदेव श्रीवामनं । मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरा में केशोराय विराजे गोकुल बाल मुकुंदजी । श्रीवृंदावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविंदजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे । धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखाबने ॥ ग्वाल बाल संग सखा विराजे संग राधा भामिनी । वंसीवट तट निकट यमुना मुरली की टेर सुहामिनी ॥ कृष्ण कलिमल हरन सबके जो भजें हरि चरन को । भक्ति अपनी देहु माधो भवसागरके रतन को ॥

जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वंभरं । द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकरं । कृष्ण अष्टपदी की धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं । गुरू रामानंद नीमानंद स्वामी छबि दत्तदास समापतं ॥

राग भैरव ।

मंगल आरती गोपाल की । नित उठ मंगल होत निरख मुख चितवन नयन विशाल की ॥ मंगल रूप श्यामसुंदरको मंगल छबि भ्रुकुटी भालकी । चतुरभुज दास सदा मंगल निधि बानिक गिरिधर लालकी ॥ १६२ ॥

राग रामकली ।

आरति कीजै श्याम सुंदर की । नंदकुमार राधिका वर की ॥ भक्ति कर दीप प्रेम कर वाती । साधु संगति कर अनुदिनराती ॥ आरति ब्रज युवती मनभावे॥श्याम लीला हित हरिवंश गावे॥१६३॥

आरती कीजै सुंदर वर की । नंदकिशोर यशोदा नंदन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ नव विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन कर की । विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुज धरकी ॥ १६४ ॥

राग कालिंगडा ।

आरती लीजो श्री नंदके लाला मदन गुपाला । टेरत हैं कबके जन ठाढे होउ वेग दयाला ॥ कोटि शशि तेरे नखकी शोभा कहां लौं दीपक बाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद बाजे क्या रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना विधि बहु बाला । खंड ब्रह्मंड त्रैलोक नाचे हौं क्या कीट कंगाला ॥ आछी तेरी आरती आछी तेरी शोभा आछीतेरी भक्ति रसाला । भगवान दास पर किरपा कीजे मेटियजी यमजाला ॥ १६५ ॥

राग श्याम कल्याण ।

आरति युगल किशोर कि कीजै । तन मन प्राण निछावर कीजै॥ गौर श्यामसुख निरखन कीजै । हरिको स्वरूप नयन भर पीजै ॥ रवि

शशि कोटि वदन जाकी शोभा । ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलन कि सेज फूलन गल माला । रत्न सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोर मुकुट कर मुरली सोहै । नटवर वेष निरख मन मोहै ॥ ओढे नील पीत पट सारी । कुंजन ललना लाल विहारी ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवर धारी । आरति करत सकल ब्रजनारी ॥ नँदनंदन वृषभानु किशोरी । परमानँद स्वामी अविचल जोरी ॥ १६६ ॥

राग बरवा ।

कंचन सिंहासन रत्न जडित प्रकाश रवि सम सोहई । तापर विराजत श्यामसुंदर रूप मुनि जन मोहई ॥ मुख कमल पर अलिमाल सम अलकां कुँडल छवि पावई । हरि नाशिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जडित कानन स्वर्ण कुंडल छाजई । पट पीत गज मणि माल भूषण अंग धाम विराजई ॥ शुभ कंठ कंठी मणिमयी उर माल वैजंती लसै । भृगु रेख कौस्तुभ मणि जनेऊ देव मुनि जन मन बसै ॥ कंकण जडाऊ सहित पहुँची श्री कृष्ण हाथन में बने । प्रति अंगुरी मुँदरी विराजत रत्न नग लागे घने ॥ हरि वाम अँग सुवरण वरण अनूप अति राजत रमा । जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद उमा ॥ भुज चार कर में शंख चक्र गदा पद्म अति राजई । कटि पीत धोती किंकिणी दोउ चरण नूपुर बाजई ॥ श्री सहित विष्णु स्वरूप ऐसो प्रेम से जो ध्यावई । तत्काल पावन होतहै चारों पदारथ पावई ॥ १६७ ॥

राग गुर्जरी ।

श्रितकमलाकुच मंडल धृतकुंडल ए ॥ कलित ललित वनमाल जय जय देव हरे ॥ दिनमणि मंडल मंडन भवखंडन ए ॥ मुनिजन मानसहंस जय जय० ॥ कालिय विषधरगंजनजनरंजन ए ॥ यदुकुलनलिन दिनेश जय जय० ॥ मधु मुर नरक विनाशन गरुडासन ए ॥ सुर कुल केलि निधान जय जय० ॥ अमल कमल

दल लोचन भवमोचन ए ॥ त्रिभुवन भवन निधान जय जय० ॥ जनकसुताकृत भूषण जित दूषण ए ॥ समर शयित दशकंठ जय जय० ॥ अभिनव जलधर सुंदर धृतमंदर ए ॥ श्री मुख चंद्र चकोर जय जय० ॥ तव चरणे प्रणतावय मितिसंभावण ए ॥ कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय० ॥ श्री जयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मंगल मुज्ज्वल गीत जय जय० ॥ १६८ ॥

राग धनाश्री।

परम पुनीत प्रीति नँदनंदन यही विचार विचार। कहो शुक श्री भागवत विचार ॥ हरिजीकी भक्तिकरो निशिवासर अल्प जीवन दिन चार । चिंता तजो परीक्षित राजा सुन शिख शीख हमार ॥ कमलनयनकी लीला गावो मिट गये कोटि विकार। भजन करो विश्वास तजो नृप चिंता शोकनिवार ॥ खट्वांग दिलीप मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतवार। तुम तो राजा परमभक्त हो मानो वचन हमार ॥ हरि जीकी भक्ति युगोयुग वरणों आन धर्म दिनचार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार॥ कै राजा मोहिं भोजन दीजे कै जावो व्रत हार। राजाकहै मोहिंका संकटदीजो नाहिंन और उपाय। द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय॥ तब पांडवसुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार । चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रत हार ॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करते यही विचार । एको ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार ॥ सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार। सूर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार॥ १६९ ॥

राग सोरठ।

टेर सुनो व्रजराज दुलारे। दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय परचो हूं द्वार तिहारे॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे। भ्रमत रह्यो इन सँग विषयन में तोपद कमलन में उर धारे॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लिये

उधारे । यहां लौं खेप भरी रच पचके चकित रहे लखिके बनजारे॥ अबतो एक बार कहो हँसके आजहि सों तुम भये हमारे । याही कृपा ते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे ॥ १७० ॥

राग मलार ।

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत न टारे ॥ भक्तन काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहँ जहँ भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये ॥ जो भक्तन सों वैर करत है सो निज वैरी मेरो ॥ देख विचार भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो ॥ जीतों जीत भक्त अपनेकी हारे हार विचारों । सूर श्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥ १७१ ॥

राग सारंग ।

दास अनन्य मेरो निज रूप । दर्शन निमिष ताप त्रयमोचन पर्सत मुकत करत गृह कूप ॥ मेरी बांधी भक्त छुडावे बांधै भक्त न छूटै मोहि । एक बेर मोको गहि बांधे तो पुनि मोपै जुवाब नहोहि ॥ मैं गुण बंध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास । नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेम प्रकाश ॥ १७२ ॥

राग विभास ।

ऊधो हौं दासनको दास । जो जन मेरो नाम जपतहै मैं तिनहीके घट परकास ॥ धन्ने के मैं गऊ चराई नामेंको देहरा फेरिया । त्रिलोचन के मैं भयो ब्रतीया सुदामें को दरिद्र हरिया ॥ कबीर के मैं रह्यो बनिजारा सैने की विरती धाया । गजके जाय चरण गहे मैं काढ जलों थल ल्याया ॥ जो जन कहत करौं मैं सोई संत मेरी रहरास । हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावतहै दुनीदास ॥

राग काफी ।

जो जन ऊधो मोहिं न बिसारे ताहि ना बिसारों छिन एक घरी । जो मोहिं भजे भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्मके फंदन राखों सुख आनंद करी । चतुर सुजान

सभामें बैठे दुःशासन अनरीतकरी ॥ सुमिरण कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर उबार धरी। ध्रुव प्रह्लाद रैनि दिन ध्यावें प्रगट भये वैकुंठ पुरी ॥ भारत में भरुहीके अंडा तापर गज को घंट ढुरी। अंबरीष गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छांड़ि करी॥ सूर,के स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीश हरी॥ १७४॥

फुटकर पद.

राग रामकली।

जयति श्रीराधिके सकलसुख साधिके तरुणि मनि नित्त नवतनु किशोरी। कृष्णतनुलीन घन रूपकी चातकी कृष्णमुख हिमकरनकी चकोरी ॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी कृष्ण दृग मृगज बंधन सुडोरी । कृष्ण अनुराग मकरंदकी मधुकरी कृष्ण गुणगान रससिंधु बोरी ॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यो सुन्यो चतुर चौसठ कला तदपि भोरी। विमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्त चोरी ॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ १७५ ॥

धनि यह राधिकाके चरण। सुभग शीतल अति सकोमल कमल के से वरण ॥ रसिक लाल मन मोदकारी विरह सागर तरण। विवस परमानंद छिन छिन श्यामजीके शरण ॥ १७६ ॥

मेरी मति राधिका चरण रज में रहो । यही निश्चय करचो अपने मनमें धरचो भूलके कोऊ कछू औरहू फल कहो ॥ करम कोऊ करो ज्ञान अभ्यास हूं मुक्तिके यत्न कर वृथा देहो दहो। रसिक वल्लभ चरण कमल युग शरण पर आश धर यह महा पुष्ट पथ फल लहो ॥ १७७॥

राग मलार ।

हमारे माई श्यामजीको राज । जाके अधीन सदाही साँवरो या ब्रजको शिरताज ॥ यह जोरी अविचल श्री वृंदाबन नहीं और से काज। विट्ठल विपुल विनोद विहारन ज्यों जलधर सों गाज ॥

राग परज ।

हम श्री श्यामजूके बल अभिमानी । टेढे रहैं मोहन रसिया सों बोलें अटपटी बानी ॥ पड़े रहैं अलमस्त झकोए शिरपर राधा रानी । किशोरी अलीके प्राण जीवन धन बृंदावन रजधानी ॥१७९॥

सवैया ।

ब्रह्म में ढूंढ्यो पुराणन वेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन ॥
देख्यो सुन्यो न कहूं कबहूं वह कैसो स्वरूप औ कैसे सुभायन ॥
ढूंढत ढूंढत ढूँढि फिरयो रसखानि बतायो न लोग लुगायन ॥
देख्यो कहां वह कुंज कुटीन में बैठे पलोटत राधिका पायन ॥ १८०॥

राग कल्याण ।

राधाजी सुहागन राधे रानी । श्याम सुंदर ब्रजराज लाड़िलो ताके वश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र विराजै वृंदावन रज-धानी । जीत लियो ब्रजराज पपीहरा आनँद घन रसदानी ॥ १८१ ॥

राग विहाग ।

राजत निकुंज धाम ठकुरानी । कुसुम सेज पर पौढी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललिता चरण पलोटत लाल दृष्टि ललचानी । पांय परत सजनीके मोहन हित सों हाहा खानी ॥ भई कृपालु लाल पर ललता दे आज्ञा मुसुकानी । आवो मोहन चरण पलोटो जैसे कुँवरि न जानी ॥ आज्ञा दई सखीको प्यारी मुख ऊपर पटतानी । बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजै सुख सानी ॥ गावनलगे रसिक मनमोहन तब जानी महरानी । उठ बैठी व्यास की स्वामिनी श्रीवृंदावन रानी ॥ १८२ ॥

राग रामकली ।

नव कुँवर चक्र चूडा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मणि पट्टरानी। शेश गृह आदि वैकुंठ पर्यंत लौं लोक थानैत ब्रज राजधानी ॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारों जहां भरत पानी।

सूर शशि पहरुवा पवन जल इंद्रहू वरुण दासी भाट निगम बानी ॥ धर्म कुतवाल शुक सूत नारद जहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी । सत्व गुण पौरिया काल बँधुवा जहां डांडी पति काम रति सुख निशानी ॥ कनक मरकत धरणि कुंज कुसमित महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी । पल न बिछुरत दोऊ तहिं न पहुँचत कोऊ व्यास महलिन लिये पीकदानी ॥ १८३ ॥

राग गौरी

वृंदावनके राजाहैं दोउ श्याम राधिका रानी । चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरैं जहँ पानी ॥ कर्म धर्म दोउ बटत जेवरी वर छाये ब्रह्मज्ञानी । योगी यती तपी संन्यासी तिनहूं नेक न जानी ॥ पचिहारे वेद पुराण लगनिया गावत सगुणियां बानी । घर घर प्रेम भक्ति की महिमा सहचरि व्यास बखानी ॥ १८४ ॥

राग देवगंधार ।

ब्रज नव तरुणि कदंब मुकुट मणि श्यामा आज बनी । नख शिख लौं अँग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कवरी गूंथत कच कनक कंज वदनी । चिकुर चंद्रिकन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी ॥ सौभग रस शिर श्रवत पनारी पिय सीमंतठनी । भ्रुकुटि काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी॥तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी । दशन कुंद सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ चिवुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल बिंदु कनी । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसव तनी ॥ भुजमृणाल बल हरत बलै युत परस सरस श्रवनी । श्याम शीश तरु मनो मिंड-वारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलन को ह्रदनी॥कृश कटि पृथु नितंब किंकिणि भृत कदलि खंभ जघनी॥पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी । नव नव भाव विलोक भाम इव विहरत वर करनी ॥ हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी । गावत श्रवणन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥

राग कान्हरा ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी । ब्रज युवति यूथ में रूप औ चतुरई शील शृंगार गुण सभन में आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुरसुर रागरी । सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नव कुंज में श्याम बड भागरी ॥ १८६ ॥

राग परज ।

आज उज्यारी भई लो रात ॥ आप उज्यारी भई तेरी सेज उज्यारी चमक सुंदर पिया प्यारी ॥ कान्हके शिर मुकुट विराजै राधा शिर जरद किनारी ॥ १८७ ॥

राग देवगंधार ।

आज वन राजत युगल किशोर । नंद नँदन वृषभानु नंदनी उठे उनीं दें भोर ॥ डगमगात पग परत शिथिल गति परसत नख शशि छोर । दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ हित हरिवंश सम्हार न तन मन सुरत समुद्र झकोर ॥ १८८ ॥

आज अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रसमें भीने नागरि नंद किशोर ॥ अंशन पर भुज दिये विलोकत इंदु वदन बिब ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चित चोर । परिरंभन चुंबन आलिंगन सुर मंदिर कल घोर ॥ पग डगमगत चलत वन विहरत नव निकुंज बनघोर । हित हरिवंश लाललनामिलिहियोसिरावतमोर ॥ १८९ ॥

राग बिलावल ।

आज इन दोउअन पै वलि जैये । रोम रोम सों छवि बरसतहै निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ॥ १९० ॥

राग रामकली ।

उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां । कुंडल सों लर लट बेसर सों

पीतपट हारन सों वनमाल बहियां सों बहियां॥ हंस गति अति छवि अंग अंग रही फवि उपमा विलोकिवेको पटतर नहियां। कामके कल्लोल छूटे सेजहूंके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियां॥

राग प्रभाती।

छांडो कृष्ण युगल बैयां भोर भई अँगना। दीपककी ज्योति फीकी चंद्रहू को चांदना॥ मुखको तँबोल फीको नयनहूं को आँजना॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना। गैयां सब वनको जात पक्षी चात चुगना॥ घर घर दधि मथन होत छनकत हैं कँगना। ग्वाल बाल द्वारे ठाढे उठो नंद नंदना॥ सूरश्याम मदन मोहन ऐसो नयनठगना। श्रीराधाजूके कुंडल सोहैं कृष्णजूके बँगना॥

राग कालिंगडा।

प्रीतम नूपुर मति न उतारो। इनकी धुनि सुनि पार परोसिन कहा करैगी हमारो॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नहिं टारो। नारायण जे शरण चरणकी तिन्हें न कीजे न्यारो॥ १९३॥

राग भैरव।

भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी। बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि तम विगत भई उजियारी॥ दधि मथि माखन तुमपै ल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी। ललतादिक सखियां सभ ठाढी मेवा पान लिये जल झारी॥ सुन प्रियवानी सुखरस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी। दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपौ भई सुखारी॥ आदि सनातन राधे मोहन विलसत हुलसत सँग सुकुमारी। दंपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी॥ १९४॥

राग रामकली।

लटकत आवत कुंज भवन ते। ढुर ढुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवन ते॥ चौंक परत कबहूं मारग बिच चलत सुगंध पवन ते। भर उसास राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवन

ते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहुँ प्यारी तन ते । रसिक टरो जिन दृशा श्यामकी कबहूं मेरे मनते ॥ १९५ ॥

राग कान्हरा ।

प्रीतिकि रीति रँगीलोइ जानै । यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपौ मानै ॥ यमुना पुलिन निकुंज भवन में मान माननी ठानै । निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहिं न आनै ॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आन से बानै ॥ जय श्री हित हारिवंश चतुर सोइ लालहिं छाँड मेंड पहिचानै ॥ १९६ ॥

राग रेखता ।

हर इक तरफ चमन में कैसी बहारछाई । चल देखिये छबीली गुलशन कि खुशनुमाई ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवारी । फूलोंके भार सेती क्या झुकरही हैं डारी ॥ सखियों के संग जाके देखी विपिनकि शोभा । नागर नवल छबीली छबि देखके मन लोभा ॥ फूलन की गूंथ वेनी सखियन भली बनाई । हँस हँस के ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई ॥ १९७ ॥

टुक बंगला में बैठो बाग की बहार है । घर को न जाओ प्यारी यां भइ अवार है ॥ जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई । क्या सर्व सुहागिल सेवती क्या गुल डोरी लगाई ॥ चारों तरफ लगी हैं क्या गुलाबकी क्यारी ॥ क्या सर्व सफेद कनेरहै क्या गुलाबास न्यारी ॥ हँस करके ललित किशोरी उर कंठ सों लगाई । गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई ॥ १९८ ॥

कीजे गवन भवन में वृषभानुकी दुलारी । देखो बहार कैसी बड गोपकी कुमारी ॥ फूले गुलाब चंपा केसर कि फूली क्यारी । सुंदर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी ॥ चहुँ ओर मोर बोलैं कोयल कि कूक प्यारी । पहरो सम्हार भूषण ओढो सुरंग सारी ॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी । माखनको चोर ठाढो बिनती करै तिहारी ॥ १९९ ॥

दादरा ।

महलन चलो नवल अलबेली । रंग महलमें सेज बिछीहै चुन चुन कुसुम चमेली ॥ चंपा मरुवा और केवडा बिच बिच फूल रवेली । चित्रकारी मेरे देखोजी मंदिरमें सुंदर गर्व गहेली ॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरण की मैं चेली ॥ २०० ॥

लावनी ।

चल वृषभानु कुमारी बाग अवलोक बनी शोभा भारी । भांति भांतिके खिलेहैं फूल झुकी धरणी डारी ॥ सुन पिय वचन चली हँस सुंदर पहुँची नजर बाग की ओर । वचन अमीसे कहतेहैं नागरि से पिय नंद किशोर ॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिन में कैसी बनी मरोर । अति सुढार हैं, रौस सुरखी पट्टीकी हरी किनोर । फूले चीन गुलाब चारु गुलतुर्रा केतकि है न्यारी । भांति भांति के०॥ गेंदा गुलाबास गुलतुर्रा गुलसब्बू और गुलगोटी । गुल इलायची, लगीहै गुलमेहँदी रँगकी मोटी ॥ फूली गुलचांदनी भली यह गुलबहार झुक में लोटी ॥ कुंद केवडा, भली कचनारनकी सुंदर जोटी ॥ रायबेल चंपा बेला मोतिया जूही फूली प्यारी ॥ भांति भांतिके०॥ गुलखैरा गुलदाउद नीकी आवत महक चमेली की । मौलसिरी है, ललित केवरा माधुरी बेली की ॥ सर्रो सरस कनेर फुहारन में बहार जलरेली की । हौज बीच में, भली शोभा बाढी जल केली की ॥ फूले कंज तडागन में तिनपै अलिपाँती झुकन्यारी ॥ भाँति भाँतिके० ॥ करो विहार आज या उपवन सुनो कुँवर जिय भावत है । कुंज छबीली छबीली ऋतु वसंत सरसावत है ॥ बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुरे सुर गावत है । पवन सुहावन विविध विधि चलत अनंद बढावत है ॥ कुंजभवन मिलि बैठे दोऊ निर्ख रसिक जन बलिहारी । भांति भांतिके ॥ २०१ ॥

राग दादरा ।

प्यारी तेरे अंग में फूलनकी बहार है । फूलनके बाजूबंद

फूलनके गजरे फूलनके सोहैं गल हार ॥ चंपा मरुवा राय चमेली सब फूलन में गुलाब । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि सब गोपिन में गुपाल ॥ २०२ ॥

राग वसंत ।

नई बहार आई मन भाई । ब्रजकी नारि सब बन बन मिल मिल फुलवा बीनन को धाई ॥ डारी डारी रस लेत भवँरवा कोयलिया बोल रही अंबुआ मौल रहे सब शीतल मंद सुगंध मारुत बहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न वेग कुँवारि कुंजन में फूल रही फुलवारी प्यारी तोहिं श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०३ ॥

ललित लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसंते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पाथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल बकुल कलापे ॥ मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृत हासे ॥ विरहि निकृंतन कुंत मुखाकृति केतकि दंतुरि ताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगंधौ ॥ मुनि मनसा मपि मोहन कारिणि तरुणाकारण बंधौ ॥ स्फुरदति मुक्त-लता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ बृंदावन विपिने परिसर परि गत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव भणितमिद मुदयतु हरि चरण स्मृति सारं ॥ सरस वसंत समय वन वर्णन मनुगत मदन विकारं ॥

देख सखि आज बन्यो श्री बृंदाविपिन समाज । आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज ॥ राधारमण वसंत

मचायो पंचम धुनि सुनि कान । धरणि गिरत सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान ॥ किलकत कोकिल कुंजन ऊपर गुंजत मधुकर पुंज । बजत महारव वेणु झांझ डफ ताल पखावज रुंज ॥ केसर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहिं धाई ॥ छिरक कुंवर बूका भर चोवा लिये कंठ लिपटाई ॥ वर्षत सुमन विबुध कुल ऊपर पावन परम पराग । तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्यास बडभाग ॥ २०५ ॥

कोयलिया बोलन लागीरे । फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे केसू फूले अँबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार ॥ पिया बिन मेरो मन भयो विरागी ॥ अवधि बीती अजहूं नहिं आये कुब्जा सौति विरमाये ॥ रैनि दिवस रसना रटत उनहीं सँग लागी ॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुखनिधान ॥ कृष्णदास मिटे प्यास आनँद उर बाढे ॥ २०६ ॥

राग विभास ।

प्यारी तुम कौन होरी फुलवा बीनन हारी ॥ नेह लगनको न्यो बगीचा फूल रही फुलवारी । नंदलाल वनमाली सों तुम बोलो क्योंनहिं प्यारी ॥ हँस ललता तब कही श्याम सों यह वृषभानु दुलारी । तिहारे कहा लागे या वन में रोके गैल हमारी ॥ राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी । सूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी ॥ २०७ ॥

राग कालिंगडा ।

कोइ फुलवा लेहुरी फुलवा । नील श्वेत पीरे पचरंगी वरण वरण के हरवा ॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा । ललित किशोरी विवस होय चट पहराये पिया गरवा॥२०८॥

राग जंगला दादरा ।

प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां मेरी फुलवगियामें चलोगे के ना । विविध रंग फूली फुलवारी अलबेली मन भामिनियां ॥

बहुत दिनाकी आशा लागी सींच सींच कर कामिनियां । सफल करो पद तल अंकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥ २०९ ॥

राग गौरी ।

द्वारे मेरे बंसी कौन बजावे । नई नई तान लेत बंसी में ठाढो गौरी गावे ॥ चलो सखी वाको मुखदेखें नंदकिधेनु चरावे । सांवरी सखी सोई बड भागन जो हँस कंठ लगावे ॥ २१० ॥

राग गौरी ।

मुरलीकी टेर सुनावे री माई को । मोरे आँगन में ऐडोई डोलै मोर मुकुट छबि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी बतियां रहस रहस करगरे लगावे॥सूर घूंघट वाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे२११

राग देश ।

अकेली मत जइयो राधे यमुना तीर । बंसीबट में ठग लागत हैं सुंदर श्याम शरीर ॥ बिन फाँसी बिन भुज बल मारत बिन गांसी बिन तीर ॥ वाके रूप जाल में फँसके को बचिहै ऐसो वीर ॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनमें राखो धीर । वीरन पान करन हम त्याग्यो कालिंदीको नीर ॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गई ते धृग धृग जन्म शरीर २१२

राग विहाग ।

मेरे गिरिधारी जी सों कवन लरी । गिरिधारी जीके चरण कमल पर वार डारों सगरी ॥ चलरी यशोदा मैया तोहिं बताऊं जो हमसे झगरी । गोरे बदन पर नीला पट ओढे चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तूतो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी । सूरदास वन में जब पाऊं तो बातें हमरी ॥ २१३ ॥

राग रामकली ।

श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावे । श्री गोकुलके निकट

बहति है लहरनकी छबि आवै ॥ सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावै । मदनमोहनको अतिही प्यारी पटरानी जो कहावै ॥ वृंदावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको वेद विमल यश गावै ॥ २१४ ॥

राग कालिंगडा।

सखी स्वप्न में घबरानी तुझ पर जादू किन डारा रे । स्वप्न में देख्यो वाहीको मिलाऊं तनु तेरेकी तपन मिटाऊं तीन लोक मूरत लिख ल्याऊं चित्ररेखा तब नाम धराऊं पहले लिखों स्वर्ग की रचना तामें ना कोउ न्यारा रे ॥ दूजे लिखों पतालके बसैया तामें ना कोउ स्वप्न दिखैया बार बार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करों कछु वश ना मेरो होत न घटसे न्यारा रे ॥ तीजे लिखे मध्यके वासी श्रीवृंदावन लिख लइ काशी द्वारावतीके हो तुम बासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तब सकुचाय रही कछु मनमें घूँघट बहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युमनकी मूरत लिख ल्याई तब वाको कछु हाँसी आई अनिरुधको जब दियो दिखाई प्रेम सहित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्न में मोहिं मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलँग सहित वाको लै आई ऊषाको जब दियो मिलाई तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको बासी जीवन प्राण हमारारे ॥ २१५ ॥

पद ।

भजन भावना हीय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी । कुआँ पर्यो आकाश उडत खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलनकी चटपटी । वृंदावन हित रूप कहां लग वरणों सृष्टि अटपटी ॥ २१६ ॥

कुण्डलिया ।

साँचे श्रीराधा रमण, झूठो सब संसार । बाजीगरको पेखनो, मिटत न लगत अबार ॥ मिटत न लगत अबार भूतकी संपति जैसे ।

महरी नाती पूत धुआं के बादर तैसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभ वश घर घर नाचें । झूंठे घढे सुनार वैनके बोले साँचे ॥२१७॥

छंद ।

देखा देखी रसिक न होइ है रस मारग है बंका । काह सिंह की सरवर करिहै गीदर फिरे जो रंका ॥ असहन निंदा करत पराई कभूं न मानी शंका । बृंदावन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्यपथ डंका॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये । स्तुति निंदा छोड पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुख सुख हानि लाभ सम वर्तन आनि परे सो सहिये । भगवत चरण शरण गह गोविंद मन वांछित सुख लहिये ॥ २१९ ॥

कवित्त ।

कामिनी निहारचो काम संतन विचारचो राम योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शार्दूल मल्लनको वज्र तूल शत्रुनको शूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चंद्रमा चकोरनको भ्रमरनको कंज मंजु मकरंद लेखिये । कंस जाने काल ग्वाल बाल सब जान सखा एक नंदलाल ही अनेक रूप देखिये॥

राग विहाग ।

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहा काज जहँ आदर भाव न पैये ॥ गुरुमुख नहीं बडो अभिमानी कापर सेवक रहिये । टूटी छत्त मेघ जल बरसै टूटो पलँग बिछैये ॥ चरण धोय चरणो-दक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये ॥ तुम तो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये । हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढैये ॥ २२१ ॥

राग जंगला ।

जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊं । तो लाजों गंगा जननीको संतनु सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड महारथ मारूं कपिध्वज सहित

गिराऊं । पांडव सैन समेत सारथी शोणित सिंधु बहाऊं ॥ जीवों तो यशलेवँ जगतमें जीत निशान फिराऊं । मरों तो मंदिर भेदि भानु को सुरपुर जाय बसाऊं ॥ इतनी शपथ करौं प्रभु तुमकी क्षत्रिय गति ना पाऊं । सूरश्याम रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊं ॥ २२२ ॥

जो मैं पारथ नाम कहाऊं । हठ कर इंद्र चाप शोणित शर मज्जन वेग कराऊं ॥ गीध कबंध कंध बैठाऊं काग कराल उड़ाऊं । दे भगदत्त द्रोण दुःशासन इक इक बाण लगाऊं ॥ प्रलय करूं कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊं । भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शर की सेज सुलाऊं ॥ इतनी न करों शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं । सूरदास पारथ परतिज्ञा इक छत राज कराऊं २२३॥

राग सोरठ ।

वा पट पीत की फहरानि । कर गह चक्र चरणकी धावन नाहिं विसरत वह बानि ॥ रथ सों उतर वेगि पग धावन कच रज की लपटानि । मानो सिंह शैल से उतरयो महामत्त गज जानि ॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेदकी आन । सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान ॥ २२४ ॥

कवित्त ।

आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो जाके हित राम नरसिंह रूप धारयो है ॥ जाको यश परम पुनीत व्यास भागवत में गायो सो भयो भक्त प्रभुजीको प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो वैरोचन ताके आप छायो यश जग में कुल ऐसो तिहारो है ॥ पूजो मन काम मेरी सुनिये हो राजा बलि याते आशीर्वाद तुमको हमारो है ॥ २२५ ॥

राग श्यामकल्याण ।

सुन लेहु बात हमारी नगर सब ॥ पढने जाओ प्रह्लाद संग सब राम नाम उर धारी । हरनाकुशके नाश करनको होंगे नरसिंह अवतारी ॥ माखन चोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी ॥२२६॥

सुन लेहु राजकुमार अरज मेरी ॥ याके पुत्र चढे अगनी में राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सब संसार ॥ माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार ॥ २२७ ॥

छंद ।

मतले तू रामको नाम झूठ मत बोले वृथा कुम्हारी । मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढ लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो अगिन चढे बच नहीं इनको अपराध महारी । यह तो बिल्ली करत विलाप दोप भयो भारी ॥ २२८ ॥

राग श्यामकल्याण ।

मतले रामको नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी । काल जो तेरे शिर पर आयो आगई दशा तिहारी ॥ राम नामको वाद न कीजे लीजे शोच विचारी । माखन चोर दास यूं भाषे मेरो पिता बलधारी ॥ २२९ ॥

छंद ।

कुम्हरी मन में अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आई । डेउढी पर ठाढी भई अरज दासीने जाय सुनाई ॥ तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतरचो आज॥तुम चलो वेग महराजबेर भइ भारी२३०

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूँ मैं सत्य कि वानी । गुण भूलोंगो नाहिं पढाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मैंने हिरदे में जानी । विष प्याले छुडवाय प्याय दियो अमृत पानी ॥ २३१ ॥

छंद ।

पांच बरस के भये कुमर जी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद बढाये जी ॥ षंडामर्को ब्राह्मण दोनों राजा निकट बुलायेजी । लेजाओ चटसार कुमरको अस कछु रीति पढाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचाली जी । धर्मको खंडन पापको मंडन हत्या हृदय बसाओजी ॥२३२॥

लावनी ।

विद्या पढने गये गुरू कि चटशाला । तिन भर भर पट्टी रामनाम लिख डाला ॥ प्रह्लाद काज भगवान भक्त हितकारी । भये संतनके हित काज आप गिरिधारी ॥ निरखी प्रभुकी प्रह्लाद प्रथम प्रभुताई । बिल्ली ने बच्चे धरे अँवा में लाई ॥ बिन जाने आँच कुम्हारि जो दई है लगाई । कीनी प्रभु आय सहाय बचे सुखपाई ॥ जिन जाना राम स्वभाव परम शुभकारी ॥ भये संतनके० ॥ इतने में पाँडे आय निहारी पाटी । पढ रह्या राम का नाम चलाई साटी ॥ क्या तुझे राम से काम कह्यो ललकारी ॥ भये संतनके० ॥ भूपति बोला ललकार कहाँ हरि तेरो । तू है मूरख नादान मौत ने घेरो ॥ अब छोडूँगो नाहिं गयो मैं हारी ॥ भये संतन के०२३३॥

राग श्यामकल्याण ।

पाँडे जी मोहिं राम नाम लिख देह । गंगाजल तजि पियत कूप जल अमृत छाँड विष देह ॥ और पठन से कहा काज है वृथ त्रास क्यों देह । युगलदास प्रभुके चरणन में बार बार शिर देह२३४

कडा ।

प्यारे जी गिनती कई हजार पढे हम विकट पहारे । पट्टी लिखी अनेक लगे हरि नाम पियारे ॥ प्यारेजी राम नामके हरफ मैंने हिरदै में धारे । औ सब झूठा ख्याल जगत् में धुंध पसारे ॥ २३५ ॥

पाँडे जी मैं नहिं रखता प्यार कुमरकी शामत आई । पूत नहीं यमदूत करैं मेरि लोग हँसाई ॥ पाँडेजी जाको ले यह नाम सोई मेरो दुखदाई । मार उडाऊं खाल करैगा कौन सहाई ॥२३६॥

प्यारे जी फूलों कीसी सेज कुमर हरिके गुण गावे । धन मेरो महराज पार जिनका नहिं पावे ॥ प्यारे जी निश्चय करके रटै विपतिके फंद छुडावे । दर्शन ते गति होय मुक्तके धाम बसावे ॥

राग देश ।

जननी विष मोहिं दे पिलाय । अब और कछू तो नाहिं उपाय ॥

मेरो आप हरी कर ले सहाय ! इकबाँह पकरके खैंच लाय ॥ मोहिं गिरि पर्वत से दियो गिराय । तहां आप हरी ने मोहिं लियो उठाय ॥ इक जलती अगिनमें दियो बिठाय । तहँ कूद परे हरि आप धाय ॥ मोहिं अमृत हृदयसे लियो लगाय । हरिकी गति मोपै लखी नजाय। मोरे रोम रोममें रह्यो समाय। कहै युगल चरण में चित लगाय॥

राग वसंत ।

नहीं छोडूं रे बाबाराम नाम। मेरो और पढन सों नहीं काम ॥ प्रह्लाद पठाये पढन शाल । संग सखा बहु लिये बाल ॥ मोको कहा पढावत आल जाल । मेरी पटिया पै लिखदेउ श्रीगोपाल ॥ यह षंडेमर्का कह्यो जाय । प्रह्लाद बुलाये वेग धाय ॥ तू राम कहनकी छोड बान । तुझे तुरत छुडाऊं कह्यो मान ॥ मोको कहा सतावो बार बार।प्रभु जल थल नभ कीने पहार ॥ इक राम न छोडूं गुरुहिंगार । मोहिं घाल जार चाहे मार डार ॥ काढ खड्ग कोप्यो रिसाय । तुझे राखन हारो मोहिं बताय ॥ प्रभु खंभसे निकसे हो विस्तार । हरना-कुश छेद्यो नख विदार॥ श्रीपरमपुरुष देवादिदेव । भक्त हेतु नरसिंह भेव ॥ कह कबीर कोउ लखे न पार । प्रह्लाद उधारे अमित बार ॥

राग भैरव ।

मंगल रूप यशोदा नंद । मंगल मुकुट कान मधि कुंडल मंगल तिलक विराजत चंद ॥ मंगल भूषण सब अँग सोहत मंगल मूरत आनँद कंद । मंगल लकुट कांख में चापे मंगल मुरलि बजावत मंद ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । मंगल ब्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुति छंद २४० ॥

राग भूपाली कल्याण ।

मुकुट पर वारी जाऊं नागर नंदा । सब देवन में कृष्ण बडे हैं ज्यों तारों में चंदा ॥ सब सखियन में राधे बडी हैं ज्यों नदियों में गंगा । चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि काटो यमके फंदा ॥२४१॥

राग देश ।

आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्णयुग मणि सतयुग दिशन

पूर्व सब घट रमण रमैया । दिवस मणि भास्कर निशा मणि चंद्रमा उडुगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जंबूद्वीप खंडन मणि भरतखंड चतुर महैया ॥ स्वर्ग मणि वैकुंठ राजन मणि इन्द्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्मा सब जग रचैया । हस्तिन मणि ऐरावत विहंगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहंस मणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमश ऋषि आयुर्बल मणि मार्कंडेय गिरि मणि सुमेरु थिरैया । तरुन मणि कल्पवृक्ष वीरन मणि महावीर सागर मणि पय समुद्र सरित मणि विष्णुपदी तीरथ मणि ब्रज स्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तन मणि प्रह्लाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्वसी तुरंगन मणि उच्चैःश्रवा इंद्रधामरहैया । रागमणि भैरव ऋतुन मणि वसंतऋतु शास्त्रमणि वेदांत रंजन मणि संगीत पार ना लहैया ॥ताननमणि तानसेन गायन मणि नारद गंधर्व मणि हाहाहूहू बीणन मणि सरस्वती बीन प्रात ही नाम लैया । स्वरन मणि खरज स्वर सुर्तन मणि तैव्यरा मूर्छना मणि आनंदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोविंद नाम लै कृष्णानंद भवसागर पार पैया ॥ २४२ ॥

राग बिलावल ।

धर्ममणि मीन मर्याद मणि रामचंद्र रसिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी । कठन मणि कमठ बल विपुल मणि बाराह छलन मणि वामन देह विक्रम धरी ॥ गिरिन मणि कनकागिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि सरन मणि मानसर नदिनमणि सुरसरी । खगनमणि गरुड द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवध पुरी ॥ सुभट मणि परशुधर क्रांतमणि चक्र वर शक्ति मणि पार्वती जान शंकर बरी । भक्त मणि प्रह्लाद प्रेम मणि राधिके मणिनकी माल गुह कंठ कान्हर धरी ॥ २४३ ॥

राग भैरव ।

मदन गुपाल हमारे राम । धनुष बाण धर विमल वेणु कर पीत

वसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाये कोटिक काम । दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धारचो कर वाम ॥ तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम । परमानँद प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुण ग्राम ॥ २४४ ॥

राग सारंग ।

हरि हरि हरि सुमिरण करो ॥ हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरिकी कथा होतहै जहां । गंगा हू चल आवैं तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवें । गोदावरी विलंब न लावें ॥ सर्व तीर्थको बासो तहां । सूर हरिकथा होत है जहां ॥ २४५ ॥

राग बिलावल ।

नंदरायके नव निधि आई । माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल पीत वसन भुज चारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यंत्र गति चरचि अरगजा अंग चढाई । अक्षत दूब लिये शिर वंदत घर घर बंदनवार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नंद अघाई ॥ २४६ ॥

राग जैतश्री ।

नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो । तुमरे पुत्रभयो हौं सुनिकै अति आतुर ह्वै धायो ॥ बंदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आये । इक पहले ही आशा लागी बहुत दिनन के छाये ॥ ते पहरे कंचन मणि भूषण नाना वसन अनूप । मोहिं मिले मारगमें मानो जात कहूंके भूप ॥ तुमतो परम उदार नंदजी जो मांग्यो सो दीनो । ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सर साटो कीनो ॥ कोटि देहु तो परचो रहै गो विन देखे नाहिं जैहौं । नंदराय सुन विनती मोरी तबहिं विदा भल ह्वैहौं ॥ दीजै वेग कृपा कर मोको जो हौं आयो मांगन । यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवै आँगन ॥ मदन मोहन मैया कह टेरै यह सुनके घर जाऊँ । हौं तो तुमरे घर को ढाढ़ी सूरदास मोहिं नाऊँ ॥ २४७ ॥

राग कान्हरा।

अनोखा लाडला खेलन मांगत चंद। हँसन खेलनको रारि करत है मनमें भयोरी अनंद ॥ २४८ ॥

राग जैतश्री।

दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आयेहैं। तब हँस बोले कान्हर मैया इनको किन्हें पठायेहैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरावत जहां सघन बन झाऊ। पैठ पताल व्याल गह नाथ्यो तहां न देखे हाऊ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातें कहत हँसत बलदाऊ। सप्त रसातल शेषासन रहि तबकी सुरत भुलाऊ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊ। मीन रूप धरके जब मारचो तबहिं रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मंदर जलहिं खिसाऊ। कमठ रूप धर धरणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरबाऊ। धरि वाराह रूप रिपु मारचो लै क्षिति दंत अगाऊ ॥ विकट रूप अवतार धरचो जब जन प्रह्लाद बचाऊ। होय नरसिंह जब असुर विदारचो तहां न देख्यो हाऊ ॥ बामन रूप धरचो बलि छल कर तीन पैग बसुधाऊ। श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊ ॥ मारचो मुनि विनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊ। इकइस बेर करी निछत्र क्षिति तहाँ न देख्यो हाऊ ॥ राम रूप रावण जब मारचो दश शिर बीस भुजाऊ। लंक जराय छार जब कीनो तहां रहे कहँ हाऊ ॥ माटीके मिस बदन विकास्यो जब जननी डरपाऊ। मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबहुँ प्रतीति न आऊ ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर तहिं कर भाव बताऊ। तुर्त चीर द्वै टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ भक्त हेतु अवतार धरचो सब असुरन मार बहाऊ। सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊ ॥ २४९ ॥

राग रामकली।

किहिं मिस यशोमति के जाउँ। सकल सुखनिधि मुख

निरखके नयन तृषा बुझाउँ ॥ द्वारे आरज सभा जुर रही निकसबे नहिं पाउँ । बिन गये पतिवर्त छूटे हँसै गोकुल गाउँ ॥ श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउँ । सूलगन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउँ ॥ २५० ॥

राग दादरा ।

जग में देखत हूं सब चोर । प्रथमें चोर जोर इंद्रिन वश महा लुब्ध मन मोर ॥ पांच चोर सबके उर भीतर चोरी करैं करावें । चोर चोर सब जगको खावें कोऊ पार न पावें ॥ हाकिम चोर चोर मुतसद्दी चोर शहर व्यापारी । तैसेइ चोर जानिये सबको कहा पुरुष कहनारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत वृंदावन बालक वत्स चुरायक । साधु चोर हरि हृदय चुरायो जो त्रिभुवनके नायक ॥ पांच सात मिल चोरी कीनो जो जासों बन आई । सूरदास गुण कहँ लग बरणै माखन चोर कन्हाई ॥ २५१ ॥

दोहा ।

विश्वभरण पोषण करन, कल्पतरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवस भगधाम ॥

राग धनाश्री ।

कबके बाँधे ऊखल दाम । कमल नयन बाहर कर राखे तू बैठी सुखधाम ॥ हो निर्दयी दया कछु नाहीं लाग रही घर काम । देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरो वेग बडी बिरिया भइ बीत गये युग याम । तेरी त्रास निकट नाहिं आवत बोल सकत नहिं राम ॥ जन कारण भुज आप बँधाई वचनकियो ऋषि काम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर भो नाम ॥ २५२ ॥

राग सारंग ।

हलधर सों कह ग्वालि सुनायो । प्रातहिं ते तुम्हरो लघु भैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो ॥ काहूके लरिकहिं हरि माऱ्यो भोरहिं आन रोवत गुहरायो । तबहीं ते बांधे हरि बैठे सो हम

तुमको आन जनायो ॥ हम बरजी बरज्यो नहिं मानत सुनतहि बल आतुर ह्वै धायो । सूरश्याम बैठे ऊखल लग माता डर तनु अतिहि त्रसायो ॥ २५३ ॥

निरख श्याम हलधर मुसकाने । को बांधे को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने ॥ उत्पाति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने । यमलार्जुन तरु उधरन कारण करत आप मन माने॥असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावतबाने। सूरदास प्रभु भाव भक्तिके अति मति यशुमति हाथ बिकाने ॥ २५४ ॥

छंद ।

अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानंद मन सन्मुखखरे ॥ जै जै भगत हित सगुण सुंदर देह धर धावत हरे ॥ जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे । सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे ॥ धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही । धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥ धन धन उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढावहीं । धनि सो जननी बांधि राखत जाहि वेद न पावहीं ॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ लाइयो। धन्य सो तृण जासुकी रजु श्याम भुजन बँधाइयो ॥ धन्य ऋषि धन शाप दीनो अति अनुग्रह सो कियो । जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो ॥ अब कृपा कर देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै । जहां जन्महिं कर्म वश तहँ एक तुमरी रति रहै ॥ दीनबंधु कृपालु सुंदर श्याम श्री ब्रजनाथ जू । राखिये निज शरण अब प्रभु करिये हमहिं सनाथ जू ॥ २५५ ॥

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी । जब जब भीर परी संतन पै प्रकट होय प्रतिपाल करी ॥ आदि अंत सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी । कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अंतर्यामी ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शेष जपत नित नाम नये । सो भव तारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट

भये ॥ जाको नाम सुनत यम डर्पत थरहर कांपत काल हियो । ताको पकर नंदकी रानी ऊखल सों लै बांध दियो ॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमाजाय न कहत बनी । जैसुखसागर सब गुण आगर शोभा अंग अनंग घनी ॥ नारदको हम अति गुण मानें शाप नहीं वरदान दियो । जा कारण ते प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥ जो हरहूंके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि प्रगट नंदके आँगन ऊखल संग बँधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुखकारी ॥ तुमरी माया जीव भुलानो किहिं विधि नाथ तुम्हें जाने । तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तबहीं तुमको पहँचाने ॥ हे मुकुंद मधूसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे । इन चरणन में सदा रहै मन यह वरदान हमैं दीजै ॥ जै केशव जै अधम उधारन दयासिंधु हरि नित्य मगन । जै सुंदर ब्रजराज शशी मुख सदा बसो मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन मोद भरें । कर नित करें तुम्हारी सेवा नयन संत जन दरश करें ॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करें । नारायण बिन भक्ति न रीझो वेद संत सब साख भरें ॥ २८६ ॥

राग सुघराई ।

बजावे मुरलीकी तान सुनावे यहि विधि कान्ह रिझावै । नटवर वेष बनाय चटक सों ठाढो रहे यमुना के तीर नित वन मृग निकट बुलावै ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवै । मोर मुकुट कुंडल वनमाला पीतांबर फहरावै ॥ एक अंग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवै । सूर श्याम के अंग अंग प्रति कोटि काम छबि छावै ॥ २८७ ॥

राग वसंत ।

बरज यशोदे तू अपनो बाल । अपनो बाल रसिया गोपाल ॥

नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान करन गई यमुना तीर, लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जल प्रवाह मोरी लागी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ ॥ रहुरी ग्वालन मत झूठ बोल । मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुना तीर ॥ घर आवे जब बाल सार । आंगन धाये जब ढोटा सार ॥ देखो सूर प्रभुकें यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुखों भई है लाल ॥ २५८ ॥

राग बरवा ।

माई नित उठ कुंजन रोकत ब्रज वनवारी । कल न परत मोरी मटकी फोरी और भीजी पचरँग सारी ॥ जाय कहूं जी मैं नंदजू के आगे कबके छैल विहारी । हम रँग प्यारा देख मुसकत है और देत रस गारी ॥ २५९ ॥

पीलो ।

हे प्यारी नाहिं फोरी गागरिया हेरी छवि हार नई पनिहार । तू तोरी मोरी चकिया की डोरी तापै देती है गार ॥ तू जोबन अलमस्त ग्वारन चलत न आप सँभार । झूम झूम पग धरत भूम पर मैं तोहिं दीना सँभार ॥ २६० ॥

राग गौरी ।

छबीले बंसी नेक बजावो । बलि बलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृंदावन दुर्लभ प्रेम तरंग । ना जानिये बहुरि कब ह्वै हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ विनती करत सुबल श्रीदामा सुनो श्याम दै कान । या यश को सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप वेष ब्रज धरहो फिरहो सुरभिन साथ । कब तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई । सोंह दिवाय नंद बाबाकी रहे सकल गहि पाई ॥ सुन सुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई । गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मन मोहन कियो मधुर धुन गान । मोहे सकल जीव जल थलके सुन

वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नाशा पुट सुन सुंदर मुख बैन । मानो निर्तत भाव दिखावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल । मानो कमल कोमल कोशरस चाखन उड आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत । मानो सुधासिंधु में क्रीडत मकर पानके हेत ॥ उपजावत गावत गति सुंदर अनाघातके ताल । रस सभ दियो मदन मोहनको प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित वैजंती चरणन पर श्वासा पवन झकोर । मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमंडलु फोर ॥ डोलत लता मंद मारुत गति सुन सुंदर मुख बैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पद रेखा सुभग सांवरे गात । मनु षटवधू एक रथ बैठीं उदय कियो अधरात ॥ बांके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज मांगत निरखत रूप निधान ॥ २६१ ॥

राग पूरवी ।

धरें टेढीपाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रिभंगीलाल । कुंडलोंकी छबि देख कोटि रवि उदय होत और सोहे वनमाल ॥ सांवरो बदन पर पीत पट ओढन मुख मुरली बाजे मधुर रसाल । श्रीमत् वल्लभ बन ते आये संग लिये ब्रजबाल ॥ २६२ ॥

राग वसंत ।

घर वरते वनिता जो बन निकसीं आज कंचन थार भर निछा-वर करन मोहनलाल की । सप्तसुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपगत अति रसालकी ॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मराल की । तानसैनके प्रभु रस वश कर लीनी टेढी मूरत चितवन गोपालकी ॥ २६३ ॥

राग कल्याण ।

अपने लालको जिमावत मैया । कर कर कौर मुखारविंद में मधु

मेवा पकवान मिठैया ॥ व्यंजन खाटे मीठे खारी अतिही स्वाद बन्यो अधिकैया । चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लालको व्यारू करावत लेत बलैया ॥ २६४ ॥

मोहन जानी तिहारी बात। व्यारू पर घर कर आवत यहां कछू नहीं खात ॥ यही स्वभाव तिहारो जनमको चोरीबिन न अघात । नंददास कहत नंदरानी प्रेम लपेटी बात ॥ २६५ ॥

राग नट ।

हरिकी लीला कहत न आवै । कोटि ब्रह्मांड छिनहिं में नाशै छिनही में उपजावै ॥ बालक वच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझावै ॥ शिव सनकादिक अंत न पावें भक्तवछल कहवावै । सूरदास प्रभु गोकुल में सो घर घर गाय चरावै ॥ २६६ ॥

राग सोरठ ।

हमरी फेंट छोड श्रीदामा । काहेको तुम रारि वढ़ावत तनक बातके कामा ॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बाँह गहतहो धाई । छोटो बडो न जानत काहू करत बराबर आई ॥ हम काहेको तुमहिं बराबर बडे नंदके पूत । सूरश्याम दीनेही बनिहै बहुत कहावत धूत २६७॥

राग कल्याण ।

तोसों कहा धुताई करिहौं । जहां करी तहँ देखी नाहीं कह तोसों मैं लरिहौं ॥ मुँह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात। पावोगे फल अपनो कीयो रिसन कँपावत गात ॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाहीं ऐसे गये बिलाई। हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई॥

राग देवगंधार ।

कालीके नथन काज कालीनाथ आये हैं। ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना बेहद भयो तिमिर मिटाये हैं ॥ ब्रह्मा वीचार कही बालिको ना सुध रही भूल गयो सब कछु वेग उठधाये हैं। चरणन में आय परे हो अधीन आगे खडे धन्य धन्य भये भाग

दरश दिखाये हैं ॥ और केती नर नार हर्ष बही प्रेम धार नख शिख रोम रोम आनँद बढाये हैं । कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदायेहैं । यमुनाके मध्य काढे फणहूं के ऊपर ठाढे राग रंग निरत करत अधिक सुहाये हैं ॥ कहत यों दुर्गादास वृंदावन भयो विलास इच्छा पूरी नंदकी यशोदा कंठ लगायेहैं ॥ २६९ ॥

राग वसंत ।

श्रीराधे देडारोना बांसुरी मोरी । जिस बंसी में मोरे प्राण बसतहैं सो बंसी गई चोरी ॥ सोनेकी नाहीं कान्हा रूपेकी नाहीं हरे हरे बांस की पोरी । काहे से गाऊं राधे काहेसे बजाऊं काहेसे लाऊं गउआं घेरी ॥ मुख से गाओ प्यारे तालसे बजाओ लकुटी से लाओ गैयां घेरी । चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि हरि चरणनकी चेरी २७०

राग टोडी ।

खोलोजी किवाँर कोहै एती बार हरी नाम है हमार बसो कंदरा पहारमें । हौं तो आली माधव कोकिलाके माथे भाग मोहन हों प्यारी फिरो मंत्रके विचार में ॥ रागी हो रँगीली जावो क्यों न दाता पास भोगी हों छबीली जाय धसोजी पतार में ॥ नायक हों नागरी तो टांडो क्यों न लादो जाय हौं तो घनश्याम प्यारी वरसो जी बहार में ॥

श्री रघुनाथलीला ।

दोहा ।

मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुषबाणलियो हाथ ॥१॥
तुलसी कौशलराज भज, मतचितवे काहू ओर ।
सीता राम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ २ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहनी ओर ।
ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुरतरु तोर ॥३॥
सीतापति रघुनाथजू, तुमलग मेरी दौर ।

जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥
नहिं विद्या नहिं बाहुबल, नहीं गांठमें दाम ॥
तुलसी ऐसे पतितकी, तुम पति राखो राम ॥ ५ ॥
कामिहिं नारि पियारिजिमि, लोभिहिं प्रियजिमिदाम ॥
ऐसे हो कब लागिहौ, तुलसीके मन राम ॥ ६ ॥
बार बार बर मांगहौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ७ ॥
दीजै दीनदयालु मोहिं, बड़ो दीन जन जान ॥
चरण कमलको आसरो, सत्संगतिकी बान ॥ ८ ॥

राग भूपाली ।

गाइये गणपति जगवंदन । शंकर सुवन भवानी नंदन ॥ सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुंदर सब लायक ॥ मोदक प्रिय मुद मंगल दाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥ माँगत तुलसि दास कर जोरे । बसैं राम सिय मानस मोरे ॥ २७२ ॥

राग विभास ।

जै भगीरथ नंदनी मुनि चित चकोर चंदनी नर नाग विबुध वंदनी जै जह्नु बालिका । विष्णु पद सरोज जासि ईश शीश पर विभासि त्रिपथगासि पुण्य राशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल बहसि वारि शीतल त्रयताप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका । पुर जन पूजोपहार शोभित शशि धौल धार भंजन भवभार भक्त कल्प थालिका ॥ निज तट बासी विहंग जल थल चर पशु पतंग कीट जटिल तापसि सभ सर्स पालिका । तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देह मोह महिषकालिका ॥ २७३ ॥

राग काफी ।

धन धन धन मात गंग चाहत मुनि जन प्रसंग प्रगटी रघुनाथ चरन करन सुख विहारी । दीनी विधि बूंद डार आरि अनंग शीश धार आई मृत मध्य लोक संतनको प्यारी ॥ पर्वत द्रुम लता तोर

स्वर्ग औ पताल फोर भागीरथ करनधार सगर तनय तारी । अमित वारि अति उतंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन कर पाप पुंज हारी ॥ माता मैं याँचों तोहिं राम भक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसि दास दीन हो पुकारी ॥ २७४ ॥

आनँद वन गिरिजापति नगरी मन क्यों ना बास लगावत । काशी समान नहीं द्वितिया पुर ब्रह्मादिक गुण गावत ॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत । निकट प्रवाह बहत जहँ गंगा सुर नर मुनि हर्षावत ॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत । कीट पतंग जीव नाना विधि सबकी मुक्ति करावत ॥ अंतकाल सदा शिवशंकर तारक मंत्र सुनावत । अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहस मुख गावत ॥ राम सिया पद हेत प्रेम प्रभु तुलसिदास गुण गावत ॥ २७५ ॥

राग आसावरी ।

आज सुदिन शुभघरी सुहाई । रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह बार योग समुदाई । हर्षवंत चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई ॥ वर्षहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई । कौशल्यादि मात सभ हर्षत यह सुख वरणि न जाई ॥ सुन दशरथ सुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई । वेद विहित कर क्रिया परम शुचि आनँद उर न समाई ॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज बधाई । पुरबासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज संपदा लुटाई ॥ मणि तोरन बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई । मागध सूत द्वार वंदीजन जहँ तहँ करत बडाई ॥ सहज शृंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई । गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजियो तनय सुखदाई ॥ बीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अबीर उडाई । नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि देह दशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई । देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भये सुर

संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई । सबहिं सुमन विकसत रवि निकसत विपिन कुमुद बिलखाई ॥ जो सुख सिंधु सकृत सीकर ते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमगि अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहों गाई ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तव पाई ॥

राग भैरव ।

सूरज वंशी नमो गुरु इष्ट हमारो दशरथ सुत राजा राम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुषधारी सुंदर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम । धीरज प्रवीन प्रभु रघुकुल तिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ २७७ ॥

राग तिलंग ।

ढाढिन चल दशरथ घर जाइये । ढाढ़ी कहै सुनो मेरी प्यारी जहां सकल सिधि पाइये ॥ कंचन वसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये । रतन हरी प्रभु राम जनमकी विमल बधाई गाइये ॥

हौं तो रघुवंशिन को ढाढी । सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयों आशा बाढी ॥ तुमरोइ यश गाऊं जहँ जाऊं पूछो दुनिया ठाढी । रतन हरी मेरो नाम रामकी लेहुँ बलैयां गाढी ॥ २७९ ॥

राग तिलंग ।

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना । राज समाज सकल सुख संपति अधिक २ नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशिवासर अधिक जन्म धर मौना । रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ॥ २८० ॥

सवैया ।

वरदंतकि पंगति कुंद कली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला चमकैं घन बिज्जु जगैं छबि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघुवारी लटें लटकें मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ॥ न्योछावर प्राण करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥ २८१ ॥

राग कान्हरो ।

ठुमुकि चलत रामचंद्र बाजत पैंजनियां । किलकत उठि चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी रानियां ॥ अंचल रज अंगझार विविध भांति सों दुलार तन मन धन वारिदेत कहत मृदु वचनियां । मोदक मेवा रसाल मनभावत लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कंचन रुनझुनियां ॥ आनंद सज कंबु कंठ ग्रीवा अति रुचिर रेख काच कुटिल कमल वदन मंद सों हँसनियां । विद्रुम सों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन नाशा अति सुभगवीच लटकत लटकनियां ॥ अद्भुत छवि अति अपार को कवि नहिं वरणे पार कह न सके शेश जिहिं सहस्र तो रसनियां । तुलसिदास रूप रंग परतरको दिये कहा रघुवरकी छबि समान रघुवरछाबिबनियां ॥ २८२ ॥

राग बिभास ।

भोर भयो जागो रघुनंदन । गत व्यलीक भक्तन उर चंदन ॥
शशि कर हीन छीन द्युति तारे । तमचर मुखर सुनो मेरे प्यारे ॥
विकसत कंज कुसुद बिलखाने । लै पराग रस मधुप उडाने ॥
अनुज सखा सब बोलन आये । वंदिन अति पुनीत गुण गाये ॥
मन भावतो कलेऊ कीजे । तुलसिदासको जूठन दीजे ॥ २८३ ॥

राग प्रभाती ।

प्रात समय रघुवीर जगावे कौशल्या महतारी । उठो लाल जी भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी । वाणी वेद विमल यश गावें रघुकुल यश विस्तारी ॥ वंदीजन गंधर्व गुण गावें नाचत देदे तारी । उमा सहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी ॥ कर अस्नान दान प्रभु दीनो गो गज कंचन झारी । जय जयकार करत जन माधो तन मन धन बलिहारी ॥ २८४ ॥

प्रभाती।

जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे। राजिव लोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे। मनो ज्ञान घन प्रकाश बीते सब भव विलास आश त्रास तिमिर तोष तरनि तेज जारे॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे। मनो वेद बंदी मुनि वृंद सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैटभारे॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चंचरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे। मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख कदंब टारे। तुलसिदास अति अनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रम फंद परम मंद द्वंद्व भारे॥ २८५॥

राग बिलावल।

आज तो निहार रामचंद्रको मुखारविंद चंदहू से अधिक छबि लागत सुहाई री। केसरको तिलक भाल गरे सोहै मुक्तमाल घूंघरवारी अलकन पर कुंडल छबि छाई री॥ अनियारे अरुण नयन बोलत अति ललित वैन माधुरी मुसकान पर मदन हूं लजाई री। ऐसे आनंद कंद निरखत मिट जात द्वंद छबि पर वनमाल कान्हर गई हों बिकाई री॥ २८६॥

राग विभास।

बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृप भवन द्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे। बिलखत कुमुदिन चकोर चक्रवाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गूंजत अलि न्यारे॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध

विधि सँवारे । करतल गह ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पटपीत तूण शायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्य पुंज निज विचारे । तुलसीदास संग लीजै जान दीन अभय कीजे दीजे मति विमल गावै चरित वर तिहारे ॥ २८७ ॥

राग ललित ।

छोटीसी धनुहियाँ पन्हैया पगन छोटी छोटी सी कछोटी कटि छोटी सी तरकसी ॥ लसत झंगुली झीनी दामिनीकी छवि छीनी सुंदर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अंग जोहे जिया आवत सनेहकी सरकसी ॥ मूरतकी सूरत कही न परै तुलसी पै जाने सोई जाके उर करकै करकसी २८८ ॥

राग खमाची जंगला ।

पगिया शिर लाल हरी कलँगी उर चंदन केसर खौर दिये । मनमोहन राम कुमार सखी अनुहार नहीं जबजन्मलिये ॥ पग नूपुर पीत कसे कछनी वरमालती की वनमाल हिये । विहरैं सरयू तट कुंजन में तहां रामसखे चित चोर लिये ॥ २८९ ॥

राग आसावरी ।

सखीरी मुनि सँग बालक काके । रतनारे नयना जाके ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके । राम लषण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके ॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब आये राजाके । आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सियाके ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुषबाण कर जाके । गौतमऋषिकी नारि अहल्या तारी है चरण छुवाके ॥ सब सखियां मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके । तुलसिदास सेवक रघुनंदन लेख लिखे विधनाके ॥ २९० ॥

राग कान्हरा ।

ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनंदनी । मधुर वचन तोतरे

त्रयताप मोचनी ॥ सोहत नव नील वसन मंद हास रुचिर दशन झलकत उरमाल सकल देववंदनी। नूपुर पग बजत मानो सामवेद करत गान क्षुद्र घंट रुचिर नाद उर अनंदनी ॥ जगत मात सखिन संग विहरत वहु करत रंग अग्रदास निरखत छवि भव निकंदनी२९१

राग मलार।

विहरत बागवा में देखे कुल भानवा। क्रीट मुकुट कंचनको झलकें मकर मनोहर कुंडल अलकें भाल तिलक केसरको राजे गल वैजंती माल विराजे मधुर वचन करलीने धनुष बानवा ॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसकात फिरत वन आछे काकपक्ष शिर सुंदर सोहें देखत राम लषण मन मोहें विधि शंकर इनहीं को धरें ध्यानवा। कही सखी जब ऐसी वानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जग में तारी शिला चरणकी रजने दरशन लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुम समेत वाम कर दोना छोटा कुँवर सखी अति लोना या देखत सब भई सुखारी तुलसी मुदित विदेह कुमारी बहुरि चली गिरिजाके भवनवा ॥ २९२ ॥

राग देस।

मैया मोको वैरन धनुष भयोरी। जन्म जन्मको परा शरासन सड घुन क्यों न गयो री ॥ देश देशके भूपति आये तिल भर कछु न टरचो री। कहा कहौं मैं माइ बापको हो तैंने विष क्यों न दियोरी ॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियोरी। तुलसीदास प्रभुके कर परशे खंडो खंड भयो री ॥ २९३ ॥

राग परज।

सखी रँग भीने दोउ राजकुमार। निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार ॥ भुज दंडन चंदन मंडन पर चमक चांदनी चार। ललित कंठ रेखा विचित्र सखि उर कमलनके हार ॥ रंगभूमि मणि जटित मंच पर बैठे सभा मँझार। मानो रवि उदयाचल गिरि ते निकस्यो तिमिर विदार ॥ खंड खंड ब्रह्मंड

खंडके भूपति जुरे अपार । कैसे धनुष उठायो तोरचो किनहुँ न पायो पार ॥ कटि निखंग कर धनुष बाण लिये हरन चले महिभार । लाहा रामचंद्र छवि ऊपर दास कान्हर बलिहार ॥ २९४ ॥

राग केदारो ।

लेहुरी लोचननको लाहु । कुँवर सुंदर साँवरो सखि सुमुखि सुंदर चाहु ॥ खंड हरकोदंड ठाढे जानु लंबित बाहु । रुचिर उर जयमाल राजत हेत सुख सभकाहु ॥ चितै चित हित सहित नख शिख अंग अंग निवाहु । सुकृत निज सिय राम रूप विरंचि मतिहिं सराहु ॥ मुदित मन वर वदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ तयन सुखमा अयन हाथ सरोज सुंदरताहु । बसत तुलसीदास उर पुर जानकीको नाहु ॥२९५॥

राग केदार ।

मनमें मंजु मनोरथ होरी । सो हर गौर प्रसाद एक ते कौशिक कृपा चौगनी भोरी ॥ प्रण परिताप चाप चिंता निशि शोच सकोच तिमिर नहिं थोरी । रवि कुल रवि अवलोकि सभा सर हित चित वारिज वन विकस्योरी ॥ कुँवर कुँवरि सब मंगल मूरत नृप दोउ धरम धुरंधर धोरी । राज समाज भूर भागी जिन लोचन लाहु लह्यो इक ठौरी ॥ व्याह उछाह राम सीताको सुकृत सकेल विरंचि रच्योरी । तुलसीदास जाने सो यह सुख जा उर बसत मनोहर जोरी ॥ २९६ ॥

राग भूपाली ।

बन्यो सिय प्यारीको बनरा । कि वरवश मोहलेत मनरा ॥ मौर शिर सोनेको धारी । विविध मणि चित्र चमतकारी ॥ करन छवि मेंहँदी की भारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ कंकन की कमनीयता, कही कवन पै जाय ॥ अलक झलक लख खलक ललक आली पलक न परत सुहाय ॥ गले गज मोतियन को गजरा । चलन चितवन गति चित चोरी । वचन की रचन लाजतोरी ॥

गरब तज विवस भई गोरी । धामके काम दाम छोरी ॥ हँसन असी मुख म्यान ते, सुधा मुखी सित धार ॥ काढ कामिनी कतल करी, इस दशरथ राजकुमार ॥ रँगीली आँखियन में कजरा ॥ २९७ ॥

राग परज ।

बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो । दशरथ कुँवर साँवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो ॥ अनब्याही ब्याही सब ब्याही देखत रूप ठगीलो । रामसखे अब लगत प्राण सम पियरो अवध नवीलो ॥२९८॥

राग दादरा ।

आली सियावर कैसा सलोना । चितवन में चित आन फँस्यो है देख सखी चल राज ढटोना ॥ जनकशहर में कहर मच्यो है भूल्यो खान पान सबसोना । श्री रघुराज मोरवारे पर अबतो मोहिं फकीरिनहोना ॥ २९९ ॥

राग भूपाली कल्याण ।

देख सखी शिर पाग रामके कैसी सोही है । मर्कत गिरिपै चंद्र चाह चपला जनु मोही है ॥ बड़ि बड़ि भुजा विशाल विभूषण लख तृण तोरी है । सुंदर नयन विशाल बदन पर हांसी थोरी है ॥ उर मोतियनकी माल कान कल कुंडल जोरी है । नाभिगँभीर उदर त्रिवली लख शारद बौरी है ॥ पीतांबरकी कछनी काछे पीत पिछौरी है । रामगुलाम अनूप रूप लख मति मोरि थोरी है ॥ ३०० ॥

राग कान्हरा ।

देखोरी छवि राम वदनकी । कोटि कोटि दामिनि दर्पण द्युति निंदत कांति कपोल रदनकी ॥ नाशा मृदु मुसकान माधुरी मंद करी अति घुमड मदन की । फब रह्यो क्रीट मुकुट अलकन पर मनो फांस दृग मीन फँसनकी ॥ चोरत चित भ्रुकुटी दृग शोभा कुंडल झलक खौर चंदनकी । रामसखे छवि कहि न जात जब सुधि न रहत लख वदन बसनकी ॥ ३०१ ॥

राग खमाच ।

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोइ जाने । सुन दशरथके कुँवर

लाड़िले कासों कहूं को माने । चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने । रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिंचाने ॥

राग परज ।

तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराज किशोर ॥ मिथिलापुर में आय सबनके बरबस प्राण ठगे । कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृँगारपगे ॥ राम सखे लखि जनु रतिपतिके शायक से उर गडे ॥

राग कालिंगड़ा ।

पिया तोरी नजरिया जादू भरी । जिहिं चितवत तिहिं वश कर राखत सुंदर श्याम राम धनुधरिया ॥ जुलफन युत मुख चंद्र प्रकाशे नाशा मणि लटकत मन हरिया । युगल प्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल मानो रूप मछरिया ॥ ३०४ ॥

तेरी नजरों कि सैफकी धार । सुनिये हो अवध छैल दशरथके घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिला पुर के बजार । मधुर अली पिया सांची कहदेउ कब आओगे दिलदार ॥

राग भैरवी ।

जालम नयन मेरे नाहिं रहिंदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर अराम नहिं बहिंदे ॥ बरज बरज रही अरज न मनदे हरज मरज सब सहिंदे ॥ कर कर यत्न रत्न हरि हारे जाय जोरावरी खहिंदे ३०६

राग श्यामकल्याण ।

कुँवर दशरथके रंग भरे । कोटि काम सुंदर सुख मंदर अंदर आन अरे ॥ रंगीली पगिया पेच धरे । रत्न जडित शिर पेच पेच मोरे मनके बीच परे ॥ श्रवण शुभ कुंडल सुघर घरे । अलकां झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे ॥ बनी मोतियन की माल गरे । कमल नयन सुखदैन रैन दिन मन ते नाहिं टरे ॥ करन कंकन रत्न जरे । श्याम वरण मन हरन रत्न हरि चरण शरण उबरे ॥

राग विलावल ।

क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे कानन कुंडल कर

धनुष बाण सोहै री । अरुण नयन अनियारे अतिही लगत प्यारे दशरथ दुलारे सबहीको मन मोहै री ॥ सुंदर नाशा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बांकी भौं है री । लंबित भुज अति विशाल भूषण जडित जाल अंग अंग छवि तरंग कोटि मदन मोहै री ॥ पीतांबर सोहै गात मंद मंद मुसकरात जनक भवन चले जात गति गयंद को है री । कान्हर करुणानिधान मेरे सखि जिवन प्रान जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहै री ॥ ३०८ ॥

राग खमाच।

रामकुमार लाल दशरथके या गलियन अबहीं जो गयोरी । पहरे तनु भूषण फूलनके अँग अँग अद्भुत रूप छयोरी ॥ ठाढी देख अटा पर मोको खेलन मिस छिन एक ठयोरी । गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूंघट पट तब खोल दयो री ॥ तब अपनाय लई मैं वा पिया हियमें प्रेम अँकूर भयोरी । रामसखे भूली सुध बुध सब अँखियन में अब राम रयोरी ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

सखि लखन चलो नृप कुँवर भलो मिथिलापति सदन सिया बनरो । शिर क्रीट मुकुट कटिमें पियरो हँसि हेरि हरत हमरो हियरो ॥ गल साजत है मोतियन गजरो अनियारी अँखियन सोहत कजरो । चित चाहत है उड जाय मिलूं रघुराज छांड सगरो झंगरो ॥ ३१० ॥

राग देश ।

हँस पूछैं जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फंद छुडाये । तिहारो यही अचरज मन भाये ॥ गज औ ग्राह लरैं जल भीतर दारुण द्वंद्व मचाये । गजकी टेर सुनी रघुनंदन गरुड छोड उठ धाये ॥ भिलनीके बेर सुदामाके तंडुल रुचि रुचि भोग लगाये । दुर्योधन की मेवा त्यागो साग विदुर घर पाये ॥ इंद्रने कोप कियो ब्रज ऊपर छिनमें बारि बहाये । गोवर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको मान

चटाये ॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो महभारत में गाये । भारत में भरुहीके अंडा घंटा तोर बचाये ॥ ले प्रह्लाद खंभ से बांध्यो राजन त्रास दिखाये । जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये॥छोरे न छुटे सिया जीको कँगना कैसे चाप चढाये । कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुभाये ॥ जहँ जहँ भीर परी संतन पर तहँ तहँ होत सहाये । तुलसि दास सेवक रघुनंदन आनँद मंगल गाये ॥ ३११ ॥

राग जंगला ।

लैल्योरी लोचन भर लाहू ॥ पुष्पन वर्षत मुनि जन हर्षत सिया रामको अजब विवाहू । मिथिलापुरकी सखी सयानी समझ समझ शिवदेव सब काहू ॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नाहिं नगर अयोध्या जाहू । तुलसीदास परस्पर दोउ मिले नृप दशरथ मिथिलापुर नाहू ॥ ३१२ ॥

जंगला ।

देखो री यह नयनन भर भर होत बरात बिदा दशरथकी ॥ गलिन गलिन गृह महल अटा पर अरुण भाल कामिनि गावें री । या विधि सियजीको ब्याहन आये कब रघुनाथ बहुरि आवें री ॥ धन्य अयोध्या धनि मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम बरचो री । धन्य धन्य बालक दोउ बांके धनि राना दशरथ पतनी री ॥ खान पान बिसराय सभी मिलि बार बार सिय रामहिं देखैं । इत लक्ष्मण उत भरत शत्रुहन भाग भले राजा दशरथ के ॥ मणि बिन सर्प चकोर चंद्र बिन जल बिन मीन कहु कैसे जिये री । तुलसीदास छबि वरण कहत है यह मूरत मेरे मन में बसी री ३१३ ॥

राग कान्हरो ।

भुजन पर जननी वार फेर डारी । क्यों तोरचो कोमल कर कमलन शंभु शरासन भारी ॥ क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताडका मारी । मुनि प्रसाद मेरे राम लषण की विधि सब करवर टारी ॥ चरण

रेणु लै नयनन लावत क्यों मुनिवधू उधारी । कहो धों तात क्यों जीत सकल नृप बरी विदेहकुमारी ॥ दुसह रोष मूरति भृगुपति अति नृपति निकर छै कारी । क्यों सौंप्यो सारंगहार हिय करत बहुत मनुहारी ॥ उमँग उमँग आनंद विलोकत बधुन सहित सुतचारी । तुलसिदास आरती उतारत प्रेम मगन महतारी ॥ ३१४ ॥

राग कालिंगडा ।

निरखत रूप सिया रघुवरको छबि नहिं जात बखानी । आरति करत कौशल्या रानी ॥ कनक थार गज माणिक मुक्ता भरचो वेद विधानी । मारचो मान सकल भूपनको महिमा वेद बखानी ॥ तोरन धनुष जनक प्रण पूरण तीन लोक में जानी । जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी ॥ सुरपुर नारि अवध पुरवासी करत विमल यश गानी । नचत नवल अपसरा मुदित मन बरष सुमन हर्षानी ॥ रत्न मंदिर में रत्न सिंहासन बैठे सारँगपानी । मात कौशल्या करत आरती हर्ष निरख मुसकानी ॥ दशरथ सहित अवधपुर बासी उचरत जै जै बानी । तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ३१५ ॥

राग ललित ।

रघुवर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है करियो गमन सकारे ॥ रघुवर कहैं सुनो मेरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूं घर मात कौशला दशरथ बाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुंब ते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ३१६ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो रघुराया । चौदा बरस मोहिं कब लग बीते मोहिं पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन प्रजाके बासी रो रो हाल बजाया । राम लषण सिया वनको सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमरे विरथा जन्म गँवाया ॥

राग देश ।

बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मात की करनी सकल दुनिया सों न्यारी है ॥ विमुख जिन राम सों कीना ऐसी जननी हमारी है । लगी रघुवंश में अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणी पै यही करता पुकारी है । सुना जब तात का मरना मनो बरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ बेसुध दृगन से नीर जारी है । धरूं मैं ध्यान सूरत का मुझे तृष्णा जो भारी है ॥ परूं रघुनाथके पाऊं यही तुलसी विचारी है ॥३१८॥

राग विहाग ।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसें तेरे देखन को ॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे । सुंदर श्याम कमल दल लोचन मो नयनन के तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

राग कालिंगडा ।

मैं कौन बन ढूंढों री माई मेरे दोनो बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई । बीच जानकी अधिक विराजे राजा जनककी जाई ॥ अंतर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई । राजा दशरथ ने प्राण तजेहैं कैकेयी मन पछताई ॥ इंद्र गरजे भादों बरसे पवन चले पुरवाई । कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर बजत वधाई । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई ॥ ३२० ॥

राग बिलावल ।

नृपति कुँवर राजत मग जात । सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अंशन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट विच नूतन पात । फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहि सहज मुसकात ॥ संग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजत बिन भूषन नव सात । सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन

विकसत मनु प्रात ॥ अंग अंग अगणित अनंग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ३२१ ॥

राग कल्याण ।

पूछत ग्राम वधू मृदु बानी । गौर श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुमरेको लगत सयानी ॥ शील स्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुष समंजल पानी । पिय तन चितै दृष्टि नीचेकर सखिन विलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देश ते आये जिहिं पुर बसो सुमंगल खानी । चलत पियादे पाँय त्रान विन राजकुँवरि किमि करो बखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी । ठान कुमति उर बसी सवति पन राज समय वन दीनो रानी ॥ सियके वचन सुनि सखी दुखितभई पल छिन मनो विरह गलानी । एक कहै भल भूप न कीनो वन नहिं दीनो कीनो हानी ॥ राम लषण सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी । सो भवसिंधु तरै गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी ॥ ३२२ ॥

राग बिलावल ।

फिर फिर राम सिया तन हेरत । तृषित जान जल लेन लषण गये भुज उठाय ऊंचे चढ टेरत ॥ अवनि कुरंग विहंग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत । मगन न डरत निरख कर कमलन सुभग शरासन सायक फेरत ॥ अवलोकत मग लोक चहूं दिशि मनो चकोर चंद्रमहिं घेरत । ते जन भूरिभाग्य भूतल पर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ ३२३ ॥ ॥

राग पील्ट ।

मेरी सुध आन लियो सिय प्यारी । मात कैकयी वनवास दियोहै प्राणों सों अधिक प्यारी ॥ कपटी मृगके पाछे धायो लछमन कियो रखवारी । मैं तोहिं सिया बहुत समुझायो तैं एक

न मानी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धरणि पर लछमन रोय पुकारी । तुलसीदास प्रभु वन वन ढूँढत विधनाकी गति न्यारी ॥ ३२४ ॥

राग गौरी ।

कुटुंब तज शरण राम तेरी आयो । तज गढ लंक महल औ मंदिर नाम सुनत उठ धायो ॥ भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो । मूरख अंध कह्यो नहिं मानै बार बार समुझायो ॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँस कंठ लगायो । जन्म जन्मके मिटे पराभव राम दरश जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथके बंधू दीन जान अपनायो । तुलसीदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभयपद पायो ॥ ३२५ ॥

राग केदार ।

दीन हित विरद पुराणन गायो । आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो ॥ तुमरे रिपुको अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो । सुन गुण शील स्वभाव नाथ को मैं चरणन चित लायो ॥ जानत प्रभु दुख सुख दासनके ताते कह न सुनायो । करकरुणा भर नयन विलोको तब जानों अपनायो । वचन विनीत सुनत रघुनायक हँस कर निकट बुलायो ॥ भेट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परस अभय कियो जन पर हेतु दिखायो । तुलसिदास रघुवीर भजन कर को न अभयपद पायो ॥ ३२६ ॥

राग धनाश्री ।

सत्य कहों मेरो सहज स्वभाउ । सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सब विधि दीन हीन अति जड मति जाको कतहुँ न ठाउँ । आये शरन भजों न तजों तिहि यह जानत ऋषिराउ ॥ जिनको हौं हित सब प्रकार चित नाहिन और उपाउ । तिन हित लगि धर देह करों सब डरों न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहत हों सकल सभा पतियाउ । नाहिंन

काउ प्रिय मोहि दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीषण प्रेम मगन मन चाउ । तुलसिदास तज आश त्रास सब ऐसे प्रभुको गाउ ॥ ३२७ ॥

राग काफी जंगला।

तात कि शोच न मात कि शोचरु शोच नहीं मोहिं अवध तजे की। शोच नहीं वनवास लिये कि शोच नहीं मोहिं सीया हरे की ॥ बाली हतेकी शोच नहींरे शोच नहीं मोहिं विपति परेकी। लछमन धरणि परे का शोच नहीं शोचनहीं मोहिं लंक जरे की। तुलसी शोच भयो इक मोको भक्त विभीषण बाहँ गहेकी ३२८

राग विहाग।

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बंध रघुवीर आये। अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उडत पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगर में धनुष ना सक्यो उठाय कोई। तोरचो धनुष गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ वालि सों शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य ना जगत माहीं। लग्यो जब बाण रघुनाथके हाथको गिरि परचो धरणि फिर उठ्यो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की वेग धावो नहीं विलम कीजै । सूर स्वामी रंग लाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥ ३२९ ॥

राग गौरी।

अब देखो राम ध्वजा फहरानी। हलकत ढाल फरकत नेजा गरद उठी असमानी ॥ लक्ष्मण वीर वालि सुत अंगद हनूमान अगवानी । कहत मंदोदरी सुन पिय रावण कौन कुमति सियं आनी ॥ जिस सागर का मान करत है तापर शिला तरानी। तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बडाई। ध्रुव मंडल से पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई ॥ हनूमान जैसे पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई। जरत अग्नि में कूद परैंगे शोच कभूं नाहिं पाई ॥

मेघनाद से पुत्र हमारे कुंभकर्ण से भाई । एक बेर सन्मुख होय लडैं- गे युग युग होत बडाई ॥ इक लख पूत सवालख नाती मौत आपनी आई । अग्रके स्वामी गढ लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी ॥२३०

राग कालिंगड़ा ।

जय जय जय रघुवंशदुलारे । सुखसागर रविवंश उजागर लीला ललित मनोहर प्यारे ॥ यज्ञ सुधारन असुर सँहारन गौतम नारि उधारन हारे । जनक स्वयंवर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारण हारे ॥ पिता वचन सुन राज काज तज अनुज सहित वनको पग- धारे । वालि वधन वैदेही शोधन लंकापति भुज भंजन हारे ॥ जगनायक प्रभु संत सहायक गावत वेद पुराण पुकारे । राम सखे रघुनाथ रूप लख युग युग येही विरद तिहारे ॥ २३१ ॥

राग श्यामकल्याण ।

सखी वह देखो रघुराई । गगन मगन पुष्पक विमान पर हैं बैठे सुखदाई ॥ संग में फवी जनक जाई । ज्यों सावन घन माहिं दामनी दमकत छबि छाई ॥ कपिनकी भीर संग भारी । हनूमान सुग्रीव विभीषण अंगद युवराई ॥ मात कौशल्या हरषाई । कंचन थार सुधार आरती करें सुमनभाई ॥ देवगण फूलन झरि लाई । अटल राज संपति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई ॥ याचकन मन मांगी पाई । देत अशीश अघाय रतनहरि बलि बलि बलि जाई ॥२३२॥

राग गौरी ।

अवध आनंद भये घर आयेहैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भर- तजी भैया पाछे कैकयी माय । घर घर मिले अयोध्या बासी पाछे कौशल्या हरिकी माय ॥ जबहीं राम सिंहासन बैठे कहो लंक की बात ॥ मात कौशल्या पूछन लागी कैसे तोडे गढलंक । बाट घाट लक्ष्मणने रोंक्यो औघट रोक्यो राम ॥ दरवाजा अंगद ने रोंक्यो कूद पडे हनुमान ॥ रावण मार अहिरावण मारचो दियो विभी- षण राज ॥ गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसी दास ॥ २३३ ॥

राग पीलू।

भरत कपि से उऋण हम नाहीं। सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गयो छिन माहीं॥ लंकाजार सिया सुध लाये गरव नहीं मन माहीं। शक्ती बाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माहीं॥ द्रोणागिरि पर्वत लै आये भोर होन नहिंपाई। अहिरावणकी भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माहीं॥जो पै भरत हनुमत नहीं होते को लावे जग माहीं। आज्ञा भंग कभूं नहिं कीनी जहिं पठयो तहिं जाई॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई॥ २३४॥

राग प्रभाती।

प्रात समय उठ जनकनंदनी त्रिभुवन नाथ जगावे। उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर कंकण सुरझावे। घूंघर वारी अलकें झलकें पाग के पेंच सँवारे॥ कमल नयन मुख निरख रामको आनँद उर न समावे। कान्हर जास आश रघुवरकी हरष निरख गुण गावे॥ २३५॥

राग कल्याण।

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी। नील नीरद वरण वपुष भुवना भरन पीत अंबर धरन हरन द्युति दामनी॥ सरयू मज्जन किये संग सज्जन लिये हेतु जन पर हिये कृपा कोमल घनी। सजनी आवत भवन मत्त गज वर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विलुलित मृदुल करन विवरत चतुर सरस सुखमा जनी। ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत थरहर करत रुचिर जनु युग फनी॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नाशिका सुभग शुक आननी। चिबुक सुंदर अधर अरुण द्विज द्युति सुधर वचन गंभीर मृदु हास भव भाननी॥ श्रवण कुंडल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तनी। युगल कंचन मकर मनो विधु कर मधुर पियत पहँचान कर सिंधु कीरति

भनी ॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक भाल सु विशाल चहुँ पास वनी गज मनी । श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उडगन अनी ॥ मंदरन पर खरी नारि आनँद भरी निरख वरषहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी । दास तुलसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरत छबि आपनी ३३६॥

राग पहाड ।

छवि रघुवीरकी चित चोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कँलगी हीर । उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर ॥ कृपा निवासीके प्राण जीवन धन सुध हूं न भूषण चीर ॥

दृगन बसी रघुबीर की छवि हो ॥ शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर ॥ शीतल मंद सुगंध झकोरा बहती है त्रिविध समीर । जानकीदास छबि देख मगन भये शोभा श्याम शरीर॥३३८॥

अँखिया लगीं थारे रूप रँगीले रामा ॥ क्यारी करूं कछु वशना मेरो बूड गैयां रस कूप ॥ चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराई में अनूप । कृपा निवासी लगन ना छूटे सुनियो अवधके भूप॥३३९॥

राग सोरठ।

आँखिया राम रूप अनुरागी । श्याम वरन मन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुंदर वदन मदन शत शोभा निरख निरख रस पागी । रत्न हरी पल टरत न टारी परम प्रेम रँग रागी ॥३४०॥

आँखिया राम रूप रस भीनी । कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी ॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रँगीनी । रत्नहरी कैसे अब निकसे होगइ ज्यों जल मीनी ॥ ३४१ ॥

राग खट ।

मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो । वन प्रमोदकी कुंज गली में चोरचो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसक्यान विलोकन सें कछु टोना मोपै डारो । राम सखे अब विन पिया देखे सब सुख लागत खारो॥

राग कालिंगडा ।

बाँको हमारो यार सँवलिया । बाँकी लटपटी पीत लपेटे बाँकी बाँध तलवार सँवलिया । बाँके शीश जरतकी पगिया बाँके घोड़े असवार सँवलिया । रामसखेको मन हरिलीनो दशरथ सुत सरदार सवँलिया ॥ ३४३ ॥

राग जंगला ।

काहेको बाँधे तीर कमनियां । भौंहैं कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियां ॥ संत हृदय वन मन मृग ढूंढत चुन चुन मारत शब्द रसनियां । रामसखेको घायल कीनो बन आवे लै जाउ घर कनियां ॥ ३४४ ॥

क्या बुलाक अधरन पर हलकें । जबते दृष्टि परी है मेरी तब ते छिन पल परत न पलकें ॥ किधों असमसर शर संधाने क्या सुखमा पर सरवर झलकें । सिया राम पिया मुख मयंकें पर मनों अमीकी मूरत झलकें ॥ ३४५ ॥

यह दोउ चंद्र बसैं उर मेरे । दशरथ सुत औ जनकनंदनी अरुण कमल कर कमलन फेरे ॥ चंद्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरे । बैठे सघन कुंज सरयू तट चन्द्रकला तन हँस हँस हेरे ॥ ललित भुजा दिये अंश परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरे । रामसखे छबि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे॥

जय श्री जानकीवल्लभ लालहिं । मणि मंदिर श्री कनक महल में विपुल रँगीली बालहिं ॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं । युगल विहारी भावत दोऊ लालन लखि छबि भई निहालहिं ॥ ३४७ ॥

राग वडहंस मलार ।

तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे । नवल दुलहैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे ॥ झूले देत डरत अति सुंदर चोरत चित्त हमारे । सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रिया रूप मतवारे ॥

मधुर प्रियाके गरे लाग अब मिलो जानकी प्यारे ॥ ३४८ ॥

झूलन सीताराम अवधपुर रंग महिल में । मणि कंचनको रच्योहै हिंडोरा झूलत पिया प्यारी परम सहिल में ॥ विमलादिक सखी रसिक झुलावें अतर लगावें परमचहिल में । सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परम टहिल में ॥ ३४९ ॥

राग देश मलार ।

सावन घन गरजें घूम घूम । बरसत शीतल जल झूम झूम ॥ कोयल कीर कोकिला बोलें हंस चकोर चहूं दिश डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम ॥ कंचन को हिंडोला झलके रेशम पाट मढ़े मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कली दल तूम तूम ॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मंद सुगंध महा छवि छाई झूलें जनकसुता रघुराई बहु बाल झुलावें ऊम ऊम ॥ गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानो छवि दामिन झूटा देत नारि गज गामिन पायल बाजें छम छूम छूम ॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छवि निर्खत छाय रह्यो सुख रूम रूम ॥ ३५० ॥

गावो वसत वसंत पंचमी मंगल दिन रघुराज कुँवरको । आवो सब मिल गंधर्व गुणी जन तान तरंग उमंग रंग भर को ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रँगी सारंगी करको । गाय गाय रघुनायक गुण गण रतनहरी हिये रामही हरषो ॥ ३५१ ॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसंत आई । नवल कुसुमावली फूल चहुँदिशि रही नवल मारुत नवल सुगंधछाई ॥ नवल भूषण वसन पहन दोउ रँगमगे नवल पिया सखी निरखैं सुहाई । नवलगुण रूप जोवन जडत नित नयो रतन हरि देत आशिष बधाई ॥ ३५२ ॥

खेलत वसंत राजाधिराज । देखत नभ कौतुक सुर समाज ॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ । झोरिन अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजैं मृदंग डफ ताल वेणु । छिरकैं सुगंध भरे मलै रेनु ॥ बरषत प्रसून वर विबुध वृंद । जै जै दिनकर कुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध बास । गावत कल कीरति तुलसिदास ॥ २८३ ॥

राग टोडी ।

अवध नगर सुंदर समाज लिये खेलत राम लषण होरी । बाजत ताल मृदंग झांझ डफ केशर रंग करी घनघोरी ॥ इत ते भरत शत्रुहन आये उडत गुलाल लाल भई खोरी । रतनहरी श्री अवध बिहारी चिरजीवो सुंदर दोउ जोरी ॥ ३५४ ॥

राग होरी दादरा ।

खेलत रघुराज आज रंग भरी होरी । राम लषण भरत शत्रुहन सुंदर वर जोरी ॥ कंचन पिचकारी करन केसर रँग घोरी । गह गह भर रंग भरत कह कह हो होरी ॥ उड़त रंग वर गुलाल भर भर भर झोरी । गारी दे दे अबीर डारत बरजोरी ॥ रंगसों मृदंग बाजत डफकी घनघोरी । गाय गाय धाय धाय मींडत मुख रोरी ॥ अवध नगर रंग बढयो सजनी निरखोरी । रतनहरी रामराज युग युग न टरोरी ॥ ३५५ ॥

राग होरी ।

दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलत आवै री । राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री ॥ कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छवि पावै री । उडत गुलाल लाल रँग भीने मन सो भावै री ॥ डफ मृदंगकी धुन मिल अद्भुत राग सुहावै री । रतन हरी श्री अवध विहारी पै बलि बलि जावै री ॥ ३५६ ॥

राग परज ।

लाल गुलाल जिन डारो । बरजोरी न करो रघुनंदन छोडोजी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक जाय बैयां छूट जाय कचवारो । रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूंघट पट न उघारो ॥ ३५७ ॥

राग होरी ।

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमें बसी निकसे न पलक । गाल गुलाल लाल रँग भीनी तेरी प्रेम भरी अँखियन की पलक ॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजब फँसी कुंडल में अलक । रतनहरी जो सुनो तो कहूं इक अरज हमारी है तुमरे तलक ॥ ३५८ ॥

राग देश ।

रघुवर तुमको मेरी लाज । सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम बड़े गरीबनिवाज ॥ पतितउधारन बिरुद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज । हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज ॥ अघ खंडन दुखभंजन जनके यही तिहारो काज । तुलसिदास पर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज ॥ ३५९ ॥

राग वसंत ।

वंदौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटे भव भेद ज्ञान ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पद पंकज अज महेश ॥ निज भक्त हृदय पाथोज भृंग । लावण्य वपुष अगणित अनंग ॥ अति प्रबल मोह तम मारतंड । अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि । कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणारविंद । जानकी रमण आनंदकंद ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल । निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुणगहन राम । कह तुलसिदास विश्राम धाम ॥ ३६० ॥

राग नट ।

हौं हरि पतित पावन सुने । हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने । और पतित अनेक तारे जात कापै गने ॥ जान नाम अजान लीने जान यमपुर मने । दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ ३६१ ॥

राग जंगला ।

चितहिं राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं । चितहिं दीन ओर कोर बार बार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिबी विचार लीन लाय लीन पाछहिं ॥ लुगा रोटि महीन मोटि खरा खोटि बडा छोटि तुमसे नहिं कछू ओट हाथ है तिहारे । ना तिहारे रोजगार पेट हीसे एहै काज सुनिये गरीबनिवाज राम रटन उदर भरन मेरे राम राखो शरण यथा धेनु बाछहिं ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय बारिउ कहार जहां आसन करडासहिं । बचै जूठन को प्रसाद तोरा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुध लीजो मोरी इनके सब पाछहिं ॥ कौल ते बेकौल हों तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहिं खोर राम खेद देव आछहिं । मांगों बलि चरण सेई बार बार हेई हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे । ताते कर चरण जोर मोको नहिं और ठौर तुम तज और जाऊं कहां अवधके दुलारे ॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहों तुमरी ओर चौकट नहीं छूटे नाथ जोकोई झिझकोरे । शीश झगर नाक रगर कल न परै तुमरी बिगर छूटे नहीं नाम नगर डगरश्याम प्यारे॥

राग देश ।

करुणानिधान सुनियोजी कछु मेरो काजहै भारी । प्रहलादके हित कारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब संतनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्ततेरी जो आन सभामें घेरी चीरोंकी लाई ढेरी अब आई बार मेरी ॥ तुमहो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी बेर माधो काहिं सोये हो तो जागो॥गजकी जो अरज मानी यह विदित वेद वानी अब मेरी ओर देखो मोहिं अपनो कर लेखो ॥ भक्तनके फंद काटे अघ कोट कोट नाठे जी मैं बारबार टेरूं टुक बाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी मैं गिनत गिनत हारे महाराज अवध बिहारी भज रामसखे बलिहारी ॥ ३६३ ॥

राग भैरव ।

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे । काको नाम पतित पावन जग

किहिं अति दीन पियारे ॥ कौने देव बराय विरदहित हठि हठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण विटप जड यमन कवन सुर तारे ॥ देवदनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवस विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ ३६४ ॥

राग टोड़ी ।

दीनको दयालु दानि दूसरो न कोई । जाहि दीनता कहौं हौं दीन देखों सोई ॥ मुनि सुर नर नाग असुर साहिब तो घनेरे । पै तौलौं जौलौं रावरे न नेक नयन फेरे ॥ त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदत वेद चारी । आदि अंत मध्य राम साहिबी तिहारी ॥ तोहिं माँग माँगनो न माँगनो कहायो । सुन स्वभाव शील सुयश याचक जन आयो ॥ पाहन पशु विटप विहँग अपने करलीने । महाराज दशरथ के रंक राव कीने ॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो । बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो ॥ ३६५ ॥

राग टोड़ी ।

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी । हौं प्रसिद्ध पातकी तू पाप पुंज हारी ॥ नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसों । मोसमान आरत नहिं आरत हर तोसों ॥ ब्रह्म तू हौं जीवहौं तू ठाकुर हौं चेरो । तात मात गुरु सखा तू सभ विधि हित मेरो ॥ तोहिं मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै । ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै ॥ ३६६ ॥

राग झंझोटी ।

मैं किहि कहौं विपति अति भारी । श्रीरघुवीर दीन हितकारी ॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा । तहँ बसे आय बहु चोरा ॥ अति कठिन करैं बरजोरा । मानें नहिं विनय निहोरा ॥ तम मोह लोभ हंकारा ॥ मद क्रोध बोध रिपु मारा ॥ अति करैं उपद्रव नाथा । मरदैं मोहिं जानि अनाथा ॥ मैं एक अमित बटपारा । कोउ सुनै न मोर पुकारा ॥ भागेहु नाहिं उबारा । रघुनायक करो सँभारा ॥ कह तुलसिदास

सुन रामा। लूटै तस्कर तव धामा ॥ चिंता यह मोहिं अपारा। अपयश ना होय तिहारा ॥२६७॥

राग आसावरी।

लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण बिसार शोच तज जो हरि तुमको भावत ॥ सकल संग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मोसम मंद महा खल पामर कौन जतन तिहिं पावत ॥ हरि निर्मल मन प्रसन हृदय असमंजस मोहिं जनावत। जिहिं सर काक कंक बक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत। तिहूं गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव संत यह कह औरन समुझावत। हौं तिनसों हरि परम बैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत। राख शरण उदार चूडामणि तुलसि दास गुणगावत॥२६८॥

राग कालिंगड़ा।

हम रघुनाथ गुणनके गवैया। ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नहिं जाने ताना थैया ॥ भरू ध्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया। गीत संगीत प्रबंध त्रिवत जाति इनके नाहिं गढैया ॥ डूम अथाई काल कलाउँत नाहिन भांड भवैया। रतनहरी रघुनाथ भजन विन काहू सों राम रमैया ॥ ३६९ ॥

मैं तो पतित उधारो श्री रामा। मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मैं तो बाबल देघर नंढडी। गलहार हमेल सोहे कंठडी ॥ प्यारे बाझों नहीं जीया मैं ठंढडी। मैंतो बाबल दे घर भोलड़ी ॥ आगे जंज पिछे मेरी डोलड़ी ॥ बाझों नहिं मैं सोहदड़ी। हत्थी छल्ले छापां-बाहीं हो चूडीयां। प्यारे बाझों सभी गल्लां हो कूडीयां ॥ लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां। शाहुसैन फिरै जी उतावला। पहली चोट न थींदे चिट्टे हो चावला ॥ कोई ढंग मिलें साईं हो रावला ॥ ३७० ॥

राग आसावरी।

कौन जतन विनती करिये। निज आचरण विचार हार हिय मान-

जान डरिये ॥ जिहिं साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये । जाते विपति जाल निशि दिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म वचन परहित कीने तरिये । सो विपरीत देख परसुख विन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसँग सुदृढ धरिये । निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आदरिये ॥ संतत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये । कहो अब नाथ कौन बल ते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभाव ते द्रवो तो निस्तरिये । तुलसिदास विश्वास आन नाहिं कत पच पच मरिये ॥ ३७१ ॥

सवैया ।

आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जायँ न जाने ।
जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥
धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने ।
को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने॥३७२॥

कवित्त ।

जाही हाथ धनुष चढायो है सीतापति जाही हाथ रावण सँहारि लंक जारी है । जाही हाथ तारचो औ उबारचो हाथ हाथी गहि जाही हाथ सिंधु माथि लक्ष्मी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरिवर उठाय गिरिधारी भयो जाही हाथ नंद काज नाथ्यो नाग कारी है । हौं तो अनाथ हाथ जोर कहों दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ गहबेकी बारी है ३७३

राग भैरवी ।

कब ढुरिहौ रघुनाथ हमारे । जैसे ढुरे भक्त प्रहलादहिं खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे ॥ जैसे ढुरहे राजा बलिके देत दरश नित नित प्रति द्वारे । जैसे ढुरहे भक्त विभीषण लंका जार सो रावण मारे ॥ जैसे ढुरहे द्रुपदसुता पै खैंचत चीर दुशासन हारे । ऐसे ढुरहो दास तुलसि पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥ ३७४ ॥

राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै । निशि दिन नाथ देउँ शिख बहु विधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै । होय अनुकूल विसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशि वासर शिर पद त्रान बजै । तदपि अधम विचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ़ लजै ॥ हौं हारचो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ २७५ ॥

राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की । परिहरि राम भक्ति सुरसरिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान मति घन की । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यों गच कांच विलोकि शेर जड छांह आपने तनकी । टूटत अति आतुर अहार वश क्षति विसार आननकी ॥ कहँ लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ २७६ ॥

राग टोडी ।

और कौन मांगिये को मांगवो निवारि है । तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्म धाम राम काम कोटि रूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्ग शूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सब के द्वार बाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीबनिवाजै ॥ सेवा विन गुण विहीन दीनता सुनाये । जे जे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसिदास याचक रुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्रतू चकोर मोहिं कीजिये ॥ २७७ ॥

राग जैजैवंती ।

प्रीति की रीति रघुनाथ जाने । जात कुल वरणको नाहिं माने ॥ प्रीति प्रह्लादकी जान करुणानिधी खंभ सों प्रगट नख

उदर भाने । दौड गजराजके फंदको काटने गरुडको छोड आये उठाने ॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सराने । गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने ॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोट सी लंक गढ को ढहाने । बैर को भाव उत्साह हरि मिलनको अंतकी बेर अंग में समाने ॥ भक्त भगवंत अंतर निरंतर नहीं यही तो निगम आगम बखाने । दास कान्हर यही रीति रघुनाथ की आपसे भक्तको सरस माने ॥ ३७८ ॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निवाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई । रण पर्‍यो बंधु विभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई । तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई । केवट मीत कहत सुख मानत वानर बंधु बडाई ॥ प्रेम कनौडो राम सों प्रभुत्रिभुवन तिहुँ काल न भाई । तेरो ऋणी हौं कह्यो कपि सों ऐसी मानिहै को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई । तौ तोहिं जन्म जाय जननीजड तनु तरुणता गँवाई ॥

राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूं सों करत नेह सो प्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहँचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु विभीषण

शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठ ताहि भेटत देह दशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील बानर जिनहिं सुमिरत हानि । किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि । भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ ३८० ॥

राग प्रभाती ।

साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कब शबरी काशीको धाई कब पढ़ि आई गीता ॥ जूठे फल ताके प्रभु खाये नेक लाज नहिं कीता । लंकापतिको गर्व हरचो है राज्य विभीषण दीता ॥ सुग्रीव सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता । सफल यज्ञ मुनि जनके कीने सब भूपन बल जीता ॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्धचित्त लख सबहिं मोक्ष पद दीता ॥ ३८१ ॥

राग सोरठ ।

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी ॥ साधन हीन दीन निज अघ वश शिला भई मुनि नारी । गृह ते गवन परश पद पावन घोर शाप ते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान बनचारी । भेट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहिं कुलजाति विचारी ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी । सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये भय टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रत धारी । जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शवरी योषित शठ लोक वेद ते न्यारी । जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउ रघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी । सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सह गारी ॥ रिपुको बंधु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी । शरण गये आगे होय लीनो भेटचो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरण ते वानर रीछ विकारी । वेद

विदित पावन किय ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी । कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ ३८२ ॥

राग भैरव ।

ऐसी हरि करत दास पर प्रीति । निज प्रभुता बिसार जनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्म की डोरी । सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार न पायो । करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिन सों नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभुवन पति वेद विदित यह लीख । बलि सों कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज मांगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार । अंबरीष हित लाग कृपानिधि सो जनम्यो दश बार ॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहिं खोजत मुनि ज्ञानी । वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल यम काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी । तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंत करधारी ॥ ३८३ ॥

राग जैतश्री ।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति । विरद हेतु पुनीत परिहर पामरन पर प्रीति ॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय । मातकी गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहित गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन । जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नेम ते शिशुपाल दिन प्रति देत गिन गिन गार । कियो लीन सो आप में हरि राजसभा मँझार ॥ व्याध चरणहिं बाण मार्‍यो मूढ मति मृग जानि । सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज बानि ॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय । प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ३८४ ॥

राग सोरठ ।

ऐसो को उदार जग माहीं । बिन सेवा जो द्रवै दीन पर राम

सरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी । सो गति देत गीध शबरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो संपति दशशीश अर्प कर रावण शिव पै लीनी । सो संपदा विभीषणको अति सकुच सहित हरि दीनी । तुलसि दास सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो । तो भज राम काम सब पूरण करैं कृपानिधि तेरो ॥ ३८५ ॥

राग जंगला ।

ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो । वारि न बोर सको प्रहलादहिं पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश बहुभाँति सतायो हठकर वैर करोसो । मारचो चहै दास नरहरिको आपै दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारण पठयो जहर खरोसो । राम नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो० ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा पकरो सो । ऐंचत ऐंचत भुज बलहारे नेक न अँग उघरो सो ॥ ऐसो० ॥ भारत में भरुहीके अंडा कोटिनदल बिखरोसो । राम नाम जब पक्षी टेरचो घंटा टूट परो सो ॥ ऐसो० ॥ जारचो लंक अंजनीनंदन देखत पुर सगरो सो । ताके मध्य विभीषणको गृह राम कृपा उबरो सो ॥ ऐसो० ॥ रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठ कर हरि सुमिरो सो । मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरो सो ॥ ऐसो० ॥ तुलसिदास विश्वास राम को का कर नारि नरो सो । और प्रभाव कहाँ लग वरणों ज्यहि यमराज डरो सो ॥ ऐसो० ॥ ३८६ ॥

रे मन राम भरोसो भारी । पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बांधे पतित छुडाये ऐसे पर उपकारी । सबकी खबर लेत दुख सुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी । मिहरदास प्रभु शरण गहे की राखो लाज हमारी ॥ ३८७ ॥

राग काफी ।

जानकी नाथ सहाय करैं जब कौन बिगार करै नर तेरो । सूरज मंगल सोम भृगु सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नाहिं गम्यता संग शनीचर होत उचेरो ॥ दुष्ट दुशासन निबल द्रौपदी चीर उतार कुमंतर प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ गये चीरके भार घनेरो । गर्भमें राख्यो परीक्षित राजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारत में भरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो । जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगत में भाग बडेरो ॥ रघुवंशी संतन सुखदाई तुलसिदास चरणको चेरो ॥ ३८८ ॥

राग बडहंस ।

जगके रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवारेहो । अब देख प्यारे खंभ में नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो।अब देख प्यारे सभा में जहँ कपटके पाँसेपरे॥ द्रौपदीको चीर बढायकै खैंचत दुशासन हरेहो ॥ अब देख प्यारे समरमें तैयार दोऊदल खरे ॥ चिगना बचे भरदूलके गज घंट वापर परे हो । अब देख प्यारे लंकमें संकट विभीषणको परे ॥ तुलसी सराहत राम को जिन अवध मंगल भरे हो॥ ३८९ ॥

राग झंझोटी ।

अस कछु समुझि परै रघुराया । विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥ वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुण भव पार न पावै कोई । निशि गृह मध्य दीपकी बातन तम निविरत नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखै न विपति नशावै ॥ षट रस बहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै । विन बोले संतोषजनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ जब लग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश मन माहीं । तुलसिदास तब लग जग भरमत सुपनेहुं सुख नाहीं ॥ ३९० ॥

हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृषा सत्य भासे जब लग नहिं कृपा तुम्हारी ॥ अर्थ अविद्यमान जानीये संमृत नहिं जाय गुसाईं । विन बांधे निज हठ शठ परवश पर्यो कीरकी नाईं ॥ सुपने व्याध विविध बाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करैं जागे विन पीर न जाई॥श्रुति गुरु साधु स्मृति सम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि विन तजे भजे विन रघुपति विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै । तुलसिदास मैं मोर गई विन जिय सुख कभूं न पावै ॥ ३९१ ॥

राग बिलावल ।

केशव कहि न जाय क्या कहिये । देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नहिं विन तनु लिखा चितेरे । धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे ॥ रवि कर नीर बसे अति दारुण मकर रूप तिहि माहीं । वदन हीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं ॥ कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ युगल प्रवल कर मानै । तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम सो आपन पहुँचानै ॥ ३९२ ॥

राग भैरव ।

राम जप राम जप राम जप बावरे । घोर भव नीर निधि नाम निज नावरे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साधरे । ग्रसे कलि रोग योग संयम समाध रे ॥भलो जो है पोच जो है दाहिनो जो वाम रे । राम नामहीसे अंत सभहीको काम रे ॥ जग नभ वाटिका रही है फैल फूल रे । धूआं कैसे धौल हैं तू देख मत भूल रे ॥ राम नाम छाँड जो भरोसो करै और रे । तुलसी परोसो त्याग मांगे कूर कौर रे ३९३ ॥

राम नाम जप जिय सदा सानुराग रे । कलि न विराग योग याग तप त्याग रे॥राम नाम सुमिरण सब विधिहीको राजरे । राम को विसारबो निषेध शिरताज रे॥ राम नाम महामणि फणि जग जाल रे । मणि लिये फणि जिये व्याकुल विहाल रे॥राम नाम कामतरु

देत फल चार रे । कहत पुराण वेद पंडित पुकार रे ॥ राम नाम प्रेम परमारथको सार रे । राम नाम तुलसीको जीवन अधार रे ॥६९४॥

राग जैजैवंती ।

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है । मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साज है ॥ सुपने ज्यों धन पछान काहे पर करत मान वारूकी भीत तैसे वसुधा को राज है । नानक जन कहत बात विनश जैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आज है ॥ ३९५ ॥

राग भैरव ।

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको । संवरनिसंवरको सखा असहायको ॥ भाग है अभागेहूंको गुण गुणहीनको । गाहक गरीबको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो जो वेद साख है । पांगुरेको हाथ पांव आंधरेको आंख है ॥ माई बाप भूखे को अधार निराधारको । सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन रामनाम सों न दूसरो । सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसों ऊसरो ॥ ३९६ ॥

राग पहाड ।

सब मतको मत यह उपदेशू । मूल मंत्र यह उचित शिखावन भज मन सुत अवधेशू ॥ अहिपुर नरपुर देवलोक पुर रंक फकीर नरेशू । जो जापक सिय रामनामको सो भवसिंधु तरेसू ॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू । तुलहिं न सीता राम नाम सम वेद पुराण कहेसू ॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू । यह सब गावत नाम महातम काग भुशुंडि खगेशू ॥ नाम प्रतीत राख हिरदे में उमा सों कह्यो महेशू । तुलसिदास यह नाम कि महिमा कलिमल सकल हरेसू ॥ ३९७ ॥

राग कालिंगडा ।

राम सुमिरले सुमिरन करले को जाने कल की । खबर ना या

जगमें पलकी ॥ रैनि अँधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी । धीर धीरे पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी ॥ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर नातां छलकी । शिर पर गठरी धरी पापकी कौनकरै हलकी ॥ भवसागरके त्रास कठिन हैं थाहि नहीं जलकी । धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो काया मंडल की।भज भगवान आन नहिं कोईआशा रघुवरकी३९८॥

राग धनाश्री ।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई । राम नाम सुमरन विन बूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई । इन में कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने । तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने । शूकर कूकर योनि भ्रम्यो तऊ लाज न आई । राम नाम छाँड अमृत काहे विष खाई । तज भर्म कर्म विधि निषेध राम नाम लेही । गुरु प्रसाद जन कबीर राम कर सनेही ॥ ३९९ ॥

राग भैरव ।

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै । शंकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैवट छाजै ॥ श्यामचरण पद पीठ अरुण तल लसत विशद नखश्रेनी । जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चलि ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुज सुंदर भँवर तरंग विलासा । मज्जाहिं सुरसज्जन मुनिजन मन मुदित मनोहर बासा ॥ विन विराग जप याग योग व्रत विन तीरथ तनुत्यागे । सब सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ ४०० ॥

राग विभास ।

भज मन रामचरण सुखदाई । जिहि चरणन से निकसि सुरसरी शंकर जटा समाई ॥ जटा शंकरी नाम परचो है त्रिभुवन तारन आई । जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लव-लाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई । सोई

चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ सोई चरण गौतम ऋषिनारी परश परमपद पाई । दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई । कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुत सुतकी प्रभु निज मुख करत बडाई ॥ ४०१

राग परज ।

भज मन रामचरण दिन राती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशि दिन भजन करत अलसाती ॥ विरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिन राती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नाहिं खाती ॥ संवत सोरासै इकतीसा जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत है प्रथम अरजकी पाती ॥ ४०२ ॥

रे मन क्यों न भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भंजनजनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू तीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चंचल चित हो बीर । मंद मंद मुसकात सखन सों बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निंदत कर कमलन धनु तीर।रामदास रघुनाथ भजन विन धृग धृग जन्म शरीर ॥

राग सोरठ ।

रे मन राम सों कर प्रीत । श्रवण गोविंद गुण सुनो अरु गाउ रसना गीत ॥ कर साधु संगति सुमिर माधो होय पतित पुनीत । काल व्याल ज्यों परचो डोलै मुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि तोहिं ग्रसिहै समझ राखो चीत । कहै नानक राम भजले जात औसर बीत ॥ ४०४ ॥

राग धनाश्री ।

सुन मन मूढ शिखावन मेरो । हरिपद विमुख काहू न लह्यो

सुख शठ यह समझ सवेगो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयनन ते पावत दुख बहुतेरो । भ्रमत श्रमत निशि दिवस गगन में तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँ पुर सुयश घनेरो । तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहवो ताहू केरो ॥ छुटै न विपति भजे विन रघुपति श्रुति संदेह निवेरो । तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

राग ललित ।

गाले रे गोविंद गुणारे । ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछता वेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूंद से पिंड प्रगट कियो नयन नाशिका मुख रसना रे । ताको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरचो एक छिना रे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वानी बहु रूप बना रे । बृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे । ना माने तो साख बताऊं अजामील गणिका सधना रे ॥ धन यौवन अंजलिको जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे । जो सुख चहै भजे रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

राग भैरव ।

जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी । देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहे संसृत संताप रे । बूडयो मृग बारि खायो जेवरीके सांप रे ॥ कहै वेद बुध तूतो बूझ मन माहिं रे । दोष दुख सुपनेके जागे ही पै जाहिं रे ॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूं ताप रे । राम नाम शुच रुच सहज स्वभाव रे ॥ ४०७ ॥

राग प्रभाती ।

क्यों सोया गफलतका माता जागो रे नर जाग रे ॥ या जागे कोइ योगी भोगी या जागे कोइ चोररे । या जागे कोइ संत पियारा लगी राम सों डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे । ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरे सोइ

हंस कहावे कामी क्रोधी कागरे । तनु का चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुकी सरां बिच तू कीता अनुराग रे । रैनि बसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे ॥ साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे । नितानंद भज राम गुमानी जागन पूरण भागरे ॥ ४०८ ॥

राग देश ।

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करै भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिये । हर होनी अन होनी करदे सो सब शिरपर सहिये ॥ करै कृपा हरि नाम जपावे सो अंतर ले गहिये । मिहरदास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये ॥ ४०९ ॥

राग पूरवी ।

अपनी ओर निबाहिये वाकी वाहू जाने । भली बुरी कछु जानत नाहीं कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ ४१० ॥

राग सोरठ ।

जाको प्रिय न राम वैदेही । सो छाँडिये कोटि वैरी सम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बंधु भरत महतारी । बलि गुरु ब्रजवनितन पति त्यागे भईं जग मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौ । आंजन कहा आंख जिहिं फूटे बहुतो कहों कहांलौ ॥ तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद सोइ है हितू हमारो ॥४११॥

राग मलार ।

जाको लगन रामकी नाहीं । सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सब हीके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई । बिन हरि भजन इंद्रायनके फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ ४१२ ॥

राग केदारो ।

ऐसे जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथ से प्रभु तज सेवत चरणविराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत बदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरंतर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कभूं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवे को अमित जतन उर आने । तुलसी चित चिंता न मिटै विन चिंतामणि पहिंचाने ॥ ४१३ ॥

राग भैरव ।

मोह जनित मल लाग विविध विध कोटों जतन न जाई । जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥ नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे । हृदय मलिन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे ॥ परनिंदा सुन श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये । सब प्रकार मल भार लाग निज नाथ चरण विसराये ॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धि हेतु श्रुति गावै । रामचरण अनुराग नीर विन मल अति नाश न पावै ॥ ४१४ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी प्रीति गोविंद सों ना घटे । मैं तो मोल महँगे लीया जी सटे ॥ चित्त सुमरण करूं नयन अवलोकनो श्रवण वाणी सुयश पूर राखूं । मन सुमधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसन अमृत राम नाम भाखूं । साधु संगति विना भाव नहिं ऊपजे भाव विन भक्ति नहिं होय तेरी । कहत रामदास इक वीनती प्रभु सों पैज राखो राजा राम मेरी ॥ ४१५ ॥

राग पीलो ।

सिया राम विना बीते जात दिना । धन जोवन और सुख संपदा रैनि का सुपना ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरो कोउ नहीं अपना । कहत कवीर सुनो भाई साधो झूठे मित्र घना ॥ ४१६ ॥

राग भैरव ।

राम कृष्ण उठ कहिये भोर । यह अवधेश वहीं ब्रज जीवन यह धनुष धरन वह माखन चोर ॥ इनके चमर छत्र शिर सोहै उनके लकुट मुकुट कर जोर । इन सँग भरत शत्रुहन लछिमन बलदाऊ सँग नंद किशोर ॥ इन सँग जनक लली अति सोहै उत राधा सँग करत कलोर । इन सागर में शिला तरायो उन गोवर्द्धन नखकी कोर ॥ इन मारचो लंकापति रावण उन मारचो कंसा बरजोर । तुलसीके यह दोऊ जीवन दशरथ सुत अरु नंद किशोर ॥ ४१७ ॥

राग गौरी

श्री रामचंद्र कृपालु भज मन हरन भव भय दारुणं । नव कंज लोचन कंज मुख करकंज पदकंजारुणं ॥ कंदर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरज सुंदरं । पट पीत मानो तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥ भज दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनं । रघुनंद आनँद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनं ॥ शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं । आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥ इमि वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं । मम हृदय कंज निवास कर कामादि खल दल गंजनं ॥ ४१८ ॥

छंद—नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल कंज लोचनं मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोप्रमेय वैभवं ।
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोक नायकं ॥
दिनेश वंश मंडनं महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र संत रंजनं सुरारि वृंद भंजनं ॥
मनोज वैरि वंदितं अजादि देव सेवितं ।
विशुद्ध बोध विग्रहम् समस्त दूषणापहं ॥

नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतांगतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल जे नरा भजंति हीन मत्सरा ।
पतंतिनो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनो यदा भजंति मुक्तिदं मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुंच शाश्वतं तुरीय मेव केवलं ॥
भजामि भाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं नतोहं मुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहिमे ॥
पठंतियेस्तवं इदं नरादरेण ते पदम् ॥
व्रजंति नात्र संशयः त्वदीय भक्ति संयुताः ॥ ४१९ ॥

अथ चेतावनी सामयिक.

सवैया ।

पूरण ब्रह्म बताय दियो जिन एक अखंड है व्यापक सारे ॥
रागरु द्वेष करै अब कौन सों जोई है मूल सोई सब डारे ॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्त्व विचार कह्यो निरधारे ॥
सुंदर शुद्ध किये मल धोयके वा गुरुको उरध्यान हमारे ॥ ४२० ॥

कवित्त ।

काहू सों न रोष तोष काहू सों न राग दोष काहू सों न वैर भाव काहू की न घात है ॥ काहू सों न बकबाद काहू सों नहीं विषाद काहू सों न संग नातो कोऊ पक्षपात है ॥ काहू सों न दुष्ट वैन काहू सों न लैन दैन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है ॥ सुंदर कहत सोई ईशनको महाईश सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै ॥४२१ ॥

लोह कू ज्यों पारस पषाण हू पलट लेत कंचन छुवत होय जग में प्रमानिये ॥ द्रुमको ज्यों चंदन हू पलटै लगाय बास आपके

समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीटको ज्यों भृंगहू पलटके करत भृंग सोऊ उड़जाय ताको अचरज न मानिये ॥ सुंदर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात शुद्ध शीख पलटै सो सतगुरु जानिये ॥ ४२२ ॥

गुरु बिन ज्ञान नाहिं गुरु बिन ध्यान नाहिं गुरु विन आतम विचार न लहत्व है । गुरु बिन प्रेम नाहिं गुरु बिन प्रीति नाहिं गुरु बिन शीलहूं संतोष न गहत्व है ॥ गुरु बिन वास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं भ्रम हूं को नाश नाहिं संशय ही रहत्व है । गुरु बिन बाट नाहिं कौड़ी विन हाट नाहिं सुंदर प्रगट लोक वेद यों कहत्वहै॥

कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊदेत राज साज देव ऋषि मुन्योहै । कोऊ देत यश मान कोऊ देत रस आन कोऊ देत विद्याज्ञान जगत में गुन्योहै ॥ कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निद्धि कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्योहै । सुंदर कहत एक दीयो जिन राम नाम गुरु सों उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है ॥

भूमिहूकी रेणुकी तो संख्या कोऊ कहतहैं भार हूं अठारह द्रुम तिनके जो पात हैं । मेघन की संख्या सोऊ ऋषिन विचार कही बूंदन की संख्या तेऊ आयके बिलात हैं ॥ तारनकी संख्या सोऊ कहीहै पुराण माहिं रोमन की संख्या पुनि जितनेक गात हैं ॥ सुंदर जहां लौं जंतु सबहीको आवै अंत गुरुके अनंत गुण कापै कहे जात हैं

गोविंदके किये जीव जातहैं रसातलको गुरु उपदेशै सोतो छूटें यमफंदते ॥ गोविंदके किये जीव वश परें कर्मनके गुरुके निवाज सूं तो फिरत स्वछंद ते ॥ गोविंदके किये जीव बूडत भवसागर में सुंदर कहत गुरु काढै दुख द्वंद ते ॥ औरहूं कहांलौं कछु मुखते कहूं बनाय गुरुकी तो महिमा है अधिक गोविंद ते॥४२६॥

जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत बुद्धि में विचार कर बहु अभिलाषिये ॥ चिन्तामणि पारस हूं कल्पतरु कामधेनु औरहूं अनेक निधि वारि वारि नाखिये॥ ताते मन वच कर्म कारि कर जोर कहूं सुंदर चरण शीशमेल दीनभाषिये ॥ बहुत प्रकार तीनों लोक सब शोधे हम ऐसी कौन भेट गुरुदेव आगे राखिये ॥ ४२७ ॥

कानके गयेते कहा कान ऐसे होत मूढ़ नयनके गयेते कहा नयन ऐसे पाइये ॥ नासिका गयेते कहा नासिका सुगंध लेत मुखके गयेते ऐसे मुख कहा गाइये ॥ हाथके गयेते कहा हाथ ऐसो काम होत पांवके गयेते ऐसे पांव कित धाइये ॥ याहीते विचार देख सुंदर कहत तोहिं देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये ॥ ४२८ ॥

बार बार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय ममताकी पोट शिर काहेको धरत है । मेरो धन मेरो धाम मेरे सुत मेरी बाम मेरे पशु मेरो ग्राम भूल्यो यों फिरत है ॥ तूतो भयो बावरो बिकाय गई बुद्धि तेरी ऐसो अंध कूप गृह तामें तू परत है ॥ सुंदर कहत तोहिं नेकहूं न आवे लाज काज कूं बिगारके अकाज क्यों करतहै४२९

वैरी घर माहिं तेरे जानत सनेही मेरे दारा सुत वित्त तेरो खोस खोस खायँगे । औरहू कुटुंब लोग लूटें चहूं ओरहीसे मीठी मीठी बात कर तोसों लपटायँगे ॥ संकट परेगो जब कोऊ नहीं तेरो तब अंतही कठिन वाकी बेर उठ जायँगे ॥ सुंदर कहत ताते झूठोही प्रपंच सब सुपनेकी नाईं सब देखत बिलायँगे ॥ ४३० ॥

श्रवण लै जाय कर नादकी ले डारें फाँस नयन वाले जाय कर रूप वश करचोहै ॥ नासिका लैजाय कर बहुत सुँघावै गंध रसन लैजाय कर स्वाद मन हरचोहै ॥ चर्म लैजाय कर नारी सों सपर्श करै सुंदर कोऊक साध ठगन सों डरचोहै ॥ काम ठग क्रोध ठग लोभ ठग मोह ठग ठगनकी नगरी में जीव आय परचोहै ॥ ४३१ ॥

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन भीगत ही गर जात माटी कोसो डेलहै ॥ मुक्तिके दुआरे आय सावधान क्यों न होय बार बार चढत न त्रियाको सों तेलहै ॥ करले सुकृत हरि भजन अखंड नर याही में अंतर परै यामें ब्रह्म मेल है ॥ मनुष जनम यह जीत भावै हार अब सुंदर कहत यामें जूवाको सों खेल है ॥ ४३२ ॥

सवैया ।

इंद्रिनको सुख मानत है शठ याहिते तू बहुते दुख पावै ॥

ज्यों जल में झख मांस है लीलत स्वाद बँध्यो जल बाहिर आवै ॥
ज्यों कपि मूठ न छांडत है रसना वश बंध परचो विललावै ॥
सुंदर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुर खाय सो कानछिदावै॥४३३॥
देखतके नर दीखत हैं पर लक्षण तो पशुके सबही हैं ॥
बोलत चालत पीवत खात सुवे घर वे बन जात सही हैं ॥
प्रात गये रजनी फिर आवत सुन्दर यों नित भारबही हैं ॥
और तो लक्षण आय मिले सब एक कमी शिर शृंग नहीं हैं॥४३४॥
पेट ते बाहिर होतही बालक आयके मात पयोधर पीनो ॥
मोह बँध्यो दिनही दिन ऐसे औ तरुण भयो त्रियके रस भीनो ॥
पुत्र प्रपौत्र बँध्यो परिवार सो ऐसेही भाँति गये पन तीनो ॥
सुन्दर राम को नाम बिसारके आपहि आपको बंधन कीनो॥४३५॥

कबित्त ।

दुनिया को दौरताहै औरतको लोरताहै औजूद को मोरताहै बटोई सराय का ॥ मुरगीको मोसताहै बकरीको रोसताहै गरीब को खोंसताहै बेमहर गायका ॥ जुलमको करताहै मालक सों न डरताहै दोजखको भरताहै खजाना बलाय का ॥ होयगा हिसाब तब आवेगा न ज्वाब कछू सुंदर कहत गुनहगार है खुदाय का ॥ ४३६ ॥

सवैया ।

ये मेरे देश विलायत हैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती ॥
ये मेरे मात पिता पुनि बंधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती ॥
ये मेरी कामिनी केलि करै नित ये मेरे सेवक हैं दिन राती ॥
सुंदर वैसेहि छांडि गयो सब तेल जरचो सो बुझी जब बाती॥४३७॥
कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है॥
कै यह देह जमीं में खाद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है ॥
कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है ॥
सुंदर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है४३८

तू कछु और विचारतहै नर तेरो विचार धरयो ही रहैगो ॥
कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोही लहैगो ॥
भोर कि सांझ घरी पल मांझ सो काल अचानक आय गहैगो ॥
राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुंदर यों पछिताय रहैगो ॥४३९॥
बीत भये पिछले सबही दिन आवत है अगले दिन नेरे ॥
काल महा बलवंत बडो रिपु साधि रह्यो शर ऊपर नेरे ॥
एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे ॥
सुंदर संत पुकार कहैं सब हौं पुनि तोहिं कहों अब टेरे ॥४४०॥
सोय रह्यो कह गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर काल दहारै ॥
धामस धूमस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोहिं पछारै ॥
ज्यों वनमें मृग कूदत फांदत चित्र गले नख सों उरफारै ॥
सुंदर काल डरै जाके डर ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारै ॥४४१॥
मात पिता युवती सुत बंधव आय मिल्यो इनसे सनबंधा ॥
स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिंन अंधा ॥
कर्म अकर्म करै तिनके हित भार धरे नित आपने कंधा ॥
अंत बिछोहभयो सबसों पुनि याहीते सुंदर है जगधंधा ॥ ४४२ ॥

कवित्त ।

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन माल मैं तो बहु विध भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हुकम कोऊ मेटै नाहिं मेरी युवती कूं मैं तो अधिक पियारो हूं ॥ मेरो वंश ऊंचो मेरे बाप दादा ऐसे भये करत बडाई मैंतो जगत उजारो हूं ॥ सुंदर कहत मेरो मेरो कर जाने शठ ऐसे नहीं जाने मैंतो काल हीको चारो हूं ॥ ४४३ ॥

देहतौ स्वरूप तौलौं जौलौं है अरूप माहिं सब कोऊ आदर करत सनमान है॥ टेढ़ी पाग बांध बार बार ही मरोरै मूंछ बाहूं उसकारै अति धरत गुमान है ॥ देश देशहीके लोक आयके हजूर होय बैठ कर तखत कहावै सुलतान है ॥ सुंदर कहत जब चेतना शकति गई वही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ ४४४ ॥

सवैया ।

नयननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जुगई है ॥
याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई तब रात भई है ॥
आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु और ठई है ॥
सुंदर ऐसेहि आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है ॥ ४४५ ॥
जो दश बीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगैगी ॥
कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य पृथ्वीपति होन कि चाह जगैगी ॥
स्वर्ग पतालको राज्य करों तृष्णा अधिकी अति आग लगैगी ॥
सुंदर एक सँतोष बिना शठ तेरी तो भूख कभी न भगैगी ॥ ४४६॥
काहेको दौरतहै दशहूं दिशि तू नर देख कियो हरिजू को ॥
बैठ रहे दुरके मुख मूंद उघारे के दंत खवायहै टूको ॥
गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको ॥
सुंदर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदय बिसवास प्रभू को॥४४७॥
भाजन आप गढ्यो जिनने भरि है भरि है भरि है भरि है जू ॥
गावतहै जिनके गुणको ढरि है ढरि है ढरि है ढरि है जू ॥
आदि हूं अंत हूं मध्य सदा हरि है हरि है हरि है हरि है जू ॥
सुंदरपास सहाय सही करि है करि है करि है करि है जू ॥ ४४८ ॥

कबित ।

या शरीर माहिं तू अनेक सुख मान रह्यो ताहि तू बिचार यामें कौन बात भली है ॥ मेद मज्जा मांस रग रगन में रक्त भरयो पेट हूं पिटारा सीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाडनसों मुख भरयो हाडन के नयन नाक हाथ पांव सोऊ सब हाडन की नली है ॥ सुंदर कहत याहि देख जिन भूलै कोय भीतर भँगार भरी ऊपर ते कली है४४९

कामिनीको अंग अति मलीन महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं ॥ हाड मांस मज्जा मेद चाम सों लपेट राखे ठौर ठौर रकत के भरे ही भँडार हैं ॥ मूत्र हूं पुरीष आँत एक मेक मिल रही औरहूं उदर माहिं बिविध बिकार हैं ॥ सुंदर कहत नारी नख शिख निंदा रूप ताहि जो सराहैं सोतो बड़ेही गँवार हैं ॥ ४५० ॥

सवैया ।

सर्प डसे सुनहीं कछु तालक बीछू लगे सुभलो कर मानो ॥
सिंह हूँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो ॥
आग जरो जल बूड मरो गिरि जाय गिरो कछु भय मत आनो ॥
सुंदर और भले सबही दुख दुर्जन संग भलो जिन जानो ॥ ४५१ ॥

कवित्त ।

अपने न दोष देखै परके अगुण पेखै दुष्टको सुभाव उठि निंदाई करतहै ॥ जैसे कोऊ महल सँवार राख्यो नीके कर कीरी तहां जाय छिद्र ढूंढत फिरत है ॥ भोर हीं ते सांझ लग सांझ हीते भोर लग सुंदर कहत दिन ऐसेही भरत है ॥ पांव के तरेकी नहीं सूझै आग मूरखको और सों कहत शिर ऊपर बरतहै ॥ ४५२ ॥

देखबेको दौरे तो अटक जाय वाही ओर सुनवे को दौरे तो रसिक शिरताज है ॥ सूंघवे को दौरे तो अघाय न सुगंध कर खायवे को दौरे तो न धीपै महराज है ॥ भोग हीको दौरे तो नृपति हूं न क्यों ही होय सुंदर कहत याहि नेकहूं न लाजहै ॥ काहूको न कह्यो करै आपनीही टेक धरै मन सों न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है ॥४५३॥

सवैया ।

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा ॥
जो मन काहू सों क्रोध करै तब क्रोध मयी होय जाय तद्रूपा ॥
जो मन मायाही माया रटै नित तो मन बूडत मायाके कूपा ॥
सुंदर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होत है ब्रह्म स्वरूपा ॥४५४॥

कवित्त ।

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत मनहीको भ्रम गयो जगत बिलात है ॥ मनही के भ्रम जेवरी में उपजत सांप मनके विचारे सांप जेवरी समात है ॥ मन हीके भ्रमते मरीचिका को जल कहैं मनहीके भ्रम सीप रूपा सा दिखात है ॥ सुंदर सकल यह दीखै मनहीको भ्रम मनहीके भ्रम गये ब्रह्म होय जातहै ॥ ४५५ ॥

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं तिनके तो वचन सुहात कहि कौन को ॥ कोकिलारु सारिका पुनि सूवा जब बोलत हैं सब कोऊ कान दै सुनत रवधौन को ॥ ताहि तैसो वचन विवेक कर बोलियत योहीं आक वाक बक तोरिये न पौन को ॥ सुंदर समझकर वचन उचार करो नहीं तौ समझकर बैठो गहि मौन को ॥

सवैया ।

कोउक निंदत कोउक वंदत कोउक देत हैं आयके भक्षण ॥ कोउक आय लगावत चंदन कोउक डारत धूरि ततक्षण ॥ कोउ कहै यह मूरख दीसत कोऊ कहै यह आय विचक्षण ॥ सुंदर काहू सों राग न द्वेष सो ये सब जानहु साधुके लक्षण ॥ ४५७ ॥

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई ॥ राज मिलै गज बाज मिलै सब साज मिलै मन बांछित पाई ॥ लोक मिलै सुरलोक मिलै विधि लोक मिलै बैकुंठ हूं जाई ॥ सुंदर और मिलै सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाई ॥ ४५८ ॥

कवित्त ।

देवहूं भयेते कहा इंद्रहूं भयेते कहा विधि हूंके लोक ते बहुरि आइयत है ॥ मानुष भयेते कहा भूपति भयेते कहा द्विजहूं भये ते कहा पार जाइयत है ॥ पशु हूं भयेते कहा पक्षी हूं भये ते कहा पन्नग भये ते कहा क्यों अघाइयत है ॥ छूटबे को सुंदर उपाय एक साधु संग जिनकी कृपा ते अति सुख पाइयतहै ॥ ४५९ ॥

इंद्राणी शृंगार कर चंदन लगायो अंग ताहि देख इंद्र अति काम वश भयोहै ॥ शूकरी हूं कदम के चहिल में लोट कर आगे जाय शूकर को मन हर लियो है ॥ तैसो सुख शूकर को तैसो सुख मघवाको तैसो सुख नर पशु पक्षी हूँ को दियोहै ॥ सुंदर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख सोई साधु जगत में जीत कर गयोहै ४६०

सवैया ।

मूयेते मोक्ष कहैं सब पंडित मूयेते मोक्ष कहैं पुनि जैना ॥ मूयेते

मोक्ष कहैं ऋषि तापस मूयेते मोक्ष कहैं शिव सेना ॥ मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहैं तेहूं धोखे हि धोखे बखानत बैना ॥ सुंदर आतम को अनुभव सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥ ४६१ ॥

कवित्त ।

सोम नाम विप्र वर गिरिजाके वरकर लीनो सुधा फलकर दीनो नरनाह के ॥ भूपति स्वपतनीको रानी निज मीत हीको ताने दीनो गीतकीको नीको फल चाह के ॥ आगे गणिका सगगे धरापति आगे धरा धरानाथ माथ धुना सुना धुना ताहि के ॥ हाहा कामिनीके हित हते काम नीके अब ताहि तजों ताहि भजों शीश शशी जाहि के ॥ ४६२ ॥

सवैया ।

जिनको नित मैं चितमों चितमों तिनकी रति मोतन माहिं रतीना ॥
वह आन पुमानके संग रती पुनि ता मन में गणिका गृह कीना ॥
धृग है अबला भृत कंदर्पहिं अरु मोहिं धिकार जो मार अधीना ॥
इत रीत समूह की प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना४६३

कवित्त ।

ग्रंथनके ज्ञाते माते मत्सर कीच बीच धरा नाथ मद साथ भरे दरशात हैं ॥ दूषण चमोर मोरे भूषण से भाषणको पंडित भूपाल तो न सुनें मोरी बात हैं ॥ पुनः आन जंतु जेते दुखी दीन मूढ तेते मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाषे राखे हवन को राखे तैसे जीरण मो गात में सुबात होत जात हैं ॥४६४॥

सवैया ।

शांत निजांत्र किं न गहे कत डोलै वृथा भव मों सघना ॥
होय यथा सुतथा निज है तुमते अनथा वह होवत ना ॥
प्रीति न साथ वितीत भली कछु हाथ मिली ना यथा स्वपना ॥
मौन गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥ ४६५ ॥
भावी के भाव अभाव यथा न रमो तिनमों नभ के सुमना ॥

मध्य के भोग के मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥
ब्रह्म नपुंसक यों मन तूं विन ता तव दंपति मों सुख ना ॥
टेरत मैं प्रति फेर तुमैं तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

कवित्त ।

इंद्रियोंके भोग सारे भारे रोग देन वारे ताको कीजै हेय मत श्रेय पथ तजरे ॥ पाप अद्रि नाशनको वज्र पाकशासनको दाहे दोष घासनको मोक्ष शिखी सजरे ॥ हूजो शांत भव बीच प्रापत कदापि नीच आपनी कलोल लोल गत ते न लज रे ॥ क्षणभंग भव राग ताको मन करो त्याग मोष को वैराग सहकारी तास भजरे ४६७॥

प्रवार के सनेहके निवार देह मन बीच बीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुनः दीतागनमें नागन में नदी वेग माहिं जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देव नदी तीरकी पवित्र धरा पर बैठ नीलकंठ माहिं नीठ उतकंठा ठानिये ॥ अब ऐसी रीत करो भोगन की प्रीत हरो गुरु वेद वाक्य धरो तीन ताप हानिये ॥ ४६८ ॥

भूमि सेज मूल फल मेघ नव बलकल करने न परें देव आगे रचधरेहैं ॥ करो इन्हैं साथ रति प्यारी प्रेम वारी मति उठो उठो तामें अब जामें बिब ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ मन बोल कटु जाके चित चिंता आग कर सदा जरे हैं ॥ ऐसे धनवाननके नाम मात्र कानन में जाहिं महाकानन में कबौं नाहिं परे हैं ॥४६९॥

दीप में पतंग परे जरे न प्रताप जाने मीनसअज्ञाने भषे कुंडी मिले मास को ॥ गज गजी हेत परो खात खात अंकुश को राग में कुरंग राग करे निज नास को ॥ पंकजकी गंध बीच नीच भृंग मीच गहे इत्यादि अज्ञनास करें निज सास को ॥ अहो हा सघन महा मोह को प्रताप लहा शुभाशुभ जानों पै न हानो भोग आसको

सवैया ।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥
के चित मोसम नीचनके चित मों बहु मान मदादिक धारे ॥

शून्य यथा मठ साधनको अति मोषको साधन दोष प्रहारे ॥ सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाम समारे ॥ ४७१ ॥

कवित्त ।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर वशते न मित्रनसे नशते मरयाद आदि दिन में ॥ कौन भेद भोगनके भेद में न तजै जन एकको वियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावैं तव मनको तपावैं भारी मोषै तिनैं आप ताप मोषै तिनै छिन में ॥ ऐसे मोष प्रतिबंधी विषे लखे मैं संबंधी को कुभागी विना मैं जो रागी होत इन में ४७२

जाहि मात पिता ते मैं भयो उत्पति तेतो काल वशभये चिर काल वीत गयो है ॥ सम वैस वारे द्वारे सुमरत सिधारे सारे रहे हम शेष देह वृद्ध वेष लयोहै ॥ नदी रेत तीर पर तरु यों शरीर भयो प्रति दिन मृत तीर तीर अब अयो है ॥ गिले काल व्याल सैम मेढक के अजे हम भजे भोग मच्छरको मोसों मूढ जयोहै४७३॥

जाके बामें दाहिने सुमंत चक्र होते अग्र राजनकी सभा थी मयंक मुखी नारियां ॥ भूपनके पुत्र थे विचित्र वीर अहंकारी वृंद बंदीजन होते वंशके उचारियां ॥ अहो भाई भारो कष्टभारी भूप भये नष्ट सुमरत पदे प्रविष्ट जाकी कथा भरियां ॥ हिंसक प्रपंच सब रंचको असंग पुना ताहि काल वीरको जुहार बार बारियां ॥ ४७४ ॥

गंगतीरपर हिमगिरि शिलापर हम बांधे पद्मासनको मन इंद्रिय जीतके ॥ ब्रह्मके ध्यानकी अभ्यास विध सों निवास योगनिद्रा माहिं करों हरों ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करें शृंगो संग कंडू मोहिं सुख सों अभीत मोको जाने सम भीत के ॥ पार्वती नाथ मैं अनाथके अभीत वारे उत्तम दिहारे कब आवैं ऐसी रीतके ४७५॥

काशी गंगाके किनारे भवते किनारे होय कदों बसों वसन कौपीन एक धारके ॥ दोऊ हाथ जोर कर नाय माथ नमोंकरों मृदुवाणी साथ ररों नाम समरार के ॥ भो प्रभो भवानी वर शंकर त्रिनेत्र हर त्रिपुरारी चंद्रधर भव भवहारके ॥ क्षण सम दिन सब मोरे बीत जावैं जब ऐसे अह आवैं कब कहो कृपाधारके ॥ ७६६ ॥

रुचत सुमेर मों न आवै कहूं काम जो न निज गौरता मैं सोना सदा गलतान है ॥ जीवजे संतोष कर त्रिपत सदीव तर ताको शेष न अनंद रह्यो कछु आन है ॥ पुना जेई आन जन धन लोभ कर मन व्याकुल हैं जाके ताकी तृष्णा महान है ॥ कौनके निमित्त ऐसी संपदा अमित्त रची इत विध करके न विधि बुधवान है ॥ ४७७ ॥

हिंसा नाहिं करें परद्रव्य को न हरें सत्य वचन उचरें पुण्य समय पुण्य कर हैं ॥ यथा वितकथा पर नारोंकी न सुनें भनें ताते गुंग बोला बने भोला सम चरहैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भंग गुरों विषे नम्र अंग मित्र भाव सब संग करें हरें हर हैं ॥ गायो सर्व ग्रंथन में संत ऐसे पंथन में राग दोष मोष चरें जैसे दिनकर हैं ॥ ४७८ ॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी कभी भिक्षाग्रास कभी व्यंजन अहार है ॥ कभी शत खंडवती गोदरीको ओढें यती कंबरको कबहूं दिगंबरको धार है ॥ कभी भानकर तपे कभी शीश छत्र दिपे कहूं सतकार होत कहूं त्रिसकारहै ॥ तदापि न संत जन सुखी दुखी होत मन आत्मा असंग लखैं देहको विहार है४७९

देव एक महादेवनदी देवनदी सेव गिरि गुहा धाम एव चीर दिशा चारहै ॥ एव कालमीत नीको व्रत निरदीनताको संग बुध युवतीको प्रिय बटु डार है ॥ सुता निरवैरता कुमार ब्रह्मको विचार और कहा भनों जाको बन्यों या अचार है ॥ ऐसे सदाचार परवार कर जोऊ नर सदा परवारो सदा ताहिको जुहार है ॥ ४८० ॥

शुचि वनके निवासी मृगों संग हासी खेल मेल दासदासीको नमे धफल आसी है ॥ कभी प्रत नदी तट कभी समसाने मठ कबहूं पषाण वट तरु तरे बासीहै ॥ केवल प्रशांत मन तुल्य आयतनबन तदपि एकांत घन बासी सुखरासी है ॥ ईशके उपासीकी प्रकाशी या विभूति ताहि गावै सुनै ध्यावै नाहिं पावै यम फांसीहै ॥ ४८१ ॥

तजे दुराराध्य स्वामी कृपण कुमगगामी बजावत चल चित भूपनके भानिये ॥ ताते मैं स्थूल चाह पूरीहोत नाहिं ताते लायो मन

ताहिं माहिं पद जो महानिये ॥ जरा हरे काय हरे काल समुदाय प्राण ताते तप करो सखे विदुषों वखानिये । तप विना आन मग श्रेयको न मध्य जग तप नाम चित्तकी एकाग्रताको जानिये ॥

सवैया ।

शुचि गंग तरंगकी बूंद कनीकर शीतल चारु हिमंचलकी सिल॥
जिहिं फूल फलान उपान धरे शिवको नित सेवत देववधू मिल ॥
परभोजन में निज जो जनदे दिल ता गिरको कतकाल लयो गिल॥
अपमानसही अपमानसही विद धीर सही नृपधाम अही विल ॥
प्रति कानन विरछन ते मन वाछत लाभ सुखेन फलादि अपारा ॥
सरिताके स्थान स्थान विषे शुचि शीतलमिष्ठ मिले बहु वारा ॥
जल पत्रवती मृदु सापर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा ॥
सटके मतिमान महा भटके मतिमान तहां कत होत खुवारा४८४॥

कवित्त ।

कंदरा ते कंदमूल कहां निरमूल भये वार वारे नग किधों देतहैं न वन को ॥ मीठे फलों वारी डारी तरों की न फल देत कैधों द्रुम देत हैं न वलकल जन को ॥ दुख सों मनाक धन साधके मदांध भय मद व्यार साथ जो भ्रमावें भूल तनको ॥ खलोंके कुमुखोंको सबल सुपुर्ष पेखे अहो कैसे तजे ऐसे चिंतामनवन को ॥ ४८५ ॥

तुंग भोग इंद्रलोक सत्त लोक लग जेते तेतेही तरंग सम भंग पहिचानोरे ॥ जीवनके जीवनेकी रास एक सास सोऊ दामिनी समान क्षण माहिं हानि जानोरे ॥ जोवनको सुख थोरे दिनमें विमुख होरे मीतनकी प्रीति पुनि नीति न पछानोरे ॥ सकल संसारको विचारके असार तजो बोध हेत बुद्धिमानो मेरी बुद्धिमानो रे४८६ ॥

माँस ग्रंथि कुचन को कंचनके कुंभ कहें सोम सम मुख कफधाम को उचारे हैं ॥ चंपाकलीके समाने दाडिमके दाने भाने हाडन की दांत पांत को दिवाने सारे हैं ॥ मूत्र भिगी जंघन की संघनी बडाई भने निंदत गजिंद कर केला को निवारे हैं ॥ अहो निंद योग रूप अंगनाको ताकी ऊप धुनें मतवारे शीश धुनें मतिवारे हैं ॥ ४८७ ॥

जरा कर श्वेत बार नरोंके निहार नार करे ताहि त्रिसकार भामे फेर नारको ॥ हाड घटी रज्जु नार मंदर सेहेर डार विप्र नार वृद्ध रूप कूप चमिआरको ॥ दाहे तीन ताप भान नैन वैन ज्ञान कान तजे ताहि मान आदि यों उदार दार को ॥ अहो कष्ट जीव दुष्ट तजे न अनिष्ट अजे नारी तजे तन भजे मन अजे नारको ॥ ४८८ ॥

आननकी छवि वली गणों कर टली गली काननकी गली बल अंकों में न भास है ॥ लोइनाके माहिं कछु लोइ नाहिं परे स्वच्छ रसना सो रसनासो नास कला नास है ॥ केश भये उजर न रह्यो कछु उजर जवानी गई उजर न सासको विसास है ॥ तृष्णा तो अनंतअंतभयोहै संघातसभ शांत भई शांति नाहिं शांतभोगआसहै॥

तनु वृद्ध भये ते न वृद्ध भई भोग आश मन में तो भोगनकी कोटि मन रत है ॥ सने सने उत्थान लोचनकी दुतिहान मानवको बहु मान हान भयो अत है ॥ सखे सम बैस वारे प्राणों वत जेई प्यारे कबके पधारे नाक देख ऐसी गत है ॥ अहो अजे नीचनिज मीच बीच हासी भजे जीव ना चहत मृत जीवना चहतहै ॥ ४९० ॥

शुभ शत संवत नरानकी प्रमान आयु तास आध भागनास होय रैन सोय है ॥ बाल वृद्ध माहिं ताहिं आधो भाग बाधो आहि जाडता अशक्यताकी खाण बैस दोय है ॥ शेशकी अवध जोऊ आधि व्याधि संग सोऊ भ्रमनो विदेश होऊ सेवकादि खोय है ॥ जीवनकी आयु माहिं सुखको तो नाउँ नाहिं तोयके तरंगके समान भंग होय है ॥ ४९१ ॥

विविधं प्रकार वेद अर्थके संवेद वारी चेतना मों चंचलाई सो निकाई हत है ॥ नानाविध वाक्यनके कौतुक में रस जोऊ सो विरस भयो जाहि माहिं विलसत है ॥ भांति भांति सकल विकलप प्रशांत जामें रजो तमो रहत सुसतोके सहत है ॥ ईश्वरकी सेव हित ऐसो चित चाहियत ऐसे चितहीमों सत चित विकसत है ४९२

हरि में सनेह तर जनम मरन डर उर माहिं कीनो घर बंधु मैं न राग है ॥ मनोभव जो विकार मंद संसकार डार संग दोष दुख टार

बसेकांत बाग है ॥ या वैराग भये कहा होर त्याग योग रहा हती सब चाह जो वैराग ते वैराग है ॥ हेतु परमारथको उत्तम वैराग ऐसो भाग बडे भागको अभाग तातें भाग है ॥ ४९३ ॥

भोग में रोग भय सुखों विषे क्षय भय धन मध्य भय भूप चोर को रहत है ॥ दास माहिं स्वामि भय जय माहिं रिपु भय भय कुल बीच नीच नारीको महत है ॥ मान में हान भय गुणी में खलान भय काय में कृतांत भय भय सर्वगत है ॥ निरभय वैराग एकधरो नगे सविवेक गायो मैं अनेक बार थाकी मोरी मत है ॥ ४९४ ॥

सवैया।

तीर्थनके माहिं सनान समान करै बहु दान महान मनी के ॥
समसान मठान तरून तरे असथान करे उत तीर नदी के ॥
मुख मौन धरे तज भौन चरे अरु वेद ररे सुपढावत नीके ॥
गुण एतत वृंद बरात जना वर एक वैराग विना सब फीके ॥४९५॥

कवित्त।

अंत तो मलीन दीन हीन पुरुषारथ सों कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहों ॥ विषया अधीन और कहा लौं कहै प्रवीन काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहों ॥ रावरे समर्थ हैं मोसे खल तारबेको अधम उधारन हो और ते नदा चहों ॥ सरल सुजान संत प्यारेकी निछावर मोहिं दीजे शरणागत संत संग मों परो रहों ॥ ४९६ ॥

सवैया।

आपनो रूप पिछान सी लाभ न भूल सी हान बड़ी नहिंजीको ॥
नाहिं बड़ो सुख भक्ति ते दूसरो दुःख न जानवो राधिका पीको ॥
चारिहु नीक न जान परैं विन साधु के संग कहो कर नीको ॥
वेद कहै अरु लोक लखै सत संगत सेव्य सही सबहीको ॥ ४९७ ॥

झूलना।

समता गहे सचको जाने दुःख सुःख सम आडा है ॥ मेटै मान मोह मगरूरी काम क्रोध सो खाडा है ॥ छोड़ कुसंग संग सम साधे

सुरत शब्द मन गाडा है ॥ यों शिर के पद चलै संत ढिग क्या तनु हलुवा माडा है ॥ ४९८ ॥

इंद्रियजीत करै वश अपने तजै जगतकी आसा है ॥ जोडै प्रेम नेम साईं सों रहै दरस रस प्यासा है ॥ आपा मेट गर्द कर डारै शिर दे लखै तमासा है ॥ यहि विधि गहै संत तब होवै यों क्या दूध बतासा है ४९९ ॥

कवित्त ।

मूठी एक माटीको घरौंदा सो शरीर मन ताको कहै मेरो वपु अति अभिरामहै ॥ आगे पाछे भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें जानै जाको खेह विट कृमि परिनाम है ॥ विषयको भोग जैसे दाद को खुजाये सुख अंत दुखराशि तामें मानत विश्राम है ॥ इंद्रिन के संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है ॥ ५०० ॥

कुंडलिया ।

भेड़िन में जिमि सिंहको सावक रह्यो भुलाय ॥ तिन के सँग भेंभें करै निज पौरुष बिसराय ॥ निज पौरुष बिसराय तिनहि के धारे लच्छन ॥ ये नहिं समुझै नेक सकल ये मेरे भक्षन ॥ तैसे गो गण संग फिरत मन पगभ्रम बेड़ी । आप अपनपौ खोय भयो भेंडिनमें भेंडी॥

कवित्त ।

रविको प्रकाश जैसे देखियत मुकुर मध्य मुकुरको प्रकाश जैसे जलको अभास है ॥ जलके प्रकाश हूं ते होत जो प्रकाश तो तो देख्यो परै मंदिर के भीतर उजास है ॥ तैसे परमात्मा ते आत्मा विचार लीजै आतमाते मन मन ते जगत बिलासहै ॥ साक्षी परमात्मा अखंडित सबही के माहिं सबही ते न्यारो सदा आनँदकी रास है५०२

स्वपने में सती यती मुनिराव रंक सब स्वपने में चार दश लोकन फिरत है ॥ स्वपने में मेरो तात मात भ्रात नारी सुत मेरो यह धाम ग्राम नाम यों कहत है ॥ स्वपने में भवके समुद्र मांझ

बह्यो फिरै पैरत थकत पुनि बूडत तरत है ॥ जागे विन जाने नाहिं आपही सकल भयो आपही तो निरखत आपही निरन है ॥ ५०३॥

सवैया ।

चाह जितो चित चाँहै अनेकन होन तितो दुख ही जु विचारै ॥
है इन इंद्रियको सुख हेत सुतेरो न हेत जो नीके निहारै ॥
पेट लफाये फिरै जु कहा अति दीन दुवारन दांत निकारै ॥
लै हरिकी किन भक्ति सदा जु चहै सुखसों अपनी निस्तारै॥५०४॥
दैने दई फल फूल अनेक औ मूल जितै तित तोहि अहारै ॥
डासनको कुशलै परिभूमि चहै जितही तित पायँ पसारै ॥
ताल तरंगिन ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारै ॥
याके लिये हठकै शठ तू कह पांवर पौरिन हाथ पसारै ॥ ५०५ ॥

कवित्त ।

जाको जाको चाहै सोतो जातहै चलाहै सब कौनसी निवाहै नेह देहहूं तो छीजिये ॥ रवि शशि तारागण सुरासुर सातों सिंधु भूमिहू अकाशको विनाशही पतीजिये ॥ ब्रह्मा औ कीट लौं विनाशवंत दीसैं सब आपा मान रह्यो सोतो आपहू न जीजिये ॥ कासों मानो नातो कासों करत हिताहित सो देख जो परत शोचकाको काको कीजिये ॥ ५०६ ॥

अंगी अरधंगी हितबंध सनबंधी ताके हेत मति बंधी मन पाछे पछताय है ॥ अंग ही लौं अंग छिन भंगी जब होय गयो नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है ॥ घर ही लौं कोई कोई आंगन डगर ही लौं चिता के समीप कोऊ जाय है तो जाय है ॥ जेतो है हुतंगी दिना चार हीके रंगी सब अंतके समयको तेरो संगी रामराय है ॥ ५०७ ॥

सवैया ।

आये कहांते कहो तुम आप है आये कहांते तुम्हारे ये नात है ॥
जात भये कितको सिगरे अरु तू मरके कितको कहँ जात है ॥

नाचत पूतरी पेखनो लौं जग डोर नचावन हारके हाथ है ॥
तेरो कहा जो तू मेरो कहै हठ हेरो विचार कहा विललात है॥५०८॥

कवित्त ।

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात मान लियो अरि मित्र जाति अरु पांति है॥ मान लियो आपा पर मान लियो नारि नर मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नर्क स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो मान लियो हानि लाभ भांति हूं विभांति है ॥ जग सब झूठ है मरीचिका की ज्योति जैसे जान लियो सांच मान लियो एक बात है ॥ ५०९ ॥

राग विहाग ।

ओहे वह वह झाकीदाहुण पडदा किसतों राखीदा ॥ जिस तन इशक का जोर हुआ वह बेखुद है बेहोश हुआ वह क्योंकर रहे खमोश हुआ जिन प्याला पीता साकी दा ॥ तुसीं आप असांवल आएहो किस कोलों भेद छिपाएहो किते अदम पीर बनआएहो विच पडदा रखिया खाकीदा ॥ तुसीं आपे कहंदे सारे होतुसीं आपे कहंदे न्यारे हो तुसीं आपे लयो नजारे हो किते लाला नयन झमाकीदा ॥ तूं ना कर इतना झेडा है तुध बाझों दूज केहडा है असां देख्या बडा अंधेरा है अपने आप नूं दूजा आखीदा॥ किते रूमी हो किते शामी हो तुसीं आपने आप तमामी हो किते साहिब किते सलामीहो केन्हों खोटा खरा सुलाकीदा मनसूर नूं सूली चाव्या ईशाह शम्मस पोश उतारचाई हुण मिसकीनांवल आया हैं कुछ लेखा रहिंदा बाकी दा ॥ बुल्या इस तन दी तूं भाठी कर बाल हड्डां नूं काठी कर ज्ञान अगन सों ताती कर फिर तिसपर मधुवा चाखीदा ॥ ५१० ॥

राग जंगला ।

कोई मोडो दिलांदियां वागां नूं ॥ मन समझाया समझे नाहीं रात दिने उठ पैंदा राहीं ढूंडन जाय स्वादां नूं ॥ यह मन मेरा कौआ

कहिये विना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसांतज कागां नूं ॥ और किसी को दोष न दीजे जो कछु बीजिया सो लुन लीजे दोष है अपन्यों भागां नूं ॥ कहै हुसैन सुनो भाई साधो मन मजबूत पकड जब बांधो फेर की करो किताबां नूं ॥ ५११

तेरा राम बसता है तेरेही मनमें मूरख काहेको भटकत बनमें॥ दूध दहीकी मटिया जमाई तामें माखन वस्तु लभाई मथन विना कुछ हाथ न आवे जैसे चंदा छिप जात घन में ॥ पथरी में आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरू अपने से आज्ञा पाई जैसे मुख देखत दर्पन में ॥ मंहिंदीके पात में लाली रहत है बिन घोटे रंग चढे न हाथ पै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधन में ॥ गजके कुंभ सों निकस्यो मोती अँधेरे से क्या क़ीमत होती हेमदास कोई विरला जाने ज्ञानी समझतहैं सैनन में ॥ ५१२ ॥

सतगुरु पूरा पाया भला मैं साहब पूरा पाया है ॥ गढ कंचन के महल त्यागे त्यागी सगरी माया है ॥ दारा सुत दोनों मैं त्यागे गोविंद हिरदे में समाया है ॥ जन्म जन्म का सांमैं दुखिया छिन में दुःख गँवाया है ॥ खुदी गई आनँद सँग राता गोविंद का गुण गाया है ॥ मन महलां मैं सेज बिछावा सुख में जाय समाया है ॥ जाग्रत स्वपना दोनों त्यागे तुरिया माहिं जमाया है ॥ पवन दा घोडा सुरत लगामां भय दा चाबुक लाया है ॥ प्यादे ते असवार बनाया बिन पंखा उडायाहै ॥ शौह अपने दी रैणी रंगसां गूढ़ारंग रँगाया है ॥ कहत विचारा दिलसुख प्यारा प्याला प्रेम पिलाया है ॥ ५१३ ॥

केती हजारां आलम हैं तांतूं केहडी कुडे तांतूं केहडी कुड़े नी॥ तेरे जेहीयां लखँ हजारां वाह वाह पट्टियां फिरन बजारां इस फिरने सिर लाख पजारां तांतूं आपेई इल्लत सहेडी कुडे ॥ सुरमापा मटकेनी हैं तांतूं सबदी वल्ल तकेनी हैं मिरगां वांग टपेनी हैं तेरे मगरे ई फ़िरदा लै हेडी कुडे ॥ जद तूं ओथों आई सी तेरी सूरत सकल अलाही सी तेरी चुनडी नूं दाग न स्याहीसी हुण तैं आपेई चिक्कड लबेडी कुडे ॥

उमर गंवालई मार पंज गिटडा एह जग तैनूं लगदा मिठडा एथे रहन किसीदा न दिसदा आचढ हुसैनां दी वेडी कुडे ॥ ५१४ ॥

कबित्त ।

दाताऊ महीप मानधाताऊ दिलीप जैसे जाके यश अजहूं लौं द्वीप द्वीप छाये हैं । बलि ऐसो बलवान को भयो जहान बीच रावण समानको प्रतापी जग जायेहैं ॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे जाके गुण दीनद्याल भारतमें गाये हैं । कैसे कैसे शूर रचे चातुरी विरंचि जूने फेर चकचूर कर धूरमें मिलाये हैं ॥ ५१५ ॥

चले गये छांड हरणाक्ष हिरण्यकाशिपु जैसे बलि जैसे बांधे पातालमें चले गये ॥ चले गये रावण कुंभकर्ण महायोधा केते नरेश मारे धूरमें रले गये॥रले गये जरासन्ध कंस शिशुपाल जैसे दुर्योधनादि बीच गर्वके गले गये ॥ गले गये केते येते असुर महानदुष्ट आयके जमीन पर हो हो कर चले गये ॥ ५१६ ॥

श्वासके भरोसे गढ मासमें निवास लियो आशा मन माहिं राखी मान न शरीराकी ॥ बडे बडे शूरवीर देख छोड गये मूरख रहीना निशानी शाहां अरु वजीरा की ॥ भजरे निरंजन दुखभंजन कुल आलमके नित्त रोज खबर लेत पाहन में कीराकी ॥ कहै कवि थाराम‍ल सुमरनका यही पल एक एक घडी जात लाख लाख हीराकी॥

सवैया ।

परिपूरण पापके कारण ते भगवंत कथा न रुचै जिनको ॥
तिन एक कुनारि बुलाय लई नचवावतहैं दिनको रिन को ॥
मिरदंग कहै धिग है धिग है मंजीर कहै किनको किनको ॥
तब हाथ उठायके नारि कहै इनको इनको इनको इनको ॥ ५१८ ॥

कवित्त ।

संतन की गहो रीत त्यागो जगकी प्रतीत औसर है यही मीत विलमको चुकाइये ॥ निशिदिन कर संत संग जगत प्रीति करो भंग रामजू सों लाय रंग आन नहिं जाइये ॥ आनगियां सुख नाहिं समझ

देख हृदय माहिं भला दाँव बन्यो आय बादना गँवाइये ॥ प्रभुध्यान हिये धार सकल आशको बिसार संतन मिलगहो सार वेग मुक्ति पाइये ।

सवैया।

यह मन भूल रह्योहै कहा विषयारस में निशि दिवस बहै ॥
है जगझूठ धुवांको सो धाम मृगाजल सोहत प्यास चहै ॥
धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहै ॥
चेत अजों ममता तजके समता सुख आनँद सिंधु लहै ॥ ५२० ॥
मात पिता हित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे ॥
तू हित मान रह्यो इनसों निशि द्योस भ्रमै जिमि भौंरके बेरे ॥
इनके दुखते दुखपावतहैं सो तो हैं सबये हित स्वारथ केरे ॥
जीवत जारतहैं तोहिं तात मुये पुनि जारन हार हैं तेरे ॥ ५२१ ॥
छोडके आश सभी जग की हिय में सुख शांतिको वास करो ॥
यह जीवनहूं की तजो सरधा जग जीवत ही विन मीच मरो ॥
अबलों जुभई सुभई अबहूं चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥
तुम काके हो कोहो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आपधरो ५२२ ॥
काल निहारत काल सदा सब लोग विचारत ही पचहारैं ॥
कोऊ बच्यो न कहूं कितहूं जलहूं थल व्योम पताल विचारैं ॥
है छिन एक को पेखनोसो तू तहां कहँ कौनकी आश निहारैं ॥
यामें कहा तोहिं अर्थ मिलै यों विनर्थहिं मानुष जन्म निवारैं ५२३ ॥
तू ममता मद माहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सँवारैं ॥
लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारैं ॥
काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारैं ॥
नंदके नंदही क्यों नभजै जो सदा अपने जनको प्रतिपारै ॥ ५२४ ॥
संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हैं ॥
तू ममता अजहूं नहिं छांडत मौत ने आय सँदेश दये हैं ॥
आज कै कालिह चलें उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं ॥
सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं ॥ ५२५ ॥

राग प्रभाती ।

तु खुश भर नींद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौत का बाजे । ज्यों सावन मेघुला गाजे ॥ जिन्हा सँग नेह सी तेरा । तिन्हां किया खाक में डेरा ॥ न आये फेर कर फेरा । कहां गये मुल्क के वाली । जो चलते हंसकी चाली ॥ गये दर-बार कर खाली ॥ कहँ गये खान मद माते । जो सूरज चंद्र लौं जाते ॥ न देखे वह किसी जाते ॥ कहां गये मीर और काजी । जो चढ़ते तुरकियां ताजी ॥ गये वैरान कर बाजी ॥ जो टूटी अंब की डाली । जो सोता बाग का माली ॥ बड़ेही शौक से पाली । जिन्हां सिर केस थे काले ॥ मलाइयां दूध से पाले । कि आखर अगन में जाले ॥ जिन्हों के लाख थे पल्ले । वो खाली हाथ कर चल्ले ॥ उन्हों ने जंगले मल्ले ॥ जिन्हां शिरसोहँदे चीरे । चबावैं पानके बीरे ॥ तिन्हांको खा गये कीरे ॥ जिन्हां घर रेशमी वसते । तिन्हां पर बैठ कर हँसते ॥ सो देखे खाकमें धसते ॥ जिन्हां घर पालकी घोडे । सोहैं तन मखमली जोडे ॥ सोई मुख मौत ने तोडे ॥ जिन्हांघर झूलते हाथी । हजारों लोग थे साथी ॥ तिन्हां को खागई माटी ॥ जो तन धन गर्व नहिं करना । कि आखर खाक में रलना ॥ वलीकहे फिर नहीं मिलना ॥ ५२६ ॥

राग जंगला ।

इस दुनिया पर रोज मुसाफिर नित उठ बाग बहार नहीं ॥ काची कंध बालु का गारा तिस पर महक उसार नहीं ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा भीर परी कोइ यार नहीं ॥ बारू भीत बनाई रच पच सो रहती दिन चार नहीं ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो आवन दूजी बारनहीं ॥

राग भैरवी ।

याद करेगा इस जीवन नू भला मुसाफर बंदे ॥ आयासी कछु लाहे कारण रुँझागिया केहडे धंधे ॥ भवसागर तैनूं तरना पौसी पाप पुण्य धर कंधे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्मके अंधे ॥ कहत कबीर सोई पार उतर गये हरि हर नाम जपंदे ॥ ५२८ ॥

राग परज ।

बात चलन दी करहो जग रहना नाहीं ॥ खाय खुराकां पहिन पुशाकां जमदा बकरा पल हो ॥ गंगा जावे गोदावरी न्हावे अजे न समझे खलहो ॥ उमर तेरी ऐवें पई जांदी घडी घडी पल पल हो ॥ कहै हुसैन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो ॥ ५२९ ॥

राग प्रभाती ।

अबतो जाग मुसाफर प्यारे रैनि घटी लटके सब तारे ॥ आवागौन सराई डेरे साथ तयार मुसाफर तेरे अजे न सुनदा कूच नगारे ॥ करलै आज करनदी वेला बहुरि नहोसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे ॥ आपो आपने लाहे दौडी क्या सरधन क्या निरधन बौरी लाहा नाम तूं लेहु सँभारे ॥ बुल्ला शोहदी पैरीं परिये गफलत छोड हीला कछु करिये मिर्ग जतन विन खेत उजारे॥५३०॥

किहीं राहीं जानगे मुसाफर कल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न बन्हदे पल्ले ॥ इन्हां मुसाफरांदी की अशनाई अज आये कलहचल्ले ॥ ५३१ ॥

बैठरे मन सबरके हुजरे । जैसी जैसी आवै तैसी तैसी गुजरे ॥ शांत बहारी हत्थ गह लीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तब अंधेरे को सब कछु सुझरे ॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्राणी कभूं न सुमिर्‌यो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवें पैया उजरे ॥ शिर पर मन्न लई सब रजाई हर दम आखीं साईं साईं सबही मुशक्कतां पावेगा मुजरे ॥ जे मन जांदा मोड ल्यावें तांरजादाशाहकहावें अपना मरमतू आपही बुझरे ॥

राग बडहंस ।

अरी अरी एरी माई डरदी तेरयांनकी बांदेकोलों रब्बा ओल्हे छिपके मैं खलोनीहां ॥ मैली टोपी साबुन थोडा मल मल धोंदियां पीया तेरा जोडा दागां दा कोई ओडक नाहीं नालो धोंदीयां नाले मैं रोनीहां दुःखांसूलां ने कीता एका नाकोई साहुरा नाकोई पेका दर तेरे ते पई तडफदी सुनलै हाल न मानीदा ॥ शाहहुसैन

खडा तिन गाजे काल नगारा तेरे शिरपर बाजे चार दिहाडे गोरीं वासा आखर कूच व पारीदा ॥ ५३३ ॥

राग प्रभाती ।

रहुवे बीबा रहुवे अडया बोलनदी नहीं जावे अडया ॥ जे शिर कट्ट लवे धड नालों पाछे कदम नदेवीं हालों तदभी कुछ न कहु वे अडया ॥ जे तैं हक दा राह पछाता दमना मारीं रहीं चुपाता गरदन कट्ट ना बहु वे अडया ॥ गोर न मानी दियां छमकां केहीयां हू हवा विच रह गैयां सैयां कहिंदा शाहहुसैन वे अडया ॥ ५३४ ॥

राग जंगला ।

हँसके गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं तेहँढावीं खावीं कित कारण संचना ॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम लाखां ते हजारां वालेनंगी पैरीं चल्लना ॥ सीधे मारग पाउँराख चुभे नहीं कंडाकाख विंगेमारगपाउँ न धरिये होवेअंग भंगना ॥ शाहबाद शाहझूरे किसेदे न कम पूरे बुल्हैदी बलाय झूरे आखिर मर बंजना ॥

लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर ॥ रातीं रातीं वदीयां करें दादिन नूंसदावें पीर ॥ अपना भारा चाय न सकदा लोकां बंधावें धीर ॥ कुडम कुटंब दी फाही फस्या गल विच पालईया लीर ॥ दर गह लेखा मंगीये हुसैना रोवेंगा नीरोनीर ॥ ५३६ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी आंख दिया हो लाज मूलन आइया यार ॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकंदर दारा ॥ बाजीगर दी बाजी वांगूं रच्या कूड पसारा ॥ मेरी मेरी कैरो कर गये दुर्योधनके भाई ॥ सोलां योजन छत्र झुलत सी देही गिर्झन खाई ॥ मेरे पुत्र मेरी यां धीयां मेरा कुटुंव मेरे भाई ॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावें तिन्हां ठौर न काई ॥ यह दुनिया है चार दिहाडे नाकर मन दा भाणा ॥ कहै हुसैन फकीर साईं दा नंगी पैरीं जाणा ॥ ५३७ ॥

राग भैरवी ।

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोडा माटी घोडा माटी दा

असवार ॥ माटी माटी नूं मारन लागी माटी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी माटी नूं देखन आई माटी दी बहार ॥ हंस खेल फिरमाटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुझ्झी लाह सिरों भों मार ॥ ८३८ ॥

ग़ज़ल ।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ । जिन इश्क में शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हूआ पंथ में साबित न कीया आपको । आलिम और फाजिल बना दाना हुआ तोक्याहुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका । सारी किताबां याद कर हाफ़िज़ हुआ तोक्याहुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नहीं । राग तार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्याहुआ ॥ जोगी उजंगम वेषकर कपडे रँगाकर पहिनते । वाकिफ नहीं उस हालके कपड़ेरँगे तो क्या हुआ ॥ दिल में दरद नहिं पिया को बैठा मुशाइख होय के ॥ दिल का हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरां नसीहत तूं करें आप अमल करता नहीं । दिलका कुफर टूटा नहीं हाजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्क के दरियाय में गर्काब तू होता नहीं । गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ वलीराम पुकारत है यही पीपी जो करते जी दिया । मतलूब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥

राग जंगला ।

क्यों बे बीबा मान भरया रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है । करता है मेरी मेरी रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दुनिया आवागौन है ॥ भाई बंधु बिरादरी फर जंद यार मन । सब सुखके हैं समीपी रे तू समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान । इक पल में मार डारे तेरा क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तू समझ यार मन । इक राम नाम सांचा है और झूठा सभ जतन ॥ ८४० ॥

राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोलेतो अंतर खोले सेजडियां सुख दीजे । रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके । साँचे मन ते साहब नेडे झूठे मन ते भागा । हरि जन हरिजीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ५४१ ॥

राग काफी ।

नाजानूं मेरा राम कैसा है । मुल्लां होके बांग जो देवे क्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेवर बाजे सोभी साहिब सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लंबीयां जटां बढाता है ॥ अंतर तेरे कुफुर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है । कौडी कौडी माया जोडी जोड जमीं पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है । हीरा होवे परख दिखावां कौडी परखन कैसा है । कहत कबीर सुनो भई साधो हरि जैसे को तैसाहै ॥५४२ ॥

राग सोरठ ।

उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अंत की बार नहीं कछु तेरा ॥ अनेक जतन कर कायां पाली । मरतीबेर अगन सँग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा । सो तनु जलै काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनोरे गुनिया । विनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ ५४३ ॥

राग होरी ।

तन मन रंग बनाय पिया संग खेलिये होरी । तार बनाऊं जिया की तन का करूंजी तंबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सों सब कारज पूरा । शीशी भरी गुलाबकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूं अपने श्याम पै सब देखन हारी ॥ चोआ चंदन मेल के हत्थ लीयोजी अबीरा । सब संतन मिल खेल्यो संग दास कबीरा ॥५४४॥

राग धनाश्री।

प्रीतम जान लेहु मन माहीं। अपने सुख से सब जग बाँध्यो को काहू को नाहीं॥ सुख में आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरे। विपति परी सबही सँग छाँडत कोउ न आवत नेर॥ घर की नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी। जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी॥ याविधि को व्यौहार बन्योहै जासों नेह लगायो। अंतकाल नानक बिन हरिजी कोऊ काम न आयो॥ ५४५॥

राग सोरठ।

मनरे प्रभुकी शरण विचारो। जिहिं सुमिरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया॥ दुख हरता या विधि को स्वामी तैं काहे बिसराया॥ जबहीं शरण गही किरपानिधि गज ग्राह ते छूटा॥ महिमा नाम कहां लग वरणों राम कहत बंधन तिहिं टूटा॥ अजामील पापी जग जाने निमिष माहिं निस्तारा॥ नानक कहत चेत चिंतामणि तैंभी उतरसपारा॥ ५४६॥

या जग मीत न देख्योकोई॥ सकल जगत अपने सुखलाग्यो दुखमें संग न होई॥ दारा मीत पूत संबंधी सगरे धन सों लागे॥ जबहीं निरधन देख्यो नर को संग छाँड सभ भागे॥ कहा कहूं या मन बौरे को इनसों नेह लगाया॥ दीनानाथ सकल भय भंजन यश ताको बिसराया॥ श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधो बहुत जतन मैं कीनो॥ नानक लाज विरद की राखो नाम तिहारो लीनो॥५४७॥

राग बरवा।

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो जात॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात॥ गयो श्वास न बहुडियो तेरी पलक लखियो न जात॥ जुए जुवारी धन हर्यो मन खेलने दे चाउ॥ खेड कर पछतायगारे तू हार घर क्यों जात॥ बनजारेने बैल जैसे टांडा

लदियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गँवाय ॥ आछे दिन पाछे गये तैं हरि सों कियो न हेत ॥ अब पछतावा क्या करे जब चिडियाँ चुग गईं खेत ॥ काची काया काँच की रे समझ देखो लोय॥सगुरे को समझ परतहै निगुरा जावे खोय ॥ जबलग तेल दीवे में बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी ॥ पछतायगी पनिहार जिउँ कर रीते घर क्यों जात ॥ फटी सुरनाही फूक निकसी जायसुनी अवधेहि ॥ कहे नानक दास प्रभु का तेरी अंत हो जाऊ खेहि ॥ ५४८ ॥

राग परज ।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म वचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ हम हम कर धन धाम सँवारे अंतचले उठ रीते ॥ सुत वनितादि जान स्वारथरत न कर नेह इनहीं ते ॥ अंतौ तोहिं तजैंगे पामर तू न तजै अबहीं ते ॥ अब नाथहिं अनुराग जाग जड त्याग दुराशाजीते।बुझै न काम अगिनि तुलसी जिमि विषय भोग बहुघीते॥

राग भैरवी ।

बार बार समझाय रहो मैं मान लेरे मन मेरी कहीको॥ दुख सुख सों बीती सो बीती याद न कर बरबाद बहीको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपट की गाँठ गही को ॥ जानकीदास सुमिरु श्री रघुवर गई सो गई अबराख रही को ॥ ५५० ॥

राग कालिंगडा ।

क्यादेख दिवाना हूआरे ॥ माया बनी सार की सूली नारि नरक का कूआ रे ॥ हाड चाम नाडी को पिंजर तामें मनुआं सूआरे ॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा तिनमें पच पच मूआरे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो हार चल्यो जग जूआरे ॥ ५५१ ॥

राग जंगला ।

पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रस कारे ॥ पाप पुण्य

दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धनयौवन स्वपना निशि कारे ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारि वश कारे ॥ वृद्ध भयो कफ वाईने घेरचो खाट पडा नहिंजाय मसका रे ॥ नाभि कमल में है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशु का रे ॥ बिन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे बनका रे ॥ लाख चुरासी उबरचो चाहे छोड कामिनीका चसका रे ॥ प्रेम मगन चरणदास कहत है नख शिख रूप भरचो विसकारे ॥ ५५२ ॥

राग कान्हरा ।

सुमिरन कर श्री रामनाम दिन नीके बीते जाते हैं ॥ तज विषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो पातेहैं ॥ कौन तुम्हरा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसकेबल हरिनाम बिसारा सब जीते जीके नाते हैं ॥ लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिर पीछे पछताते हैं ॥ जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौज की फाँसा क्या देखे श्वासनकी आसा गये फेर नहीं आतेहैं ॥५५३॥

राग तिलंग ।

यह जग दर्शन मेला है ॥ जे तूं आया है ईहां पै कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हंस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सब को इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ॥ ईहां तेरी जिनस जमाहै और कोई नहीं पराया है ॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहिं कोइ दम की है और ज्यादा नहीं झमेला है ॥ इस मंदर बीच निरख तूं क्या रंग बरंगी मूरत है ॥ हिरदेसे तनक परख तू इस मूरत में क्या सूरत है ॥ धनि उस कारीगर को कहिये जिन अपने हाथ बनाई है॥गुनज्ञानजोबन छबिरूप रंगमें एकहीएक नवेलाहै ॥ यह जो तू देखें आपस में ईहां एक से एक का है नाता॥ कोई बाप

बना कोई बेटा कोई चचा भतीजा कहलाता ॥ कोई मीयां आपको जाने है कोई दास आपको मानेहै ॥ कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अबलो तब ईहां है सबको सैरे हैं बाग बहारें हैं ॥ मन आनंद और चैनें हैं करते हैं लहरे मारे हैं ॥ पर सुख के समें यह हैं सगरे रे यह देखन हारे हैं ॥ आजही के कल आप आप को चल जायेगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है ईहां से रस्ता गह जावेंगे ॥ यहदोस्ती निस्बत नाते सब ईहां के ईहां रह जावेंगे॥यहबूंदें जिस दरिया की हैं सब मौजहीसे मिल जावेंगी ॥ फिर कछु टंटा है न बखेडा है झगडा है ना झमेला है ॥ ५५४ ॥

राग झिंझोटी ।

आरती सदाही होत संतन घट माहीं ॥ ब्रह्म जोत प्रगट भई विकसत दर्साई ॥ वेद के बजंत्र बाजें ज्ञान धूप धुखन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई ॥ प्रेम की जो बाती लागी सकल ब्रह्म जोत जागी अनुभवसों द्रुमत भाग इक संग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंख पूर भेद भर्म कियेचूर इत उत सब चिद् स्वरूप आत्म दर्शाई ॥ कहहै कवि लोक दास आश्चर्य गुरु कियो प्रकाश अति हुलास होत जहाँ जन्ममर्ण नाहीं ॥ ५५५ ॥

राग सोरठ ।

रेमंन समझ ऐसी बात ॥ नदीके परवाह ज्यों सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय सँघात ॥ वसे संग सराय के परभात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज रात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठो वात ॥ भजन कर गोविंद का सद्गुरु बताई बात ॥ नँदलाल प्रभुजी सुमिररे मन उतर भौ जलजात ॥ ५५६ ॥

रागविहाग ।

काहेको बिसारी रे जपाकर माला ॥ रामभजन को तुलसी की माला ओढन को मृगछाला ॥ खान पान को बासी जो टुकरा

रहने को कुंज तमाला ॥ धन जोबन मद में मत भूले जम करि है बेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनहिं छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्णप्रिया विन हितू न जग में सब झूठा जंजाला ॥ ५५७ ॥

राग धनाश्री।

केते दिन हरि सुमिरन बिन खोये ॥ परनिंदा रसना के रस से अपने करम बिगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये ॥ तिलक लगाय चले बन स्वामी विषयनके सँग जोये ॥ काल बली ते सब जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये ॥ सूर अधम की कौन गती है उदर भरे भर सोये ॥ ५५८ ॥

सब दिन गये विषय के हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूंधो श्वास मुख बैन न आवत चंद्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ तजि गंगोदक पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोविंद बिसारचो बूड्यो कुटुँब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥ ५५९ ॥

राग सारंग।

तजो मन हरि विमुखन को संग ॥ जिनके संग कुबुद्धि ऊपजे परत भजन में भंग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में निशि दिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विष नहिं तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खर को कहा अरगजा लेपन मर्कट भूषण अंग ॥ पाहन पतित वान नहिं भेदत रीतो करत निषंग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढत न दूजो रंग ॥ ५६० ॥

राग देश।

राधे कृष्णा क्यों नहिं बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटुंबकी खातर पच पच के कमाओगे ॥ माया तेरे संग न चाले भरम गमाओगे ॥ आवेंगे वे जमके दूत पकर ले जावेंगे ॥ मजबूत तुमसे मांगेंगे हिसाब प्यारे क्या बतला-

ओगे । सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटाओगे ॥ श्रीठाकुर जी को ध्यान धरले पार लग जाओगे ॥ ५६१ ॥

राग बिभास ।

गायो न गोपाल मन लाय के निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मंडली में जाय के ॥ धायो न धमक वृंदाविपिन की कुंजन में रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश राय के ॥ नाथ जू न देख छक्यो छिन हूं छबीली छवि सिंह पौरि परचो नाहिं शीशहूं नवाय के । कहै हरिदास तोहिं लाजहूं न आवै नेक जनम गँवायो ना कमायो कछु आयके ॥ ५६२ ॥

राग जैजैवंती ।

रच के सँवारे नाहिं अंग अंग श्यामा श्याम एरी धिक्कार और नाना कर्म कीवे पै ॥ पाँयन को धोय निज करते न पान कियो आली अँगार परे शीतलपय पीवे पै ॥ विचरे ना वृंदावन कुंजन लतान तरे गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीवे पै ॥ ललित किशोरी बीते बरष अनेक दृग देखे नाहिं प्राण प्यारे छार ऐसे जीवे पै ॥ ५६३ ॥

राग सिंधु काफी ।

रटत रटत राधा मनमोहन रसना ना फलका झलकाई ॥ लिखत लिखत लीला रस द्वंद्वज अँगुरिन पोर जो ना घिसजाई ॥ ललित किशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथाई ॥ युगल विहारी को मग जोवत जो न भई नयनन में झाई ॥ ५६४ ॥

राग देश ।

ऐसी चतुरता पर छार ॥ करत बाद विवाद जित तित हित न नंदकुमार ॥ रूप कुलगुण कूप मंडित बढ्यो गर्व अपार ॥ और हम सम नाहिं कोऊ दूसरो संसार ॥ मात पित सुत भ्रात मरगये औ सकल परिवार ॥ जानत हैं हम हूं मरेंगे तउ न तजत विकार ॥ लेतनाहिं प्रसाद सादर करत लोकाचार ॥ नारि मुख पैजाय पीवत अधर लिपटीलार ॥ संतजन सो द्रोह मानत सुहृद साढूसार ॥

काम क्रोध और लोभ व्याप्यो मोह मद हंकार ॥ सूर विमुखन परिहरहु सतसंग वारंवार ॥ ५६५ ॥

राग कालिंगडा ।

मूरख छाँड वृथा अभिमान ॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिन को महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवी पर रूप तेज बलवान॥ कौन बच्यो या काल व्याल ते मिट गये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्र समान ॥ अंत समय सबही को तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयन में जाविधि मर्कट श्वान ॥ छिन भर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जिन भटके मेरो कह्यो अब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवर सों वेगहिं कर पहिचान ॥ ५६६ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सबदिन होत न एक समान ॥ इक दिन राजा हरीचंद गृह संपति मेरु समान ॥ इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इक दिन दूलह बनत बराती चहुँ दिशि गडत निशान ॥ इक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ इक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान ॥ इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ विरचत पुष्प विमान ॥ इक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान ॥ इक दिन द्रौपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत है पूरव की करनी तज मन शोच अजान ॥ सूरदास गुण कहँ लग वरणों विधि के अंक प्रमान ॥ ५६७ ॥

भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल लोचन परम विशाल ॥ शुक नाशा भौं दूज चंद सम अति सुंदर हैं भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसत हैं घुँघरारे वर बाल ॥ रतन जडित कुंडल कर कंकन गल मोतियन की माल ॥ पग नूपर मणि खचत बजत जब चलत हंस गति चाल ॥ गौर श्याम तनु बसन अमोलक कर मेहँदी सों लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन

अधिक रसाल ॥ कुंज भवन में बैठ दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छबि को निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ ५६८ ॥

जैजै युगल किशोर बिहारी ॥ जै निकुंज में अविचल जोरी जै मन मोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छबि सिंधूरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसिक शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तनवश रहत निरंतर नाना चरित करत सुख-कारी ॥ भक्तराम निशि दिन यह जाचत चरण कमल राखौं उरधारी॥

यह रस रीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसेरी ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्रात सबनको तैसेरी ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसे री । भगवत कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसेरी ५७० ॥

दोहा–संतन को यह परम धन, सब ग्रंथन को सार ॥ भक्तन को सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥ सादर जो जन याहि को, पढ़ैं नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥ हरि चरणन दृढ प्रेम जिहिं, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहिं वर, सकल होय परसन्य ॥ पढत सुनत याके भयो, जो मन अधिक हुलास ॥ मेरीहू सुध लीजियो जान, आपनो दास ॥ जै बृंदावनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास ॥ निज चरणनमें राखिये, एकतुम्हारी आस ५७१

इति रागरत्नाकर दूसराभाग समाप्त.

श्रीः ।

अथ हियहुलासप्रारंभः

दोहा ।

प्रथमहिं ताको सुमिरिये, जिनदीन्हेंगुणज्ञान ॥ ज्ञानीगुणगावैंसदा, ध्यानीधरैंजुध्यान ॥ १ ॥ अंबरथाप्योथंभविन, धरणीअधरधराय ॥ मनुषरूपह्वै अवतरयो, देखतकालिको भाय ॥ २ ॥ वाबिनतीनोंलोकमें, दूजानाहींकोय ॥ मनमेंनिज करिदेखिये, हानीहोयसुहोय ॥ ३ ॥ पुनिकछुवरणौंरीतिरस, रसहै जगको जीव ॥ रसनारसकोजसकहै, सुनिसुखउपजैहीव ॥ ४ ॥ हियहुलासयाग्रंथको, रास्योनामविचार ॥ यामेंसगरेरागके, सबैरूपशृंगार ॥ ५ ॥ आदिनादअनहदभयो, ताते उपज्योवेद ॥पुनिपायोवावेदते, सकलसृष्टिकोभेद ॥ ६ ॥ प्राणखरे षट्रागसुनि, तब उपज्योवैराग । वारेतरुनैवृद्धको, तातेभावतराग ॥ ७ ॥ जगकोधीरजरागहै, रागसंगकीखान ॥ मनमंजनइहरागहै राग प्रेमकेप्रान ॥ ८ ॥ रागअभूषणरूपको, रूपरागकोभोग ॥ याहीते सबकहतहैं, रागरंगसंयोग ॥ ९ ॥ रागहरैसबरोगको, राग चहै रसभोग ॥ विरहीबूझैरागको, उपजैविरह वियोग ॥ १० ॥

अथषट्रागवर्णनम् ।

दोहा—रागप्रथमभैंरोकह्यो, मालकोस पुनिजानि ॥ हिंडोलरामतीजोकहत, दीपकरागवखानि ॥ ११ ॥ श्रीरागकविकहतहैं, मेघराग पुनिसार ॥ षट्रागनके नामये, कहैंभेदविस्तार ॥ १२ ॥

अथरागनकीरागिनी वर्णनम् ॥

दोहा—भैरोंकीधुनिभैरवी, बंगालीवैरारि ॥ मधुमाधवअरुसिंधवी, पाँचौंविरहिनिनारि ॥ १३ ॥ टोडीगौरीगुनकली, खंभायतपहँचानि ॥ औरकुकविकोकहतहैं, मालकोसकीजानि ॥ १४ ॥ रामकलीपटमंजरी- और कहै देवसाखि ॥ एनारीहिंडोलकी, ललितविलावलराखि ॥ १५ ॥ देशीनटअरुकान्हरो, केदारोकामोद ॥ दीपककीप्यारीसबै, महाप्रेमपरमोद ॥ १६ ॥ धनाशरीआसावरी,

मारूबहुरिवसंत ॥ श्रीरागकीरागिनी, मालसिरी है अंत ॥ १७ ॥ भोपाली अरुगूजरी, देशकारमल्लार ॥ संकवियोगनिकामिनी, मेघरागकीनार १८

अथषट्रागनकेगुणवर्णनम् ।

भैरोंसुरसुरतागहै, कोल्हूचलैंजुधाय । मालकोसजबजानिये,पाहन पिघलिबहाय ॥ १९ ॥ चलैहिंडालेआपते, सुनतरागहिंडोल ॥ बरसै जलघनधारअति, मेघरागकेबोल ॥ २० ॥ श्रीरागकेसुरसुने, सूखो वृक्षहराय ॥ दीपकदीयोबरिउठै जोकोउजानैगाय ॥ २१ ॥

अथरागका समयवर्णनम् ।

दोहा–पिछलेपहरेनिशिसमै, भैरोंरागबखान ॥ मालकोसतबगाइये, जब सब निकसैभान ॥ २२ ॥ एक पहरजबदिनचढै, करैरागहिंडोल ॥ ठीकदुपहरीकेसमै, दीपककेसुरबोल २३ ॥ श्रीरागचौथेपहर जौलौंदिन अथवाय ॥ मेघरागजबहीभलो, तबैमेहबरसाय ॥ २४ ॥ फागुनमेंएरागसब, जागतआठौयाम ॥ वसंतऋतुमेंनिशिसमै, एक यामविश्राम ॥ २५ ॥ भैरोंशरदकुसकशिशिर, अरुहिंडोलबसंत ॥ दीपकग्रीषमहेमश्री, मेघसुपावसअंत ॥ २६ ॥

अथबाजनकेभेदवर्णनम् ।

जगमेंसबसुरताकहैं बाजेसाढेतीन ॥ खालतारअरुफूंकपुनि अरधतालसुरहीन ॥ २७ खालनगारेढोलडफ, औरपखावजजानि । तारतँबूरावीनहै,बहुरिरबाबबखानि २८ फूंकनफीरीबाँसुरी,सुरनाईकरनाय॥ तालमँजीराझाँझसब, बाजेदियेबताय ॥ २९ ॥ आधोबाजोकहतहैं, कठतारीसुरहीन ॥ भेदकहेबाजेनके, गुणिजनजेपरवीन ॥ ३० ॥

अथआलापकरनकीयुक्ति ।

दोहा–बैठेआसनऊंटके, तोशुधहोयअलाप ॥
चलतेटेढेसुरभरै, जानौमहाकलाप ॥ ३१ ॥

अथस्वरनिमित्तसरस्वतीचूरण ।

दोहा–शाखाहूलीमुलहटी, ब्राह्मीवासाआनि । हरडकूठवचबावची सघौंजीराजानि ॥ ३२ ॥ भंगरेहअजमोदपुनि, बहुरिशतावरिलेहु ॥

समकरि पीसै छानिकरि, प्रातसुमुखमेंदेहु ॥ ३३ ॥ एकहथेलीभरिसदा, साधैदिनचालीश ॥ सुरसुंदरहो बुद्धिबहु, विधिविद्याजगदीश ॥३४॥

इति हियहुलास सम्पूर्णम् ।

अथ रागमालाप्रारम्भः

भैरोंरागकोस्वरूपवर्णनम्।

दोहा—भैरोंशिवछविशिरजटा, श्वेतवसनत्रयनैन ॥ मुंडन कीमालागरे, सिंहरूपसुखदैन ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ शिवमूरतिभैरों को भावबन्यो त्रयनैन सुमुंडकि मालगरे ॥ पटश्वेतसबैतनुमें पहरे हिरदै भगवानको ध्यानधरे ॥ तिरशूलविराजतहै करमें सब भामिनिकी मतिलेत हरे ॥ मुख छारलगी द्युतिदूनी भई चित चाहनमें छवि जातछरे ॥ ३६ ॥

अथभैरों × की रागनीभैरवीकोस्वरूप।

दोहा—शिवपूजत कैलाशपरि, दोउकरनमेंताल ॥
श्वेत चीर अँगिया अरुण, रूपभैरवी बाल ॥ ३७ ॥

अथबंगाली * रागिनीकोस्वरूप।

दोहा—भस्मपिटारी कर, गहे हाथलिये तिरशूल ॥
बंगालीव्याकुल भई, गईसबैसुधिभूल ॥ ३८ ॥

अथवैरारी ? रागिनीस्वरूप।

दोहा—कदम + पुष्प काननधरे, करकंचन शृंगार ॥
शीशकेश सोहतछुटे, श्वेतवसनवैरार ॥ ३९ ॥

अथ=मधुमाधवीस्वरूप।

दोहा—कंचनतनुलोचनकमल, नागरिमहाअनूप ॥
पियपैबैठीहँसतहै, मधुमाधवीस्वरूप ॥ ४० ॥

× सुर ॥ ७ ॥ * सुर ॥ ७ ॥ ? सुर ॥ ७ ॥ + सुर ॥ ७ ॥ = सुर७॥

अथ ÷ सिंधवीरागिनीस्वरूप ।

दोहा—कानफूलदुपहारिया, पहरेबस्तरलाल ॥
क्रोधवंत तिरशूलकर, रूपसिंधवीबाल ॥

अथ मालकौंसराग * कोस्वरूप ।

दोहा—मालकोसनीलेवसन, श्वेतछरीलियेहाथ ॥
मुतियनकीमालागरे, सकलसखीहैंसाथ ॥ ४२ ॥

अथ सवैया ।

कौसकको अपमानभलो तनु गौर विराजतहै पटनीले ॥
माल गरे कर श्वेत छरी रसप्रेम छक्यो छविछैलछबीले ॥
कामिनिके मनमोहतहै सबके मनभावत रूप रसीले ॥
भोर भये उठि बैठ्यो ही भावत नागर नायक रंग रँगीले ॥ ४३ ॥

अथमालकौंसकीरागिनीटोडीकोस्वरूप ।

दोहा—टोडी करवेणी गहे, गावत पियके हेत ॥
चंचल छवि मृगमोहनी, पहरे बस्तर श्वेत ॥ ४४ ॥

गौरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—गौरीछवि अति साँवरी, अंध कूप धरिकान ॥
तृषावंतनितकामकी, गावतमीठीतान ॥ ४५ ॥

अथगुनकलीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—छुटेकेशशिर गुनकली, बैठी पियके पास ॥
नीचीग्रीवाकरिरही, अतिहीचित्त उदास ॥ ४६ ॥

खंभायतरागिनीको स्वरूप ।

दोहा—खंभायत गोरेवदन, गावतकोकिलवैन ॥
अतिआतुर चातुर खरी, कामवती दिनरैन ॥ ४७ ॥

अथककुविरागिनीस्वरूप ।

दोहा—ककुविनायकानिशिसमै, जागी पियके संग ॥
रति मानै के चहन अलि, अंगअंगभेरंग ॥ ४८ ॥

÷ सुर ॥ ७ ॥ * ॥ सुर ॥ ८ ॥

अथहिंडोलरागस्वरूप ।

दोहा—पीतवसनहिंडोलके, है जु हिंडोलमांहिं ।
सखीझुलावैंचावसों, गाय गायमुसकाहिं ॥ ४९ ॥

सवैया ।

कीन्हेबनावमहाछवि सुंदर भावते बैठ्यो हिंडोलहि डोले ॥
झूलझुलावत औरनिहूं सब गावतहैं सखियाँ मुखखोले ॥
गोरे जो गात दिपात भरीद्युति दामिनिसी मानो पीत पटोले ॥
केलिकरै अबला अलबेली अलोलसबैरस काम किलोलै ॥ ५० ॥

अथहिंडोलरागकीरागिनीरामकलीकोस्वरूप ।

दोहा—रामकली नीले वसन, कंचनसी सबदेह ॥
प्रियबाणी गावत उठी, पियके परम सनेह ॥ ५१ ॥

अथपटमंजरीरागिनीस्वरूप ।

दोहा—विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनुछीन ॥
सखी सीख अति देतहै, भई प्रेम आधीन ॥ ५२ ॥

देवसाखिरागिनीस्वरूप ।

दोहा—पियके करपर कर धरे, अति व्याकुलमनकाम ॥
तनुदुर्बलदेवसाखिहै, महाविरहनीनाम ॥ ५३ ॥

ललितरागिनीस्वरूप ।

दोहा—ललित गरे माला पुहुप, सुंदर तरुणी जानि ॥
गोरीछवि वस्तर अरुण, वदनमदनकी खानि ॥ ५४ ॥

बिलावलरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—कामदेवको ध्यान धरि, पटते पटसंगीत ॥
करत शृँगारविलावली, नीले वस्तरप्रीत ॥ ५५ ॥

अथदीपकरागकास्वरूप ।

दोहा—दीपक गजकी पीठपर, बैठ्योबागेलाल ॥
मुक्तमालपहरेगरे, चहूँओर रसबाल ॥ ५६ ॥

सवैया ।

दीपकको परतापबड़ो चढ़ि बैठ्यो गयंदकी पीठि बिराजे ॥
अंबरराती शरीर सबै मुकतानकी माल गरे छबिछाजे ॥
संगसखी सब सोहतहैं तिनमाहिं जो आय गयंदसो गाजे ॥
साँवरोरूप अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतरभाजै ॥ ५७ ॥

अथदीपकरागकीरागिनीदेशीकोस्वरूप ।

दोहा-देशीकेवस्तरहरे, कामसताईनार ॥
पतिकोटेर जगावती, मिसकरिवारंवार ॥ ५८ ॥

नटरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा-अरुन वरन सगरे वसन, नटवासीनरनारि ॥
ग्रीवापकरे करनसों, पियतनुरहीनिहारि ॥ ५९ ॥

अथरागिनीकान्हरोस्वरूप ।

दोहा-शीशपत्र गजदंतको, करनाँगीतरवारि ॥
मोरकंठकेवरनहै, रूपकान्हरोनारि ॥ ६० ॥

रागिनीकेदारोस्वरूप ।

दोहा-शीशजटासबतनु लटा, गरेजनेऊनाग ॥
केदारोइहरूपहै, धरैध्यानवैराग ॥ ६१ ॥

अथकामोदरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा-कामवंतकामोदनी, पीतवसन वनदास ॥
चहूँओर पियकोतकत, अतिही चित्त उदास ॥ ६२ ॥

अथ श्रीरागकोस्वरूप ।

दोहा-श्रीयरागकेकरकमल, पुहुपरूपपटलाल ॥
बरस अठारहकोतरुण, गावत कंठरसाल ॥ ६३ ॥

श्रीरागकी-सवैया ।

वर्ष अठारहको तरुनौ मुख देखतही सबके मन भावै ॥
वामसबै वशकी अपने गुण गायकै भावते भेद बतावै ॥

रातो जो बागो विराजतहै करवारिज फूललिये मुसकावै ॥
पुष्पकेरूप स्वरूपबन्यो सबहीमें भलोश्रीराग कहावै ॥ ॥ ६४ ॥

अथश्रीरागकीरागिनीधनाश्रीकोस्वरूप।

दोहा–धनासरीरोवतखरी, हिरदैविरह अपार ॥
सबतनु पीरोह्वैरह्यो, निपट विरहनी नार ॥ ६५ ॥

आसावरीरागिनीस्वरूप ।

दोहा–चंदनटीको भाल पर, गरेनागकोहार ॥
छविअतिसुंदरसाँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ६६ ॥

अथमारूरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा–मारूकेमालागरे, पियेप्रेममधुमात ॥
तरुणीसुंदरसाँवरी, बैठीअतिअरसात ॥ ६७ ॥

वसंतरागिनीकोस्वरूप।

दोहा–मोरपंखशिरपरधरे, वसन जु पीतवसंत ॥
काननमौरजुअंबके, चहुँदिशिभौंरभ्रमंत ॥ ६८ ॥

मालसरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा–मालसरीदुर्बलवदन, सखीहाथपरहाथ ॥
अंबतरेबैठीरहत, बिछुरेपियकोसाथ ॥ ६९ ॥

अथमेघरागकोस्वरूप ।

दोहा–श्यामवसनहैमेघको, गहैहाथकरवारि ॥
अतिआतुरचातुरखरो, गावतसुरतिविचारि ॥ ७० ॥

मेघरागस्वरूप सवैया ।

मेघमलारमहाद्युतिसुंदर इंद्रहीकीछविआपबनो ॥
पहरेपटश्यामगहे तरवारि जुग्रंथनमें इहभाँतिभनो ॥
जैसोजहाँचहियेसोइअंगसुतैसियभाँतितेठीकठनो ॥
कामकोआतुरहै अतिही तियकेरतिकोचितचावघनो ॥ ७१ ॥

अथमेघरागकीरागिनीभोपालीकोस्वरूप।

दोहा–भोपालीविरहानिबडी, केशरिरंगेरेचीर ॥

भयोविरहकीज्वालतें, पियरोसबैशरीर ॥ ७२ ॥

अथगूजरीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—विरहसताईगूजरी, रोवतछूटेकेश ॥
कामदेवकाननलग्यो, इहैदियोउपदेश ॥ ७३ ॥

देशकाररागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—देशकारकंचनवरण, खेलतपियकेसंग ॥
हियहुलासजोकामकी, चढ्योचौगुनोरंग ॥ ७४ ॥

अथमलाररागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—वीनगहेगावतबहुत, रोवतहैजलधार ॥
तनुदुर्बल विरहादही विरहिनिनारिमलार ॥ ७५ ॥

टंकरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—सेजबिछाईकमलदल, लेटिरहीमनमारि ।
लेतउसासजुसीयसे, टंकवियोगिनिनारि ॥ ७६ ॥

इतिषट्राग तीसरागिनीनकेस्वरूपवर्णनम् ।

अथ आमेजी राग वर्णन ।

दोहा—रागरागिनीसबकहे, जैसीजाकीरीति ॥
अबआमेजीरागको, सुनौसकलकरिप्रीति ॥ ७७ ॥

छप्पय ।

देशकारकोपुत्रपासदरशातराजघन ॥ मंडितमुखतंबोलतेजबल गहरगौरतन ॥ श्वेतसरसमिलिवसनकंठमणिमालमनोहर ॥ कंज-अक्षशिरछत्रविजनदहुँविदितविजैवर ॥ बैठ्योकल्याणसिंहासनहिं, रतनरागसंचारियो॥पंडितप्रवीनपरिजनसहित, दिवसअंतउच्चारियो॥

दोहा ।

तिलकगौडकामोदये, मिलेमिश्रतामान ॥ इनकेकियेअलापको, जानौसुधकल्यान ॥ ७९ ॥ तिलकषर्जकामोदयुत, आलापिनमें होत ॥ कामोदकपहलेकह्यो, बहुरिगौडकोसेत ॥ ८० ॥ इतनेमि-लिआलापसों, श्लेषसकलसरसाय ॥ सुरउचार यों समुझियो, प्रगट

रूपदरशाय ॥ ८१ ॥ शंकरभरनस्वरूपहै, गौररक्ततनुवास ॥ कमलमालशृंगारहै, सखी रूपहैतास ॥ ८२ ॥ प्रथमरागकेदारमें मिलैबिलावलआनि ॥ इनकेमिले अलापसों, शंकरभरनिसुजानि ८३ केदारोईमनमिलै, मिलैशुद्धकल्यान ॥ इनकेमिलेअलापसों, राग हमीरहजान ॥ ८४ ॥ केदारोकल्याणसम, तनकबिलावलभास ॥ इनकेकियेअलापसों, ईमनहोतउजास ॥ ८५ ॥ सारँगमारूकेमिले, केदारोसमआनि ॥ मिश्रितकरिआलापिये, इहेविहंगमजानि ॥ ८६ ॥ तीनिरागतोयेमिलैं, फेरिमलारमिलाय ॥ इनकीसमतासोंनहीं, सो साँवंतकहाय ॥ ८७ जैतसिरीशंकरभरन, नटनारायणतुल्य ॥ इन केमिलेविभागसों, रागसरस्वतीतुल्य ॥ ८८ ॥ बहुलाआसावरिमिलै अरुमलारसमभाग ॥ कछुकमेलिगंधारको, षड्जजानियोराग ॥ ८९ प्रथमपूरवीनाटसुध, धनाशरीसमभाय ॥ समलैभागअलापिये, भीवपलासीआय ॥ ९० ॥ रामकलीपुनिगूजरी, गुनकलीजुगंधार ॥ पूरविरागनिमिश्रिता, शक्तिवल्लभासार ॥ ९१ ॥ भैरवसुधिआसावरी अरुगौडीकोमानि ॥ देवगिरीसंभावले; योंगंधारहिजानि ॥ ९२ ॥ बिलावलीवागेश्वरी, नूनबिलावलशुद्ध ॥ वागेश्वरसुरपूरहै रागसुहा सुदबुद्ध ॥ ९३ ॥ मिलिधनासिरीकान्हरो, संभागिनिआलाप ॥ सुर उच्चारसोंजानियो, बागेसुरीजुछाप ॥ ९४ ॥ मूलसदेवगिरीगिनौ, नटमलारहैनून ॥ करिसमानआलापिये, सारँगरागसितून ॥ ९५ ॥ समैजुसारँगकीसुनौ, दिनग्रीषमऋतुपाय । द्वितिययामतेपहरलग, गुनीरूपदरशाय ॥ ९६ ॥ आसावरीअहीरिमिलि, समभागिनिउच्चार । तोलकरो आलापको, सिंधुरागगुनकार ९७ भैरव पंचम गूजरी, बंगाली गंधार । संभागिनिउच्चारसों, सोरठसबसोंसार ॥ ९८ ॥ एकअहीरीरागिनी, करनाटीसमजोर । रागअडानोजानिये, तानसुमिलितघोर ॥ ९९ ॥ श्रीतीनिकरनाटकी, मंगलअष्टप्रमान ॥ करिसमान आलापिये, जानिपूरियातान ॥ १०० ॥ देशकारिअरुगूजरी, स्वल्परूप आरंभ ॥ तानमिलावैयुक्तिसोंरागअहीरीयंभ ॥ १ ॥ फिरैदसूकरनाटयो; समताकैसमस्त ॥

छायासावतअंडहै, भूपालीपरसस्त ॥ २ ॥ जैताशिरीअरुद्रावडी समलेकरोउच्चार । श्रुतिभंगननहिंसोभिये, धौलसिरीविस्तार ॥ ३ ॥ जैतश्रीकरनाटकी, केदारोकल्यान । समकरितानामिलाइये, मंगलअष्टप्रमान ॥ ४ ॥ प्रथमशुद्धकल्यानमें, मिलैजैतश्रीआनि । उभयरूपगायालखै, जैत कल्यानहिजानि ॥ ५ ॥ मारूटोडीरागिनी आसामिलैसमान । इनहीकीसंभावना, षेमपरजपहिचान ॥ ६ ॥ प्रथमपूरवीसारँगहि, जैताशिरीकोजानि । एसमभाग अलापिये, देवगिरीपहिचानि ॥ ७ ॥ कामोदकषड्जागयो, समकरिकरै अलाप ॥ तिलकरागकोजानिये, मिटतसकलसंताप ॥ ८ ॥ सिंधूअरुबडहंसको, नूनअधिकसंभाव॥इनकेदुहूँप्रतापते, शिवरीरागहिगाव ॥९॥धनासिरी शिवरीनिरा, समअलापकोकीन । कहतकुमारीरागिनी, तानतरलपर वीन॥१०॥चतुरविहारीसममिलै, धनाशरीसमजानि॥चैतीमारूचारि ये, बडहंसहिपहिचानि ॥११॥ चतुरविहारीरागिनी केदारहिसमभाग॥ इनकेहोतमिलापसों, लंकधैनइहराग ॥ १२ ॥ नटनारायणशुद्धनट, औरमलारमिलाय । इनकेमिलेअलापसों, रागमाधवीगाय ॥ १३ ॥ मधुमाधवलकधैनलै शुद्धविलावलआनि ॥ चौथेसंकरभरनसों, नटनारायणजानि ॥ १४ ॥ ककुभविलावलपूरवी, केदारो समभाग ॥ इनकेजुरे मिलापसों, इहेदक्तनटराग ॥१५॥ धौलसिरीदेसाख मिलि, फेरिबिलावलिमेलि ॥ करिउचारसमभागसों, जैतशरीकीकेलि॥१६॥ केदारोकल्यानहै, औरबिलावलवाम । इनकेसमआलापते, तीछन रागसुनाम ॥ १७ ॥ रामकलीअरुगूजरी, देशकरीबंगाल, । पंचमस मभागनिमिलै, बहुलीराग विशाल ॥ १८ ॥ सोरठ और धनासिरी विलावलीसमकीन ॥ इनकेमिश्रितगानते, जैजैवंतिप्रवीन ॥ १९ ॥ धनाशरीटोडीमिलै, समकरितानविलाव । रागअनूपमनामहै, तान सुरनतेगाव ॥ १२० ॥ नटसंभागकल्यानकरि, मिश्रितउभैबताय । न्यूनअधिकसमजानिकै, इहैशुद्धनटगाय ॥२१॥ नटजोमिलैहमीर सों उहहैनाटहमीर । नटकेदारोसमकरै, नटकेदारहमीर ॥ २२ ॥ सारँगमें टोडीमिलै, मिश्रितउभैप्रमान । समअलापसोंगाइये, सारँगगौडनि-

धान ॥ २३ ॥ प्रथमधनाश्रीपूरवी, दाऊसुरसंयोग ॥ इहधनाश्री पूरवी, गुणिजनगावोलोग ॥ २४ ॥ गौरीसारँगसमकरो, स्वल्पललि-तकीभास ॥ सोचैती गौरीकही, समझोबुद्धिप्रकास ॥ २५ ॥ सारँगकेसुरसोंमिलै, करोगौडकोज्ञान ॥ तामेंपूरोपूरवी, रागपूरिया जान ॥ २६ ॥ आमेजी ये रागहैं, कहैंगरतिजनगाय। भेदरागअरु-रागिनी, एसबदियेबताय ॥ १२७ ॥

राग ६ रागिनी ३० रागरागिनी ३६ ये मिलिकै आमेजी

रागरागिनी ९९९ मियां तानसेन गाई संवत्

१८५५ चैत्रवदि २ शुक्रवार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे द्वितीयभाग समाप्त।



इति

रागरत्नाकर द्वितीयभाग

समाप्त ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

तीसराभाग प्रारंभः ।

श्लोक–नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदयेनच ।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

दोहा–हरिपद प्रीति न होय, बिन हरि गुण गाये सुने ।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥
अपनी ओर निहारि कै, क्षमा करो अपराध ।
जिहिं तिहिं विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध ॥
संतनको यह परम धन, सब ग्रंथनको सार ।
भक्तनको सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥
सादर जो जन याहिको, पढैं नित्त कर नेम ।
निश्चय ते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ़ प्रेम ॥
हरि चरणन दृढ़ प्रेम जिहिं, धन्य धन्य ते धन्य ।
भक्तराम पर द्रवहिं सब, हृदय होय परसन्य ॥
पढ़त सुनत याके कछू, जो मन होय हुलास ।
मेरी हूं सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥
जय वृंदावनचंद्र की, जय जय जय सुखरास ॥
निज चरणन में राखिये, एक तुम्हारी आस ॥

कवित्त ।

गिरिको उठाय ब्रज गोपको बचाय लियो अनल ते उबारचो पुनि बालक मँजारी को ॥ गजकी अरज सुन ग्राह ते छुटाय लीनो राख्यो व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको ॥ राख्यो गज घंट तरे बालक विहंगनको राख्यो पण भारत में भीष्म ब्रह्मचारीको ॥

त्रिविध ताप हारी निज संतन सुखकारी एक मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १ ॥

कमला निवास निजदासनकी पूरैआस ताके विसवास विषभख्यो मीरा बाई है ॥ केशव कमलनयन संतन करन चैन सैन हित भये भूप मंजन को नाई है ॥ इंद्र जू को हरयो मान सुदामाको दियो दान भक्त जान छान नामदेव जीकी छाई है ॥ नंदके कन्हाई निज संतन सुखदाई बलदेव जूके भाई सो हमारो सहाई है ॥ २ ॥

काहूके अधार सेवा वणिज व्यौपार हूको काहूके अधार थित वित्त खेत गामको ॥ काहूके अधार तन सार भ्रात बंधुनको काहूके अधार प्रिय सार निज नामको ॥ काहूके अधार विद्या बुद्धि बल को है काहूके अधार हाथी घोड़ा धन धामको ॥ मैंतो निराधार मेरी हरिहि करोगे सार मेरे तो अधार एक केवल हरि नामको ॥ ३ ॥

केऊ कर्म वादी केऊ अन्न भौं प्रसादी भये केतनकी मति भई न्याय सांख्य मतकी ॥ केते जग दानी यम नेमको प्रमाणकरैं केते परतीत गहैं तीरथ हूं व्रतकी ॥ केऊ ब्रह्मचारी केऊ योगी जटाधारी भये वानप्रस्थ केतनको दया साँच सतकी ॥ मैं तोहूं पतित मेरी कौन दिवस ह्वैहै गति कमलापति राखो पति मोसेहू पतितकी ॥ ४ ॥

केऊ प्रेम लक्षण भगति में विचक्षण ह्वै नीके भांति सेवा कर जाने निधि ज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्वबोध सेती आतमको शोध करें साधैं नित्त योग गति जानै रोध पानकी ॥ केऊ तनु सासना सवासना जतन सहें केउक उपासना गणेश शिव भानकी ॥ हौंतो हूं अजान ताको काहूसे पछान नाहिं कोऊ कछु जानै हौं तो जानूं नाथ जानकी ॥ ५ ॥

जैसे खग बालकको राख लियो घंटा तरे लाक्षा गृह बीच राख्यो पांडव सब साथ को ॥ राख लियो परीक्षितको माताके उदर माहिं राख्यो ब्रज ग्वाल बाल गिरि धारयो निज हाथको ॥ पारथके स्वारथको सारथी भये हो तुम सखा निज जानके जितायो है

भार्तको ॥ पावक प्रजारी तहां राख्योहै मजारीको वैसी भाँति राखो नाथ मोसम अनाथ को ॥ ६ ॥

केऊ ध्यान धारना समाधि विषे लीन भये मिलावैं परमात्माको आत्मा विचारी को ॥ केते निष्काम मन अजपाको जाप जपैं केते भजैं शंकर धतूरके अहारीको ॥ केते ह्वै सकाम मंत्र यंत्र आठों याम जपैं केते लोभ दामते गणेश सुखकारी को ॥ तेरो ध्यान ज्ञान तेरो आसरो तिहारो मोहिं कोई कछु ध्यावो मैंतो ध्यावोंगिरिधारी को

लीला अगाध ब्रजवासिनके हेत सेती धना जूके खेत विन बोये उपजाई है ॥ भीषमको प्रण और द्रौपदीकी लाज राखी अश-रण शरण कीरति वेद मध्य गाई है ॥ बूड़त बचायो ब्रज कर पर गिरि धारयो साह बन नरसी की हुंडी सकराई है ॥ करिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी मोपर ब्रजराज गजराज की सी आई है॥

दीनबंधु दयासिंधु मेटत दुख द्वंद्वन के ऐसे तो अनेक विविध ग्रंथन में कही है ॥ गोप मेह ते उबारे राजा बंदि ते निवारे भारत में पारथ हित एते शर सही है ॥ नामा कबीर गीध गणिका अरु कीर तारे चीर बाढ़े द्रौपदीको जगत यश लही है। बेर हेर मांझधार मेरो दुख वार देके एहो नाथ करुणानिधि मेरो हाथ गही है ॥ ९ ॥

तबतो भगतन सहाय काज ब्रजराज कंसको बिदार मति धरी न चित्त मामा की ॥ बालद भरल्याये जुलाहाके दयाल होय गऊ हूं जिवाई अरु छानि छाई नामा की ॥ संतनको प्रण ग्वाल गण राख्यो व्याल सेती विपति हरी संपति अमित दे सुदामा की ॥ अहो बलवीर तुम द्रौपदीको बाढ्यो चीर हरत क्यों न पीर अब मोसे निष्कामा की ॥ १० ॥

कबको पुकारत हों सुनत नहीं एको बात एहो नँदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो ॥ कहतेहैं दयाल सोतो दयाहू न देखियत मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो ॥ धरयो हो नृसिंह रूप तबहीं प्रहलाद काज अबतो न लाज कछु गोधन में ग्वाल हो ॥ डारयो

तेल कानन में कि बस्यो जाय काननमें शेष सैन लेट कीधौं पौढ़े घर पताल हो ॥ ११ ॥

बेर बेर टेर टेर जीभहूं शिथिल भई हरत न मेरी पीर कैसे अभिमानी हो ॥ कृपण भये हो कीधौं मौनको गहेहो कान्ह दयाहूं न आवै अब कैसे उनमानी हो ॥ कैसेकै उदार तुम होत हो मुरारि प्रभु गोपिनके प्यारे छांछ दूधहूके दानीहो ॥ बक बक थकी बानी कछुहू न चित्त आनी जानी हम जानिबूझ करत आनाकानी हो १२॥

वेद औ पुराणन में करतहैं बखान ऐसे सतयुग के बीच ध्रुव प्रहलाद को तूठे हो ॥ त्रेताके बीच नीच कुलकी न करी कानि भीलनीके हाथ प्रभु भखे बेर जूठे हो ॥ द्वापरके अंत तुम द्रौपदी की लाज राखी पांडवके काज दल कौरवके रूठे हो ॥ अब कलि काल में जो करो न सहाय मेरी तो सब लोग हँसके कहैंगे हरि झूठे हो १३

गौतमकी नारी ताकी कथा बहुत विस्तारी यद्यपि उधारी तिन छिद्र उघराय के ॥ दुःशासन द्रौपदीके सभा बीच केश खैंचे तब लाज राख लई लाजकूं गमायके ॥ भयो बल हीन तनु अतिही अधीर छिन्न तब गज काज हरि आये तुम धायके ॥ दीन के दयालु प्रभु यामें तो सँदेह नाहीं करत हो सहाय आप नीके तनु तायके १४

सवैया ।

दास सुदामाको संपति दै चुटकी भर चावल पहिलेहि लीने ॥
सागके पात पचोलीके खाय तब ऋषि भोजन दीने नवीने ॥
कंस की दासी पै चंदन ले पटरानी करी कहाँ मान करीने ॥
जो कारज जग में यदुराय अकोर लिये बिन कौनके कीने ॥ १५ ॥

कवित्त ।

ब्रह्मा महेश शेष नारद गणेश कहैं भक्तनके काज हरि आप देह धारी है ॥ मंगल करण दुख द्वंद्वके हरण पुनि पोषण भरण ऐसे रटैं नर नारी है ॥ विरद भक्तवत्सल सो वेद हू पुराण कहैं जानत हौं जाके अब खोवे की विचारी है ॥ द्वारकाके बासी भये जायके मवासी अब मेरी होत हासी यामें हासी तो तिहारीहै ॥ १६ ॥

करत अपराध भोर सांझ तरकौर नित अतिही कठोर मति बौर को निकामहौं ॥ आतुर अधीर ताते धीरताधरत नाहीं ऊंच नीच बोल गति बकों आठो याम हों ॥ अरचा न जानूं कछु चरचा न बूझत हों कछु हेत प्रात से न लेत हरि नाम हों ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो कहै माधो दास प्रभु तिहारो गुलाम हों१७॥

छंद ।

जन्मे श्री कृष्ण मुरार भगत हित कारने ॥ मथुरा लियो अवतार गोकुल झूलें पालने ॥ तिथि आठें बुधवार भाद्रपदकी करी ॥ रोहणी नक्षत्र आधीरातको जन्मे हरी ॥ धन्य धन्य वसुदेव देवकी जहां प्रभु हैं अवतरे ॥ धन्य धन्य गोपी ग्वालकि जिन प्रभु बसकरे धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करें ॥ दुंदुभी बजत आकाश सुमन वर्षा करें ॥ ब्रजवासी गोरस भर भर कर लावहीं ॥ दधिकांदो बाबा नंद सुकीच मचावहीं ॥ बाजत ताल मृदंग वीण अरु बांसुरी ॥ निरखैं गोपी ग्वाल चलौ चित चावरी ॥ यशुमति चीर पहराय नौरँग भई ग्वालनी ॥ सुंदर वदन निहार चकित भइ भामिनी ॥ श्री बलभद्रजूके वीर असुर दल खंडना ॥ भगत बछल महाराज सुयदुकुल मंडना ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सुगोद खिलावहीं ॥ सो मुख चूमत माय सुपलन झुलावहीं ॥ श्रीनंददास नेह चरण चित लावहीं ॥ हरि गुण मंगल गाय जन्म फल पावहीं ॥ १८ ॥

राग जंगला ।

जै जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा ॥ दोउ कर जोड़े विनवों प्रभु मोरी सुनो बाता ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमही सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ॥ जय० ॥ चौरासी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ॥ निशि दिन प्रभु मोहिं राखो अपने सँग साथा ॥ जय० ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग चारों भैया ॥ जग मग ज्योति विराजै शोभा अति लहिया ॥ जय० ॥ हनुमत नाद बजावत नेवर ठिमकाता ॥ सुवर्ण थाल आरती करत कौश-

ल्या माता ॥ क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै शोभा अति भारी ॥
मनीराम दरशनको पल पल बलिहारी ॥ जय० ॥ १९ ॥

कवित्त ।

जलकी न घट भरैं मगकी न पग धरैं घरकी न कछु करैं बैठी भरैं सांसुरी ॥ एकै सुन लोट गईं एकै लोट पोट भईं एकनके दृगन निकस आये आंसुरी ॥ कहै रसनायक सो ब्रज बनितन बीध बधिक कहाये हाय हुई कुल हांसुरी ॥ करिये उपाय बांस डारिये कटाय नाहिं उपजैगो बांस नाहिं बाजै फेरि बांसुरी ॥ २० ॥

भिक्षुक तिहारो कहां बलि मखशाला जहां सर्पन को संगी कहूं है है क्षीरसागर में॥एरी बहुरंगी बैलवालो कहां नाचत है कीन्हे तिरभंगी कहीं ह्वैहै ग्वाल गन में ॥ चाउर का चबैया कहूं होय है सुदामा पास विषको अहारी कहां पूतनाके घर में ॥ सिंधुसुता आन मिली तर्क सों तर्ककरी गिरिजा मुसक्यात जात झारी लिये कर में ॥२१॥

सवैया ।

शेश महेश गणेश दिनेश सुरेशहु जाहि निरंतर गावैं ॥
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुवेद बतावैं ॥
नारद लै शुक व्यास रटैं पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भर छाछको नाच नचावैं ॥२२॥
गुंज गरे शिर मोरपखा अरु चाल गयंदकी मोमन भावैं ॥
सांवरो नंदकुमार सबै ब्रज मंडली में ब्रजराज कहावैं ॥
साजैं समाज सबै शिरताजकी लाजकी बात कही नहिं आवैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियांभर छाछपै नाच नचावैं ॥ २३ ॥
आज गई हुती भोरहिं हौं रसखान रई कह नंदके भौनहिं ॥
वाको जियौ युग लाखकरोर यशोमतिको सुख जात कह्योनहिं ॥
तेल लगाय लगाय के अंजन भौंह बनाय बनाय डिठौनहिं ॥
डार हमेल निहारति आनन वारति ज्यों चुचकारति छोनहिं ॥२४॥
धूर भरे अति शोभित श्याम जू तैसी बनी शिर सुंदर चोटी ॥

खेलत खात फिरैं अँगना पग पैजनियाँ कटि पीरी कछोटी ॥
वा छविको रसखानि विलोकत वारत कामकला निधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरि हाथ ते लै गयो माखन रोटी २५॥
एक ते एक अनेरे रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हें कन्हाई ॥
आवतहीं हौं कहां लौं कहों कोऊ कैसे सहै अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटकी पटकी नहिं छोडत चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखान तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूं कर छूटनपाई ॥ २६ ॥
लोक कि लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रज चंद्र सलोनो ॥
खंजन मीन सरोजनकी छवि गंजन नयन लला दिन होनो ॥
रसखान निहार सकै जु सम्हार कै को तिय है वह रूप सुटोनो ॥
भौंह कमान सु जोहन को शर बेधत प्राणन नंदको छौनो ॥ २७ ॥
सोहत हैं चँदवा शिर मोरके तैसिये सुंदर पाग कसी है ॥
तैसिये गोरज भाल विराजत तैसी हिये बनमाल लसी है ॥
रसखान विलोकत बौरी भई दृग मूंदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूंघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ बसी है ॥ २८ ॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रँग्यो रँग रातो ॥
कुंडल लोल कपोल महाछवि कुंजन ते निकस्यो मुसकातो ॥
रसखान लखे मन खोय गयो मग भूल गई तनुकी सुधि सातो ॥
फूटि गयो दधिको शिर भाजन टूटि गो नैनन लाजको नातो॥२९॥
जा दिन ते निरख्यो नँदनंदन कान तजी घर बंधन छूट्यो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मार ने लूट्यो ॥
सागरको सरिता जिमि धावत रोक रह्यो कुलको पुल टूट्यो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूट्यो ॥ ३० ॥
बांकी विलोकन रंग भरी रसखान खरी मुसकान सुहाई ॥
बोलत बैन अमीरस दैन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजन में पुर बीथिन में पिय गोहन लागि फिरौं में री माई ॥
बांसुरी टेर सुनाय अरी अपनाय लई ब्रजराज कन्हाई ॥ ३१ ॥
देखनको सखि नैन भये सुसने तनु आवत गाइन पाछैं ॥

कान भये इन बातनके सुनबेको अमीनिधि बोलत आछैं ॥
पै सजनी न सम्हार परै वह बांकी बिलोकन कोर कटाछैं ॥
भूमि भयो न हियो यह आली जहां पिय खेलत काछनि काछैं॥३२॥
खंजन नैन फँदे छबि पिंजरा नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई ॥
छूट गई कुल कानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्र लिखी सी भई सब देह न बैन कढ़ैं मुख दीन्हे दुहाई ॥
कैसी करौं जित जावँ तितै सब बोल उठैं यह बावरी आई ॥ ३३ ॥
बंक बिलोकन है दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत बारुनी पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपै झलकैं छबि कुंडल नागरि नैन बिलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरे ब्रज बालनिके मन ईषद् हांसीकि फांसी परे हैं ॥३४॥
अति लोक कि लाज समूहमें घेरके राख थकी सब संकटसों ॥
पल मैं कुल कानकी मेड नखी नहिं रोकी रुकीं पलकैं पटसों ॥
रसखानि सों केती उचाटि रही उचटीं नसकोच की औचटसों ॥
अली कोटि करी हटकी न रहीं अटकी अँखियां लटकी लटसों३५॥
आज सखी नँदनंदन री ताकि ठाढ़ोहै कुंजनकी परछाहीं ॥
नैन बिशालकी जोहनको शर बेध गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूम खुमार गिरी रसखान सम्हार रह्यो तनु नाहीं ॥
तापर वा मुसकान की डौंड़ी बजी ब्रजमें अबला कित जाहीं ॥३६॥
जा दिन ते मुसकान चुभी उर ता दिन ते जु भयो ब्रज वारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो सुखकारी ॥
हौं सखी आवत ही बगरैं पग पैंड़ तजी रिझई बनवारी ॥
रसखान परी मुसकान के पानिन कौन गनै कुलकानि विचारी ३७॥
कौन को लाल सलोनो सखी वह जाकी बड़ी अँखियां अनियारी ॥
जोहनि बंक बिशाल के बानन बेधत है हिय तीछन भारी ॥
रसखान सम्हार परै नहिं चोट सुकोटि उपाय करो सुखकारी ॥
भाल लिख्यो विधि नेह को बंधन खोल सकै ऐसो को हितकारी ३८

मैन मनोहर बेनु बजै सु सजे तनु सोहत पीत पटा है ॥
यों दमकै चमकै झमकै द्युति दामिनि की मनु श्याम घटा है ॥
रसखान महा मधुरी मुखकी मुसकान करै कुल कान कटा है ॥
ये सजनी ब्रजराज कुमार अटा चढ़ि फेरत लाल वटा है ॥ ३९ ॥
नैन लख्यो जब कुंजनते बनिकै निकस्यो मटक्यो मटक्यो री ॥
सोहत कैसो हरा टटको शिर तैसो किरीट लसै लटक्योरी ॥
को रसखान रहै अटक्यो हटक्यो ब्रज लोग फिरै भटक्यो री ॥
रूप अनूपम वा नटको हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री ॥४०॥
एक दिना मुरली धुनि में रसखान लियो उन नाम हमारो ॥
ता दिन ते यह बैरी बिसासिनि झांकन देति नहीं है दुआरो ॥
होत चवाव बचावनो क्यों कर क्यों अलि देखिये प्राण पियारो ॥
दीठ परे ही लग्यो चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ॥ ४१ ॥
कानन दै अँगुर रहिहौं जबहीं मुरली धुनि मंद बजै हैं ॥
मोहनी तानन सों रसखान अटा चढ़ गोधन गैहैं तौ गैहैं ॥
टेर कहौं सिगरे ब्रज लोगन कालिह कोऊ कितनो समुझैहैं ॥
माई री वा मुखकी मुसकान सम्हार न जैहैं न जैहैं न जैहैं ॥ ४२ ॥

कवित्त ।

गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल आगे गैयां पाछे ग्वाल गावैं मृदु तान री ॥ तैसी धुनि बांसुरी की मधुर मधुर तैसी बंक चित वनि मंद मंद मुसकान री ॥ कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ देख पीत पट फहरान री । रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन प्राणन रिझावै वह आवै रसखान री ॥ ४३ ॥

अबहीं गई खरिक गाय के दुहाइबे को बावरी है आई डार दोहनी यो पान की । कोऊ कहै छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ कहै मरी मरी गति हरी अँखियान की ॥ सास व्रत ठाने नंद बोलत सयाने धाय दौर दौर जानै मानै खोर देवतान की । सखी सब हँसै मुरझान पहिचान कहूं देखी मुसकान वा अहीर रसखान की ४४ ॥

ब्याही अनब्याही ब्रजमाहीं सभ चाहीं तासों दूनी सकुचाहीं दीठ परै जू जुन्हैया की। नेक मुसकान रसखानकी बिलोकतही चेरी होत एक बार कुंजन फिरैया की ॥ मेरो कह्यो मान अंत याको गुण मानैहै री हौं तो हौं सकात खात जात सौंह भैया की ॥ माय की अटक तौलौं सासुकी हटक जौलौं देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैया की ॥ ४५ ॥

सवैया ।

नैनन बंक बिशालके बाणन झेल सकै वह कौन नवेली ॥
बेधत है हिय तीषन कोर सों मार गिरी तिय केतिक हेली ॥
छोडैं नहीं छिनहूं रसखान सुलागी फिरैं द्रुमसों जनु बेली ॥
शेर परी छबि की ब्रज मंडल कुंडल गंडन कुंतलकेली ॥ ४६ ॥
सुंदर श्याम सजे तनु मोहन जोहन मैं चित चोरत है ॥
बांके बिलोचन की अवलोकन नोकन कै दृग जोरत है ॥
रसखान मनोहर रूप सलोनेको मारग तें मन मोरत है ॥
काज समाज सबै कुल लाज लला ब्रजराज को तोरत है ॥ ४७ ॥
मकराकृत कुंडल गुंज कि माल सु लाल लसैं पग पांवरियां ॥
बछरान चरावन के मिस भावतो दैगयो भावती भाँवरियां ॥
रसखान बिलोकत ही सिगरी भई बावरियाँ ब्रजडावरियाँ ॥
सजनी सब गोकुल में विष सो बगरायो है नंदके सांवरियां ॥ ४८ ॥
कानन कुंडल मोर पखा शिर कंठ में माल बिराजत है ॥
मुरली कर में अधरा मुसकान तरंग महा छबि छाजत है ॥
रसखान लखे तनु पीत पटा शत दामिनीकी दुति लाजत है ॥
वह बाँसुरीकी धुनि कान परे कुल कान हियो तज भाजत है ॥ ४९ ॥

कवित्त ।

दूधदुह्यो सीरोपरयो तातो न जमायो बीर जामनदयो सोधरयो धरयोई खटायगो ॥ आन हाथ आन पायँ सबहीके तबहीं ते जबहीं ते रसखान तानन सुनायगो ॥ ज्योंहीं नर त्योंहीं नारी तैसेई

तरुनिवारी कहियेकहारी सब ब्रज बिललायगो ॥ जानिये न आली यह छोहरा यशोमतिको बाँसुरी बजायगो कि विष बगरायगो ॥ ५० ॥

सवैया ।

बजी है बजी रसखान बजी सुनिकै अब गोप कुमारि न जीहै ॥
न जीहै कदाचित कामिनी कोऊ जु कान परी वह तान अजी है ॥
अजी है बचावके कौन उपाव तियान पै मैन ने सैन सजी है ॥
सजी है तो मेरी कहा बश है जब बैरिन बांसुरी फेर बजी है ॥ ५१ ॥
आज अली इक गोप लली भई बावरी नेक न अंग सम्हारै ॥
मात अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों रसखान बिरचो सिगरो ब्रज आनको आन उपाव बिचारै ॥
कोऊ न कान्हरके कर ते वह बैरिन बांसुरिया गहि डारै ॥ ५२ ॥
कौन ठगोरी करी हरि आज बजायके बांसुरिया रस भीनी ॥
कान परी जिनके जिनके तिनही तिन लाज बिदा कर दीनी ॥
घूमैं खरी खरी नंदके द्वार नवीनी कहा कहौं बाल प्रवीनी ॥
या ब्रजमंडल में रसखान सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी ॥ ५३ ॥
ए सजनी वह नंदको सांवरो या बन धेनु चराय गयो है ॥
मोहनी तानन गोधन गाय कै बेनु बजाय रिझाय गयो है ॥
ताही घरी कछु टोनो सों कै रसखान हिये में समाय गयो है ॥
कोऊ न काहूकी कान करै सिगरो ब्रज बीर बिकाय गयो ॥ ५४ ॥
मोहनकी मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आन अटा चढ़ झांकी ॥
गोप बडेनकी दीठ बचाय कै दीठ सों दीठ जुरी दुहुवांकी ॥
देखत मोल भयो अँखियान में को करै लाज औ कान कहां की ॥
कैसे छुटाई छुटै अटकी रसखान दुहूं की बिलोकन बांकी ॥ ५५ ॥
बेनु बजावत गोधन गावत ग्वालनके सँग मैं इत आयो ॥
बांसुरी के मधि मेरोइ नामलै साथिनके मिस टेर सुनायो ॥
ए सजनी सुन सास के त्रास ननंद के पास उसासन आयो ॥
कैसी करों रसखान तहीं हित चैन नहीं चित चोर चुरायो ॥ ५६ ॥

मेरो सुभाव चितैबे को माई री लाल निहार के बंसी बजाई ॥
वा दिनते मोहिं लाग ठगोरि सी लोग कहैं लख बावरी आई ॥
यों रसखान घिरचो सगरो ब्रज जानत है जियकी जियराई ॥
जो कोउ चाहै भलो अपनो तो सनेह न काहूसों कीजियो माई ५७॥

जब कान्ह भये बश बांसुरीके अब कौन सखी हमको चाहि है ॥
यह रात दिना सँग लागी रहै यह सौत कि सांसत को सहिहै ॥
जिन मोह लियो मनमोहनको रसखान सु क्यों न हमैं दहिहै ॥
मिल आओ सबै कहिं भाग चलैं अबतो ब्रज मैं बँसुरी रहिहै ॥ ५८ ॥

सुनरी पिय मोहनकी बतियां अति ढीठ भयो नहिं कान करै ॥
निशि बासर औसर देत नहीं छिनही छिन द्वारेहि आन अरै ॥
निकसो मत नागरी डौंडी बजी ब्रज मंडल में यह कौन भरै ॥
अब रूपकी रौर परी रसखान रहै तिय कोऊ न मांझ घरै ॥ ५९ ॥

आयो हुतो नियरे रसखान कहा कहों तू न गई वहि ठैयां ॥
या ब्रजकी वनिता जिहि देखकै वारहिं प्राणन लेहिं बलैयां ॥
कोउ न काहु की कान करै कछु चेटक सों है करचो यदुरैयां ॥
गायगोतान जमायगो नेह रिझायगो प्राण चरायगो गैयां ॥ ६० ॥

हेरत बारहिं बार उतै यह बावरी बाल कहा धौं करैगी ॥
जो कहुँ देख परचो रसखान तौ क्यों हूं न वीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहू की कान नहीं जब रूप ठगी हरि रंग ढरैगी ॥
याते कहों शिख मान :भटू यह हेरन तेरेइ पैंड परैगी ॥ ६१ ॥

रंग भरो मुसकात लला निकस्यो कल कुंजन ते सुखदाई ॥
मैं तबहीं निकरी घर ते तक नैन विशाल की चोट चलाई ॥
रसखान सो घूम गिरी धरनी हरनी जिमि बान लगे गिरै भाई ॥
टूटि गयो घरको सब बंधन छूटिगो आरज लाज बडाई ॥ ६२ ॥

आज सखी इक गोप कुमार ने रास रच्यो इक गोपके द्वारे ॥
सुंदर बानिक सो रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ये विधिना जो हमैं हँसतीं अब नेक कहूं उत को पग धारे ॥

ताहि बदौं फिरि आवै घरै बिनही तन औ मन जोवन वारे ॥ ६३ ॥
वह गोधन गावत गोधन में जब ते यह मारग ह्वै निकस्यो ॥
तबते कुल कान कितीयो करौं नहिं मानत पापी हियो हुलस्यो ॥
अबतो जु भई सुभई कह होतहै लोग अजान हँस्यो सुहँस्यो ॥
कोउ पीर न जानत जानत सो जिसके हिये में रसखान बस्यो॥६४॥
आजरी नंदलला निकसो तुलसीवनते वनकै मुसकातो ॥
देखे बनै न बनै कहते कछु सो सुख जो मुख में न समातो ॥
हौं रसखान विलोकबेको कुलकानको काज कियो हिय हातो ॥
आय गई अलबेली अचानक ए भटू लाजको काज कहातो॥६५॥
समझी न कछू अजहूँ हरि सों ब्रज नैन नचाय नचाय हँसै
नित सासकी सांसी उसासन सों दिनही दिन मायकी कांति नसै ॥
चहुँ ओर बबा किसौं शोर सुने मन मेरेउ आवत रीस कसै ॥
पै कहा कहौं वा रसखान विलोक हियो हुलसै हुलसै हुलसै ॥ ६६ ॥
बाँकी कटाच्छ जितैबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हित कै हितकारी ॥
तू अपने ढिगकी रसखान सिखावन दै दिन हौं पचिहारी ॥
कौन सी सीख सिखी सजनी अजहूं तजिदे बलि जावँ तिहारी ॥
नंदन नंदके फंद कहूं परि जैहै अनोखी निहारनहारी ॥ ६७ ॥
पूरब पुण्यन ते चितई जिन ये आँखिया मुसकान भरीरी ॥
कोऊरही पुतरीसी खरी कोउ घाट डरी कोउ बाट परी री ॥
जे अपने घरही रसखान कहैं अरु हौंसन आज मरी री ॥
लाजहिं बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी री ॥६८॥
वैरिन तैं बरजी न रहै अबहीं घर बाहर वैर बढैगो ॥
टोना सों नंद ढुटोना पढै सजनी तिहिं देख विशेष बढैगो ॥
सुनिहै सब गोकुल गांव अरी रसखान जबै सब लोक रढैगो ॥
बैस चढे घर ही रह बैठ अटान चढ़े बदनाम चढैगो ॥ ६९ ॥
तेरी गलीन में जा दिन ते निकसे नँदनंदन गोधन गावत ॥
ये ब्रज लोग सो कौनसी बात चलायके जो नहिं नैन चलावत ॥
वे रसखान जो रीझहौं नेक तो रीझकै क्यों न बनाय रिझावत ॥

बावरी जोपै कलंक लग्यो तौ निशंक ह्वै काहे न अंक लगावत॥७०॥
औचक दीठ परे कहूं कान्हजू तामें कहै ननदी अनुरागी॥
सो सुन सास रही मुख फेर जिठानी फिरै जिय में रिस पागी॥
नीके निहार कै देखे न आंखन हौं कबहूं सँग रैन न जागी॥
हैपछितैबो यही सजनी कि कलंकलग्यो पर अंक न लागी॥ ७१॥
कालिह परयो मुरली धुनि में रसखान जू कानन नाम हमारो॥
ता छिनते नहिं धीर रह्यो जग जान महा मन कीनो पवाँरो॥
गाँवन गाँवन में अबतो बदनाम भई सबसों कै किनारो॥
तौ सजनी फिर फेर कहौं पिय मेरो यही जग ठोक नगारो॥ ७२॥
मो मनमोहन सों मिलिकै मधुरी मुसकान दिखाई दई॥
मोहनी मूरत मैन मई सबहीं चितई हमहूं चितई॥
उनतो अपने अपने घरकी रसखान भली विधि गैल लई॥
मोहिं को पाप परयो पल में पग पावक पौरि पहार भई॥ ७३॥
प्रेम पगे जु रँगे रँग साँवरे मानैं मनाये न लालची नैना॥
धावत हैं उतही जित मोहन रोके रुकैं नहिं घूँघट ऐना॥
कानन लौं कल नाहिं परै सखि प्रीति में भीजे सुने मृदु बैना॥
रसखानभई मधुकी मखियां अब नेहको बंधन क्योंहूँ छुटैना॥७४॥
नव रंग अनंग भरी छबि सों वह मूरति आँखि गडी ही रहै॥
बतियां मनकी मन हीं में रहैं घतियां उर बीच अडी ही रहै॥
तबहूं रसखान सुजान अली नलिनी जल बूंद पडी ही रहै॥
जियकी नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै॥७५॥
आवत हैं बन ते मनमोहन गोहन संग लसैं ब्रज ग्वाला॥
बेणु बजावत गावत गीत अमीत इतै करिगो कछु ख्याला॥
हेरत टेर थकी चहुँ ओर ते झांकि झरोखन ते ब्रजबाला॥
देख सु आननके रसखान तज्यो सब द्योस को ताप कसाला॥७६॥
बंसी बजावत आन कढ्यो री गली में छली कछु जादू सी डारै॥
नेक चितै तिरछी कर भौंहैं चलो गयो मोहन मूठ सी मारै॥
वाही घरी ते परी वह सेज पै बोलै न डोलै है प्राण से वारै॥

जागि है जीहै तो जीहैं सबै नहिं पीहैं सबै विष नंदके द्वारे ॥ ७७ ॥
अंग ही अंग जराव जरी अरु शीश बनी पगिया जरतारी ॥
मोतिन माल हिये लटकैं लटुआ लटकैं सब घूंघरवारी ॥
पूरण पुण्य हूं ते रसखान य मोहनि मूरत आन निहारी ॥
चारों दिशाके महा अघ हांके जो झांके झरोखे में बांके विहारी ७८

कवित्त ।

मीन मृग खंजन खसान भरे नयन बान अधिक गलान भरे कंज कल तालके ॥ राध छबीलीके छैल छवि छाके छाक भरे छैलताके छोरे भरे छवि जाल के । ग्वाल कवि आनभरे सान भरे स्यान भरे कछु अलसानभरे भरे मान मालके ॥ लाड भरे लाज भरे त्यागभरे लोभ भरे लाली भरे लोचनललौहैं नँदलालके ॥ ७९ ॥

फूल फूल फूलनके फूल फूल लिये तोड रंग रंग रंगीन की रंगत निहारी है ॥ सूत सूत सूत डोर रेशम रसान भरे गहक गहक गूंध गूधना निहारी है ॥ ग्वाल कवि सौरभ समुद्र ते निकाली मानो ललित ललाई कोमलाई बेकरारी है ॥ बानक विशाल वारों मोतिन की माल जाप ऐसी वनमाल नंदलाल हिये धारी है ॥ ८० ॥

पीरे वन बाग अनुराग भरे भाग भरे अंग अंग रंगकी उमंग मन पैठे हैं ॥ पीरे पीरे हिये पर पीरे ही वसन सने पीरे ही रतन तन अतन अमैठे हैं ॥ ग्वाल कवि पीरे गोले गेंदुवा पलंग पीरे पीरे पान चावें पीरे हार हार ऐंठे हैं ॥ है नई वसंत ह्वै वसंत रही राधिकाके दोऊ पां वसंत में वसंत बन बैठे हैं ॥ ८१ ॥

सुंदर पलास और सुंदर अँध्यारे वन फूली २ बेल जाकी छवि लागै खासी ॥ कोकिला की कूक तेरी बानी में पिछानी जात भौंरन की मांग आछी श्यामता प्रकासी ॥ वन उपवन में मयंक सी शोभा देत चांदनी प्रत्यक्ष मानो नीकी छवि रासी ॥ रीस तेरी करबे को आई है वसंतऋतु तू तो है वसंत ये वसंत तेरी दासी ॥ ८२ ॥

जसी रहै शशि छवि ज्यों मन चकोरनके अलि मति मालती

सुमन में वसी रहै ॥ बसी रहै गज मन रेवाकी चिर रेणुरुमोरन की रुचि घनाघन में बसी रहै ॥ बसी रहै श्रीपति सदन कमलाजू जैसे लोभी मन रुचि चित्तधन में बसी रहै ॥ बसी रहै त्योंहीं तेरे छवि की लगन कृष्ण मूरति तिहारी मेरे मन में बसी रहै ॥ ८३ ॥

सवैया ।

सोई है रास में नेसुक नाचिकै नाच नचाये किते सबको जिन ॥
सोई है री रसखान इहै मनुहारहू सूधे चितौत नहीं छिन ॥
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव विलोकि भयो वश हाहा करी तिन ॥
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोड़ो कनौड़ो करै किन ॥ ८४ ॥

वारहीं गोरस बेंचरी आज तू मायके मूड चढै कित मोडी ॥
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू यमुना भतरौंड़ लौं ओंडी ॥
एतेमें भेटत ही रसखान हैहैं आँखियां बिन काज कनौडी ॥
एरी बलाय ल्यों जायगी बाज अवै ब्रजराज सनेहकी डौंडी ॥ ८५ ॥

मोरकी चांद्रिका मोर लसैं दिन दूलह है आलि नंदको नंदन ॥
श्री वृषभानु सुता दुलही लही जोरी बनी विधिना सुखकंदन ॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो कछु दोऊ फँदे छवि प्रेमके फंदन ॥
जाहि विलोके सभी सुख पावत ये ब्रज जीवन दुःख निकंदन ॥ ८६ ॥

आज अचानक राधिका रूप निधान सों भेंट भई वनमाहीं ॥
देखत दीठ जुरी रसखान मिले भर अंक दिये गलबाहीं ॥
प्रेम पगी बतियां दुहुँघांकी दुहूँको लगी अतिही चित चाहीं ॥
मोहनी मंत्र वसीकर तंत्र हहा पियकी तियकी नहिं नाहीं ॥ ८७ ॥

लाडिली लाल लसैं लखिये अलि पुंजन कुंजन में छवि गाढी ॥
ऊजरी ज्यों बिजुरी सी जुरी चहुँ गूजरी केलिकला सम काढ़ी ॥
त्यों रसखान न जान परे सुखमा तिहुँ लोकन की अति बाढ़ी ॥
लालन बाललिये विहरैं छहरैं शिर मोर पखी ठग ठाढी ॥ ८८ ॥

दृग दूने खिचे रहैं कानन लौं लट आनन पै लहराय रही ॥
छक छैल छबीली छटा छहरायकै कौतुक कोटि देखाय रही ॥
झुक झूम झमाकन चूम अमी चहि चांदनी चंद दुराय रही ॥

मन भाय रही रसखान महा लखि मोहनकी तरसाय रही ॥ ८९ ॥
जात हुती यमुना जलको मनमोहन घेर लियो मग आयकै ॥
मोद भरे लपटाय गयो पट घूंघट टार दियो चित्त चाय कै ॥
और कहा रसखान कहों मुख चूमत वातन बात बनायकै ॥
कौन निभै कुल कान लिये हिये सांवरी मूरतिकी छवि छाय कै९०
मोहनके मनभाय गयो इक भाव सों ग्वालिन गोधन लायो ॥
ताते लग्यो चट चौहन सों हरवाय दै गात सों गात छुवायो ॥
रसखान लही यह चातुरता चुप चाप रही जबलौं घर आयो ॥
नैन नचाय चितै मुसकाय सु ओट ह्वै जाय अँगूठो दिखायो ॥९१॥

कवित्त ।

एरी आज काल्हि सब लोक लाज त्यागि दोऊ सीखेहैं सबै विधि सनेह सरसायबो ॥ यह रसखान दिन द्वै में बात फैल जैहै कहांलौ सयानी चंद हाथन छिपायबो ॥ आज हौं निहारचो बीर निपट कलिंदी तीर दोउन को दोउन सों मुख मुसकायबो । दोऊ परैं पैयां दोऊ लेत हैं बलैयां उन्हें भूल गईं गैयां उन्हें गागर उठायबो९२

सवैया ।

एक समै यमुना जलमें सब मज्जन हेत धसीं ब्रज गोरी ॥
त्यों रसखान गयो मनमोहन लैकर चीर कदंब की छोरी ॥
न्हाय जबै निकसीं वनिता चहुँ ओर चितै चित रोष करचो री ॥
हार हियो भर भावन सों पट दीने लला वचनामृत बोरी ॥ ९३ ॥
नागर छैल ह्वै गोकुल में मगरोकत संग सखा लिये तै है ॥
जाहि न ताहि दिखावत आँख सु कौन गई अब तोसों करैहै ॥
हाँसी में हार हरचो रसखान सुजोकहुँ नेकतगा टुटिजैहै ॥
एकहि मोतीके मोल लला सिगरे ब्रज हाटहि हाट विकैहै ॥ ९४ ॥
क्षीर जु चाहत चीर गहे अजू लेहु न केतक क्षीर अँचैहौ ॥
चाखन के हित माखन मांगत खाहु न माखन केतिक खैहौ ॥
जानत हौं जियकी रसखान सु काहेको एतिक बात बढ़ैहौ ॥
गोरसके मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेक न पैहौ ॥ ९५ ॥

दानी भये नये मांगत दान सुनै जु पै कंस तौ बांधे न जैहौ ॥
रोकत हौ मग में रसखान पसारत हाथ कछू नहिं पैहौ ॥
टूटै छरा बछरा अरु गोधन जोधन है सुसबै धर दैहौ ॥
जैहैं अभूषन काहू सखीको तौ मोल छला के ललान बिकैहौ ॥९६॥

भजन-राग विहाग ।

कर मन नंदनँदन को ध्यान। यह अवसर तोहिं फिरि न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ॥ घूंघरवारी अलकैं मुख पर कुंडल झलकत कान । नारायण अलसाने नयना झूमत रूप निधान ९७॥

राग जंगला ।

आज महरि घर देउरी बधाई । शुभ लक्षण सुंदर सुत जायो बड़ भागिन है यशुमति माई ॥ बृद्ध बधू सब जुर मिल आईं यथा योग कुल रीति कराई । दान मान विप्रनको दीनो मणि मुक्ता पट भूषण ताई ॥ मृगनयनी कल कोकिल बयनी कर शृंगार बैठीं अँगनाई ॥ लैलै नाम नंद यशुमतिको गावत गारी परम सुहाई । ध्वज पताक तोरन मणि जाला द्वारन बंदनवार बधाई । नारायण ब्रज आनँद छायो प्रगट भये वर कुँवर कन्हाई ॥ ९८ ॥

राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल दृग मींडत जगे लाल रूपके विशाल सिंधु गुणनके जहाज । कुण्डल सों उरझी माल मुख पर अलकन को जाल भई मैं निहाल निरख शोभाको समाज । आलस वश झुकत ग्रीव कबहूं अँगड़ाई लेत उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज ॥ नारायण यशुमति ढिग हौं तो गई बात कहन याही में भयरी एक पंथ दोऊ काज ॥ ९९ ॥

राग देश ।

कैसे जाउँ री वीर घट भरबे नीर। ठाढो यमुना तीर साँवरो अहीर मारै दृगों के तीर हरै सुध शरीर ॥ नित यही चित में चिंता समाज ब्रजराज सों कैसे बचैगी लाज जिया कांपै आज नहीं धरत

धीर। वाको रूप है कै कोऊ जादू यंत्र कैधों नारायण वशीकरण मंत्र कैधौं तंत्र कै पल ही में करै फकीर ॥ १०० ॥

राग झंझोटी।

जिन मग रोको नंदकिशोर। तोहिं उरझनकी बानपरीहै सांझ तकत नहिं भोर ॥ दूर लगत मोहिं सास रिसावै तुम्हैं छैल नित रार सुहावै इन कुचाल कछु हाथ न आवै गागरिया दई फोर। तुम अति चंचल छैल विहारी कैसे कूख रखे महतारी यह अचरज मोको है भारी घर घर तेरो शोर ॥ नारायण अब क्यों इतरावो भई सो भई न बातबढ़ावो ताही को तुम आँख दिखावो जो होय तेरी बँदोर ॥ १०१ ॥

राग बरवा।

आप भले गुणवान बनो तुम औरन को अति खोट बतावो ॥ माखनचोर कहावत हो नित तौऊ नहीं मन माहिं लजावो ॥ रत्न जडे आभूषण पहरे छाँछ लिये करको फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसैंगे प्रथम उतार इन्हें धर आवो ॥ १०२ ॥

राग मलार।

क्योंरे छैल मेरी मटुकिया पटकी। करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार बैयां झटकी ॥ अबहीं यशोदा ढिग पकर लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नटखट की ॥ बदलो लेउँगी न डरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसों अब अटकी ॥ १०३ ॥

राग खमाच।

प्रीतम तुम मोहिं प्राण ते प्यारो। जो तोहिं देख हिये सुख पावत सो बड़भागिन वारो ॥ तुम जीवन धन सरबस तुमहीं तुमहीं दृगनके तारो। जो तुमको पल भर न निहारूं दीखत जग अँधियारो॥ मोद बढ़ावनके कारण हम माननी रूपको धारो। नारायण हम दोऊ एक हैं फूल सुगंधि न न्यारो ॥ १०४ ॥

राग देश ।

सखि जबसों नँदलाल निहारे । तबही सों बौरी भई डोलूं इत उत गली गिरारे ॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुंघरारे । खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख समारे ॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे । मानो रूपसिंधु में खेलत मकरन के द्वै बारे ॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छबि शशि मनोज लख हारे । दशन पांति ज्यों मुतियनकी लर अधर सोहैं अरुणारे ॥ नाक बुलाक कुटिल बर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे । नारायण नख शिख शृंगार कर ठाढ़े भवनके द्वारे ॥ १०५ ॥

राग सोरठ ।

जाहि लगन लगै घनश्याम की । धरत कहूं पग परत हैं कितहूं भूल जाय सुध धाम की ॥ छबि निहार नहिं रहत सार कछु घरी पल निशि दिन याम की । जित मुँह उठै तितैही धावै सुरति न छाया घाम की ॥ कोई करो निंदा कोई स्तुति मेड़ तजी कुल ग्राम की । नारायण बौरी भई डोलै रहै न काहू काम की ॥ १०६ ॥

राग काफी ।

यह नैना रिझवार नयेरी । एक बेर लख रूप श्यामको तज घरबार फकीर भये री ॥ अब देखे बिन डारत आंसू युग समान पल बीत गयेरी । नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बयेरी ॥

राग भैरवी ।

अब मैं कैसे करूंरी बीर । हौं तो घनो चाहूं न करूं सुध मन तो धरत न धीर ॥ जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर । नारायण करगयो बावरी सुंदर श्याम शरीर ॥ १०८ ॥

राग परज ।

अब नंद भवन में चलोरी बीर । सांवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत है धीर ॥ दृग अति अकुलावें नहिं पलक लगावें पुनि उतही को धावें परी इनपै भीर । तनु सुरत बिसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारीको जानतपीर ॥१०९॥

राग खट ।

एक सखी उठ बड़े भोरही नंदरायके भवन गई । ताही समय जगे मनमोहन आलस वश मुख कांति नई ॥ नैंन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई । नारायण यह छवि लख ग्वालिन मानो भीतकी चित्र भई ॥ ११० ॥

देख सखी नव छैल छबीलो प्रात समै इतसों को आवै । कमल समान बड़े दृग जाके श्याम सलोना मृदु मुसक्यावै ॥ जाकी सुंद-रता जग वरणत मुख शोभा लख चंद्र लजावै । नारायण यह किधों वही है जो यशुमतिको कुँवर कहावै ॥ १११ ॥

राग विभास।

यही मोहन जिन मोही ब्रजबाला । गजगति चलत बजत पग नूपुर उर सोहै वनमाला ॥ कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत बोलत बचन रसाला । श्याम बरन लख लजत नील मणि पंकज मेघ तमाला ॥ नैन सैन कर हरत मैन मन मुख दुति चंद बिशाला । नारायण प्रगट्यो जादूगर नंदरायको लाला ॥ ११२ ॥

राग भैरव ।

आज सखी प्रातकाल मेरे गृह आये लाल भई मैं निहाल वाके रूपको निहाररी । पूरण शशि सम कपोल तिनपै कुंडल किलोल मधुर मधुर सुनके बोल रही ना सँभार री ॥ नाक में बुलाक सोहै चितवन चितहीको मोहै अद्भुत शृंगार चरण नूपुर झनकार री । नारायण हौं तो उठी मिलन इतसों आई लाज मनकी मनहीं में रही कर न सकी प्यार री ॥ ११३ ॥

राग आसावरी ।

सखी मेरे मनकी को जाने । कासों कहूं सुनै जो चितदे हितकी बात बखाने ॥ ऐसो को है अंतर्यामी तुरत पीर पहिंचाने । नारा-यण जो बीत रही है कब कोई सच माने ॥ ११४ ॥

राग सोरठ ।

मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होतहै और और । न

सुहात भवन तन अशन वसन बन हीको धावत दौर दौर ॥ नहीं धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर । कबहूं अँसुवन भर नारायण मग झाँकत डोलत पौर पौर ॥ ११५ ॥

राग झंझोटी ।

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी । तेरे काज घर बार त्याग के गलियन फिरत दिवानी ॥ लोक लाज कुल रीत प्रीत जग इनहूं को दियोपानी । नारायण अबतो हँस चितवो एरे रूप गुमानी ॥ ११६ ॥

राग काफी ।

लाल तेरे जादूभरे दोउ नैन । चितवन में चित वश कर लेवें मोहनी मंत्र है सैन ॥ अति बांके सुंदर मतवारे अनियारे छवि ऐन॥ नारायण इनके बिन देखे पल छिन परत न चैन ॥ ११७ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सखी तबसों चैन नहिं आवै । जबसों मैं निरख्यो नँदलाल गल मुतियन माल सुहावै ॥ घुँघरारी अलकैं मुख राजैं कोटि मदन दृग छवि लखि लाजैं कुंडल हलन चलन श्रवणन में बंशी मधुर बजावै । सुध बुध हरण वचन हँस बोलै चाल मराल इतै उत डोलै बजत चरन छम छननन नूपुर ताहू पर मुसक्यावै ॥ कर कंकन पहुँची मणि झलकैं देख स्वरूप लगत नहिं पलकैं नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावै ॥ ११८ ॥

सखि यह दृग वा रूप लुभाने । मचल रहे शशि मुख निरखन को जा विधि बाल अयाने॥लोक लाज कुल धर्म खिलौना दिये तऊ नहिं माने । नारायण सोऊ हन फोरे ऐसे निडर सयाने ॥ ११९ ॥

राग झंझोटी ।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री । ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको मो घायल पै नौन पुरी री ॥ नाजानूं अब सुध बुध मेरी कौन विपिन में जायदुरीरी । नारायण नहिं छूटत सजनी जाकी जासों प्रीति जुरीरी ॥

राग ईमनदादरा ।

लगन नहीं छूटे एरी बीर । तान देहु भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदवीर ॥ छिन में करत चतुरको बौरा नृपको करत फकीर । नारायण अब कठिन है बचबो बिंधे हिये दृग तीर ॥ १२१ ॥

मोपै कैसी यह मोहनी डारी । चितचोर छैल गिरिधारी ॥ गृह कारज में जी न लगतहै खान पान लगै खारी । निपट उदास रहत हूं जबसों सूरत देखी तिहारी ॥ सँगकी सखी देत मोहिं धीरज बचन कहत हितकारी । एक न लगत कही काहूकी कहत कहत सब हारी ॥ रही न लाज सकुच गुरुजन की तन मन सुरति बिसारी । नारायण मोहिं समझ बावरी हँसत सकल नर नारी ॥ १२२ ॥

राग सोरठ ।

सखीरी यह मेरो चित चोर । भृकुटी कुटिल बंक अवलोकन सुंदर नवल किशोर ॥ गैल चलत में सहजहिं निरखी या छलिया की ओर । नारायण जाने कहा कीयो इन लख नैनन कोर ॥ १२३ ॥

मोहन बसगये मेरे मनमें ॥ लोक लाज कुलकान छूट गई इनकी लगन लगन में । जित देखूं तितही यहि दीखै घर बाहर आँगन में । अंगअंग प्रति रोम रोम में छाय रहे सभ तन में ॥ कुंडल झलक कपोलन सोहै बाजूबंद भुजनमें । कंकन कलित ललित मणि माला नूपुर धुनि चरणन में ॥ चपल नयन भृकुटी बर बांकी ठाढे सघन लतन में । नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में

राग झँझोटी ।

ये दोऊ झूलेंरी मनकी मोहन हार । सजनी री इक साँवरे रंग की सँग वृषभानु कुमार ॥ सावन मास सुहावन भावन फूल रही फुलवार । रेशम डोर जड़ाऊ पटली सघन कदमकीडार ॥ गरजत घन चमकतहै चपला बूंदन परतफुहार । ठौर ठौर मिल मोर नचत हैं या सुखको नहिं पार ॥ भाँति भाँति के पक्षी बोलें शीतल चलत बयार । फूले कमल सरोवर माहीं भ्रमर करत गुंजार ॥ चहूं ओर

छाई हरियाली अद्भुत विपिन बहार । लिपट रहीं बर बेलि द्रुमन सों हरषत युगल निहार ॥ बरन बरनके लाल सोसनी सखियन किये शृँगार । विविध प्रकार बजावत बाजे गावत राग मलार ॥ चतुर सखी इक जान गई तब उर सों चीर उघार । हँस हँस परत लखावत औरन यह लंगर छलवार ॥ ललिता कहै इनैं नाहिं व्यापै तनक लाज संसार । पल पल माहिं स्वांग धर आवत कभू पुरुष कभू नार ॥ नारायण बोली प्रीतम सों कीरति प्राणअधार । वनिता वेष उतार आपनो रूप लियो निज धार ॥ १२५ ॥

राग मलार ।

सखी री यह सावन मनभावन । चातक मोर चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ॥ गरजत घन घननन घननन कर लगे मेह बर-सावन । नारायण भीजत मेरे गृह श्याम सुँदरको आवन ॥ १२६ ॥

राग जंगला ।

आवोरी यह शोभा निहारें । नंदलाल वृषभानु नंदनी झूल रहे गरबैयां डारैं ॥ परत फुहार विपिन हरियाली वन पक्षी मृदु वचन उचारें । अति निर्मल जल भरे सरोवर फूले कमल भ्रमर गुंजारें ॥ पवन झकोर उडत प्रिय को पट झट प्रीतम निज हाथ सँभारें॥नारायण इनकी या छवि पै आज सखी हम सरवस वारें॥१२७

राग कान्हरो ।

आज बंशीवट बरसत रंग । यमुना तीर समीर सुहावत बोलत विविध विहंग ॥ कीरति कुँवरि लाल नँदजी को झूल रहे इक संग । रूपसिंधु के अंग अंग ते छविकी उठत तरंग । बजत बीन ताऊस सरंगी बंशी झांझ मृदंग । नारायण गावत्त मिल सजनी हिय में बढ़त उमंग ॥ १२८ ॥

राग मलार ।

सघन बन झूलें दोउ सुकुमार । हिय हरषत छवि निरख परस्पर छिन छिन बाढ़त प्यार ॥ कबहुँ मुदित मन तान लेत मिल होत सखी बलिहार । नारायण द्रुम बेलि सुहावन हरो कियो शृंगार १२९॥

राग काफी ।

गोरी कुंजन में आज होरी मची तू कहा बैठी मांग सँवारे । मेरी कही जो सांच न मानै सुनलै डफ धुधकारे ॥ उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहिं पुकारे । नारायण तव ब्रात है तेरी तू जीतै पिय हारे ॥ १३० ॥

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर । हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अबीर ॥ चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीज रहे तनु चीर । जनु घन दामिनि रूप धरे हैं गोरे श्याम शरीर ॥ बजत अनेक भांति मृदु बाजे होय रही अति भीर । नारायण या सुख निरखे बिन कौन धरै मन धीर १३१ ॥

देख सखी वृषभानु किशोरी । निज प्रीतमको रूप निहारत जाविध चंद चकोरी ॥ भलौ फाग खेलन को निकसी बीच भई चित चोरी । नारायण अटके दृगछवि में भूल गई सुधि होरी ॥ १३२ ॥

राग झंझोटी ।

आज श्याम मग धूम मचाई । धूम मचाई करत ढिठाई ॥ बिन रँग डारे देत नहिं निकसन मैं तेरी सों देखके आई । तू कहूं भूलके मत उत जैयो जाने कहा वह करै लँगराई ॥ नारायण होरीके दिनन में अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ १३३ ॥

राग काफी ।

मति मारो पिचकारी श्याम अब देउँगी मैं गारी । भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदर बिगरैगी न्यारी ॥ देखेगी सास रिसायगी मोपै संग की ऐसी हैं दारी ॥ हँसैंगी दैदै तारी । घाट बाट सबसों अटकत हो लेलै रारि उधारी ॥ कहांलों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी ॥ जानत करतूत तिहारी ॥ मूठ अबीर न डारो दृगन में दूखेगी आंख हमारी । नारायण न बहुत इतरावो छांडो डगर गिरिधारी ॥ नये भये तुमहीं खिलारी ॥ १३४ ॥

राग होरी काफी ।

होरी हो ब्रजराज दुलारे । अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग रे ह्र बापन वारे ॥ कै तौ निकसके होरी खेलो कै मुख सों कहो हारे ॥ जोर कर आगे हमारे ॥ बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फागहिं फाग पुकारे । आज देखियो सैल फागकी पिचकारिन के फुहारे ॥ चलें जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरारे । नारायण सब खबर परैगी नेक तो आयके द्वारे । सुरति अपनी तू दिखारे ॥ १३५ ॥

राग कान्हरा ।

नंदनंदन के ऐसे नैन । अति छबिभरे नागके छौना तुरत डसें कर सैन ॥ इन सम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नाहिं कोई एक दृष्टि में मन हर लेवें कर देवें बेचेन ॥ चितवन में घायल कर डारें इनपै कोटि बाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकैं श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावन हारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे सुखदैन ॥ १३६ ॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुंदर कोहै । मैं अपने अनुमान कहूं अब उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चंद हूं जोहै । नारायण जो एक दृष्टि में सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १३७ ॥

राग जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं तो अपने बड़भाग मनाऊं । सांवरी सूरत नैन बिशाला चंद वदन गल मुतियन माला रूप मनोहर चाल मराला सुंदरता पर बलि बलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै मो बिरहन को दरश दिखावै बैठ निकट मृदु वचन सुनावै मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी कब लैंगे सुधआय हमारी जबमोसों वो कैहेंगे प्यारी तब मैंफूली अँग न समाऊं॥

राग नाइकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास बिहारी । जैसोइ बृंदा बिपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहुँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढ़ावन शीतल मंद सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित ब्रज बाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । बजत अनेक भांति मृदु बाजे परम प्रबीन बजावन वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाई लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत हैं शीश तें मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलग ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभ ते सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी १३९ ॥

राग भैरव ।

बंशीबट जमुना तट निरतत बनवारी । अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चंद वदन श्याम रसिक मुकुट चंद शीश लसत चंद्र मुखी प्रिया शरद चांदकी उजारी । बाजे बाजत बिशाल गति मति सुर अधिक ताल राग रंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिका को वेष ठान निरख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया ।

आज सखी सुपनों मैं देख्यो रैन । जबहीं सों जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोवन छबि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुंदर बांके नैन ॥ मैं उनसों कछु कहन न पाई सुने न उनके बैन । नारायण तब आंख उघर गई ना कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया ।

मान की औधिहै आधी घरी अरु जो रसखानि डरै डर के डर ॥
तोरिये नेह न छोडिये पां परों ऐसे कटाच्छ महा हियरा हर ॥
लाल गुपाल कोहाल बिलोक री नेक छुवै किन दै कर सों कर ॥

ना कहबे पर वारत प्राण कहा लख वारिहै हां कहिबे पर ॥ १४२ ॥
वह सांवरो नंद को छैल अली अबतौ अति ही इतरान लगो ॥
नित घाटन बाटन कुंजन में मोहिं देखतही नियरान लगो ॥
रसखान बखान कहा कहिये तक सैनन सों मुसकान लगो ॥
तिरछी बरछी सम मारत है दृग बान कमान सु कान लगो १४३ ॥
आई सबै ब्रज गोप लली ठिठकी ह्वै गली यमुना जल न्हानें ॥
औचक आय मिले रसखान बजावत वेणु सुनावत तानें ॥
हाहा करी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसानें ॥
घूमैं दिमाने अमाने चकोर से ओर से दोऊ चलैं दृग बानें ॥ १४४ ॥
मोर पँखा शिर ऊपर राखि कै गुंज की माल हिये पहरौंगी ॥
ओढ़ पितांबर लै लकुटी बन गावत गोधन संग फिरौंगी ॥
भावतो मोहिं वही रसखान सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ॥
ये मुरली मुरलीधरकी अधरान धरी अधरान धरौंगी ॥ १४५ ॥
को रिझवारिन सों रसखान कहै मुकतान सों मांग भरौंगी ॥
कोऊ कहै गहनो अँग अंग दूकूल सुगंध सन्यो पहरौंगी ॥
तू नकहै यों कहै तौ कहौं हूं कहूं न कहूं तेरे पाँय परौंगी ॥
देखहु याहि सुफूलकी माल यशोमति लाल निहाल करौंगी ॥१४६॥
लीनें अबीर भरे पिचका रसखान खरो बहु भाव भरौ जू ॥
मार से गोपकुमार कुमार वे देखत ध्यान टरो न टरौ जू ॥
पूरब पुण्यन दांव परयो अब राज करो उठ काज करौ जू ॥
अंक भरौ निरशंक उन्हैं यहि पाख पतिब्रत ताख धरोजू ॥ १४७ ॥

कवित्त ।

गोकुलको ग्वाल एक चौमुँह की ग्वालिन सों चाचरि रचाइ अति धूमहिं मचायगो । हियो हुलसाय रसखान तान गाय वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल लोचन नचाय उर पुर में समायगो ॥ सासहि तचाय गोरी नंदहि नचाय गोरी बैरिन सँचाय गोरी मोहिं सकुचायगो १४८॥

सवैया ।

एक समै इक सुंदरीको ब्रज जीवन खेलत दीठ परचो है ॥
बाल प्रवीन प्रवीनता कै सरकाय कै कांध लै चीर धरचो है ॥
यों रस ही रस ही रसखान सखी अपनो मन भायो करचो है ॥
नंदके लाडिले ढांक दे शीश हहा मेरो गोरस हाथ भरचो है॥१४९॥
दूर ते आय दुरे ही दिखाय अटा चढ़ जाय गह्यो तहँ बारो ॥
चित्त कहूं चितवै कितहूं हित और सों चाहि करै चखचारो ॥
रसखान कहै इहि बीच अचानक जाय सिढी चढ सास पुकारो ॥
सूख गई सुकुमार हियो हनि सैनन सों कह्यो कान्ह सिधारो॥१५०॥

कवित्त ।

आपनो सो ढोटा हम सबहीको जानत हैं दोऊ प्राणी सबही के काज नित धावहीं ॥ ते तो रसखान सब दूर ते तमासो देखैं तरनि तनूजाके निकट हू न आवहीं ॥ आन दिन बात अनहितुन की कहौं कहा हितू जेजे आये तेऊ लोचन दुरावहीं ॥ कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय मेरेबनमालीको न काली तेछुडावहीं॥

सवैया ।

लोग कहैं ब्रजके रसखान अनंदित नंद यशोमति जू पर ॥
छोहरा आज नयो जनम्यो तुम सों कोऊ भाग भरचो नहीं भू पर ॥
बारक दाम सँवार करौ घनी पानी पियो सु उतार ललू पर ॥
नाचत रावरो लाल गुपाल हो काल से व्याल कपालके ऊपर १५२
कंसके कोपकी फैल गई जबहीं ब्रज मंडल बीच पुकार है ॥
आय गयो तबहीं कछनी कसिकै नट नागर नंदकुमार है ॥
द्विरदको रद खैंच लियो रसखान तबै मन आयो विचार है ॥
लागी कुठौर लई लख ऐंच कलंक तमाल ते कीरति डार है ॥ १५३॥
लाजके लेप चढायकै अंग पचीं सब सीखको मंत्र सुनाय कै ॥
गारुड़ ह्वै ब्रज लोग थक्यो कर औषध बासुक सौंह दिवाय कै ॥
ऊधो सों को रसखान कहै जिन चित्त धरौ तुम एते उपाय कै ॥

कारे विसार को चाहै उतारचो अरी विश बावरो राख लगायकै १५४॥
सारकी सारी सो भारी लगै धारि हैं कहां शीश बघंबर दैया ॥
दासी जु सीख दई सुदई पै लई गह क्यों रसखान कन्हैया ॥
योग गयो कुबजाकी कलान में री कब ऐहै यशोमति छैया ॥
हाहा न ऊधो कुढ़ाय हमैं अबहीं कह दे ब्रज बाजै बधैया ॥ १५५ ॥
जानत हों न कछू हम ह्यां उन ह्वां पढ़ि मंत्र कहा धौं दयो है ॥
सांची कहैं जिय में निज जान कै जानती हो जस जैसो लयो है ॥
रसखान यहै सुनकै गुनकै हियरा सत टूक ह्वै फाट गयो है ॥
लोग लुगाई सबै ब्रज माहिं कहैं हरि चेरीको चेरो भयो है ॥ १५६ ॥
जानैं कहा हम मूढ़ सबै समझी न तबै जबहीं बन आई ॥
सोच रहीं मनही मन में अब कीजे कहा बतियां कछु भाई ॥
नीचो भयो ब्रज लोकको शीश भली न भई रसखान दुहाई ॥
चेरीको चेटक देखहु री हरि चेरी कियो धौं कहा पढ़ आई॥१५७॥
काहूको माई कहा कहिये सहिये सु जोई रसखान सहावैं ॥
नेम कहा जब प्रेम कियो अब नाचिये सोई जु नाचनचावैं ॥
चाहत हैं हम और कहा सखि क्यों हूं कहूं पिय देखन पावैं ॥
चेरिहि सों जु गुपाल रस्यो तौ चलोरी सबै मिल चेरी कहावैं॥१५८॥

कवित्त ।

ग्वालनके संग जैबो ऐबो औ चरैबो गाय हेरी तान गैबो सोचि नैन फरकत हैं ॥ ह्यांके गज मोती माल वारों गुंजमालन पै कुंज सुध आये हाय प्राण धरकत हैं ॥ गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नहिं भावैं ये महल जे जडित मरकतहैं ॥ मंदर ते ऊंचे कहा मंदिर हैं द्वारकाके ब्रजके खरक मेरे हिये खरकत हैं ॥ १५९ ॥

सवैया ।

मोहन जूके वियोग की ताप मलीन महा द्युति देह तियाकी ॥
पंकज सो मुख गो मुरझाय लगैं लपटैं विरहागि हियाकी ॥
ऐसे में आवत कान्ह सुने तुलसी सुतनी तरकी अँगियाकी ॥

यों जग ज्योति उठी तनुकी उसकाय दई मनो बाती दिया की॥ १६०॥
इक ओर किरीट लसै दुसरी दिशि नागनके गण गाजत री ॥
मुरली मधुरी धुनि ओंठन पै तुरही कलनाद सों बाजत री ॥
रसखान पितंबर एक कँधा पर एक बघंबर छाजत री ॥
अरी देखहु संगम लै बुड़की निकसे वर वेष विराजत री ॥ १६१ ॥
यह देख धतूरेके पात चबात सुगात में धूरि लगावत है ॥
चहुँ ओर जटा अटकी लटकैं शुभ शीश फनी फहरावत है ॥
रसखान जोई चितवै चित दै तिहिके दुख द्वंद्व भजावत है ॥
गज खाल कपालकी माल धरे हरि गाल बजावत आवत है १६२॥
वैद की ओषधि खात कछू न करै कछु संयम री सुन मोसे ॥
तेराइ पानी पियैं रसखानि सजीवन जानि लहै सुख तोसे ॥
एरी सुधामयी भागीरथी सब पथ्य कुपथ्य बनैं तोहिं पोसे ॥
आक धतूर चबातफिरै विष खात फिरै शिव तेरे भरोसे ॥ १६३ ॥
सुनिये सबकी कहिये न कछू रहिये इमि या भव बागर में ॥
करिये व्रत नेम सचाई लिये जिनते तरिये भवसागर में ॥
मिलिये सबसों दुरभाव विना रहिये सतसंग उजागर में ॥
रसखान गुविंदहि यों भजिये जिमि नागरिको चित गागर में १६४॥
प्राण वही जु रहैं रिझ वा पर रूप वही जिहिं वाहि रिझायो ॥
शीश वही जिहिं वे परसे पद देह वही जिन वा परसायो ॥
दूध वही जु दुहायो री वाही ने सोई दही जु वही ढरकायो ॥
और कहांलौं कहूं रसखान सुभाव वही जु वही मन भायो ॥ १६५ ॥
कंचन मंदिर ऊंचे बनायकै माणिक लाय सदा झमकावै ॥
प्रातहिं ते सगरी नगरी गजमोतिन हीकी तुलानि तुलावै ॥
पालै प्रजानि प्रजापति सों बन संपति सों मघवाहि लजावै ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान जु साँवरे ग्वार सों नेह न लावै ॥१६६॥
संपति सों सकुचावै कुवेरहि रूप सों देत चुनौति अनंगहि ॥
भोग लखे ललचाय पुरंदर योग में गंग लई धरि मंगहि ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान रसै रसना जिहिं मुक्ति तरंगहि ॥

जो चित वाके न रंग रँग्यो जु रह्यो रँगि राधिका रानीके रंगहि १६७
द्रौपदी औ गणिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो ॥
गौतम गेहनी कैसी तरी प्रहलाद को कैसो हरचो दुख भारो ॥
काहेको सोच करै रसखान कहा करिहै यमराज विचारो ॥
कौनकी शंकपरी है जु माखन चाखन हारो है राखनहारो ॥ १६८ ॥
देश विदेशके देखे नरेश न रीझको कोऊ न बूझ करैगो ॥
ताते तिन्हैं तज जाउँ गिरौं गुण को गुण औगुण गांठ परैगो ॥
बांसुरी वारो बड़ो रिझवार है जो कहुँ नेसुक ढार ढरैगो ॥
सुंदर साँवरो छैल अहीरको पीर हमारे हिये की हरैगो ॥१६९॥
शेष सुरेश दिनेश गणेश प्रजेश धनेश महेश मनाओ ॥
कोऊ भवानी भजो मनकी सब आश सबै विधि जाय पुराओ ॥
कोऊ रमा भजि लेहु महाधन कोऊ कहूं मन वांछित पाओ ॥
है रसखान मेरे वही साधन और त्रिलोक रहौ कि नशाओ ॥ १७० ॥
वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पुरको तजि डारौं ॥
आठ हूं सिद्धि नवो निधिको सुख नंदकि गाय चराय बिसारौं ॥
रसखान कबै इन नैनन सों ब्रजके वन बाग तड़ाग निहारौं ॥
कोटिन हूं कलधौंतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारौं ॥ १७१ ॥
जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ॥
मो करनी कर नीकी करैं जुपै कुंज कुटीरन देहु बुहारन ॥
सिद्धि समृद्धि सबै रसखान लहौं ब्रजरेणुका अंग सवाँरन ॥
खान निवास मिलै तो सही वहि कालिंदी कूल कदंबकी डारन ॥१७२॥

कवित्त ।

कहा रसखान सुख संपति सुमार महा कहा महा योगी ह्वै लगाये अंग छारको ॥ कहा साधे पंचानल कहा सोये बीच जल कहा जीत लीने राज सिंधु वार पारको ॥ जप बार बार तप संयम अपार ब्रत तीरथ हजार अरे बूझत लवार को ॥ सोई है गँवार जिहि कीनो नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार यार नंदके कुमार को ॥ १७३ ॥

कंचनके मंदिरन दीठ ठहरात नाहिं सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सों ॥ और प्रभुताई सब कहांलौं बखानौं प्रतिहारिनकी भीर भूप टरत न द्वारे सों ॥ गंगाजू में न्हाय मुकताहल लुटाय वेद बीस बार गाय ध्यान कीजत सकारे सों ॥ ऐसेही भये तौ कहा कीन्हो रसखान जुपै चित्त दै न कीन्ही प्रीति पीतपटवारे सों ॥ १७४ ॥

श्रीरामचन्द्रजीके कवित्त

सवैया।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदकै भूपति लै निकसे ॥
अवलोकि हौं सोच विमोचन को ठगि सी रही जो न ठगे धिक से ॥
तुलसी मन रंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातकसे ॥
सजनी शशि में सम शील उभै नवनील सरोरुह से विकसे ॥१७५॥
पग नूपुर औ पहुँची कर कंजन मंजु बनी मणिमाल हिये ॥
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ॥
अरबिंद सों आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये ॥
मनमों न बस्यो ऐसो बालक जो तुलसी जगमें फल कौनजिये॥१७६॥
तनु की दुति श्याम सरोरुह लोचन कंज कि मंजुलताईहरैं ॥
अति सुंदर सोहत धूर भरे छबि भूरि अनंगकि दूर धरैं ॥
दमकैं दतियां दुति दामिनि ज्यों किलकैं कल बाल बिनोद करैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमन मंदिर में विहरैं ॥ १७७ ॥
कबहूं शशि मांगत आरि करैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं ॥
कबहूं करताल बजाय के नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिस आइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जिहिं लागि अरैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिर में विहरैं ॥ १७८ ॥
पद कंजन मंजु बनी पनहीं धनुहीं शर पंकज पाणि लिये ॥
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयू तट चौहट हाट हिये ॥
तुलसी ऐसे बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥
नर वे खर शूकर श्वान समान कहौ जग में फल कौन जिये ॥ १७९ ॥

सरयू वर तीरहीं तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीर सबै ॥
धनुहीं कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फबै ॥
तुलसी तेहि औसर लावणिता दश चार नौ तीन एकीस सबै ॥
मति भारति पंगु भई जो निहार विचार फिरी उपमा न फबै ॥ १८० ॥

कवित्त ।

लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सखिन सों प्रेमपथ पालि री ॥ बालक नृपाल जूके ख्याल ही पिनाक तोरचो मंडलीक मंडली प्रताप दाप दालरी ॥ जनकको सियाको हमारो तेरो तुलसीको सबको भावतो ह्वैहै मैं जो कह्यो काल री ॥ कौशला की कोखि परतोषि तनु वारिये री राय दशरत्थकी बलाय लीजे आलि री ॥ १८१ ॥

दूब दधि रोचना कनक थार भर भर आरती सँवार वर नारि चलीं गावतीं ॥ लीने जयमाल कर कंज सोहै जानकी के पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं ॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन झांकती झरोखे लागी शोभा रानी पावतीं ॥ मनहुँ चकोरीचारु बैठीं निज निज नीड़ चंद की किरन पीवैं पलको न लावतीं॥१८२॥

भले भूप कहत भले भदेश भूपन सों लोक लख बोलिये पुनीत रीतमारखी॥जगदंबा जानकी जगतपितु रामचंद्र जानजियजोहोजोन लागै मुखकारखी॥ देखेहैं अनेकब्याह सुनेहैं पुराण वेद बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारखी ॥ ऐसे सम समधी समाज न विराजमान राम से न वर दुलही न सीय सारखी ॥ १८३ ॥

सवैया ।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं ॥
गावत गीत सबै मिल सुंदरि वेद युवा जुरि विप्र पढाहीं ॥
रामको रूप निहारत जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥
याते सबै सुधि भूल गई कर टेक रही पल टारत नाहीं ॥ १८४ ॥
गर्भ के अर्भक काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥

सोइ हौं बूझत राजसभा धनुके दल हौं दल हौं बल ताको ॥
लघु आनन उत्तर देत बड़े लरि है मरि है करि है कछु साको ॥
गोरो गरूर गुमान भर्यो कहो कौशिक छोटो सो ढोटो है काको ॥

कवित्त।

मख राखबेके काज राज मेरे संगदये दले यातुधान जे जितैया विबुधेश के ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरि भारी लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड बाहु दंड बल चंडीशको दंड खंड्यो व्याही जानकी नरेश जीते देश देश के ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ नाम राम लषण कुमार कोशलेश के ॥ १८६ ॥

सवैया।

काल कराल नृपालनके धनु भंग सुने फरशा लिये धाये ॥
लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखि दिखाये ॥
धीर शिरोमणि वीर बड़े विनयी वियजी रघुनाथ सुहाये ॥
लायक हौ भृगुनायक सों धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाये १८७॥
कीरके कागर ज्यों नृप चीर विभूषण उप्पम अंगनि पाई ॥
औध तजी मग वासके रूख ज्यों पंथ के साथ में लोग लुगाई ॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्म क्रिया धर देह सुहाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊ की नाईं १८८
कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तज नीर ज्यों काई ॥
मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमान सुभाय सनेह सगाई ॥
संग सुभामिनि भाय भलो दिन है जनु अवधहु ते पहुनाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाईं॥१८९॥

कवित्त।

सिथिल सनेह कहैं कौशला सुमित्राजू सों मैं न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है। कहैं मोहिं मैया मैं न मैया भरत की बलैयां लैहों भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी काय मन बानी हूं न जानके मतेई है । बाम विधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम ताकोछल छुरी कोहकुलिश लैटेई है॥

कीजै कहा जीजै जु सुमित्रा परि पांय कहै तुलसी सहावै विधि सोई सहियत है । रावरो सुभाव राम जन्मतहीते जानियत भरत की मात को कीबो सो चहियत है ॥ जाई राज घर व्याह आई राज घर महाराज पूत याहूं पै न सुख लहियत है । देह सुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो ताहु पर चाहु बिन राहु गहियत है १९१

सवैया ।

नाम अजामिलसे खल कोटि अपार नदी भव बूड़त काढे ॥
जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होत अजा खुर वारिधि बाढे ॥
तुलसी जेहिके पद पंकज ते प्रगटी तटनी जो हरै अघ गाढे ॥
ते प्रभु या सरिता तरबे कहँ मांगत नाव कनारे ह्वै ठाढे ॥१९२॥
यहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटि लों जल थाह देखाइहौं जू ॥
परसे पग धूरि तरै तरनी घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौं जू ॥
बरु मारिये मोहिं बिना पग धोये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू १९३
रावरे दोष न पाँयनको पग धूरिको भूरि प्रभाउ महा है ॥
पाहन ते बलवान न काठको कोमल है जल खाइ रहा है ॥
तुलसी सुन केवट के वर वैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है ॥
पावन पाँय पखारिकै नाउ चढाय हौं आयसु होत कहा है॥१९४॥

कवित्त ।

पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवटकी जाति कछु वेद न पढाय हौं । सब परिवार मेरो याही लगि राजा जी हौं दीन वित्त हीन कैसे दूसरी गढ़ायहौं ॥ गौतमकी घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभुसों निषाद ह्वैकै वाद ना बढायहौं । तुलसीके ईश राम रावरे सों सांची कहौं बिना पग धोये नाथ नाव न चढायहौं१९५

जिनको पुनीत वारि सिरसि वहै पुरारि त्रिपथ गामिनी यश वेद कहैं गाय कै । जिनको योगींद्र मुनि बृंद देव देह दम करत विविध योग जप मन लायकै ॥ तुलसी जिनकी धूरि परसि अहल्या

तरी गौतम सिधारे गृह गौनो सो लिवायकै। तेई पायँ पायके चढ़ाय नाव धोये विनु ख्वैहौं न पठावनीकै ह्वैहौं न हँसायकै १९६॥

प्रभु रुख पायकै बोलाय बाल घरनीको वंदि कै चरण चहुँ दिशि बैठे घेर घेर॥ छोटो सो कठौता भर आन पानी गंगाजूको धोय पाँय पियत पुनीत वारि फेर फेर॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर बरषैं सुमन जय जय कहैं टेर टेर॥ विवुध सनेह सानी वानी असयानीसुन हँसे राघो जानकी लषण तन हेर हेर१९७

सवैया।

जलको गये लक्ष्मणहैं लरिका परखौ पिय छाहिं घरीक ह्वै ठाढ़े॥
पोंछि पसेउ बयारि करों अरु पांय पखारिहौं भूभुर डाढ़े॥
तुलसीरघुवीर प्रिया श्रम जानिकै बैठि विलंब सों कंटक काढ़े॥
जानकी नाहको नेह लख्यो पुलकी तनु वारि विलोचन बाढ़े१९८॥
ठाढ़े हैं नौ द्रुम डार गहे धनु कांधे धरे करसायक लै॥
विकटी भ्रुकुटी बड़री अँखियां अनमोल कपोलनकी छबि है॥
तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड़ डार धौं प्राण निछावरि कै॥
श्रम सीकर साँवरि देह लसै मनो रारि महा तम तारक मैं॥१९९॥

कवित्त।

जलज नयन जलजानन जटा हैं शिर यौवन उमंग अंग उदित उदार हैं॥ साँवरे गोरेके बीच भामिनी सुदामिनी सी मुनि पट धरे उर फूलन के हार हैं॥ करन शरासन शिलीमुख निषंग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं॥ तुलसी विलोकके तिलोक के तिलक तीन रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्रसार हैं॥२००॥

आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे आछे मुनि वेष धरे लाजत अनंग है। वान विशिखासन वसन वनहीं के कटि कसेहैं बनाय नीके राजत निषंग है॥ साथ निशि नाथमुखी पाथ नाथ नंदनी सी तुलसी विलोके चित लाई लेत संग है॥ आनँद उमंग मन यौवन उमंग तनु रूपकी उमंग उमगत अंग अंग है॥२०१॥

सुंदर बदन सरसीरुह सोहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनके ॥ अंशन शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनि पट लूटक पटनके ॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटके विधि विरचैं वरूथ विद्युत छटनके । गोरेको वरन देखे सोनो न सलोनो लागे सांवरो विलोके गर्व घटत घटन के ॥ २०२ ॥

वल्कल वसन धनु तान पाणि तूण कटि रूपके निधान घन दामिनी वरन हैं ॥ तुलसी सुतीय संग सहज सोहाये अंग नवल कमलहूं ते कोमल चरन हैं ॥ औरै सो वसंत औरै रति औरै रतिपति मूरति विलोके तन मनके हरन हैं ॥ तापस वेषै बनाये पथिक पंथै सोहाये चले लोक लोचनन सुफल करन हैं ॥ २०३ ॥

सवैया ।

वनिता बनि श्यामल गोरेके बीच विलोकहुरी सखि मोहिं सीहै ॥
मग योग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पद पंकज छ्वै ॥
तुलसी सुन ग्रामवधू विथकीं पुलकी तनु औ चले लोचन च्वै ॥
सब भांति मनोहर मोहन रूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै ॥ २०४ ॥
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैन लियो है ॥
बान कमान निषंग कसे शिर सोहैं जटा मुनि वेष कियो है ॥
संग लिये विधु वेनी वधू रतिको जेहिं रंचक रूप दियो है ॥
पाँयन तौ पनहीं न पयादेहि क्यों चलिहैं सकुचात हियो है ॥२०५॥
रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहन हूं ते कठोर हियो है ॥
राजहुँ काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जिहिं कान कियोहै ॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है ॥
आँखिन में सखि राखबे योग इन्हें किमिकै वनवास दियो है॥२०६॥
शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौहैं ॥
तूण शरासन बाण धरे तुलसी वन मारग में सुठि सोहैं ॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं ॥
पूछत ग्राम वधू सिय सों कहो सांवरो सो सखि रावरोको हैं २०७॥
सुन सुंदर वैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली ॥

तिरछे कर नैन दै सैन तिन्हैं समुझाय कछू मुसकाय चली ॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली ॥
अनुराग तड़ाग में भानु उदै विकसी मानौं मंजुल कंज कली२०८॥
धर धीर कहैं चल देखिय जाय जहां सजनी रजनी रहि हैं ॥
कहि हैं जग पोच न सोच कछू फल लोचन आपन तौ लहिहैं ॥
सुख पाइ हैं कान सुने बतियां कल आपुस में कछु पै कहिहैं ॥
तुलसी अति प्रेम लखी पलकैं पुलकी लखि राम हिये महि हैं २०९ ॥
पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटिमनोज लजाये ॥
वर बाण शरासन शीश जटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सतभावहुते तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ॥
यहि मारग आज किशोरवधू विधु बैनी समेत सुभाव सिधाये२१०॥
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु मनोज शरासन सी बनी भौंहें ॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥
तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिरछौंहैं ॥
केहि भाँति कहौं सजनी तोहि सों मृदु मूरति द्वैनिवसी मन मोहैं२११
शर चारिक चारु बनाय कसे कटि पाणि शरासन सायक लै ॥
वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छवि सो वरणै किमिकै ॥
अवलोक अलौकिक रूप मृगी मृग चौंक चकै चितवै चित दै ॥
न डगैं न भगैं जिय जानि सिलीमुख पंच धरे रतिनाहक है २१२ ॥
पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठहैं राम सुभाय सुहाये ॥
सोहैं प्रिया प्रिय बंधु लसै तुलसी सब अंग घने छबि छाये ॥
देख मृगा मृगनैनी कहैं प्रिय बैन ते प्रीतमके मन भाये ॥
हेम कुरंग के संग शरासन सायक लै रघुनायक धाये ॥ २१३ ॥

कवित्त।

देख ज्वाला जाल हाहाकार दशकंध सुन कह्यो धरो धरो धाये बीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं ॥ तुलसी समिध सौज लंक यज्ञ कुंड लखि यातुधान पुंगीफल यव तिल धान हैं ॥ स्रुवा सो लं

बल मूल प्रतिकूल हवि स्वाहा महा हांक हांक हनै हनुमान हैं२१४।
बडो विकराल वेख देख सुन सिंहनाद उठ्यो मेघनाद सविषाद कहै रावनो ॥ वेग जितो मारुत प्रताप मार्तण्ड कोटि कालऊँ करालता बड़ाई जितो बावनो ॥ तुलसी सयाने यातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सोतो प्रभु अबै आवनो ॥ काहेकी कुशल रोषे राम बामदेव हूं की विषम बली सों बादि वैरको बढ़ावनो ॥ २१५ ॥

हाट बाट कोट ओट अटन अगार पौंर खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काहू व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोक चले भागि हैं । बालधी फिरावै बार बार झहरावै झरैं बूंदिया सी लंक पघिलाई पागि पागि हैं । तुलसी विलोक अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूं के कपि सों निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आय हनुमान प्राण हेतु अंकमालदेत लेत पग धूरि एक चूंबत लँगूर है। एक बूझें बार बार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है। एक भूखे जान आगे आन कंद मूलफल एक पूजे बाहु बल मूल तोर फूल है ॥ एक कहैं तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपानाथ नाथ सीता नाथ सानुकूल है ॥ २१७ ॥

सवैया ।

विश्व जयी भृगुनायक से बिनु हाथ भये हनि हाथ हजारी ॥
बातुल मातुलकी न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूं तौ भलो रघुनाथ मिलैं फिरि बूझिहै को गज कौन गजारी ॥
कीर्ति बड़ो करतूति बड़ो जन बात बड़ो सो बड़ोई बजारी ॥२१८॥

कबित्त ।

दूषण विराध खर त्रिशिरा कबंध बधे तालहू विशाल बेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिप वश भयो वीर बांकुरो सो तोहूं है विदित बल महा बली बालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शंक मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को ॥ वीर

करि केसरी कुठार पाणि मानी हार तेरी कहा चली बूड़े तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

सवैया।

तोसों कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिये बौरे ॥
बालिबली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई तोहिं कौन तो लै मिलु सीय चहै सुख जौरे ॥
रामके रोष न राखि सकैं तुलसी विधि श्रीपति शंकर सौरे ॥ २२० ॥
तू रजनीचर नाथ महा रघुनाथके सेवकको जन हौं ॥
बलवान है श्वान गली अपनी तोहिं लाजन गाल बजावत सो हौं ॥
बीस भुजा दशशीश हरौं न डरौं प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेत में केहरी ज्यों गजराज दलौं दल बालिको बालक तो हौं॥२२१॥
कौशल राजके काज हौं आज त्रिकूट उपारि लै वारिधबोरौं ॥
त्यों भुजदंड द्वै अंड कटाह चपेटके चोट चटाक दै फोरौं ॥
आयसु भंगते जो न डरों सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥
बालिको बालक तौ तुलसी दशहूं मुखके रण में रद तोरौं॥२२२॥
अति कोप सों रोप्यो है पाउँ सभा सब लंक सशंकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से वीर प्रचारके हार निशाचर सैन पचा ॥
न टरै पग मेरुहुते गरुभो सो मनौ महि संग विरंचि रचा ॥
तुलसी सब शूर सराहत हैं जगमें बल शालि है बालि बचा ॥ २२३॥

झूलना।

कनक गिरि शृंग चढ़ देख मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहसभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जेहि देख बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कौशलधनी ख्याल ही बालि बल शालि जीता ॥ रे कंत तृण दंत गहि शरन श्रीराम कहि अजहुँ यहि भाँति लै सौंप सीता ॥ २२४ ॥

रे नीच मारीच बिचलाय हति ताड़का भंजि शिवचाप सुख सबहिं दीनो ॥ सहसदशचार खल सहित खर दूषणहिं पठै यम धाम तैं तउ न चीनो ॥ मैं जो कहों कंत सुन मंत भगवंत सों

विमुख ह्वै बालि फल कौन लीनो ॥ बीस भुज शीश दश खीस गे तबहिं जब ईशके ईश सों बैर कीनो ॥ २२६ ॥

बालि दल कालि जल यान पाषान किये कंत भगवंत तैं तब न चीने॥ विपुल विकराल भट भालु कपि कालसेसंग तरु तुंग गिरि शृंग लीने आयगो कौशलाधीश तुलशीश जिहँ छत्र मिस मौलि दश दूर कीने॥ ईश बकसीस जनि खीस करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीने॥

कवित्त ।

कह्यो मत मातुल विभीषणहुँ बार बार अंचल पार पिय पाँय लैलै हौं परी ॥ विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानी कीनी जैसी आइ गौं परी ॥ वायस विराध खर दूषण कवंध बाली बैर रघुवीरके न पूरी काहू की परी ॥ कंत बीस लोचन विलोकिये कुमंत फल ख्याल लंका लाय कपि रांड कीसी झोपरी ॥ २२७ ॥

रोषो रण रावण बोलाये बीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपर हने निसान सैना सरहान योग रातिचरराज की ॥ तुलसी विलोक कपि भालु किलकत ललकत लख ज्यों कँगाल पातरी सुनाज की ॥ राम रुख निरख हरष्यो हिय हनुमान मानो खेलवारे खोलो शीश ताज बाज की२२८

हाथिन सों हाथी मारे घोरे घोरे सों सँहारे रथन सों रथ विदरानि बलवान की॥चंचल चपेट चोट चरण चकोर चाहै दावि हहरानी फौजें भहरानी यातुधान की ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम तुलसी सराहै रीति साहब सुजान की ॥ लांबी लूम लसत लपेट पटकत भट देखो देखो लषण लरनि हनुमान की ॥ २२९ ॥

सवैया ।

कानन बास दशानन सों रिपु आनन श्री शशि जीत लियो है ॥
बालि महा बल शालि दल्यो कपि पाल विभीषण भूप कियो है ॥
तीय हरी अरु बंधु पर्‌यो पै भर्‌यो शरणागत सोच हियो है ॥
बांहपगार उदार कृपाल कहां रघुवीर सों बीर बियो है ॥ २३० ॥

शोक समुद्र निमज्जन काढि कपीश कियो जग जानत जैसो ।

नीच निशाचर बैरीको बंधु विभीषण कीनो पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाय लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥
आरत आरति भजन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ २३१ ॥
मीत पुनीत किये कपि भालुको पाल्यो न काहू ज्यों बाल तनूजो ॥
सज्जन सींव विभीषण भो अजहूं बिलसै वर बंधु बधू जो ॥
कोशलपाल बिना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥
क्रूर कुजाति कुपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ २३२ ॥
अपराध अगाध भये जन ते अपने उर आनत नाहिंनजू ॥
गणिका गज गीध अजामिलके गनि पातक पुंजसराहि न जू ॥
लिये बारक नाम सुधाम दियो जिहि धाम महा मुनि जाहि न जू ॥
तुलसी भजु दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू ॥ २३३ ॥
प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महा ॥
झखराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल विलंब किये न तहां ॥
सुर साखी दै राखी है पांडुबधू पट लूटत कोटिक भूप जहां ॥
तुलसी भज शोच विमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां २३४
नर नारि उघारि सभा महँ होत दिये पट सोच हरयो मनको ॥
प्रहलाद विषाद निवारन वारन तारन मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भार सदा अपने पनको ॥
तुलसी तज आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको ॥ २३५ ॥
ऋषि नारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥
निज लोक दियो शबरी खगको कपि थाप्यो सो मालुम है सबही ॥
दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही ॥
करुणानिधिको भजुरे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही ॥ २३६ ॥
कौशिक विप्र बधू मिथिलाधिपके सब सोच दले पलमाहैं ॥
बालि दशानन बंधु कथा सुन शत्रु सुसाहिब शील सराहैं ॥
ऐसी अनूप कहै तुलसी रघुनायककी अगुनी गुनगाहैं ॥
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथन छाहैं ॥ २३७ ॥

कवित्त ।

यातुधानभालु कपि केवट विहंग जो जो पालोनाथ सद्य सो सो

भयो काम काज को ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमान सों सुभाउ महाराज को ॥ नाम तुलसी पै भोड़े भाग सों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को ॥ साहेब समत्थे दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसों तुही आपनेकी लाज को २३८

महा बलि बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखा किये महाराज हों नकाहूकामको ॥ भ्रात घात पातकी निशाचर शरन आये किये अंगीकार नाथ एते बड़े बाम को ॥ राय दशरत्थ के समर्थ तेरे नाम लिये तुलसी से कूर को कहत जग रामको ॥ अपने निवाजे की तो लाज महाराज को सुभाउ समुझत मन मुदित गुलामको ॥ २३९ ॥

रूप शील सिंधु गुण सिंधु बंधु दीनको दया निधान जान मणि बीर बाहु बोल को ॥ श्राद्ध कियो गीध को सराहे फल शबरीके शिला शाप सबन निवाह्यो नेह कोल को ॥ तुलसी उचाउ होत राम को सुभाउ सुनि को न बलि जाय न बिकाय बिन मोल को ॥ ऐसेहु सुसाहिब सों जाको अनुराग न सो बड़ोई अभागो भाग जागो लोभ लोल को ॥ २४० ॥

शूर शिरताज महाराजनके महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो ॥ साहिब कहां जहान जानकीश सों सुजान सुमिरे कृपालु के मराल होत खूसरो ॥ केवट पषाण यातुधान कपिभालु तारे अपनायो तुलसी सो धींग धम धूसरो ॥ बोले को अटल बाँह को पगार दीनबंधु दूबरेको दानी को दयानिधान दूसरो ॥ २४१ ॥

कीबे को विशोक लोक लोक पालहू ते सब कहूं कोऊ भोन चरवाहो कपि भालु को । पविको पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम बापुरो विभीषण घरोंधा हुतो बाल को ॥ नाम ओट लेत हीं निखोट होत खोटे खल चोट बिन मोट पाय भयो न निहाल को । तुलसी की बार बलि ढील होत शीलसिंधु बिगरी सुधारबे को दूसरो दयाल को ॥ २४२ ॥

नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश आरति निवारी प्रभु पाहि कहे पील की । छलिनकी छोड़ी सी निगोड़ी छोटी जाति पांति

कीनी लीन आपमें भामिनी भोंड़े भीलकी ॥ तुलसी औतारबो बिसारबो न अंत मोहुं नीके है प्रतीत रावरे सुभाव शीलकी। देवतोदया निकेत देत दाद दीननकी मेरीबार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी २४३

आगे परे पाहन कृपा किरात कोलन कपीश निशिचर अपनाये नाये माथ जू। सांची सेवकाई हनुमानकी सुजानराय रिनियां कहाये हौ बिकाने ताके हाथ जू॥ तुलसी से खोटे खरे होत ओट नाम ही की महँगी माटी मगहू की मृगमद साथ जू। बात चले बात कौन मानबो विलग बलि काकी सेवा रीझ को निवाजो रघुनाथ जू॥ २४४॥

शिलाशाप पाप गुह गीध को मिलाप शेवरी के पास आप चलि गये हौ सो सुनी मैं। सेवक सराह कपि नायक बिभीषण को भरत सभा सादर सनेह सुर धुनी मैं॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल साहिब समत्थ कर नीके मन गुनी मैं। दोष दुख दारिद दलैया दीन बंधु राम तुलसी न दूसरो दया निधान दुनीमें२४५

भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल कारन कृपाल मैं सबै के जी की थाह ली। कादर को आदर काहूके नाहिं देखियत सबन सोहात है सेवा सुजानटाहली॥ तुलसी सुभाय कहै नहींकछु पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खासमाहली। रामही के द्वारेपै बोलाय सनमानियत मोसे दीन दूबरे कपूत कूरकाहली२४६

सवैया।

जाके विलोकत लोकपहोत विशोक लहैं सुरलोक सुठौरहिं॥
सो कमला तजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिर मौरहिं॥
ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहिन मांगत कूकर कौरहिं॥
जानकी जीवनको जनह्वै जर जाउ सो जीह जो याचत औरहिं२४७

सुन कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिं के गुन गाथहिंरे॥
सुख मंदर सुंदर रूप सदा उर आन धरे धनु भाथहिंरे॥
रसना निशिबासर सादर सों तुलसी जप जानकी नाथहिंरे॥
कर संग सुसंतन सों नितहीं तज कूर कुपंथ कुसाथहिंरे॥ २४८॥

सुत दार अगार सखा परिवार विलोक महा कुसमाजहिंरे ॥
सबकी ममता तजिकै समता सज संत सभान विराजहिंरे ॥
नर देह कहा कर देख विचार विगार गवाँर न काजहिंरे ॥
जनि डोलहि लोलुप कूपर ज्यों तुलसी भज कौशल राजहिंरे २४९ ॥
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुख लाग करी नपरै बरनी ॥
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हियेधर चातक की धरनी ॥
कर हंस को वेष बड़ो सबसे तजदे बक वायसकी करनी ॥ २५० ॥
भल भारत भूमि भले कुल जन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥
ममता करखा तजि कै बरखा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
भजिहै भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥
नत और सबै विष बीज बुये हर हाटक कामधुका नहिकै ॥२५१ ॥
सो सुकृती शुचि मंत सुसंत सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत हैं तातन छ्वै ॥
गुन गेह सनेह को भाजन सो सबहीं सों उठाय कहों भुज द्वै ॥
सत भाव सदा चल छाँडि सबै तुलसी जो रहै रघुवीर को ह्वै॥२५२॥
सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो ॥
सोई सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान कहांलौ बनाय कहों बहुतेरो ॥
जो तज देह को गेह को नेह सनेह सों राम को होय सबेरो ॥ २५३ ॥
राम है मातु पिता सुत बंधु औ संगी सखा गुरु स्वामि सनेही ॥
राम की सौंह भरोसो है राम को राम रँगी रुचि राचो न केही ॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहिं की गति जेही ॥
सोई जिये जग में तुलसी नतु डोलत और मुये धर देही ॥ २५४ ॥
सिय राम स्वरूप अगाध अनूप बिलोचन मीनन को जल है ॥
श्रुति राम कथा मुख राम को नाम हिये पुनि रामहि को थल है ॥
मति रामहिं सों गति रामहि सों रति राम सों रामहि को बल है ॥
सबकी न कहै तुलसी के मते इतनो जग जीवन को फल है ॥ २५५ ॥

झूठो है झूठो है झूठोसदा जग संत कहंत न अंत लहा है ॥
ताको सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ॥
जान पने को गुमानबडो तुलसी के विचार गवाँर महा है ॥ २५६ ॥
जानकी जीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जानकहाहै ॥

तिनते खर शूकर श्वान भले जड़ता वश ते न कहैं कछुवै ॥
तुलसी जिहि राम सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विषाण न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दस मास भई किन वांझ गई किन च्वै ॥
जरि जाउ सो जीवन जानकी नाथ जिये जगमें तुमरो बिनह्वै ॥२५७॥
गज बाजि घटा भले भूरि भटा वनिता सुत भौंह तकै सब वै ॥
धरनी धन धाम शरीर भलो सुरलोकहू चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोटुक सोटुक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिनह्वै ॥२५८॥
सुरराज सो राजसमाज समृद्ध विरंचि धनाधिप सो धन भो ॥
पव मान सो पावन सो यम सोम सो पूषन सो भवभूषन भो ॥
कर योग समाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो वशहूं मन भो ॥
सब जाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकी जीवन को जन भो २५९

व्याल कराल महा विष पावक मत्त गयंदन के रद तोरे ॥
सासत संग चली डरपैहुते किंकर ते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नहीं प्रहलादहिं कारन के हरि के बल होरे ॥
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखि है राम तौ मारिहै कोरे॥२६०॥
कृपा जेहि की कछु काज नहीं न अकाज नहीं जेहिको मुख मोरे ॥
करै तिनकी परवाहि को जाहि विषाण न पूंछ फिरै दिन दोरे ॥
तुलसी जिहि के रघुवीर से नाथ समर्थ सो सेवक रीझत थोरे ॥
कहा भव भीर परी तिहिं धौं विचरै धरनी तिनसों तृण तोरे २६१ ॥

कानन भूधर वारि बयारि महा विष व्याधि दवा अरि घेरे ॥
संकट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखि है राम कृपाल तहां हनुमान से सेवक हैं जेहि केरे ॥
नाकु रसातल भूतल मैं रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ २६२ ॥

जबै यमराज रजायसु तें मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया ॥
तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु विशाल विपत्ति बँटैया ॥
सासत घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुं ओर डटैया ॥
एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थ को नंदन बंदि कटैया ॥ २६३ ॥
जहां यम जातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दंत टेवैया ॥
जहां धार भयंकर वारन पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहां मात पिता न सखा नहिं कोउ कहूं अवलंब देवैया ॥
तहां बिन कारन राम कृपाल विशाल भुजा गहि काढि लेवैया२६४
जहां हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत बंधु न बाप न मैया ॥
कायगिरा मनके जनके अपराध सबै छल छांडि छमैया ॥
तुलसी तेहि काल कृपाल विना दूजो कौन है दारुन दुःखद मैया ॥
जहां सब संकट दुर्घट सोच तहां मेरो साहिब राखै रमैया ॥ २६५ ॥
जप जोग विराग महा मख साधन दान दया दम कोटि करै ॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढ़ै तपसानल में जुग पुंज जरै ॥
मन सों पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ विना दुख कौन हरै॥२६६॥
पापहरे परि तापहरे तन पूजिभो हीतल सीतलताई ॥
हंस कियो वक ते बलि जाउँ कहाँ लौं कहौं करुना अधिकाई ॥
काल विलोकि कहै तुलसी मन में प्रभु की परतीति अघाई
जन्म जहां तहँ रावरे सों निबहै भरि देह सनेह सगाई २६७ ॥
लोक कहै अरु हौं हूँ कहौं जन खोटो खरो रघुनायक ही को ॥
रावरी राम बड़ी लघुता यश मेरो भयो सुखदायक हीको ॥
कै यह हानि सहो बलि जाउँ कि मोहूँ करो निज लायक हीको ॥
आन हिये हित मान करो जोहौं ध्यान धरौं धनु शायकहीको२६८॥

कवित्त ।

छार ते सँवार कै पहार हू ते भारी कियो गारो भयो पांच में पुनीत पच्छ पाइ कै ॥ हौं तो जैसो तब तैसो अब अधमाई कै कै भरों पेट राम रावरोई गुन गाय कै आपने निवाजे की पै कीजे

लाज महाराज मेरी ओर हेरि के न बैठिये रिसाय के ॥ पाल के कृपाल व्याल बाल को न मारिये औ काटिये न नाथ विष हूं को रूख लायके ॥ २६९ ॥

वेद न पुरान गान जानों न विज्ञान ज्ञान ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जोग जाग भाग तुलसी के दया दान दूबरो हौं पाप ही की पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोष मोसों कौन कलिहू जो सिखि लइ मेरीये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौं रावरेदयाल दीन बंधु मेरी हीनता२७०

रावरो कहावो गुन गावों राम रावरोई रोटी द्वै हौं पावों राम रावरी हि कानि हौं ॥ जानत जहान मन मेरे हूं गुमान बड़ो मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानि हौं ॥ पांच की प्रतीत न भरोसो मोहि आपनोई तुम आपनायहो तबहि पर जानिहौ॥गढ़ गुढ छोल छाल कुंद कैसी भाई बातें जैसी मुख कहों तैसी जीय जब आनिहौं२७१

वचन विकार करतबहु खुआर मन विगत विचार कलि मल को निधानहै ॥ रामको कहाय नाम बेंच बेंच खाय साध संगत न जाय पाछिले को उपखान है ॥ तहू तुलसी को लोग भलो कहै ताको पुनि दूसरो न हेत एक नीके के निदान है ॥ लोक रीत विदित विलोकियत जहां तहां स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमानहै॥२७२॥

स्वारथ को साज न समाज परमारथ को मोसो दगाबाज दूसरो न जग जाल है ॥ कैन आयो करौं न करौंगो करतूति भलि लिखी न विरंचि हूं भलाई भोरे भाल है ॥ रावरी शपथ राम नाम ही की गति मेरे इहांझूठो झूठो सो तिलोक तिहूं कालहै ॥ तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किये कृपाल कीजै न विलंब बलि पानी भरीखालहै२७३

राग को न साज न विराग जोग याग जिय कायर न छांडि देत ठाटिवो कुठाट को ॥ मनोराज करत अकाज भयो आज लग चाहै चारु चीर पै लहै न टूक टाट को ॥ भयो करतार बड़े कूर को कृपाल अति पायो नाम पारस हौं लालची बराट को ॥ तुलसी बनी है राम रावरे बनाये नतो धोबी कैसो कूकर न घर को न घाटको ॥

सब अंग हीन सब साधन विहीन मन वचन मलीन हीन कुल करतूति हौं ॥ बुधि बल हीन भाव भगति विहीन दीन गुन ज्ञान हीन हीन भाग हूं विभूतिहौं ॥ तुलसी गरीबकी गई बहोर राम नाम जाहि जप जीह राम हूं को बैठो धूति हौं ॥ प्रीत राम नाम सों प्रतीत राम नाम को प्रसाद राम नाम के पसारि पायँ सूति हौं ॥ २७९ ॥

जोग न विराग जप याग तप त्याग व्रत तीरथ न धर्म जानो वेद विधि किमि है ॥ तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है कहूं सोचैं सब याके अघ कैसे प्रभु छमि है ॥ मेरे तौ न डर रघुवीर सुनो सांची कहौं खल अनखैहैं तुम्हैं सज्जन न गमि है ॥ भले सुकृती के संग मोहिं तुला तौलिये तौ नामके प्रसाद भार मेरी ओर नमि है ॥

जाति के सुजाति के कुजाति के पेटागि वश खाये टूक सबके विदित बात दुनी सो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतभाय राम को कहाय दास दगाबाज पुनी सो ॥ राम नामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसी सो जग मानियत महामुनी सो ॥ अतिही अभागे अनुरागत न राम पद मूढ एतो बडो अचरज देखसुनीसो ॥

वेद हूं पुरान कही लोक हूं विलोकियत राम नाम ही से रीझे सकल भलाईहै ॥ काशी हू मरत उपदेशत महेश सोई साधन अनेक चितई न चित लाई है ॥ छाँछं को ललात जेते राम नाम के प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूध की मलाई है ॥ राम राज सुनियत राज-नीति की अवधि नाम राम रावरो तो चाम की चलाई है ॥ २७८ ॥

जपकी न तप खप कियो न कमाई जोग याग न विराग त्याग तीरथ न तन को ॥ भाई को भरोस न खरोसो वैर रिपुहू सो बल अपनो न हित जननी जनक को ॥ लोक को न डर परलोक को न सोच देव सेवा न सहाई गर्व धाम को न धन को ॥ राम ही के नाम तेजो होई सोई नीकी लागे ऐसी ही सुभाउ कछु तुलसी के मन को

ईस न गनेस न धनेस न दिनेस न सुरेस सुर गौरी गिरा पति नहिं जपने ॥ तुमरोई नाम को भरोसा भव तरबे को बैठे उठे जागत बागत

सोये सपने ॥ तुलसी है बावरो सो बावरोई रावरो सो रावरे हू जान जिय कीजिये जू अपने ॥ जानकी जीवन मेरे रावरे वदन फेरे ठाउँ न समाउँ कहूं सकल निरपने ॥ २८० ॥

स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो राम रावरो हौं जानत जहान है ॥ नाम के प्रताप बाप आज लौं निवाहि नीकी आगे की गोसाईं स्वामी सबल सुजान है ॥ कलि की कुचाल देख दिन दिन दूनी देव पाहरोई चोर हेर हिय हहरान है ॥ तुलसी की लिपि बार बार ही सम्हार कीबो यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है २८१ ॥

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय दिन दुःख रोइये कलेश कोह काम को ॥ राजा रंक रागी औ विरागी भूरि भागीये अभागी जीव जरत प्रभाव कलि बाम को ॥ तुलसी कवंध कैसो धायबो विचार अंध धुंध देखियत जग सोच परिनामको ॥ सोइबो जो रामके सनेह की समाधि सुख जागिबोजो जीहजपै नीके राम नामको

बरन धरम गयो आश्रम निवास तज्यो त्रासन चकृत सों परावनो परोसो है ॥ करम उपासना कुवासना विनास्यो ज्ञान वचन विराग वेष जगत हरोसोहै ॥ गोरख जगायो योग भगति भगायो लोग निगम नियोग ते सो कलि ते छरोसो है ॥ काय मन वचन सुभाय तुलसी है जाहि राम नाम को भरोसो ताही को भरोसो है ॥ २८३ ॥

सवैया।

वेद पुरान बिहाय सुपंथ कुमारग कोटि कुचाल चली है ॥
काल कराल नृपाल कृपाल न राज समाज बड़ोही छली है ॥
वर्ण विभाग न आश्रम धर्म दुनी दुख दोष दरिद्र दली है ॥
स्वारथ को परमारथ को कलि रामको नाम प्रताप बली है ॥२८४॥
न मिटै भव संकट दुरघट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो ॥
कलि में न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूठ जटो ॥
नट ज्यों जिन पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो ॥
तुलसी जो सदा सुख चाहिये तो रसना निस बासर राम रटो ॥२८५॥

दम दुर्मद दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धन को ॥
तप तीरथ साधन योग विराग सुहोय नहीं दृढ़ता तनको ॥
कलि काल कराल में राम कृपाल इहै अवलंब बड़ी मनको ॥
तुलसी सब संजम हीन सबै एक नाम अधार सबै जनको ॥ २८६ ॥
पाय सुदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछू की ॥
राम कथा बरनी न बनाय सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रूकी ॥
अब ज़ोर जरा जर गात गये मन मान गलान कुबान न मूकी ॥
नीके कै ठीक दई तुलसी अवलंब बड़ी उर आखर दूकी ॥ २८७ ॥
राम विहाय मराजपते बिगरी सुधरी कवि कोकिलहू की ॥
नामहिं ते गज की गनकाहू अजामिलकी चलिगै चल चूकी ॥
रामप्रताप बड़े कुसमाज बचाय रही पति पंडु बधू की ॥
ताको भलो अजहूं तुलसी जेहि प्रीति प्रतीति है आखर दूकी २८८॥

कवित्त ।

बबुर बहेर को बनाय बाग राखियत रूंधवे को सोऊ सुरतरु काटियत है। गारी देत नीच हरिचंद हूं दधीच हूं को आपने चना चबाय हाथ चाटियत है॥ आप महापातकी हँसत हरि हर हूं को आप है अभागी भूरि भागी डाटियत है । कलि की कलुष मन मलिन किये महत मशक की पाँसुरी पयोधि पाटियत है२८९॥

सवैया ।

कीबे कहा पढ़बे को कहा फल बूझ न वेद को भेद बिचारयो ॥
स्वारथको परमाथ को कलि कामद राम को नाम बिसारयो ॥
वाद विवाद विषाद बढ़ायके छाती पराई औ आपनी जारयो ॥
चारहुको छहुको नवको दस आठकोपाठकुकाठ ज्यों कारयो२९०॥

कवित्त ।

नाहीं मेरे जाति पाँति नाहीं मेरे मायबाप नाहीं मेरे कोऊ काम हौं न काहू काम को। लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को ॥ अति ही सयानो उपखानो नाहिं

बूझे लोग साहब के गोत गोत होत है गुलाम को ॥ साधु के असाधु कै भलौ कै पोच सोच कहा का काहू के द्वार परयो जो हौं सो हौं राम को ॥ २९१ ॥

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बड़ो कोऊ कहै राम को गुलाम खरो खूब है ॥ साधु जाने महा साधु खल जाने महाखल बानी झूठी सांची कोटि उठत हबूब है ॥ चहत न काहू सों कहत न काहू को कछू सब की सहत उर अंतर न ऊब है ॥ तुलसी को भलो पोच हाथ रघुनाथ ही के राम की भगति भूमी मेरी मति दूब है २९२

जागे योगी जंगम यती समाधि ध्यान धरैं डरैं उर भारी लोभ मोह कोह काम के ॥ जागे राजा राज काज सेवक समाज साज सोचै सुन समाचार बड़े बैरी बाम के ॥ जागे बुध विद्या हित पंडित चकित चित जागे लोभी लालच धरनि धन धाम के ॥ जागे भोगी भोग ही वियोगी रोगी रोग बस सोवै सुख तुलसी भरोसे एक राम के ॥ २९३ ॥

छंद षटपद ।

राम मात पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम हित। साहब सखा सहाय नेह नातो पुनीत चित ॥ देश कोश कुल धर्म कर्म धन धाम धरनि गति। जाति पांति सब भांति लागि रामहिं हमारि पति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ राम ते सकल फल। कहै तुलसिदास अब जब कबहुँ एक राम ते मोर भल ॥ २९४ ॥

महाराज बल जाउँ राम सेवक सुखदायक। महाराज बल जाउँ राम सुंदर सब लायक ॥ महाराज बल जाउँ राम सब संकट मोचन॥ महाराज बल जाउँ राम राजीव विलोचन॥बल जाउँ राम करुणायतन प्रणत पाल पातक हरन। बल जाउँ राम कलिमल विकल तुलसिदास राखिय शरन ॥ २९५ ॥

जय ताड़का सुबाहु मथन मारीच मान हर। मुनिमख रक्षण दक्ष शिला तारन करुनाकर ॥ नृप गन बल मद सहित शंभु कोदंड विहंडन ॥ जय कुठार धर दर्प दलन दिनकर कुल मंडन ॥ जय

जनक नगर आनंद प्रद सुख सागर सुखमा भवन ॥ कहै तुलसि-दास सुर मुकुट मनि जय जय जय जानकि रमन ॥ २९६ ॥

जाय सो सुभट समर्त्थ पाय रन रारि न मंडै ॥ जाय सो यती कहाय विषै वासना न छंडै ॥ जाय धनिक बिन दान जाय निरधन बिन धर्महि ॥ जाय सो पंडित पढ़ पुरान जो रत न सुकर्महि ॥ सुत जाय मात पितु भगति बिन तिय सो जाय जिहि पति न हित ॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जो न राम पद नेह नित ॥ २९७ ॥

को न क्रोध निरदहेउ काम बस केहि नहिं कीनो ॥ को न लोभ दृढ़ फंद बांध त्रास न कर दीनो ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अति नारि नयन शर ॥ लोचन युत नहिं अंध भयो श्री पाय कवन नर ॥ सुर नाग लोक महि मंडलहु को जु मोह कीनो जय न ॥ कहै तुलसिदास सो उबर जेहि राख राम राजिवनयन ॥ २९८ ॥

सवैया ।

भौंह कमान सँधान सुठान जे नारि विलोकन बान ते बाचे ॥
कोप कृशानु गुमान अवाँघट ज्यों जिनके मन आवन आछे ॥
लोभ सभै नट के वश ह्वै कपि ज्यों जग में बहु नाच न नाचे ॥
नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुबीर के सेवक सांचे ॥ २९९ ॥

कवित्त ।

भेष सुबनाय भले वचन कहै चुवाय जाय तो न जरनि धरनि धन धाम की । कोटिक उपाय कर लाल पालियत देह मुख कहियत गति राम ही के नाम की ॥ प्रगटै उपासना दुरावै दुर्वासनाहि मानस निवास भूमि लोभ मोह काम की । राग रोष ईर्षा कपट कुटिलाई भरे तुलसी से भगत भगति चहैं राम की ॥ ३०० ॥

काल ही तरुन तन काल ही धरनि धन काल ही जितौंगो रन कहत कुचालि है । काल ही साधोंगो काज काल ही राजा समाज मोसों कोऊ कहा भारो मही मेरु हालि है ॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये घने घर घालत हैं घने घर घालि है ॥

दुखत कहत समुझत हूं न सूझे सोई कबहूं कह्यो न कालहूं को काल कालि है ॥ ३०१ ॥

भयो न तिकाल तिहूं लोक तुलसी सो मंद निंदें सभ साधु सुनि मानों न सँकोच हौं । जानको अयो गाहिय हानि मानै जान कीश काहेको परखो हौं पापी प्रपंची पोच हौं ॥ पेटभरवेके काज महाराजको कहायो महाराजहूं कह्यो है प्रनत विमोच हौं ॥ निज अघ जाल कलि काल की करालता विलोकि होत व्याकुल करत सोई सोचहौं ॥ ३०२ ॥

राग देवगंधार ।

यह मन नेक न कह्यो करै । सीख सिखाय रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥ मद माया के भयो बावरो हरि यश नहिंउचरै । कर परपंच जगत को डहके अपनो उदर भरै ॥ श्वान पूछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरै । कहु नानक भज राम नाम नित जाते काज सरै ॥ ३०३ ॥

राग देवगंधार ।

सभ कछु जीवतको व्यवहार । मातपिता भाई सुत बंधव अरु पुनगृहकीनार ॥ तनतेप्राण होतजबन्यारे टेरतप्रेतपुकार । आधघरी कोऊ नहीं राखै घरते देत निकार । मृगतृष्णा ज्यों जग रचना यह देखो हृदयविचार । कहुनानक भजराम नाम नित जातेहोतउधार ॥

राग देवगंधार ।

जगत में झूठी देखीप्रीत । अपनेही सुखसों सब लागे क्यादारा क्या मीत ॥ मेरो मेरो सभी कहत हैं हित सों बांध्यो चीत । अंतकाल संगी नहिं कोऊयह अचरजहैरीत ॥ मन मूरख अजहूं नहिं समझत शिख दे हारचो नीत । नानक भौ जल पार परै जो गावै प्रभुकेगीत ॥

राग सोरठ ।

मन की मनही माहिंरही । ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही ॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन पूरन सभ मही । और सकल

मिथ्या यह जानो भजन राम को सही ॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारयो मानस देह लही । नानक कहत मिलन की बिरियां सुमिरत कहा नहीं ॥ ३०६ ॥

राग सोरठ ।

मनरे कौन कुमति तैं लीन्ही । पर दारा निंदा रस राच्यो राम भगति नहिं कीनी ॥ मुक्त पंथ जान्यो तैं नाहिन धन जोरन को धायो । अंत संग काहू नहिं दीनो बिरथा आप बँधायो ॥ ना हरि भजे न गुरु जन सेयो नहिं उपज्यो कछु ज्ञाना । घट ही माहिं निरंजन तेरे तैं खोजत उद्याना ॥ बहुत जन्म भरमत तैं हारयो अस्थिर मति नहिं पायो । मानस देह पाय पद हरि भज नानक बात बतायो ॥ ३०७ ॥

कवित्त ।

धरम को सेतु जग मंगल को हेतु भूमि भार हरवे को अवतार लियो नर को । नीति औ प्रतीति प्रीति पाल चाल प्रभु मान लोक वेद राखवे को पन रघुवीरको ॥ वानर विभीषण की ओर को कनावड़ो है सो प्रसंग सुने अंग जरे अनुचर को । राखे रीत आपनी जो होय सोई कीजे बलि तुलसी तिहारो घर जाइड़ो है घरको ॥३०८॥

नाम महाराज के निवाही नीकी कीजे उर सबहि सोहात मैं न लोगन सोहातहौं । कीजैरामबार एक मेरी ओर चषकोर ताहि लग रंक ज्यों सनेह को ललात हौं॥तुलसी विलोक कलि काल की कराछता कृपाल को सुभाउ समुझत सकुचातहौं । लोक एक भांतिको त्रिलोक नाथ लोक बस आपनो न सोच स्वामी सोचही सुखातहौं ॥

तौलौं लोभ लोलुप ललात लालची लवार बार बार लालच धरनि धन धाम को । तबलौं वियोग रोग सोग भोग यातना के युग सम लागत जीवन जाम जाम को ॥ तौलौं दुख दारिद दाहत अति नित तन तुलसी है किंकरविमोह कोहकामको । सबदुखअपने निरापने सकल सुख जौलौं जन भयो न बजाय राजा राम को ॥ ३१० ॥

तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहां तहां दुखी जन भाजन कलेस को। तबलौं उबेने पाये फिरत पटौ खलाये वाये मुह सहत पराभौ देस देस को ॥ तबलौं दयावनो दुसह दुख दारिद को साथरी को सोइबो ओढ़बो झूनेखेसको। जबलौं न भजे जीह जानकी जीवन राम राजन को राजा सो तो साहिब महेसको ॥ ३११ ॥

ईसन के ईस महाराजन के महाराज देवन के देव देव प्रान हूके प्रान हौ। कालहूकेकाल महाभूतन के महाभूत कर्महू के कर्म निदान के निदान हौ । निगम को अगम सुगम तुलसी हू से को एत मान शील सिंधु करुना निधान हौ ॥ महिमा अपार काहू बोल को न वार पार बड़ी साहिबी में नाथ बड़े सावधान हौ ॥ ३१२ ॥

सवैया ।

आरतपाल कृपाल जो राम जहीं सुमिरेतिहको तहिंठाढ़े ॥
नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े ॥
सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहुं तापन डाढ़े ॥
प्रेम बदों प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे ॥ ३१३॥
काढकृपान कृपा न कहूं पितु काल कराल विलोकि ग भागे ॥
राम कहां सबठां उहै खंभमें हांसुनि हांक नृकेहरी जागे ॥
वैरी विदार भये विकराल कहेप्रहलादहिं के अनुरागे ॥
प्रीतप्रतीत बढ़ीतुलसी तबते सब पाहन पूजन लागे ॥ ३१४ ॥
अंतरजामिहु ते बड़ बाहिर जामि हैं राम जे नाम लिये ते ॥
धावत धेनु पन्हाय लवाय ज्यों बालक बोलन कान कियेते ॥
आपन बूझ कहै तुलसी कहबे की न बावरि बात बियेते ॥
पैज परे प्रहलाद हु कों प्रगटे प्रभु पाहन ते न हियेते ॥ ३१५ ॥
बालक बोल दियो बलि काल को कायर कोटि कुचालचलाई ॥
पापी है बाप बड़ो परिताप तें आपनी ओर ते खोर न लाई ॥
भूरि दई विष मूरि भई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई ॥
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भले को भलोई भलाई ॥ ३१६ ॥
कंस करी व्रज वासिन पै करतूति कुभांति चली न चलाई ॥

पंडु के पूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटो छलाई ॥
कान्ह कृपालु बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ॥
ठीक प्रतीत कहै तुलसी जग होय भले को भलोई भलाई ॥३१७॥
अवनीस अनेक भये अवनी जिनके डर ते सुर सोच सुखाहीं ॥
मानव दानव देव सतावन रावन घाट रच्यो जग माहीं ॥
ते मिलये धर धूर सुयोधन जे चलते बहु छत्र की छाहीं ॥
वेद पुरान कहै जग जान गुमान गोविंदहिं भावत नाहीं ॥ ३१८ ॥
जब नैनन प्रीत गई ठग स्याम सों स्यानी सखी हठ हौं बरजी ॥
नहींजानो वियोग सुरोगसो आगे झुकी तब हौं तेहिंसो तरजी ॥
अब देह भई पट नेह के घाले सो ब्योंत करै विरहा दरजी ॥
व्रजराज कुमार विना सुन भृंग अनंग भयो जिय को गरजी ॥३१९॥
योग कथा पठई व्रज को सब सो शठ चेरी को चाल चलाकी ॥
ऊधोजी कौन कहै कुबरी जो बरी नट नागर हेर हलाकी ॥
जाहि लगे पर जाने सोई तुलसी सो सुहागिनि नंद लला की ॥
जानि है जानपनी हरि की अब बांधियेगी कछू पोट कला की३२०॥

कवित्त ।

पठयो है छपद छबीले कान्ह कैहू कहूं खोज के खवास खासो कूबरी सी बाल को। ज्ञान को गढ़ैया विन गिरा को पढ़ैया बार खाल को कढ़ैया सो बढ़ैया उर सालको॥ प्रीति को बधिक रस रीति को अधिक नीति निपुण विवेक है निदेश देश काल को॥ तुलसी कहे न बनै सहै ही बनेगो सब योग भयो योग को वियोग नंदलाल को॥ ३२१ ॥

हनुमान है कृपाल लाडले लखन लाल भावते भरत हैं सेवक सहाय जू॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनो सो बिगरे ते आपही सुधारि लीजेभाय जू। मेरी साहिबनी सदा सीस पर बिलसत देवि क्यों न दास को देखाइयत पाय जू॥ खीझ हू में रीझवे की बानी राम रीझत है रीझि हैं ई राम की दोहाई रघुराय जू॥ ३२२॥

सवैया ।

वेष विराग को राग भरो मन भाव कहों सत भाव हौं तोसों॥

तेरेही नाथ को नाम लै बेचहों पातकी पांवर प्रानन पोसों ॥
एते बड़े अपराध अघी कहूं तू कहु अंब कि मेरो तु मोसों ॥
स्वारथ को परमारथ को परि पूरन भौ फिर घाट न हों सों॥३२३ ॥

कवित्त ।

जंहां वाल्मीक भये व्याधते मुनिंद साधु मरा मरा जपे सिख सुन रिषि सात की । सिय को नेवास लव कुस को जनम थल तुलसी छुवत छांह ताप गरे गातकी ॥ विटप महीप सुरसरित समीप सोहै सीतावट पेखत पुनीत होत पातकी । वारि पुर दिग पुर बीच बिलसत भूमि अंकित जो जानकी चरन जल जातकी ॥ ३२४ ॥

मरकत वरन पारन फल मानिक से लसेजटा जूट जनु रूख बेख हर है । सुखमा को ढेर कै धों सुकृत सुमेरु कैधों संपदा सकल मुद मंगल को घर है ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीत सेइये प्रतीत मान तुलसी विचार का को थर है ॥ सुरसरि निकट सोहावनि ॥ अवनि सोहै राम रवनी को वट कलि कामतर है ॥ ३२५ ॥

देवधुनि पास मुनि वास श्रीनिवास जहां प्राकृत हू वट बुट बसत पुरारि है । योग जप याग को विराग को पुनीत पीठ रागिन को सीठी डीठी बाहरो निवार है ॥ आहस अदेस बाबू भलो भलो भाव सिध तुलसी विचार योगी कहत पुकार है । राम भगतनको तो कामतरु ते अधिक सिय वट सेये करतल फल चार है ३२६ ॥

जहां वन पावनो सुहावने विहंग मृग देख अति लागत अनंद खेत खूटसो ॥ सीताराम लक्ष्मण निवास वास मुनिन को सिद्ध साध साधक सबै विवेक बूट सो ॥ झरना झरत झार सीतल पुनीत वारि मंदाकिनि मंजुल महेश जटा जूटसो । तुलसी जो राम सों सनेह सांचो चाहिये तौ सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट सो ॥ ३२७ ॥

सवैया ।

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गम नांहिं गिरा गुन ज्ञान गुनी को ॥
जो करता भरता हरता सुर राय सुसाहिब दीन दुनी को ॥

सोई भयो द्रवरूप सही जोहै नाथ विरंचि महेश मुनी को ॥
मान प्रतीत सदा तुलसी जल काहेन सेवत देवधुनी को ॥ ३२८ ॥
दानि जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूं पुर मे सिर टीको ॥
भोरो भलो भले भाय को भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसी को ॥
ताबिन आस को दास भयो कबहूं न मिट्यो लघु लालच जी को ॥
साधो कहा कर साधन ते जो पै राधो नहीं पति पारवती को ३२९॥
जाते जरे सब लोक विलोक त्रिलोचन सों विष लोक लियो है ॥
पान कियो विष भूषण भो करुणा वरुणालय साईं हियो है ॥
मेरोई फोरवे योग कपार किधों कछु काहू लखाय दियो है ॥
काहे न कान करो विनती तुलसी कलि काल बिहाल कियो है ३३०॥

राग बिलावल ।

दीन दयाल दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥
हिम तम करि केहरि करमाली । दहन दोष दुख दुरितरुजाली ॥
कोक कोकनद लोक प्रकासी । तेज प्रताप रूप रस रासी ॥
सारथि पंगु दिव्य रथ गामी । हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥
वेद पुरान प्रगट यश जागै । तुलसी राम भगति वर मांगै ॥३३१ ॥

को याचिये शंभु तज आन । दीन दयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ काल कूट ज्वर जरत सुरासुर निज पन लाग कियो विष पान । दारुन दनुज जगत दुख दायक मार्‍यो त्रिपुर एक ही बान ॥ जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत संत श्रुति सकल पुरान । सोइ गति मरन काल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान ॥ सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवती पति परम सुजान । देहु राम पद नेहु काम रिपु तुलसि दास कहँ कृपा निधान ॥ ३३२ ॥

राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शंकर से नाहीं । दीन दयाल दिवो ही भावै याचक सदा सुहाहीं ॥ मारि के मार थप्यो जग में जाकी प्रथम रेख भट

माहीं। ता ठाकुरको रीझ निवाजबो कह्यो क्यों परत मो पाहीं॥ योग कोटि करि जो गति हरि सों मुनि माँगत सकुचाहीं। वेद विदित तेहि पद पुरारि पुर कीट पतंग समाहीं॥ ईश उदार उमापति परिहर अनत जे याचन जाहीं। तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कबहुँ न पेट अघाहीं॥ ३३३॥

बावरो रावरो नाह भवानी। दानी बड़ो दिन देत दिये बिन वेद बड़ाई भानी॥ निज घरकी बर बात विलोकहु हो तुम परम सयानी। शिवकी दई संपदा देखत श्री शारदा सिहानी॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुखकी नहीं निसानी। तिन रंकनको नाक सँवारत हौं आयों नकबानी॥ दुखी दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी। यह अधिकार सौंपिये औरहिं भीख भली मैं जानी॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग्य युत सुन विधिकी वर वानी। तुलसी मुदित महेश मनहिं मन जगत मातु मुसकानी॥ ३३४॥

भजन राग रामकली।

माँगिये गिरिजापति कासी। जासु भवन अणिमादिक दासी॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे। सकत न देखि दीन कर जोरे॥ सुख संपति मति सुगति सुहाई। सकल सुलभ शंकर सेवकाई॥ गये जे शरण आरतिके लीने। निरख निहाल निमिष महँ कीने॥ तुलसिदास याचक यश गावै। विमल भक्ति रघुपतिकी पावै ३३५

कस न दीन पर द्रवहु उमा वर। दारुण विपति हरण करुणा कर॥ वेद पुराण कहत उदार हर। हमरि वेर का भयो कृपिन तर॥ कवनि भक्ति कीनी गुणनिधि द्विज। है प्रसन्न दीन्थो शिव पद निज॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं। तव पुर कीट पतंग हु पावहिं॥ देहु काम रिपु रामचरण रति। तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति॥ ३३६॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्ति भूति दायनि भयहरनि कालिका। मंगल मुद सिद्धि सदनि पर्व

शर्वरीश वदनि ताप तिमिर तरुण तरणि किरणि मालिका ॥ वर्म चर्म कर कृपाण शूल शेल धनुष बाण धरणि दलनि दानव दल रण करालिका । पूतना पिशाच प्रेत डाकिनि शाकिनि समेत भूत ग्रह बेताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेश भामिनि अनेक रूप नामिनि समस्त लोक स्वामिनि हिम शैल बालिका ॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहै अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥ ३३७ ॥

राग धनाश्री ।

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी । विष्णु पद कंज मकरंद इव अंबु वर वहसि दुख दहसि अघ वृंद विद्रावनी ॥ मिलत जल पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर धामिनी । जन्हु कन्या धन्य पुण्य कृत सगर सुत भूधर द्रोणि विद्दरणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं सुकृत पुंज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद मदन पाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीर वर मध्य धारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अमित रूप भूपावली मुकुटमणि बंध त्रैलोक्य पथ गामिनी । देहु रघुवीर पद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भव भामिनी ॥ ३३८ ॥

सेइये सहित सनेह देह भर कामधेनु कलिकासी । शमन शोक संताप पाप रुज सकल सुमंगलरासी ॥ मर्यादा चहुँ ओर चरणवर सेवत सुरपुर वासी । तीरथ सभ शुभ अंग रोम शिव लिंगअमित अविनासी॥अंतर अयन अयन भल थल फल बच्छ वेद विश्वासी । गल कंबल वरुणा विभाति जनु लूम लसत सरिताशी ॥ दण्डपाणि भैरव विशाल मल रुचि खल गण भय दासी । लोल दिनेश त्रिलोचन लोचन कर्ण घंट घंटा सी ॥ मणिकर्णिका वदन शशि सुंदर सूर सरिस सुखमासी । स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचकोश

महिमा सी ॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजा सी। सिद्धि शची शारद पूजहिं मन जोगवत रहत रमासी॥ पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंच नदासी। ब्रह्म जीव सम राम नाम दोउ आखर विश्वविकासी॥ चारितचरित कुकर्म कर्मकर मरतजीव गण वासी। लहत परमपद पय पावन जिहिं चहत प्रपंच उदासी॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कला सी। तुलसी वस हर पुरी राम जप जो भयो चहै सुपासी॥ ३३९॥

राग वसंत।

सबशोच विमोचनचित्रकूट। कलिहरन करनकल्यान बूट॥ शुचिअवनि सुहावनि आलवाल। काननविचित्र वारीविशाल॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सींच। वर वारि विषम नर नारि नीच॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात। निरझर मधु वर मृदु मलय वात॥ शुक पिक मधुकर मुनि वर विहार। साधन प्रसून फल चारु चार॥ भव घोर घाम हर सुखद छाँह। थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह॥ साधक सुपाथिक बड़े भाग पाई। पावत अनेक अभिमत अघाइ॥ रस एक रहत गुण कर्म काल। सिय राम लषण पालक कृपाल॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम। सेइय गिरि कर निरुपाधि नेम॥ ३४०॥

अब चित चेत चित्रकूटहिंचल। कोपित कलि लोपित मंगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोकि रघुवर विहार थल। शैल शृंग भव भंग हेतु लख दलन कपट पाखंड दंभ दल॥ जहँ जन्मे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहर प्रपंच छल। सुकृत प्रवेश करत जिहिं आश्रम विगत विषाद भये पारथनल॥ नकरविलंब विचार चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलोपल। मंत्र सो जाय जपहिं जो जपत मैं अजर अमर हर अचय हलाहल॥ राम नाम जप याग करत नित मज्जत पय पावन पीवत जल। करि हैं राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल॥ कामदमणि कामदा कलपतरु सो युग युग जागत जगती तल। तुलसीतोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकैबल३४१

जाके गति है हनुमान की। ताको पयज पूज आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटित घटन सुघट विघटन ऐसी बिरुदावलि नहिं आनकी । सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी। तुलसी कपिकी कृपा विलोकन खानि सकल कल्यानकी ॥ ३४२ ॥

अति आरत अति स्वारथी अतिदीनदुखारी । इनको विलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर नारी। अति वरषे अन वरषे हूं देहि देवहि गारी ॥ नाकहि आये नाथसों साखत भयभारी। कहआयो कीबी क्षमा निज ओर निहारी॥ समय सांकरे सुमिरिये समरथ हितकारी । सो सब विधि ऊपर करै अपराध बिसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहिबहिं सुधारी । तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निरारी ॥ ३४३ ॥

राग गौरी ।

मंगल मूरति मारुतनंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध विहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद। शिवा समेत शंभु शुक नारद ॥ चरण वंदि विनवों सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू ॥ वंदौं राम लषण वैदेही। जो तुलसी के परम सनेही ॥ ३४४ ॥

राग केदार ।

कबहुँक अंब अवसर पाइ । मेरियै सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अँग हीन क्षीन मलीन अघी अघाय । नाम लै भरों उदर इक प्रभु दासी दास कहाय ॥ बूझिहैं सो है कौन कहबो नाम दशा जनाय। सुनत राम कृपालु के मेरी बिगरिऔ बनिजाय ॥ जानकी जग जननि जनकी किये वचन सहाय । तरै तुलसीदास भव तव नाथ गुण गण गाय ॥ ३४५ ॥

राग केदार।

कबहुँ समय सुधि द्यायवी मेरी मातु जानकी ॥ जन कहाय नाम लेत हों पन चातक ज्यों प्यास सुप्रेम पानकी ॥ सरल प्रकृति आप जानिये करुणानिधान की ॥ निज गुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ बानि विसारणशील है मानद अमान की ॥ तुलसीदास न विसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुं गति नहिं आन की ॥ ३४६ ॥

राग रामकली।

ऐसी आरती राम रघुवीरकी करहि मन ॥ हरण दुख द्वंद्व गोविंद आनंद घन ॥ अचर चर रूप हरि सर्वगत सर्वदा वसत इति वासना धूप दीजै ॥ दीप निज बोध गत क्रोध मद मोह तम प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजै ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परम संतोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत शूल संशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दश वर्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रकासं ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली आर्पि नीराजनं जग निवासं ॥ विमल हृदि भवन कृत शांति पर्यङ्क शुभ शयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रमु स्वतंत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ यह आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिव देव ऋषि अखिल मुनि तत्त्व दरसी ॥ करै सोइ तरै परिहरै कामादि मल वदत इति अमल मति दास तुलसी ॥ ३४७ ॥

राग रामकली।

हरत सभ आरति आरती राम की ॥ दहत दुख दोष निर्मूल नीकाम की ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ॥ उड़त अघ विहँग सुन ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ॥ विमल विज्ञान मय तेज विस्तारणी ॥ मोह मद कोह कालि कंज हिम यामिनी ॥ मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥

प्रणत जन कुमुद वन इंदु कर जालिका । तुलसि अभिमान महिषेश बहु कालिका ॥ ३४८ ॥

राग जैतश्री ।

मन इतनोई या तनुको परम फल । सब अँग सुभग बिंदु माधव छबि तज सुभाव अवलोक एक पल ॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदय तिमिर हारी । कुलिश केतु यव जलज रेख वर अंकुश मन गज वशकारी ॥ कनक जटित मणि नूपुर मेखल कटि तट रटत मधुर वानी ॥ त्रिवली उदर गँभीर नाभिसर जहँ उपजे विरिंचि ज्ञानी॥उर वनमाल पदिक अति शोभित विप्र चरण चित कहँ करषै । श्याम तामरस दाम वरण वपु पीतवसन शोभा वरषै ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देत मोद मुद्रिक न्यारी ॥ गदा कंज दर चारु चक्र धर नाग शुंड सम भुज चारी । कंबु ग्रीव छबि सीव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा ॥ नव राजीव नयन शशि आनन सेवक सुखद विशद हासा ॥ रुचिर कपोल श्रवण कुंडल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजै ॥ ललित भ्रुकुटि सुंदर चितवन कच निरख मधुप अवली लाजै ॥ रूप शील गुण खानि दक्षि दिशि सिंधुसुता रत पदसेवा ॥ जाकी कृपा कटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुज दनुज देवा । तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यह स्वरूप अटकै । नाहिं तो दीन मलीन हीन सुख कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै ॥ ३४९ ॥

राग भैरव ।

राम राम रम राम राम रट राम राम जप जीहा ॥ राम नाम नव नेह मेहको मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल कूप सरित सर सागर सलिल निरासा ॥ रामनाम रति स्वाति सुधा शुभ सीकर प्रेम पियासा ॥ गरज तरज पाषान बरष पवि प्रीति परख जियजानै ॥ अधिक अधिक अनुराग उमग उर पर परमित पहिचानै ॥ राम नाम गति राम नाम मति राम नाम अनुरागी ॥ ह्वैगये हैं जे होहिंगे तेई गनियत त्रिभुवन बड़ भागी ॥ एक अंग मग अगम गवन कर

विलँब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनी अपनी दिशि निरु-पधि नेम निबाहैं ॥ ३५० ॥

भलो भली भाँतिहै जो मेरे कहे लागि है ॥ मन राम नाम सों सुभाव अनुरागि है ॥ राम नामको प्रभाव जान जूड़ी आगि है ॥ सहित सहाय कलिकाल भीरु भागिहै ॥ राग राम नाम सों विराग योग जागि है ॥ वाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागिहै ॥ पाइपरतोष तू न द्वार द्वार बागि है ॥ काम तरु राम नाम जोइ जोइ मांगि है ॥ तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खांगि है ॥ ३५१ ॥

ऐसेऊ साहब की सेवा सों होत चोररे ॥ आपनी न बूझ कहै को राड रोररे ॥ मुनि मन अगम सुगम माय बापसों ॥ कृपासिंधु सहज सनेही सखा आपसों ॥ लोकवेद विदित बडो न रघुनाथसो ॥ सभदिन सभ देश सभहीके साथसो ॥ स्वामीसर्वज्ञसों चलै न चोरी चार की ॥ प्रीति पहिचान यह रीति दरबार की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मनकी ॥ सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धामरे ॥ फलत सकल फल काम तरुनामरे ॥ बेचे खोटो दाम न मिलै न राखै कामरे ॥ सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा रामरे ॥ ३५२ ॥

मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई ॥ हौंतो साईं द्रोही पै सेवक हित साईं ॥ राम सों बडो है कौन मोसों कौन छोटो ॥ रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहैं राम को गुलाम हौं कहावों ॥ एतो बडो अपराध भौ न मन पावों ॥ पाथ माथे चढ़े तृण तुलसी जो नीचो ॥ बोरत न बारि ताहि जान अपनो सींचो ॥ ३५३ ॥

राग बिलावल।

आज महा मंगल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये । सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये ॥ सज सज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये ॥ नाचहिं

नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख वेग बोल गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये ॥ जातकर्म कर नक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये । दल रोचंन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये ॥ गावत चलीं भीर भइ बी-थिन बंदिन बांकुर बिरद बये । कनक कलश चामर पताक ध्वज जहिं तहिं वंदन वार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये । उमग चल्यो आनंद लोक तिहुँ देत सवन मंदिर रितये ॥ तुलसिदासपुनि भरेइ देखियत राम कृपा चितवनचितये ॥

सुभग सेज सोहत कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये ॥ बार बार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोर किये ॥ कबहु पौढि पय पान करावत कबहुँ कि राखत लाय हिये ॥ बाल केलि गावत हलरावत पुलकित प्रेम पियूष पिये । विधि महेश मुनि सुर सिहात सब देखत अंबुद ओट दिये ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघु-पति पै काहू तो पायो न बिये ॥ ३५५ ॥

राग सोरठ ।

ह्वैहो लाल कबहिं बडे बलि मैया । राम लषण भावते भरत रिपुदमन चारु चारयो भैया ॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगन बिरचि बनेहौं ॥ शोभा निरखि निछावर कर उर लाय वारने जैहौं ॥ छगन मगन अँगना खेलिहौं मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहौ कल बल वचन तोतरे मंजुल कह मा मोहिं बुलैहो । पुरजन सचिव राव रानी सभ सेवक सखा सहेली ॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ बेली । जा सुखकी लालसा लटू शिव शुक सन-कादि उदासी ॥ तुलसी तिहि सुखसिंधु कौशला मगन पैप्रेम पियासी ॥

राग बिलावल ।

पगन कब चलिहौ चारो भैया । प्रेम पुलकि उर लाय सुवन सभ कहत सुमित्रामैया ॥ सुंदरतनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरख निकैया॥दल तृण प्राण निछावर कर कर लेहै मात बलैया ॥

किलकन नटन चलन चितवन भज मिलन मनोहरतैया ॥ मणि खंभन प्रतिबिंब झलन छबि छलकहिं भर अँगनैया ॥ बाल विनोद-मोद मंजुल विधु लीला ललित जुन्हैया ॥ भूपतिपुण्य पयोधि उमग घर घर आनंद बधैया ॥ ह्वै हैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया । अनायास पाइहैं जन्म फल तोतरे वचन सुनैया ॥ भरत राम रिपुदमन लषण के चरित सरित अन्हवैया । तुलसी तब कैसे अजहुं जानवे रघुवर नगर बसैया ॥ ३५७ ॥

राग केदार ।

राम शिशु गोद महा मोद भरे दशरथ कौशिलहु ललक लषण लाल लिये हैं । भरत सुमित्रा लये कैकयी शत्रुशमन तन प्रेम पुलक मगन मन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित बाल भूषण बनाय आछे अंग अंग ठये हैं । चाहि चुचुकार चूंबि लालत लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज बये हैं ॥ घन ओट विबुध बिलोकि बरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मात पूत पुर परिजन विधि जानियत आयु भर एई निरमये हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरिहर छोहु जरठ जठेरिन आसिरवाद दिये हैं ॥ तुलसी सराहे भाग तिनके जिनके हिये डिंभ राम रूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ३५८ ॥

आज अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठे ठाढे पालने झूलतहु रोवत राम मेरो सो सोच सबही के ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घी के ॥ तदपि कबहुं कबहुंक सखी ऐसेही अरत जब परत दृष्टि दुष्ट ती के ॥ वेग बोल कुल गुरु छुवै माथे हाथ अमी के ॥ सुनत आय ऋषि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ जो सुमिरत भय भी के ॥ जासु नाम सर्वस्व सदाशिव पारवती के ॥ ताहि झरावत कौसिला यह रीत प्रीत की हिय हुलसत तुलसी के

राग आसावरी ।

माथे हाथ जब दियो ऋषि राम किलकनलागे । महिमा समुझ

लीला विलोक गुरु सजल नयन तन पुलक रोम रोम जागे ॥ लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि मन अनुरागे ॥ निरखि मातु हरषीं हिये आली ओट कहत मृदु वचन प्रेम केसे पागे ॥ तुम सुरतरु रघुवंश के देत अभिमत मांगे । मेरे विशेष गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमंगल भागे ॥ ३६० ॥

अमिय विलोकन कर कृपा मुनिवर जब जोये । तबते राम अरु भरत लषण रिपुदमन सुमुखि सखि सकल सुवन सुख सोये ॥ लाय सुमित्रा लिये हिये फनि मनि ज्योंगोये । तुलसीनिछावर करत मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोये ॥ ३६१ ॥

मातु सकल कुल गुरु वधू प्रिय सखी सुहाई । सादर सभ मंगल किये महि मनि महेश पर सबन सुधेनु दुहाई ॥ बोल भूप भूसुर लिये अति विनय बड़ाई । पूजि पांय सन्मानि दान दिये लहि अशीष सुन वरषै सुमन सुर साईं ॥ घर घर पुर बाजन लगीं आनंद बधाई । सुख सनेह तिहिं समय को तुलसी जानै जाको चोरो है चित चहुँ भाई ॥ ३६२ ॥

राग धनाश्री ।

या शिशु के गुन नाम बड़ाई । को कहि सकै सुनो नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समै चारु चारयो भाई । तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि कर अभय दनुज हति हरिहि धरनि गरु-आई । कीरति विमल विश्व अघ मोचन रहहि सकल जग छाई ॥ याके चरन सरोज कपट तजि जो भजिहै मनलाई । सोकुल युगल सहित तरिहै भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हर्ष न हृदय समाई । तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसकाई ॥ ३६३ ॥

राग बिलावल ।

अवध आज आगमी यक आयो । करतल निरखि कहत सब गुन गन बहुतन परचो पायो ॥ बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मण शंकर

नाम सुहायो । सँग शिशु शिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो ॥ पाँय पखारि पूजि दियो आसन असन वसन पहिरायो । मेले चारु चरन चारो सुत माथे हाथ दिवायो ॥ नख शिख बाल विलोकि विप्र तनु पुलक नयन जल छायो । लैलै गोद कमल कर निरखत उर प्रमोद अनमायो ॥ जन्म प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सीय स्वयंवर गायो । राम भरत रिपु दमन लषण को जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनवास रहस बस भयो सबको मन भायो । सनमान्यो महिदेव अशीसत सानँद सदन सिधायो ॥२६४॥

राग सारंग ।

प्रभु हौं सभ पतितन को टीको ॥ और पतित सभ दिवस चार के हौं तो जन्मत ही को । बधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना ही को ॥ कोउ न समरथ अघ करबेको खैंचि कहत हौं लीको । मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ २६५ ॥

हौं तो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनही तारचो हुतो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मान कर बैठो कै अबहीं निस्तारो । सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥२६६॥

राग गौरी ।

प्रानी को हरि यश मन नहिं आवै । अह निशि मगन रहै माया में कहु कैसे गुन गावै ॥ पूत मीत माया ममता सों यहि विधि आप बँधावै । मृगतृष्णा जिमि झूठो यह जग देखि तासु उठि धावै ॥ भुक्ति मुक्ति का कारन स्वामी मूढ़ ताहि बिसरावै । जन नानक कोटिन में कोऊ भजन राम को पावै ॥ २६७ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई । चंचल तृष्णा संग बसत है याते थिर न रहाई ॥ कठिन क्रोध घट ही के भीतर जिहिं सुधि सभ बिसराई । रत्न ज्ञान सभको हर लीना तासों कछु न बसाई ॥ योगी यतन करत सभ हारे गुनी रहे गुन गाई । जन नानक हरि भये दिआला तो सभ विधि बनि आई ॥ २६८ ॥

साधो गोविंद के गुन गावो । मानस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहे गँवावो ॥ पतित पुनीत दीन बांधव हरि शरण ताहि तुम आवो ॥ गजको त्रास मिट्यो जिहिं सुमिरत तुम काहे बिसरावो ॥ तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावो । नानक कहत मुक्त पथ एही गुरुमुख होय तुम पावो॥३६९॥

कोऊ माई भूल्यो मन समुझावै ॥ वेद पुरान साध मग सुनकर निमिष न हरि गुन गावै ॥ दुरलभ देह पाय मानस की बिरथा जन्म सिरावै । माया मोह महा संकट वनिता सों रुचि उपजावै ॥ अंतर बाहर सदा संग प्रभु तासों नेह न लावै ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो जिहिं घट राम समावै ॥ ३७० ॥

साधो राम शरण विश्रामा ॥ वेद पुराण पढ़े को यह गुण सुमिरे हरि को नामा । लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयन की सेवा ॥ हर्ष शोक परसै जिहि नाहिन सो मूरत है देवा । स्वर्ग नरक अमृत विष यह सभ त्यों कंचन अरु पैसा ॥ अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा । दुखसुख यह बांधे जिहिं नाहिन तिहि तुम जानो ज्ञानी ॥ नानक मुक्त ताहि तुम मानो यहि विधि को जो प्रानी ॥ ३७१ ॥

मनरे कहा भयो तैं बौरा । अह निशि औध घटै नहिं जानै भयो लोभ सँग हौरा ॥ जो तन तैं अपनो कर मान्यो अरु सुंदर गृह नारी॥ इनमें कछु तेरो रे नाहिन देखो सोच विचारी । रतन जन्म अपनो तैं हारयो गोविंद गति नहिं जानी ॥ निमिष न लीन भयो चरणन सों बिरथा औध सिरानी । कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावै॥और सकल जग माया मोह्या निरभय पद नहिं पावै३७२

राग धनाश्री ।

हरि हौं सभ पतितन को राऊ । को करि सकै बराबर मेरी सो धौं मोहिं बताऊ ॥ व्याध गीध गज गनिका पूतना तिनमें बड़ो जु और ॥ तिनमें बड़ो अजामिल पापी मैं उनको शिरमौर । जहँ

तहँ सुनियत यही बड़ाई मो समान नहिं आन ॥ यह सभ आज कान्ह के राजा मैं तिनमैं सुलतान । अबलौं तौ तुम बिरद बुलावत भई न मोसों भेंट ॥ तजो बिरद के मोहिं उधारो सूर गही कर फेंट ॥ ३७३ ॥

राग सारंग ।

हरि हौं सभ पतितन को नायक ॥ को करिसकै बराबरी मेरी और नहीं कोइ लायक ॥ जैसे अजामील को दीनो सो पाटो लिख पाऊं ॥ तो बिश्वास होय मन मेरे औरौ पतित बुलाऊं । यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो ब्योपारी ॥ बचन मान लै चलों गांठ दै पाऊं सुख अति भारी । अबके तो इतने लै आयो बेर बहुर की और ॥ पतित उधारन नाम सुन्यो जब शरन गही तक दौर । होड़ा होड़ी मनहिं भावते पाप किये भर पेट ॥ सबै पतित पायँन तर मेरे यहै तुम्हारी भेट । बहुत भरोसो जान तुम्हारो अब कीने भर भांडो॥लीजै वेगि निबेर तुरत ही सूर पतित कोटांड़ो३७४

राग आसावरी ।

श्याम बलराम गुन सदा गाऊं ॥ श्याम बलराम बिन दूसरे देव को सुपनहूं माहिं नहिं हृदै ल्याऊं ॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं । यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊं ॥ ३७५ ॥

राग सारंग ।

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार ॥ जाति पांति कोउ पूछत नाहीं श्रीपति के दरबार । श्रीभगवत सुमिरै जो हित कर तरै सो भौजल पार ॥ सूरश्याम गुन रट निशि वासर राम नाम निज सार

राग कान्हरा ।

बड़ी है राम नाम की ओट । शरण गये प्रभु काटि देतहै करत कृपा के कोट । बैठत सभी सभा हरिजू की कौन बड़ो को छोट ॥ सूरदास पारस के परसे मिटत लोह के खोट ॥ ३७७ ॥

राग धनाश्री ।

सोई बड़ो जो हरि गुन गावै । शौच पवित्र होत पद सेवा विन गुपाल ऊंच जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कितहूं जाय जन्म डहकावै । होय अटल जगदीश भजन ते सेवा तासु चार फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल विन भृंगी ज्यों दश हूं दिशि धावै । सूरदास प्रभु संत समागम आनँद अभय निशान बजावै ॥ ३७८ ॥

मन माधव को नेक निहारहि ॥ सुन शठ सदा रंकके धन ज्यों छिन छिनप्रभुहिं सँभारहि । शोभा शील ज्ञान गुनमंदर सुंदर परम उदारहि रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहिं ॥ जो बिन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भव पारहि । तौ जिन तुलसीदास निशिवासर हरि पद कमल विसारहि ॥ ३७९ ॥

नाचत ही निशि दिवस मरयो ॥ तवही ते न भयो हरि थिर जबते जीवनाम धरयो । बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरयो ॥ चर अरु अचर गगन जल थल में कौन स्वांग न करयो । देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याचत कोउ उबरयो ॥ मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तो न हरयो । थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुरयो ॥ अब रघुनाथ शरन आयो जब भव भय विकल डरयो । जिहिं गुण ते वश होहु रीझ कर सो मोहिं सभ बिसरयो ॥ तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन परयो ॥ ३८० ॥

माधोजू मो सम मंद न कोऊ । यद्यपि मीन पतंग हीन मति मोहिं न पूजे ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावकलोह नं जान्यो । देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महा मोह सरिता अपार महिं संतत फिरतबह्यो। श्रीहरिचरण कमल नौका तज फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भर मुख पकरयो । निज तालू गत रुधिर पान कर मन संतोष धरयो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रासित हो त्रासित

भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी ॥ जलचर वृंद जाल अंतरगत होत सिमिटि इक पासा । एकहिं एक खात लालच वश नहिं देखत निज नासा ॥ मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै । तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ३८१ ॥

राग धनाश्री ।

कृपासो कहां बिसारी राम ॥ जिहि करुना सुन श्रवत दीन दुख धावत हो तजि धाम । नागराज निज बल विचार हिय हार चरण चित दीन ॥ आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलंब न कीन । दिति सुत त्रास त्रसित निशिदिन प्रहलाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलित बल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रुति साखी । भूप सदसि सभ नृप विलोक प्रभु राख कह्यो नर नारी ॥ वसन पूरि अरि दर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी । एक एक रिपु ते त्रासित जन तुम राख्यो रघुवीर ॥ अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव भीर । लोभ ग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बंधु खल मार ॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार ॥ ३८२ ॥

काहे ते हरि मोहिं बिसारो । जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ संभारो ॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत श्रुति चारो । हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं बेदन वृथा पुकारो ॥ खग गनिका गज व्याध पांति जहिं तहिं हौंहू बैठारो ॥ अब किहिं लाज कृपा निधान परसत पनवारो फारो । जौ कलि काल प्रबल अति होतो तुव निदेश ते न्यारो ॥ तौ हरि शेष भरोस दोष गुन तोहिं भजते तज गारो । मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो ॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहां कछुचारो । नाहिन नर्क परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो ॥ यह बड़ त्रास दास तुलसी प्रभु नामहु पाप न जारो ॥ ३८३ ॥

राग आसा ।

आज बनी छवि भारी श्री राघो जी की । सहित जानकी रत्न

सिंहासन राजत अवध विहारी ॥ रवि शशि कोटि देख छवि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी । वदन मयंक ताप त्रय मोचन मंद हास अति प्यारी ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल अरु वनमाल सुधारी । बाहुविशाल विभूषण सुंदर कर गह शारँगधारी ॥ कटिपर पीत वसन की शोभा मोहत मदन निहारी । मुनि जन चरन सरोरुह सेवत ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सज कंचन की थारी । राम सेवक जय जय धुनि उचरत गावत पुर नर नारी ॥ ३८४ ॥

राग भैरवी ।

जानकी जीवन की बलिजैहों । चितकहैं राम सिया पद परिहरि अब न कहूं चलि जैहों ॥ उपजी उर प्रतीति सपने सुख हरि पद विमुख न ह्वैहों । मन समेत सभ तनके बासिन यही सिखावन देहों ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहों रसना और न गैहों । रोकिहों नयन विलोकत औरहिं शीश ईश पद नैहों ॥ नातो नेह राम सों करि सभ नातो नेह निबैहों । सेवक चर्ण शर्ण नित रहिहों मुहँ मांगे यह पैहों ॥ ३८५ ॥

आज बनी छवि भारी श्रीराघौजीकी । क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल धनुष बान कर धारी ॥ सुंदर भाल तिलक की शोभा अलकैं घूंघरवारी । नयन कमल वंदन की शोभा सयनन में रस न्यारी ॥ बायें अंग जानकी सोहै हनुमत आज्ञाकारी । गौर श्याम सुंदर तन सोहै चंद्रवदन उजियारी ॥ रतन जडित आभूषण सोहैं मोतियन की छवि न्यारी । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ३८६ ॥

अथ सीहरफी ।

अलफ आपणे आप नूं समझ पहिले की वस्तु है तेरड़ा रूप प्यारे ॥
बाझ आपणे आप दे सही कीते रह्यो विच्च कसूरे दे दुःख भारे ॥
होर लक्ख उपाय ना सुख होवी पुच्छ वेख सिआनड़े जग्ग सारे ॥

सुख रूप अखंड चैतन्य हैं तू बुल्लाशाह पूकारदे वेद चारे ॥ ३८७॥
झे वन्ह अःखी अते कंन दोवें गोसे बैठके बात विचारिये जी ॥
छडँ खाहिशां जान जहान कूड़ा कह्या आरफां दा हियें धारिये जी ॥
पैरीं पाय जंजीर बेखाइशी दे इस नफस नूं कैद कर डारिये जी ॥
जाण जाणदी नूं जान रूप तेरा बुल्लाशाह एउं खुशी गुजारिये जी ॥
ते तनक छिद्र नहीं विच्च तेरे जित्थे कःख ना इक्क समाउंदा ही ॥
ढूंड देख जहान दी ठौर कित्थे अन हुंदड़ा नजरीं आउंदा ही ॥
जैसे ख्वाब दा ख्याल होय सुत्यां नूं तरां तरह दे रूप दिखाउंदा ही ॥
बुल्लाशाह नां तुज्झ थी कुज्झ बाहर तेरा भरम तैनूं भरमाउंदा ही॥
से समझ हिसाब कर बैठ अंदर तूंहीं आसरा कुल्ल जहान दा है ॥
तेरे डिव्यां दिस्सदा सभँ कोई नहीं कोई ना किसे पछाणदा है ॥
तेरा ख्याल ही होय हर तरहि दिस्से जिवें बाल बैताल करजाणदाहै ॥
बुल्लाशाह फाहे कौन डाबरे नूं फसे आप आपे फाही ताणदा है ॥
जीम जीवणा भला कर मंनिया तैं डरें मरण थीं एही अरमान भारा । इक तूहीं तां जिंद जहान केरी घटाकास जिउं मिलै सभ माहिं न्यारा ॥ तेरा ख्याल ही होय हर तरां दिस्से आद अंत बाझों लगे सदा प्यारा । बुल्लाशाह संभाल तूं आय ताईं तूंतां अमर हैं सदा नहीं मरन हारा ॥ ३९१ ॥

हे हिरस हैरान कर सटँचो तूं तैनूं आपणा आप भुलाइयासू । बादशाहीयों सुटँ कंगाल कीता कर लःख थों कःख दखलायआसू ॥ मद मत्तड़े शेर नूं तंद कच्ची पैरीं पायके बंन बहायआसू । बुल्लाशाह तुमाशिड़ा होर देखोलै समुद्र नूं कुज्जड़ी पायआसू ३९२

खे खबर ना आपणी रखँदा है लग ख्याल दे नाल तूं ख्याल होया । ज़रा ख्याल नूं सुटं बेख्याल होसां जिमें होय अध जाग्या नांहि सोया ॥ तदों देख खां अंद्रों कौन देखे नहीं घास में झाप्पँ हाथी खलोया । बुल्लाशाह जिउं गले दे बिच्च गहिणा फिरे ढूडदा तांहिते नांहि खोया ॥ ३९३ ॥

चे चानणा कुल्ल जहान दा तूं तेरे आसरे होय बिवहार सारा ।

होय सभँ की आंख मों देखदा हैं तुझे सूझदा चांदना और अंधारा॥
नित जागणा सोवणा ख्वाब तीनों देख तेरे आगे होए कई वारा ।
बुल्लाशाह प्रकाश सरूप तेरा घट बद्ध ना होत है एक सारा ३९४ ॥

दाल दिल गीर ना होय मूले दीगर चीज नापैद तहकीक कीजै।
अव्वल जाय करोसुहबत आरफां दी सुख नतिन्हांदे आब हयातपीजै
चशम जिगर दे मलन हो रहे मूले नहीं सूझतातिनोंको साफ कीजे ॥
बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूतां एक आनंद मय सदा जीजै

जाल जरा भी शक्क ना रक्ख मन ते हो वेशक्क तूंही खुद खमस साईं । जिमैं सिंह भुलाय वल आपने नूं चरे घास मिल अजा मैं अजा न्याईं ॥ पिच्छों समझ वल गरज्या अजा मारी भयो सिंह का सिंह कछु भेद नाहीं । तैसे तोहि तरां कछु और धारी बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं ॥ ३९६ ॥

रे रंग जहान दे देखदा हैं सोहणे बाझ विचारचां दिस्सदे नी । जिवें होत हुब्बाब बहु रंग दे जी अंदर आब दे जरा विच्च फिस्सदे नी ॥ आब खाक आतश बाद भये कट्ठे देख अज्ज के कल्ल विच्च खिस्सदे नी । बुल्लाशाह संभाल के देख खां तूं सुख दुःख सभी कहु किस्सदे नी ॥ ३९७ ॥

जे जावणा आवणा नहीं ओथे कोह वांग हमेश अडोलहै जी । जिवें बदलां दे चले चद चलदा लगे बालकां नूं पड़ा भोल है जी ॥ चले मन्न इंद्रीदेह प्राणादिक वुह देखणे हार अडोल है जी । बुल्लाशाह संभाल खुशहाल हूजे ऐन आरफां ना एहोबोल है जी ॥

सीन सितम करना जान आपणी ते भुल्ल आपथी हार कुझ होवणाजी । सईयोलिख्या शेर चितेरचां ने सच्चजानके बालकांरोवणा जी ॥ जरामैल नाहीं देख भुल्लनाहै लगँ चिकँड़ोंजाण क्योंधोवणा जी । बुल्लाशाह जंजाल नहीं मूल कोई जाण बुझँके बुझँ खलोवणा जी ॥

शीन शुबा नहीं कोई जरा इसमें सदा आपणा आप सरूप है जी । नहीं ज्ञान अज्ञान की ठौर ऊहां कहां सूर में छाउं अरु धूप है जी ॥ पड़ा सेज ही माहिं मैं सही सोया कूड़ा सुपन का रंक अर

भूप है जी। बुल्लाशाह संभाल जब मूल देखा ठौर ठौर में आप अनूप है जी॥ ४०० ॥

स्वादसबर करना आय वणीउत्ते देखरंग ना चित्त डोलाइये जी। सदा तुखम दी तरफ निगाह करनी पात फूल फल ओर ना जाइये जी॥ जोई आय अर जाय टिक रहे नाहीं तासों कौन दानिश चित्त लाइये जी। बुल्लाशाह संभाल खुदखंड चाखी जिसे विषे फल तिसे क्यों खाइये जी॥ ४०१ ॥

ज्वादजकर अरफिकरकोछोड़ दीजैकीजै नहींकछु यही पछानणा है। जासों उठ्याँ ताहीं के बीच डारो हो अडोल देखो आप चानणा है॥ सदाचीज नापैदही देखियेजी यहीयही कर जीयमैं आनणा है॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं तां सदा आनंद मय जानणा है॥

तोयतौर महबूबदा जिन्हां डिठ्ठातिन्हा दूई तरफों मुखमोड्याई॥ काईलटक प्यारेदी लुट्टलीते हटे नांहि ऐसा जीउ जोड़ियाई॥ अठ्ठो पहिर दिवान मस्तान फिरदे ओनां पैर आलूद ना बोडियाई॥ बुल्ला-शाह उह आप महिबूब होये शोक यारदे कुफर सभ तोडियाई॥

जोय जुदा नहीं तेरा यार तैंथीं फिरें ढूंडदा किसनूं दस्स मैनूं॥ पहिले ढूंडणे हार नूं ढूंड खां जी परतःख घरे विच रस्स तैनूं॥ मत तूंहीं होवे आप यार सभ दा फिरें ढूँढदा जंगला विच्च जेनूं॥ बुल्लाशाह तूं आप महिबूब प्यारा भुल आप थीं ढूंडदाफिरें केनूं॥

ऐन ऐन ही है आप विना नुकते सदा चैन महबूब दिलदार मेरा॥ इकँ वार महबूब नूं जिन्हां दिठ्ठा उह तां देखणेहार है सभ केरा॥ उसतों लःख बिहिशत कुर्बान कीते पहुतामाहिल वेगमचुकाय झेरा॥ बुल्लाशाह हरहाल विचमस्त फिरदे हाथी मत्तड़े तोड़ जंजीरजेरा॥

गैन गमने मार हैरान कीती अठ्ठ पहिर प्यारे नूं लोड़दी सां॥ मैनूं खावणा पीवणा भुल्ल गया रब्बा मेल जानी हत्थ जोड़दीसां॥ सैयां छडँ गैयां मैं इकल्लड़ी नूं अंग साक नालों नाता॥ तोड़दी सां॥ बुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता तां मैं सुत्तडी अंग नां मोडदी सां॥ ४०६ ॥

फे फिकर गिया सैयो मेरीयो नी मैंतां आपणे आपनूं सही कीता कूड़ी देह सों नेह चुकाइयाई खाक छाणके लाल नूं टोल लीता ॥ देख धूएँ दे धौलरे जगँ सारा सुट्ट पाया है जीया तें हार जीता ॥ बुल्लाशाह अनंत अखंड सत्ता लखँ आपनूं आब हयात पीता ॥ ४०७ ॥

काफ कौन जाणे जान जाणदी नूं आप जाणे हार इह कुल्ल दा है ॥ परतःष थीं आद परमाण जेते सिद्ध कीते इसदे नहीं भुल्लदा है ॥ नेत नेत कर बेद पुकारदे नी नहीं दूसरा एसदे तुल्लदा है ॥ बुल्लाशाह जब आप बेचार देखा सदा स्वयं प्रकाश एह झुल्लदा है ॥

गाफ़ गुजर गुमान ते समझ बहिके अहंकार दा आसरा कोय नाहीं । बुद्ध आद संघात जड़ देखीये जी पड़ा काठ पषान जिउं भूमि माहीं ॥ आप आत्मा ज्ञान सरूप सत्ता सदानहीं फ़ुरदा खड़ा एक जाहीं । बुल्लाशाह विवेक विचार सेती खुदी छोड़ खुद होय के लहे नाहीं ॥ ४०९ ॥

लाम लगँ आंखें जाय कहां सोया जाण बुझँके दुःख क्यों पावना है ॥ जरा आप नांहटें बुरि आइयां तों कढँ मस्सले लोक सुनावणा हैं ॥ कागविष्ठ ज्यों जानके तजे संता विषे मूढ़ क्यों चित्त लुभावना हैं ॥ बुल्लाशाह उह जानणेहार दिलदी करें चोरीयां साध कहाउनां हैं ॥ ४१० ॥

मीमसदा मौजूद हरजाय मौला तिसे देख क्या भेषबनाइयासू ॥ जिवेंएकही तुखम बहु तरां दिस्से तिवें आपणा आपफैलायआसू ॥ माँहि आपणे आपदे खेल करदा नरनार होय चित्तलुभायआसू ॥ बुल्लाशाहनां मूलथीं कुझँहोया सोई जाणदा जिसे जणायआसू ४११ ॥

नून नाम अर रूप उठाय दीजे पीछे अस्ति अरु भांति प्रिय साच है जी । जोई चित्त की चितवनी बीच आवे सोई जान तहकीक कर काच है जी ॥ तीन बुद्ध की वृत्ति का तूंही साक्षी तूंही जाण निज रूप मैं राच है जी । बुल्लाशाह तूं भूप अचल्य बैठा तेरे आगे परकिर्ति का नाच है जी ॥ ४१२ ॥

वाउवखत इहहत्थना आवणाई इकँ पलकदे लख्य करोड देवें ॥ जतन करें तां आप अचाह होवें तूं तां पहिरअट्ठे विषय विष सेवें ॥ कूड वैपार कर कूड सिर मेलदा चिंता माणि दे जढ़ कच्च लेवें ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं अनंत लघु देह मैं कहां मेवें ॥४१३॥

हे होय हर तरां दिलदार प्यारा रंगा रंग दा रूप बनाय आई ॥ कहूंआपकों भूल रंजूल होया ऊरध अरध भरम होय संतायआई ॥ जदों आपणे आप मैं प्रगट होया निजानंद के माहिं समायआई ॥ बुल्लाशाह जो आद था अंत सोई भ्या नीर मैं नीर मिलायआई ॥

अलफ अज्ज बणया सभों चज्ज मेरा शादीगमी थीं पार खलोय आमैं ॥ भया दूर भ्रम मर्म सभ पाइयाई भय कालदा जिय थीं खोय आमैं ॥ साध संग की दया थीं भया निर्मल घट घट चैतंन सुख सोयआ मैं ॥ बुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता जो आदथा अंत फिर होयआ मैं ॥ ४१५ ॥

येयार पाया सैयो मेरीयो नी मैंतां आपणा आप गंवायकेजी ॥ रही सुधँनां बुधँ जहान केरी थक्की बिरति आनंद मैं जायके जी ॥ अट्ठो पहर विश्राम नां काम कोई दूई ज्ञान की भाय जलायके जी ॥ बुल्लाशाह मुबारकां लख्य देवो भई जान जानी गल लायके जी ॥

छंद ।

दूधपिये सिद्धसाध बालकबच्छियां । कामरखे सिध साध खोजे खस्सियां ॥ असनान करे सिध साध मेंडक मच्छियां । नानक मन संभाल सब गल्ल अच्छियां ॥ ५१७ ॥

गजल ।

खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है ॥ इखलाक सब से रखना तसखीर है तो यह है ॥ सभकाम अपना करना तकदीर के हवाले । नज़दीक आरफो के तदबीर है तो यह है ॥ ४१८ ॥

अथ बारा मासा ।

चेतर चित विच समझ प्यारे दुनिया कूडा खानाई ॥ जिन्हां ना

ल तूं लाई दोस्ती उन्हां ने भी चल जानाई ॥ सभदे सिर पर काल कूकदा क्या राजा क्या रानाई ॥ मोतीराम कहे समझ प्यारे जग विच रहण नमाणाई ॥ ४१९ ॥

विसाख विसारयो नामसाईं दा आकड़ आकड चलनाहैं ॥ खाय खुराकां पहन पुशाकां जमदा बकरा पलना हैं ॥ चार दिनां दे रह णे कारण महल माडियां मलना हैं ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत खाक विच रलना हैं ॥ ४२० ॥

जेठ माया दा मान न करिये माया काग बनेरे दा ॥ पल विच आवे छिन विच जावे सैर करे चौफेर दा ॥ इक मन होके नाम न जप्या क्या नफा दम तेरे दा ॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत काल जम घेरेदा ॥ ४२१ ॥

हाड़ होश कर दिल विच प्यारे काल नगारा बजदाई ॥ यह दु- नियां भांडे की नाईं जो घड्या सो भजदाई ॥ माया जोडी लाख करोडी अजे न मूरख रजदाई ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे माण ताण दिल तजदाई ॥४२२॥

सावण शौक माया दा कीता साईं दा शौक न कीता तैं । जिस साहिब तैनूं पैदा कीता उसदा नाम न लीता तैं ॥ अपने हत्थीं जा ण बूझके जहर प्याला पीता तैं ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अकारथ कीता तैं ॥ ४२३ ॥

भादों भार पिया सिर तेरे किस विध पार उतारेंगा । ढूंगी नदी कहर दियां लहरां कंढे बैठ पुकारेंगा ॥ ओथे तेरा कोई न बोली रो रो धाहीं मारेंगा । मोतीराम तूं समझ प्यारे जितके बाजी हारेंगा ॥ अस्सू ओड़क चलना प्यारे चलो चली दाडेराई । सबका बासा जंगल होसीजो कोई भलाभलेराई ॥ साथतेरे कोई ना जासी क्यामेरा क्या तराई । मोतीराम कदी समझ प्यारे कोई दिनदा रैन बसेराई४२५॥

कत्तककिसमत भली उन्हांदी जिन्हां नाम जप लीता ई सोई अमर जगत् विच होए जिन्हां साध सँग कीताई ॥ रामनाम दा प्रेम

पियाला भर के कदी न पीताई। मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अमोलक बीताई॥ ४२६॥

मगहरमस्त होया बिच दिल दे आप खुदाय कहावें तूं। सभदे सिरपर कर तदबीरां सभ पर हुकम चलावें तूं॥ ओथे तेरा कोई ना बेली रो रो हाल गँवावें तूं। मोतीराम कदी समझ प्यारे राह अवल्लडे जावें तूं॥ ४२७॥

पोह पियारा याद न की न कीता कीती गल्ल नकारी तैं। ऐसा नाम अमोलक प्रभ दा नां लीता इक वारी तैं॥ बार बार समझा रहे तैनूं इक्क ना ज़रा बिचारी तैं। मोतीराम कदी समझ प्यारे जित के बाजी हारी तैं॥ ४२८॥

माघमाणना करिये बंदे नाल गरीबी रहणाई। जोकोई आखे गल्ल बधीकी ओह भी सिर ते सहणाई॥ऊंचे होके मूल न बहिये नींचे होके रहणाई। मोतीराम कदी समुझ प्यारे बाजी नूं जित लैणाई॥ ४२९॥

फागुनपकडचोजदो जमां ने रती न जावेपेशतेरी। राम भुलाया क्याफलपाया पच्छोतावेंगाबहुबेरी॥ बारबारसमझा रहे तैनूं साहि बदेदरहो ढेरी॥ मोतीराम कदी समझप्यारे अब लगाय नां कछु देरी

राग आसा।

है कोई दम की बात जगत में हर को सुमिर दिन रात॥ उस बिन नहीं तेरा पार उतारा क्यों नहीं हरि गुन मात॥ चार पहर नींदर में बीते जाग होई परभात॥ यह दुनियां है रैन बसेरा जो आवत सो जात॥ काम क्रोध तज लोभ प्रानी चारों वेद बखात॥ धन योवनका मान न करिये चार दिननकी बात॥ कोई जात नहिं संग तिहारे मात पिता क्या भ्रात॥ माया लोभ में नित ही भरमत काल लगाई घात॥ रामकृष्ण सुमिरो निसि बासर छोड़ छाड़ पछ पात॥ रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात॥ रूप चंद हैं वे नर मूरख जिन्हें न हरि यश भात॥ ४३१॥

भैरवी ।

प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगम अपार । खंड ब्रह्मंड रचे सभ तेरे कोउ न पावत पार ॥ सुर नर मुनि जन खोजत हारे पढ़ पढ़ वेद विचार । प्रभु तेरी० ॥ अगम निगम सभ तोहिं पुकारें हे प्रभु सिरजन हार । चंद सूरज दोउ दीपक कीने अगम जोत निरंकार ॥ प्रभु तेरी० । अनहद शब्द बजत झंकारा संतन प्राण अधार ॥ नाना रूप धरयो सभ अंतर निरगुण सगुण अकार ॥ प्रभु तेरी ० ॥ दस अवतार धरे या जग में हैं सभ मुक्त दुआर ॥ रूपचंद सुमिरो हित चित कर निशिदिन कृष्ण मुरार ॥ प्रभु ० ॥

प्रभु मेरी नाउ उतारो पार ॥ बलिहारी नंद कुमार ॥ भव सागर संसार अगम है तिरछी जाकी धार ॥ पार उतरना कठिन भयो है सूझत वार न पार ॥ प्रभु० ॥ लोभ मोह के बादल उमडे भयो महा धुँधकार ॥ काम क्रोध पवन संग लीने बरसत है हंकार । प्रभु० ॥ डोलत है यह नाव पुरानी भव सागर मँझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लरजत जिया हमार ॥ प्रभु ० ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे चढ़ाया सभ परवार ॥ इस बेड़े को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ प्रभु० ॥ महा मली मैं कपटी कामी तुमहो बखशनहार ॥ रूपचंद निज ठौर नहीं कोउ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु० ॥ ४३३ ॥

राग जंगला ।

इकदिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होसी साहिब हजूर ॥ कूड़ा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत माया छोड़ गरूर ॥ क्यों सोया है जाग प्यारे ॥ रैन गई छिपे सब तारे ॥ मंजिल भारी चलना दूर ॥ कंकर चुन चुन महल उसारे । झूठे हैं यह सभ बिस्तारे ॥ इक दिन होसी चकनाचूर ॥ मात पिता अर घर की नारी ॥ कोई नहीं दुख बाँटन हारी ॥ सुख के साथी न हो मसरूर ॥ दौलत माया जोड़ खजाने ॥ इकट्ठे कीने जोर धिगाने ॥ यह जग किशती का है पूर ॥ क्या ऊंच नीच अमीर फकीर ॥

सबपर चलती है तकदीर ॥ इक दिन जम मुंह देसी धूर ॥ यह दुनिया सुपने की नाई ॥ जो आया सोही चल जाई ॥ एक रहेगा प्रभु का नूर ॥ इस दम दा कुछ करलै भाई ॥ हरि के बिन नहीं और सहाई ॥ घट घट आप रह्या भर पूर ॥ काम क्रोध सभ तजदे प्रानी ॥ झूठी मति क्यों दिल में ठानी ॥ आखर होवेगा मजबूर ॥ जब जम आवे पकड़ लेजावे ॥ दौलत दुनिया पल में छुड़ावे ॥ नहीं चलेगा कुछ मकदूर ॥ कहत रूप चंद सुनहो प्रानी ॥ यह दुनिया है बिलकुल फानी॥कृष्ण चरन का हो मशकूर॥४३४॥

हरि नाम कभी ना पुकारा ॥ गया बिरथा जनम है सारा ॥ मोह माया में उमर गुजारी ॥ नित धन के रहे ब्योपारी ॥ और दुरलभ नाम बिसारा ॥ किया दिन को मेरा तेरा ॥ सुख नींद ने रैन को घेरा ॥ हँस बोला काल नगारा ॥ गया बिरथा० ॥ थे बार बार क्या कहते ॥ जब गरभ में थे दुख सहते ॥ ना भूलूंगा कभी मुरारा ॥ गया० ॥ कीनी धरती ज़र से पोली ॥ झट मौत आसिर पर बोली ॥ है जग से तेरा किनारा ॥ गया० ॥ किले महल मकान बनाये ॥ और बाग बगीचे लगाये ॥ संग गया न बुरज मुनारा ॥ किस बात पै है मन भूला ॥ किस करनी पै है फूला ॥ तज मोह कुटुँब संसारा कुछ करलै अब भी भाई ॥ नहीं हरि बिन कोई सहाई ॥ नहीं साथी कोई प्यारा ॥ मानस देह नहीं नित मिलती ॥ नहीं बाग बहार नित खिलती ॥ निकट आयाहै जम का द्वारा इस कालने हैं सब घेरे ॥ रुख रावन कंस के फेरे ॥ दुरयोधन भीम को मारा ॥ गये कौरव पांडव राजे ॥ जग डंका था जिन का बाजे ॥ इस काल ने पकडा पछाड़ ॥ गर्ब कारूं जैसे के तोड़े ॥ जिन लाख खजाने थे जोड़े ॥ औरंगे को बडा हंकारा ॥ नौशेरवाँ हातमताई ॥ सखावत जिन थी बनाई ॥ कर जग में गये चमकारा ॥ श्री विक्रम भोज करनथे ॥ जो नित ही धरम की शरन थे ॥ कर गये धर्म जयकारा ॥ हो ध्यान न जबतक सगुण का ॥ कभीज्ञान

नहीं होता निर्गुण का ॥ मन किया न न सोच विचारा ॥ कर अबहीं मन हरिसेवा ॥ तो पावे ज्ञान हरि मेवा ॥ हो रूप तेरा निस्तारा ४३८ ॥

प्रभाती।

छोड़ विस्तरा उठरे गाफल अमृतवेला छाया रे ॥ सगरी रैन नींद में काटी बिरथा समां बितायारे ॥ जिस माया के मान ने मूरख सुख से तुम्हें सुलायारे ॥ अंध घोर में उस माया ने तुमको पकड़ गिरायारे ॥ आध भाग तेरी आयू का बाला पन में भाया रे ॥ दूजा भाग गयो मोह माया मे कुटिल कुटुँब जो पाया रे ॥ चलता है अब भाग तीसरा बृद्ध हुई तेरी काया रे ॥ आया निकट द्वारा जम का नहीं मूरख समझाया रे ॥ यह दुनिया है पलक बसेरा जिसपर ठाट जमाया रे ॥ क्या भरवासा है सासों का दम आया ना आया रे ॥ माटी होगी पल छिन में सब जब जम तुझे बुलाया रे ॥ सभी ठाट ह्यां पड़ा रहेगा जिससे मन भटकाया रे ॥ नरक घोर नें तडपेंगे वुह जिन हर को नहीं ध्याया रे ॥ इस्त्री और संतान पियारी जिससे मोह बढ़ाया रे ॥ कह कह अपना उन्हें आज्ञानी नाहक जिया जलाया रे ॥ अपना तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक बार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक प्रलोक में अहकर उसने मानस जन्म सुधाया रे ॥ ४३६ ॥

ग़ज़ल।

तुम्हें धनबाद ऐ ईश्वर तेरे सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे बेअंत सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोर से जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल और कहीं खुश्की कहीं पहाड़ों को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्मे जो धरती पर सिंगारे हैं ॥ सतूं बिन अरश कायम कर लगाया रंग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड़ फूलों के किये तकसीम

गुलशन में। अयां कुदरत है हरगुल से अजब तेरे नजारे हैं॥ हुई कायम य जब हस्ती फना को भी दी तब शक्ती। किसी की बस नहिं चलती जो रावन जैसे मारे हैं॥ किसे ताकत दुनीचंद उसकी लीलाजो करे वर्णन। रिषीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं॥ ४३७॥

जगत सभ गैर है लोको। य कूड़ी सैर है लोको॥ य जग पल छिन क मेला है। सफर पड़ना इकेला है॥ गई रैन अब सवेला है। जपो राम अब भी वेला है॥ तजो मोह माया तुम भाई। जनम बिरथा ही सभ जाई। चले नहिं सँग पिता माई॥ य जग सुपने की है नाई। तू क्यों मस्ते में घेरा है॥ करे नित मेरा तेरा है। जहां पर पडना फेरा है॥ कठिन रस्ता अँधेरा है॥ जो प्रभुको मन से ध्यातेहैं। उसीके गीत गाते हैं॥ व वैकुंठों में जाते हैं। अटल पदवी को पाते हैं॥ वही साकार सरगुन है। उसीका नाम निरगुनहै॥ नहीं कोई भी उस बिन है। उसीकी रात और दिन है॥ जहांपर उसको ध्याया है। वहीं मौजूद पाया है॥ शरण अहकर भी आया है। यही अब जी में भाया है॥ ४३८॥

पीलो।

हर से भी मन प्रीत लगाले। जिंदगीका कछु नफा कमाले॥ यह जीना है चार दिहाडे। किस हस्ती पर पाउँ पसारे॥ इस दिहका नहिं कुछ भरवासा। काहे दर दर फिरत पियासा॥ जैसा मोह माया में कीना। अंत समय वैसा दुख दीना॥ मुनि जन कर कर गये पुकारा। ऐसाही जीवन संसारा॥ नये साल नित खुशी मनाई। खुशी नहीं यह उमर घटाई॥ जिस खातर जग ठाट बनावे। आखिर कुछ तेरे साथ न जावे॥ हाजिर होगा जब जम द्वारे। तुझे मिलेंगे संकट भारे॥ समझ सोचकर समां बिताओ। अंत समै पूरा सुख पाओ॥ दुनीचंद हरि प्रीत सहारे। कर मझँधार से नाव किनारे॥ ४३९॥

प्रभाती ।

क्यों सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है । बहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है ॥ किस कारन तुम बने बिदेसी क्यों गफलत बुध मारी है । नींद त्याग कर उत्तम सौदा सफर न बारंबारी है ॥ नेक अमल हरि नाम नफे विन सब बिरथा जर जारी है । मोह माया के जाल में पड़ना जिल्लत और खुवारी है ॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है । विन खरीद हरि रस सौदाके जीती बाजी हारी है ॥ मेरी मेरीमें मन मूरख आयू कट गइ सारी है ॥ बिन सत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है ॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है । रूप विना हरि नाम कमाई कोई नहिं उपकारी है ॥ ४४० ॥

राग गजल ।

जप जाप मन हरि नामका सब दिन गया अब शाम है ॥ जग जाल को तज अब भी मन आया अजल का प्याम है । उमर भर लालच में पडकर मालोजर कट्ठा किया ॥ काल जम घेरेगा जब तब मालोजर किस काम है । सत करम को छोड कर नित झूठको करता है प्यार ॥ सोच कर ले अब भी प्यारे नरक का यह दाम है । खुशी हो क्यों अकडता है बांकपन और फूले तन ॥ दूध इसको समझ मत मन जहर का यह जाम है । मेरी मेरी करके दिन भर रैन मस्ती में कटी ॥ ऐसे ही आयु घटी लीया न पल भर नाम है । गांव चक जागीर पाकर मुलक के हाकम बने ॥ सत हुकम के खौफ बिन यह सभ हकूमत खाम है । क्यों सोया है होके गाफल नर्म सुंदर सेज पर ॥ जंगलों में आग पर इक दिन तेरा विश्राम है । क्यों हुआहै मस्त जालम क्यों बनाताहै मकां ॥ बिन कमाई नाम बिरथा महल माडी बाम हैं ॥ काम क्रोध और लोभ तीनों नरक के रस्ते हैं । यह खास गीता में श्रीमुख से कहा घनश्यामहै ॥ हिरस सखती और तकब्बर छोडदो बिलकुल इन्हें ॥

कारूं और शद्दाद का नाम अबतलक बदनाम है ॥ रहम हमदरदी सखावत है फरज इनसान का ॥ हातम और नौशेरवां का जगमें चर्चा आम है ॥ शैदा होके हुसन पर खालकको बैठा है भुला। अजलका है सभ य पंजा क्यापरी गुलफामहै ॥ अपनी अपनी गरज के हैं इस्त्तिरी फरजंदसभ ॥ कामआनाअंतके दिन एक प्यारा राम है ॥ कर गुनाह नित भागता है हाकमों के खौफ से ॥ मगर हाकम सच्चा सभ कुछ देखता सभ धाम है ॥ हैं जो भूले नाम हक वह जिंदों में हरगिज नहीं ॥ नाम भक्तोंका है कायम जगका जब तक क्याम है ॥ दस्तबस्ता हक से है अहकर की नित यह इल्तिजा। रहम से कर कर्म मुझपर हर दफा परनाम है ॥ ४४१ ॥

हमें इक दिन फिर आखर को उसी घर सभको जाना है। समझ लो बूझ लो दिल में यहाँ किसका ठिकाना है ॥ करो मत वैर तुम हरगिज अगरचिह जोरो ताकत है। चलो सभ मिलके आपस में कि यह चंदे जमाना है ॥ कोई दम का य मेला है य क्यों आपस के झगड़े हैं। नहक यह मुफत में हर इक को दुश्मन क्यों बनाना है जपो निशिदिन हरीहर को कहे गिरिधर जो हित चाहो। नहीं तो आप पछताओ मुझे केवल चिताना है ॥ ४४२ ॥

राग जंगला ।

मेरे मन राम को नाम अधारा। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निशिदिन करत विचारा ॥ जाके जपत कटत दुख दारुण उतर जात भवपारा। शबरी गीध अजामिल से खल तिनहूं को प्रभु तारा ॥ जिन जिन शरन लीन संकट में तिनको आप सुधारा। नाम महातम को बरनैं सभ पाप कटन को आरा ॥ प्रेम लाय जो ध्यान लगावे सो पावे सुख सारा ॥ आयो तब पद शरण नाथ मैं औगुण अमित अपारा। गिरिधर पार उतारो मोको लैहों नाम तुम्हारा ॥ ४४३ ॥

भ्रातृ गण यह उपदेश हमारा। वेद शास्त्र पुराण निगमागम सभ ग्रंथन को सारा ॥ रघुवर चर्ण शर्ण होय उत्तरो भव सागर से

पारा । जाहि वेद कहैं शुद्ध ब्रह्म सो दशरथ राज दुलारा ॥ सर्व व्यापी सर्व अंतरयामी सर्व जगत आधारा । छोड़ो सकल कुतर्क कपट मन जो होवे निस्तारा । सत्यनाम इक श्रीरघुवर का मिथ्या सभ संसारा ॥ ध्रुवप्रहलाद आद भगतन हित होतअकारमकारा । दीन दयाल स्वामी सोई भये मनुज अवतारा ॥ ४४५ ॥

राग पीलो ।

राम विना तेरा कोई ना सहाई । रात दिना तू सुमिरले भाई॥यह जग है कोइ दिन का मेला क्यो झूठी है प्रीति लगाई । भाई बंधु कुटुंब छोड़ कर तनहा जावेगा तू भाई ॥ कछु भी तेरे सँग चलना नाहीं महल माडियां खूब बनाई ॥ इक पल भी हरि नाम न लीन्हा आयु आपनी वृथा गँवाई ॥ कोईहै सुखमें दुख में है कोई यहरचना है राम बनाई ॥ माधव रहु ईश्वर की शरणी जो परलोक में होसुखदाई ॥ ४४५ ॥

गजल ।

तूगोविंदहै और तूगोपालहै । तूहीकृष्ण लाला तूनंदलालहै ॥ एकै रूप तेरा जगत में समाया । पछावां तेरा कहीं ढूँढे न पाया ॥ मैं ढूँढूं किधर नाथ देखू तुझे । कृपा करके अब दर्श दीजो मुझे ॥ मैं अनाथ हूं और तू नाथों का है नाथ । नाम अपने की लाज पालो मेरे साथ ॥ तेरे चरनो में नित मेरी हो नमाम । गंगाविष्णु की विनती है सुदाम ॥ ४४६ ॥

राग जंगला ।

नर अचेत पाप से डर रे ॥ दीन दयाल सकल भय भंजन शरण ताहि तूपड़रे ॥ वेदपुराण जिसका गुण गावें ताको नामहिये में धररे ॥ पावन नाम जगत में हरि को सुमिर सुमिर पापां मल हर रे ॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछू उपाउ मुक्ति का कर रे ॥ नानक कहत गाय करुणामय भवसागर से पार उतर रे ॥ ४४७ ॥

बिरथा कहों कौन सों मन की ॥ लोभ ग्रस्यो दशहूं दिशि

धावत आशा लागी धन की ॥ सुख के हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जन की ॥ द्वारे द्वारे श्वान ज्यों डोलत नहिं सुधि राम भजन की ॥ मानस जन्म अकारथ खोयो लाज न लोग हँसन की ॥ नानक हरि यश क्यों नहिं गावत कुमति विनाशे मन की ॥४४८॥

राग सोरठ।

भूल्यो मन माया उरझायो ॥ जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बँधायो ॥ समझ न पड़ी विषयरस राच्यो यश हरि को बिसरायो ॥ सँग स्वामी सो जान्यो नाहीं बन खोजन को धायो ॥ रत्न राम घट ही के भीतर ताको ज्ञान न पायो ॥ नानक जन भगवंत भजन विन बिरथा जन्म गँवायो ॥ ४४९ ॥

राग भैरवी।

हरि यश रे मन गाय ले जो संगी है तेरो ॥ अवसर बीत्यो जातहै कहा मान ले मेरो ॥ संपति धन रथ राज सों अति नेहु लगायो ॥ काल फांस जब गल पड़ी सभ भयो परायो ॥ जान बूझ के बावरे तैं काज बिगारयो ॥ पाप करत सकुच्यो नहीं नहिं गर्व निवारयो जिहि विधि गुरु उपदेशिया सो सुन रे भाई ॥ नानक कहत पुकार के गहु प्रभु शरनाई ॥ ४५० ॥

हरजू राख लेहु पति मेरी ॥ काल को त्रास भयो उर अंतर शरण गही प्रभुतेरी ॥ भय मरने को बिसरत नाहीं तिहि चिंता तनजारा॥ किये उपाय मुक्ति के कारन दह दिश को उठधाया ॥ घट ही भीतर बसे निरंतर ताको मर्म न पाया ॥ नाहीं गुण नाहीं कछु जप तप कौन कर्म अब कीजै ॥ नानक हार पर्यो शरणागत अभय दान प्रभु दीजै ॥ ४५१ ॥

अब मैं कौन उपाय करूं ॥ जिहि विधि मन को संशय चूके भव निधि पारपरूं ॥ जन्मपाय कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरूं गुरु मत सुन कछुज्ञान न उपज्यो पशुवत उदर भरूं ॥ कहु नानक प्रभु बिरद पछानो तब हौं पतित तरूं ॥ ४५२ ॥

राग भैरव ।

मन राम सुमिर पछतायगा॥पापी जीउड़ा लोभ करत है आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गँवायो माया भरम भुलाय गा ॥ धन योवन का गर्व न करिये कागज सा गलजायगा ॥ सुमिरन भजन दया नहिं कीनी ता मुख चोटा खायगा । धर्मराय जब लेखा मांगे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो साध संग तर जायगा ॥ ४५३ ॥

राग भैरवी ।

हरि से लाग रहो रे भाई । तेरी बिगड़ी बात बनजाई ॥ रंका तार्‌यो बंका तार्‌यो तार्‌यो सधन कसाई । सुआ पढ़ावत गनिका तारी तारी है मीरा बाई ॥ दौलत दुनिया माल खजाने बधिया बैल चराई । जबही काल का डंका बाजे खोज खबर नहिं पाई ॥ ऐसी भक्ति करो घट भीतर छोड़ कपट चतुराई । सेवा बंदगी और अधी-नता सहज मिलैं रघुराई ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो सतगुरु बातबताई । यह दुनिया दिन चार दिहाड़े रहो राम लव लाई ४५४॥

राग जंगला ।

कोऊ हरि समान नहिं राजा ॥ यह भूपति सभ दिवस चार के झूठे करत दिवाजा । जन तेरा सो कभूं न डोले तीन भुवन पर छाजा ॥ चेत अचेत मूढ़ मन मेरे करो हरी के काजा । हाथ पसार सके नहिं कोई बोलन सके अंदाजा ॥ कहत कबीर संशय भ्रम चूका ध्रुव प्रहलाद निवाजा ॥ ४५५ ॥

राग भैरवी ।

सभ सुख राम नाम लव लाई । नामविना सुख सकल वृथाई ॥ ना सुख होवत मूंड मुंडाई । ना सुख घर घर अलख जगाई ॥ ना सुख है अपने घर माहीं । ना सुख भगवें भेष बनाई ॥ ना सुख वन में ना सुख धनमें नासुख चिंता ना हरषाई । ना सुख योग यज्ञ तप पूजा ना सुख झूठि समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे ना सुख रानी ना

सुख हास विलासकहानी । नासुख मानी नाअपमानी ना सुख झूठी कर चतुराई ॥ ना सुख वेद किताब पुराना ना सुख कछू कथे मुख ज्ञाना । सगरेसुख कबीर सो पाई जो जनराम नाम लवलाई ४५६॥

राग सोरठ ।

जबलग मेरी मेरीकरै ॥ तब लग काज एकनहिं सरै । जो मेरी मेरी मिटजाय ॥ तोप्रभु काज सँवारैआय । ऐसाज्ञान विचारमना ॥ हरि क्यों न सुमिरै दुख भंजना । जब लग सिंह रहे वन माहीं ॥ तब लग वन फूले ही नाहीं । जबहीं स्याल सिंह को खाय ॥ फूल रही सकली बनराय । जीतो बूड्यो हारो तरचो ॥ गुरु प्रसाद सोइ पार उतरचो । दास कबीर कहे समुझाय ॥ केवल राम रहो लव लाय॥

ऐसो है रे भाई हरि रस ऐसो है रे भाई जाके पिये अमरहोजाई ॥ ध्रुव पीया प्रहलाद ने पीया पीया है मीराबाई ॥ बलख बुखारे के मीयां पीया छोडी है बादशाही । हरिरसमहँगा मोलकारे पीवे विरला कोय ॥ हरि रस महँगा सो पिये जाके धर पै शीश न होय । आगे आगे दौ चले रे पीछे हरिया होय ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो हरि भज निर्मल होय ॥ ४५८ ॥

राग देश ।

चुनरी मेरी रँग डारी मेरे सतगुरु हैं रँगरेज । भाउ के कुंड नेह के जलमें प्रेम रंग दई बोर ॥ चस की चास लगाय के खूब रँगी झक झोर । स्याही रंग छुड़ायके दिया मजीठा रंग ॥ बूंद पडी ठहरे नहीं दिन दिन होय सुरंग । सतगुर ने चुनरी रँगी है सतगुरु चतुर सुजान ॥ सभ कछु उनको वार दूं तन मन धन औ प्राण । कहे कबीर चुनरी रँगी गुरु मुझपर होये दियाल ॥ शीतल चुनरी ओढ़ कर मगन भई हौं निहाल ॥ ४५९ ॥

संतो ऐसा धुंध पसारा । इस घट अंतर बाग बगीचा इसीमें सिरजंन हारा ॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमें वारा पारा । इस घट अंतर हीरा मोती इसीमें परखन हारा ॥ इस घट अंतर चांद

सूरज हैं इसी में बेहद तारा ॥ इस घट अंतर अनहद गरजे इसीमें उठत फुआरा ॥ कहें कबीर सुनो भई साधो याहीमें गुरू हमारा ॥ ४६० ॥

राग भैरवी ।

राम जपो जीया ऐसे ऐसे ॥ ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे ॥ सभ परवार चढ़ायो बेडे ॥ जां तिस भावे तां हुकम मनावे ॥ इस बेडे को पार लँघावे ॥ गुर प्रसाद ऐसी बुद्धि समानी ॥ चूकगई फिर आवन जानी ॥ कहत कबीर भज शारँग पानी ॥ वार पार सभ एको जानी ॥ ४६१ ॥

जिहि मरने ते सभ जग त्रासा ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकासा अब कैसे मरों मरन मन मान्या ॥ मर मर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहे सभ कोई ॥ सहजे मरे अमर होय सोई ॥ कह कबीर मन भया अनंद ॥ गया भरम रह्या परमानंद ॥ ४६२ ॥

राग सोरठ ।

यही घडी यह वेला साधो ॥ लाख खर्चे फिर हाथ न आवे मानस जन्म सुहेला ॥ ना कोइ संगी ना कोइ साथी यह जाता भँवर इकेला ॥ क्यों सोया उठ जाग सवेरे काल मरेंदा सेला ॥ कहत कबीर गोविंद गुन गाओ झूठा है सभ मेला ॥ ४६३ ॥

राग झंझोटी ।

मेरे राना जी मैं गोविंद के गुन गाना ॥ राजा रूठे नगरी राखे अपनी मेहर रूठे कहां जाना ॥ राने भेजा जहर प्याला मैं अमृत कर पीजाना ॥ डबिया में काला नाग जो भेजा मैं सालगराम कर जाना ॥ मीरांबाई प्रेम दिवानी मैं सांवरिया वर पाना ॥ ४६४ ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी ॥ तुम जानत सभ अंतरयामी करनी कछु न करी ॥ औगुन मोसे बिसरत नाहीं पल छिन घरी घरी ॥ सभ प्रपंच की पोट बांध कर अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लियो हौं सुध बुध सभ बिसरी ॥ सूर पतित को वेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥ ४६५ ॥

राग खमाच ।

काया हरि के कामनआई ॥ भक्ति भाव जहँ हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ काम मनोरथ लोभातुर है तहां सुनत उठ धाई ॥ जब लग प्रेम रंग नहिं परसत अंधे ज्यों भरमाई ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन विषय परम विष खाई ॥ ४६६ ॥

भले बुरे तो तेरे ठाकुर ॥ हमरे कुल की लाज बडाई विनती सुनो प्रभु मेरे ॥ सभ तज तुम शरणागत आयो दृढ कर चरण गहेरे ॥ तव प्रसाद हम वदत न काहू निडर भये घर घेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा से पाये सुक्ख घनेरे ॥ ४६७ ॥

राग सारंग ।

जिहिं तन ना हरि भजन कियो ॥ सो तन शूकर श्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को ताहि न चित्त दियो ॥ प्रकट जान यदुनाथ बिसार्‍यो आशा मद्य पियो ॥ चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हें न मिल्यो हियो ॥ सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ ४६८ ॥

मन मेरो गज जिह्वाकाती ॥ मप मप काटो जम की फांसी ॥ कहा करूं जाती कहा करूं पांती ॥ राम का नाम जपों दिन राती ॥ रंगन रंगों सीवन सीवों ॥ राम नाम बिन घडी न जीवों ॥ भक्ति करों हरि के गुन गाऊं ॥ आठ पहर अपना खसम ध्याऊं ॥ सोने की सूई रूपे का धागा ॥ नामे का चित्त हरि संग लागा ॥ ४६९ ॥

जैसे भूखे प्रीत अनाज ॥ तृषा वंत जल सेती काज ॥ जैसे मूढ कुटुंब परायण ॥ ऐसे नामे प्रीत नरायण ॥ नामे प्रीति नरायण लागी । सहज सुभाय भयो वैरागी ॥ जैसे पर पूरुष रत नारी ॥ लोभी नर धनका हितकारी ॥ कामी पुरुष कामिनी प्यारी । ऐसी नामे प्रीत मुरारी ॥ जैसे प्रीत बालक और माता । ऐसा हर सेती मन राता ॥ प्रणवे नाम देउ लागी प्रीत । गोविंदों से हमारोचीत ॥

राग भैरवी।

रे प्रानी क्या मेरा क्या तेरा। जैसे तरवर पंख बसेरा ॥ जल की भीत पवन का थंभा रक्त बिंदु का गारा। हाडमाँस नाड़ीकापिंजर पंखी बसे बिचारा ॥ राखो कंध उसारो नीवां । साढतीन हाथ तेरी सीवां ॥ बाँके बाल पाग शिर टेढ़ी। यह तन होगा भस्म की ढेरी ॥ ऊंचे मंदिर सुंदर नारी । राम नाम बिन बाजी हारी ॥ मेरी जात कमीनी बुद्धि कमीनी होछा जन्म हमारा। तुमरी शरणागत मैं प्रभुजी कहे रामदास चमारा ॥ ४७१ ॥

राग कान्हरा।

साँची प्रीत हम तुमसँग जोड़ी। तुमसँग जोड़ अवर सँगतोड़ी ॥ जो तुम बादर तो हम मोरा। जो तुम चंद हम भये चकोरा ॥ जो तुम दीवा तो हम बाती जो तुम तीरथ तोहम जात्री। जहाँ जाउँ तहँ तुमरी सेवा ॥ तुमसा ठाकुर और न देवा। तुमरे भजन कटे भय फाँसा। भक्ति हेतु गावे रविदासा ॥ ४७२ ॥

राग सोरठ।

मुकुंद मुकुंद जपो संसार। बिन मुकुंद तन होसी छार ॥ सोई मुकुंद मुक्तिका दाता। सोई मुकुंद हमरा पितु माता ॥ जिवतमुकुंदे मरत मुकुंदे। ताकेसेवकको सदा अनंदे ॥ मुकुंद मुकुंद हमारे प्रान। मुकुंद हमारे मस्तकनीशान ॥ उपज्यो ज्ञान हुआ प्रकास। कर किरपा लीने कीटदास ॥ कहे रविदास अब तृष्णा चूकी। जप मुकुंद सेवा ताहूकी ॥ ४७३ ॥

राग देश।

ब्राह्मण वैश्य शूद्र और क्षत्री डोम चंडाल म्लेच्छ पुनिहोई। होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोई ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो थाउँ धन्य कुटुंब पुनीत सभ लोई ॥ जिन पियासा रस तजे आन रस होयरस मगन डारे विष खोई। पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोई ॥ ४७४ ॥

राग काफी ।

तैं शौह मनमें किया रोस । मुझ औगुन शौह नाहीं दोस ॥ तैं साहिब की मैं सार न जानी ॥ जोवन खोय पाछे पछतानी ॥ काली कोयल तू कित गुण काली ॥ अपने प्रीतम के हौं विरहों जाली ॥ पिय बिहूनी न किते सुख पाये ॥ जां होय कृपाल तां प्रभु मिलाये॥ कर कृपा प्रभु साध संग मेली ॥ जां फिर देखां मेरा साहिब बेली ॥ बहुत दूर है शौहर मेरा ॥ शेख फरीदा पंथ सम्हार सवेरा ॥४७५॥

राग जंगला ।

दिलों मुहब्बत जिन्हां सेई सच्यां ॥ जिन मन होर मुख होर सेई काढे कच्यां ॥ रत्तेइशक खुदा रंग दीदारके ॥ बिसरचा जिन्हां नाम ते भोये भार भे ॥ आप लये लड़ लाय दरवेशसे ॥ तिन धन्य जनेदी मां आये सफलसे ॥ परवरदिगार अपार अगमबेअंततूं॥ जिन्हां पछाता सच्च चुम्मां पैर भूं ॥ तेरी पनाह खुदाय तूं बखशिंदगी । शेख फरीदे खैर दीजे बंदगी ॥ ४७६ ॥

अंतरमल निर्मल नहिं कीनी बाहर भेखउदासी ॥ हृदैकमलघट ब्रह्म न चीना काहे भयोसंन्यासी ॥ भरमेभूलै रे जैचंदा ॥ नहिं नहिं चीना परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया किंथा मुंदा माया ॥ भूम मसान कि भस्म लगाई गुरु विन तत्व न पाया ॥ काहे जपो रेकाहे तपो रे काहे बलोवो पानी ॥ यह सृष्टि है जिन उपाई सो सिमरो निरबानी ॥ कायक मंडल का पड़िया रे अठसठ काहे फिराई । वदत त्रिलोचन सुन रे प्रानी हरि शरनी गत पाई ॥४७७॥

राग आसा ।

ऐसा नाम रत्न निरमोलक पुण्य पदारथ पाया ॥ अनेक यत्न कर हिरदे राख्या रत्न न छिपे छपाया । हरि गुण कहते कहते कहन न जाई ॥ जैसे गूँगे की मव्याई । रसना रमत सुनत सुख श्रवणा चित चेते सुख होई ॥ कह भीषण दोय नयन संतोषे जहिं देखा तहिं सोई ॥ ४७८ ॥

कवित्त ।

कोई एक पंडित हो विद्या गुण मंडित हो डस्यो काली नाग गयो गणिका निवास में ॥ कीनो मैथुन निवेश है विषय को प्रवेश रैन बीती सारी काम के हुलास में । केलि कर भयो भोर मुसकाय मुख मोर बोली एहो प्राणप्यारे मिलोगे अबका समें ॥ जोपै वेद औ पुराण स्मृति सब सांचे होयँ तो मेरी तेरी भेंट होय कुंभी पाक बास में ॥ ४७९ ॥

कुंडलिया ।

मंडन है ऐश्वर्य को सज्जनता सन्मान । वाणी सज्जन शूरता मंडन धन को दान ॥ मंडन धन को दान ज्ञान मंडन इंद्री दम । तप मंडन अक्रोध नियम मंडन सोहत सम ॥ प्रभुता मंडन माफ धर्म मंडन छल छंडन । सबहिन में सरदार शीलता सबको मंडन४८०

कबित्त ।

रहाहै नकोई यहां रहिहै न कोई यहां जाने सब कोई पै न मानै मोहपरिगे ॥ हाथी और घोड़े रथछोड़े सब ठौर ठौर भौननमें गाड़े भूरि भांडे ते बिसरिगे । कहै छबिनाथ रघुनाथ के भजन बिन ऐसेही बिचारे जन्म कोटिन निसरिगे ॥ जंग वाले जोर वाले जाहिर जरब वाले जोश वाले जालिम चिता की आग जरिगे ॥ ४८१ ॥

सवैया ।

भोग में रोग वियोग सँयोग में योगमें काया कलेश कमायो ॥ त्यों पद्माकर वेद पुरण पढ़्यो पढ़के बहु वाद बढ़ायो ॥ दौर्‍यो दुराशा में दास भयो पै कहूं विश्राम को धाम न पायो । काया कमायो सो ऐसेही जीवन हाय मैं राम को नाम न गायो ॥ ४८२ ॥

कवित्त ।

नारि के विकार सब ख्वार किये जीव जंतु नारि के विकार ब्रह्मादिक भरमाये हैं ॥ नारि के विकार हार चले सभ ऋषी मुनी नारि के विकार शिव ध्यान सों छुडाये हैं॥नारि के विकार शशि सूर

कला दूर भये नारि के विकार राउ रंक मरवायेहैं। कहेएक साईं लोक नारि का विकार तज ताते योगीजन संत तभी तो कहाये हैं॥४८३॥

राग रामकली।

देखो रे मेरी मति बौरानी सदा जीवन मन लोड़े। शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक सोभी काल न छोड़े॥ मुनि विनसे देव दानव विनसे जिन त्रिलोकी छत्र झुलाया। सोभी काल ने वश कर लीने तिन भी रहन न पाया॥ वैद बुलाया वेगही आया पकड भुजा कछु कह्यो॥ ऐसी औषध किसी न दीनी यह देही थिर रह्यो। वेद पुराण कुराण कितावां अरु पंडित मुलवाणे॥ राई वधे घटे ना मासा मैं पुछ पुछ रही स्याणे। सक ले दीप मैं फिर फिर थाकी देश दिशांतर लोई॥ कहत कबीर जो हरि गुण गावे हमरी औषध सोई॥ ४८४॥

राग जैजैवंती।

जीवनसार बिसारा क्यों मन। प्रभु पद सेवा त्याग मूढ़ तू फिरे अंध मतवारा॥ विषय परायण होय जगत में प्रभु से कियो किनारा॥काम और क्रोध लोभ वश होकर हित अपना न बिचारा॥ धन दारा सुत काम न आवें जिन पर किया सहारा॥ जिस जग में तू भूल रहाहै दो दिन का है गुजारा॥ पाप ताप संताप दोष सब जो तू चाहे निवारा॥ गिरिधर लाल शरण हरि ले तो जो जग प्राण अधारा॥ ४८५॥

तुम बिन कौन हमारो प्रभुजी॥ होय असत्य के हम अनुरागी हित कर सत्य विसारो॥ दिव्य ज्ञान बिन अंध भये हम सूझे न सार असारो॥ कभूं न बैठ छिनक निरजन में जीवन तत्व विचारो॥ दीन हीन अति कृपा पात्र लख करुणा हस्त पसारो॥ पाप विकार हरो गिरिधर अब ज्यों जानो त्यों तारो॥ ४८६॥

राग आसावरी।

हौं कुरबाने जाउँ प्यारे हौं कुरबाने जाउँ॥ हौं कुरबाने जाउँ तिन्हा

दे लैन जो तेरा नाउँ ॥ लैन जो तेरा नाउँ तिन्हाके सद कुरबाने जाउँ॥ काया रंगन जे थिये प्यारे पाइये नाउँ मँजीठ॥ रंगन वाला जे रंगे साहिब ऐसा रंग न डीठ॥ जिन के चोलेडे रत्तड़े प्यारे कंत तिन्हां के पास॥धूड तिन्हां की जे मिले जी कहु नानक की अरदास४८७॥

ऐसो नाम तुम्हारो ठाकुर ऐसो नाम तुम्हारो ॥ पतित पवित्र लिये कर अपने सकल करत निमसकारो ॥ जात वरण कछु पूँछे नाहीं सभ को पाप निवारो ॥ नामां जैदेव कबीर त्रिलोचन मुक्त भयो चम्यारो । साधु संगत नानक बुध पाई हरि कीर्तन उद्धारो ॥

मैं मन तेरी टेक प्यारे मैं मन तेरी टेक॥ और स्यानपां विरथियां प्यारे राखन को तुम एक ॥ सतगुरु पूरा जे मिले प्यारे सो जन होत निहाला॥ गुरुकी सेवा सो करे प्यारे जिसनू होवे दयाला ॥ सफल मूरत गुरुदेव स्वामी सर्व कला भरपूरे ॥ नानक गुरु पारब्रह्म परमेश्वर सदा सदा हजूरे॥ ४८९ ॥

राग आसावरी ।

सुन सुन जीवां सोहले तिन्हांके जिन अपना प्रभ जाता॥ हरि नाम अराधने हर नाम बखाने हर नामे ही मन राता॥ सेवक जन की सेवा मांगे पूरे कर्म कमावां ॥ नानक की विनती है स्वामी तेरे जन देखन पावाँ ॥ ४९० ॥

राग भैरवी ।

अब हम गुम हुए अब हम गुम हुए प्रेम नगर के शहर ॥ अपने आप को शोध रहा हूं शिर हत्थ नहीं पैर॥ किते पकड़ लै चले घरां थी कौन करे निरवैर ॥ खुदी खोई अपना पद चीन्हा तब होई कुल खैर ॥ बुल्लाशाह दोहीं जहानीं कोई न दिसदा गैर॥ ४९१ ॥

राग बिहाग ।

बस्स कर जी हुन बस्स कर जी॥ काई बात असां नाल हस्स कर जी॥ तुसीं दिल मेरे विच वसदे सी॥ तदों सानूं दूर क्यों दसदे सी॥ तदों वत्त जादू दिल खसदे सी॥ हुन कितवल जासू नस्स

कर जी ॥ तुसीं मोयां नूं मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुहों वांगूं कुटदे सी ॥ गल्ल करदे से गल घुटदेसी ॥ हुन तीर लायो तन कस्सकर जी ॥ तुसीं छिपदे से असां पकड़े हो ॥ तुसीं अजे छिपण नूं तकड़े हो ॥ असां विच जिगर दे जकड़े हो ॥ हुनकहां जाओ दिल खस्स कर जी ॥ बुल्लाशाह असींतेरे बरदे से ॥ तेरे मुख देखन नूं मरदे से ॥ तुध वांगूं मिन्नतां करदे से ॥ हुन बैठे पिंजरे विच धस्स कर जी ॥४९२ ॥

इशक दीनवीं ओं नवीं बहार ॥ जो मैं सबक इशक दा पढ़या ॥ जीवड़ा मसजद कोलों डरया ॥ जां सद बाना शिरपर धरया ॥ घर विच पाया महरम यार ॥ जो मैं रमज इशक दी पाई ॥ मैंनां तूती मार गँवाई ॥ अंदर बाहर होई सफाई ॥ जितवल देखां यारो यार ॥ वेद पुराण पढ़े पढ़ थक्के ॥ सिजदे कर दियां घस गये मत्थे ॥ नां रब तीरथ नारब मक्के ॥ जिन पाया तिन नूर जमाल ॥ इशक भुलाया मेरा तेरा हुन क्यों रोवें पावें झेडा॥बुल्ला रहिंदा चुप चुपाता दिल विच खुल्ले सभ इसरार ॥ ४९३ ॥

ग़ज़ल ।

प्यारे गम छोड दुनिया का साहिब से आशनाई कर ॥ सभी कुछ छोड जाना है साहिब से ना जुदाई कर ॥ भिखारिन नाम है मेरा करूंगी हर घडी फेरा ॥ बता देवो पिया का डेरा बिरहों ने जिसके है घेरा ॥ लागी है प्रेम की लोकी तुम्हारे दरश की भूखी ॥ वली को ला मिलाओगे नहीं तो जान अब सूखी ॥ ४९४ ॥

ग़ज़ल ।

काफरे इशक़म मुसलमानी मरा दरकार नेस्त ॥ हर रगे मन् तरा गश्तह हाजते ज़ुन्नार नेस्त ॥ अज़सिरे बालीने मन् बरखेज़ अय नांदां तबीब ॥ दर्दशोरे बुलबुल कम न गर्दद गर रवद गुल अज़ चमन् ॥ हुस्न बे बुनियाद बाशद इश्क बे बुनियाद नेस्त ॥ शाद बाश ऐ दिल कि फ़र्दा अज़ सिरे बाजारे इश्क ॥ वादये क़तलस्त बाशद दावए दीदार नेस्त ॥ मा ग़रीबां रा तमाशय चमन् दरकार नेस्त ॥

दाग़हाय सीना बर मन कमतर अज़ गुलजार नेस्त ॥ नाखुदा दर किश्तिये मन गर न बाशद गो मुबाश ॥ मा खुदा दारेम मारा ना खुदा दरकार नेस्त ॥ मंदे इशक़ रा दारू बजुज़ दीदार नेस्त ॥ खल्क मेगोयद् कि खुसरो बुत्परस्ती मेकुनद् ॥ आरे आरे मेकुनम बा खुलके आलम कार नेस्त ॥ ४९५ ॥

अय चिहरए ज़ेबाय तो रश्के बुताने आज़री ॥ हरचंद वसूफ़त् मेकुनम् लेकिन् अज़ाँ बाला तरी ॥ आफ़ाक़ रागरदी दहअम मिहरे बुतां वरजी दह अम ॥ बिस्यार खूबां दीदहअम अम्मा तो चीजें दीगरी ॥ मनतो सुदमतो मन शुदी मन् तन् शुदम तो जाँ शुदी ॥ ता कस् न गोयद् बादजीं मन् दीगरम तो दीगरी ॥ खुसरो ग़रीबस्तो गदा उफ़तादह दर शहरे शुमा ॥ बाशद कि अज बहरे खुदा सूये ग़रीबां बिंगरी ॥ ४९६ ॥

राग परज ।

तू बात चलन दी कर रे एथे रहना नाहीं ॥ इस देही बिच पांच चोर हैं इन्हां दा कह्या न कर रे ॥ इह संसार कंडच्यां दी वाड़ी तूं सँभल सँभल पग धर रे ॥ साढ़े तीन हत्थ जिमीं बंदे दी तूं एडड़े मुल्क न मल्ल रे ॥ हुसैन फ़कीर रबाणा झूठी दुनिया कूड़ा बाणा तू हरि चर्नन चित धर रे ॥ ४९७ ॥

गज़ल ।

तुझसे मैंने दिलको लगाया ॥ एक तुझको अपना पाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सब कीनो मकां दिल में है तू ॥ कौन दिल है जिसमें नहीं तू ॥ हर एक दिल में तू ही समाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ कैसा मुलायक कैसा इन्सां ॥ कैसा हिंदू कैसा मुसल्मां ॥ जैसा चाहा तूने बनाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ काबे में क्या और देर में क्या ॥ तेरी परस्तिश है सब जा ॥ आगे तेरे सिर सबने झुकाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ अरश से लेकर फ़रशे जिमीं तक ॥ और जमीं से अरशे बरीं तक जहां मैं देखा तू ही नजर आया

जो कुछ है सो तूही है ॥ सोचा समझा देखा भाला ॥ तुझे छान कर ढूंढ़ निकाला ॥ अब यही समझ में जफ़र के आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ ४९८ ॥

राग आसा ।

क्यों मन भूलाहै संसारा ॥ मन मत दे टुक कर ले गुजारा ॥ इस जग में सुख नित नाहिं भाई यह तो है जैसे पानी की धारा ॥ मात पिता और खेश कुटुंब सब संग नहीं कोइ जावन हारा ॥ अंत समै सभ देखन आवें छिन भर में सभ होयें न्यारा ॥ जो कुछ अंगमें होगा तुम्हारा वह भी सब मिल लेयँ उतारा ॥ भाई नरकों में जब तुम पड़ोगे तब नहीं कोई बचावन हारा ॥ भाई मुक्तीका तुम भी करो खोज करुणामय प्रभु तारन हारा ४९९ ॥

गजल ।

सुनोरे भाइयो तुमको यहांसे कूच करना है ॥ रहो तुम याद हकमें जब तलक ह्यां आवो दानाहै ॥ क्यों इतना होके ग़ाफ़िल भूले इस दुनिया के लालच में ॥ करो कुछ ख्याल भाई हकका अगर जिन्नत को पाना है ॥ पड़े सोतेहो ग़फ़लत् में ज़रा टुक आंख को खोलो ॥ हुई है शाम उठ बैठो मुसाफर घरको जाना है ॥ न दौलत काम आवेगी न इस दुनिया से कुछ हासिल ॥ अगर तुम सोच कर देखो यह सभ कुछ छोड़ जाना है ॥ हयात अबदी अगर चाहो तो छोड़ो तुम गुनाहों को ॥ कहे मुकती प्रभू सुमिरो वही सच्चा ठिकाना है ॥ ५०० ॥

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ॥ मेरे दिल का अब दिल्रुबा एक तू है ॥ फकत तेरे कदमों से अय मेरे खालक ॥ लगा अब मेरा ध्यान शामो सुबू है ॥ मेरा दिल तो तुझसे ही पाता है तसकीं ॥ बसी मगज में प्रेमकी तेरी बू है ॥ समझते हैं यूं मुझको अकसर दिवाना ॥ तेरा जिक्र विरदे जबां कू बकू है ॥ नहीं मुझको दुनियावी खुशबू से उल्फत ॥ तेरा प्रेम ही अब मेरा

मुझको बू है ॥ रँगूं प्रेम से तेरे दिल का य चोला ॥ जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफू है ॥ न पाला पड़े नफसे शैतांसे मुझको तेरे दास की अब यही आरजू है ॥ ५०१ ॥

प्रभू प्रेम एक शरबते दिलकशा है ॥ गुनह के मरीजों कि नादर दवा है ॥ जो प्रेम एक बारी सिदक दिलसे पीयो ॥ गुनह के मरज से तो हुकमन सफाहै॥सिदक दिल से इक बार पीकर तो देखो खुदा के लिये मेरी यही इलतजा है ॥ फँसा जोगुनह में निकलता है मुश्किल ॥ य जालम बुरी रूह के हक में वबा है ॥ जो निकला नफस की गुलामी से यारो ॥ उसे मरहबा मरहबा मरहबा है ॥ फिदा हूं हरंदाज पर उसके मैं भी ॥ खुदा को ही जिसने दिल अपना दिया है ॥ गनी होगया जब मिला जिस गदा को ॥ प्रभू प्रेम क्या नुस्खये कीमियाँ है फदा तूभी विश्वासी हो अब खुदा पर ॥ न ला काम गफलत् को अब देर क्या है ॥ ५०२ ॥

अजब तेरा कानून देखा खुदाया ॥ जहां दिल दिया फिर वही तुझकोपाया ॥ न यां देखा जाता है मंदिर व मसाजिद फकत यह कि तालब सिदक दिल से आया ॥ जोतुझपै फिदा दिल हुआ एक बारी ॥ उसे प्रेम का तूने जलवा दिखाया ॥ तेरी पाक सीरत् क आशक हुआ जो ॥ वही रंग रँगा फिर जो तूने रँगाया ॥ है गुमराह जिस दिल में बाकी खुदी है ॥ मिला तुझसे जिसने खुदी को गँवाया ॥ हुआ तेरे विश्वासी को तेरा दरशन ॥ गदा को दुरे बेबहा हाथ आया ॥ ५०३ ॥

जलवए हक जहां जिस दिल में नमूदार हुआ ॥ खुद को सदकह किया रुसवा सिरे बाजार हुआ ॥ जिसने पाया नहीं मुमकिन कि वह खामोश रहे ॥ खुद बखुद जलवए हक बाइसे इजहार हुआ ॥ काशिश उलफते दुनिया है बहुत सद्दे राह ॥ जिसने दफा इसको किया वही खबरदार हुआ ॥ भक्ती और प्रेम के फूलों से सजा गुलशने दिल ॥ इक नये तरज क गुलदस्तए बेखार हुआ ॥ डूबा वह दिल जो फँसा उलफतो

दुनियावी में ॥ जिसने दिल हक को दिया वही बशर पार हुआ ॥ तूभी विश्वासी शरण ले उसी हकतालाकी ॥ जिसको लेकरही हर एक पापी का उद्धार हुआ ॥ ४०४ ॥

ग़ज़ल ।

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या ॥ जिन नैनों से नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या ॥ रूखा सूखा राम क टुकड़ा चिकना और सलोना क्या ॥ कहत कमाल प्रेम के मारग शीश दिया फिर रोना क्या ॥ ४०५ ॥

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥ क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ॥ झूठे जग में दिल ललचाकर असल वतन् क्यों छोड़ दिया ॥ कौड़ी को तू खूब सँभाला लाल रतन् क्यों छोड दिया ॥ जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावें सो सुमिरन क्यों छोड दिया॥खालसइक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड दिया॥

राग आसा ।

प्रभु को सुमिर सुमिर मन मेरे ॥ पाप कटें सभ तेरे ॥ नाम दान असनान नरार्थ जब प्रीत नहीं मन तेरे ॥ जात पात की बात न पूछें पूछें काज भलेरे ॥ जिन करतार अकाल पछाना सोई जात उचेरे ॥ दो दिनके सुख कारन मूरख पावत उमर बखेरे ॥ गंग यमुन काशी बन जंगल हर घट मों हर नेरे ॥ पर जो उस को ढूंढ़न जावत ऊजड फिरत अँधेरे ॥ सांच त्याग मिथ्या जिन पकडी अति उन दुःख सहेरे ॥ खालस जिन भगवान पछाता हम तिनके हैं चेरे ॥ ४०७ ॥

राग गौरी ।

साधो मनका मान त्यागो ॥ काम क्रोध संगत दुर्जन की ताते अह निस भागो ॥ सुख दुख दोनों सम कर जानै और मान अपमाना ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जग तत्व पछाना ॥ अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पद निरवाना ॥ जननानक यह खेल कठिन है किनहूं गुरमुख जाना ॥ ४८०

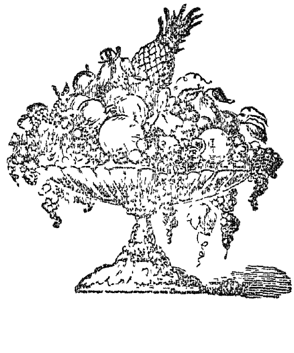
साधो रचना राम बनाई ॥ इक बिनशै इक अस्थिर मानै अच-रज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोहवश प्राणी हरि मूरत बिसराई झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सक-ल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ४०९ ॥

राग कान्हरा।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध बख्शो सभी नहींजिनका कुछभी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊं मैं क्या क्या बताने में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहे तो अबहीं बेडा पार है ॥ ४१० ॥

दोहा—कहा करे रसखान को, कोऊ कुटिल लवार।
जोपै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीयभागः समाप्तः ॥



ओं तत् सत् परमात्मने नमः ।

अथ रागरत्नाकर ।

चतुर्थभागप्रारंभः

अथ ग्रंथ साहिब के शब्द ।

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नवां खंडां विच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नाँउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां बात न पुच्छै केय ॥ कीटां अंदर कीट कर दोसीं दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सुझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्हां अग्नि तताउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ घड़ीये शब्द सची टकसाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त ॥ दिवस रात दोय दाई दाया खेलै सकल जगत्त ॥ चंगिआइयां बुरिआइयां वाचै धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडै के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥

राग आसा ।

सो दर तेरा केहा सो घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥ वाजेतेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहिं केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुधनूं पवण पाणी बैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म वीचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इंद्रासन बैठे देवतियाँ दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे ॥ गावन तुधनूं

यती सती संतोषी गावन तुधनूं वीर करारे ॥ गावन तुधनूं पंडित पढ़न रिषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मन मोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरें अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनूं जोध महाबळ सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरेधारे ॥ सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले ॥ होर केते तुधनूं गावन से मैं चित्त न आवन नानक क्या वीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहिब सांचा सांची नाई ॥ है भी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगीं रंगीं भातीं कर कर जिनसीं माया जिनउपाई ॥ कर कर देखै कीता अपणा ज्यों तिसदी वड़िआई ॥ जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करना जाई ॥ सो पातशाह शाहां पति साहिब नानक रहण रजाई ॥ ४ ॥

राग गूजरी ।

काहे रे मन चितवै उद्यम जां आहर हरिजी उपरिआ ॥ शैल पत्थर मैं जंत उपाये तांका रिजक आगे कर धरिआ ॥ मेरे माधोजी सतसंगति मिले सो तरचा ॥ गुरु प्रसाद पर्मपद पाया सूके काशट हरचा ॥ जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरचा ॥ सिर सिर रिजक सँबाहे ठाकुर काहे मन भौ करचा ॥ ऊडे ऊड आवैं सै कोसां तिस पाछे बछरे छरचा ॥ तिन कवन खलावै कवन चुगावै मन में सिमरन करचा ॥ सभ निधान दस अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरचा ॥ जन नानक बल बल सद बल जाइये तेरा अंत न पारावरचा ॥ ५ ॥

राग आसा ।

तूं घटघट अंतर सर्व निरंतर जी हरएको पुरुष समाणा ॥ इकदाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध बिन अवर न जाणा ॥ तूं पारब्रह्म बेअंत बेअंत जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवहिं जो सेवहिं तुधजी जन नानक तिन कुरबाणा ॥ ६ ॥

भई प्राप्त मानुष्य देहुरिया ॥ गोविंद मिलनकी यहतेरी बेरिया ॥ अवर काज तेरै किते न काम ॥ मिल साध संगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रंग माया के ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया ॥ सेवा साध न जान्या हरिराया॥कहु नानक हम नीच करम्मा॥शरणपडे की राखो शर्म्मा॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चंद्र दीपक बने तारिका मंडला जनक मोती ॥ धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल बनराय फूलंत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहदा शब्द बाजंत भेरी ॥ सहँस तव नयन नन नयन हैं तोहि को सहँस मूरत नना एक तोही ॥ सहँस पद विमल नन एक पद गंध बिन सहँस तव गंध इव चलत मोही ॥ सब में जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सबमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावै सो आरती होय ॥ हरि चर्ण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहिं आही प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारंग को होय जाते तेरे नाइँ वासा ॥ ८ ॥

राग गौरी पूरबी ।

करों विनती सुनो मेरे मीता संत टहिल की बेला ॥ ईहां खाट चलो हरि लाहा आगे बसन सुहेला ॥ औध घटै दिन सुरैना रे ॥ मन गुर मिल काज सवारे ॥ यह संसार विकार संशय महिं तर्यो ब्रह्म ज्ञानी ॥ जिसहिं जगाय प्यावै यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोइ बिहाझहु हरि गुरु ते मनहिं बसेरा ॥ निजघर महल पावो सुख सहजे बहुर न होयगोफेरा ॥ अंतरयामी पुरष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ नानक दास इहै सुख मांगै मोकों कर संतन की धूरे ॥ ९ ॥

राग श्री ।

मोती तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जड़ाउ ॥ कस्तूरि

कुंगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित न आवे नाउ ॥ हरि बिन जीउ जलबल जाउ ॥ मैं आपणा गुरु पूछ देख्या अवर नाहीं थाउ ॥ धरती तां हीरे लाल जड़ती पलँग लाल जड़ाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहै करे रंग पसाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सिद्ध होवां सिद्ध लाई रिद्ध आखां आउ ॥ गुप्त परगट होय बैसां लोक राखै भाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नाउ ॥ सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासल करी बैठा नानका सब वाउ ॥ मत देख भूला बीसरै तेरा चित्त न आवै नांउ ॥ १० ॥

जाको मुशकल अति बणै ढोई कोय न देय ॥ लागू होये दुशमना साक भी भज्ज खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुक्के सभ असराउ ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म लगै न तत्ती बाउ ॥ साहिब निताणिआं का ताण ॥ आय न जाई थिर सदा गुरु सबदीं सच जाण ॥ जेको होवै दुबैला नंग भूख की पीर ॥ दमडा पल्ले ना पवे ना को देवै धीर ॥ स्वार्थ स्वाउ न को करे ना किछु होवै काज ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निश्चल होवै राज ॥ जाको चिंता बहुत बहुत देही व्यापे रोग ॥ गिरिस्तकुटुंब पलेट्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गौण करे कहुं चहुं कुंट का घडी न बैसन होय ॥ चित्त आवै उस पारब्रह्म तन मन शीतल होय ॥ काम क्रोध मोह बस कीया किरपन लोभ प्यार ॥ चारे किलबिष उन अघकिये होया असुर संहार ॥ पोथी गीत कवित्त कछु कदे न करन धरचा ॥ चित्त उस पारब्रह्म तां निमिष सिमरत तरचा ॥ सासत सिमृत वेद चार मुखाकर विचरे ॥ तपी तपीसर योगीया तीर्थ गमन करे ॥ खट करमां ते दुगुने पूजा करता न्हाय ॥ रंग न लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगन विस्तार बाग सुहावे सोहणे चल्ले हुकम अफार ॥ रंग तमासे बहु विधि चाय लग रहिया ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां सरप की जून गया ॥ बहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा निर्मल रीत ॥ मात पिता सुत

भाइयां साजन संग प्रीत ॥ लश्कर तरकस बंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढ़ा सोग ॥ मिरत न आवी चित्त तिस अह निस भोगें भोग ॥ सभ कछु कीतोन आपणा जीउ निशंक धरचा ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म जम किंकर बस परचा ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवै साधू संग ॥ ज्यों ज्यों ओह वधाइयै त्यों त्यों हरि सों रंग ॥ दोहां सिरां का खसम आप अवरन दूजा थाउँ ॥ सतगुरु तुट्ठे पाइया नानक सच्चा नाउँ ॥ ११ ॥

कीता लोड़िये कम्म सो हरि पै आखिये ॥ कारज देय सवार सतगुरु सच साखिये ॥ संतां संग निधान अमृत चाखिये ॥ भय भंजन मिहरबान दास की राखिये ॥ नानक हरि गुण गाय अलख प्रभु लाखिये ॥ १२ ॥

राग माँझ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दयाल गोपाल गोविंदा हरि ध्यावो गुरुमुख गाती जी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तारे ॥ गुरुमुख संगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तूं किते न भाती जी ॥ निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोट जनां जाके पूजें पैरा ॥ गुरुमुख जाके हिरदे हरहर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन बेअंत अपारा॥ वड समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरियै गति नानक विरली जाती जी ॥ १३ ॥

राग गौरी।

जाके वश खान सुलतान ॥ जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सभ कछु होय ॥ तिससे बाहर नाहीं कोय ॥ कहु बेनती अपने सतगुरु पाहि ॥ काज तुम्हारे देय निबाहि ॥ सभते ऊँच जाका दरबार ॥ सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्व व्यापत पूर्ण धनी ॥ जाकी शोभा घट घट बनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे ॥

जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत सूके हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ संत सभाको सदा जैकार ॥ हर हर नाम जन प्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनी अरदास ॥ संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १४ ॥

बड़े बड़े जो दीसहिं लोग ॥ तिनको व्यापै चिंता रोग ॥ कौन बड़ा माया बड़िआई ॥ सो बड़ा जिन राम लिव लाई ॥ भूमिआ भूमि ऊपर नित लुझै ॥ छोड चलै तृष्णा नहीं बुझै ॥ कहु नानक इह तत्व विचारा ॥ बिन हरि भजन नहीं छुटकारा ॥ १६ ॥

राग सोरठ ।

अंतर की गति तुमहीं जानी तुझही पास निबेरो ॥ बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तूं मेरो ठाकुर नेरो ॥ हरि चर्ण शर्ण मोहिं चेरो ॥ बेशुमार बेअंत स्वामी ऊंचो गुनीगहेरो॥काटसिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानककहा निहोरो॥

जीय जंत सभ तिसके कीये सोईसंत सहाई ॥ अपने सेवककी आपे राखे पूरन भई बड़ाई ॥ पारब्रह्म पूरा मेरे नाल ॥ गुरु पूरे पूरी सभ राखी होवे सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नाम ध्याये जीय प्राण का दाता॥अपने दास को कंठ लाय राखै ज्यों बारिक पितु माता

राग धनाश्री ।

कित्तै प्रकार न तूटो प्रीत ॥ दास तेरे की निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धन ते प्यारा ॥ हौं मैं बंध हरि देवन हारा ॥ चरण कमल सों लागो नेह ॥ नानक की है विनती एह ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

थिर घर बैसो हरिजन प्यारे ॥ सतगुरु तुमरे काज सवारे ॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे ॥ जनकी पैज रखी करतारे ॥ बादशाहशाह सब वश करदीने ॥ अमृत नाम महारस पीने ॥ निरभय होय भजो भगवान ॥ साधु संगत मिल कीनो दान ॥ शरण पडे प्रभु अंतरयामी । नानक ओट पकड़ी प्रभु स्वामी ॥ १९ ॥

उबरत राजा राम की शरणी । सर्व लोक माया के मंडल गिर गिर परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महा पुरुषन यूँ कह्या बिन हरि भजन नाहीं निस्तारा सूख न किनहूं लह्या ॥ तीनभवन की लक्ष्मी जोरी बूझत नाहीं लहरे ॥ बिन हरि भगत कहा थित पावै फिरतो पहरे पहरे । अनक विलास करत मनमोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कभूं न बूझत सकल वृथे बिन नामा । हरि का नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधु संगत जन्म मरण निवारै नानक जनकी धूरा ॥ २० ॥

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछु न होवै स्वामी ज्यों राखो त्यों रहिये॥क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ बिचारे जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लव लावहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

ब्रह्मे गर्व किया नहीं जान्या ॥ वेदकी बिपत पड़ी पछतान्या ॥ जहिं प्रभु सिमरे तहीं मन मान्या ॥ ऐसा गर्व बुरा संसारे ॥ जिस गुरु मिलै तिस गर्व निवारे ॥ बलि राजा माया अहंकारी ॥ जगन करै बहु भार अफारी ॥ बिन गुरु पूछे जाय पिआरी ॥ हरीचंद दान करै यश लेवै ॥ बिन गुरु अंत न पाया भेवै ॥ आम भुलाय आपे मति देवै ॥ दुर्मत हरना कुश दुराचारी ॥ प्रभु नारायण गर्व प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत ॥ लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्व गिआ बिन सतगुरु हेत ॥ सहँसबाहू मधु कीट महिषासा ॥ हरनाकुश ले नखहु विधासा ॥ दैत सँहारे बिन भगति अभ्यासा ॥ जरासंध कालयवन संहारे ॥ रक्तबीज कालनेमि विदारे ॥ दैत सँहार संत निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द वीचारे ॥ दूजे भाय दैत संहारे ॥ गुरुमुख साँचि भगति निस्तारे ॥ बूडा दुरयोधन पति खोई ॥ राम न जान्या करता सोई ॥ जन को दूख पचै दुखहोई ॥ जन्मेजय गुरु शब्द न जान्या॥ क्यों सुख पावे भर्म भुलान्या ॥ इकतिल भूले बहुरि पछुतान्या ॥

कंस केशी चाणूर न कोई । राम न चीन्हा अपनी पति खोई ॥ विन जगदीश न राखै कोई ।॥ बिन गुरु गर्व न मेट्या जाय ॥ गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय ॥ नानक नाम मिलै गुण गाय ॥ २२ ॥

अबमोहिं जलत रामजल पाया ॥ रामउदकतन जलत बुझाया॥ मन मारण कारण वन जाइये ॥ सो जल बिन भगवंत न पाइये ॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे ॥ राम उदक जन जलत उबारे ॥ भव सागर सुखसागर माहीं ॥ पीव रहे जल निखुटत नाहीं ॥ कह कबीर भजु सारँग पानी ॥ राम उदक मेरी तृषा बुझानी ॥ २३ ॥

माधो जल की प्यास न जाय ॥ जल महिं आग्नि उठी अधिका-य ॥ तूं जलनिधि हौं जल की मीन ॥ जल माहिं रहों जलहिं बिन खीन ॥ तूं पिंजर हौं सुअटा तोर ॥ जम मंजार कहा करै मोर ॥ तूं तरुवर हौं पंखी आहिं ॥ मंद भागी तेरो दर्शननाहिं ॥ तुं सतगुरु हौं नौतन चेला ॥ कह कबीर मिल अंत कि बेला २४॥

जब हम एको एक कर जान्या॥तब लोगहिं काहे दुखमान्या ॥ हम अपतहिं अपनी पति खोई ॥ हमरे खोज परो मत कोई ॥ हम मंदे मंदे मनमाहीं ॥ सांझपात काहू सों नाहीं ॥ पतिअपति ताकी नहीं लाज ॥ तब जानहुँगे जब उघरैगो पाज ॥ कह कबीर पति हरि परमान ॥ सर्व त्याग भज केवल राम ॥ २५ ॥

अंधकार सुख कभूं न सोइहै ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोइहै ॥ जोपै रसना राम न कहबो ॥ उपजत विनशत रोवत रहबो ॥ जस देखिये तरुवर की छाया ॥ प्राण गये कहु काकी माया ॥ जसजंती महिं जीउ समाना ॥ मुयेमर्म को काकर जाना ॥ हंसासरवर काल शरीर ॥ राम रसायन पिउ रे कबीर ॥ २६ ॥

जो जन परमित परम न जाना ॥ वा तनही वैकुंठ समाना ॥ नाजाना वैकुंठ कहाही ॥ जान जान सभ कहहिं तहाहीं ॥ कहन कहावन नाहिं पतियैहै ॥ तौमनमानै जांते हौं मैं जैहै ॥ जबलग मन वैकुंठ की आस ॥ तब लग होय नहीं चरण निवास॥कहु कबीर इह कहिये काहि॥साधु संगत वैकुंठहिं आहि ॥ २७ ॥

अवर मूये क्या सोग करीजै ॥ तो कीजै जो आपन जीजै ॥ मैं न मरों मरबो संसारा ॥ अब मोहिं मिल्यो जियावन हारा ॥ या देही मरमल महकंदा ॥ तासुख विसरे परमानंदा ॥ कुअटा एक पंच पनिहारी ॥ टूटी लाज भरै मतिहारी ॥ कह कवीर इक बुद्धि विचारी ॥ ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥ २८ ॥

स्थावर जंगम कीट पतंगा ॥ अनिक जन्म कीये बहुरंगा ॥ ऐसे घर हम बहुत बसाये ॥ जबहम राम गरभ ह्वैआये॥योगी यती तपी ब्रह्मचारी ॥ कबहूं राजा छत्रपति कबहूं भिखारी ॥ शाकत मरहिं संत सभजीवहिं ॥ राम रसायन रसाना पीवहिं ॥ कहकवीर प्रभुकी-रपा कीजै ॥ हार परे अब पूरा दीजै ॥ २९ ॥

चोआचंदन मरदनअंगा ॥ सोतन जलै काठ के संगा ॥ इसतन धन की कवन बड़ाई ॥ धरनिपरै उर बार न जाई ॥ रात जो सोवहिं दिन करे काम ॥ इक क्षण लेहिं न हरिको नाम ॥ हाथ तां डोर मुख खायो तंबोर ॥ मरती बार कस बांध्यो चोर ॥ गुरु मति रस रस हरि गुन गावै ॥ रामहिं राम रमत सुख पावै ॥ किरपा करके नाम दृढ़ाई॥ हरि हरि बास सुगंध बसाई ॥ कहत कवीर चेतरे अंधा ॥ सत्य राम झूठा सब धंधा ॥ ३० ॥

जमते उलट भये हैं राम ॥ दुख बिनसे सुख कियो विश्राम ॥ वैरी उलठ भयेहैं मीता ॥ शाकत उलट सुजन भये चीता ॥ अब मोहिं सर्व कुशल कर मान्या ॥ शांत भई जब गोविंद जान्या ॥ तन में होती कोटि उपाध ॥ उलट भई सुख सहज समाध ॥ आप पछानै आपै आप ॥ रोग न व्यापै तीनों ताप ॥ अब मन उलट सनातन हूआ ॥ तब जान्या जब जीवत मूआ ॥ कहु कवीर सुख सहज समावो ॥ आप न डरो न अवर डरावो ॥ ३१ ॥

कंचन सों पाइये नहीं तोल ॥ मनदे राम लियाहै मोल ॥ अब मोहिं राम अपना कर जान्या ॥ सहज सुभाय मेरा मन मान्या ॥ ब्रह्मा कथ कथ अंत न पाया ॥ राम भगति बैठे घर आया ॥ कह कवीर चंचल मति त्यागी ॥ केवल राम भगति निज भागी ॥ ३२॥

जिहिं मरने सभ जगत त्रास्या ॥ सो मरना गुरु शब्द प्रगास्या अब कैसे मरों मरन मनमान्या ॥ मरमर जाते जिन राम न जान्या॥ मरनो मरन कहै सबकोई ॥ सहजे मरै अमर होयसोई ॥ कहकबीर मन भया अनंदा ॥ गया भरम रह्या पर्मानंदा ॥ ३३ ॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई ॥ मुक्ति अनंत पुकारन जाई ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहूका कवन निहोरा ॥ तीन लोक जाके हैं भार ॥ सो काहे नकरै प्रतिपार ॥ कहकबीर इक बुद्धि विचारी ॥ क्या वश जो विषदे महतारी ॥ ३४ ॥

बिन सत सती होय कैसे नारि ॥ पंडित देखो हृदै बिचारि॥प्रीत विना कैसे बधे सनेह॥जबलग रस तब लग नहिंनेह ॥ साहनिसत करै जीय अपने ॥ सो रमैये को मिले न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर ॥ सोई सुहागन कहै कबीर ॥ ३५ ॥

विषया व्याप्या सकल संसार ॥ विषया लै डूबी संसार ॥ रेनर नाव चौड़ कत बोडी ॥ हरि सों तोड़ विषयासँग जोड़ी ॥ सुरनर दाधे लागी आग॥ निकटनीरपशु पीवस न झाग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥ सो जल निर्मल कथत कबीर ॥ ३६ ॥

जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारी ॥ विधवा कस न भई महतारी ॥ जिहिं नर राम भगति नहिं साधी ॥ जन्मत कस न मुयो अपराधी ॥ मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥ बुड भुज रूप जीवे जग मझ्या ॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम विना जैसे कुब्ज कुरूप॥३७॥

जो जन लेहिं खसम का नाउँ ॥ तिनके सद बलिहारे जाउँ ॥ जो निर्मल निर्मल हरिगुण गावै ॥ सो भाई मेरे मन भावै ॥ जिहिं घट राम रह्यो भरपूर ॥ तिनकी पग पंकज हम धूर । जाति जुलाहा मति का धीर । सहज सहज गुण रमें कबीर । ३८ ।

जिहिं मुख पांचो अमृत खाये । तिहिं मुख देखत लूकटलाये । इक दुख रामराय काटहु मेरा । अगनि दहै अर गरभ बसेरा । काया बिगूती बहु विध भाँती । को जारे को गड़ले माटी । कहु कबीर हरि चर्ण दिखावहु । पाछेते जम क्योंन पठावहु ॥ ३९ ॥

आपै पावक आपै पवना ॥ जारै खसम तो राखै कवना ॥ राम जपत तन जर क्यों नजाय ॥ राम नामचित्त रह्या समाय ॥ काको जरै काहि होय हान ॥ नटवट खेलै सारंगपान ॥ कहुकबीर अक्षर दोय भाख ॥ होयगा खसम तो लेगा राख ॥ ४० ॥

ना मैं योग ध्यान चितलाया ॥ बिनवैराग न छूटस माया ॥ कैसे जीवन होय हमारा ॥ जब न होय राम नाम अधारा ॥ कहु कबीर खोजहुं असमान ॥ राम समान न देखों आन ॥ ४१ ॥

जिहिं सिर रच रच बांधत पाग ॥ सोसिर चुंच सवाँरहिं काग ॥ इस तन धन को क्या गरवैया ॥ राम नाम काहेन दृढ़ैया ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ यही हवाल होहिंगे तेरे ॥ ४२ ॥

अह निसि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिद्धि भये लव लागे साधक सिद्ध सकल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ जो हरिहरे सो होहिं न आना ॥ कह कबीर राम नाम पछाना ॥ ४३ ॥

राग सोरठ ।

रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं ॥ हरितजकत काहूके जाहीं ॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई ॥ सो जन परघर जात न सोही ॥ सो साहिब रह्या भरपूर ॥ सदा संग नाहीं हरिदूर ॥ कमला चरण शरण है जाके कहु जन का नाहीं घर ताके ॥ सब कोऊ कहै जासु की बाता ॥ सो समर्थ निज पति है दाता ॥ कहै कबीर पूरन जग सोई ॥ जाके हिरदय अवर न होई ॥ ४४ ॥

कौन को पूत पिता को काको । कौन मरै को देय संतापो । हरि ठग जग को ठगौरीलाई । हरिके व्योग कैसे जीवों मेरी माई । कौन को पुरुष कौन की नारी । या तत्व लेहु शरीर विचारी । कह कबीर ठग सों मन मान्या । गई ठगौरी ठग पहचान्या ॥ ४५ ॥

अब मोकों भये राजा रामसहाई ॥ जन्म मरण कट परमगति पाई ॥ साधू संगत दियो रलाय ॥ पंच दूत ते लियो छुडाय ॥ अमृत नाम जपोंजप रसना ॥ अमोल दास कर लीनो अपना ॥ सतगुरु कीनो परउपकार ॥ काढ लीन सागर संसार ॥ चरण कमल सों

लागीप्रीत ॥ गोविंद बसै निता नितचीत । माया तत्त बुझ्या अंगार ॥ मन संतोष नाम आधार ॥ जल थल पूर रहे प्रभु स्वामी ॥ जत पेखों तत अंतरयामी ॥ अपनी भगति आपही दृढ़ाई ॥ पूरव लिखत मिल्या मेरे भाई ॥ जिस कृपा करै तिस पूरनसाज ॥ कबीर को स्वामी गरीबनिवाज ॥ ४६ ॥

राग गौरी ।

हरि यश सुनहिं न हरि गुन गावहिं ॥ बातनही असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगन सों क्या कहिये ॥ जोप्रभु किये भगति ते बाहिज तिनते सदा डरानेरहिये ॥ आप न देहिं चुरू भर पानी ॥ तिहिं निंदहिं जिहिं गंगाआनी ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहिं ॥ आप गये औरन हूं घालहिं ॥ छाँड कुचर्चा आन न जानहिं ॥ ब्रह्माहूं को कह्यो न मानहिं ॥ आप गये औरनहूं खोवहिं ॥ आग लगाय मंदिर में सोवहिं ॥ अवरन हँसत आप हैं काने ॥ तिनको देख कबीर लजाने ॥ ४७ ॥

जेते यतन करत ते डूबे भवसागर नहिं तराचोरे ॥ कर्म धर्म करते बहु संयम अहं बुद्धि मन जारचोरे ॥ सास ग्रास को दातो ठाकुर सो क्यों मनों बिसारचोरे ॥ हीरा लाल अमोल जन्म है कौड़ी बदले हारचोरे ॥ तृष्णा तृषा भूख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारचोरे ॥ उनमत मान रह्यो मन माहीं गुरुका शब्द न धारचोरे ॥ स्वाद लुब्ध इंद्री रस प्रेरचो मंद रस लेत विकारचोरे ॥ भर्म भाग संतन संगाने कासट लोह उधारचोरे ॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारचोरे ॥ कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेम भक्ति निस्तारचोरे ॥ ४८ ॥

एक जोति एका मिली किंवा होयमहोय ॥ जित घट नाम न ऊपजै फूट मरै जन सोय ॥ सांवल सुंदर रामैया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साध मिले सिद्ध पाइये कि यह योग की भोग ॥ दुहुं मिल कारज ऊपजै राम नाम संयोग ॥ लोग जाने यह गीत है यह तो

ब्रह्म विचार ॥ ज्यों काशी उपदेश होय मानस मरती बार ॥ कोई गावै को सुनै हरि नामा चित लाय ॥ कहु कबीर संशय नहीं अंत परम गति पाय ॥ ४९ ॥

कालबूतकी हस्तनी मन बौरारे चालित रच्यो जगदीश ॥ काम सुआयं गज वश परे मन बौरारे अंकुश सह्यो शीश ॥ विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे ॥ निरभय होय न हरि भज्यो मन बौरारे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाज की मन बौरारे लीनी हाथ पसार ॥ छूटन को संसा परचा मन बौरारे नाच्यो घर घर बार ॥ ज्यों नलनी सूअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार॥

जैसा रंग कुसुंभ का मन बौरा रे त्यों पसरयो पासार ॥ न्हावन को तीर्थ घने मन बौरा रे पूजन को बहु देव ॥ कह कबीर छूटन नहीं मन बौरा रे छूटन हरि की सेव ॥ ५० ॥

अगिन न दहै पवन नहिं मगनै तस्कर नेर न आवै ॥ राम नाम धन कर संचोनी सो धन कतहुँ न जावै ॥ हमरा धन माधव गोविंद धरणीधर यही सार धन कहिये ॥ जोसुख प्रभु गोविंद की सेवा सो सुख राज न लहिये ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी ॥ मन मुकुंद जिह्वा नारायण परै न जम की फाँसी ॥ निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा ॥ जलत अंभ थंभ मन धावत भ्रम बंधन भय भागा ॥ कहे कबीर मदन के माते हिरदय देख विचारी ॥ तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥ ५१ ॥

ज्यों कपि के कर मुष्टि चनन की लुब्ध न त्याग दियो ॥ जो जो कर्म कियो लालच सों ते फिर गरहिं परयो ॥ भगति विन विरथे जन्म गयो ॥ साधु संगत भगवान भजन विन कहीं न सचु रह्यो ॥ ज्यों उद्यान कुसुम प्रफुल्लित किनहूं न घ्राण लियो ॥ तैसे भ्रमत अनेक योनि में फिर फिर काल हयो ॥ या धन योवन अरु सुत दारा पेखन को जो दियो ॥ तिनही माहीं अटक जो

उरझे इंद्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृण को मंदिर चहुं दिशि ठाट ठयो ॥ कह कबीर भवसागर तरण को पैं सतगुरु ओट लियो॥

राग गौरी पूरवी ।

स्वर्ग वास नहिं बांछिये डरिये न नर्क निवास ॥ होनाहै सो होय है मनहिं न कीजे आस॥रमैया गुन गाइये जाते पाइये परम निधान॥ क्या जप क्या तप संयमो क्या व्रत क्या अस्नान ॥ जबलग जुगति नजानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देखि न हरषिये विपति देख न रोय ॥ ज्यों संपति त्यों विपति है विधि ने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार ॥ सेवक सो सेवा भले जिहिं घट वसहिं मुरार ॥ ९३ ॥

राग गौरी ।

आस पास घन तुलसी क बिरवा मांझ बनारस गाउँ रे ॥ वाका सरूप देख मोही ग्वारनि मोको छोड न आउ न जाउँ रे ॥ तोहि चरण मन लागो ॥ सारंगधर सों मिलै जो बडभागो ॥ वृंदावन मनहरन मनोहर कृष्ण चरावत गाउँ रे ॥ जाका ठाकुर तुहीं सारंगधर मोहिं कबीरा नाउँ रे ॥ ९४ ॥

लख चौरासी जीय योनि में भ्रमत नंद बहु थाको रे ॥ भगति हेत अवतार लियोहै भाग बड़ो वपुरा को रे ॥ तुम जो कहतहो नंद को नंदन नंद सो नंदन काको रे ॥ धरणि अकाश दशोदिशि नाहीं तब यह नंद कहां थो रे ॥ संकट नहीं परै योनि नहीं आवै नाम निरंजन जाकोरे ॥ कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापो रे ॥ ९५ ॥

राग गौरी चेती ।

देवा पाहन तारीयले ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ तारीले गनिका बिन रूप कुब्जा व्याध अजामल तारीयले ॥ चरण बधक जन तेऊ मुक्त भये ॥ हौं बल बल जिन राम कहे ॥ दासी सुत जन विदुर सुदामा उग्रसेन को राज दिये ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन कर्म हीन नामे के स्वामी तेऊ तरे ॥ ९६ ॥

सतयुग सत त्रेता यज्ञ द्वापर पूजा चार ॥ तीनों युग तीनों दृढ़े कलि केवल नाम अधार ॥ पार कैसे पायबोरे ॥ मोसों कोउ न कहै समुझाय ॥ जाते आवागमन बिलाय ॥ बहुविध धर्म निरूपिये करता दीसै सब लोय ॥ कवन कर्म ते छूटिये जिहिं साधे सब सिध होय ॥ कर्म अकर्म विचारिये शंका सुन वेद पुराण ॥ संसासद हिरदय वसे कौन हरै अभिमान ॥ बाहर उदक पखारिये घट भीतर विविध विकार ॥ शुद्ध कवन पर होयबो शुचि कुंचर विध व्योहार ॥ रवि प्रकाश रजनी यथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो तांबो छुये कनक होत नहिंबार ॥ परमपुरुष गुरु भेटिये पूरबलिखत ललाट ॥ उनमन मन मनही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काट विकार ॥ सोई वस रस मन मिले गुण निर्गुण एक विचार ॥ अनिक यतन निग्रह किये टारी नटरै भ्रम फाँस ॥ प्रेम भगति नहीं ऊपजै ताते रविदास उदास ॥

राग आसा।

पवन उपाय धरी सब धरती जल अगिनि का बंध किया ॥ अंधले दहसिर मूंड कटाया रावण मार क्या बड़ाभया ॥ क्याउपमा तेरी आँकी जाय तू सरबे ॥ पूर रह्या लव लाय ॥ जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या बड़ा भया ॥ किस तूं पुरुष जोरू कौन कहिये सर्व निरंतर रम रह्या ॥ नाल कुटुंब साथ वरदाता ब्रह्मा भालण सृष्टि गया ॥ आगे अंत नपायो ताका कंस छेद क्या बड़ा भया ॥ रत्नउपाय धरे क्षीर मथ्या होर भखलाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छपै क्यों छप्या एकी एकी बंड दीया ॥ ५८ ॥

राज मिलक जोबन गृह शोभा रूपवंत जो आनी ॥ बहुत द्रव्य हस्ती अर घोड़े लाल लाख बयआनी ॥ आगे दरगहिं काम न आवहिं छोड़ चलै अभिमानी ॥ काहे एक बिना चित लाइये ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि ध्याइये ॥ महा विचित्र सुंदर आखाड़े रण में जिते पवाड़े ॥ हौं मारों हौं बंधों छोडों मुखते एव बबाडे ॥ आया हुकुम पारब्रह्म का छोड चल्या एक दिहाडे ॥

कर्म धर्म जुगति बहु करता करनेहार न जानै ॥ उपदेश करै आप न कमावै तत्व शब्द न पछानै ॥ नांगा आया नांगो जासी ज्यों हस्ती खाक छानै ॥ संत सुजन सुनहु सभ मीता झूठा एह पसारा मेरी मेरी कर कर डूबे खप खप मुये गँवारा ॥ गुरु मिल नानक नाम ध्याया साँच नाम निस्तारा ॥ ५९ ॥

जिस नीच को कोई न जानै ॥ नाम जपत सो चहु कुंट मानै ॥ दर्शन मांगों देहु प्यारे ॥ तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवै कोई ॥ सकल सृष्टि वाके चरण मल धोई ॥जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसाद ताको जापिये नाम ॥ साधु संग मन सोवत जागे ॥ तब प्रभु नानक मीठे लागे ॥ ६० ॥

उक्ति सयानप कछू न जानां ॥ दिन रैन तेरा नाम बखानां ॥ मैं निर्गुण गुण नाहीं कोय ॥ करन करावन हार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान अविचारी ॥ नाम तेरे की आश मन धारी ॥ जप तप संयम कर्म न साधा ॥ नाम प्रभू का मनहिं अराधा ॥ कछु न जानां मति मेरी थोरी ॥ विनवत नानक ओट प्रभु तोरी ॥ ६१ ॥

चरण कमलकी आस प्यारे ॥ यम किंकर नस गये विचारे ॥ तूं चित आवहिं तेरी मया ॥ सिमरत नाम सकल रोग षया ॥ अनिक दूख देवहिं अवरां को ॥ पहुंच न साकहिं जन तेरे को ॥ दरश तेरे की प्यास मन लागी ॥ सहज आनंद वसै वैरागी ॥ नानक की अर दास सुनीजै ॥ केवल नाम हृदय में दीजै ॥ ६२ ॥

आठ पहर निकट कर जानै ॥ प्रभु का कीया मीठा मानै ॥ एक नाम संतन आधार ॥ होय रहे सभकी पग छार ॥ संत रहत सुनो मेरे भाई ॥ वाकी महिमा कथन न जाई ॥ वरतन जाके केवल नाम ॥ अनंद रूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै ॥ प्रभु अपने बिन अवर न जानै ॥ कोटि कोटि अघ काटन हारा ॥ दुख दूर करन जीय के दातारा ॥ शूरवीर वचन के बली कमला बपुरी संतन छली ॥ तांका संग बाछहिं सुरदेव ॥ अमोघ

दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास ॥ मोहिं संतहि टहल दीजै गुण तास ॥ ६३ ॥

भगत वच्छल हरि बिरद आप बनाइया ॥ जहिं जहिं संत अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया ॥ आनंद हरि यश महा मंगल सर्व दुःख विसारिया ॥ चमत्कार प्रकाश दह दिस एक तहिं दर्शाइया नानक पिअंपै चरण जंपै भगत वछल हरि बिरद आप बनाइया६४

थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ जाके गृह हरि नाहु सो सद ही रावहे ॥ अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा नवतन निर्मला ॥ नाहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राण पति गति मति जाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे ॥ नानक बखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ ६५ ॥

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार ॥ कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसनहार ॥ कूड़ सोना कूड़ रूपा कूड़ पैनणहार ॥ कूड़ कायां कूड़ कप्पड़ कूड़ रूप अपार ॥ कूड़ मीयां कूड़ बीवी खप्प होये खार ॥ कड़ कड़े नेहु लग्गा बिसरच्या करतार ॥ किसनाल कीजे दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड़ मिट्ठा कड़ माष्यो कूड़ डोबे पूर ॥ नानक बखाने विनती तुध वाझ कूड़ो कूड़ ॥ ६६ ॥

जबलग तेल दैवे मुख वाती तब सूझे सभ कोई ॥ तेल जले वाती ठहरानी सूना मंदिर होई ॥ रेबौरे तोहिं घरी न राखे कोई ॥ तूं राम नाम जप सोई ॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुर्ष की जोई ॥ घट फूटे कोउ बात न पूछे काढो काढो होई ॥ देहुरी बैठी माता रोवे खटिया लेगये भाई ॥ लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु भयसागर के ताई ॥ इस बंदे सिर जुलम होतहै जम नहिं हटे गुसाई ॥ ६७ ॥

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥ जहां बसहिं पीतंबर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावताहै ॥ हरि का नाम मेरे मन भावताहै ॥ नारद शारद करहिं खवासी ॥ पास बैठी बीबी कमला दासी ॥ कंठे माला

जिह्वा राम ॥ सहस नाम लै लै करहू सलाम ॥ कहत कबीर राम गुन गावों ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावों ॥ ६८ ॥

कहा श्वान को सिमृत सुनाये ॥ कहा शाकत पै हरि गुन गाये राम राम राम रमे रम रहिये ॥ शाकत सों भूल नहीं कहिये ॥ कौआ कहा कपूर चुगाये ॥ कहिं बिसीयर को दूध पिआये ॥ सतसंगत मिल विवेक बुद्धि होई ॥ पारस परस लोहा कंचन सोई ॥ शाकत श्वान सभ करे कराया ॥ जो धुर लिख्या सो कर्म कमाया अमृत लै लै नीम सिंचाई ॥ कहत कबीर वाको सहज न जाई ६९ ॥

लंका सा कोट समुंद्र सी खाई ॥ तिहिं रावण घर खबर न पाई ॥ क्या मांगों कछु थिर न रहाई ॥ देखतनयन चल्यो जगजाई ॥ इक लख पूत सवालख नाती ॥ तिहिं रावन घर दिया न वाती ॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई ॥ बैसंदर जाके कपड़े धोई ॥ गुरु मति रामहिं नाम बसाई ॥ अस्थिर रहै न कतहूं जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई ॥ राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥ ७० ॥

कियो शृंगार मिलन के ताईं ॥ हरि न मिले जग जीवनगुसाईं ॥ हरि मेरो पीर हौं हरि की बहुरिया ॥ राम बड़े मैं तनक लहुरिया ॥ धनि पिर एकै संग बसेरा ॥ सेज एक पै मिलन दुहेरा ॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे ॥ कह कबीर फिर जन्म न आवे ॥ ७१ ॥

अंतर मैल जो तीरथन्हावे तिस वैकुंठ नजाना ॥ लोक पतीने कछू न होवै नाहीं राम अयाना ॥ पूजोराम एकही देवा ॥ साँचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जल के मज्जन जे गति होवै नित नित मेंडक न्हावहिं ॥ जैसे मेंडक तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहिं ॥ मनों कठोर मरै बनारस नरक न वाच्या जाई ॥ हरि का संत मरे हाढ़ंवहिं सकली सैन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाहीं शास्त्र तहां बसै निरंकारा कह कबीर नर तिसहिं ध्यावो बावरिया संसारा ॥ ७२ ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जब देखों तत सोई ॥ माया चित्र विचित्र विमोहत विरला बूझे कोई ॥ सब गोविंद है सब गोविंद है गोविंद बिन नहिं कोई ॥ सूत एक मणि शत सहस जैसे ओत प्रोत

प्रभु सोई ॥ जलतरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ॥ यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला विचरत आन न होई ॥ मिथ्या भ्रम अरु स्वपन मनोरथ सत्य पदारथ जान्या ॥ सुकृत मनसा गुरू उपदेशी जागतही मन मान्या ॥ कहत नामदेउ हरि की रचना देखो हृदय विचारी ॥ घट घट अंतर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ७३ ॥

राग गूजरी ।

मुस मुस रोवै कबीर की माई ॥ यह बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ तनना बुनना सभ तज्यो है कबीर ॥ हरि का नाम लिख लियो शरीर ॥ जबलग तागा बाहों बेही॥तबलग बिसरै राम सनेही॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥हरि का नाम लह्यो मैं लाहा॥कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इनका दाता एक रघुराई ॥ ७४ ॥

जो राज देहिं तो कवन बड़ाई ॥ जो भीख मँगावहिं तो क्या घट जाई ॥ तूं हरि भज मन मेरे पद निरवान ॥ बहुरि न होय तेरा आवन जान ॥ सब तैं उपाई भर्म भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहिं बुझाई ॥ सतगुरु मिले तां संशय जाई ॥ किस हौं पूजो दूजो नजर न आई ॥ एकै पाथर कीजै भाउ ॥ दूजे पाथर धरिये पाउ ॥ जे वह देवता वहभी देवा ॥ कह नामदेव हम हरिकी सेवा ॥ ७५ ॥

दूध तो बछरे थनों बिटारचो ॥ फूल भ्रमर जल मीन बिगारचो ॥ माई गोविंद पूजा कहा ले चढ़ावों ॥ अवर न फूल अनूपम पावों ॥ मलयागिर बेढ़े हैं भुजंगा ॥ विष अमृत बसहिं इकसंगा ॥ धूपदीप नैवेदहिं बासा ॥ कैसे पूज करै तेरी दासा ॥ तन मन अरपों पूज चढ़ावों ॥ गुरु प्रसाद निरंजन पावों ॥ पूजाअरचा आहि न तोरी ॥ कह रामदास कवन गति मोरी ॥ ७६ ॥

अंतर मल निर्मल नहिं कीना बाहर भेष उदासी ॥ हृदय कमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया संन्यासी ॥ भरमे भूलीरे जैचंदा ॥ नहीं नहीं चीन्हा परमानंदा॥ घर घर खाया पिंड बधाया खिंथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान की भसम लगाई गुरु बिन तत्व न पाया ॥ काय जपोरे काय तपोरे काय बिलोवो पानी ॥ लख चौरासी जिन

उपाई सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमंडल कापड़ियारे अठसठ काहि फिराही ॥ वदतत्रिलोचन सुनरे प्राणी कण विन गाहुकिपाही ॥

अंतकाल जो लक्ष्मी सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जो मरै ॥सरपयोनि वल वल औतरै ॥ अरी बाई गोविंद नाम मत बीसरै ॥ अंतकाल जो इस्त्री सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जे मरै ॥ वेसवा योनि वल वल औतरै ॥ अंतकाल जो लड़के सुमिरै॥ ऐसी चितामें जे मरै ॥ शूकर योनि वल वल औतरै ॥ अंतकाल जो मंदिर सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जे मरै ॥ प्रेत योनि वल वल औतरै ॥ ॥ अंतकाल नारायण सुमिरै ऐसी चिंता में जे मरै ॥ वदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता पीतांबर वाके हृदय वसे ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार ।

अब हम चली ठाकुर पहिं हार ॥ जब हम शरण प्रभूकी आई राख प्रभु भावे मार ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते वैसंदर जार ॥ कोई भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियोहै ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार ॥ जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार ॥ ७९ ॥

हरि राम नाम जप लाहा । गतिपावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के काहा । खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरि संत जनां पहि आहा । तिन्हां प्रात यह निधाना जिनके कर्म लिखाहा ॥ से वड भागी से पतिवंते सेई पूरे शाहा । सुंदर सुघड़ सुरूप ते नानक जिन हरि हरि नाम विसाहा ॥ ८० ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजै कर संतनका चेरा । प्रातहिं काल लागों जन चरनीं निशि वासर दर्शन पावों ॥ तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरि गुन गावों । साँस साँस सुमिरों प्रभु अपना संत संग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा अनंद नानक यह लहिये ॥ ८१ ॥

राग सोरठ ।

आपे सेवा लायदा प्यारा आपे भगति उमाहा । आपे गुण गावां

यदा प्यारा आपे शब्द समाहा॥आपे लेखण आप लिखारी आपे लेख लिखाहा॥मेरेमनजप रामनामउमाहा ॥ अनुदिनअनँदहोवै वड़भागी लैगुर पूरे हरि लाहा ॥ आपे गोपी कान्ह है प्यारा वन आपे गऊ चराहा ॥ आपेसांवल सुंदर प्यारा आपे वंशीवजाहा ॥ कुवलयापीड़ आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूपपचाहा ॥ आपअखाड़ा पायँदा प्यारा कर देखै आप चोजाहा ॥ कर बालक रूप उपायँदा प्यारा चंडूर कंस केस मराहा ॥ आपे ही बल आपहै प्यारा बल भनैं मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपे जगत उपायँदा प्यारा वस आपे जुगति हथाहा गल जेवड़ी आपे पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचै त्यों जाहा ॥ जो गरबै सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥ ८२ ॥

जौलौं भाव अभाव यह मानै तौलौं मिलण दुराई ॥आन आपना करत बिचारा तौलौं बीच बिषाई ॥ माधव ऐसी देहु बुझाई ॥ सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं बिसरै मुहुत चसाई ॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई ॥ प्राण पति त्याग आन तूं रच्या उरझ्यो संग बैराई ॥ शोक न व्यापे आपन थाये साधु संगत बुद्धि पाई ॥ शाकत का बकना एउ जानो जैसे पवन झुलाई ॥ कोट प्राध अछादयो एह मन कहना कछु न जाई ॥ जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई ॥ ८३ ॥

तन संतन का धन संतन का मन संतन का कीया ॥ संतप्रसाद हरि नाम ध्याया सर्व कुशल तबथीया ॥ संतन बिन अवर न दाता बीया ॥ जो जो शरण परै साधू की सो पारग्रामी कीया ॥ कोट प्राध मिटहिं जन सेवा हरि कीर्तन रस गाइये ॥ ईहां सुख आगे मुख ऊजल जन का संग बड़भागीं पाइये ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जनकी केतक उपमा कहिये ॥ अगम अगोचर सद अविनाशी शरण संतन की लहिये ॥ निरगुण नीचअनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ बूडत मोह गृह अंध कूप में नानक लेहु निबाही॥८४॥

खोजत खोजत खोज विचार्यो राम नाम तत्वसारा ॥ किलविष काटे निमिष अराध्या गुरुमुख पार उतारा ॥ हरिरस पीवो पुरुष

ज्ञानी ॥ सुन सुन महा तृप्त मन पावै साधू अमृत बानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचु पाइये सर्व सुखांकादाता ॥ अपनेदास को भगति दान देवै पूरण पुरुष विधाता॥श्रवणीं सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई ॥ करन कारन समरत्थ स्वामी जाते वृथा न कोई ॥ बड़े भाग रत्न जन्म पाया करो कृपा कृपाला ॥ साधु संग नानक गुण गावै सुमिरै सदा गोपाला ॥ ८५ ॥

जेती समग्री देखहुरे नर तेती ही छड जानी ॥ राम नाम संग कर व्योहारा पावहिं पद निरबानी ॥ प्यारे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरु पुरे दीया उपदेशा तुमही संग पराता ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना तामें सुख नहिं पाइये ॥ होहु रैनि तू सकल की मेरे मन तौ आनँद मंगल सुख पाइये॥ घाल न भानै अंतर विधि जाने ताकी कर मन सेवा ॥ कर पूजा होम एह मनुआँ अकाल मूरत गुरु देवा ॥ गोविंद दामोदर दयाल माधवे पारब्रह्म निरंकारा ॥ नाम वर तन नामोवालेवा नाम नानक प्राण अधारा ॥ ८६ ॥

रत्न छाँड कौडी सँग लागे जाते कछू न पाइये ॥ पूरन पारब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी ॥ विनशै काची देह अज्ञानी ॥ मृगतृष्णा अरु सुपन मनोरथ ताकी कछु न बडाई ॥ राम भजन बिन काम न आवसि संग न काहू जाई हौं हौं करत विहाय अवरदा जिय को काम न कीना ॥ धावत धावत नहिं तृपतास्या राम नाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषय रस मातो असंख खते कर फेरे ॥ नानक की प्रभु पाहि बीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ८७ ॥

गुण गावो पूरण अविनाशी काम क्रोध विष जारे ॥ विषम अग्नि को सागर साधू संग उधारे । पूरेगुरु मेट्यो भ्रमअंधेरा । भज प्रेम भगति प्रभु नेरा । हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई । जतकत पूर रह्यो परमेश्वर कत आवे कत जाई । जप तप संयम ज्ञान तत्ववेत्ता जिस मन वसै गुपाला । नाम रतन जिन गुरुमुख पाया तांकी पूरण घाला । कलि कलेश मिटे दुख सकले

काटी यम की फाँसा। कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये विकासा॥ ८८॥

माया मोह मगन अँधियारे देवनहार न जाने। जीउ पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर माने। मन मूढ़े देख रह्यो प्रभु स्वामी जोकछु करहिं सोई सोई जाणै रहै न कछु ऐछानी। जिह्वा स्वाद लोभ मद मातो उपजे अनिक विकारा। बहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौं मैं बंधन के भारा। देय किवाड अनिक पडदे में परदारा सँग फाके॥ चित्रगुप्त जब लेखा मांगहि तब कौन पडदा तेराढाके॥ दीन दयाल पूरन दुख भंजन तुम विन ओट न काई काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभु शरनाई॥ ८९॥

सकल वनस्पति में बैसंदर सकल दूधमेंघीया॥ ऊँच नीच में जोति समानी घट घट माधोजीया॥ संतोघटघट रह्यासमाह्यो॥ पूरनपूर रह्यो सर्वमें जल थल रमैया आह्यो॥ गुणनिधान नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो॥ सर्व निवासी सदा अलेपा सबमें रह्यो समायो॥ ९०॥

अविनाशी जीवन को दाता सुमिरत सब मल खोई॥ गुण निधान भगतन को वर्तन विरला पावै कोई॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई॥ जाकी शरण परे सुख पाइये बहुरि दुख न होई॥ बड़भागी साधुसंग प्राप्त तिन भेटत दुर्मति खोई॥ तिनकी धूर नानक दास बांछै जिन हरि नाम हृदय पराई॥ ९१॥

रामदास सरोवर न्हाते। सब उतरे पाप कमाते। निर्मल होये कर अस्नाना गुरुपूरे कीने दाना। सब कुशल क्षेम प्रभु धारे। सही सलामत सब थोक उबारे॥ गुरुका शब्द विचारे॥ साधु संग मल लाथी॥ पारब्रह्म भयो साथी॥ नानक नाम ध्याया॥ आदि पुरुष प्रभु पाया॥ ९२॥

प्राणी कौन उपाव करै॥ जाते भगति रामकी पावै यमको त्रास हरै॥ कौन कर्म विद्या कहु कैसी धर्म कौन पुनि करई॥ कौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागर को तरई॥ कलि में एक

नाम किरपानिधि जाहि जपै गति पावै ॥ और धर्म ताके सम नाहिंन यह विधि वेद बतावै ॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाईं ॥ सो तुमहींमें बसै निरंतर नानक दर्पण न्याईं ॥ ९३ ॥

माई मैं किहि विधि लखों गुसाईं ॥ महा मोह अज्ञान तिमिर मैं मन रह्यो उरझाई ॥ सकल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो नहीं स्थिर मति पाई ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई ॥ साधु संग कबहूं नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहिं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ९४ ॥

माई मन मेरो वश नाहिं ॥ निशि वासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोकों ताहि ॥ वेद पुराण सिमृति के मत सुन निमिष न हिये बसावै ॥ पर धन पर दारा सों राच्यो बिरथा जन्म सिरावै ॥ मद माया के भयो बावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घट ही भीतर बसत निरंजन ताको मर्म न जाना ॥ जबहीं शरण साधु की आयो दुरमति सकल बिनासी ॥ तब नानक चेत्यो चिंतामणि काटी यम की फाँसी ॥ ९५ ॥

रे नर यह सांची जिय धार ॥ सकल जगतहै जैसे सुपना बिनशत लगत न बार ॥ बारू भीत बनाई रचपच रहत नहीं दिन चार ॥ तैसेही यह सुख माया को उरझ्यो कहा गवाँर ॥ अजहूं समझ कछु बिगरयो नाहिंन भजले नाम मुरार ॥ कहु नानक निज मति साधन को भाष्यो तोहिं पुकार ॥ ९६ ॥

मनरे गह्योन गुरु उपदेश ॥ कहा भयो जो मूंड मुंडायो भगवो कीनो भेश ॥ साँच छाडके झूठहिं लाग्यो जन्म अकारथ खोयो ॥ कर परपंच उदर निज पोष्यो पशु की नाईं सोयो ॥ राम भजन की गति नहिं जानी माया हाथ बिकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन सँग बौरा नाम रत्न बिसराना ॥ रह्यो अचेत न चेत्यो गोविंद बिरथा औध सिरानी ॥ कहु नानक हरि बिरद पछानो भूले सदा परानी९७

जोनर दुखमें दुख नहिंमाने॥सुखसनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटीमाने ॥ नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना ॥

हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना ॥ आशा मनसा सकल त्यागै जगते रहै निरासा ॥ काम क्रोध जिहिं परसै नाहिंन तिहिं घट ब्रह्म निवासा ॥ गुरु किरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह जुगति पछानी ॥ नानकलीन भयो गोविंद सों ज्यो पानी सँगपानी

जब जरिये तब होय भसम तन रहै किरम दल खाई ॥ काची गागर नीर परत है या तन की यही बड़ाई ॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या ॥ जब दश मास ऊर्द्ध मुख रहता सो दिन कैसेभूल्या॥ ज्यों मधु माखी त्यों सठोर रस जोर जोर धन कीया ॥ मरती वार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया ॥ देहरी लौं बरी नारि संग भई आगे सजन सुहेला ॥ मरघट लौं सभ लोग कुटुंब भयो आगे हंस इकेला ॥ कहत कबीर सुनोरे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूठी माया आप बँधाया ज्यों नलिनी भ्रम सूआ ॥ ९९ ॥

वेदपुराण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा ॥ काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहिं चले निराशा ॥ मनरे सरचो न एकौ काजा। भज्यो न रघुपतिराजा॥वनखंडजाय योग तप कीनो कंदमूल चुनखाया नादी वेदी शब्दी मोनी यमके पट लिखाया ॥ भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना ॥ राग रागनी डिंभ होय बैठा उन हरि पहिं क्या लीना ॥ परचो काल सभी जग ऊपर माहिं लिखे ब्रह्म ज्ञानी ॥ कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिहिं जानी

क्या पढियेक्या सुनिये ॥ क्या वेद पुराणा सुनिये ॥ पढ़े सुने क्या होई ॥ जो सहज न मिल्या सोई ॥ हरिका नाम न जपसि गवाँरा ॥ क्या सोचहिं वारंवारा॥अँधियारे दीपक चहिये ॥ इकवस्तु अगोचर लहिये ॥ वस्तु अगोचर पाई ॥ घट दीपक रह्या समाई ॥ कह कबीर अब जान्या ॥ जब जान्या तो मन मान्या ॥ मन मानें लोग न पतीजे ॥ न पतीजै तो क्या कीजै ॥ १०१ ॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी ॥ झूठे कहा विलोवत पानी ॥ काया मांसज कौन गुना ॥ जो घट भीतर है मलना ॥ लौकी अठसठ तीर्थ न्हाई ॥ कौरापन तऊ न जाई ॥ कह कबीर बीचारी ॥ भवसागर तार मुरारी ॥ १०२ ॥

बहु प्रपंच कर परधन ल्यावै ॥ सुत दारा पहिं आन लुटावै ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजै ॥ अंतनिबेरा तेरे जीय पहिंलीजै ॥ छिन छिन तन छीजै जरा जनावै ॥ तब तेरी ओप कोई पानी हूं नपावैक- हत कबीर कोई नहिं तेरा ॥ हिरदय राम क्योंन जपहिं सवेरा॥१०३॥

भूखे भगति न कीजै ॥ यह माला अपनी लीजै ॥ हौं मांगों संतन रेना ॥ मैं नाहीं किसीका देना ॥ माधो कैसी बने तुम संगे ॥ आपन देहु तो लेवों मंगे ॥ दोय सेर मांगों चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ अधसेर मांगों दाले॥मोको दोनो वखत जिमाले ॥ खाट मांगा चौपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर को मांगों खींधा ॥ तरी भगति करें जन थींधा ॥ मैं नाहीं कीता लब्बो ॥ इक नाम तेरा मैं फब्बो ॥ कह कबीर मनमान्या ॥ मन मान्या तो हरि जान्या ॥ १०॥

पार परोसन पूछले नामा का पहिंछान छवाई हो ॥ तोपहिं दुगनी मजूरी देहों मोकों बेढी देहु बताई हो॥ री बाई बेढी देन नजाई देख बेढ़ी रह्यो समाई ॥ हमारे बेढी प्राण आधारा॥बेढी प्रीति मजूरी मांगे जोकोउ छान छवावैहो ॥ लोक कुटुंब सबहूं ते तोरै तो आप न बेढी आवैहो ॥ ऐसो बेढी बर्न नजाको सभ अंतर सभ ठाई हो गूंगे महा अमृत रस चाख्या पूछे कहन न जाई हो ॥ बेढी के गुण सुनरी बाई जलधि बांध ध्रु थाप्योहो ॥ नामे के स्वामी सीय बहौरी लंक बिभीषण आप्यो हो॥ १०८ ॥

जब हम होते तब तू नाहीं अब तूहीं मैं नाहीं ॥ अनल अगम जैसे लहरि मय उदधि जल केवल जल माहीं ॥ माधव क्या कहियें भ्रम ऐसा ॥ जैसामानियेंहोय न तैसा ॥ नरपति एक सिंहासन सोया सुपने भयो भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुख पाया सो गति भई हमारी ॥ राज भुवंग प्रसंग जैसे हैं अब कछु मर्म जनाया ॥ अनिक कटक जैसे भूले परे अब कहतें कहन न आया ॥ सर्वे एक अनेकै स्वामी सब घट भुगवै सोई ॥ कह रामदास हाथ पै नरै सहजें होय सो होई ॥ १०६ ॥

जो हम बांधे मोह फांस हम प्रेमबंधन तुम बांधे ॥ अपने छूटन-

को यतन करो हम छूटे तुम आराधे ॥ माधवे जानतहो जैसी तैसी॥ अब कहा करोगे ऐसी॥मीन पकर फांस्यो अरु काट्यो रांध कियो बहु बानी ॥ खंड खंड कर भोजन कीनो तऊ न बिसरयो पानी ॥ आपन बापै नाहीं किसीको भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सब जगत व्याप्यो भगत नहीं संतापा ॥ कह रामदास भगति इक बाढी अब यह कासों कहिये ॥ जाकारन हम तुम आराधे सो दुःख अजहूं सहिये ॥ १०७ ॥

दुर्लभ जन्म पुण्य फल पायो वृथा जात अविवेकै॥ राज इंद्र सम सर गृह आसन बिन हरि भगति कहो किहिं लेखै॥न विचारयो राजा रामको रस जिहिं रस अनरस बीसर जाहीं ॥जान अजान भये हम बावर सोच असोच दिवस जाहीं ॥ इंद्री सबल निबल विवेक बुधि परमारथ प्रवेश नाहीं ॥ कहियत आन अचरियत अनकछु समझ नपरै अपरमाया॥कहरमदास उदास दासमति परिहर कोप करो जियदाया

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके॥ चार पदारथ अष्ट दशा सिधि नव निधि करतल ताके ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सब त्याग वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विध चौतीस अक्षरमाहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ राम नाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहत पुनि बड़े भाग लिव लागी॥कह रामदास प्रकाश हृदय धर चन्म मरन भय भागी १०९

नैनों नीर बहै तन क्षीना भये केश दुधवानी ॥ रूंधा कंठ शब्द नाहिं उचरै अब क्या कराहि परानी ॥ रामराय होय बैद वनवारी अपने संतन लेहु उबारी ॥ माथे पीर शरीर जलन है करक कलेजे माहीं ॥ ऐसी वेदन उपज खरी भई वाकी औषध नाहीं ॥ हरि का नाम अमृत जल निर्मल यह औषध जग सारा॥ गुरु प्रसाद कहै जन भीषण पावो मोक्ष द्वारा ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

बड़े बड़े राजन अर भूमन ताकी त्रिसना न बूझी ॥ लपट रहे माया रँग माते लोचन कछु न सूझी ॥ विषया महिं किनहूं तृप्ति

न पाई ॥ ज्यों पावक ईंधन नहीं धरापै विन हरि कहा विन अघाई ॥ दिन दिन करत भोजन बहु व्यंजन ताकी मिटै न भूखा ॥ उद्यम करै श्वान की नाई चारों कुंटा घोखा ॥ कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछतावै शोक लोभ में सूकै ॥ हरि हरि नाम अपार अमोलक अमृत एक निधाना ॥ सुख सहज आनँद संतनके नानक गुरु ते जाना ॥ १११ ॥

हरिएक सिमर एक सिमर एक सिमर प्यारे ॥ कलि कलेश लोभ मोह महा भवजल तारे ॥ श्वास श्वास निमिष निमिष दिन सुरैन चितारे ॥ साधु संग जप निशंक मन निधान धारे ॥ चरणकमल नमसकार गुण गोविंद वीचारे ॥ साधु जनां की रेणु नानक मंगल सुख सधारे ॥ ११२ ॥

काहेरे बन खोजन जाई ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा तोहि संग समाई ॥ पुष्पमध्य ज्यों वास वसत है मुकर माहीं जैसेछाई ॥ तैसेही हरि वसैं निरंतर घट ही खोजो भाई ॥ बाहर भीतर एको जानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ जन नानक बिन आपा चीने मिटे न भ्रम की काई ॥ ११३ ॥

साधो यह जग भर्म भुलाना ॥ राम नाम का सिमरन छोड्या माया हाथ बिकाना ॥ मातपिता भाई सुत वनिता ताके रसलपटाना ॥ यौवन धन प्रभुता के मदमें अह निशि रहै दिवाना ॥ दीन दयाल सदा दुख भंजन तासों मन न लगाना ॥ जननानक कोटिन में कि-नहूं गुरमुख होय पछाना ॥ ११४ ॥

तिहिं योगी को जुगत न जानो ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि जिहिं घट माहिं पछानो ॥ पर निंदा स्तुति नहीं जाके कंचन लोह समानो ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता योगी ताहि वखानो ॥ चंचल मन दह दिस को धावत अचल जाहिं ठहरानो ॥ कहु नानक यह विधि को जो नर मुक्त ताहि तुम मानो ॥ ११५ ॥

दिन ते पहर पहर ते घडियां आयु घटे तन छीजे ॥ काल अहेरी फिरे वधिक ज्यों कहो कवन विध कीजे ॥ सो दिन आवन

लागा॥ मात पिता भाई सुत वनिता कहो कोऊ है है कांका॥ जबलग जोति काया में बरते आपा पशू न बूझे॥ लालच करे जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझे॥ कहत कबीर सुनोरे प्राणी छोडो मनके भरमा॥ केवल नाम जपोरे प्राणी परो एक की शरणा॥

जो जन भाव भक्ति कछु जानै ताको अचरज काहो॥ ज्यों जल जल में पैठ न निकसै त्यों ढुर मिल्यो जुलाहो॥ हरि के लोगा मैंतो मतिका भोरा॥ जो तन काशी तजहि कबीरा रमैये कहा निहोरा॥ कहत कबीर सुनोरे लोई भर्म न भूलोकोई॥ क्या काशी क्या ऊखर मगहर राम हृदय जो होई॥ ११७॥

इंद्रलोक शिव लोकहिं जैबो॥ ओछे तप कर बाहर ऐबो॥ क्या मांगों कछु थिर नाहीं॥ राम नाम राख मन माहीं॥ शोभा राज विभव बड़ियाई॥ अंत न काहू संग सहाई॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया॥ इनते कहु कवनै सुख पाया॥ कहत कबीर अवर नहिं कामा॥ हमरेमन धन रामको नामा॥ ११८॥

गहरी करकै नीव खुदाई ऊपर मंडप छाये॥ मारकंडे ते को अधिकाई जिन तृण धर मूंड बलाये॥ हमरो करता राम सनेही॥ काहेरे नर गरब करतहो बिनश जाय झूठी देही॥ मेरी मेरी कौरव करते दुरयोधन सौभाई॥ बारह योजन छत्र चलै था देही गिरझन खाइ॥ सर्व सोने की लंका होती रावण से अधिकाई॥ कहा भयो दर बांधे हाथी क्षणमें भई पराई॥ दुरवासा सों करत ठगौरी यादव यह फल पाये॥ कृपा करी जन अपने ऊपर नामदेव हरि गुण गाये॥ ११९॥

हम सर दीन दयाल न तुम सर अब पतिआर क्या कीजै॥ बचनी तोर मोर मन मानै जनको पूरन दीजै॥ हौं बल बल जाऊं रमैया कारने॥ कारनकवन अबोल॥ बहुत जन्म बिछुरे थे माधव यह जन्म तुम्हारे लेखे॥ कह रामदास आश लग जीवों चिर भयो दर्शन देखे॥ १२०॥

धूप दीप घृत साज आरती॥ वारने जाउँ कमला पति॥ मगला हरि मंगला॥ नित मंगल राजा रामराय को॥ उत्तम

दयिरा निर्मल बाती ॥ तूही निरंजन कमला पाती ॥ रामा भगति रामानंद जानै ॥ पूरन परमानंद बखानै ॥ मदन मूरति भयतार गोविंदे ॥ सैन भणे भज परमानंदे ॥ १२१ ॥

कायो देवा कायो देवल कायो जंगम जाती ॥ कायो धूप दीप नैवेदा कायो पूजों पाती ॥ काया बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ नाकछु आयवो ना कछु जायवो राम की दुहाई ॥ जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ पीपा प्रणवै परमतत्व है सतगुरु होय लखावै ॥ १२२ ॥

राग जैतश्री ।

मनरे साँचा गहो विचारा ॥ राम नाम बिन मिथ्या मानो सगरो यह संसारा ॥ जाको योगी खोजत हारे पायो नहीं तिहिपारा ॥ सो स्वामी तुम निकट पछानो रूप रेख ते न्यारा ॥ पावन नाम जगत में हरि को कबहूं नाहिं सँभारा ॥ नानक शरण परचो जग वंदन राखो बिरद तिहारा ॥ १२३ ॥

नाथ कछुअ न जानो ॥ मन मायाके हाथ बिकानो ॥ तुम कहियतहो जगत गुरु स्वामी ॥ हम कहियत कलियुग के कामी ॥ इन पंचन मेरो मन जो बिगारचो ॥ पल पल हरिजी ते अंतर पारचो ॥ जत देखों तत दुख की रासी ॥ अजहुं न पतियाय निगम भये साखी॥गौतम नारी उमापति स्वामी ॥ शीश धरनि सहस भग गामी॥इनदूतन खलवध कर मारचो॥बड़ो निलाज अजहुं नहिं हारचो॥ कह रामदास कहा कैसे कीजै॥विन रघुनाथ शरणं कांकी लीजै १२४

राग टोडी ।

धायो रे मन दह दिशि धायो । माया मगन स्वाद लोभ मोह्यो तिन प्रभु आपभुलायो ॥ हरि कथा हरि यश साधु संगत सो इक मुहुर्त न यह मनलायो ॥ बिगस्यो पेख रंग कसुंभ को पर गृह जोहन जायो ॥ चरणकमल सों भाव न कीनो नहिं सतपुरुष मनायो ॥ धावत को धावहि बहु भांती ज्यों तेली बलद भ्रमायो ॥ नाम दान

अस्नान न कीयो इक निमिष न कीरति गायो ॥ नाना झूठ लाय मन तोष्यो नहिं बूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कबहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्टी मतवारो मद मायो ॥ करों वीनती साधु संगत हरि भगत वच्छल सुन आयो नानक भाग परयो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

मांगौं दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे संग न चालै मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय धाय बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ विन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनी के रस नाहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठे को साँच जानके तासों रुचि उपजाई ॥ दीन बंधु सिमिरयो नहिं कबहूं होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो माया में निशिदिन छुटी न मन की काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति विन हरि की शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग ।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईल गरिफ्तह दिल हेच नदानी ॥ जन पिसर पिदर बिरादरा कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर बियफ्तम कस नदारद चूं शवद तकबीर ॥ शब रोज गश्तम दर हवा करदेम वदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् मम ईंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हमचू बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तोचेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहातहै फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुन काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूठे लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगरयो नहीं जो प्रभु गुण गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै १२९॥

मै अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा ॥ मैं गरीब मैं मिसकीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तूं गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनीं ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देहिं लेहिं एक तू दिगर को नहीं ॥ तूं दाना तूं बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी बखशिंद तूं हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउँहौं बलबलजाउँ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी॥द्वारका नगरी रास्त बुगोई ॥ खूबतेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदीं हजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनीं पातशाह सांवले बरना ॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकुंद ॥ १३१ ॥

राग सूही ।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो विदुर दासी सुतहिं कृष्ण उतरचा घर जिस जाय ॥ हरि की अकथ कथा सुनो जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिष इक गाय ॥ पतित जाति उत्तम भया चार वर्ण परे पग आय ॥ नामदेव प्रीति लगी हरि सेती लोक छीपा कहे बुलाय ॥ क्षत्री ब्राह्मण पीठ दे छोड़े हरि नामदेव लिया मुख लाय ॥ जितने भगत हरि सेवका मुख अठसठ तीर्थ तिन तिलक कढाय ॥ जन नानक तिनको अनुदिन परसे जे कृपा करे हरिराय ॥ १३२ ॥

बाजीगर जैसेबाजीपाई ॥ नानारूप भेष दिखलाई ॥ स्वांगउतार थंम्यो पासारा ॥ तबएकोएकंकारा ॥ कवनरूप दृष्टयोबिनशायो ॥ कतहिं गयो वह कततेआयो ॥ जलते उठहिं अनिकतरंगा ॥ कनक भूषण कीने बहु रंगा ॥ बीज तें जो देख्यो बहु प्रकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ सहसघटा में एक अकाश ॥ घटफूटेते वही प्रकाश भ्रम लोभ मोह माया विकार ॥ भ्रम छूटेते एकंकार ॥ वह अवि-

नाशी विनशत नाहीं ॥ नाको आवै नाको जाहीं ॥ गुरु पूरे हौं मैं मल धोई ॥ कहु नानक मेरी परम गति होई ॥ १३३ ॥

सेवा थोरी मांगनबहुता ॥ महल न पावै कहतों पहुता ॥ जोप्रिय मानै तिनकी रीसा ॥ कूडे मूरख की हाठीसा ॥ भेष दिखावै सच न कमावै ॥ कहतो महली निकट न आवै ॥ अतीत सदाये माया का माता ॥ मन नहीं प्रीत कहै मुखराता ॥ कहु नानक प्रभु विनय सुनीजै ॥ कुचल कठोर कामी मुक्त कीजै ॥ १३४ ॥

बुरे काम को ऊठ खलोया ॥ नाम की बेला पैपै सोया ॥ अवसर अपना बूझे न अयाना ॥ माया मोह रंगलपटाना ॥ लोभ लहर को विकस फूल बैठा ॥ साधु जनां का दर्शन डीठा ॥ कबहूं न समझे अज्ञान गँवारा ॥ बहुर बहुर लपट्यो जंजारा ॥ विषय नादकरण सुन भीना ॥ हरियश सुनत आलसमनकीना ॥ दृष्टनाहींरे पेखत अंधे ॥ छोड़जाहि झूठेसबधंधे ॥ कहुनानक प्रभुबखसकरीजै ॥ कर किरपा मोहिं साधु संग दीजै ॥ तौ कछु पाइये जो होइये रेना ॥ जिसहिं बुझाये तसनाम लेना ॥ १३५ ॥

कवन काज माया बड़ियाई ॥ जाको बिनशत बार न काई ॥ यह सुपना सोवत नहिं जानै ॥ अचेत व्यवस्था में लपटानै ॥ महा मोह मोह्यो गावारा ॥ पेखत पेखत ऊठ सिधारा ॥ ऊँच ते ऊँच ताका दरबारा ॥ कई जंतु बिनाहि उपारा ॥ दूसर होया नाकोई होई ॥ जप नानक प्रभु एको सोई ॥ १३६ ॥

सिमरसुमिर ताको हौं जीवा ॥ चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ सोहरि मेरा अंतरयामी ॥ भगत जनांके संग स्वामी ॥ सुन सुन अमृत नाम ध्यावां ॥ आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ पेख पेख लीला मन आनंदा ॥ गुण अपार प्रभु परमानंदा ॥ जाके सिमरन कछु भय न व्यापे ॥ सदा सदा नानक हरि जापे ॥ १३७ ॥

भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये ॥ कितहीं काम न धौलहर जित हरि विसराये ॥ अनँद गरीबी साधुसंग जित प्रभु चित आये ॥ जल जाउ एह बड़पना माया लपटाये ॥ पीसन पीस ओढ़ कामरी

सुख मन संतोषाये ॥ ऐसो राज न किते काज जित नाहिं तृप्ताये ॥ नग्न फिरत रंग एक के ओह शोभापाये ॥ पाटपटंबर विरथिया जिहिं रच लोभाये ॥ सब कछु तुमरे हाथ प्रभु आप करेकराये ॥ सासस़ास सिमरत रहां नानक दान पाये ॥ १३८ ॥

संता के कारज आप खलोया हरि कम्म करावन आया राम ॥ धरति सुहावी ताल सुहावा विच अमृत जल छाया राम ॥ अमृतजल छाया पूरन साज कराया सकल मनोरथ पूरे ॥ जैजैकार भया जग अंतर लाथे सकल वसूरे ॥ पूरन पुरुष अच्युत अविनाशी यश वेद पुराणीं गाया ॥ अपना बिरद रख्या परमेश्वर नानक नाम ध्याया ॥

अवतर आय कहा तुम कीना ॥ राम को नाम न कबहूं लीना ॥ राम न जपो कवन मतिलागे ॥ मरजैबे को क्या करो अभागे ॥ दुख सुख करके कुटुंब जिवाया ॥ मरतीबार इकसर दुख पाया ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कह कबीर आगेते न सँभारा ॥ १४० ॥

अमल सिरानो लेखा देना ॥ आये कठिन दूत यम लेना ॥ क्या तैं खट्या कहां गवाँया ॥ चलो शताब दिवान बुलाया ॥ चल दर हाल दिवान बुलाया ॥ हरि फरमान दरगह का आया ॥ करो अरदास गाव कछु बाकी ॥ लेहु निवेर आज की राती ॥ कछुभी खर्च तुम्हारा सारो ॥ सुबह नमाज़ सराय गुज़ारो ॥ साधु संग जाको हरि रँग लागा ॥ धनि धनि सो जन पुरुष सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जन्म पदारथ जीत अमोले ॥ जागत सोया जन्म गवाँया माल धन जोरया भया पराया ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसम बिसार माटी सँग रूले ॥ १४१ ॥

जो दिन आवैं सो दिन जाहीं ॥ करना कूच रहन थिर नाहीं ॥ संग चलत है हमभी चलना ॥ दूर गमन सिर ऊपर मरना ॥ क्या तू सोया जाग अयाना ॥ तैं जीवन जग सच कर जाना ॥ जिन जिउ दिया सो रिज़क अंबरावै ॥ सभ घठ भीतर हाट चलावै ॥ कर बंदगी छाड मैं मेरा ॥ हिरदय नाम सम्हार सवेरा ॥ जन्म सिरानो पंथ न सवाँरा ॥ सांझ परी दह दिशि अँधियारा ॥ कह

रामदास निदान दिवाने ॥ चेतत नहिं दुनियां फनखाने ॥ १४२ ॥

ऊंचे मंदिर साल रसोई ॥ एक घरी पुनि रहन न होई ॥ यह तन ऐसा जैसे घास कि टाटी ॥ जल गयो घास रलगयो माटी ॥ भाई बंधु कुटुंब सहेरा ॥ वह भी लागे काढ सवेरा ॥ घर की नारि वह रहे तन लागी ॥ वह तो भूत भूत कर भागी ॥ कह रामदास सभी जंग लूट्या ॥ हौं तो एक राम कह छूट्या ॥ १४३ ॥

राग बिलावल ।

मनमें सिंचो हरि हरि नाम अनुदिन कीर्तन हरि गुण ग्राम ऐसी प्रीति करो मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभु जानो नेरे ॥ कहु नानक जाके निर्मल भाग ॥ हरि चरनी तांका मन लाग ॥ १४४ ॥

ताती वाउ न लागई पारब्रह्म शरनाई ॥ चौगिरद हमारे राम कार दुख लगे न भाई ॥ सतगुरु पूरा भेट्या जिन बनत बनाई राम नाम औषध दीया एका लिव लाई ॥ राख लिये तिन रखन हार सब व्याधि मिटाई॥कह नानक कृपा भई प्रभु भये सहाई॥१४५॥

प्रभुजी तूं मेरे प्राण अधारे ॥ नमसकार डंडौत वंदना अनिक बार जाऊँ बलिहारे ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत यहमन तुझेचितारे॥ सूख दूख इस मन की बिरथा तुझही आगे सारे ॥ तूं मेरी ओट बल बुद्धि धन तुमहीं तुमहीं मेरे प्रवारे ॥ जो तुम करो सोई भल हमरे पेख नानक सुख चरनारे ॥ १४६ ॥

दुख हरता हरि नाम पछानो ॥ अजामल्ल गनिका जिहिं सिमरत मुक्त भये जिय जानो ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहूं में जबहीं राम ब खानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रुव बालक भजन माहिं लपटानो ॥ अचल अमर निरभय दद पायो जगत जाहिं हैरानो ॥ नानक कह त भगत रक्षक हरि निकट ताहि तुम मानो ॥ १४७ ॥

हरि के नाम विना दुख पावै ॥ भगति विना संशय नहिं चूकै गुरु यह भेद बतावै ॥ कहा भयो तीरथ व्रत कीये राम शरण नहिं आवै ॥ योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो जो प्रभु यश विसरावै ॥

मान मोह दोनों को परिहरि गोविंद के गुण गावै ॥ कहु नानक यहि विधि को प्राणी जीवन मुक्त कहावै ॥ १४८ ॥

जामें भजन राम को नाहीं ॥ तिहिं नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मन माहीं ॥ तीरथ करै व्रत पुनि राखै नहिं मनुआ वश जाको ॥ निष्फल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमें राख्यो भेदै नहिं तिहि पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगति हीन जो प्रानी ॥ कलि में मुक्ति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावै ॥ कहु नानक सोई नर गरुवा जो प्रभु के गुणगावै ऐसो यह संसार पेखना रहन न कोऊ पइहैरे ॥ सूधे सूधे रेंग चलो तुम नतरक धका दवइहैरे ॥ बारे बूढ तरुने भैया सबहूं यम लैज इहैरे ॥ मानस बपुरा मूसा कीनो मीच बिलैया खइहैरे ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानीरे ॥ राजा परजा सम कर मानै ऐसो काल बडानीरे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारीरे ॥ आवहिं न जाहिं न कबहूं मरते पारब्रह्म संगारीरे पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जियजानी रे ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु मिलिहै शारँगपानीरे ॥ १४९ ॥

विद्या न पढ़ों वाद नहिं जानो ॥ हरि गुण कथत सुनत बौरानो मेरे बाबा मैं बोरा सब खलक स्यानी मैं बौरा ॥ मैं बिगरचो बिगरै मति औरा ॥ आपन बौरा राम कीयो बौरा ॥ सतगुरु जार गयो भ्रम मोरा ॥ मैं बिगरै अपनी मति खोई ॥ मेरे भर्म भूलो मत कोई सो बौरा जो आप न पछानै ॥ आप पछानै तो एकै जानै ॥ अबहिं न माता सो कबहुं न माता ॥ कह कबीर रामहिं रँग राता ॥१५०॥

गृह तज वन खंड जाइये चुन खाइये कंदा ॥ अजहूं विकार नछोडई पापी मन मंदा ॥ क्यों छूटों कैसे तरों भव जलनिधि भारी ॥ राख राख मेरे बीठुला जन शरण तुम्हारी ॥ विषय विषय की वासना तजी नहिं जाई ॥ अनिक यतन कर राखिये फिर फिर लपटाई ॥ जरा जीवन योवन गया कछु किया न नीका ॥ यह जियरा निरमोलको कौडी लग मीका ॥ कह कबीर मेरे माधवा तूं सर्व व्यापी ॥ तुम समसर नाहीं दयाल मोहिं समसर पापी१५१॥

नित उठ कोरी गाजर आनै लीपत जीउ गयो ॥ ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रस लपट्यो ॥ हमारे कुल कौने रामकह्यो ॥ जबकी माला लई निपूते तबते सुख न भयो ॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो ॥ सात सूत इन मुंडिये खोये यह मुंडिया क्योंन मुयो ॥ सर्व सुखांका एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दियो ॥ संत प्रह्लाद की पैज जिन राखी हरनाकुश नख विदरचो ॥ घर के देव पितर की छोडी गुरु को शब्द लियो ॥ कहत कबीर सकल पाप खंडन संतहि लै उधरचो ॥ १५२ ॥

राखिलेहु हमते बिगरी ॥ शील धर्म जप भगति न कीनी हौं अभिमान टेढ़ पगरी ॥ अमर जान संची यह काया यह मिथ्या काची गगरी ॥ जिनहिं निवाज साज हम कीये तिसहिं बिसार अवर लगरी ॥ संधिकि तोहि साध नहिं कहियो शरण परे तुमरी पगरी ॥ कह कबीर यह विनती सुनियो मत घालो यम की खबरी ॥ १५३ ॥

दारिद देख सभकोय हँसै ऐसी दशा हमारी ॥ अष्टदश सिद्धि करतले सब कृपा तुम्हारी ॥ तूं जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम ॥ सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरण काम ॥ जो तेरी शरणागती तिन नाहीं भार ॥ ऊँच नीच तुमते तरे आल जु संसार ॥ कह रामदास अकथ कथा बहु काय करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजै ॥ १५४ ॥

जिहि कुल साधु वैष्णव होय ॥ वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रि डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय ॥ होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत कुटुंब सब लोय ॥ जिन पीया सार रस तजे आन रस होय रस मगन डारे विष खोय ॥ पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोय ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्मे जग ओय ॥ १५५ ॥

नृप कन्या के कारने इक भयो भेष धारी ॥ कामारथी स्वारथी

वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुरा जो कर्म न नासै ॥ सिंह शरण कत जाइये जो जंबुकग्रासै ॥ एकबूंद जल कारने चातक दुख पावै ॥ प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमावो ॥ बूड मुये नौका मिले कहु काहि चढ़ावो ॥ मैं नाहीं कछु हौं नहीं कछु आहि न मोरा ॥ औसर लज्जा राखलेहु सधना जन तोरा ॥ १५६ ॥

राग गौड ।

निमाने को जो देतो मान ॥ सकल भूखे को करतो दान ॥ गरभ घोर में राखनहार ॥ तिस ठाकुर को सदा नमसकार ॥ ऐसो प्रभु मन माहिं ध्याय ॥ घट अवघट जत कताहिं सहाय ॥ रंकराउ जाके एक समान ॥ कीट हस्ती सकल पूरान ॥ बीयो पूछ न मसलत धरै ॥ जो कछु करै सो आपहिं करै ॥ जाका अंत न जानतकोय ॥ आपेआप निरंजन सोय ॥ आप आकार आप निरंकार ॥ घट घट घट सब घट आधार ॥ नाम रंग भगत भये लाल ॥ जस करते संत सदा निहाल ॥ नाम रंग जन रहे अघाय ॥ नानक तिन जन लागै पाय ॥ १५७ ॥

गुरुकी मूरत मन में ध्यान ॥ गुरुके शब्द मंत्र मन मान ॥ गुरुके चरण हिरदै लै धारो ॥ गुरु पारब्रह्म सदा नमसकारो मत को भ्रम भूलै संसार ॥ गुरु बिन कोय न उतरस पार ॥ भूले को गुरु मारग पाया ॥ अवर त्याग हरि भगति लाया ॥ जन्म मरण की त्रास मिटाई ॥ गुरु पूरे की बेअंतबड़ाई ॥ गुरुप्रसाद ऊरध कमल विकास ॥ अंधकार में भया प्रकास ॥ जिन कीया सो गुरु ते जान्या ॥ गुरु कृपाते मुगध मन मान्या ॥ गुरु करता गुरु करने योग ॥ गुरु परमेश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई ॥ बिन गुर मुक्ति न पाइये भाई ॥ १५८ ॥

राम राम संग कर ब्योहार ॥ राम राम राम प्राण अधार ॥ राम राम राम कीर्तन गाय ॥ रमत राम सब रह्यो समाय ॥ संत जनां मिल बोलो राम ॥ सबते निरमल पूरण काम ॥ राम राम धन संच

भँडार ॥ राम राम राम कर आहार ॥ राम राम बीसर नहीं जाय ॥ कर किरपा गुरु दियो बताय ॥ राम राम राम सदा सहाय ॥ राम राम राम लव लाय ॥ राम राम जप निर्मल भये ॥ जन्मजन्म के किल्मिष गये ॥ रमत राम जन्म मरन निवारै ॥ उचरत राम भय पार उतारै ॥ सभते ऊँच राम परकास ॥ निशि वासर जप नानक दास ॥ १५९ ॥

अचरज कथा महा अनूप ॥ परात्मापारब्रह्म का रूप ॥ ना यह बूढा ना यह बाला ॥ ना इस दूख नहीं यमजाला ॥ ना यह विनशै ना यह जाय ॥ आद जुगादी रह्या समाय ॥ ना इस उष्ण नहीं इस शीत ॥ ना दुशमन ना इस मीत ॥ ना इस हर्ष नहीं इस शोग ॥ सब कछु इसका यह करने योग ॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरंपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप न लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया महामाया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीन दयाल सदा कृपाल ॥ ताकी गति मित कछू न पाय ॥ नानक ताके बलबल जाय ॥ १६० ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये ॥ मिलै असंत मष्ट कर रहिये ॥ बाबा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतन सों बोले उपकारी ॥ मूरख सों बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढ़ै विकारा ॥ बिन बोले क्या करैं विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरचा होय सो कबहुं न डोलै ॥ १६१ ॥

नरू मरै नर काम न आवै ॥ पशू मरै दस काज सवाँरै ॥ अपने कर्म की गति मैं क्या जानों ॥ मैं क्या जानों बाबारे ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केश जले जैसे घास का पूला ॥ कहत कबीर तबहीं नर जागै ॥ यम का डंड मूंड में लागै ॥ १६२ ॥

भुजा बांध भिला कर डारचो ॥ हस्ती कोप मूंड माहिं मारचो ॥ हस्ती भागके चीसां मारै ॥ या मूरत के हौं बलिहारै ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकवो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ

डारों काट ॥ इसहिं तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय बसै भगवान ॥ क्या अपराध संत है कीना ॥ बांध पोट कुंचर को दीना ॥ कुंचर पोट लैलै नमसकारै ॥ बूझी नहीं काजी अँध्यारै ॥ तीन बार पतीया भरलीना ॥ मन कठोर अजहूँ न पतीना॥कह कबीर हमरा गोविंद ॥ चौथे पद में जनकी जिद १६३

ना इह मानस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ या मंदिर में कौन बसाई॥ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही ना उदासी॥ ना इह राज न भीख मँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवे न मरता देख ॥ इस मरते को जे कोउ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ गुरु प्रसाद मैं डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कबीर इह राम की अंस ॥ जस कागद पर मिटै न मंस ॥ २६४ ॥

अश्वमेध जगने ॥ तुलापुरुष दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुजहिं हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहिं भजरे मन आलसीया ॥ गयो पिंड भरता ॥ बनारस असि बसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिता ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ षट् कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति संवादं ॥ मन छोड छोड सकल भेदं ॥ सिमर सिमर गोविंदं ॥ भज नामा तरसि भव ॥ १६५

नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरों ॥ राम छोड चित अनत न फेरों ॥ ज्यों मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढ़ते हेरै सुनारा ॥ ज्यों विषयी हेरै परनारी॥ कौडा डारत हिरै जुआरी ॥ जहिं जहिं देखों तहिं तहिं रामा ॥ हरि के चरण नित ध्यावै नामा ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बांहिदे ॥ नर ते सुर होयजात निमिष में सतगुरु बुध सिखलाई ॥ नर ते उपज स्वर्ग को जीत्यो सो अवषध मैं पाई

जहां जहां ध्रुव नारद टेके नैकें टिकावो मोहिं ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामे की निज मति इह ॥ १६७ ॥

हरि हरि करत मिटे सब भर्मा ॥ हरि को नाम लै उत्तम धर्मा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरि अंधले की लाकरी ॥ हरये नमस्ते हरये नमः ॥ हरि हरि करत नहीं दुख जमः ॥ हरि हरनाकुश हरे ॥ प्राण अजामिल कीयो वैकुंठहिं थान ॥ सुआ पढ़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनों की पूतरी ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बाल घातनी कपटहिं भरी ॥ सिमरन द्रौपद सुता उद्धरी ॥ गौतम सती शिला निस्तरी ॥ केशी कंस मथन जिन कीया ॥ जीय दान काली कों दीया ॥ प्रणवै नामां ऐसो हरी ॥ जासु जपत भय अपदा टरी ॥ १६८ ॥

जे ओह अठसठ तीरथ न्हावै ॥ जे ओह द्वादश शिला पुजावै ॥ जे ओह कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सब बिरथा जावै ॥ साधु का निंदक कैसे ॥ तरै ॥ सरपर जानो नरकहि परै ॥ जे वह ग्रहण करै कुरुखेत अरपै नारि शृंगार समेत ॥ सकली सिमृति श्रवणी सुनै ॥ करै निंद कवनै नहीं गुनै ॥ जे ओह अनिक प्रसाद करावै ॥ भूमिदान शोभा मंडप पावै ॥ अपना बिगार बिराना सांढै करै निंद बहु योनी हांढै ॥ निंदा कहा करो संसारा ॥ निंदक का परगट पाहारा ॥ निंदक शोध साधु बीचारया ॥ कहु रामदास पापी नर्के सिधारया ॥ १६९ ॥

राग रामकली ।

चार पुकारहिं ना तू मानहिं ॥ षट भी एका बात बखानहिं ॥ दस अष्टी मिल एको कह्या ॥ तौभी योगी भेद न लह्या ॥ किंगुरी अनूप बाजै ॥ योगीया मतवारोरे ॥ प्रथमे बस्या सत का खेड़ा ॥ तृतीये में कछु भया दुतेडा ॥ दुतीया अरधो अरध समाया॥ एक रह्या तो एक दिखाया ॥ एकै सूत परोये मणिये ॥ गांठी भिन भिन भिन भिन तणिये ॥ फिरती माला बहु विधि भाय ॥ खिच्या सूत तो आई थाय ॥ चहुँ में एकै मट है कीया ॥ तहिं बिखड़े

थान अनिक खिड़कीया ॥ खोजत खोजत द्वारे आया ॥ तौ नानक योगी महल घर पाया ॥ १७० ॥

कौडी बदले त्यागै रतन ॥ छोड जाय ताहू का यतन ॥ सो संचय जो होछी बात ॥ माया मोह्या टेढ़ो जात ॥ अभागे तैं लाज नाहीं ॥ सुखसागर पूरन परमेश्वर हरि न चेत्यो मन माहीं ॥ अमृत कौड़ा विषया मीठी ॥ शाकत की विधि नैनो डीठी ॥ कूड़ कपट अहंकार रिझाना ॥ नाम सुनत जनु बिछू डसाना ॥ माया कारन सदही झरै ॥ मनमुख कबहुंन अस्तुति करै ॥ निरभय निरंकार दातार ॥ तिससों प्रीत न करै गवाँर ॥ सब साहां शिर साँचा साह ॥ बेमुँहताज पूरा पातसाह ॥ मोह मगन लपट्यो भ्रम गिहरे ॥ नानक तरिये तेरी मिहरे ॥ १७१ ॥

गऊ को चारे शारदूल ॥ कौडी का लख हूआ मूल ॥ बकरी को हस्ती प्रतिपालै ॥ अपना प्रभु नदर निहालै ॥ कृपानिधान प्रीतम प्रभु मेरे ॥ वर्णन साकों बहु गुण तेरे ॥ दीसत मास न खाय बिलाई ॥ महा कसाव छुरी सटपाई ॥ करनहार प्रभु हिरदय बूठा ॥ फाथी मछली का जाला तूठा ॥ सूखेकाष्ठ हरे चलूल ॥ ऊँचे थल फूले कमल अनूप ॥ अग्नि निवारी सतगुरु देव ॥ सेवक अपनी लायो सेव ॥ किरतघनां का करे उधार ॥ प्रभु मेरा है सदा दियार ॥ संत जना का सदा सहाई ॥ चरण कमल नानक शरणाई ॥ १७२ ॥

रेमन ओट लेहु हरि नामा ॥ जाके सुमिरनदुरमति नाशै पावहिं पद निरवाना ॥ बड़भागी तिहिं जनको जानो जो हरिके गुण गावै ॥ जन्म जन्म के पाप खोयके पुनि वैकुंठ सिधावै ॥ अजामल्ल को अंतकाल में नारायण सुधि आई ॥ जा गति को योगीश्वर वांछत सो गति छिनमें पाई ॥ नाहिन गुण नाहिन कछु विद्या धर्म कौन गज कीना ॥ नानक बिदर राम का देखो अभयदान तिहिं दीना ॥ १७३ ॥

साधो कौन जुगत अब कीजै ॥ जाते दुर्मति सकल बिनाशै राम भगति मन भीजै ॥ मन माया में उरझ रह्योहै बूझे ॥ नहिं कछु ज्ञाना ॥ कौन नाम जग जाके सिमरे पावै पद निरबाना ॥ भये दयाल कृपाल संतजन तब इह बात बताई ॥ सर्व धर्म मानो तिहिं कीथे जिहिं प्रभु कीरत गाई ॥ राम नाम नर निशिवासर में निमिष एक उर धारै ॥ यमको त्रास मिटै नानक तिहिं अपनो जन्म सवाँरै ॥ १७४ ॥

प्राणी नारायण सुध लेह ॥ छिन छिन औध घटै निशिवासर वृथा जात है देह ॥ तरुनापौ विषयन सों खोयो बालापन अज्ञाना बिरध भयो अजहूं नहिं समझै कौन कुमति उरझाना ॥ मानस जन्म दियो जिहि ठाकुर सो तूं क्यों बिसरायो ॥ मुक्त होत नर जाके सिमरे निमिष न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करतहै संग न काहू जाई ॥ नानक कहत चेत चिंतामणि ह्वैहै अंत सहाई॥

कवन काज सिरजे जग भीतर जन्म कवन फल पाया ॥ भव निधि तरन तारन चिंतामणि इक निमिष न इह मन लाया ॥ गोविंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिन प्रभु जीउ पिंड था दीया तिसकी भाउभक्ति नहिं साधी ॥ परधन परतन परतिय निंदा पर अपवाद न छूटै ॥ आवागमन होतहै पुनिपुनि इह प्रसंगनातूटै॥ जिहिं घर कथा होत हरि संतन इकनिमिष न कीनोमैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन सँग सदा बसेरा ॥ काम क्रोध माया मद मत्सर इह संपै मो माहीं ॥ दया धर्म अर गुरुकी सेवा इह सुपनंतर नाहीं॥ दीनयाल कृपाल दामोदर भगत बछल भयहारी ॥ कहत कबीर भीर जिन राखो हरि सेवा करों तुम्हारी ॥ १७६ ॥

आनीले कागद काटीले गूडी आकाश मध्ये भरमीयले ॥ पंच जनां सों बात बतौआ चीत सो डोरी राखीयले ॥ मन राम नामा बेधीयले ॥ जैसे कनक कला चित मांडीयले ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरिये ॥ हँसत विनोद विचार करतीहै चीत सो सागर राखीयले ॥ मंदिर एक द्वार दस जाके गऊ चरावन छांडी

यले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सो बछरा राखीयले ॥ कहत नामदेउ सुनो त्रिलोचन बालक पालन पौढ़ीयले ॥ अंतर बाहर काज बिरूधी चीत सो बालक राखीयले ॥ १७७ ॥

बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे अग्नि दहे काया कलप कीजे ॥ अश्वमेध यज्ञ कीजे सोना दान दीजे राम नाम सर तऊ न पूजे ॥ छोड छोड़ रे पाखंडी मन कपट न कीजै ॥ हरिका नाम नित नितहिं लीजै ॥ गंगाजी गोदावरी जाइये कुंभ जो केदारन्हाइये गोमती सहस गऊ दान कीजे ॥ कोटि जो तीर्थ करै तन जो हिमालै गारै रामनाम सर तऊनपूजे ॥ अश्वदान गजदान सिहजा नारी भूमिदान ऐसोदान नित नितहिंकीजै ॥ आत्मजो निर्मायलकीजे आप बराबर कंचन दीजै रामनाम सर तऊ न पूजे ॥ मनहिं न कीजे रोष जमहि नदीजै दोष निर्मल निर्वाण पद चीन लीजे ॥ दशरथराय नंद राजा मेरा रामचंद्र प्रणवै नामा तत्वरस अमृत पीजे ॥ १७८ ॥

पढ़िये गुनिये नाम सब सुनिये अनुभव भाव न दरसै ॥ लोहा कंचन हिरण्य होय कैसे जो पारसहिं न परसै ॥ देव संशय गांठ नछूटै काम क्रोध माया मद मत्सर इन पंचों मिल लूटै ॥ हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित हम योगी सन्यासी ॥ ज्ञानी गुनी शूर हम दाते इह बुद्धि कबहिं न नासी ॥ कहु रामदास सभी नहीं समझत भूल परे जैसे बौरे ॥ मोहिं अधार नाम नारायण जीवन प्राण धन मोरे ॥ १७९ ॥

राग नटनारायण ।

राम हौं क्या जाना क्या भावै ॥ मन प्यास बहुत दरशावै ॥ सोई ज्ञानी सोई जन तेरा जिस ऊपर रुचि आवै ॥ कृपा करो जिस पुरुष विधाते सो सदा सदा तुध ध्यावै ॥ कवन योग कवन ज्ञान ध्याना कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जन सोई निज भगता जिस ऊपर रँग लावै ॥ सोई मति सोई बुद्धि स्यानप जित निमिष न प्रभु विसरावै ॥ संत संग लग इह सुख पायो हरिगुन सदही गावै ॥

देख्यो अचरज महा मंगल रूप कछु आन नहिं दृष्टावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरु लाह्यो तहिं गरभ योनि कहिं आवै ॥ १८० ॥

राग नट ।

मेरे सर्वस नाम निधान ॥ कर किरपा साधू संग मिल्यो सतगुरु दीनो दान ॥ सुखदाता दुख भंजन हारा गाउ कीर्तन पूरण ज्ञान ॥ काम क्रोध लोभ खंड खंड कीने विनश्यो मूढ़ अभिमान ॥ क्या गुण तेरे आँख बखाणां प्रभु अंतरयामी जान ॥ चरण कमल शरण सुखसागर नानक सद कुर्बान ॥ १८१ ॥

राग माली गौडा ।

धन्य धन्य राम वेणु बाजै ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजै ॥ धन धन मेघा रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढै कांवली ॥ धन धन तू माता देवकी ॥ जिहिं गृह रमैया कमलापती ॥ धन धन बन खंड वृन्दावना ॥ जहिं खेलै श्रीनारायणा ॥ वेणु बजावै गोधन चारै ॥ नामे का स्वामी आनंद करै ॥ १८२ ॥

मेरो बाप माधो तू धन केशो साँवलीयो बीठुलाय ॥ कर धरे चक्र वैकुंठ ते आये गज हस्तीके प्राण उधारीयले॥दुइशासनकी सभा द्रौपदी अंबरलेत उबारीयले॥गौतम नारि अहल्यातारी पावनकेतक तारीयले॥ऐसा अधमअजाति नामदेउ तवशरणागति आईयले१८३॥

राग मारू ।

डरपै धरती अकाश नक्षत्रा शिरऊपर अमर करारा ॥ पौण पाणी वैसंदर डरपै डरपै इंद्र विचारा ॥एका निरभय बात सुनी ॥ सो सुखिया सो सदा सुहेला जो गुरु मिल गाय गुनी ॥ देह धार अर देवा डरपहिं सिद्ध साधक डर मोया ॥ लख चौरासी मर मर जन्मे फिर फिर योनी जोया॥ राजस सात्विक तामस डरपहिं केते रूप उपाया॥ छल वपुरी इह कमला डरपै अति डरपै धर्मराया ॥ सकल समग्री डरहिं व्यापी बिन डर करनेहारा ॥ कहु नानक भक्तन का संगी भक्त सोहैं दरबारा ॥ १८४ ॥

पांच वर्ष को अनाथ धरू बालक हरि सुमिरत अमर अटारे पुत्र हेत नारायण कह्यो यम किंकर मार विदारे ॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहिं दीन अलप मति निर्गुण पर्‍यो शरण द्वारे ॥ वालमीक सुपचारो तर्‍यो बधिक तरे विचारे ॥ एक निमिष मन माहिं अराध्यो गजपति पार उतारे ॥ कीनी रक्षा भगत प्रहलादहिं हरनाकुश नखहिं विदारे ॥ विदुर दासीसुत भयो पुनीता सकले कुल उज्यारे ॥ कवन अपराध बतावों अपने मिथ्या मोह मग्नारे ॥ आयो साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥ १८५ ॥

हरिको नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामल उधर्‍यो गनिकाहूं गति पाई ॥ पंचालीको राजसभामें रामनाम सुध आई ॥ ताको दूख हर्‍यो करुणामय अपनी पैज बढ़ाई ॥ जिहि नर यश किरपानिधि गायो ताको भयो सहाई ॥ कहु नानक मैं यही भरोसे गही आन शरणाई ॥ १८६ ॥

अब मैं कहा करोंरी माई ॥ सकल जन्म विषयन सों खोयो सिमर्‍यो नाहिं कन्हाई ॥ काल फाँस जब गर में मेली तिहिं सुध सब विसराई ॥ रामनाम बिन या संकट में को अब होत सहाई ॥ जो संपति अपनी कर मानी छिन में भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मन हरि यश कबहुं न गाई ॥ १८७ ॥

माई मैं मनको मान न त्याग्यो ॥ माया के मद जन्म सिरायो राम भजन नहिं लाग्यो ॥ यम को दंड पर्‍यो सिर ऊपर तब सोवत तें जाग्यो ॥ कहा होत अबके पछिताये छूटत नाहिन भाग्यो ॥ यह चिंता उपजी घट में जब गुरु चरणन अनुराग्यो ॥ सुफल जन्म नानक तब हूआ जो प्रभु यश में पाग्यो ॥ १८८ ॥

अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अंतरयामी ॥ मधुसूदन दामोदर स्वामी॥हृषीकेश गोवर्धन धारी मुरलीमनोहर हरिरंगा॥मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीश्वर हरिजी असुर सँहारे ॥ जगजीवन अविनाशी ठाकुर घट घट बासी है संगा ॥ धरणीधर ईश नृसिंह नारायण॥ दाढ़ा अग्रे पृथिवी धरायण ॥ बावन रूप की यातुध करते सबही

सेती है चंगा ॥ श्रीरामचंद्र जिस रूप न रेख्या ॥ वनमाली चक्रपाणि दर्श अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहंसा इक दाता सबहै मंगा ॥ भगत वच्छल अनाथहिं नाथे ॥ गोपीनाथ सकल है साथे ॥ वासुदेव निरंजन दाते वर्णनसाकों गुण अंगा ॥ मुकुंद मनोहर लक्ष्मी नारी यण ॥ द्रौपदी लज्जा निवार उधारण ॥ कमलाकांत करै कौतूहल अनँद विनोदी निहसंगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी संभौ ॥ अकाल मूरत जिस कदे नाहीं खौ अविनाशी अविगत अगोचर सब कछु तुझही है लग्ग ॥ श्रीरंग वैकुंठ के वासी ॥ मच्छ कच्छ कूर्म आज्ञा औतरासी ॥ केशव चरित करै निराले कीता लोड़े सो होयगा ॥ निरहारी निरवैर समाया ॥ धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सांवले सुंदर रूप बनावहिं वेणु सुनत सब मोहेगा ॥ वनमाला विभूषण कमल नयन ॥ सुंदर कुंडल मुकुट बैन ॥ शंख चक्र गदा हैं धारी महा सारथी सत्संगा ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी ॥ जगन्नाथ गोपाल मुख भणी ॥ शारंगधर भगवान बीटुला मैं गणत न आवै सरबंगा ॥ निहकंटक निहकेवल कहिये धनंजय जल थल है महिये ॥ मिरत लोक प्याल समीपत स्थिर थान जिस है अभंगा ॥ पतित पावन दुख भय भंजन ॥ अहंकार निवारण है भव खंडन ॥ भगति तोषत दीन कृपाला गुणे न कितही है भग्गा ॥ निरंकार अछल अडोलो जोति सरूपी सब जग मोलो ॥ सो मिलै जिस आप मिलाये आपहु कोय न पावेगा ॥ आपेगोपी आपे कान्हा ॥ आपे गउ चरावै बाना आपि उपावहिं आपि खपावहिं तुध लेप नहीं इक तिल रंगा ॥ एक जीह गुण कवनवखानै ॥ सहस फणी शेषे अंत न जानै ॥ नूतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाहीं प्रभु कहसंगा ॥ ओठ गही जग तापित शरनाया ॥ भय भ्यानक यमदूत दुस्तर है माया ॥ होहु कृपाल इच्छा कर राखो साधु संतनके संग संगा ॥ दृष्टिमान है सकल मिथेना ॥ इक मांगों दान गोविंद संत रेना ॥ मस्तक लाय परमपद पावों जिस प्राप्त सो पावेगा ॥ जिनको कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै हिरदे पराते ॥ सकल नाम निधान तिन पाया अन-

हृद शब्द मन वाजंगा ॥ कृत्तम नाम कथे तेरे जिहूवा ॥ सत्तनाम तेरा परा पूर्वला ॥ कहनानक भगत पराशरनाई देहु दर्शमन रंग लगा

जिन गढ़ कोट किये कंचन के छोड गया सो रावन ॥ काहे कीजतहै मनभावन ॥ जब यम आय केशते पकरै तहिं हरि को नाम छुडावन ॥ काल अकाल खसम का कीना इह प्रपंच बधावन ॥ कह कवीर ते अंते मुक्ते जिन हिरदै राम रसायन ॥ १९० ॥

राजन कौन तुम्हारे आवै ॥ ऐसो भाव विदुर को देख्यो वह गरीब महिं भावै ॥ हस्तीदेख भर्मते भूला श्रीभगवान न जान्या ॥ तुमरो दूध विदुर को पानी अमृत कर मैं मान्या ॥ खीर समान साग मैं पाया गुण गावत रैन विहानी ॥ कवीरको ठाकुर आनँद विनोदी जाति न काहूकी मानी ॥ १९१ ॥

चार मुक्ति चारे सिद्धि मिलके दूलह प्रभुकी शरण पऱ्यो ॥ मुक्ति भयो चौहूं युग जान्यो यश कीरति माथे छत्र धऱ्यो ॥ राजा राम जपत को को न तऱ्यो ॥ गुरु उपदेश साधुकी संगति भगत भगत ताको नाम पऱ्यो ॥ शंख चक्र माला तिलक बिराजत देख प्रताप यम डऱ्यो ॥ निरभय भये राम बल गर्जत जन्म मरन संतापहऱ्यो ॥ अंबरीषको दियो अभयपद राज बिभीषण अधिककऱ्यो ॥ नौनिधि ठाकुर दई सुदामहिं धरू अटल अजहूं न टऱ्यो ॥ भगत हेत माऱ्यो हरनाकुश नृसिंह रूप होय देह धऱ्यो ॥ नामा कहे भगत वश केशव अजहूं बलिके द्वार खरो ॥ १९२ ॥

दीन विसाऱ्योरे दिवाने तैने दीन विसाऱ्यो ॥ पेट भऱ्यो पशुआ ज्यों सोयो मनुष जन्म है हाऱ्यो ॥ साधु संगत कवहूं नहीं कीनी रच्यो धंधे झूठ ॥ श्वान शूकर वायस जिवें भटकत चाल्यो ऊठ ॥ आपन को दीर्घ कर मानै औरन को लघुमात ॥ मनसा वाचा कर्मनामें देखे दोजक जात ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जन्म सिरानो कबहुँ न सिमऱ्यो राम ॥ कह कवीर चेतै नहीं मूरख मुगध गवाँर ॥ राम नाम जान्यो नहीं कैसे उतरस पार १९३

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करै ॥ गरीब निवाज गुसैयां मेरे

माथे छत्र धरै ॥ जाकी छोत जगत कों लागे तापर तुही ढरै ॥ नीचहि ऊंच करै मेरा गोविंद काहूते न डरै ॥ नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै ॥ कह रामदास सुनहुरे संतहु हरिजीते सभी सरै १९४॥

सुख सागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाकेरे ॥ चारि पदारथ अष्ट महा सिधि नव निधि करतल ताकेरे ॥ हरि हरि हरि नजपहि रसना ॥ अवर सब छाँड वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विधि चौतीस अक्षर माहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ रामनाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहित ह्वै बड़े भाग लव लागी ॥ कहरामदास उदास दास मति जन्म मरण भयभागी १९५॥

राग केदारा ।

हरि बिन जन्म अकारथ जात ॥ तज गोपाल आन रँग राचत मिथ्या पहिरत खात ॥ धन यौवन संपै सुख भुगवै संग न निबहत मात ॥ मृगतृष्णा देख रच्यो बावर द्रुम छाया रंग रात ॥ मान मोह महा मद मोह्यो काम क्रोध के खात ॥ कर गहि लेहु दास नानक को प्रभुजी होय सहात ॥ १९६ ॥

बिसरत नाहिं मनते हरी ॥ अब इह प्रीत महा प्रबल भई आन विषय जरी ॥ बूँद कहा त्याग चातक मीन रहत न घरी ॥ गुण गोपाल उचारत रसना टेंव एह परी ॥ महा नाद कुरंग मोह्यो वेध तीक्षन सरी ॥ प्रभु चरन कमल रसाल नानक गांठ बांध परी १९६॥

अस्तुति निंदा दोऊ विवर्जत तजो मान अभिमाना ॥ लोहा कंचन सम कर जानै ते मूरत भगवाना ॥ तेराजन एक आधकोई ॥ काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीनै सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया ॥ चौथेपद को जो नर चीनै तिनहीं परमपद पाया ॥ तीर्थ वर्त नेम शुचि संयम सदा रहै निह-कामा ॥ तृष्णा अरु माया भ्रम चूका चितवत आतम रामा ॥ जिहिं मंदिर दीपक प्रकास्या अंधकार तहिं नासा ॥ निरभय पूर रहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥ १९८ ॥

किनहीं बनज्या कांसी तांबा किनहीं लौंग सुपारी ॥ संतन

बनज्या नाम गोविंद का ऐसी खेप हमारी ॥ हरिके नामके व्योपारी ॥ हीरा हाथ चढ़्या निरमोलक छूट गई संसारी ॥ साँचे लाये तौं सच लागे साँचेके व्योहारी ॥ साँची वस्तुके भार चलाये पहुंचे जाय भँडारी ॥ आपहिं रत्न जवाहर मानक आपेहैं पासारी ॥ आपे दह दिस आप चलावे निहचल है व्यापारी ॥ मन कर बैल सुरत कर पैडा ज्ञान गोन भरडारी ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु निबही खेप हमारी ॥

काम क्रोध तृष्णा के लीने गति नहिं एकै जानी ॥ फूटी आंखें कछू नसूझै बूड मुये बिन पानी ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ अस्थि चर्म विष्टा के मूंदे दुर्गंधहिके वेढ़े ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे ॥ अनिक यतन कर इह तन राखहु रहै अवस्था पूरे ॥ आपन कीया कछू न होवे क्या को करै परानी ॥ जां तिस भावै सतगुरु भेटै एको नाम बखानी ॥ बलुआ के घरुआ में बसते फुलवत देह अयाने ॥ कहु कबीर जिहिं राम न चेत्यो बूडे बहुत सयाने ॥ २०० ॥

टेढ़ी पाग टेढ़े चले लागे बीरे खान ॥ भाव भक्ति सों काज न कछुहै मेरो काम दिवान ॥ राम विसार्योहै अभिमानि ॥ कनक कामिनी महा सुंदरी पेख पेख सचु मान ॥ लालच झूठ विकार महामद इह विधि औध विहानि ॥ कह कबीर अंतकी विरियां लागो काल निदान ॥ २०१ ॥

चार दिन अपनी नौबत चले बजाय ॥ इतनाकु खटीया गठीया मटीया संग न कछु लैजाय ॥ देहुरी बैठी मिहरी रोवै द्वारे लौं सँग माय ॥ मरघट लग सब लोक कुटंब मिल हंस इकेला जाय ॥ वह सुत वह बित वह पुर पाटन बहुरि न देखै आय ॥ कहत कबीर राम क्यों न सिमरो जन्म अकारथ जाय ॥ २०२ ॥

षट् कर्म कुल संयुक्त है हरि भगति हिरदय नाहिं ॥ चरणा-रविंद न कथा भावे श्वपच तुल्यसमान ॥ रे चित चेत चेत अचेत काहे न वालमीकहिं देख ॥ किस जातिते किहिं पदहिं अमर्‌यो

राम भगति विशेख ॥ श्वान शत्रु अजातं सभते कृष्ण लावै हेत ॥ लोक बपुरा क्या सराहै तीन लोक प्रवेश ॥ अजामल्ल पिंगुला लुभत कुंजर गये हरिके पास ॥ ऐसे दुर्मति निस्तरे तूं क्यों न तरैं रामदास ॥ २०३ ॥

राग भैरव ।

मेरी पटीयांलिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजे भाय फाथे यम जाला ॥ सतगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरे नाला ॥ गुरु उपदेश प्रहलाद हरि उचरै ॥ सासना ते बालक गम न करै ॥ माता उपदेशै प्रहलाद प्यारे ॥ पुत्र राम नाम छोडो जीय लेहु उबारे ॥ प्रहलाद कहै सुनो मेरीमाय ॥ रामनाम न छोडो गुरु दीया बुझाय ॥ संडा मरका सभ जाय पुकारे ॥ प्रहलाद आप बिगड्या सभ चाटड़े बिगाड़े ॥ दुष्ट सभामें मंत्र पकाया ॥ प्रहलादका राखा होय रघुराया ॥ हाथ खड्ग कर धाइया अति अहंकार ॥ हरि तेरा कहां तुझ लये उबार ॥ छिनमें भ्यानक रूप निकस्या थंभ उपार ॥ हरनाकुश नखीं विदारया प्रहलाद लीया उबार ॥ संतजनांके हरिजी कारज सवाँरे ॥ प्रहलाद जनके इकीस कुल उधारे ॥ गुरुके शब्द हौं मैं विष मारे ॥ नानक राम नाम संत निस्तारे ॥

तूं मेरा पिता तूंहीं मेरीमाता ॥ तूंमेरे जीव प्राण सुखदाता ॥ तूं मेरा ठाकुर हौं दास तेरा ॥ तुझ बिन अवर नहीं कोइ मेरा ॥ कर किरपा करो प्रभु दात ॥ तुमरी अस्तुति करों दिनरात ॥ हम तेरे जंततूं बजावनहारा ॥ हमतेरे भिषारी दानदेहु दातारा ॥ तवप्रसाद रंगरस माणे ॥ घटघट अंतर तुमहिं समाणे ॥ तुमरी कृपाते जपिये नाउँ ॥ साधु संग तुमरे गुणगाउँ ॥ तुमरीदयाते होय दरदबिनास ॥ तुमरी मयाते कमल बिकास ॥ हौं बलिहार जाउँ गुरुदेव ॥ सफल दर्शन जाकी निर्मल सेव ॥ दया करो ठाकुर प्रभुमेरे ॥ गुण गावै नानक नित तेरे ॥ २०५ ॥

प्रथमें छोडी पराई निंदा ॥ उतर गई सभ मनकी चिंदा ॥ लोभ मोह सभ कीनो दूर ॥ परम वैशनो प्रभु पेख हजूर ॥ ऐसो त्यागी विरला

कोय ॥ हरि हरि नाम जपै जन सोय ॥ अहं बुद्धि का छोडा संग ॥ काम क्रोध का उतरा रंग ॥ नाम ध्याये हरि हरिहरे ॥ साधु जनां के संग निस्तरे ॥ वैरी मीत होये संमान ॥ सर्व महिं पूर्ण भगवान ॥ प्रभुकी आज्ञा मान सुख पाया ॥ गुरु पूरे हरिनाम दृढाया। कर किरपा जिस राखै आप ॥ सोई भगत जपै नाम जाप ॥ मन प्रकाश गुरुते मति लई ॥ कहु नानक तांकी पूरी पई ॥ २०६॥

सुख नाहीं बहुते धन खाटे ॥ सुख नाहीं पेखे निर्त नाटे ॥ सुख नाहीं बहु देश कमाये ॥ सर्व सुखां हरिहरि गुण गाये ॥ सूख सहज आनंद लहो ॥ साधु संगत पाइये वड़भागी गुरुमुख हरिहरि नाम कहो ॥ बंधन मात पिता सुत वनिता ॥ बंधन कर्म धर्म हौंकर्ता ॥ बंधन काटनहार मन बसै ॥ तौ सुख पावै निज घर बसै ॥ सभ याचक प्रभु देवनहार ॥ गुणनिधान बेअंत अपार ॥ जिसनूं कर्म करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नाम तिन्हीं जन जपना ॥ गुरु अपने आगे अरदास ॥ कर किरपा पुरुष गुण तास ॥ कहु नानक तुमरी शरणाई ॥ ज्यों भावै त्यों रखहु गुसाईं ॥ २०७॥

लाज मरै जो नाम न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी क्यों सोवै ॥ हरि सिमरन छाँड परम गति चाहै ॥ मूल विना शाख कत आहै ॥ गुरु गोविंद मेरे मन ध्याय ॥ जन्म जन्म की मैल उतारै बंधन काट हरि संग मिलाय ॥ तीर्थ न्हाय कहा शुच सैल ॥ मनको व्यापै हौं मैं मैल ॥ कोट कर्म बंधन का मूल ॥ हरि के भजन विन विरथा पूल बिन खाये बूझै नहीं भूख ॥ रोग जाय तो उतरै दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोह व्याप्या ॥ जिन प्रभु कीना सो प्रभु नहीं जाप्या ॥ धन धन साधु धन्य हरि नाउँ ॥ आठ पहर कीर्तन गुण गाउँ ॥ धनं हरि भगति धन्य करनेहार ॥ शरण नानक प्रभु पुरुष अपार ॥२०८॥

नाम लेत कछु विघ्न न लागे ॥ नाम सुनत यम दूरहुं भागे ॥ नामलेत सभ दूखहिंनास ॥ नामजपत हरि चरणनिवास ॥ निरविघ्न भगति भज हरि हरि नाउँ ॥ रसिक रसिक हरिके गुण गाउँ ॥ हरि

सिमिरत कछु चाख न जोहै ॥ हरि सिमरत देत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोह मान न बधै ॥ हरि सिमरत गर्भ योनि न रुधै ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरन बहु माँहि इकेला ॥ जाति अजाति जपै जन कोय ॥ जो जापै तिसकी गति होय ॥ हरि का नाम जपीयै साधु संग ॥ हरि के नाम का पूरन रंग ॥ नानक को प्रभु किरपा धार ॥ श्वास श्वास हरि देहु चितार ॥ २०९ ॥

तिन करते इक चरित उपाया ॥ अनहदबानी शब्द सुनाया ॥ मनमुख भूले गुरुमुख बुझाया ॥ कारन कर्ता करदा आया ॥ गुरु का शब्द मेरे अंतरध्यान ॥ हौं कबहुँ न छोड़ों हरि का नाम ॥ पिता प्रहलाद पढ़न पठाया ॥ लै पाटी पांधे के आया ॥ नामविना नहीं पढ़ो अचार ॥ मेरी पटीया लिखदेहु गोविंद मुरार ॥ पुत्र प्रह-लाद सों कह्यो माय ॥ प्रवितें न पढ़हु रही समझाय ॥ निरभय दाता हरिजी मेरे नाल ॥ जे हरि छोड़ो तो कुल लागै गाल ॥ प्रह-लाद सभ चाटड़े विगारे ॥ हमरा कहा न सुनै आपणे कारज सवाँरे ॥ सभ नगरी में भगति हटाई ॥ दुष्ट सभा का कछु न बसाई ॥ संडे मरके कीनी पुकार ॥ सभी दैत रहे झख मार ॥ भगत जनां की पति राखै सोई ॥ कीते के कहिये क्या होई ॥ किरत संयोगी दैत-राज चलाया ॥ हरि न बूझे विन आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सों वाद रचाया ॥ अंधा न बूझे काल नेड़े आया ॥ प्रहलाद कोठे विच राख्या बार दीया ताला ॥ निरभय बालक मूल न डरई मेरे अंतर गुरु गोपाला ॥ कीताहोवै सरीकी करै अणहोंदा नाउँ धराया ॥ जो धुर लिख्या सो आय पहुँचा जनसों वाद रचाया ॥ पिता प्रह-लाद सों गुरुज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीश गुसाईं ॥ जगजी वन दाता अंत सखाई ॥ जहिं देखां तहिंरह्या समाई॥थंभ उपाड़ हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ भगतां मन आनंद बजी बधाई ॥ अपने सेवक को दे वडिआई ॥ जंमण मरना मोह उपाया ॥ आवण जाणा करते लिख पाया ॥ प्रहलाद के कारज हरि आप दिखाया ॥ भगतां का बोल आगे आया ॥ देव कुली लछमी

को कराहिं जैकार ॥ माता नरसिंह का रूप निवार ॥ लछमी भय करै नसाके जाय ॥ प्रहलाद जन चरणों लागा आय ॥ सतगुरु नाम निधान दृढ़ाया ॥ राज माल झूठी सभ माया ॥ लोभी नर रहे लपटाय ॥ हरि के नाम बिन दरगह मिले सजाय ॥ कहै नानक सब को करै कराय ॥ सो प्रमाण जिन्हीं हरिसों चित लाया ॥ भगतां का अंगीकार करदा आया ॥ करते अपणा रूप दिखाया ॥२१०॥

इह धन मेरे हरि को नाउँ ॥ गांठ न बाँधों बेंच न खाउँ ॥ नाउँ मेरे खेती नाउँ मेरे बारी ॥ भगति करों जन शरण तुम्हारी ॥ नाउँ मेरे माया नाउँ मेरे पूजी ॥ तुमहिं छोड जानों नहीं दूजी ॥ नाउँ मेरे बांधव नाउँ मेरे भाई ॥ नाउँ मेरे संग अंत होय सखाई ॥ माया में जिस रखे उदास ॥ कह कबीर हौं ताको दास ॥ २११ ॥

नांगे आवन नांगे जाना ॥ कोय न रहिहै राजा राना ॥ राम राजा नौनिध मेरे ॥ संपै हेत कलत धन तेरे ॥ आवत संग न जात सँगाती कहा भयो दर बांधे हाथी ॥ लंका गढ़ सोने का भया ॥ मूरखरावण क्या ले गया ॥ कह कबीर कछु गुण बीचार ॥ चलै जुआरी दोय हथझार ॥ २१२ ॥

गंगा के संग सरिता बिगरी ॥ सो सरिता गंगा होय निबरी ॥ बिगरचो कबीरा राम दुहाई ॥ साँच भयो अनकतहिं नजाई ॥ चंदन के संग तरुवर बिगरचो ॥ सो तरुवर चंदन होय निवरचो ॥ पारस के संग तांबा बिगरचो ॥ सो तांबा कंचन होय निवरचो ॥ संतन संग कबीरा बिगरचो ॥ कबीर रामहिं होय निवरचो ॥ २१३ ॥

माथे तिलक हथ माला बाना ॥ लोगन राम खिलौना ॥ जाना ॥ जो हौं बौरा तो राम तोरा ॥ लोग मर्म कहि जानैं मोरा ॥ तोरों न पाती पूजों न देवा ॥ राम भगति बिन निहफल सेवा ॥ सतगुरु पूजों सदा सदा मनावों ॥ ऐसी सेव दरगहि सुख पावों ॥ लोग कहैं कबीर बौराना ॥ कबीर का मर्म राम पहिचाना ॥ २१४ ॥

निरधन आदर कोई न देय ॥ लाख यतन करैओह चित न धरेय ॥ जो निरधन सरधन के जाय ॥ आगे बैठा पीठ फिराय ॥

जो सरधन निरधन के जाय ॥ दीया आदर लिंया बुलाय ॥ निरधन सरधन दोनों भाई ॥ प्रभु की कला न मेटी जाई ॥ कह कबीर निरधन है सोई ॥ जाके हिरदय नाम न होई ॥ २१५ ॥

गुरु सेवा तें भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही को सिमरें देव ॥ सो देही भज हरि की सेव ॥ भजहु गोविंद भूल मत जाहु ॥ मानस जन्म का एही लाहु ॥ जबलग जरा रोग नहिं आया ॥ जबलग काल ग्रसी नहिं काया ॥ जबलग विकल भई नहिं बानी ॥ भजले रे मन सारंगपानी ॥ अबना भजहिं भजहिं कब भाई ॥ आवै अंत न भज्या जाई ॥ जो कछु करहि सोई अबसार ॥ फिर पछताहु न पावहुपार ॥ सो सेवक जो लायोसेव ॥ तिनहीं पाये निरंजन देव ॥ गुरु मिल ताके खुले कपाट ॥ बहुरी न आवे योनी बाट ॥ इही तेरा औसर इह तेरी बार ॥ घटभीत तूं देख विचार ॥ कहत कबीर जीत कै हार ॥ बहुविध कह्यो पुकार पुकार ॥ २१६ ॥

सभ कोइ चलन कहत है वहां ॥ नाजानों बैकुंठ है कहां ॥ आप आपका मर्म न जाना ॥ बातनही बैकुंट बखाना ॥ जबलग मन बैकुंट की आस ॥ तबलग नाहीं चरण निवास ॥ खाई कोट न परल पगारा ॥ ना जानों बैकुंठ दुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि ॥ साधु संगत बैकुंठहि आहि ॥ २१७ ॥

क्यों लीजै गढ़बंका भाई ॥ दोवर कोट अर तेवर खाई ॥ पांच पचीस मोह मद मत्सर आडी परबल माया ॥ जन गरीब को जोर न पहंचे कहा करों रघुराया ॥ काम किवारी दुखसुख दरवानी पाप पुण्य दरवाजा ॥ क्रोध प्रधान महा बड़ दुंदर तहिं मन मवासी राजा ॥ स्वाद सनाह टोप ममता को कुबुद्धि कमान चढ़ाई ॥ तृष्णा तीर रहे घट भीतर यों गढ़ लियो न जाई ॥ प्रेमपलीता सुरत हवाई गोला ज्ञान चलाया ॥ ब्रह्म अग्नि सहजे परजाली एकहिं चोट सिझाया ॥ सत संतोष ले लरने लागा तोरे दोय दरवाजा ॥ साधु संगत अरु गुरुकी किरपा ते पकरचो गढ़ को राजा ॥ भगवत भीरि शक्ति सिमरन की कटी काल भय फाँसी ॥ दास कबीर चढ़चो गढ़ ऊपर राज लियो अविनासी ॥ २१८ ॥

गंग गुसाइँन गहर गँभीर ॥ जंजीर बांध कर खरे कबीर ॥ मन न डिगै तन काहेको डराय ॥ चरण कमल चित रह्यो समाय ॥ गंगा की लहर मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥ कह कबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखतहै रघुनाथ ॥ २१९ ॥

कोटिसूर जाके परकास ॥ कोटिमहादेव अरुक विलास ॥ दुरगा कोटि जाके मर्दन करै ॥ ब्रह्मा कोटि वेद उच्चरै ॥ जो जांचों तो केवल राम ॥ आन देव सो नाहींकाम ॥ कोटि चंद्रमें करहिं चराक सुर तैतीसों जेवहिं पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दर्बार ॥ धर्म कोटि जाके प्रतिहार ॥ पवन कोटि चौबारे फिरहिं ॥ बासक कोटि सेज बिस्तरहिं ॥ समुद कोटि जाके पनिहार ॥ रोमावलि कोटि अठारहिं भार ॥ कोटि कुबेर भरहिं भंडार ॥ कोटिक लक्ष्मी करहिं शृँगार ॥ कोटिक पाप पुण्य बहु हरहिं ॥ इंद्र कोटि जाके सेवा करहिं ॥ छपन कोटि जाके प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खियत अपार ॥ लट छूटी बरतै बिकराल ॥ कोट कला खेलै गोपाल ॥ कोट यक्ष जाके दर्बार ॥ गंधर्व कोटि करहिं जैकार ॥ विद्या कोटि सभी गुण कहै ॥ तऊ पारब्रह्म का अंत न लहै ॥ बावनकोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहिं ते छली ॥ सहसकोटि बहु कहतपुरान ॥ दुर्योधन का मथ्या मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवै न धरहिं ॥ अंतर अंतर मनसा हरहिं ॥ कहकबीर सुनसारँगपान ॥ देहअभयपद मांगों दान॥

रे जिह्वा करों शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥ रँगीले जिह्वा हरि के नायँ ॥ सुरँग रँगीले हरि हरि ध्यायँ ॥ मिथ्या जिह्वा अवर काम ॥ निर्वाण पद इक हरि को नाम ॥ असंख्य कोटि अन पूजाकरी ॥ एक न पूजस नामहिं हरी ॥ प्रणवै नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण ॥ २२१ ॥

परधन परदारापरहरी ॥ ताकेनिकट बसहिंनरहरी ॥ जो न भजंते नारायणा ॥ तिनका मैं न करों दर्शना ॥ जिनके भीतर है अंतरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा ॥ प्रणमत नामदेउ ना कहिं विना ॥ ना सोहै बत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुह आनी ॥ दूध पियो गोविंदेराय ॥ दूधपियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं तो घर को बाप रिसाय ॥ सोयन कटोरी अमृत भरी ॥ लै नामे हरि आगे धरी॥ एक भगत मेरे हिरदे बसे ॥ नामे देख नरायन हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया ॥ नामे हरि का दर्शन भया ॥ २२३ ॥

मैंबहुरी मेरा रामभतार ॥ रचरचताको करोशृँगार ॥ भलेनिंदो भले निंदो भलेनिंदो लोग ॥ तनमन राम प्यारे योग ॥ वाद विवाद काहू सों न कीजे ॥ रसना राम रसायन पीजे ॥ अब जिय जान ऐसी बन आई ॥ मिलों गुपाल निशान बजाई ॥ अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४ ॥

कबहूं खीर खांड घिउ नभावे ॥ कबहूं घर घर टूक मँगावे ॥ कबहूं कूरन चने बिनावे ॥ ज्यों राम राखे त्यों रहिये रेभाई ॥ हरि की महिमा कछु कथन नजाई ॥ कबहूं तुरे तुरंग नचावे ॥ कबहूं पाँय पनहीं हूं नपावे ॥ कबहूं खाट सुपेदी सुवावे ॥ कबहूं भूमिपै आर नपावे ॥ भनत नामदेउ इक नाम निस्तारे ॥ जिहिं गुरु मिले तिहिं पार उतारे ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकर उठाया ॥ हीनड़ी जाति मेरे यादव राया ॥ छीपे के जन्म काहेको आया ॥ ले कमली चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे बैठा जाय ॥ ज्यों ज्यों नामा हरिगुण उचरै॥भगत जनां को देहुरा फिरै

घर की नारि त्यागै अंधा ॥ परनारी सों घाले धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ पापी का घर अग्नि माहिं ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहिं ॥ हरि की भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवै जाय ॥ अमृत डार लाद विष खाय ॥ ज्यों वेश्या के परे अखारा ॥ कापर पहर करै शृँगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फांस ॥ जाके मस्तक लिख्योकर्मा ॥ सो भज परहै गुरु की शर्ना ॥ कहत नामदेउ इह बीचार ॥ इन विध संतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडा मरका जाय पुकारे ॥ पढै नहीं हमहीं पचहारे ॥ राम कहै करताल बजावै चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपबो करै ॥ हिरदय हरिजी को सिमरन धरै ॥ वसुधा वश कीनी सभराज विनती करै पटरानी ॥ पूत प्रहलाद कह्यो नहिं मानै तिनतो औरहिं ठानी दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औध घनेरी ॥ गिर तर जल ज्वाला भय राख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खड्ग काल भय कोप्यो मोहिं बताय जो तोहिं राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहिं हरि भाखै॥ हरनाकुश जिन नखहिं बिदारयो सुरनर किये सनाथा ॥ कह नामदेउ हम नरहरि ध्यावहिं राम अभयपददाता ॥

सुलतान पूँछे सुन वे नामा ॥ देखौं राम तुम्हारे कामा ॥ नामा सुलताने बांधला ॥ देखो तेरा हरि बीठुला ॥ बिसमल गऊ देहु जिवाय ॥ नातर गरदन मारों ठांय ॥ बादशाह ऐसी क्यों होय ॥ बिसमल किया न जीवै कोय ॥ मेरा कीया कछू नहोय ॥ करिहै राम होयहै सोय ॥ बादशाह चढ्यो अहंकार ॥ गज हस्ती दीनो चमकार ॥ रुदन करै नामे की माय ॥ छोड राम क्यों न भजहि खुदाय ॥ ना हौं तेरा पूंगड़ा ना तूं मेरीमाय ॥ पिंड पड़ै तो हरिगुण गाय ॥ करे गजिंद शुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ काजी मुल्ला करहिं सलाम ॥ इन हिंदू मेरा मल्या मान ॥ बादशाह वीनती सुनेह ॥ नामेसरभर सोना लेह॥माल लेउँतो दोजक परों ॥ दीनछोड दुनिया को भरों ॥ पांवों बेड़ी हाथोंताल ॥ नामा गावे गुण गोपाल ॥ गंग यमुन जो उलटी बहै ॥ तौ नामा हरि करता रहै ॥ सात घडी जब बीती सुनी ॥ अजहुं न आयो त्रिभुवन धनी ॥ पाखंतन बाज बजायला ॥ गरुड़ चढ़े गोविंद आयला ॥ अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ़े आये गोपाल ॥ कहहिं तो धरनि इकौड़ी करों ॥ कहहिं तो लेकर ऊपर धरों ॥ कहहिं तो मूई गऊ देहुं जिवाय॥सब कोई देखै पतियाय॥नामा प्रणवै सेलम सेल॥ गऊदुहाई बछरा मेल ॥ दूध हिं दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाहके आगे धरी॥ बादशाह महल में जाय ॥ औघट की घट लागी आय ॥

काजी मुल्लां विनती फरमाय ॥ बखशी हिंदू मैं तेरी गाय ॥ नामा कहे सुनो बादशाह ॥ इह कछु पतीया मुझे दिखाय ॥ इस पतीये का इहै प्रमान ॥ साँच सील चालहु सुलतान ॥ नामदेव सब रह्या समाय ॥ मिल हिंदू सभ नामे पहिं जाहिं ॥ जो अबकी बार न जीवै गाय ॥ तो नामदेव का पतीया जाय ॥ नामे की कीरत रही संसार॥ भगत जनां लै उधरचा पार ॥ सकल कलेश निंदक भ्या खेद ॥ नामे नारायण नहीं भेद ॥ २२९ ॥

जो गुरुदेव तो मिलै मुरार ॥ जो गुरुदेव तो उतरै पार ॥ जो गुरुदेव तो बैकुंठ तरै ॥ जो गुरुदेव तो जीवत मरै ॥ सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य गुरुदेव ॥ झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव ॥ जो गुरुदेव तो नाम दृढ़ावै ॥ जो गुरुदेव न दह दिस धावै ॥ जो गुरुदेव पंच ते दूर ॥ जो गुरुदेव न मरबो झूर ॥ जो गुरुदेव तो अमृत बानी ॥ जो गुरुदेव तो अकथ कहानी ॥ जो गुरुदेव तो अमृत देह ॥ जो गुरुदेव नाम जप लेह ॥ जो गुरुदेव भवन त्रय सूझै ॥ जो गुरुदेव ऊँचपद बूझै ॥ जो गुरुदेव तो सीस अकास ॥ जो गुरुदेव सदा साबास ॥ जो गुरुदेव सदा बैरागी ॥ जो गुरुदेव परनिंदा त्यागी ॥ जो गुरुदेव बुरा भला एक ॥ जो गुरुदेव ललाटहि लेख ॥ जो गुरुदेव कंध नहिं हिरै॥ जो गुरुदेव देहुरा फिरै ॥ जो गुरुदेव तो छापर छाई ॥ जो गुरुदेव सहज निकसाई ॥ जो गुरुदेव तो अठसठ न्हाया ॥ जो गुरुदेव तन चक्र लगाया ॥ जो गुरुदेव तो द्वादश सेवा ॥ जो गुरु देव सभी विष मेवा ॥ जो गुरुदेव तो संशा टूटै ॥ जो गुरुदेव तो यमते छूटै ॥ जो गुरुदेव तो भौजल तरै ॥ जो गुरुदेव तो जन्म न मरै ॥ जो गुरुदेव अठदस ब्योहार ॥ जो गुरुदेव अठारहिं भार ॥ बिन गुरुदेव अवर नहिं जाई ॥ नामदेव गुरुकी शरणाई ॥ २३० ॥

आउ कलंदर केशवा ॥ कर अबदाली भेशवा ॥ जिन आकाश कुलहिं सिर कीनी कोसै सत पियाला ॥ चमर पोसका मंदिर तेरा इह विधि बने गुपाला ॥ छपन कोट का पेहन तेरा सोलह तहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा ॥ देही

महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारै ॥ बीबी कौलां सौका इन तेरा निरंकार आकारै ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करौं पुकारा॥नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल बेदेसवारा

राग बसंत हिंडोल ।

शालग्राम बिप पूज मनावो सुकृत तुलसी माला ॥ राम नाम जप बेड़ा बांधो दया करो दयाला ॥ काहे कलश सिंचा जन्म गवाँवो ॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवो तिस भीतर मन जोवो ॥ अमृत सिंचो भरो क्यारे तौ माली के होवो ॥ काम क्रोध दोय करो बसोले गोडो ॥ धरती भाई ज्यों गोडो त्यों तुम सुख पावो किर्त न मेटचा जाई ॥ बगुले ते पुनि हँसुला होवै जे तू करहिं दयाला ॥ प्रणमत नानक दासन दासा दया करो दयाला ॥ २३२ ॥

साधो इह तन मिथ्या जानो ॥ या भीतर जो राम वसत है सांचो ताहि पछानो ॥ इह जग है संपति सुपने की देख कहा ऐंड़ानो ॥ संग तिहारे कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥ अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि हरि कीरति उर आनो ॥ जन नानक सभही में पूरन एक पुरुष भगवानो ॥ २३३ ॥

राग बसंत ।

पापी हीये में काम बसाय ॥ मन चंचल याते रह्यो न जाय ॥ योगी जंगम अरु सन्यास ॥ सभही पर डारी इह फाँस ॥ जिहिं जिहिं हरि को नाम सम्हार ॥ ते भवसागर उतरे पार ॥ जन नानक हरि की शरनाय ॥ दीजै नाम रहै गुण गाय ॥ २३४ ॥

माई मैं धन पायो हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बैठो विश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान ॥ लोभ मोह यह परस नसाकै गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का संशय चूका रत्न नाम जब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहिं समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविंद गुणगावै ॥ कहुनानक यह विधि की संपै कोऊ गुरुमुखपावै ॥ २३५ ॥

मन कहा विसारयो रामनाम ॥ तन विनशै यम सों परै काम ॥ इह जग धूएँ का पहार ॥ तैं सांचा मन्यो किहिं विचार ॥ धन दारा संपति और गेह ॥ कछु संग न चाले समझलेह ॥ इक भगति नारायण होय संग ॥ कहु नानक भज तिहिं एक रंग ॥ २३६ ॥

कह भूल्योरे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरयो नाहिंन अजहुं जाग ॥ सम सुपने के इह जग जान ॥ विनशै छिन में साँचीमान ॥ संग तेरे हरि वसत नीत ॥ निशि वासर भज ताहि मीत ॥ बार अंत की होय सहाय ॥ कहु नानक गुण ताके गाय ॥ २३७ ॥

सुन साखी मन जप प्यार ॥ अजामल्ल उधरयो कह एकवार ॥ वाल्मीकाहिं होया साधु संग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशंक ॥ तेरयां संतां जाचों चरण रेन ॥ ले मस्तक लावों कर कृपा देन ॥ गणिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजेंद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष ॥ विप्र सुदामे दारिद भंज॥रे मन तू भी भज गोविंद ॥ बधिक उधारयो खम प्रहार ॥ कुबजा उधरी अंगुष्ट धार ॥ विदुर उधारयो दासत भाय रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रौपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अंत बार ॥ रे मन सेव तूं परहिं पार ॥ धन्ने सेवया बाल बुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भई सिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो प्रकास ॥ रे मन तूभी होहि दास ॥ जैदेव त्याग्यो अहंमेव ॥ नाई उधरयो सैन सेव ॥ मन डिगै न डोलहि कहूं जाय ॥ मन तूभी तरसहि शरण पाय ॥ जिहिं अनुग्रह ठाकुर कियो आप ॥ सो तैं लीने भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न विचारयो कोय ॥ इह विध देख मन लगासेव ॥ कबीर ध्यायो एक रंग ॥ नामदेव हरजी वसहिं संग ॥ रामदास न्याये प्रभु अनूप ॥ गुरु नानक देव गोविंद रूप ॥ २३८ ॥

पंडित जन माते पढ़ पुरान ॥ योगी माते योग ध्यान ॥ संन्यासी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप के भेव ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घर मुसन लाग ॥ जागे शुकदेव अरु अक्रूर ॥ हनुमंत जागे धर लंकूर ॥ शंकर जागे चरण सेव ॥ कलि जागे नामा

जैदेव ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरुमुख जागे सोई सार ॥ इस देही के अधिक काम ॥ कह कबीर भज राम नाम ॥ २३९ ॥

इस तन मन मध्ये मदन चोर ॥ जिन ज्ञान रत्न हरि लीन मोर ॥ मैं अनाथ प्रभु कहों काहि ॥ को को न बिगूतो मैं को आहि ॥ माधो दारुन दुख सह्यो न जाय ॥ मेरो चपल बुद्धि सों कहा बसाय ॥ सनक सनंदन शिव शुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कवि जन योगी जटा धार ॥ सभ आपन औसर चले सार ॥ तूं अथाह मोहिं थाह नाहिं ॥ प्रभु दीनानाथ दुख कहों काहिं ॥ मेरो जन्म मरण दुख आथ धीर ॥ सुखसागर गुण रम कबीर ॥ २४० ॥

कहत जाइयेरे घर लागो रंग ॥ मेरा चित न चलै मन भयोपंग ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घस चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाय ॥ सो ब्रह्म बतायो गुरु मनहि माहिं ॥ जहां जाइये तहिं जल पखान ॥ तूं पूर रह्योहै सभ समान ॥ वेद पुराण सब देखे जोय ॥ ऊहां तो जाइये जो ईहां न होय ॥ सतगुरुमैं बलिहारी तोर जिन सकल विकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद स्वामी रमत ब्रह्म गुरुका शब्द काटै कोटि कर्म ॥ २४१ ॥

तुझहिं सुझंता कछु नाहिं ॥ पहिरावा देखे ऊभ जाहिं ॥ गर्ववती का नाहीं ठाउँ ॥ तेरी गर्दन ऊपर लवै काउँ ॥ तू काहि गर्बहिं बावली ॥ जैसे भादों खूंबरा जो तूं तिसते खरी उतावली ॥ जैसे कुरंग नहीं पायो भेद ॥ तन सुगंध ढूंढ़ प्रदेश ॥ अप तन का जो करे विचार ॥ तिस नहिं यम किंकर करे खुआर ॥ पुत्र कलत्र का कराहिं अहंकार ॥ ठाकुर लेखा मंगन हार ॥ फेडे का दुख सहे जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥ साधू की जो लेहिं ओट ॥ तेरे मिटहिं पाप सभ कोट कोट ॥ कह रामदास जो जपहिं नाम ॥ तिस जाति न जन्म न योनि काम ॥ २४२ ॥

सुरहि की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपर झमक बाल ॥ इस घर में है सो तूं ढूंढ़ खाहि ॥ और किसही के तू मतिही जाहि ॥ चाकी चाटहि चूनखाहि ॥ चाकीका चीथरा कहां लैजाहि ॥ छींकेपर

तेरी बहुत डीठ ॥ मत लकरी सोटा तेरी परेपीठ ॥ कह कवीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट डीम ॥ २४३ ॥

राग सारंग ।

जप मन राम नाम पढ़ सार ॥ राम नाम विनथिर नहिं कोई और निष्फल सभ विस्तार ॥ क्या लीजै क्या तजिये बौरे जो दीसै सो छार ॥ जिन विषय को तुम अपने कर जानो सो छोड जाहु सिर भार ॥ तिल तिल पल पल औध पुनि घाटै बूझ न सके गवांर ॥ सो कछु करै जो साथ न चालै इह शाकत का आचार ॥ संत जनां के संग मिल बोरे तौ पावहि मोक्ष द्वार ॥ विन सतसंग सुख किने नपाया जाय पूछहु वेद विचार ॥ राणा राउ सभी कोऊ चालै झूठ छोड जाय पासार ॥ नानक संत सदा स्थिर निश्चल जिन राम नाम आधार ॥ २४४ ॥

ठाकुर तुम शरणाई आया ॥ उतर गयो मेरे मन का संशा जवते दर्शन पाया ॥ अनबोलत मेरी ब्रिर्था जानी अपना नाम जपाया ॥ दुख नाठे सुख सहज समाये अनद अनद गुण गाया बांह पकर कढ लीने अपने गृह अंध कूप ते माया ॥ कहु नानक गुरु बंधन काटे विछुरत आन मिलाया ॥ २४५ ॥

गोविंदजी तूं मेरे प्राण अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमहीं तूं मेरो परिवार ॥ कर मस्तक धार्‌यो मेरे माथे साधु संग गुण गाये ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाये रसिक राम नाम ध्याये ॥ अविचल नींव धराई सतगुरु कबहूं डोलत नाहीं ॥ गुरु नानक जब भये दयाला सर्व सुखांनिधि पाहीं ॥ २४६ ॥

हरि विन तेरो कौन सहाई ॥ काकी मात पिता सुत वनिता को काहूको भाई ॥ धन नरनी अरु संपति सगरी जो मान्यो अपनाई ॥ तन छूटे कछु संग न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तासों रुचि न बढ़ाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथ्या ज्यों सुपना रैनाई ॥ २४७ ॥

कहा मन विषयनसों लपटाई ॥ याजग में कोउ रहन न पावै इक आवै इक जाई ॥ काको तन धन संपती काकी कासों नेह लगाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ तज अभिमान शरण संतन गहु मुक्त होहिं छिन माहीं ॥ जन नानक भगवंत भजन बिन सुख सुपने भी नाहीं ॥ २४८ ॥

कहा नर आपनो जन्म गवाँवै ॥ माया मद विषया रस राच्यों राम शरण नहिं आवै॥इह संसार सकल है सुपनो देख कहा लोभावै जो उपजै सो सकल विनाशै रहन न कोऊ पावै ॥ मिथ्या तन सांचो कर मान्यो इह विध आप बँधावै ॥ जन नानक सोऊ जग मुक्ता राम भजन चित लावै ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ न हरिगुणगायो ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नहिं कानन परदारा लप टायो ॥ पर निंदा कारन बहु धावत समझ्यो नहिं समझायो ॥ कहा कहों मैं अपनी करनी जिहिं विध जन्म गवाँयो ॥ कह नानक सभ औगुण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दस नाज टका चार गांठी ऐंडो टेढ़ो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सों पाये द्वै लख टका बरात दिवस चार की करो साहिबी जैसे वन हर पात ॥ ना कोऊ लैआयो इह धन ना कोऊ लैजात ॥ रावण हूं ते अधिक छत्रपति छिन में गये बिलात ॥ हरि के संत सदा थिर पूजो जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत है गोविंद ते सतसंग मिलात ॥ मात पिता वनिता सुत संपति अंत न चलत सँगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहे रेमन विषया वन जाय भूलोरे ठग मूरी खाय ॥ जैसे मीन पानी में रहै ॥ काल जाल की सुध नहिं लहै ॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यों मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को संचै क्षीर गला बांध दुह लेयअहीर ॥ माया कारन श्रम अतिकरै ॥ सो माया

ले गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नहिं मूढ़ ॥ धन धरती तन है गयो धूड़ ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरै ॥ साधु संगत कबहूं नहिं करै ॥ कहत नामदेउ ताचीआन ॥ निरभय है भजिये भगवान ॥

बदो क्योंना होड़ माधो मोसों ॥ ठाकुर ते जन जन ते ठाकुर खेल परयोहै तोसों ॥ आपन देव देहरा आपन आप लगावे पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जल कहन सुनन को दूजा ॥ आपहिं गावै आपहिं नाचै आप बजावैतूरा ॥ कहतनामदेउ तू मेरो ठाकुरजनऊरातूपूरा

तैं नर क्या पुराण सुन कीना ॥ अनपायनी भगति नहिं उपजी भूखे दान न दीना ॥ काम न विसरयो क्रोध न विसरयो लोभ न छूट्यो देवा ॥ परनिंदा मुखते नहिं छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ बाट पार घर मूस बिरानोपेटभरै अपराधी ॥ जिहि परलोक जाय अपकी-रत सोई अविद्या साधी ॥ हिंसा तो मन ते नहिं छूटी जीय दया नहिं पाली ॥ परमा नंद साधु संगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥ २९४॥

हरि बिन कौन सहाइ मनका ॥ मात पिता भाई सुत वनिता हित लागो सभ फन का ॥ आगेको कछु तुलहा बांधो क्या भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनक लागै ठनका ॥ सकल धर्म पुण्य फल पावो धूर बांछहु सभ जन का ॥ कहै कबीर सुनोरे संतहु इह मन उडन पखेरू बनका ॥ २९५ ॥

राग मलहार।

माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई ॥ सकल सहेली सुख भर सूती जिहिं घर लाल बसाई ॥ मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला मोहिं निर्गुण क्या चतुराई ॥ करों बराबर जो पिया संग राती इह मेरी ढीठाई ॥ भई निमाणी शरण इक ताकी श्री सतगुरु पुरुष सुखदाई॥ एक निमिष में मेरा सभ दुख काट्या नानक सुख रैन बिहाई २९६॥

मेरे प्रीतम प्राण पियारे ॥ प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजै दयाल अनुग्रह धारे ॥ सुमिरों चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा ॥ संत जनां पै करों बेनती मन दर्शन की प्यासा ॥ बिछुरत मरन

जीवन हरि मिलते जन को दर्शन दीजे ॥ नाम अधार जीवन धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजे ॥ २५७ ॥

हरि के भजन कौन कौन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन वराहतन साधू संग उधारे॥ देव कुल दैत्य कुल यक्ष किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जोजो भजन करै साधूसंग ताके दुःख विदारे ॥ काम क्रोध महा विषया रस इनते भये निरारे ॥ दीन दयाल जपहिं करुणामय नानक सद वलिहारे ॥ २५८ ॥

हे गोविंद हे गोपाल हे दयाल लाल ॥ प्राण नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्यपूर्ण मोहि मया धार ॥ अंध कूप महा भ्यान नानक पार उतार ॥ २५९ ॥

सेवीले गोपाल राय अकुल निरंजन ॥ भगति दान दीजे याचहिं संत जन ॥ याचहिं घरि दिग दिसै सरायचा वैकुंठ भवन चित्रशाला सप्त लोक सामान पूरीयले ॥ याचहिं घर लक्ष्मी कुआरी ॥ चंद सूरज दीवड़े कौतुक काल बपुड़ा कोतवाल सुकरासिरी ॥ सो ऐसा राजा श्रीनरहरी॥ याँचै घर कुलाल ब्रह्मा चतुर्मुख डांवड़ा जिन विश्व संसार राचीले ॥ जाके घर ईश्वर बावला जगत गुरु तत्व सारखा ज्ञान भाषीले ॥ पाप पुण्य याँचै डांगी द्वारै चित्रगुप्त लेखीया ॥ धर्मराय परली प्रतिहार ॥ सो ऐसा राजा श्रीगोपाल ॥ याँचै घर गण गंधर्व ऋषि बपुरे ढाडीया गावत आछै ॥ सर्व शास्त्र बहुरूपिया अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहिं काछे ॥ चौर ढूल याँचै हैं पवन ॥ चेरी शक्ति जीतले भवन ॥ अंड टूक याचै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन पती ॥ याँचे घर कूर्मा पाल सहस्र फनी वासक सेज वालूआ ॥ अठारा भार बनासपती मालणी छिनवे करोड़ी मेघ माला पाणी हारीया ॥ नख प्रसेव याँचै सुरसरी सप्त समुंद याँचे घडथली ॥ एते जीव याँचैं वरतनी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनी ॥ याँचै घर निकटवर्ती अर्जुन धरू प्रहलाद अंवरीष नारद नेजै सिद्ध बुद्ध गण गंधर्व बानवे हेला ॥ एते जीय याँचहिं हैं घरी ॥ सर्वव्यापक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ तांची आण ॥ सकल भगत याँचे नीसाण ॥ २६० ॥

मोकों तू न बिसार तू न बिसार ॥ तू न बिसारे रामैया ॥ आला वंतीएहभ्रम जोहै मुझ ऊपर सभकोपिला॥शूद्रशूद्र कर मारउठायो कंहा करों बाप बीठला ॥ मूए हुए जो मुक्ति देहुमे मुक्ति नजानै कोयला ॥ एहपंडीया मोकों ढेढ कहत तेरी पैज पिछौड़ी होयला ॥ तूं जो दयाल कृपाल कहीयत हैं अति भुज भयो अपारला ॥ फेर दिया देहुरा नामे को पंडीयन को पिछवारला ॥ २६१ ॥

नागर जनां मेरी जाति विख्यातचमारं॥ हृदय राम गोविंद गुण सारं ॥ सुरसरी सलिल कृत वारुणी रेसंत जन करत नहीं पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहीं होय आनं ॥ तरतार अपवित्र कर मानीयेरे जैसे कागरा करतवीचारं ॥ भगति भागवत लिखिये तिहिं ऊपरे पूजिये कर नमसकारं ॥ मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहिं बानारसी आस पासा ॥ अब विप्र प्रधान तिहिं कराहिं डंडौत तेरे नाम शरनाय रामदासदासा॥२६२॥

हरि जपत तेऊ जनां पदम कमलास पति तास सम तुल्य नहिं आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक ह्वै विस्तरचो आन रे आन भरपूर सोऊ ॥ जाके भागवत लेखिये अवर नहिं पेखिये तासु की जाति आछोप छीपा ॥ व्यासमें लेखिये सनक में पेखिये नाम की नामना सततदीपा ॥ जाकेईद बकरीद कुलगऊ रे बध करहिं मानिये सेखसहीदपीरा ॥ जाके बाप वैसीकरी पूत एसी सरी तिहुंरे लोक प्रसिद्ध कबीरा ॥ जाकेकुटुंब के ढेढ़ सभ ढोर ढोवंत फिरहिं अजहुं बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहिं डंडौत तिन तनय रामदास दासानुदासा ॥ २६३ ॥

राग कान्हरा ।

चरण शरण गोपाल तेरी ॥ मोह मान द्रोह भ्रम राख लीजे काट बेरी ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमर रत्नाकर ॥ शीतला हरि नाम तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ दीनदरद निवार तारन ॥ हरि कृपानिधि पतित उधारन ॥ कोटि जन्म दूख कर पायो ॥ सुखी नानक गुरु नाम दृढ़ायो ॥ १६४ ॥

राग प्रभाती ।

प्रभु की सेवा जन की शोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिस लोभा ॥ नाम तेरा जन के भंडार ॥ गुणगावहिं प्रभु दर्श प्यार ॥ तुमरी भगति प्रभु तुमहींजनाई॥काठ जेवरी जम लिये छुडाई॥जोजन राता प्रभुके रंग ॥ तिन सुख पाया प्रभु के संग ॥ जिस रस आया सोई जानै॥पेख पेख मनमें हैरानै ॥ सो सुखिया सभते ऊतम सोय ॥ जाके हिरदय बस्या प्रभु सोय ॥ सोई निहचल आवे न जाय ॥ अनुदिन प्रभु के हरिगुण गाय ॥ ताको करो सकल नमस्कार ॥ जाके मन पूरण निरं-कार ॥ कर किरपा मोहिं ठाकुर देवा ॥ नानक उधरै जनकी सेवा ॥

गुण गावत मन होय अनंद ॥ आठ पहिर सिमरो भगवंत ॥ जाके सिमरन कलि मल जाहि ॥ तिस गुरु की हम चरनी पाहि ॥ सुमति देवो संत प्यारे ॥ सिमरों नाम मोहिं निस्तारे॥जिन गुरु कह्या मारग सीधा॥ सकल त्याग नाम हरि गीधा ॥ तिस गुरु के सदा बल जाइये ॥ हरि सिमरन जिस गुरुते पाइये ॥ बूडत प्रानी जिन गुरुहिं तराया ॥ जिस प्रसाद मोहै नहिं माया ॥ हलत पलत जिन गुरा सवारचा ॥ तिस गुरु ऊपर सदा हौं वारचा ॥ महा मुगधते कीया ज्ञानी ॥ गुरु पूरेकी अकथ कहानी ॥ पारब्रह्म नानक गुरुदेव ॥ वड़े भाग पाइये हरि सेव ॥ २६६ ॥

मनमें क्रोध महा अहंकारा ॥ पूजा करहिं बहुत विस्तारा ॥ कर अस्नान तन चक्र बनाये॥अंतरकी मल कबहूं न जायें ॥इत संयम प्रभु किनहूं न पाया ॥ भगौती मुद्रा मन मोह्या माया ॥ पाप करहिंपंचों के वसरे ॥ तीर्थ न्हाय कहहिं सब उतरे ॥ बहुरी कमावहिं होय निशंक ॥ यमपुर बांध खरे कालंक ॥ घूँघर बांध बजावहिं ताला ॥ अंतर कपट फिरहिं बैताला ॥ बरमी मारी सांप न मूआ ॥ प्रभु सब कछु जानै जिन तूं कीया ॥ पूंअर ताप गेरी के वस्त्रा ॥ अपदा का मारचा गृहते नसता ॥ देश छोड परदेशहिं धाया ॥ पंच चंडाल नाले लै आया ॥ कान फराय हिरायेटूका॥घर घर मांगै तृप्तावन ते चूका॥ वनिता छोड बद नजर परनारी ॥ वेस न पाइये महा दुखारी ॥

बोलै नाहीं होय बैठा मौनी ॥ अंतर कपल भवाइये जोनी ॥ अन्न ते रहिता दुख देही सहिता ॥ हुकम न बूझै व्याप्या ममता ॥ बिन सतगुरु किने न पाई परम गते ॥ पूछहु सकल वेद सिमृते ॥ मनं मुख कर्म करै अजाई ॥ ज्यों वालू घर ठौर न ठाई ॥ जिसनूं भये गोविंद दयाला ॥ गुरु का वचन तिन बांध्यो पाला ॥ कोटि मध्ये कोई संत दिखाया ॥ नानक तिनके संग तराया ॥ जे होवै भाग तो दर्शन पाइये ॥ आप तरै सभ कुटुंब तराइये ॥ २६७ ॥

राग जैजैवंती ।

राम भज राम भज जन्म सिरातहै ॥ कहों कहा बार बार समझत नहिं क्यों गवाँर विनशत नहिं लगै बार ओरे सम गात है ॥ सकल भर्म डार देह गोविंद को नाम लेह अंत बार संग तेरे यही एक जात है ॥ विषया विष ज्यों विसार प्रभु को यश हिये धार नानक जन कह पुकार औसर विहात है ॥ २६८ ॥

रेमन कौन गति होयहै तेरी ॥ इह जग में राम नाम सो तो नहीं सुन्यो कान विषयन सों अति लुभान मति नाहिन फेरी ॥ मानस को जन्म लीन सिमरन नहिं निमिष कीन दारा सुख भयो दीन पगहुं परी बेरी॥नानक जन कह पुकार सुपने ज्यों जग पसार सिमिरत नहिं क्यों मुरार माया जाकी चेरी ॥ २६९ ॥

बीत जैहै बीत जैहै जन्म आकाजरे ॥ निशि दिन सुनके पुराण समझत नहिंरे अजान काल तोपहूँच्यो आन कहां जैहै भाजरे ॥ अस्थिर जो मान्यो देह सो तो तेरी हैहै खेह क्यों ना हरि को नाम लेहं मूरख निलाजरे ॥ राम भगति हिये आन छोड़दे तू मनको मान नानक जन कह बखान जग में बिराजरे ॥ २७० ॥

वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिजी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहिं दही भात खाहिजी देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी शब्द झनतकार खेल पाहिजी ॥ काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सकै ईश थंम ज्ञान ध्यान धरत हिये चाहि जी ॥ सत्य साँच श्री निवास आदि

पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७१ ॥

राम नाम परम धाम शुद्ध बुद्ध निराकार बेशुमार सर्वर को काहि जी ॥ सुथिर चित्त भगत हित्त भेष धर्यो हरनाकुश हर्यो नख विदार जी ॥ शंख चक्र गदा पद्म आपि आप कियो छद्म अपरंपर पारब्रह्म लखै कौन ताहि जी ॥ सत्त साँच श्रीनिवास आदि पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७२ ॥

पीत वसन कुंद दसन प्रिया सहित कंठ माल मुकुट शीश मोर पंख चाहि जी ॥ बे वज़ीर बड़े धीर धर्म अंग अलख अगमखेल किया आपणे उछाहि जी ॥ अकथ कथा कथी नजाय तीन लोक रह्या समाय स्वतेसिद्ध रूप धर्यो शाहन के शाह जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदिपुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥

चौपाई।

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो ॥ कलि कलेश तन माहिं मिटावो ॥ सिमरो जासु विश्वंभर एकै ॥ नाम जपत अनगिनत अनेकै ॥ वेद पुराण सिमृत सुधाक्षर ॥ कीने राम नाम इक अक्षर ॥ किणका एक जिस जीय बसावै ॥ ताकी महिमा गनी न आवै ॥ कांछी एको दर्श तिहारो ॥ नानक उन सँग मोहिं उधारो ॥ २७४ ॥

प्रभुके सिमरन रिद्ध सिद्धनौनिधि ॥ प्रभुकेसिमरन ज्ञान ध्यान तत्व बुद्धि ॥ प्रभु को सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभुके सिमरन विनशे दूजा ॥ प्रभु के सिमरन तीर्थ अस्नानी ॥ प्रभु के सिमरन दरगाहि मानी ॥ प्रभु के सिमरन होय सुभला ॥ प्रभुके सिमरन सुफल फला॥ सेसिमरहिं जिन आप सिमराये॥नानकताके लागों पाये

प्रभु को सिमरैं सो पर उपकारी ॥ प्रभु को सिमरैं तिन सद प्रभु बलिहारी ॥ प्रभु को सिमरैं सो मुख सुहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन सुख विहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन आत्मा जीता ॥ प्रभु को सिमरैं तिन निर्मल रीता ॥ प्रभु को सिमरहिं तिन अनँद घनेरे ॥ प्रभु को सिमरहिं बसहिं हरि नेरे ॥ संत कृपाते अनुदिन जाग ॥ नानक सिमरन पूरे भाग ॥ २७६ ॥

जहिं मात पिता सुत मीत न भाई॥ मन ऊहां नाम तेरे संग सहाई॥ जहिं महा भ्यान दूत यमदलै॥ तहिंकेवल नाम संग तेरे चलै॥ जहिं मुशकल होवै अति भारी॥ हरि को नाम छिनमाहीं उधारी॥ अनिक पुरश्चर्ण करत नहींतरै॥ हरिको नाम कोटि पाप परिहरै॥ गुरुमुख नाम जपहु मन मेरे॥ नानक पावहु सुख घनेरे

जिहिं मारग के गिने जाहिं न कोसा॥ हरि का नाम ऊहां संग तोसा॥ जिहिं पैंडे महा अंध गुबारा॥ हरि का नाम संग उज्यारा जहां पंथ तेरा को न स्यानू॥ हरि का नाम तहां नाल पछानू जहिंमहा भ्यान तत बहुघाम॥ तहिंहरि के नामकी तुमऊपरछाम॥ जहां तृषा मन तुझ आकरषै॥ तहिं नानक हरि हरि अमृत वरषै॥

हरि हरि जन के माल खजीना॥ हरि धन जन को आप प्रभु दीना॥ हरि हरि जनके ओट सतानी॥ हरि प्रताप जन अवर न जानी॥ ओत प्रोत जन हरि रसराते॥ शुन्न समाधि नाम रस माते आठ पहर जन हरि हरि जपै॥ हरि का भगत प्रगट नहिं छपै॥ हरि की भगति मुक्ति बहु करे॥ नानक जन संग केते तरे॥ २७९॥

जापताप ज्ञान सभध्यान॥ षट्शास्त्र सिमृत व्याख्यान॥ योग अभ्यास कर्म धर्म क्रिया॥ सकल त्याग वन मध्ये फिरया॥ अनिक प्रकार किये बहु यत्ना॥ पुण्य दान होमे बहु रत्ना॥ शरीर कटाय होमे कर राती॥ व्रत नेम करे बहु भांती॥ नहीं तुल्य राम नाम बीचार॥ नानक गुरुमुख नाम जपिये इक बार॥ २८०॥

सकलपुरुष में पुरुष प्रधान॥ साधु संग जाका मिटै अभिमान॥ आपन को जो जानै नीचा॥ सोऊ गिनिये सभते ऊँचा॥ जाका मन होय सकल की रीना॥ हरि हरि नाम तिन घट घट चीना॥ मन अपने ते बुरा मिटाना॥ पेखे सकल सृष्टि साजना॥ सूख दूख जन सम दृष्टेता॥ नानक पाप पुण्य नहिं लेपा॥ २८१॥

निरधन को धन तेरो नाउँ॥ निथावें को नाम तेरा थाउँ॥ निमाने को प्रभु तेरो मान॥ सकल घटां को देवहु दान॥ करन करावन हार स्वामी॥ सकल घटां के अंतरयामी॥ अपनी गति

मति जानहुँ आपे ॥ आपन संग आप प्रभु राते ॥ तुमरी अस्तुति तुमते होय ॥ नानक अवर न जानत कोय ॥ २८२ ॥

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म ॥ हरिको नाम जप निर्मल कर्म ॥ सकल क्रिया में उत्तम क्रिया ॥ साधुसंग दुर्मति मलहरया ॥ सकसउद्यम में उद्यम भला ॥ हरि का नाम जपहु जिय सदा ॥ सकल वानी में अमृत वानी ॥ हरिको यश सुन रसन बखानी ॥ सकल थान ते सो उत्तम थाउँ ॥ नानक जिहिं घट बसै हरि नाउँ ॥ २८३ ॥

जिहिं प्रसाद धर ऊपर सुख बसहिं ॥ सुत भ्रात मीत वनिता संग हँसहिं ॥ जिहिं प्रसाद पीवहिं शीतल जला ॥ सुखदाई पवन पावक अमला ॥ जिहिंप्रसाद भोगहिं सभरसा ॥ सकल समग्री संग साथ बसा ॥ दीने हस्त पावँ कर्ण नेत्र रसना ॥ तिसहिं त्याग अवर संगरचना ॥ ऐसेदोष मूढ़ा अंधव्यापे ॥ नानक काढ़ि लेहु प्रभुआपे ॥

आदि अंत जो राखनहार ॥ तिससों प्रीति न करैगवाँर ॥ जाकी सेवा नवनिधि पावै ॥ तासों मूढ़ा मन नहिं लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ताको अंधा जानत दूरे ॥ जाकी टहल पावै दरगहि मान ॥ तिसहि विसारै मुग्ध अजान ॥ सदा सदा इह भूलनहार ॥ नानक राखन हार अपार ॥ २८५ ॥

रत्न त्याग कौडी सँग रचै ॥ साँच छोड झूठ सँग मचै ॥ जो छडना सो स्थिर कर माने ॥ जो होवन सो दूर परानै ॥ छोड़ जाय तिसका श्रम करै ॥ संग सुहाई तिस परिहरै ॥ चंदन लेप उतारै धोय ॥ गरदभ प्रीति भसम सँग होय ॥ अंधकूप में पतित विकाल ॥ नानक काढ लेहु प्रभु दयाल ॥ २८६ ॥

संग सहाई सो आवै न चीत ॥ जो बैराई तासों प्रीत ॥ बलुआ के गृह भीतर बसै ॥ आनँद केलि माया रँग रसै ॥ दृढ कर मानै मनहि प्रतीत ॥ काल न आवै मूढे चीत ॥ वैर विरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ विकार महा लोभद्रोह ॥ याहूजुगति विहाने कईजन्म ॥ नानक राखि लेहु आपन कर कर्म ॥ २८७ ॥

तुम ठाकुर तुम पहि अरदास ॥ जीउ पिंड सब तुमरी रास ॥

तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी कृपा में सूख घनेरे ॥ कोय न जानै तुमरा अंत ॥ ऊंचे ते ऊंचा भगवंत ॥ सकल समग्री तुमरे सूत्रधारी ॥ तुमते होय सो आज्ञाकारी ॥ तुमरी गति मति तुमहीं जानी ॥ नानक दास सदा कुरवानी ॥ १८८ ॥

मिथ्या तन धन कुटुंब सवाया ॥ मिथ्या हौं मैं ममता माया ॥ मिथ्या राज यौवन धन माल ॥ मिथ्या काम क्रोध विकराल ॥ मिथ्या रथ हस्ती अश्व वस्त्रा ॥ मिथ्या रंग संग माया पेख हँसता ॥ मिथ्या द्रोह मोह अभिमान ॥ मिथ्या आपस ऊपर करत गुमान ॥ अस्थिर भगति साधु की शरण ॥ नानक जप जप जीवै हरि के चरण ॥

मिथ्या श्रवणपर निंदा सुनहिं ॥ मिथ्या हस्तपर द्रव्यको हरहिं ॥ मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिया रूपाद ॥ मिथ्या रसना भोजन अन्न स्वाद ॥ मिथ्या चरण पर विकार को धावहिं ॥ मिथ्या मन पर लोभ लुभावहिं ॥ मिथ्या तन नहिं पर उपकारा ॥ मिथ्या वास लेत विकारा ॥ बिन बूझे मिथ्या सब भये ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लये ॥

विरथी शाकत की आरजा ॥ सांच विना कहिं होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तन अंध ॥ मुख आवत ताके दुरगंध ॥ विन सिमरन दिन रैन बिर्था विहाय ॥ मेघ विना ज्यों खेती जाय ॥ गोविंद भजन विन विरथे सब काम ॥ ज्यों कृपण के निरर्थ दाम ॥ धन्य धन्यते जन जिहिं घट बस्यो हरि नाउँ ॥ नानकताके बलबल जाउँ ॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मन नाहिं प्रीत मुखों गढ़ लावत ॥ जानन हार प्रभु प्रवीन ॥ बाहर भेष न काहू भीन ॥ अवर उपदेशै आप नहिं करै ॥ आवत जावत जन्मै मरै ॥ जिसके अंतरवसै निरंकार तिसकी सीख तरै संसार ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उंन जन चरण पराता ॥ २९२ ॥

मिथ्या नाहीं रसना परस ॥ मनमें प्रीति निरंजन दरस ॥ पर त्रिया रूप न पेखै नेत्र ॥ साधु की टहिल संत संग हेत ॥ कर्ण न सुनै काहूकी निंदा ॥ सभते जानै आपन को मंदा ॥ गुरु प्रसाद विषया परिहरै ॥ मनकी वासना मनते टरै ॥ इंद्रीजित पंच दोष ते रहित ॥ नानक कोट मध्ये कोऊ ऐसा अपरस ॥ २९३ ॥

कई कोटिराजस तामस सात्विक॥कई कोटि वेद पुराण सिमृत अर सासत ॥ कईकोटि कीये रत्न समुंद ॥ कई कोटि नाना प्रकारजंत ॥ कई कोटि कीये चिर जीवे ॥ कई कोटि गिर मेरु स्वर्ण थीवे ॥ कई कोटि यक्ष किन्नर पिशाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत शूकर मृगाच सभते नेरे सभते दूर ॥ नानक आप अलिप्त रह्या भरपूर ॥ २९३॥

छिनमेंनीच कीटकोराज ॥ पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जांका दृष्टि कछु न आवे ॥ तिस ततकाल दहि दिशि प्रगटावे ॥ जाको अपनी करे बखशीश ॥ ताका लेखा न गिने जगदीश ॥ जीउ पिंड सभ तिसकी रास ॥ घट घट पूरण ब्रह्म प्रकास ॥ अपनी बनित आप बनाई ॥ नानक जीवे देख बडाई ॥ २९६ ॥

जिसके अंतर राज अभिमान ॥ सो नर्के पाती होवत श्वान ॥ जो जाने मैं योवन वंत ॥ सो होवत विष्टा का जंत ॥ आपस को कर्मवंत कहावे ॥ जन्म मरण बहु योनि भ्रमावे ॥ धन भूमि का जो करै गुमान ॥ सो मूरख अंधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिसके हिरदय गरीबी बसावै ॥ नानक इहां मुक्ति आगे सुख पावै॥

धनवंता होय कर गर्बावे ॥ तृण समान कछु संग न जावै ॥ बहु लशकर मानुष पर करै आश ॥ पल भीतर ताका होय विनाश सभते आप जानै बलवंत ॥ छिनमें होय जाय भसमंत ॥ किसे न वदे आप अहंकारी ॥ धर्मराय तिस करै खुआरी ॥ गुरुप्रसाद जांका मिटै अभिमान ॥ सो जन नानक दरगाहि पर्मान ॥ २९७ ॥

नाहिं कछु जन्मैं नाहिं कछु मरै ॥ आपन चलित आपही करै ॥ आवन जावन दृष्ट अनदृष्ट ॥ आज्ञाकारी धारी सभसृष्ट ॥ आपे आप सकल में आप ॥ अनिक जुगति कर थाप्योथाप ॥ अविनाशी नाहीं कछु खंड ॥ धारन धार रह्यो ब्रह्मंड ॥ अलख अभेव पुरुष प्रताप ॥ आप जपाये तो नानक जाप ॥ २९८ ॥

टूटी गांढन हार गोपाला ॥ सर्वं जीयां आपे प्रतिपाल ॥ सकल की चिंता जिस मन माहिं ॥ तिसते बिर्था कोई नाहिं ॥ रे मन मेरे सदा हरि जाप ॥ अविनाशी प्रभु आपे आप ॥ आपन कीया कछू

न होय ॥ जैसो प्राणी लोचै कोय ॥ तिस बिन नाहीं तेरे कछु काम गति नानक जप एक हरि नाम ॥ २९९ ॥

मन मूरख काहे बिललाइये ॥ पूर्व लिखे का लिख्या पाइये ॥ दूख सूख प्रभु देवन हार ॥ अवर त्याग तूं तिसे चितार ॥ जो कछु करै सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरै अयान ॥ कौन वस्तु आई तेरे संग ॥ लपट रह्यो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदय माहिं ॥ नानक पत सेती घर जाहिं ॥ ३०० ॥

जाकी लीला की मितिनाहिं ॥ सकल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जन्म क्या जानै पूत ॥ सकल परोई अपने सूत ॥ सुमति ज्ञान ध्यान जिन देय ॥ जन दास नाम ध्यावहि सेय ॥ तिहि गुणमें जाको भरमाये ॥ जन्म मरै फिर आवै जाये ॥ ऊंचनीच तिसके अस्थान ॥ जैसा जनावे तैसा नानक जान ॥ ३०१ ॥

नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेष करहि इक रंग ॥ नाना विधि कीनो विस्तार ॥ प्रभु अविनाशी एकंकार ॥ नाना चरित करे छिन माहिं ॥ पूर रह्यो पूरन सभ ठाहिं ॥ नाना विधि कर बनत बनाई ॥ अपनीकीमत आपेपाई ॥ सभघट तिसके सभ तिसके ठाउँ ॥ जप जप जीवै नानक हरि नाउँ ॥ ३०२ ॥

अपने जन का परदा ढाके ॥ अपने सेवक की सिरपर राखै ॥ अपने दास को देय बड़ाई ॥ अपने सेवक को नाम जपाई ॥ अपने सेवक की आप पति राखै ॥ ताकीगति मति कोय न लाखै ॥ प्रभु के सेवक को कोई न पहूंचे ॥ प्रभु के सेवक ऊंच ते ऊंचे ॥ जो प्रभु अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दहि दिशि प्रगटाया ३०३ ॥

नीकी कीरी में कल राखै ॥ भसम फरै लशकर कोटि लाखै ॥ जिसका श्वास न काढत आप ॥ ताको राखत देकरहाथ ॥ मानस यत्न करत बहु भांति ॥ तिसके कर्तब विरथें जात ॥ मारै न राखै अवर न कोय ॥ सर्व जिया का राखा सोय ॥ काहे शोच करो रेप्रानी ॥ जप नानक प्रभु अलख विडानी ॥ ३०४ ॥

निर्गुणआप सगुण भी ओही ॥ कलाधारज्ञिन सकलीमोही ॥ अप

ने चरित प्रभु आप बनाये ॥ अपनी कीमत आपे पाये ॥ हरि बिन दूजा नाहीं कोय ॥ सर्व निरंतर एको सोय ॥ ओत प्रोत रम्या रूप रंग ॥ भये प्रकाश साधु के संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ३०५ ॥

संग न चालै तेरे धना ॥ तू क्या लपटाहिं मूर्ख मना ॥ सुत मीत कुटुंब अरु वनिता ॥ इनते कहो तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माया विस्तार ॥ इनतेकहो कवन छुटकार ॥ अश्व हस्ती रथ असवारी ॥ झूठादंभ झूठ पासारी ॥ जिन दीये तिस बुझै न बिगाना ॥ नाम बिसार नानक पछताना ॥ ३०६ ॥

गुरु की मति तू लेह अयाने ॥ भगति विना बहु डूबे स्याने ॥ हरि की भगति करो मन मीत ॥ निर्मल होय तुम्हारो चीत ॥ चाण कमल राखो मन माहिं ॥ जन्म जन्म के किल्मिष जाहिं ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ सुनत कहत रहत गति पावो ॥ सारभूत सत्य हरि को नाउँ ॥ सहज सुभाय नानक गुण गाउँ ॥ ३०७ ॥

साजन संत करो यह काम ॥ आन त्याग जपो हरि नाम ॥ सिमर सिमर सिमर सुख पावो ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ भगति भाव तरिये संसार ॥ बिन भगति तन होसी छार ॥ सर्व कल्याण सुख निधि नाम ॥ बूडत जात पाये विश्राम ॥ सकल दूख का होवत नास ॥ नानक नाम जपो गुण तास ॥ ३०८ ॥

प्रभु बखशिंद दीन दयाल ॥ भगत वत्सल सदा कृपाल ॥ अनाथ नाथ गोविंद गुपाल ॥ सर्वघटां करतप्रतिपाल ॥ आदिपुरुष कारण भर्तार ॥ भगत जना के प्राण अधार ॥ जो जो जपै सोहोय पुनीत ॥ भगति भावलावै मनहीत ॥ हमनिर्गुणीयार नीचअजान नानक तुमरी शरण पुरुष भगवान ॥ ३०९ ॥

सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पाये ॥ एक निमिष हरिके गुण गाये ॥ अनिक राज भोग बडाई ॥ हरि के नाम की कथा मन भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सुकरनी शोभाधनवंत ॥ हिरदय वसै पूर्ण गुरु मंत ॥ साधु संग प्रभु देहु निवास ॥ सर्व सूख नानक प्रकास ॥ ३१० ॥

आप कथै आप सुननेहार ॥ आपहिं एक आप विस्तार ॥ जां तिस भावै तां सृष्टि उपाये ॥ आपणे भाणे लये समाये ॥ तुमते भिन्न नहीं कछु होय ॥ आपन सूत सब जगत परोय ॥ जाको प्रभुजी आप बुझाये ॥ सच्च नाम सोई जन पाये ॥ सो समदरशी तत्व का बेता ॥ नानक सकल सृष्टि का जेता ॥ ३११ ॥

जीव जंतु सब ताके हाथ ॥ दीन दयाल अनाथ को नाथ ॥ जिस राखै तिस कोय न मारै ॥ सो मूआ जिस मनों बिसारै ॥ तिस तज अवर कहां को जाय ॥ सबसिर एक निरंजनराय ॥ जीय की जुगत जाके सब हाथ ॥ अंतर बाहर जानो साथ ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ ३१२ ॥

पूरे गुरु का सुन उपदेश ॥ पारब्रह्म निकट करपेख ॥ श्वास श्वास सिमरो गोविंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आश अनित्य त्यागो तरंग ॥ संत जनां की धूरि मन मंग ॥ आप छोड़ वेनती करो ॥ साधु संग अग्नि सागर तरो ॥ हरिधन के भर लेहु भंडार ॥ नानक गुरु पूरे नमस्कार ॥ ३१३ ॥

राग रामकली ।

जग दाता सोई भक्त वच्छल तिहुं लोयजी ॥ गुरु शब्द समावये अवर नजानेकोयजी ॥ अवरो न जाने शब्दगुरुके एक नामध्यावहे॥ प्रसाद नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥ आया हकारा चल्लन वारा हर राम नाम समाइया ॥ जग अमर अटल अतोल ठाकुर भक्ति ते हर पाइया ॥ हर भाण गुरु भाया गुरु जावे हर प्रभु पास जी ॥ सतगुरु करे हर पै वीनती मेरी पैज राखो अरदासजी ॥ पैज राखो हर जनहिं केरी हर देहु नाम निरंजनो ॥ अंत चल दियां होय बेली यमदूत काल निखंजनो ॥ सतगुरु की वेनती पाई हर प्रभु सुनी अरदास जी ॥ हर धार कृपा सतगुरु मिलाया धन्य धन्य कहे शाबाश जी ॥ मेरे सिख सुनो पुत्त भाईहो मेरे हर भाणा आउ मैं पासजी ॥ हर भाना गुरु भाइया मेरा हर प्रभु करे शाबासजी ॥ भक्त सतगुरु पुरुष सोई जिस हर प्रभु भाना भावये ॥ आनंद अन-

हद् बजें बाजे हर आप गल मेलावये ॥ तुसी पुत्त भाई परवार मेरा मन वेखो कर निरजासजी ॥ धुर लिख्या परवाणा फिरे नाहीं गुरु जाय हरि प्रभु पास जी ॥ सतगुरु भाणे आपणे वह परवार सदा इया ॥ मत मैं पिच्छे कोई रोवसी सो मैं मूल न भाइया ॥ मित्त पहिजे मित्त बिगसै जिस मित्तकी पैज भावये ॥ तुसीं वीचार देखो पुत्त भाई हर सतगुरु पैनावये ॥ सतगुरु परतक्ष होंदे वह राज आप टिकाइया ॥ सब सिख बंधप पुत्त भाई रामदास पैरीं पाइया ॥ अंते सतगुरु बोल्या मैं पिच्छे कीर्तन करो निर्वाण जी ॥ केशो गुपाल पंडित सद्दो हर हर कथा पढ़ै पुराण जी ॥ हर कथा पढ़िये हर नाम सुनिये बेवान हर रंग गुरु भावये ॥ पिंड पत्तल किरया दीवा फुल्ल हर सर पावये ॥ हर भाइया सतगुरु बोल्या हर मिल्या पुरुष सुजानजी ॥ रामदास सोढी तिलक दीया गुरु शब्द सच्च नीशानजी ॥ सतगुरु पुरुष यह बोल्या गुरु सिखां मन्न लई रजायजी ॥ मोहरी पुत्त सन्मुख होइया रामदासहिं पैरौं पाय जी ॥ सभ पवै पैरीं सतगुरु केरी जित्थे गुरू आप रख्या ॥ कोई कर बखीली निभै नाहीं फिर सतगुरु आन निवाइया ॥ हर गुरुहिं भाना दई वड़ियाई धुर लिख्या लेख रजाय जी ॥ कहे सुंदर सुनो संतो सभ जगत पैरी पाइया३१४

इति श्रीग्रंथसाहिबके पद संपूर्णम् ।

राग कान्हरा ।

ल्यावो मैया मोहिं चंद खिलौना ॥ लाख योजन पर चंद वसतहै कैसे आवै लाला नंदजीके भौना ॥ जल का थार भर लाई नँदरानी लीजो श्याम तुम चंद खिलौना ॥ जल में हाथ डारे नंदनंदन हिल चंद हँसे श्याम सलोना ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरश को खेल कियो अचरज मन भौना ॥ ३१५ ॥

राग देश ।

रूखड़ी न खाइयो स्वामी रूखड़ी ना खाइयो ॥ हाथ हमारे घिरत कटोरी अपना बांटा लेजाइयो ॥ दौड़े दौड़े जात स्वामी रोट

ड़ियां मुख माहीं ॥ हमतो दौडे पहुँच न सोकें मेल लेहु गोसाईं ॥ घट घट बासी सर्व निवासी पल में भेष बँटाया ॥ कूकर ते ठाकुर ह्वै प्रगटे नामदेव दर्शन पाया ॥ ३१६ ॥

एक भरोस जानकी वरको ॥ बस प्रभु धाम नाम भज मुख कर लीला दृग उर शारँग धर को ॥ श्रवण कथा शिर नाय स्वामि पद कारज राम जहांलग करको ॥ भाल तिलक भुज अंक बाण धनु तुलसी दास विभूषण गर को ॥ कर्म योग वेदांत सांख्य मन तत्व विचार निरक्षर क्षर को ॥ ज्ञान विराग त्याग तप संयम सब फल सार भजन रघुवर को ॥ नव निधि आठ सिद्धि नाना सुख त्याग आश विश्वास अपरको ॥ वैजनाथ बलि जाउँ सुयश सुन सुरतरु कर रघुनाथ कुंवरको ॥ ३१७ ॥

कबित्त ।

करीहै गरीबीतो बिभीषणने राज पायो रावण ने करी खुदी खोई खूबी जान की ॥ ध्रुव ने गरीबी कै अटल पद राज पायो केशी कंस छेद्यो सुध नारही गुमानकी ॥ द्रौपदीगरीबी करी नगन न होन पाई पचि हारे कौरौ देख लीला भगवान की ॥ गरीबी औ बंदगी की चारों वेद अस्तुति करें कहै को गरीबी यह बीबी है जहान की ३१८

राग कान्हरा ।

दीनबंधु दीनों की हरतेथेपीर ॥ अबतो मैं जाना सोयो मध्य क्षीर ॥ वहां पर जो बैठेहो लाकरके ध्यान ताते बिसारीहै तारन कि बान ॥ पौरुष पुराना कि बूढ़े भये ॥ सभी बात छोडी कि मौनी भये ॥ अगर तुमने यह बात समझी नहीं ॥ कहूं गरुड उडकर गयोहै कहीं ॥ ताते हो बैठेहो बाहन बगैर ॥ मेरी बेर एती क्यों लाई है देर ॥ रावण को मारा सो बल है कहां ॥ समुद्र को बांधा सो दल है कहां ॥ कुंभकर्ण मारा किसी तौर से ॥ कुफर लोग कहते कि प्रभु और से ॥ औरन को ताराथा होकरके शेर ॥ मेरीबेर क्यों एती लाई है देर ॥ ३१९ ॥

राग मलार ।

मेरे ही आंगन बरसें ॥ रिम झिम बरसें मेरे आंगन मिलबे को जियरा तरसें ॥ चतुर सुघर सुंदर बालम को नित चाहत दरसें ॥ नजरू के प्रभु सुधहूं न लीनी कहि न जात कछु हरसें ॥ ३२० ॥

राग रेखता ।

हम होरहीं अधीन सखी श्याम नहीं आये ॥ सुनतेही टेर धाये गज डूबते बचाये ॥ अबमेरी बार स्वामी कछु काम ने भुलाये ॥ प्रह-लाद को उबारचो नरसिंह रूप धारचो ॥ शत्रुओं को घेरा दल में भक्तों के काज सारचो ॥ नारायण वाकी महिमा काहू न पार पाये ॥ नंदजू के बहुत प्यारे सिर मोर मुकुट धारे ॥ ३२१ ॥

कवित्त ।

जात पात न्यारी करी हमरी तुम्हारी नाथ केवट को कर्म एक नीके कर निहारिये ॥ तुमतो उतारत भव सागर परमार्थ कर सरिता उतार हम कुटुंब दिन गुज़ारिये ॥ नाई ते न नाई लेत धोबी ना धुलाई लेत देके उतराई मोहूँ जात ना बिगारिये ॥ पेशा अधमाई जान आपको उतार दीना तिहारे घाट आऊं नाथ मोहूं को उतारिये॥

ग़ज़ल ।

श्रीकृष्णचंद्र महराजने गोकुल का आना छोड़ दिया ॥ वंशी वट यमुना तट का अब ठीक ठिकाना छोड़ दिया ॥ निशदिन प्यारी व्रज वासिन वै तट पर आना छोड़ दिया ॥ मिश्री मेवा भोग लगावें माखन खाना छोड़ दिया ॥ कंस मार भये अब राजा धेनु चराना छोड़ दिया ॥ रास मंडल सब भूल गई हँसना इतराना छोड़ दिया ॥ निशदिन व्रज वन के पंछी पानी अरु दाना छोड़ दिया ॥ अबतो प्रीति करें कुबरी सँग वंशी का बजाना छोड़ दिया ॥ खुशरंग प्राण रहें अब कैसे मुखड़ा दिखलाना छोड़ दिया ॥ ३२२ ॥

राग पीलो ।

लालन प्यारो झूलत वट संकेत ॥ संग झूलत वृषभान नंदिनी

ललिता झूटे देत ॥ रमक झमक झूलत पिया प्यारी जो चाहें सुख लेत ॥ कुंभनदास लालन गिरिधर की सखियां बलैयां लेत ॥३२४॥

राग कान्हरो ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ॥ रस भरे अधरन मधुभरे नैना गात सुकुमार घटा छारही रूपकी ॥ सुंदर कपोलन छूट रही अलकाँ माथे कोटीको अधिक बन्योरी आली ॥ नंददास की छबीली सी अति प्यारी श्याम मनोहर पायो सुहागरी ॥ ३२५ ॥

मेरे मन बस गयो सीताराम ॥ जटा मुकुट मुनि भेष धर्‍यो है कठिन धनुष लिये सारंगपान ॥ गौर वर्ण सिया जनक नंदनी रघुवर हैं सुंदर घन श्याम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी विहरत हैं लक्ष्मण और राम ॥ आसानंद कहे कर जोरी चौंसठ घडी भजले आठों याम ॥ ३२६ ॥

टुक देई ग्वारन मक्खन कुडे ॥ थोडा देनीयां बहुता मंगदा छिक्यों लाहुंदा ढक्कन कुड़े ॥ नौं लख धेनु लवेरी घर नंददे अजे भी आउंदा तक्कन कुड़े ॥ त्रैलोकीदा ठाकुर मंगदा मखनेदा की रक्खन कुडे ॥ मीरांके प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित्त रक्खन कुडे ॥ ३२७ ॥

राग कल्याण ।

बांके सांवरिया ने घेरी मोहिं आनके ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने मारग रोक्यो मेरो आनके ॥ वृंदावन की कुंज गली में मुरली बजावे आन तान के ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर प्रीत पुरातन जान के ॥ ३२८ ॥

राग पीलो ।

व्रजवासी कन्हैयालाल तुमको मेरी स्वामी हो वंदना ॥ राधा कहाथ मेंहदी सोहे लालन के हाथ हो कंगना ॥ प्यारी के माथे बिंदी सोहे लालन के मस्तक हो चंदना ॥ चलोरी सैयो रल देखन जाइये अलकां वालेदा दर्शन पाइये जहां बसें नंद को नंदना ॥

प्यारी ने इक टोना कीना अलकांवाले नूं बस कर लीना गूंद ल्याई मालन हो बंगना ॥ ३२९ ॥

मान मनायो राधा प्यारी ॥ मानसरोवर मान कर बैठी कुंजन कुंज लता री ॥ दोऊ कर जोरे करत विनती संग लिये ललितारी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु तुमरे दरश को मैं तो शरण तिहारी ॥ ३३० ॥

राग कान्हरो ।

मेरो यासों लाग लाग रह्योरी मोहन मीत कन्हैया ॥ इस गिरिधर की या छबि ऊपर बेर बेर बल गैया ॥ सुंदर वदन कमल दल लोचन अलकां अलक छबैया ॥ कृष्णदास प्यारी वश मोहन मुरली के सरस बजैया ॥ ३३१ ॥

मेरी गति जनकी जीवन राम ॥ चौरासी को भटकत आयो कहीं न पायो विश्राम ॥ यही लोक परलोक हमारा चरण कमल नित ध्यान ॥ जन माधौ के तन मंदिर में विराजत सीताराम॥३३२॥

राग परज ।

राघोजू महराज सांवल बनरा ॥ अजब बन्यो तिहारी अँखियन कजरा दशरथ सुत महाराज ॥ रत्न मौर केसरिया बागो और विविध मणि साज ॥ रामसखे लख रूप अटक मन तन मन रही न सम्हार ॥ ३३३ ॥

राग बिहाग ।

ऐसी मोसों कीनी री मा नंद को छैल अतिही ढीठ ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने आज ॥ संग की जो हमरी पलमें बिछोड़ दीनी भुज भर मोहूँ गर लगावे और कहा कहूं मोहिं आवत लाज ॥ जब हौं करी पुकार इधर उधर कर निहार लपट झपट करके गह्यो मोकों डर देन लाग्यो ॥ भूषण बिखार दीने हौं तो बेहाल आली भलोरी भलो थारो व्रज को राज ॥ ३३४ ॥

राग जैजैवंती ।

कारी रैन दुख दैन पल पल तो सतावे मैन कारे बिन भैयां

कारी करो मोरी कारी ॥ आप कारे निशि कारी कांधे कामरिया कारी कोकिला पुकारी कारी पवन बंध डारी ॥ कारे भुवंग डसी रोम रोम विष राची विरहों की मरोर डाढी हाय हाय करन लागी ॥ सूरदास यों विचारी कारे कृष्ण हो बिहारी कारेजी सों कहियो जाय बंदना हमारी ॥ ३३५ ॥

ऐसी तो व्याकुल बाजी जियामें उपाधि लागी ऐसी आवत मनमें लीजिये वनवासरी ॥ नादकी सरोद सुनी सुध बुध न रही मोरी बांस की बँसुरिया सोतो भरन लागी श्वास री ॥ कुश हूं की लाज गई लाज हूं की लाज गई सूख गयो माँस मेरो निकस आई पाँसुरी ॥ ढूंढके कटाय डारूं सभी बांस वनके उपजेंगे न बांस फेर बाजेगी न बांसुरी ॥ ३३६ ॥

राग पीलो।

मोहना चलो चलो कदमकी छैयां रे कदमकी छैयां ॥ मोरे डारो गलेमें बैयां ॥ राधा रानीजी तोरे हार हिये में सोहे री हिये में सोहै ॥ थारी चितवन मेरा मन मोहै ॥ मोहना तूतो यमुना निकट भयो ठाढ़ोरे निकट भयो ठाढ़ो ॥ मोसे नेहा लगायो अति गाढ़ो ॥ राधा रानीजी तूतो यमुना निकट भई ठाढ़ी री निकट भई ठाढ़ी ॥ मोरी लागी प्रीति अति गाढी ॥ मोहना तोरे कान कुंडल गल माला रे कुंडल गल माला ॥ दोऊ नैना बने विशाला ॥ राधा रानीजी तूतो बड़ी ब्रजकी सखियां री ब्रजकी सखियां ॥ मोरी लागी निमानी अँखियां ॥ मोहना तूंतो चंद्रसखीको प्यारो रे सखीको प्यारो ॥ नंदजूको राज दुलारो ॥ ३३७ ॥

राग सोरठ।

महाराज धनधनकुबरी ॥ इस कुबरीने जादू कीना मेरा श्याम वश करलीना ॥ सोलांसौं गोपी सुंदर इकते इक कहांगई उनकी बुधरी ॥ ईख छोड़ प्रभु आक चचोरत करीम कहत वृषभानुकी सुतारी ॥

राग कान्हरा।

गही दाम श्याम मथन देत नाहिं दहियां ॥ यशुदा दधि मथन

लागी लालजीको भूख लागी महरी थन उमग आये दूध धार बहियां ॥ नंदलाल मथनी गही नंदनारि मगन भई देख देख लालजीको प्रेम आंशू बहियां ॥ श्याम सुंदर गोद लिये अंग अंग मग्न भई दीनी जब चूँची मुख आनँद हो रहियां ॥ जाको शिव ध्यान लावें ब्रह्मा नहिं पार पावें धन्य धन्य मयाराम गोकुलकी सैयां ॥ ३३९ ॥

राग सोरठ ।

रघुनाथ नाथ मेरे ॥ मैं वर्ण न सकों गुण तेरे ॥ प्रथम मीन रूप प्रभु धारयो ॥ शंखासुर गर्व निवारयो ॥ ब्रह्माको वेद जो दीने ॥ सब काज सुरनके कीने ॥ प्रभु कच्छप रूप बनायो ॥ मंद्राचल पीठ धरायो ॥ शूकर नरहरि प्रभु धारा ॥ प्रहलाद भक्त उबारा ॥ तुमहो बलि वामन स्वामी ॥ तुम परशुराम अभिमानी ॥ तुम हो रघुवंश उजागर ॥ भये कृष्ण नंदजूके नागर ॥ बुध ळंक स्वरूप तुम्हारा ॥ सभ संतनके रखवारा ॥ अद्भुत गति नाथ तुम्हारी ॥ भज रामसखे बलिहारी ॥ ३४० ॥

राग कान्हरा ।

गाइये महारानी श्री राधे ॥ जाको नाम नेक मुख निकसत विनशत कोटि कोटि अपराधे ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शिव विरंचि रहे लाय समाधे ॥ याहीते ब्रजराज युगल वर लागो रहत नेह निशिदिन राधे ॥ ३४१ ॥

राग देश ।

श्रीवृंदावन वास दीजिये यही हमारी आशा है ॥ यमुना तीर छाय माधुरी जहां रसिकों का बासाहै ॥ सेवा कुंज मनोहर सुंदर इक रस बारोंमासा है ॥ ललित किशोरीको दिल बेकल युगल रूप रस प्यासा है ॥ ३४२ ॥

राग सोरठ ।

मोहिं लगेरी श्यामके नयन बान ॥ मानो तिरछी कर भौंहैं कमान

भई घायल विसर गयो खान पान ॥ वाके मोर मुकुट गर गुंज माल॥ अधरन पै वंशी रसाल ॥ नेक सुख न रही वाकी सुनत तान ॥ वा दिनते नहीं मेरे दिलको चैन ॥ वाकी साँवरी सूरत बसी मोरे नैन ॥ कहे सूरदास कब मिलोगे कान्ह ॥ ३४३ ॥

... देखो आली ठाढे कदमकी छैयां ॥ नँदनंदन वृषभानु नंदिनी दोउ देरहे गलबैयां ॥ भूल गयो उन गगर उठाइबो विसर गई इन गैयां ॥ ललित किशोरी प्रीति बढ़ी अति दोउ जन लेत बलैयां ॥

बसंत ।

देखके जाना फाग मोहन प्यारे वंशी वारे ॥ पीत वसन सब सखी बनी हैं सब विध पीत सुभाग ॥ कंचनकी पिचकारी बनी हैं भरी रंग रस भाग ॥ उडत गुलाब अबीरके बादर गावत बहु विध राग ॥ नाचत सकल उमंग प्रेम रस बढ्यो जात अनुराग ॥ दास गुलाब देहु चतुराई निज पद में अनुराग ॥ ३४५ ॥

राग कान्हरा ।

मैं तुमरी शरणागत प्यारे ॥ परमानंद मुकुंद परातम दीना नाथ सकल भय टारे ॥ दामोदर अच्युत अघनाशक पाप हरन तव नाममुरारे ॥ व्यापक एक अखंड अगोचर नाम न रूप प्रकाशन वारे॥दास गुलाब बसो चित हमरे चार पदारथ याहि मँझारे॥३४६॥

ग़ज़ल ।

दिला यक दम नहो गाफिल य दुनिया छोड़ जाना है ॥ बगीचे छोड़ कर खाली जमीं अंदर समाना है ॥ वदन नाजुक गुलों जैसा जो लेटे सेजफूलों पर ॥ होगा एक दिन मुरदा यही कीड़ों ने खानाहै ॥ न बेली होयगा भाई न बेटा बाप ना माई ॥ क्या फिरता है सैदाई अमल ने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज करते हैं मुनादी चार कुंटों में ॥ महल्ला ऊचियों वाले जहां को छोड़ जाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो पड़ी जो माड़ियां खाली ॥ गये सभ छोड़ यह फानी दगाबाजी क बाना है ॥ गलत फहमी यहै तेरी

नहीं आराम इस जग में ॥ मुसाफर बेवतन है तू कहां तेरा ठिकाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो न खेशों में कोई तेरा ॥ जनो फरजंद सभ कूकें किसे तुझको छुड़ाना है तमामी रैन गफलत में गुजारें चारपाई पर ॥ गुजारें रोज खेलों में वृथा आयू गवाना है ॥ य होंगे सर बसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल ॥ य दोजख बीच वद अमली से तन अपना जलाना है ॥ ३४७ ॥

राग देश ।

माल जिन्होंने जमा किया बनजारे हारे जाते हैं ॥ भाई बंधु कुटुंब कबीला दावा करकर खाते हैं ॥ जभी मुसाफर मारा जायगा सभी अलग हो जाते हैं । तू क्या जाने साईं का रस्ता बाटर मार ग बहुत से हैं ॥ इस रस्तेके बीच मुसाफर अकसर मारे जाते हैं ॥ ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौबारे में ॥ जागत रहना सोना नाहीं हाथ पसारे जाते हैं ॥ अग्नि पलीता राज दंड अरु चोर मूछ ले जाते हैं ॥ राम नाम पर कभी न दीना माल जवाई खाते हैं ॥

भाई बंधु संबंधी सारे सभी अलग होजाते हैं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते हैं ॥ ३४८ ॥

जरा टुक सोच ऐ गाफिल क्या दमका ठिकानाहै ॥ निकल जब यह गया तन से तो सभ अपना बिगाना है ॥ मुसाफर तू है और दुनिया सरा है भूल मत गाफिल ॥ सफर परलोक का आखर तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिल को अब नाहक ॥ नजावे संग कुछ हरगिज यहीं सभ छोड जानाहै ॥ न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना ॥ बखूदी गौर कर देखा तो मतलब का जमानाहै ॥ रहो लग याद में हकके अगर अपनी शफा चाहो ॥ वली दुनिया के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ ३४९ ॥

राग माँझ ।

दुनिया झूठी ते साईं सच्चा पर दुनिया प्यारी लग्गे ॥ सच्च छोड के झूठ ब्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिंहिदे बिच दुशमन

होवन ओह किचरक ताईं तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलसन जो दुनिया दे ठग्गे ॥ ३५० ॥

दुनिया झूठी ते लोकभी झूठे सब झूठे दावे करदे ॥ सेई दुनिय जेढी साथ नजावै तिस पिच्छे लड लड मरदे ॥ खास खजाना अंदर तेरे ढूँढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदीं न मिलनी जो दुनिया दे बरदे ॥ ३५१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां राह न छडड़े कदाईं ॥ आप छड्डे तां सब कुछ पावैं ओड़क एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकेंदे तूं पच्छोतासीं जद ताण न रहसी बाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सवेरे नहीं रोसे देदे छाढाईं ॥ ३५२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तैं अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्म करलै झबदे पकड़ वहीं कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी वल्लों रब्ब नहीं तेरे नाल रोसा ॥ ३५३ ॥

अज्जदा कम्मन घत्तीं कलहते की जानां कलह केहा ॥ संतां नाल गुजरान जो थींवे भावें खाके बेहा त्रेहा ॥ हुणादियां भुल्लयां नूं ठौर न कोई ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरैन हुण ढिल्ल न करिये तैंनू लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३५४ ॥

राग बिहाग ।

टुक बूझ कवन छिप आयाहै ॥ इक नुकते में जो फेर पडा तब अैन गैन का नाम धरा जब मुरशद नुकता दूर किया तब एनों एन कहाया है ॥ तुसीं इलम किताबां पढ़देहो केहे उलटे मैने करदेहो बेमूजब ऐवें लडदेहो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ दूई दूर करो कोई शोर नहीं हिंदू तुरक सैयद कोई होर नहीं सब साधु लखो कोई चोर नहीं घट घट में आप समायाहै ॥ ना मैं मुल्लां ना मैं काजी ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी बुलहा शौह नाल लाई बाजी अनहद शब्द बजाया है ॥ ३५५ ॥

राग गौरी ।

राम भज गूजरिये ऐसा दही बरोल ॥ मन कर मटुकी तन कर मथानीया पालै प्रेमकी डोर ॥ राम नाम का माखन कढले छाछ छाछ दे छोड़ ॥ यह वेला तेरे हाथ न आवे खरचेंगी लाख करोड ॥ दुनीदास बड़भागन गुजरी साध संगत ना छोड ॥ ३९६ ॥

ग़ज़ल ।

कल्ह हवस इस तरह से तरगीब देतीथी मुझे ॥ खूब मुल्के रूम है और सर जमीने रूस है ॥ इतने में इबरत पुकारी इक तमाशा मैं तुझे ॥ चल दिखाऊं तू जो सैदे आज का महबूस है ॥ मैंने जानाथा कि लेजावेगी बुस्तां की तरफ ॥ या किनारे आवे खुर्रम या बियाबां की तरफ ॥ ले गई इकबारगी गोरे गरीबां की तरफ ॥ जिस जगा जानो तुमन्ना हरतरह मायूस है ॥ मरकदे दोतीन दिखलाकरलगी कहनेमुझे॥यह सिकंदरहै य दाराहै य कैकाऊसहै॥ यह वो है जिसको कि हफ़्त अकलीम का उतरा था ताज ॥ ये वो है जिनका फरिश्तों से न मिलताथा मजाज ॥ पूछ तू इनसे कि मालो मिकनते दुनिया से आज ॥ कुछ भी इनके पास गैर अज़ हसरतो अफसोस है ॥ ३९७ ॥

राग आसा ।

चले गये सभ अजलके मुँह में खुश्की रही ना तरी रही ॥ सभ निशान मिट गये तिन्हांदे नाम न नामावरी रही ॥ यह दो-दिन जीवन दुनिया का क्या शाह अमीर वजीर बने ॥ कंगाल करी गुजरान जगत में दोदिन चरचा खरी रही ॥ पल छिन में कूच नगारा है कोइ जुलम करो कोइ अदल करो ॥ जब मौत ने आकर पकड़ लिया तब मनकी मनमें धरी रही ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री ।

मिल लेहुनी सहेलडियोनी मैं साहुरड़े घर जाणानी ॥ एथेरहन किसीदा नाहीं चलना वारो वारी ॥ चंगी चंगेरी पकड़ मंगाइया मैं

किसदी पनिहारी ॥ जिन्हांदे पल्ले वारी खर्च घनेरा सोइयो शौह नूंप्यारी ॥ बाबल मेरे दाज रंगाया इक चोली इक चुन्नी ॥ दाज बाबलदा देखके मैं आंसू भर भर रुन्नी ॥ इक विछोड़ा मैनूं सैयां वाला मैं डारों कुंजविछुन्नी ॥ रंगरंगीले सूलां मोढे चहुंवल पैंदियां झोकां ॥ एथेदे दुख नाल चलनगे मैं अगले किसनूं सौंपां ॥ सास ननंद मैंनूं मारन ताने बनी मुसीबतमैंनूं ॥ बुल्लेशाह दातार सुनींदा वेला अटक न जाइये ॥ अदल करे तां ठौर न कोई फजलों बखरा पाइये ॥ ३८९ ॥

पढ़ले इशक किताब मेरा बीबा हुण केही तोबा तोबा ना कर मेरा यार ॥ सांवें देकर लवें सवाये डेउढेयां चक लेखे लाये कूड किताबां सिर पर चाइयां एहो तेराइतबार ॥ डूबीयां नदीयां तुला पुराना सिरपर गठरी भारी ॥ अमलां वाले लंघ २ जांदे मैं रहगई औगुनहारी ॥ ताल्हूड़े तर वन्ने लग्गे डुब्बे जिन्हां सिरभार ॥ हत्थी सी महिंदी चोटी सी माखन कपड़े रंगालये तेले ॥ स्याही गई सुफ़ेदी आई लगड़ा इशक कवेले ॥ दिलदा महरम कोई न मिल्या जेढ़ा साथ करे उसवेले ॥ कर कर सिदक वड़ां विच वेढ़े रब्ब मिलावे मेरा यार ॥ सुपनेदे अंदर जम्म्या जाया सुपने पलना पाया ॥ सुपनेदे अंदर चोला सीता सुपने पाड़ हंढाया ॥ सुपनेदे अंदर व्याह कराया सुपने लै गल लाया ॥ बुल्लाशाह दिवाना होया पल पल करे दीदार ॥ ३९० ॥

राग कान्हरा।

सँभलके नेहु लगावे दिलबर आखर नूं पछतावेगा ॥ जांदा यार न आवे फेर ओथे बेपरवाहियां ढेर ओथे दहल खलोबन शेर बहिंदा तूं भी जावेगा ॥ कललां दे घर पासे ओथे आवन मस्त प्यासे ओथे भर भर देंदे कासे तेरा जीउ ललचावेगा ॥ इकनांदे पोश लहाईंदे इक आरयां नाल चराईंदे इक सूली चाइ चढ़ाई दे तेरादिल कतरावेगा ॥ बुल्या गैर शरा नाहो सुखदी नींद न भर भर सो ऐनल हक्क तूं रिदय बगो चढ़ सूली ढोला गावेगा ॥ ३९१ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी फरियादहै महाराज ॥ यहतो मायासिंहनी रोक रहीहै चारों धाम ॥ मेरे भागनेकी ठौर नहीं संकट से लेहु निवाज ॥ हाथ खड्ग लिये यम खड़ा घड़ी दो को लेगा मार ॥ मेरा साहिब मचला हो रह्या मैं किहिं दर करों पुकार ॥ हमसों कारज बिगड़्या प्रभु तुमहीं लेहुगे सँवार ॥ जे मैं मनों बिसार्‌या प्रभु तूं न अंत बिसार ॥ ईहांतो दुःख बहुतेरे हैं किसनूं सुनावां रोय ॥ गरीबजन की विनती मैं फिर न आऊं इस लोय ॥ ३६२ ॥

राग गौरी ।

उड़रे परवेरू दिन तो रहगया थोड़ा ॥ उड़त्यां उड़त्यां जन्म गवाँया जहां शहर तहां डेरा ॥ चुन चुन कंकर महल बनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियां रैन बसेरा ॥ शाह हुसैन फ़कीर साईंदा जंगल होगया डेरा ॥ ३६३ ॥

राग धनाश्री ।

धृग धृग नर नारी नाम विना ॥ नाम विना हरिके भजन विना ॥ विधवा नारि जैसे करत शिंगार ॥ शोभा न पावे बिन भरतार ॥ तेग विना कैसे रजपूत ॥ नाम विना कैसे अवधूत ॥ जिस कुल में नहिं हरिको दास ॥ सो कुल जानो साधो भूत पिशाच ॥ कहे कबीर सुनो अटल प्रताप ॥ तन मन धन संतन परवार ॥ ३६४ ॥

राग प्रभाती ।

एक घड़ी मैं नाम न जप्या एवें सारी उमर विहानी ॥ रल मिल सैयां पनिये नूं चलियां जिन्हां ने भरया सिर पर धरया मैं तां कुचज्जी डोले हत्थ नलाया खाली घड़ा लेकै घर नूं सिधानी ॥ रल मिल सैयां तिंजन लाये जिन्हा कत्ते दाज रँगाये मैंतां कुचज्जी चरखे तंद नपाया ना मेरा पेटा ना मेरी तानी ॥ रौले में आये रौले में चल्ले समझ कुचज्जिये तूं होजा स्यानी ॥ बुल्लेशाह रलमिल सैयां पत्तन मल्ले जिन्हांने मल्ले कर्म सवल्ले इकतां लंघ गैयां कर कर हल्ले मै तां खड़ी हां विच्च न मानी ॥ ३६५ ॥

माये खेलन दे दिन चारनी फेर खेलन तेरे किन आवना॥ चरखा भन्न परोटरे जाहूं पूनियां रुलियां बजार॥ कोटी सुरेश ब्रह्मा बीत गयेहैं सरग अपार॥ रावण भरत मानधातासे राजे मरे हजार॥ जे सुर नर मुनि देखन आवें गिरेंगे सभ सिर भार॥ चंद सूर सरिता पति नाशें हमरो कौन बिचार॥ दास गुलाब विराग भयो मन झूठा सभ संसार॥ ३६६॥

राग देश।

भाई तैंने सितम गुजारा रे॥ दिल से राम बिसारा॥ बालापन औ तरुण अवस्था जब नहिं राम सँभारा॥ वृद्ध भया कफ बायने घेरा थकत भया हंकारा॥ महल माडियां छिनमें छीने बांध घाट पर डारारे॥ शाह से सभ भये बटेऊ लुटन लगा घर बारा रे॥ धरे ढके को पूछन लागे कुटुँब कबीला सारा रे॥ मर्म कर्म की कोइ न पूछे दगाबाज संसारारे॥ नंगे पैर कटीला रस्ता ज्यों खांडे की धारा रे॥ विश्वामित्र महबूब साहिब को भजले बारंबारा रे॥ ३६७॥

राग कालिंगडा।

जोतूं राम नाम चित धरतो॥ अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो॥ नफा होत साधकी संगत मूल गांठ ते न टरतो॥ तंदुल घृत सँवार हरजूको संत परोसो करतो॥ यमको त्रास सभी मिट जातो भगत नाम तेरो परतो॥ सूरदास वैकुंठ पंथ में कोउ न फेंट पकरतो॥ ३६८॥

राग गौरी।

श्यामकी वंशी ना दूंगी॥ श्यामकी वंशी पाई जो बनमें राख छपाऊं अपने तनमें कुवरी सोच करेगी मनमें कहु कुवँर मैं क्या नकरूंगी॥ हटो सखी मोहिं जिन समझावो नहीं तो विष मैं खाय मरूंगी॥ अपनेतनको घायल करूंगी एककी लाख करोडकहूंगी॥ प्रीति छिपाई छिपत न मोहन अब लागे कुवरी सँग सोहन तुमतो लागे हमको कोहन हर के द्वार पुकार करूंगी॥ इत ते आवत

उत चमकावत इत उत कछु दर्श दिखावत जैसा नाच नचाया हमको तैसा नाच नचा छोडूंगी ॥ मुराद अलीकी सांची बात ना कोई छल बल ना कोई घात प्रभुको पाया अपने हाथ कहो सखी मैं क्या करूंगी ॥ ३६९ ॥

गज़ल ।

दरश अपना जो तुम रघुवर दिखादोगे तो क्या होगा ॥ जो तुम भानु सो कुल भानु तेरा भानुका सा मुखडा ॥ सकुचा है मन कमल मेरा खिलादोगे तो क्याहोगा ॥ अबइस संसार सागर में मेरी नैया जो बहती है ॥ निकट तटके जो तुम रघुवर लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रजनी में मुझे आते बड़ेस्वपने ॥ सोयेगफलतमें मुझको तुम जगादोगे तो क्या होगा ॥ लगीहै प्यास खुशदिल को तेरे दर्शन की है भगवन् ॥ बरसाकर स्वाती की बूंदें मिटा दोगे तो क्या होगा ॥ ३७० ॥

राग होरी ।

मनमोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने ॥ तूअलबेली आन गाम की अबहीं आई है गोने ॥ सिखवन देहों सिखावन लेहों पग जिन धरत अगोने ॥ अबकी होरी तेरे बगर में केते कौतुक होने ॥ दया सखी या ब्रज में बसिके नेह निभायो कौने ॥ ३७१ ॥

राग कान्हरा ।

भूर भाग भाजनभई ॥ रूपराशि अवलोकि बंधु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ कहा री करूं किहि भांति सराहूं नहिं करतूत नई ॥ बिन कारण करुणाकर रघुबर किहिं किहिं गति न दई ॥ करिबहु विनय राख उर मूरति मंगल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति लोकहिं प्रभु गुण गणत गई ॥ ३७२ ॥

कवित्त ।

पढ़े वेद सारे जप तप व्रत धारे करे गंगा औ प्रयागन की सेवा मन लायके ॥ कंचन और नारी गज बाजी असवारी दान करे कुरुक्षेत्र माहिं पंडित को पायके ॥ करे हयमेध कन्या दान सर्वस्व देत

श्रोत औ समारत की नीकी विधि भायके ॥ ईश नाम गान सम होत ना गुलाब अंग वेद औ पुरान व्यास कही समुझायके ॥३७३॥

गज़ल ।

सोच कर चलना मुसाफिर यां ठगों का गाम है ॥ इस सरा के बीच आके बहुत से मारे गये ॥ अब कदम बढ़ाके रखना होने वाली शामहै ॥ पांचोचोर बसें नगरीमें सोते को लूटाकरें ॥ जागना तुमको मुनासिब पल्ले तेरे दामहैं ॥ दोस्त सभ दुश्मन तुम्हारे इनसे बचना तमाम है ॥ बाजीगर पुतली नचावे काढे अपना काम है ॥ यादोपति जजमान हमारे तिनके घर जाना हमें ॥ जाति का ब्राह्मण गावे खुशदिल जिसका नाम है ॥ ३७४ ॥

दीजिये दर्शन मुझे वंशी के बजानेवाले ॥ दूधकेखानेवाले माखनके चुरानेवाले ॥ गजने टेर करी द्वारकासेधाये ॥ सभामें द्रौपदीके चीर बढ़ानेवाले ॥ चौंक सुपने में पड़ी देख राधे मोहन को ॥ डार गलबैयां गये छोड जगानेवाले ॥ कुब्जा को राज दिया हमको बैराग बताया ॥ क्या और नहीं हैं संत भसम रमाने वाले ॥ ३७५ ॥

राग जंगला ।

नामको आधार तेरे नामको आधारा ॥ मेरी मेरी करत जात दिन ही रैन सारा ॥ नजर भरके देख प्राणी धुंधका पसारा ॥ यमुना में गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा ॥ कालीनाग नाथ लेनो कृष्ण भयो कारा ॥ राजा बलि के द्वारे ठाढे वामन रूप धारा ॥ बीस भुजा रावन की छिन में काट डारा ॥ मथुरा में जन्म लीनो गोकुला सिधारा ॥ कंसको निरवंस कीनो मोर मुकुटवारा ॥ ३७६ ॥

गोविंदा नहीं गाया तैंने गाया क्या नर बावरे ॥ अहिरन की चोरी करें करें सुई का दानरे ॥ कोठे चढ़के देखन लागे आवत कहां विमानरे ॥ महल चुनाये माड़ी चुनाई और चुनाया दलानरे ॥ इक दिन तुम पर ऐसा होगा पड़े रहो मैदानरे ॥ माटी का पुतला बनाया धरचो आदमी नामरे ॥ आपही बैठे राह मुसाफर कहा बसाया गामरे ॥ पतिव्रता भूखी मरें वेश्या चावें पानरे ॥ साधू

खावें सूखे टुकड़े माल मसखरे खानरे ॥ पाथर की तैं नाव बनाई उतरा चाहें पाररे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो डूबेगा मँझधाररे ॥

राग कालिंगड़ा ।

मुखड़ा क्या देखे दर्पन में ॥ तेरे दया धर्म नहिं मन में ॥ आंब की डाल कोयलिया बोले सुअना बोले वन में ॥ घर बारी तो घर में राजी फ़क्कर राजी वन में ॥ ऐंठा धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुल-फन में ॥ गली गली की सखी रिझाई दाग लगायो तन में ॥ पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहे छिन में ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो यह क्या चढ़ेंगे रन में ३७८ ॥

राग जंगला ।

श्रीरामचंद्र दशरथ सुत नंदन यह पद भज मन मोरा रे ॥ बालापन में खेल गँवाई ज्वानी योवन जोरा रे ॥ वृद्ध भयो चिंता तब उपजी अब क्या करत निहोरा रे ॥ पांचों चोर समझ कर पकड़ो चढ़ो प्रेमरस घोड़ा रे ॥ ज्ञान खड्ग से मार गिरावो यह मुजरा नर तोरा रे ॥ भूला भूला कहा फिरत है जग में जीवन थोरा रे ॥ धरे रहें सभ रंग महल तेरे जंगल होत बसेरा रे ॥ भव सागर की धार कठिन है वहां तोरा नहिं मोरारे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो समझ देख मन भोरारे ॥ ३७९ ॥

राग देश ।

ब्रजराजके सखि इश्क का मेरे दिल में तीर समागया ॥ वो जो दर्द था सो बना रहा न बताके कोई दवा गया ॥ मुझे आज वह ब्रजमोहना मिला नंदरायके द्वार पै ॥ नई नई तरह की वो सैन से पिया प्यारा जादू चला गया ॥ मैं तो ढूंढती उन श्यामको चहुँ ओर ब्रज कुंजन गली ॥ पिया हँसके बंशी बजा बजा नई सिरसे नेह लगा गया ॥ इक पल में होश हवास को लिया लूट कुंज बिहारीने दिखलाके बांकी सी अदा मन हरके वनको चला गया ॥ कहँ रह सके भला इंद्रमणि मेरे दिल को सबरो करार अब ॥ नई छैल श्याम लचक २ मुझे बांकी झांकी दिखा गया ॥ ३८० ॥

रेखता देश ।

वो झलक जो मोर मुकुट कीथी मुझे लखके श्याम लखा गया ॥ बसी जबसे चितवन चित में आ चितचोर ही में समागया ॥ वो सरूप रूप था जलवागर लजे कोटि रवि शशि हष्टिकर ॥ भौहैं कुटिल शोभा श्यामकी दृग देख मृग शरमागया ॥ कानों में कुंडल की दमक दो नागिनी छूटीं अलक ॥ विसियर है विष में विष भरा डसा मन मेरा लहरा गया ॥ कटि पीत पट शिर पै मुकुट तिरछी लटक निर्तत मटक ॥ मुरली मधुर अधरन धरी रस भीनी तान सुनागया ॥ इच्छा शरण आया तेरी रख लाज अब गिरिधर मेरी ॥ मनमें कसक बाकी रही सुपने में दरश दिखागया ॥ ३८१॥

राग काफी ।

बागों ना जारे तेरी काया में गुलजार करनी । क्यारी बोयकेरे रहनी कर रखवार ॥ दया पोद सूखे नहींरे क्षमा शील जल डार ॥ मन माली प्रबोध केरे संयम की कर बार ॥ दुर्मत काग उडाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ मनगुलाब चितके बड़ारे फूलरही फुलवार ॥ मुक्त कली खिल रही सदा गूंथ पहरे क्यों न हार ॥ लोभलहर गहरी नदीरे लख चौरासी धार ॥ निगुरे निगुरे बहगयेरे संत उतर गये पार ॥ अष्ट कमल दल ऊपररे माया अपरंपार ॥ कहत कबीरा चित चेतलेरे आवागौन निवार ॥ ३८२ ॥

बसोजी म्हारे नैनन में सियराम ॥ जनकनंदनी जगत वंदनी रघुनायक घनश्याम ॥ कनक मंडप तले रत्न सिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निजधाम । तुलसीदास प्रभुकी छबि निरखत लजत कोटि शत काम ॥ ३८३ ॥

कवित्त ।

बैठिये न जहां तहां संगति कुसंगति में कायर के संग शूर भागै पै भागै ॥ फूलकी सुवास जैसे वासना में भोय रही कामिनीके

संग काम जागै पै जागै ॥ अरे अरे घर बसे घर ही घर कैसो बैरागी काम क्रोध लोभ मोह पागै पै पागै ॥ काजर की कोठरी में कैसहू चतुर घुसो एक रेख काजर की लागै पै लागै ॥ ३८४ ॥

ग़ज़ल ।

हमन हैं इश्क के माते हमन को दौलतां क्यारे ॥ नहीं कछु मालकी परवा किसीकी मित्रतां क्यारे ॥ हमनको खुश्क रोटी बस कमरको इक लँगोटी बस ॥ सिरे पर एक टोपी बस हमन को इज्जतां क्यारे ॥ कबा शाला वजीरों को जरी जरबफ्त अमीरों को हमन जैसे फकीरों को जगत की नेमतां क्यारे ॥ जिन्होंके सुख न स्याने हैं उन्हींको खलकमानेहैं ॥ हमन आशिक दिवानेहैं हम न को मजलसां क्या रे ॥ कियो हम दरद का खाना लियो हम भेसका वाना ॥ वलीबस शौक मन माना किसीकी मसलतांक्यारे ॥३८५॥

लावनी ।

मोहिं बिसरत नहिं सुध सनम घडी पल तेरी ॥ श्रीकृष्ण खबर ना लई आज तक मेरी ॥ तेरे इशक में सहा श्याम रंज बहुतेरा ॥ कूचे में देते हरदम सौसौ फेरा ॥ नहिं लगा पता कहुँ यार ठिकाना तेरा ॥ किसजगा लगाया हमें बतलाना डेरा ॥ हम चाकर होरहे बदिल निगाह कित फेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ कर प्रीत बढ़ा परतीत कहा डरतेहो ॥ उलफ़त का कदम पाछे को कहा धरतेहो ॥ आंखों में असर जादू का विकल करतेहो ॥ मारे नयन अदा तिरछी सों कतल करतेहो ॥ मेरे मार विरह शमशीर किया तन ढेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ दिन रैन तसव्वुर ही में गुज़र सब जाती ॥ दर्शन बिन देखे नैन धड़कती छाती ॥ काबू से निकल गये कृष्ण बड़े तुम घाती ॥ तकदीर बिना तदबीर काम नहिं आती ॥ क्या विपरीत कृष्ण तुम भोले पन पर गेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ सहताहूं कृष्ण सब रंज सबर नहिं मुझको ॥ अब सहूं कहांतक कृष्ण सुनाऊं तुझको ॥ कथ गावत कवि प्रभु दयाल ख्याल रँग रँग

को ॥ हर वक्त भरोसा राख कृष्णके संगको ॥ अब दे हमको दीदार करी क्या देरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ३८६ ॥

राग भैरवी ।

सो जन मस्ताना मस्ताना जिन पायो पद निर्वाना ॥ मगनहोय चढ गयो गगन पै अधर धार धर ध्याना ॥ लगन लाय विसराय विश्व को अनहद शब्द पछाना ॥ पर्म सुन्न में पर्चा हूआ चेतन चरण समाना ॥ निर्गुणसेज तेजकी नगरी यहि अविगतअस्थाना ॥ लक्ष कला लिये चंद्र प्रकाशे कोटिकला लिये भाना ॥ जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥ बरसे पदम दामिनी दमके हर हीरों की खाना ॥ गम से दूर अगम से आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥ खुलगयो कमल नवल बर पायो नित प्रति अमृत पाना ॥ अमरकंद दुख भंज व्यापी जिस घर भर्मभुलाना ॥ स्तुति निंदा दोऊ त्यागो खोजो पद निर्वाना ॥ हर्ष शोक से रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछाना ॥ पांच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना ॥ नितानंद महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना ॥३८७॥

राग आसावरी ।

रेमन समझ सोच विचार ॥ ढार पांसा साधु संगत फेर रसना सार ॥ राख सतरह सुन अठारह नरद पांचो मार ॥ डारदे तू तीन काणे चतुर चौक निहार ॥ मानुषा यह देह फिर नहिं आवे बारंबार सूरदास गोविंद भजन बिन चले दोउ कर झार ॥ ३८८ ॥

राग जंगला ।

जन्म तेरो बातों में बीत गयो ॥ तैंने कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥ पांच बरस का आला भोला अबतो बीस भयो ॥ मकर पचीसी माया कारण देश विदेशगयो ॥ तीसबरसकी अबमति उपजी लोभ बढे नित नयो॥माया जोरी लाख करोरी अजहुं न तृप्त भयो॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कंठ रह्यो ॥ साधु कि संगति कबहुँ न कीनी बिरथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलब का लोभी झूठा ठाठ रच्यो॥कहतकबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूलगयो ॥

राग परज ।

दूर रहो रघुबीर खरे मम नावन नांहि सो पाद छुवावो ॥ दारन में पुनि शैलन में कछु अंतर होय तौ नाथ बतावो ॥ मानुष चूरन नाव लगाय सो दीनदयाल न काज गवांवौ ॥ राजकुमार पखार लेहों पद तब मम नावनके ढिग आवो ॥ ३९० ॥

राग होरी ।

झटक्यो मोरा चीर मुरारी॥गागर शीश रंग की झटकी वेसर मुड गई सारी ॥ रेशम बंद वसनके टूटे झड़गइ कोर किनारी ॥ ब्रज में अनोखा खिलारी ॥ लेकर चीर कदम चढ़ बैठे हौं जल माँझ उघारी ॥ संगकी सखी मेरी बगर परोसन कर विनती सब हारी अरज मानो गिरिधारी ॥ अगर सुने मोरी बगर सुनेगी सास सुने देवे गारी ॥ कंत सुने मेरा धूम मचावे और सुने सखी सारी ब्रज वसना मोहिं भारी ॥ ३९१ ॥

नाचत देदे तारी ग्वाल मोहना संग खरे ॥ इत ब्रजनारी भरत पिचकारी उडत अबीर गुलाल कंचन कलश भरे ॥ इत मुरली डफ बाज रहीहै बीन पखावज ताल ॥ कृष्णदास प्यारी रँग छिड-कत लपट झपट ब्रजबाल लालन लाल गरे ॥ ३९२ ॥

रँगीली रघुवर की होरी ॥ तुम देखोरी भर नैन रैन दिन प्रेम रंग बोरी ॥ छबीली खेलें दोउ जोरी ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन बोलें होहोरी ॥ उमँग नहिं मनमें कछु थोरी ॥ उडत अबीर गुलाल लाल भइ अवध नगर खोरी ॥ उमड धुन चली चहूँ ओरी ॥ डफ मृदंग मुहचंग झांझ झालर कल घनघोरी ॥ लोक कुल लाज कान छोरी ॥ गावत गारि धमार सभी मिल रही न कछु चोरी ॥ देव देखन आये दौरी ॥ छाये व्योम विमान गान कर वरषैं रँग ओरी ॥ मगन भई अवध नगर गोरी ॥ रत्नहरी बलिहार राम छबि निरखत तृण तोरी ॥ ३९३ ॥

प्रिया प्रेम नगर में आज खेल ले होरी॥ हरियश अतर अबीर उडाले कायाकी करले झोरी ॥ श्वास श्वास हरिनाम सुमिर ले सीख

मानले मोरी ॥ मानस जन्म अमोलक पायो थिर ना रहत बहोरी॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो लागी प्रीत न तोरी ॥ ३९४ ॥

राग खमाच ।

छबि पर वारियां प्यारे तेरी मैं छबि पर ॥ कोटि मदन दशरथ के कुवँरकी मारत अलकां कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजन युत लागत अँखियां प्यारियां ॥ राम सखे दृग ओट न करिहों करों न छिन भर न्यारियां ॥ ३९५ ॥

राग देश ।

सखीरी मोहन मुसकाने लागी सोई पै जाने ॥ रातमोहन सुपने में देखे शिथिल भये मोरे प्राने ॥ विरहों हूक लागी पसरी में नैन नीर बरसाने । सखी जिउरा घबराने ॥ हौं जो चढीथी अपनी अटा पर वह झट निकस्यो आने ॥ मंद हँसन मुख देख कृष्णको क्या हौं कहे बखाने ॥ सखी कोइ पीर न जाने ॥ हौं घायल मृगी ज्यों घूमत परी धरणि पर आने ॥ मंत्र यंत्र औषध घिस लाये बिसरे सभी उपाव सखी कोई लोग स्याने ॥ और उपाव नहीं कोउ दूजो श्याम मिलावो आने ॥ जानतहैं पिया पीर हमारी सूरदास के प्राण सखी कोइ और न जाने ॥ ३९६ ॥

राग ध्रुपद ।

सोलहूं शृंगार वारों नील मेघन सों कारो आवत प्रमोद बन सजनी यह को है ॥ चंदन सुगंध पान फूल तेल जुलफन अंजन लगाये नैन सैनन कर जोहै ॥ बंदन कसन भूषण मोती मणि माणिक धनुष बाण तरकश लिये करन अतिही सोहै ॥ पाँयन पनहीं लाल साजे जनु काम जाल रामसखे बाँको रूप सभको मन मोहै ॥ ३९७ ॥

शब्द ।

बंदियां नाकर गाफला मत होवे दिलगीर ॥ लोहे बांगर ताइये तेरे गल बिच पैन जंजीर ॥ जां यम आवे पकड़ लेजावे कौन बंधावेगा धीर ॥ आगे तेरा संग न साथी ना भाई ना वीर ।

जे कुछ करें तां छूट सकें नहिं सौह जमांदी पीर ॥ बंदा ढेरी खाकदी कह नानक शाह फकीर ॥ ३९८ ॥

राग बरवा ।

अब मैं अपने रामको रिझाऊं॥नामध्याऊं भजनगुणगाऊं॥ पातपात में साहिबमेरा मुड़ मुड़ शीशनवाऊं ॥ गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं ना कोइ तीरथन्हाऊं ॥ अडसठ तीरथ घटके भीतर तिनही में मल मल न्हाऊं॥ औषध न खाऊं बूटी न लाऊं नाकोइ वैद्यबुलाऊं॥ पूरन गुरू मिले अविनाशी भर्मके पुरजे उड़ाऊं ॥ ज्ञान कटारा कस कर बांधों सुरति कमानचढ़ाऊं ॥ पांचोंचोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊं ॥ योगीहोय न जटा बढ़ाऊं न अंग विभूतिरमाऊं॥जोरँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊं ॥ डाली न छेडूं न पत्ता तोडूं ना कोइ जीव सताऊं॥देहरा न पूजों न देवल पूजों परम ज्योति मिल जाऊं ॥ चंद्र सूरज दोऊ सम कर राखों सुखमन सेजबिछाऊं॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागौन मिटाऊं ॥ ३९९ ॥

शब्द ।

जब पलाश फूलन पर आवै ॥ पात पात कर आप लुटावै काला मुँह कर जगदिखलावै ॥ तबलालन की लाली पावै ॥४००॥

कवित्त ।

की कुछ भेट सुदामे आंदी बीज की पाया धन्ने ॥ बकुलियां दी टिड ब्बाई और चुपाये गन्ने ॥ रोटी उत्ते साग खुलाया छाह पलाई छन्ने ॥ तिन्हां नाल शरी कत केहीं साहिब जिन्हां दी मन्ने४०१

राग भैरवी ।

अंगुरी पै गिरि धारचो गोकुला बचाय लीनी विपति तो सुदामाजू की छिन में मिटाई है ॥ द्रौपदीकी लाज कीनी भरी सभामें न जान दीनी पारथकी भारत में कीनी सहाईहै ॥ जहां जहां भीर परी तहां तहां रक्षा करी कहत कवि मार्कंडे ऐसी होत आई है ॥ बार बार कर पुकार कहों सुनो दीनानाथ मेरी बेर एती देर काहेको लगाई है ॥ ४०२ ॥

सवैया।

लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी भये पर अंत न पाये ॥
सांझ के भोरहिं भोरके सांझहि शेष सदा नित नाम जपाये ॥
ढूंढ फिरे त्रैलोकी में साखी नारद लेकर बीण बजाये ॥
ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाँछको नाच नचाये॥४०३॥

राग तिलंग।

दीनानाथ अब बार तुम्हारी ॥ पतित उधारन विरद जानके बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो युवा विषय रस माते ॥ वृद्ध भये सुध प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुतन तज्यो त्रिया ना तज्यो भ्रात तज तनु ते त्वचा भई न्यारी ॥ श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जल धारी ॥ पलित केश कफ कंठ बरूध्यो कल न पडै दिन राती ॥ माया मोह न छांडै तृष्णा यह दोऊ दुखदाती ॥ अब यह व्यथा दूर करबेको और न समरथ कोई ॥ सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होय सो होई ॥ ४०४ ॥

रेमन मूरख जन्म गँवायो ॥ कर अभिमान विषय सों राच्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार फूल सेमरको सुंदर देख लुभायो ॥ चाखन लाग्यो रुई ऊड़गई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा होत अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन शिर धुन धुन पछितायो ॥ ४०५ ॥

राग देश।

कहां लगाई एती देर ॥ अरे अरे सांवरेरे ॥ हौं गुजराती शिव को उपासी पूजों सांझ सबेर ॥ भक्ति मर्मकी सार न जानों हांसी कराई मेरी ढेर ॥ ऊंचे चढके टेर सुनाऊं अब सुनियो म्हारी टेर ॥ क्या कहीं काज सवाँरे भगतनके क्या निद्रा ने लिये घेर ॥ नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबकी बेर ॥ ४०६ ॥

राग खमाच।

कैसी बँसिया बजाय जादू डारारे ॥ श्रवण सुनत नहिं परत चैन

तन मन धन तुमपै वारारे ॥ बांकी छबि दिखलाई चित चपल चलाई ऐसी बातैं बतलाई मेरा जिया ललचाई कर तिरछी नजर भर मारारे ॥ जाकी मधुरी हँसन मुसकान तकन झमकन झुमकन कर मुरली लसन धर ध्यान दुलारे मन थारारे ॥ ४०७ ॥

राग तिलंग ।

जाग जानी कछु मसलत करलै जांदी रैन विहानी ॥ तेरे कोलों लख चल चल जांदे तैं मन एक न आनी ॥ एक घड़ी हरि भजन न कीता दिसदा काल सिरानी ॥ शाहहुसैन फ़क़ीर साईंदा आखर दुनिया फानी ॥ ४०८ ॥

राग बरवा ।

मन मस्ताइयां छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवें ॥ आगे मंज़लां भारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मनमंगदा बादशाहीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसैन फ़कीर साईंदा मन मुर-शिद विच लभ वो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूंघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयां वे ॥ जे जानां तूं ऐवें करनी मैं मूल न लांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा तीर बनाया मैं आजज़ दे सीने लाया घायल करके मुख छपाया यह घातां किन दसीयां वे ॥ जुलफ़ कुंडल ने घेरा पाया बिछुअर बनके डंग चलाया कहुखां तेरे की हथ आया एह प्रीतां कित्थों सिखीयां वे ॥ मैं अयाणी नेहुड़ा की जाणां तिंजन बैठी मौजां माणां इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा मैं डरदी आख न सकीयां वे ॥ हस रस के मैं लाइयां आपे रोशन होई नूं झिड़कन मापे एस इशक दे बड़े स्यापे तूं भुवा बैठो अखीयां वे ॥ मैं बंदी दा जे तूं साईं कदीं तां आवीं फेरा पाईं मिहर करीं ते मुख दिखलाईं मैं काग उडांदी थकीयां वे ॥ बुल्ले शाह नूं ना तर सावीं करीं अनायत मैं बल आवीं शाह अनायत गल नाल लावीं मैं तेरी हो हो नच्चीयांवे ॥ ४१० ॥

गज़ल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ॥ चैन दिनको रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥ बेवफा हमसे खफा हो जादिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गमदिया हमको सनम् ॥ अब कोई मिलनेकी सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाँछ ॥ ताब जुगनू की कहीं महताब को पाती नहीं ॥ क्या कहें गोकुल क तुमसे हाल बरसाने क हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उलफत में हमेशा गोपियां गातीथीं राग ॥ वह गये जबसे कोई गाती हैं पर भाती नहीं ॥ कानो में मुद्रा गले सेली मले तनुमें विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हमदमको समझाती नहीं ॥ ४११ ॥

कबित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे प्राचीन तो तिहारे हैं ॥ कूर तो तिहारे गुण पूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारे सांचे शूरतो तिहारेहैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं॥४१२॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हूं ते राव कीने विदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरे ते ॥ कूबरी तन हेरे तो सुंदर स्वरूप कीने द्रौपदी तन हेरे तो चीर बाढ़े टेरे ते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी हरनाकुश मारयो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत नामी नर होत गरुड़गामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग धनाश्री ।

जन्म गँवायो ऊआ वाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छाई ॥ धन यौवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराई ॥ लालच लुब्ध श्वान जूंठन ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥ रंचकांच सुख लाग मूढ़ मति कंचन राशि गवांई ॥ सूरदास प्रभु छांड सुधारस विषय परम विष खाई ॥ ४१४ ॥

राग सोरठ ।

नहीं ऐसो जन्म वारंवार ॥ क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे मानसा अवतार ॥ बढ़त पलपल घटत छिनछिन चलत न लागेबार ॥ विरछ के ज्यों पात टूटे लगें नहिं पुनिडार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम औखी धार ॥ सुरत का नर बांध वेड़ा वेग उतरोपार ॥ साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥ दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ४१५ ॥

राग देश ।

कहि न जाय छवि राधावरकी ॥ चटकीली उरमाल विराजे मटकीली गति श्याम सुँदर की ॥ मोती लोल चारु नासा में चंदन खोर आड़ केसरकी ॥ अटकरह्यो मन ललित माधुरी निरख लटक वा मुरलीधर की ॥ ४१६ ॥

रेखता ।

फरजंद नंदजूका मन बीच भामदा ॥ वर पायोहै कहांसे सुंदर सुहामदा ॥ लटकों की चाल चलता प्यारा मेरे आमदा ॥ गल जामा है जरी का कटि काछनी बनी ॥ पीले दुपट्टे वाला बीड़े चबामदा ॥ कुंडल झलकतेहैं दुरुस्त गोशे में ॥ आवाज बांसुरी की शीरीं बजामदा ॥ कांधे कमरिया सोहै गैयां चरामदा ॥ मीर माधो बलिहारी यश तेरा गामदा ॥ ४१७ ॥

राग सिंध ।

दसीयो मोहन किस दानी ॥ आवंदा जावंदा नजर न आवे

अजब तमाशा इसदानी ॥ दधि मेरो खायो मटुकिया फोरी लोभी यह गोरस दानी ॥ मात यशोदा दही बिलोवे माखन लैलै नस-दानी ॥ मीरां के प्रभु गिरिधर नागर लूंलूं दे बिच रसदानी ॥ ४१८ ॥

राग सिंधडा ।

...क्या कहें आलम में हम इन्सान या हैवान थे ॥ खाक थे क्याथे गरज इक आनके महिमान थे ॥ कररहेथे अपना कब्जा गैरों के इमलाक पर ॥ छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन इक उस्तख्वाँ पर जापडा मेरा जो पाउँ ॥ क्या कहें उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाउँ पडतेही गरज उस उस्तख्वाँ ने आह की ॥ अरकहा ज़ालम कभी हमभी तो साहिब जान थे ॥ दस्तो पा जानूँ शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर ॥ देखने को आंख और सुन्नेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनी जबीं नक़्शो नगारे खालो खत ॥ लाल मरवारीद से बिहतर लबो दंदान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाजुक थे पलँग ॥ दिनकी खातर बैठनेको ताक औ ऐवान थे ॥ लगरहाथा दिल कहीं चंचल परीजादोंके साथ ॥ कुछ किसीसे अहद थे और कुछ कहीं पैमान थे ॥ गुलबदन और गुलअजारों से कनारो बोस्ता ॥ कुछ निकालेथे हवस कुछ औरभी अरमान थे ॥ होरहीथी चहचही और मचरहीथी कहकही ॥ साकी औ सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकही चक्कर अजल ने आनकर ऐसा दिया ॥ नतो हम थे न वह सारे ऐश के सामान थे ॥ ऐसी बेरहमी से मत रख पाउँ हमपै ऐ नजीर ॥ ओ मियां हमभी कभी तेरी तरह इन्सान थे ॥ ४१९ ॥

राग पहाड़ी ।

गोविंद लीना मोल ॥ कोई कहै महँगा कोई कहै सस्ता लिया तराजू तोल ॥ ब्रजके लोग करैं सभ चर्चा लिया बजाके ढोल ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावें ढक लिया प्रेम पटोल ॥ जहर प्याला रानाने भेज्या पिया मैं अमृत झोल ॥ मीरा प्रभुके हाथ बिकानी मैं सर्वस दीना घोल ॥ ४२० ॥

राग पीलो ।

ब्रजमोहन आयोरे ग्वारन मिलन चली ॥ सोहनी विरहों विराजेरे शिरपर झूल रही ॥ गल नरमेदा जामेरे मोतियां तनी ओ तनी॥राधे शिर धर मटुकी रे बेचां मैं दूध दही ॥ केहा चेटक लाथोवे भुल गया दूध दही ॥ पुत्र नंदे वाला वे कीता मैं आज सही ॥ लक पेटीया सोहे वे हीरीयां जड़त जड़ी ॥ श्यामा मैं नहीं रहना वे तेरीया ब्रज नगरी ॥ विच मथुरा नगरीया वे कान्हा जगात लई ॥ यश केवल गावेरे चरनी मैं लाग रही ॥ ४२१ ॥

राग पहाड़ी ।

श्यामा तेरी बंशी सितम करेंदी ॥ यंत्र मंत्र जादू टोना पढ़ पढ़ मन वश करलेंदी॥जब सोऊं तो नींद न आवे अँखियाँ जल बरसेंदी ॥ कृष्णदास हित प्रीत रीत वश चरण कमल चित देंदी ॥ ४२२ ॥

राग जंगला ।

आली मोहिं लागत वृंदावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंद जीको ॥ निर्मल नीर बहत यमुनाको भोजन दूध दही को ॥ रत्न सिंहासन आप विराजें मुकुट धरयो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर भजन विना नर फीको ॥ ४२३ ॥

राग रामकली ।

निरख सखी शोभा श्रीराम की ॥ मग्न भई लग्न लागी हीयरा में सुध न रही तन मन धन धामकी॥साँवरे वरण मनके हरण मनासिज मन मोह करण अरुण वरण सुंदर अभिराम की ॥ पीत वसन कुंद दशन मंद हसन लसन फसन अलक कुंडल बर शाम की ॥ रत्न हरी कर विचार पल पल पर प्राण वार छबि निहार दशरथ सुत श्याम की ॥ ४२४ ॥

ग़ज़ल ।

हमन से मत मिलो लोगो हमन खफती दिवाने हैं ॥ खुशी का

राह छोड़ा है कठिन में जा समाने हैं ॥ तजी खिदमत वजीरी की पाई लज्जत फकीरी की ॥ चढ़े किश्ती सबूरीकी फकरेक यह मकाने हैं ॥ हमन दिन रैन रोतेहैं गमों से जान खोते हैं ॥ शूलों की सेज सोतेहैं विरहोंके यह निशाने हैं ॥ हमारा यार ओ जानी पीवे हरि नामका पानी ॥ कि आखर होवना फानी वली रामे समानेहैं ॥

राग पहाड़ी ।

यशोदाजी के द्वारे पर नीमाये मैं बार बार जानीयां ॥ गिरिधर मैंनूं नजर न आवे सौ सौ फेरा पानीयां ॥ लाजकी मारी मैं कुछ नहीं सकदी दूतां थों शरमानीयां ॥ कृष्ण सखी प्यारे दर्शन बाझों कूंज वांगूं कुरलानीयां ॥ ४२६ ॥

राग जंगला ।

रघुवर चरण शरण सुखदायक क्यों न गहो मन मेरे ॥ कोटि जन्म के संचित सगरे पाप विनाशें तेरे ॥ जिन चरणन की शरण गही ते उधरे पतित घनेरे ॥ अजामील गणिका गज गीधन हरिपुर किये बसेरे ॥ जिन चरणन की रेणु परस मुनि पत्नी तरी सबेरे ॥ भालु भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक मिटे कुमतिन के जिन चरणन के हेरे॥रतहरी हम जान भयेहैं इन चरणनकेचेरे॥

राग देश ।

मैंने थारा काई बिगारयो काज ॥ मोसे क्यों रूसे महराज ॥ लोक लाज कुल कान गवाँई तज कुटुंब शरणागत आई कीनी प्रीत नंद के नंदन छाँडत न आई तोकों लाज ॥ कुब्जा कूड कंसकी दासी जां मुख देखत आवत हांसी ऊंच नीच तुमने कछु न विचारी चेरी करी शिरताज ॥ इतनी विनती मानो हमारी जन्म जन्म की मैं दासी तिहारी श्रीब्रजनिधिके कुंज विहारी आन उधारो मोहि आज ॥

राग सिंध ।

आज अति बाढ्योहै अनुराग ॥ पूत भयोरी नंद महरके बड़े बैस बडभाग ॥ दई सबच्छ लच्छ धेनू अरु नंद बढ़ायो त्याग ॥ गुणी

गण बंदी जन सब मांगत पायो अपनो लाग ॥ कूदें ग्वाल मनो रण जीते आनद फूले बाग ॥ गोपी गोप ओप सबके मुख गावत मंगल राग ॥ हरद दूध दधि माखन छिड़कत मच्यो बधैया फाग ॥ परमानंद दास भक्तनके भयो सो परम सुहाग ॥ ४२९ ॥

राग पीलो ।

आज माई गोकुल भयोरी आनंद ॥ रानी यशोमति बालक जायो प्रगट्यो पूरण चंद ॥ ब्रज वनिता सब बन ठन आईं गावत नाना छंद ॥ सूरदास प्रभु पूरण प्रगटे मेट दिये दुख द्वंद ॥ ४३० ॥

राग जंगला ।

कोई असां नाल चल्ले मेरीयो सैयो नी ॥ असां तां मुल्क अडिठड़े नूं जावनां ॥ अडिठड़े देशके महरम नाहीं खर्च नहीं कछु पल्ले ॥ दूर गयां दी खबर न आइया कोई सुनेहड़ा घल्ले ॥ कतने कारन गोहडे आंदे चर्खा मूल न हल्ले ॥ हार सिंगार सभी कुछ देनींहां दस्तां दे देनींहां छल्ले ॥ एथोंदा खटिया एथे रहजानां झाड पल्लू उठ चल्ले॥शाहहुसैन फकीर साईंदा आखर जानां इकल्ले॥

राग पहाड़ ।

हमरी प्रणाम बांके बिहारी को ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडल अलकां कारी को ॥ अधर मधुर धर वंशी बजावे रीझ रिझावे राधा प्यारी को ॥ यह छबि देख मग्न भई मीरां मोहन गिरिवर धारी को ॥ ४३२ ॥

शब्द ।

हर हर हर भज मेरया मनां यह औसर नहिं पावेगा ॥ अधम कर्म ते बाज न आवे बांध्या यमपुर जावेगा ॥ सोईयो तेरे संग चलेगा संत जना भुगतावेगा ॥ गाढ़े काम न कर मेरे जीउड़े फेर जन्म नहिं आवेगा ॥ नाथ नवल गुरु मिहर करे भव सागर तर घर जावेगा ४३३

राग प्रभाती ।

इक रामें नूं नहीं संभालदा ॥ नर देह अमोलक पाइया विशयां

संग लाग गवाँइया चंगा औसर ऐवें तूंटालदा ॥ मिल गोविंद प्रीत नमानिया तेरी जिंद अजाई जानिया भय करिये जमदे जालदा ॥ तेरे शिरपर लेखा लेखिये जग कूड़ पसारा पेखिये सुपने ज्यों बाजी देखिये कुछ तोशा करलै नालदा ॥ हरिनाम गुनाहीं बखूशदा यम संकट तें प्रभु रखदा सच्चा नाथ सुनिहड़ा आखदा तैनूं भय न व्यापे कालदा ॥ ४३४ ॥

आनंद मंगल गावो मोरी सजनी भई प्रभात बीत गई रजनी ॥ उदर निरंतर फूली फुलवारी । तहां मेरी मनसा करे रखवारी ॥ बरखे अमी नाना फल लागे । कही नजाय कछु अचरज वाके ॥ बिरछा एक अमृत फल लागे । पावें गे कोइ संत सभागे ॥ कहत कबीर गूंगे की सैना ॥ सतगुरु शब्द परख कर लैना ॥ ४३५ ॥

भला जागरे सारी रैन बिहानी ॥ जात जन्म अंजली को पानी ॥ घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावे ॥ चंद सूरज तुझे कह समुझावे ॥ पल पल औध घटत नित जावे ॥ गया श्वास कभी हाथ न आवे ॥ वहता पानी तरुवर छाया ॥ छिन छिन काल ग्रसे तेरी काया ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई ॥ भर ज्वानी कछु काम न आई ॥ सतगुरु सेवा यह धन माया ॥ दास कबीर चरण लपटाया ॥ ४३६ ॥

कवित्त ।

सेवक गुणी जनके चाकर चतुरके हैं कविनके मीत चित हित गुण गानी के ॥ सीधन सों सीध महा बांके हम बांकन सों हरी चंद नकद दमाद अभिमानी के ॥ चाहवे की चाह काहूकी न कछु परवाह नेही नेहके दिवाने सदा सूरत निवानी के ॥ सर्वस रसिक के सुदास दास प्रेमिनके सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधा रानी के

सवैया ।

धूत कहो अवधूत कहो रजपूत कहो जुलहा कहो कोऊ ॥
काहूकी बेटी सों बेटा न ब्याहन काहूकी जात बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाके रुचै सो कहो कछुओऊ ॥
मांगके खैबो मजीतको सोयबो लेबेको एक न देबेकोदोऊ ४३८॥

कवित्त ।

लाजको जहाज डूब्यो शीलको समुद्र सूख्यो दयाके खजाने की ताली कोऊ लैगयो ॥ सत्यहू की कोठी लूटी धर्म की धुजाही टूटी पाप घर घर घट घट बीच छै गयो ॥ संतनको दोष कहा होत कोऊ देत नाहीं नाहीं को नकीब घर घर में कह गयो ॥ संत कहैं चेतरे तू चेतरे अचेती नर पुण्य धर्म दया बीज अंश कहूं रह गयो ॥

राग झूलना ।

दुनियाके परपंचों में हम मजा नहीं कछु पायाहै ॥ भाई बंधु पिता माता सुत सबसों चित अकुलायाहै ॥ छोड छाँड घर गाम नाम कुल यही पंथ मन भायाहै ॥ ललित किशोरी आनँद घन सों अब हठ नेह लगायाहै ॥ ४४० ॥

क्या करनाहै संतति संपति मिथ्या सब जग माया है ॥ शाल दुशाले हीरा मोती में क्यों मन भर्मायाहै ॥ माता पिता पुत्र बंधू सब गोरख धंध बनाया है ॥ ललित किशोरी आनँदघन हरि हिरदे कमल बसाया है ॥ ४४१ ॥

राग होरी ।

राधावर खेलत होरी ॥ नंदगामके ग्वाल इते उत बरसाने की गोरी ॥ डफ करताल बजावत गावत केशर कुंकुमघोरी ॥ परस्पर रंग में बोरी ॥ दशहूं दिशान गुलाल घुमंड में काहू कछु लख न परोरी ॥ उचक आय धाय चंद्रावल ललितादिक लै दौरी ॥ गह्यो हरिको बरजोरी ॥ गारी गावत नारी सभी मिल नागरी योवन जोरी ॥ नंदके लाल बड़े रसिया हो करो इनसों बरजोरी ॥ फाग में कौन की चोरी ॥ छीन लई वनमाल मुरलिया पीत बसन लियो छोरी ॥ नागरी वेष बनाय कहत देखो नंदराय की छोरी ॥ बनी छबि काम करोरी ॥ तारी देदे नचावत ग्वालिनि अपनी अपनी औरी ॥ वा दिनकी सुध भूली लला यमुना तट चीर हरोरी ॥ आज यह दाँव परोरी ॥ कृष्णरंग मन भावत फगुवा लेकर बहुत

निहोरी ॥ हौं अधीन वृषभानुसुताके विनय करों कर जोरी ॥ लाज कछु रहीहै न थोरी ॥ ४४२ ॥

सवैया ।

आपनी ओर की चाहें लिखी लिखी जात कथा उत मोहन ओर की ॥
प्यारे दया कर वेग मिलो सही जात व्यथा नहिं मान मरोर की ॥
आपहिं बांचत अंग लगावत अहो किन आनी चिठी चितचोरकी ॥
राधिके मौन रही धर ध्यान औ ह्वैगई मूरति नंद किशोरकी ४४३॥

कवित्त ।

मुनि मख राख्यो मार ताड़का सुबाहु वीर चरण छुवाय जिन शिला तार दीना है ॥ सो कवि रसीले आय मिथिला शहर माहिं नर अरु नारिनको मन हरलीना है ॥ सोई यह सलोने सुकुमार दशरत्थजूके राजत निहार कोटि काम छबि छीनाहै ॥ मेरीमहारानी तीन लोक में प्रमानी सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है ॥

राग झूलना ।

जंगल में अब रमतेहैं दिल बस्ती से घबरातोहै ॥ मानुष गंध न भाती है सँग मर्कट मोर सुहाता है ॥ चाक गरेबां करके दमदम आहीं भरने भाताहै ॥ ललित किशोरी इश्क रैनदिन यह सब खेल खिलाता है ॥ ४४५ ॥

राग झिंझोटी ।

तेरी खातर श्यामां वे मैं योगिन होइयां ॥ अंग अंग छाई श्यामां वे मैं मल मल रोइ प्रीत लगी तन वारी ॥ केधर जावां श्यामा वे मैं केन्हू आखाँ ॥ प्रीत लगी श्यामा दिल अंदर राखाँ ॥ बिरहों दी अग्नि करके मैं जारी ॥ तैंताँश्यामाँ मेरी सुधहूं न लीनी ॥ व्याकुल करकै वे मैं कमली कीनी ॥ चंद्रसखी बलिहारी ॥ ४४६ ॥

छैला मोको यमुना जान न देय नंद महर दा छूकरू ॥ बालूड़ा तोड़े मेरा चोलूड़ा फाड़े छैलावे मैकी हँस हँस गारियाँ देय॥चोलूड़ा फाड़े मेरा तालूड़ा तारे छैलावे सानूं हस्से गलाँदा केय ॥ जित

मिलदा तित करे मसूरताँ छैला वे साडा धिंगे लगाँदानेह ॥ कीकर बसना गोकुल नगरी छैलावे एहनूं कोई समझावोएह ॥ मयाराम असीं देखी देखी जीवना छैलावे साड़े मन तन बस रह्या एह ॥ ४४७ ॥

राग बिलावल ।

ऊधो इतनी कहियो जाय ॥ अति कृश गात भई हैं तुम बिन बहुत दुखारी गाय ॥ जल समूह वर्षत अँखियन ते हूंकत लैलै नाउँ ॥ जहाँ जहाँ गउ दोहन करते ढूंढत सोइ सोइ ठाउँ ॥ परत पछार खाय तेही छिन अति व्याकुल ह्वै दीन ॥ मानो सूर काढ डारी हैं बारि मध्य ते मीन ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

मेरी कौनगति ब्रजनाथ ॥ भजनविमुख अरु शरण नाहिन फिरत विषयनसाथ ॥ हौं पतित अपराध पूरण भरचो कामविकार ॥ काम कुटिल अरु लोभ चितवन नाथ तुमन बिसार ॥ उचित अपनी कृपा करहो तऊ जान्यो जाय ॥ सोऊ करहो जे चरण सेवे सूर जूँठन खाय ॥ ४४९ ॥

राग होरी ।

ऊंचो गोकुल गाम जहां हरि खेलत होरी ॥ चल सखि देखन जाहिं पिया अपने की जोरी ॥ बाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर भामिनि गोरी ॥ बूका सुरँग अँबीर उड़ावत भर भर झोरी ॥ इत गोपिन के झुंड उत हार हलधर जोरी ॥ नवल छबीले लाल तनी चोलीकी तोरी ॥ राधा चली रिसाय ढीठ सों खेले को री ॥ खेलत कैसो मान सुनो वृषभानु किशोरी ॥ सूर सखी उर लाय हँसत भुज गह झकझोरी ॥ ४५० ॥

राग सोरठ ।

प्रभु हो कबलौं नाचनचैहो॥अपने जनके निलज तमाशे कबलौं जगहिं दिखैहो ॥ कबलौं इन विमुखनके मुख सों निज गुण गणहिं लजैहो ॥ कबलौं जिनपै सतत हँसत यम तिनसों हमहिं हँसैहो ॥

छिन छिन बूडत जात पंक लख मोहिं कब चित्त द्रवैहो ॥ जन्म जन्म के निज हरिचंदहिं फिरिकै कब अपनैहो ॥ ४९१ ॥

कुंडलिया ।

प्राण पुत्र दोऊ बडे चारों युग परमान ॥ सो दशरथ नृप मरिहरचो वचन न दीनो जान ॥ वचन न दीनो जान बडेन की बूझ बडाई ॥ बात रहै सो काज और बरु सर्वस जाई ॥ कह गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ॥ वचन कहे नहिं तजे तजे निजसुत अरु प्राना ॥ ४९२ ॥

रही न रानी कैकयी अमर भई यह बात ॥ कौन पूर्वले पाप ते वन पठयो जग तात ॥ वन पठयो जग तात कंत सुरलोक सिधारचो । जिहिं सुत काजहिं मरचो राउ नहिं वदन निहारचो ॥ कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ॥ यश अपयश रहि गयो रही नहिं केकयि रानी ॥ ४९३ ॥

साईं वैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार ॥ बेटा वनिता पौंरिया यज्ञ करावन हार ॥ यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद आपको तपै रसोई ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं॥इन तेरह सों तरह दिये बनि आवै साईं ॥ ४९४ ॥

दौलत पाय न कीजिये सुपने में अभिमान ॥ चंचल जल दिन चार को ठाउँ न रहत निदान ॥ ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै ॥ मीठे वचन सुनाय विनय सभही की कीजै ॥ कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तोलत ॥ पाहुनि निशिदिन चार रहत सबहीके दौलत ॥ ४९५ ॥

गुणके गाहक सहस नर बिन गुण लहै नकोय ॥ जैसे कागा कोकिला शब्द सुने सभ कोय॥शब्द सुने सभ कोय कोकिला सबहिं सुहावन।।दोऊ एकै रंग काग सभ भये अपावन॥कह गिरिधरकविराय सुनो हो ठाकुर मन के॥बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुनके॥

चूके कबहुँ न चुगुल नर अरु चूके सभ कोय॥वरकंदाज कमानियाँ चूक उन्हींसे होय ॥ चूक उन्हींसे होय जे बांधें बरछी गुह्ला ॥ चूक

उन्होंसे होय पढ़ें पंडित अरु मुल्ला ॥ कह गिरिधर कविराय कला हूं ते नट चूके ॥ चुगुल चौकसीदार ससुर कबहूं नहिं चूके ॥ ४५७ ॥

नैनों की नोकें बुरी निकस जात जस तीर ॥ हेरे घाव न पाइये वेधा सकल शरीर ॥ वेधा सकल शरीर वैद क्या कर वैदाई ॥ करिहो कोटि उपाव घाव नहिं देत दिखाई ॥ कह गिरिधर कविराय विरहनी देतहै चोकें ॥ समझ बूझके चलो बुरी नैननकी नोकें ॥ ४५८ ॥

विना विचारे जो करै सो पाछे पछताय ॥ काम बिगारे आपना जग में होत हँसाय ॥ जग में होत हँसाय चित्त में चैन न आवै ॥ खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥ कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ॥ खटकत है जिय माहिं कियो जो विना विचारे ॥

बीती ताहि विसार दे आगेकी सुध लेहु ॥ जो बनिआवे सहजही ताहीमें चित देहु ॥ ताही में चित देहु बात जोई बनि आवै ॥ दुर्जन होय न कोय चित्त में खता न पावे ॥ कह गिरिधर कविराय यही कर मन परतीती ॥ आगे को सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ ४६० ॥

साईअपने चित्तकी भूल न कहियेकोय ॥ तबलग मनमें राखिये जबलग काज न होय ॥ जबलग काज न होय भूल कबहूं नहिं कहिये ॥ दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे हो रहिये ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरनके ताईं ॥ करतूती कहदेत आप कहिये नहिं साईं ॥ ४६१ ॥

साईं अगर उजार में जरत महा पछताय ॥ गुण गाहक कोऊ नहीं जाहि सुवास सुहाय ॥ जाहि सुवास सुहाय शून्य विन कोऊ नाहीं ॥ कै गीदर कै हरिण सोतो कछु जानत नाहीं ॥ कह गिरिधर कविराय बड़ा दुखयहीगुसाईं॥अगर आक की राखभई मिलएकैसाईं॥

षटपद ।

दया चट्ट होगई धर्म धँसि गयो धरनमें ॥ पुण्यगयो पाताल पाप भयो बरन बरन में ॥ राजा करे न न्याव प्रजाकी होत खुवारी ॥ घर घर भे बेपीर दुखित भये नर अरु नारी ॥ उलट दांन गज पति लहै शील संतोष कितैगयो ॥ वैताल कहै सुन विक्रम तौ अब कलियुग परगट भयो ॥ ४६३ ॥

कुंडलिया ।

कीच पीछले धोयके आगे नाहिं लगाव ॥ ऐसा तुझको फेर रे मिले न जलदी दाव ॥ मिले न जलदी दाव भनत गुरु सुने न बहरे॥ सर्व समग्री हुंदयां भूल्यो सिखर दुपहरे ॥ कह गिरिधर कविराय धँसो मत कर्दम बीच ॥ ऊंचे मारग चलो जहां फिर लगै न कीच ॥

रकम भुलाई बदबखत ऐसा भयो बेहोश ॥ हिसाब न समझे अकल में देत औरको दोश ॥ देत औरको दोश यहीतो बडी खराबी ॥ तकव्वर मदिरा पान कियो बनरह्यो शराबी ॥ कह गिरिधर कविराय धोखे चंदनके ल्यायो रकम ॥ घर में पेड मलयागिरि नाहिं पछाने रकम ॥ ४६५ ॥

झगडा तैंने पाइया तूही इसे निबेर ॥ औरन से निबडे नहीं यही अटपटो फेर ॥ यही अटपटो फेर तुही सुरझाये तो सुरझे ॥ और लगावे हाथ तो उलटो दूनोंउरझे ॥ कह गिरिधर कविराय भाँति का पटको पगडा ॥ अहंब्रह्म जप सदा तभी मिटिहै यह झगडा॥४६६॥

जंगल में मंगल तुझे जो तू होवे फकर ॥ खिदमत तेरी सभ करें जब दिलके छोडे मकर ॥ दिलके छोडे मकर फकीरी का रँग लागे ॥ मूल सहित संसार रोग सगरो भ्रम भागे ॥ कह गिरिधर कविराय कुफरके तोडे संगल ॥ जहँ इच्छा तहँ रहो नगर हो अथवा जंगल ॥ ४६७ ॥

कथा यथा शुकदेव की कहत सुनत भये पार ॥ शम दम आदि विराग बिन कर खावो रुजगार ॥ कर खावो रुजगार मोक्ष पद नाहीं पैये ॥ सुनी सुनाई बात कहूं साधू पद लहिये ॥ कह गिरिधर कविराय दुखावो काहे मत्था ॥ इक प्रत्यक बोध विहीन निरर्थक है सब कत्था ॥ ४६८ ॥

बेटा बेटी भार्या भाई सुत संसार ॥ पिता पितामह आदि जो सब शरीर के यार ॥ सब शरीरके यार नाहिं इनमें कोउ तेरा ॥ भयो तुझे परमाद जो बन रह्यो उनको चेरा ॥ कह गिरिधर कविराय सभन का झगड़ा मेटो ॥ ना तूं बाप किसीका तेरा कोइ न बेटो॥ ४६९ ॥

रोना तेरा तब मिटै जब होवे निष्काम ॥ सकल वासना नाश बिन होय न तुझे अराम ॥ होय न तुझे अराम समझ मन तू दिल अंतर ॥ काटे महा भुजंग पढें बिच्छूके मंतर ॥ कह गिरिधर कविराय अविद्याका तजो कोना ॥ आओ अपनी तरफ जहाँ फिर रहे न रोना

किरपा देह अध्यासकी अविद्याको प्रताप ॥ बेमुख भये सरूपते जपे अनातम जाप ॥ जपेअनातम जाप न सार असारविचारें ॥ लौकिकशब्द विचित्र परस्पर बैठ उचारें ॥ कह गिरिधर कविराय आपको मान्योसिरपा ॥ भयो मलिन संकल्प देह अध्यासकी किरपा॥४७१॥

कबित्त ।

पूंछ पूंछ वदन राखें पूँछनके केशनाखें मधुर मधुर बैन भाषें कहैं हम ज्ञानी हैं ॥ देहको असत्य कहैं विषयन में मन बहैं भोगन को चित्त चहैं यही तो हैरानी हैं ॥ जब आपको जाना तनु मिथ्या कर माना फेर चहैं खूब खाना तो जानिये तूफानी हैं ॥ शकल औलियाओं की काम शैतानों के जंबुककी चाल चलैं सिंह जैसी बानीहैं॥

सवैया ।

तिल तैलके संग लहे दुखको रस संगहिं ते जग ईख पेड़ाये ॥
फल संग ते पादप ईंट सहै अरु गंधके संग ते फूल तपाये ॥
करतंदुल संगति को जग में पुनि शीश विपे तुष मूशल खाये ॥
तिल ईख समं कर खोटन संगत या जग में दुख कौन नपाये॥४७३॥

जिनके रथ नेमि दरारन के सत सागर हैं अबलौं जग माहीं ॥
जिन चापन गोशनके बल ते सभ शैल बटोर धरे धर माहीं ॥
सुर राज डरे जिनके बलते यमराज जिते जिहिं ने जग माहीं ॥
मनते जग भीतर नाहिं रहे अब और रहे कहु को जग माहीं॥४७४॥

नादके लोभ तजे मृग प्राण सो बीन सुने अहि आप बँधाये ॥
मीन सो त्याग अगाध जलै उर लोभ जगे गल लोह पहाये ॥
कागज़ की पुतली करिनी वश मत्त गयंद सों अंकुशखाये ॥
या भुविमंडल माहिं सुनो उर लोभ करे दुख कौन न पाये ॥४७५॥

नभमें सुरलोक रचे हरजी अरु भूमि विषय निधि क्षीर बनाये
मणि हीरन की गिरि कूट रचे फल फूलनके वन कोटि उपाये ॥
सब लोकनको प्रभु पोषतहो सभभूख मिटे तुम में मनलाये ॥
बिन प्रेम कहा फल फूल दिये बिन ते पद पंकज की रज पाये॥४७६॥
वर कौन मँगों तुमते हरिजी थिर नाहिं रहे जग भीतर कोई ॥
नहिं राज रहे गज वाजि रहे तनुलौं मिटिजाय पिखों जग जोई ॥
बिन ते पद कंज लहे न कहूं सुख जो नर दूर फिरे तिहुँ लोई ॥
पद मंजुल जो सनकादि भजें तिनकी प्रभु सेव दिजे मम सोई॥४७७॥
विधि एक अनीति रची जग में शुभ संतनके तन पेट लगायो ॥
मुख चार न फेर विचार कियो तृण पल्लव नाहिं अहार बनायो ॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो तिनके घर भीतर भीख मँगायो ॥
मनके अनुसार रचे जग को विधि जानत हों नहिं सीख बनायो४७८॥
खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई ॥
कुल मोट मिला गढ़ तोप मिला पृथ्वीराज मिला सैना बहु पाई ॥
पुत्र मिला और पौत्र मिला बहु मित्र मिला दिन दिन अधिकाई ॥
गज वाजी मिला बहु ताजी मिला सबही सुख धूर समान कहाई४७९॥
प्रेम लग्यो परमेश्वर सों तब भूल गयो सगरो घर बारा ॥
ज्यों उन्मत्त फिरे जितही तित नेक रहे न शरीर सँभारा ॥
श्वास उसाँस उठे सभ रोम चले दृग नीर अखंडित धारा ॥
सुंदर कौन करे नवधा विधि छाक पर्यो रस पी मतवारा ॥४८०॥

कवित्त ।

नीर विन मीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसे पीरकी औषध विन कैसे रह्यो जात है ॥ चातक ज्यों स्वाति बूंद चंद को चकोर जैसे चंदनकी चाहकर सर्प अकुलातहै ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामी- नी को कंत चाहे ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहातहै ॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेमतहां नेम कैसे सुंदर कहत यह प्रेमहीकी बातहै४८१॥

कुंडलिया ।

वानी बहुत प्रकार है ताको नाहीं अंत ॥ जोई अपने काम की

सोइ सुने सिद्धांत ॥ सोइ सुने सिद्धांत संतजन गावत होई ॥ चित्त आन के ठौर सुने जो नित प्रति सोई ॥ यथा हंस पय पिये रहै ज्यों को त्यों पानी ॥ ऐसे लहे विचार शिष्य बहु विधि है बानी॥४८२॥

॥

जानु भुजा कटि केहरि के सम कंज प्रभा दृग हैं मदमाते ॥
कोटि सुरागण नाचत हैं अरु गंधर्व आय सभी पुर गाते ॥
भौन भँडार अपार भरे धन या विधि आप रचे सो विधाते ॥
यों विध याहि भई तो कहा जब जानकीनाथ के रंग न राते४८३॥
दश चार सो भवन रचे जिनके इक आहि बली भूमंडल माहीं ॥
जिनके दशचार सो भवन बली इक त्याग गये तृण ज्यों धरमाहीं ॥
दशचार सो भवन को भोगत है इक एकहिं राज करे जग माहीं ॥
दश बीस ग्रामको राज लहे नर क्यों गरबे अपने उर माहीं ॥४८४॥
धन ईश दियो जग भीतर जो बिन बुद्धि गयो न कछू फलपाये ॥
शुभ संतनकी नहिं सेव करी अरु विप्रन ते नहिं यज्ञ कराये ॥
नहिं कूप खने जल हेत कभी धर भीतर ना जल ताल बनाये ॥
बल हीनन को सुख दान दिये नहिं दीननको दुख दूर मिटाये ॥
अपने हित त्याग करे परको हित ते नर उत्तम हैं जग माहीं ॥
अपने हित संग करे परको नर आहि समान वही भव माहीं ॥
अपने हित नाश करे परको हित राक्षस हैं नर ते जग माहीं ॥
विनही अपने हित नाश करे पर को हित ते नर कौन कहाहीं४८६
जो सुख है सतसंगति में चतुरानन में सुख नेक नपायो ॥
सो सुख इंद्रके लोक नहीं अरु सो सुख शंभु के ध्यान न आयो ॥
सो सुख जाप न ताप किये अरु सो सुख योग न ज्ञान दृढ़ायो ॥
सो सुख है सत संगति में अविनाशी के रूप में जाय समायो ॥४८७॥

राग प्रभाती ।

आपे खेल खिलारी सतगुरु आपे लीला धारी है ॥ आसमान तैं तंबू बनाया जमीं गलीचा भारी है ॥ चंद्र सूर्य्य दोउ मिसल बनाये तेरी कुदरत न्यारी है ॥ राम नाम का चौपड़ मांड्या तू पाँसा जग

सारी है ॥ पाँसा चाहे तिसे जितावे सारी कौन विचारी है ॥ पंजो छिकयों नरद बचावें वाजी कठिन करारी है ॥ जिसकी नरद पक्की घर आवे सोइयो सुघड़ खिलारी है ॥ शृंगी जैसे वनमें लूटे शंकर नेजा धारी है ॥ बड़े बड़े हंकारी लूटे रैयत कौन विचारी है ॥ ज़िनको बल है सतगुरु पूरा तिनका जगत भिखारी है ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है ॥

धन धन केशवा कटत कलेशवा गावत शेश महेशवा रे ॥ गज के कारण धाये प्यादवा नाम धरायो हरि संगवा रे ॥ प्रह्लाद दास प्रह्लाद वाके कारण रघवाके भये अब बघवा रे ॥ ४८८ ॥

शब्द ।

रास फकीरी उन्हांदी थींदी बाग़ जिन्हांदा हरया ॥ अंद्रो शादी बाहरों बादी इशक नगारा धरया ॥ शूरा ठिल्ह बड़या बिच रणदे मौतों मूल न डरया ॥ हरगोविंद ओही शूरमां जो पंज जित घर बड़या

पंजे मेरे बीर प्यारे नाउँ पंजांदा छेया ॥ पंजे मैनूं एउं लगरहे ज्यों कमली नूं लेहा ॥ पंजे उठके करन तगादा इक्को पंजां जेहा ॥ हरगोविंद इक बस्य न हुंदा दोस पंजां नूं केहा ॥ ४८९ ॥

यह मन लोभी लालची आखे मूल न लग्गे ॥ कन्नीं सुणदा आंखी देखे वाणी मूल न लग्गे ॥ श्रीभागवत गीता पढ़दे देखे पौण डुलारे वग्गे ॥ हरगोविंद सभ रुढ़दे देखे काम लहर अग्गे४९०

श्वासो श्वासीं कर गुजारा तेरा साहिब भला करेसी ॥ छड तकब्बर ढेह पौ बूहे तेरी कदीं तां कूक सुनेसी ॥ सत संतोष न छड्डीं बंदे होनी होय सो होसी ॥ हरगोविंद उठ भजन करो प्रभु बिरद की लाज रखेसी ॥ ४९१ ॥

सवैया ।

नाहिं फले जग माहिं निशेश दिनेश फले जग में कहु काहीं ॥
पुण्य विना फल आहि कहा विधि लोक सो भूमि रसातल माहीं ॥
नाहिं सुरेश फले जग में सो महेश फले जगमें कहु काहीं ॥
और फले नहिं को जग में कृत पुण्य फले द्रुम ज्यों ऋतु माहीं४९२

इक देवहिं वंदत हों भुव में जोइ चातुर ते खल सेव कराये ॥
जग भिक्षुकको छिन एक भये महि मंडल राजको सूख भुगाये ॥
महि मंडल के पति को छिन एक दरही दर माहिं सो भीख मँगाये॥
भूमाहिं अगाध गती तिनकी सभ हार परे गति कोय न पाये ॥४९३॥
ढिग बैठ धनी नरके हरिजी निज प्राणन रोक सु बैन उचारे ॥
नहीं बैठ तपोवन में हरिजी फल खाय सदा तव नाम सँभारे ॥
धन पावन को निशि नींद तजी हरि पावन को नहिं नैन उघारे ॥
जग में शुभ काज बिसारत हों विधि कौन सुधा सुख पाऊं मुरारे ॥
तातको आयसु मान चले जिनके पद पंकज पूजत लोई ॥
राज विभूति तजी छिन में बनको निकसे जननी बहु रोई ॥
तौन फिरे पुर को हरजू जब भ्रात गहे कर में पद दोई ॥
धर्म बराबर राज नहीं यह सूचक राम सनातन जोई ॥ ४९५ ॥
रघु भूप दिलीप तजी क्षितिमें अरु जाय बसे सो तपोवन माहीं ॥
अज नाभिको नंदन त्याग विभूति गयो वनको न रमे पुर माहीं॥
महि मंडल राजको त्याग दियो पुर मंडल त्यागन में श्रम नाहीं॥
अब और न बात कहा कहिये रघुवीर विभूति तजी छिन माहीं४९६॥
जे चतुरानन के सुत चार गही न विभूति रमे हरि माहीं ॥
यद्यपि है हरि पूरण ते अबलौं रति है शुभ संतन माहीं ॥
शेष समीप सुने हरिको यश शंभु समीप सदा चल जाहीं ॥
होवत हैं गुण उत्तम नाश कुसंगतिते सनकादि डराहीं ॥ ४९७॥
शेशधरे धरनी शिर में अरु सूर फिरे सो सदा नभमाहीं ॥
धार गदा अबलों हरिजी बलि द्वार रहे सो पतालके माहीं ॥
वेरहलाहल लोक चरे दृढ़ शंकर नीठ धरे जग माहीं ॥
प्राणसमान धरे व्रत को दुख भूरि भये व्रत टारत नाहीं ॥ ४९८ ॥

कवित्त ।

एक ब्रह्म मुख सों बनाय कर कहतहै अंतःकरण तो विकारन सों भर्योहै ॥ जैसे ठग गोबरको कूपो भर राखत है सेर पंच घृत लेके ऊपर ज्यों कर्यो है ॥ जैसे कोई भांडे माहिं प्याज को छिपाय

राखे चीथरा कपूरको ले मुख बांधि धरचो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगत माहिं तिनको तो देख कर मेरो मन डरचोहै ॥४९९॥

देह सों ममत्व पुनि गेह सों ममत्व सुत दारा सों ममत्व मन माया में रहत है ॥ थिरता न लहै जैसे कंदुक चौगान माहिं कर्मन के वश मारचो धका को बहतहै॥अंतःकरण सदा जगत सों रच रह्यो मुख सों बनाय बात ब्रह्मकी कहत है ॥ सुंदर याहीते मोहिं अधिक अचंभो आहि भूमि पर परचो कोऊ चंद्रको गहत है॥ ५०० ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय फूल से झरत हैं अधिक मन भावने ॥ एकनके वचन तो असि मानो वरषत श्रवनके सुनत लगत अलखावने ॥ एकन के वचन कटुक कटु विष रूप करत मरत छेद दुख उपजावने ॥ सुंदर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम मध्यम अरु अधम सुहावने ॥ ५०१ ॥

प्रथम हिये विचार ढीम सों न दीजे डार ताहीते सु वचन सँभार कर बोलिये ॥ जाने न कुहेतहेत भावे तैसी कहे देत कहिये सो तब जब मन माहिं तोलिये ॥ सबहीको लागे दुख कोऊ नहीं पावे सुख बोलके वृथाही ताते छाती नहीं छोलिये ॥ सुंदर समझ कर कहिये नीकी बात तबहीतो वदन कपाट गृह खोलिये ॥ ५०२ ॥

और तो वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे तिनके तो बोलबे में ढंग हूं न एक है ॥ कोऊ रात दिवस बकत ही रहत ऐसे जैसी विधि कूपमें बकत मानो भेक है ॥ विविध प्रकार कर बोलत जगत सब घट घट प्रति मुख वचन अनेक है ॥ सुंदर कहत ताते वचन विचार लेहु वचन तो वही जामें पाइये विवेक है ॥ ५०३ ॥

वचन ते आन मिले वचन विरोध होय वचन ते राग बढै वचन ते दोष जू ॥ वचन ते ज्वाल उठै वचन शीतल होय वचन ते मुदित वचन ही ते रोष जू ॥ वचन ते प्यारो लगे वचन ते दूर भगे वचन ते मरजाय वचन ते पोष जू ॥ सुंदर कहत यह वचन को भेद ऐसो वचन ते बंध होत वचन ते मोष जू ॥ ५०४ ॥

देख तो विचार कर सुने तो विचार कर बोले तो विचार कर

करे तो विचार है ॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है ॥ बैठे तो विचार कर उठे तो विचार कर चले तो विचार कर सोई मतिसार है ॥ देय तो विचार कर लेय तो विचार कर सुंदर विचार कर याही निरधारहै ॥५०५॥

सवैया ।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजै ॥
अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजै ॥
वे मुख द्वार उचार करें कछु सो अनयास सुधारस पीजै ॥
सुंदर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तमछीजै ॥ ५०६ ॥

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूल सो संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सन्मान बडाई बिच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधि लोक कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारीहै ॥ वासना न कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी सुंदर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत औरहूं ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागत हूं सोवत हूं गावत हैं मेरे गुण करत भजन ध्यान दूसरो न काई है ॥ तिनके मैं पीछे लग्यो फिरतहों निशि दिन सुंदर कहत मेरी उनते बडाई है ॥ वेहैं मेरे प्रिय मैंहूं उनके अधीन सदा संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥ ५०८ ॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिखदेत समता सुबुद्धि देत कुमति हरतहैं ॥ मारग दिखाय देत भावहूं भगति देत प्रेमकी प्रतीत देत अभराभरतहैं ॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत ब्रह्मको बताय देत ब्रह्म में चरत हैं ॥ सुंदरकहत जग संत कछु लेत नहीं संतजन निशि दिन देवोही करत हैं ॥ ५०९ ॥

सवैया ।

प्रीत की रीत कछू नहिं राखत जाति न पाँति नहीं कुल गारो ॥

प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो ॥
लीन भयो हरिसों अभ्यंतर आठोंही याम रहे मतवारो ॥
सुंदर कोउक जानसके यह गोकुल गामको पैंडो ही न्यारो ॥८१०॥
है दिलमें दिलदार सही अँखियां उलटी कर ताहि चितैये ॥
आबमें खाकमें बादमें आतश जानमें सुंदर जानजनैये ॥
नूरमें नूरहै तेज में तेजहिं ज्योति में ज्योति मिले मिल जैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये ॥८११॥

कवित्त ।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत ताको तो न कोऊ कांटे खोबरे को दुख है ॥ भावै कोऊ निंदा करै भावै तो प्रशंसा करै वे तो देखे आरसी में अपनोहीमुखहै ॥ देहको व्योहार सभ मिथ्याकर जानतहै सुंदर कहत एक आत्माही रुखहै ॥

सवैया ।

सूरके तेजते सूरज दीसत चंद्रके तेजते चंद्र उजासी ॥
तारे के तेजते तारे हूं दीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥
दीपके तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥
तैसेही सुंदर आतम जानहुं आपके ज्ञान ते आप प्रकासी ॥८१३॥

कवित्त ।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत माया जल परसत वेगि बुझि जात है ॥ एक है मनन ज्ञान बिजली ज्यों धन मध्य माया जल बरषत तामें न बुझातहै ॥ एकनिदध्यासन ज्ञान बडवा अनल जैसे प्रगट समुद्र माहिं माया जल खात है ॥ अनुभव साक्षात ज्ञान प्रलैकी अगिनि सम सुंदर कहत द्वैत प्रपंच बिलात है८१४ ॥

भोजनकी बात सुन मनमें मुदित भयो मुखमें न परै जौलौं मेलिये न ग्रासहै ॥ सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कब जेंवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन

बैठो मुख में मेलत जाय यह निदध्यासहै ॥ भोजनपूरण कर तृपित भयो है जब सुंदर साक्षातकार अनुभव प्रकास है ॥ ५१५ ॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त एक ठौर आन मृग ज्यों सुनत नाद श्रवण सों कहिये ॥ जैसे स्वाति बूंद हूंको चातक रटत पुनि ऐसेही मनन करै कब बूंद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चंद्रमाको धरै ध्यान ऐसे जान निदध्यास दृढ़ कर गहिये ॥ यही अनुभव यही कहिये साक्षात्कार सुंदर पारे ते गल पानी होय रहिये॥५१६॥

काहूको पूछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठौर मनन करत भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड़्यो तेरे घर माँहि खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये ॥ धन निकस्योहै जब दारिद गयोहै तब सुंदर साक्षातकार नृपति बखानिये ॥५१७॥

सवैया ।

ऋषि नारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे ॥
बन भील सुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहिं उधारे ॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे ॥
अब औसर राम भजो मनरे दुख मेट तरो भवसागर पारे ॥ ५१८ ॥

भव हारकके चित नेम कहे यम है भव हारक और बखाने ॥
इक त्याग कहे इक दान कहे इक योग सो साधन के उर ठाने ॥
यज्ञ एक कहे तपसा परसाधन तीरथवास सो एक प्रमाने ॥
ब्रज है भवहारिक एक भने हमतो इक रामहिं नाम पछाने ॥५१९ ॥

जग मानव देह मिलै न सदा नर राम भजो जिहिंते सुख पावो ॥
जग भोग बराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गँवावो ॥
लरकापन जाठर में बल छीन सो यौबन में दृढ़ पुण्य कमावो ॥
शुभ सीख इहै जन मान चलो जिहिंते नहिं अंत समय पछतावो ॥
जग रूखन सूखन भोजन कै फल फूलन कै तनु पालन कीजे ॥
जग बैठ जहां तहँ ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजे ॥

तृण कोमल बीन बिछाय भले दृग नींद भरे घर माहिं सोईजे ॥
धूरत मूढ़ दियाकुल बैन सो भूपति के नाहिं पास बहीजै ॥ ८२१ ॥
शैल शिला तल सेज करे गिरि कंदर ही गृह है वन माहीं ॥
पादप छाल सो चीर धरे अरु मीत सखा मृग हैं वन माहीं ॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे गिरता गिरि माहीं ॥
पेट के हेत न सेव करे नर ते नर ईश गिने भव माहीं ॥ ८२२ ॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जंग वेदन गाई ॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई ॥
पद कंजन तासु पुनीतधरा रज पावन ते जन पाप मिटाई ॥
जो भूमंडल माहिं भजे छिन एक एकागर राम सहाई ॥ ८२३ ॥

कुंडलिया।

बादल दौरे जातहैं दौरत दीसत चंद ॥ देह संग ते आत्मा चलत कहै मतिमंद ॥ चलत कहै मतिमंद आत्मा अचल सदाही ॥ हलत चलत यह देह थापले आतम माहीं ॥ सुंदर चंचल बुद्धि समझ ताते नहिं बौरे ॥ दौरत दीसे चंद जात हैं बादल दौरे ॥ ८२४ ॥

सब कोऊ ऐसे कहैं काटत हैं हम काल ॥ काल नाश सब को करै बृद्ध तरुण अरु बाल ॥ बृद्ध तरुण अरु बाल शाल सबहिन को भारी ॥ देह आपको मान कहत हैं नर अरु नारी ॥ सुंदर आतम अमर देह मरिहै घर खोऊ ॥ काटत हैं हम काल कहत ऐसे सभ कोऊ॥

राग माली गौड।

हरि नाम ते सुख ऊपजे मन छांड आन उपायरे ॥ तनु कष्ट कर कर जो भ्रमे तो मरण दुःख न जायरे ॥ गुरु ज्ञानको विश्वास गह जिन भ्रमे दूजी ठौर रे ॥ योग यज्ञ कलेश तप व्रत नाम तुल्य न और रे ॥ सब संत यूंहीं कहत हैं श्रुति सुमृति ग्रंथ पुराण रे ॥ दास सुंदर नाम ते गति लहे पद निरवाण रे ॥ ८२६ ॥

राग मारू।

सोई जन रामको भावैहो ॥ कनक कामिनी परिहरै नहिं आप

बँधावे हो ॥ सबही सों निरवैरता काहू न दुखावैहो ॥ शीतल वाणी बोलके रस अमृत प्यावे हो ॥ कै तो मौन गहेरहे कै हरि गुण गावै हो ॥ अर्म कथा संसारकी सब दूर उडावे हो ॥ पांचो इंद्रिय वश करै मन मनहिं मिलावे हो ॥ काम क्रोध अरु लोभको खन खोद बहावै हो ॥ चौथापदको चीन्हके ता माहिं समावैहो ॥ सुंदर ऐसे साधके ढिग काल न आवैहो ॥ ८२७ ॥

राग बरवा ।

मानती ना प्यारी सखियां सब हारी हारी ॥ जब हरि वेष कियो युवतीको पहिन कुसुमरी सारी ॥ मुकुट उतार गुही शिर बेनी नख शिख मांग सवाँरी ॥ कुंडल त्याग तरोना पहिरे कंकण नूपुर वारी॥ काजर नैन कठिन कुच कंचुकि बेसर चूरी सवाँरी ॥ नखन महावर तिलक आडदे भये कपट नट नारी ॥ प्रण कर चले संग ललिता के मोहे देत हितकारी ॥ कृष्णदास आली करसों पकर लिये मिले कुंज पिय प्यारी ॥ ८२८ ॥

राग परज ।

रघुवर तेरोही दास कहाऊं ॥ तुमरोही नाम जपों निशि वासर तुम रेही गुण गाऊं ॥ तुमहीं मेरे प्राण जीवन धन तुम तजि अनत नजाऊं ॥ तुमरे चरण कमलको मधुकर रत्नहरी सुख पाऊं ॥८२९॥

राग भैरवी ।

डरदा डरदा अर्ज इक करदा ॥ सुन तैंनू दरियाउ मिहरदा ॥ तू लाडला दशरथ रघुवर दा ॥ कर बरदा मैंनू अपने घरदा ॥ रत्न हरि हुण केहा पड़दा ॥ ८३० ॥

राग होरी ।

मैंतो तुमसों होरी खेलों कान्ह सांवरे॥अबीर गुलाब भरेभर डारों यह मेरे मन चाव रे ॥ केसर रंग भिजोवों तोको भाग कहां अब जाव रे ॥ सब दिनकी अब कसर निकारों कहा करोगे रावरे ॥ रत्नहरी प्रभु या होरी में लाग्यो हमरो दाव रे ॥ ८३१ ॥

राग कालिंगड़ा ।

होरी नंद नंदन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ जाय यमुन जल भरने वाहीपै रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ लँगरवा बरजोरी बैयां जोगहे ॥ रतनहरी या ब्रजको बसिवो अब कैसे निबहे ॥९३२॥

राग केदार ।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खंभ हूं से निकस नरसिंह देह धारी है ॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका से धाये आली संकट बिडार गज दीन हितकारीहै ॥ सुदामा गरीबके मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चरण छुइ उभारी है ॥ विनती करों रामचंद्र सुनिये दशरथके नंद एते काज कियो प्रभु मेरे काज भारी है ॥९३३॥

कवित्त ।

गर्व ते सुलख जाय सूमता ते यश जाय कुलाल हूं ते कुल जाय योगजाय कुसंगते ॥ लाड़किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय भूख ते मरयादा जाय बुद्धिजाय भंगते ॥ कपटकिये मित्र जाय लोभ ते बड़ाई जाय मांग हूं ते मान जाय पाप जाय गंगते॥ नीति विना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय रजपूती जाय जब मुड़े जात जंग ते ॥

राग गौरी ।

कदम चढ़ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवणन जहिं तहिं ते उठ धैयां ॥ आवोरे सब सखा संगके कर पावो इक ठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाऊ से कहत हैं अब घरको बगदैयां ९३५॥

राग बिलावल ।

सखीरी मुझे आज मिले नँदलाल॥मोरमुकुट मकराकृत कुंडल गल वैजंती माल ॥ पीत वसन घनश्याम मनोहर घूंघरवाले बाल ॥ देख देख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल ॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥९३६॥

राग सोरठ ।

डगर में प्यारी आज मिले कहीं श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरंगी पीतांबर अभिराम ॥ नख शिख अमित आभरन मनोहर वंशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम ॥ लक्ष्मी नारायण दर्शन बिन तलफूं आठों याम ॥ ८३७ ॥

सवैया ।

लालहीं लालके लालही लोचन लालनके मुख लालही बीरा ॥
लाल बनी कछनी कटि लालके लालके शीश सुलालही चीरा ॥
लालही बाग बने अति सुंदर लाल खड़े यमुनाजुके तीरा ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी लालके कंठ विराजत हीरा ॥ ८३८ ॥
पीरो कुंडल पीरो नूपुर पीत पीतांबर ओढ़े ठाढ़ो ॥
पीत बनी कटि काछनियां अरु पीरो खोर बन्यो चहिं गाढ़ो ॥
पीरो मुकुट लालको सोहै पीरो खोर बन्यो पटुकाको ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी पीरो लकुट लियो हथ गाढ़ो ॥ ८३९ ॥
धौरे मोहन धौरे सोहन धौरे चंदन खोर विशाल ॥
धौरे कडे कर हाथन सोहैं धौरे सोहैं गल फूलनहार ॥
धौरा दधि बेंचन को निकसी रोकत मोहिं नंदको लाल ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी धौरी सोहे गल मोतियन माल ॥८४०॥
कारे मोहन कारे सोहन चल कालिंदी के तट आयो ॥
कालि कलिंदी कारी नागिन कारो नागन जाय जगायो ॥
कारे नाथ लियो छिन में जब शीशके ऊपर निरत करायो ॥
गोविंद प्रभुकी शोभा वरणी कारो नाथके नाथ कहायो ॥ ८४१ ॥

राग सोरठ ।

चल हरि तोहिं बुलावे श्रीराधे ॥ तोरे संग है प्रीत श्यामकी और त्रिया नहिं भावे ॥ राधा राधा करत रहत हैं खान पान नहिं भावे ॥ कृश तनु भयो वियोग तुम्हारे वंशी नाहिं बजावे ॥ सूर श्याम पै चलो सखीरी काहेको मिनत करावे ॥ ८४२ ॥

राग पीलो ।

प्यारी लाल तोरेरी आधीन ॥ सुन सजनी हम सांची बखानैं तुम जल हो वह मीन ॥ तोरे रस वश श्याम सुंदर मन जो वर चाहत दीन ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन होत मनावत लीन ॥

.. प्यारीलाल तोरे ललित गुण गाने ॥ सुन सजनी हम सांची बखाने चल सुन अपने काने ॥ जो तुम श्याम होवे वह श्यामा तो तुम वेदन जाने ॥ विठ्ठल विपुल विनोद विहारन वादही रूसा ठाने ॥

राग बरवा ।

लाडिली प्यारिये दर्शन देहु लाडिली प्यारिये ॥ ललिता कहै सुनिये प्यारी राधे मानले अर्ज हमारिये ॥ यहतो बातें तोहिं कौन सिखावे मान तजो मिलो कुंज विहारिये ॥ विठ्ठल विपिन विनोद विहारन श्रीवृषभानु दुलारिये ॥ ५४५ ॥

आपन चालिये महाराज लाला न कीजिये लाज ॥ मैंतो तिहारी आज्ञाकारिन कहा कहो ब्रजराज ॥ मोसी जो तुम कोटि पठावो प्यारी नहीं मानत आज ॥ सूरदास बड़जन जो कहगये आप काज महाकाज ॥ ५४६ ॥

राग विहाग ।

प्यारी नेक निरखो नवरंग लालहिं ॥ तोहिं पद पंकज तल रज वंदत तिलक बनावत भालहिं ॥ तेरे वर्ण वसन आभूषण उर चंपेकी मालहिं॥श्री विठ्ठल विपिन विनोद विहारन भुज भर वाहि विशालहिं ॥

राग सोरठ।

श्री राधे नामकी वलिहारी ॥ जाके नाम लिये दुख नाशैं सुखके हो अधिकारी ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक मुनिजन नर औ नारी ॥ हित आनंद पर कृपा कीजिये श्रीवृषभानु दुलारी ॥ ५४८ ॥

राग कान्हरो ।

श्रीराधे राधे राधे हो श्री राधे राधे राधे ॥ वृषभानु नंदनी जगत वंदनी अद्भुत रूप अगाधे ॥ जाको रूप जगतको मोहे सुख संपति

लिये साधे ॥ रूप रसिक चितवन में बस भयो प्राण पपीहा बाधे ॥

राग सोरठ ।

मैं न जाऊं हरी पास री सजनी मैं न जाऊं हरी पास ॥ श्याम रचै अब और त्रियन सँग हमसों भये उदास ॥ करोरी कपटी अब हम चीनो आगे था विश्वास ॥ सूरश्याम पै मैं न जाउँगी आली तोसम पठहैं पचास ॥ ५५० ॥

राग पीलो ।

चलरी नई कुंज बुलाई राधे ॥ तुम विन व्याकुल कुँवर कन्हाई कहा मानाजिया ठान रही अरु तुमसों चतुर न कोय ॥ छांडदेय निठुराई इतना कहा हमारा मानो नवनागर ब्रजबाल ॥ मनमोहन आधीन तिहारे बिहरो दे गल बाहिं कारण कौन रुसाई ॥ या सुन प्रीति किशोरी किशोरी उर बाढ़ी नंदलाल ॥ वेग उठी मिलि धाय पिया सों मदन खुशाल मनाई बहुत भांति समुझाई ॥ ५५१ ॥

राग बसंत ।

देखो देखो ब्रजबासिनके भाग ॥ मोहन सँग होरी खेलत फाग जाको निगम उचारें बारबार॥कछु कहि न सकें महिमा अपार॥ब्रह्मा-दिक जाको पावें न अंत ॥ सो ग्वारिन सँग खेलत बसंत ॥ एक कहैं मोरे बैठो आय ॥ एक कहै मुरली बजाय ॥ एक पीतांबर लेत छिनाय ॥ अद्भुत लीला लखी नजाय ॥ एक परस्पर करें बात ॥ एक माला गुंध ल्याई अनेक भांत ॥ एक बीड़ी विमल बनाय देत ॥ कर जूठे अपने हरिको देत॥एककहै चलो कुंज ओर॥जहाँ गुंजत कोकिल नचत मोर॥एक कहै कंधे उठाय॥परमानँद स्वामी रहे लुभाय५५२

नवल बसंत नवल श्रीवृंदावन नवलै फूले फूल ॥ नवलै कान्ह नवल सब गोपी नितंत एकै तूल ॥ नवल कुमकुमा केसर नवलै नवलै वसन अमोल ॥ नवल यमुना जल पल्लव शाखा नवल पवनकी झूल ॥ नई नई छींट लगी केसरकी मेटत मनको शूल ॥ नये नये बाजे बाजत श्रीभट कालिंदीके कूल ॥ ५५३ ॥

देखो वृंदावनके कैसे भाग जहाँ राधा माधो खेलत फाग ॥ कई कोटिक ब्रह्मादिक कई कोटि इंद्र कई कोटिक आदित्य कोटि चंद्र जाको ध्यान धरत मुनिरहेहैंहार ॥ ताकोसकल गोप मिल देत गार जाके मोर मुकुट माथे तिलक भाल ललित माल लोचन विशाल ॥ जाको शेश सहस मुख लहे न अंत ताको गुण गावत नारद बेअंत जाको अगम निगम ते अगम पुंज सो तो हाहा करत फिरत कुंज कुंज ॥ सूरदास मैं तुमरो दास कबहूं न पावों यमकी त्रास ॥५५४॥

ऐसो बालक खेले नंद द्वार तीन लोक जाके मुख मँझार ॥ कान कुंडल जाके पदम पाउँ वसुदेव पिता देवकी माउ कोटि भानु जाका दिव्य शरीर सोतो धेनु चरावे यमुना तीर ॥ जाको निगम कहतहैं नेत नेत सोतो गोपनके सँग हेरी देत पाउँ पताल जाका शिर अकास ताको जानतहै कोउ हरिको दास ॥ शिव सनकादिक करत सेव ब्रह्मादिक जाको लहैं न भेव कहत कबीर जाको गुण अपार ताको सुमर सुमर नर उतरे पार ॥ ५५५ ॥

राग सोरठ।

देखोरी या बेनी गूंथी नंदके कुमार ॥ कर कोमल फूलनके गजरे औ पहराये हार॥तू बड़भागिन भानुनंदनी वश किये कृष्ण मुरार॥ उठ बखतावर मिल चल अबहीं छिन छिन होत अबार ॥ ५५६ ॥

राग बिलावल।

मोहन छबीला मन भामदा सैयो मैनूं ॥ मृदु मुसकामदा चित ललचामदा नाहक जी तरसामदा ॥ तान नमानी ने घायल करयां मन विच फंदा पामदा ॥ दिल विच उपजी आतश विरहोंदी ब्रजनिधि सैन चलामदा ॥ ५५७ ॥

सवैया।

बलि बासव जीतबको मत राख भली विधि सों उन यज्ञ पढ़ी ॥ सन्मानके दान दिये द्विज देवन नेकहूं नाहिंन भौंह चढ़ी ॥

लकुटी पकडे हरि आये तहँ मही मांग लई करबेको मढ़ी ॥ तहँ बावन के कर अंगके संग सुखी लकडी बिन पात बढ़ी ॥ ५५८ ॥

राग झंझोटी ।

जादिन मन पंछी उड जैहै ॥ ता दिन तेरे तनु तरुवरके सबै पात झरि जैहै ॥ घरके कहे वेग ही काढो भूत भये कोउ खैहै ॥ जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैहै ॥ कहँ वह ताल कहाँ वह शोभा देखत धूर उडैहै ॥ भाई बंधु कुटुंब कबीला सुमर सुमर पछितैहै ॥ बिना गुपाल कोउ नहिं अपना यश कीरति रहजैहै ॥ सो तो सूर दुर्लभ देवनको सतसंगति में पैहै ॥ ५५९ ॥

राग बसंत ।

होये री त्यार वसंत खेलनको दशरथके सुतचार ॥ रामते लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारों राजकुमार ॥ पहरे पीत पीतांवर बस्तर तुरियनके असवार ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर केसर पडत फुहार ॥ घनियर गरजे वादर वरसे बिजलीकी चमकार ॥ या छबि निरख श्रीराम दूल्होकी अग्रदास बलिहार ॥ ५६० ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ चतुरनारि डारत तृण तोरी ॥ श्याम सरोज जलज सुंदर वर दुलहिनि तडित वरन तनु गोरी ॥ मंडप में दोउ ओर मनोहर गठत चूनरी पीतपिछोरी ॥ कनक कलश सज देत भाँवरी देख रूप शारद भइ बौरी ॥ व्याह समय शोभित वितान तर उपमा कौन कहै मति थोरी ॥ मनो मदन मंजुल मंडप तर छबि शृंगार शोभा इक ठौरी ॥ सतानंद वाशिष्ठ आदिदै वंश प्रशंस करैं दोउ ओरी ॥ गान निशान वेद धुन सुन सुन सुर मुनि वर्षत सुमन झकोरी ॥ नैननको फल लेत मुदित मन सखि अशीश दे ईश निहोरी॥तुलसिदास छबि देख मगन भये क्या वरणों रसना इक मोरी ॥

राग भैरवी ।

सुन मैया मेरी तू जननी यह मोहिं बहुत खिझावैं ॥ ग्वाल बाल लेये संगहि खेलूं खेलन मोहिं न पावैं ॥ गह गह बाहिं लेजातीहैं घर

को करसों तालबजावैं ॥ मोहिं कहैं घर नाचरे छोरा माखन तोहिं खिलावैं ॥ नाचों तो नवनीत न देवें पीत पछोरीलावैं ॥ कोऊ कछनी छीन लेत है मुरली कोउ चुरावैं ॥ भागजाउँ पाछे पड़ मोको पुनि गह कंठ लगावैं ॥ यह अनीति कैसे कर सहिये और ठौर उठजावैं ॥ भया राम सुन हँसी यशोदे झूठी चोरियां लावैं ॥ ९६२ ॥

राग कान्हरो ।

या मोहनके मैं रूप लुभानी ॥ हाटबाट मोहिं रोकत टोकत या रसियाकी म सार नजानी ॥ सुंदरवदन कमलदललोचन बांकी चितवन मंद मुसकानी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावें वंशी में गावें मीठीवानी॥तन मन धन गिरिधरपर वारूं चरणकमल मीरां लपटानी॥

राग होरी ।

होरीको छैल मोहिं ढूंढ़त डोलै अब कित्थे जाय छिपों मोरी दैया ॥ लाजभरी गारी वंशी में मेरो नाम लेले गावै कन्हैया ॥ सास सदा मेरे वैर पड़ी है ननद निगोरी करै लड़ैया ॥ कृष्ण जीवन लच्छी रामके प्रभु प्यारे फागन मास बड़ो दुखदैया ॥ ९६४ ॥

राग भैरवी ।

तू न भयो अपना रे लोभी मन ॥ यह संसार ओसको मोती जैसे रैनका सुपना ॥ जैसे आगको रोकत धूआं ज्यों दर्पण ढकना ॥ ऊधोदास दास यह गावे राम नाम जपना ॥ ९६५ ॥

राग गौरी ।

बांको छैल गुमानी मैया तेरो ॥ संग लिये लरिकनको डोले बोले अटपटी वानी ॥ वाट घाट दधि खोसही खावे और फोड़े जो मथानी ॥ दधि मेरो खायो घनेरो नायो भाजनको पछितानी ॥ आवे पौर दौर कर पकरों तू घर जाहि सयानी ॥ दामोदर घर दूध घनेरा नंद महरि मुसकानी ॥ ९६६ ॥

राग जंगला ।

मैंतो थारे दामन लगी जी गोपाल ॥ किरपा कीजो दर्शन दीजो सुध लीजो ततकाल ॥ गल वैजंती माल विराजे दर्शन भई छै निहाल। मीराके प्रभु गिरिधर नागर भक्तनके रछपाल ॥ ५६७ ॥

जिन पायो ऊधो प्रेमहूं से पायोरे ॥ बिना प्रेम कछु हाथ न आयोरे ॥ वस वस चंदना लगावे मधुसूदना कहो काह योग उस कूबरी कमायोरे ॥ तुम जो कहत ऊधो प्रेम तज योग लीजे प्रेम कौन घाट योग कौन बड़ो आयोरे ॥ सूरश्यामजीके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो तुम जो पठायो योग पानी में बहायोरे॥ ५६८॥

नेह जुरचो नँदनंदन सों अब कैसे लाज रहे मेरी सजनी ॥ यह अँखियां अब रह न सकत हैं देखे विना ब्रजराज री सजनी ॥ अटके नैन माधुरी मुसकन भूल गये सभ काजरी सजनी ॥ देह ग्रेहकी सुध विसरानी रहो गिरो भावे आज री सजनी ॥ लोक लाज कुल कान छूटगई लवा निरख ज्यों बाजरी सजनी ॥ मयाराम अब ओट न कोऊ ज्यों खग सिंधु जहाज री सजनी ॥ ५६९ ॥

राग विहाग ।

मैनूं अयानी संदेशा श्यामदा सुनो ब्रजनार भला ॥ योगकी पतियां पठाई मोपै रल मिल करोरी विचार ॥ ऐसी करी जैसी देखी न सुनीरी हम सँग नंदकुमार ॥ सूर श्याम विन तरफत निशि दिन जाने न निपट गवाँर ॥ ५७० ॥

राग जैजैवंती ।

वहुत तुम कहत सभ चलो या मात पै तात रस मत्त यशुमत्त रानी ॥ देख लई लच्छ कर पुत्रकी पच्छ कर अच्छ भर बात हमरी न मानी ॥ चलो सब वाम गृह काम तज ढूंढ़िये घेर कर पकर कुल छाँड कानी ॥ देहिंगी धाम सन्मान सों कान्हको बांध कर देहु भये नये दानी ॥ लेगये श्याम वन धाम

सब सखिनको झपट पट ओट वंशी बजानी ॥ निज मुख आपही बोल उठे बाजी कहूं बाजी कहे या दिशा बजत जानी ॥ ५७१ ॥

ग़ज़ल।

यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी ॥ झपट गह चट मेरी बैयां मरोरी ॥ गई दधि बेचबे मैं ब्रजकी खोरी ॥ कह्यो मुसकायके कहँ जात गोरी ॥ अचानक टार घूंघट पट कन्हाई ॥ लगायो कंठ मोतिन माल तोरी ॥ भरी शिरसे गगरिया धरणि पटकी ॥ बहुत हटकी न मानी एक मोरी ॥ कियो मोहिं बावरी चितवन मिलाके ॥ न जानूं कौनसी डारी ठगोरी ॥ महरि तैंने अनोखो पूत जायो ॥ फिरै वन वन करे माखन कि चोरी ॥ बसैंगी जायके कहिं अंत ठौरैं ॥ युगल चरणों में मैं करती निहोरी ॥ ५७२ ॥

राग देश।

चलोरी आली वंशीवट तीरैं ॥ रट लागी श्रीराधे राधे नागर नटवर श्याम शरीरैं॥कहूं लकुट कहुँ मुकुट पीत पट शिथिल अंग मन विरह अधीरैं ॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल मेटो मदनकी पीरैं ॥ ५७३ ॥

सवैया।

शैल कपीचर पार परे यहि भाँति सुन्यो हरिजी बल तोरा ॥
है मन चंचल वानर सों अरु शैल समान सो चित्त कठोरा ॥
नाहिं करी तपसा तुमरी बल औसर बैन सुनो प्रभु मोरा ॥
नाथ भले बलवान हुते मम दासकी बेर भयो बल थोरा ॥ ५७४ ॥
गह तंदुल ब्राह्मणके करसे तब आपदा ताकी दूर निवारी ॥
गज कंज दिये तब ग्राह कटे फल खायके भील सुता सों उधारी ॥
गल फूलन माल गही कुब्जा तब कूबरीकी कटि नाथ सवाँरी ॥
बिन मूल नकाम करो हरिजी जग लोगन की गति तैं उर धारी ॥
गुण थोरेहि ते प्रभु रीझ रहो वह भूल गई अब वानि तुम्हारी ॥
फल फूलन ते वन भील सुता मथुरा पुर में हरि कूबरी तारी ॥

गणिका गजराज उधार करे तब दयालु हुते सुमुकुंद मुरारी॥
अबकै करुणा हरि पीठ दई अरु कै फारचो कर कागज कारी ५७६
कब आवैंगे मम ऊपर ते दिन देह रटे मम गंग किनारे॥
सबही जगते पुनि शांत लहे मुख नाम सो शीश गंगोदक धारे॥
पुनि बैठ शिला तल में हरिकी पदवी दृग मेलके नीत चितारे॥
हरि ध्यान समय तनु मोहिं गिरे जल मात समान सो गंग सँभारे५७७
जा जलको विधि पाल करचो पुनि पावन बावन पाद पखारे॥
शंकर पावन हेर उरे पुनि शीश निरंतर सो जल धारे॥
भूप भगीरथ के तपसा पुनि जा जल सों कुल भूपति तारे॥
सो जल पावन मैं परसों सो पिवों उर में बड़भाग हमारे॥५७८॥
कुंचित हैं अलकां श्रुति ऊपर कुंडल हैं शुभ कानन माहीं॥
कुंडलके कच मेचक में लसिकै तड़िता घन मेचक जाहीं॥
बोल समय छबि पुंज तरंग कपोलन सागर ते निकसाहीं॥
नैन हरे मद कंजनके सम आननके शशि कोटिन नाहीं॥५७९॥
हरिके पद पंकज प्रेम करे न करे हरि बेमुख लोकन संगा॥
नाहिं आपन मान सो भूल चहे पुनि औरन को न करै मन भंगा॥
सभ और तजे जग अंग महा सो रहे हरि पूरण के रूप रंगा॥
इक ठौर अहार करै न सदा शुभ संत धरे व्रत नीर विहंगा॥५८०॥
हरि नाम भजे जग भीतर जो जननी सुत या विधि को उपजाये॥
अथवा जननी सुत सोई जने रण भीतर जो अरिके दल घाये॥
सिर लौं धन दान करे जग में शुभ कै जननी सुत योनि पजाये॥
इन तीन विना कृमिके सुत के हित योवन नाहिं अकाज गँवाये ५८१

ग़ज़ल।

नहीं हम वेदके वादी विरागी मन हमारा है॥ नहीं हम वेष के योगी हमारा पंथ न्यारा है॥ रहें हम सुन्न के मंडल जहां बहु

बेशुमारा है ॥ नहीं वहँ जाय हरयककी जहां हम जीव डारा है ॥ देखा दिल दूरबीनी से जहँ तहां पीव प्यारा है ॥ करैं हम एक की सेवा बली जिसका पसारा है ॥ ५८२ ॥

राग सारंग ध्रुपद ।

... बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारंग वही गाई है ॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुणनिधान एक तान जानबूझ चूकके बजाई है ॥ प्यारी जब गह्यो बीन चेत्यो तब गुण प्रवीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाईहै ॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल संतन सुखदाई है ॥ ५८३ ॥

ग़ज़ल ।

आशिक हुआहूं उसपै जो नज़रों से दूर है ॥ साया उसीका यह जग जो कुछ जहूर है ॥ जो है ख्याल वहम फहम सों परे सनम ॥ मुरशिदकी सैन बैन से हाजिर हजूर है ॥ औ साफ उसकी जात का क्योंकर करूं बयां ॥ क्या ताब है किसी में अकल क्या शऊर है ॥ घायल किया है मेरे तईं उसके इश्कने ॥ दिल जान उस सजन पै मेरा चूर चूर है ॥ यह काम आशकी का सुनो राम रूप से ॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूर है ॥ ५८४ ॥

राग प्रभाती ।

बन पड़े तो नेकी करना आखिर तो है मरना ॥ धन यौवन के जोर जुलुम में इतना नहीं उछलना ॥ कभी जाल में फँस जावेगो जस जंगलको हरना ॥ गनी गरीबनको हक ना हक इतना नहीं रगरना ॥ दोदिनकी हशमत है तेरी साहिब सों कछु डरना ॥ कुफल करें अधरमकी दौलत मिसल बांस का फलना ॥ अभी तुझे मालूम न पड़ता अंत पड़ेगा भरना ॥ जान बूझ टेढ़े रस्ते पर बंदे कदम न धरना ॥ देव देव कह राम राम भवसागर पार उतरना ५८५ ॥

कोई सफा न देखा दिल का यह सांचा बना झिलमिल का ॥ कोइ बिल्ली कोइ बकुला देखा पहिरे फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सों ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औरनके पिसबे में शूरमां पटतर लोढ़ा शिल का ॥ राम नाम में अजब आलसी जैसे मरा मंजिल का ॥ राम लगन विन जप तप झूठा झूठा तप का फजिल का ॥ क्या कहें गुरुदेव न पाया महरम आंखके तिल का ॥५८६॥

तेरी खाक फकीरी दिल सें चाह न छूटी ॥ मान बड़ाई जादिन भाई तादिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रस की लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी पूरी विपति महंती आई प्रीति राम से छूटी ॥ सेवा पूजा सभ ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिले नहीं वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ५८७॥

हरिसों लागा रहुरे भाई तोरी बनत बनत बनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोंड़ कपट चतुराई ॥ सेवा बंदगी और अधीनता सहज मिलें रघुराई ॥ दुनिया दौलत मालखजाना बनियां बैल चलाई ॥ एक बात मोहिं लाग अचंभव खोज खबर नहिंपाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नहिं कीना विरथा जन्म गँवाई ॥ ध्रुव प्रह्लाद नाम से तर गये तर गये सदन कसाई ॥ हरिकी सरवर कौन करैगो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सों राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पावँ नाहिं हलते दस बीस कोश नहिं चलते गिरहों कि गांठ नाहिं खुलती तू मनकी गुंडी खोल ॥ तेरा घोड़ा है बहु रंगी घोडेकी पांच बछेरी यह पांचों फिरें लुटेरी पांचों की बाग मरोर ॥ संसार काचकी बाजी तू किस पर होया राजी यह सकली सुपन समाजी तू तिस पर मन ना डोल ॥ तोहिं बहुत गुरू समुझावे तू फिर कर जन्म न पावे साँचा हरि चरणों चित लावे झूठे जग का नाता तोड़ ॥ ५८९ ॥

राग कालिंगड़ा ।

लाल तोहिं हौंहीं आज मनाऊं ॥ झीनी स्वर सों रट मुरली में राधे राधे गाऊं ॥ नटवर वेष बनाय आपनी भामिनि तुमहिं बनाऊं ॥ अलकन छिटक अंश अपने तब वेणी शीश गुथाऊं ॥ दे तव भाल अरुण बेंदी हौं केसर खोर लगाऊं ॥ तुम बैठो गह मौन मानिनी हौं बलि विनय सुनाऊं ॥ भ्रुकुटी तान विलोको तुम हौं ठोड़ी हाथ लगाऊं ॥ अंबर झटक मोर मुख बैठो हौं नच सन्मुख आऊं ॥ कुटिल बोल बोलो घूंघट ले हौं झुकि नैन मिलाऊं ॥ ललित किशोरी नवल वधू तुम हौं नव रसिक कहाऊं ॥ ५९० ॥

प्यारी हौं कैसे कर मान रचाऊं ॥ कैसे कर नैन तरेरौं तुमपै कैसेकर भौंहचढ़ाऊं ॥ कैसेकर बैन कुटिल निकसैमुख कैसे कर दीठ दुराऊं ॥ कैसेकर झटक नील पट कर सों हाहा तुमहिं खवाऊं ॥ कैसेकर विनय ललित मुख प्यारी इन श्रवणनहिं सुनाऊं ॥ ललित किशोरी श्रमित तुमहिं क्यों देख धीर उर लाऊं ॥ ५९१ ॥

राग सोरठ ।

पिया ते मैं क्यों कीनोमान ॥ मोहन आय झरोखा झांके मैं कीनो अभिमान ॥ लागी लगन गोपाल पिया तो छाँड दई कुल कान ॥ पुरुषोत्तम प्रभु आन मिलावो नातर तजूंगी प्रान ॥ ५९२ ॥

तुम सुनिये हो बलि राजा वसुधा काहूकी न भई ॥ सत-युग में हरणाकुश राजा चारो खूट मही ॥ अतिव प्रचंड महीपति राजा बाहूके सँग न गई ॥ त्रेता में रावण भयो राजा कंचन कोट मई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती लंकड़ी काहू न दई ॥ द्वापर में दुर्योधन राजा नौलख भीड़ सही ॥ सोरा योजन वाके छत्र झुलत रहे माटी गिधन लई ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों युगन सही ॥ कहत सूर वेई नर झूठे जिन यह अपनी कही ५९३ ॥

राम नाम इक सार और सब झूठो है संसारा ॥ रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहिं अधिक पियारा ॥ भाई बंधु अरु लोक कुटुँब सब मात पिता सुत दारा ॥ अंत समय कोइ काम न आवे देखो दृष्टिपसारा ॥ यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न वारंवारा ॥ ताको पाय वृथा क्यों खोवत भजत न एको वारा ॥ जगतसिंधु में आन फँस्योहै उठत भँवर भ्रम भारा ॥ युगल चरण की नौका कीजै उतर जाय भवपारा ॥ ८९४ ॥

राग प्रभाती ।

रामप्रताप न जाने पिता तू रामप्रताप नजाने ॥ राज पाय बौराने ॥ नरका शंखा मधु मधुकैटभ हरणाकुश बलवाने ॥ तिन तिनका तिनका कर तोरचो ऐसे शारँग पाने ॥ जाकी कृपा भई जग विजयी तासों वैर सो ठाने ॥ देखो नैन रैन कर सुपना सब तज भज भगवाने ॥ रोम रोम रम रह्यो रमापति वेद पुराण बखाने ॥ निशिदिन अज हर ध्यान धरतहैं तू कैसे रिस माने ॥ सह नहिं सकत त्रास भक्तनको भक्तन हाथ विकाने ॥ सब कल्यान ज्ञान कर देखो युगल चरण लपटाने ॥ ८९५ ॥

लावनी ।

कैसे करूं कछु कह नहिं आवत जिय दुख कैसो भारीहै ॥ कोई जाय रावल समझावो यह क्या वात विचारी है ॥ आठ मास दश गर्भ में राख्यो शरद गर्म ऋतु न्यारी है ॥ सो कैसे जननी विष प्यावे बाजी कठिन करारी है ॥ राम नाम उर सों नहिं छोड़त हठ कर कहत पुकारी है ॥ बार बार बहु विधि समुझायो विनती कर कर हारी है ॥ ८९६ ॥

हे माता मन सोच न कीजे राम नाम पद भारी है ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ तहँ आय निवारी है ॥ घट घट में जल

थल में व्यापक हरिकी लीला न्यारी है ॥ युगलदास प्रभुके चरणन पर बार बार बलिहारी है ॥ ५९७ ॥

राग सोरठ।

राखि लेहु भगवान अबकी राखि लेहु भगवान ॥ खंभ सों मोहिं बांध दीनो खड्ग लीनो तान ॥ करके यत्न अनेक हारो रही एक न आन ॥ अबतो कठिन कृपान ताने लियो चाहत प्रान ॥ मोहिं वेग उबार लीजे सुनिये कृपानिधान ॥ युगल चरण सनेह चाहत धरत तेरो ध्यान ॥ ५९८ ॥

ठुमरी।

लीजिये करुणानिधान वेग सुरत जनकी ॥ पाप पीन पुण्य क्षीण काय बाक मन मलीन दीन वित्तहीन चित्त आश न गुण गणकी ॥ काल कर्म गुण सुभाव सुखप्रद प्रभु पद विहाय भ्रमत भ्रमत पंथ अमित ऐसी रुचि मनकी ॥ स्वारथ हित द्वार द्वार बार बार कर पसार लाभ तिरस्कार हानि अशन हूं वसनकी ॥ जानत हूं प्रभु कृपाल भंजन भव फंद जाल शरणपाल बान प्रणत दीनता हरनकी ॥ काचो मन राचो नाहिं रावरे सनेह साँचो हरे कौन नाथ विन त्रिविध ताप तनकी ॥ द्रुपदसुता जानकी गजेंद्रको उबार पैज राखी प्रह्लाद तथा पंडुके सुतन की ॥ साँचेहूं झूठ रामदास नाम नाते नाथ कीजिये सम्हार लाज राखो निज पनकी ॥ ५९९ ॥

राग जंगला।

हरि विन को राखे पति मेरी ॥ अंधको अंध महा जो दुशासन आन सभा में घेरी ॥ भीषम द्रोण कर्ण से बैठे इनहूं नेक न हेरी ॥ अब मति भ्रष्ट भई सबहिनकी पकर लियो ज्यों चेरी ॥ एक विश्वास यही दृढ़ मेरे कृष्ण कृष्ण कह टेरी ॥ सूरदास प्रभु बसन बढ़ाये ह्वै गयो पर्वत ढेरी ॥ ६०० ॥

कोइ दमका इहां गुजारा रे तुम किस पर पाउँ पसारा रे ॥ इहां पलक झलक दा मेला है कुछ करले यह अब वेला है कोइ पल का

इहां नजारा रे ॥ इहां रात सराय का रहना है कछु स्थिर होय न बहना है उठ चलना सांझ सकारा रे ॥ ज्यों जल बीच बतासा है त्यों जग का सभी तमासा है यह अपनी आंख निहारा रे ॥ देखन में जोइ आवे है सभ खाक माहिं मिल जावेहै यह सभी कालको चारा रे ॥ दृष्ट मान सब नाशी है इस कालकी सभ पर फाँसी है इस काल सभनको मारा रे ॥ जिनके दर नौबत बाजे हैं वे तखत छोड़ कर भाजे हैं जिनके लशकर लाख हजारा रे ॥ कई पीर पिगंबर होएहैं इस काल ने सभी बिगोए हैं यह सभही ऊपर भारा रे ॥ कई गौस कुतुब सभ घेरे हैं इस काल ने सभी निबेरे हैं तू किन में कौन बिचारा रे ॥ यह मनुष देह कब पावे हैं यह वादही वाद गँवावे हैं क्यों अपना काज बिगारारे ॥ ६०१ ॥

सवैया ।

दीन मलीन दुखी अँग हीन विहंग पर्‌यो क्षिति छीन दुखारी ॥
राघव दीनदयाल कृपाल को देख दुखी करुणा भई भारी ॥
गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैन सरोजन में भरि बारी ॥
बारहिं बार सुधारत पंख जटायु की धूरि जटान सों झारी ॥ ६०२ ॥
वेद विरुद्ध महामुनि सिद्ध सशोक किये सुर लोक उजार्‌यो ।
और कहा कहूं सीय हरी तबहूं करुणानिधि कोप निवार्‌यो ॥
सेवक क्षोभ ते छाँडी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभाव तिहार्‌यो ।
तौलौं न दाप दलो दशकंधर जौलौं विभीषण लात न मार्‌यो६०३॥

कवित्त ।

नीर भरे नैन मुख बैन हूं न सके बोल है ना तन शुद्ध सुख ऐन लख आई है ॥ आली सभ बूझें हर्ष कारण तू कहे क्यों न चैन अति पाय अंग पुलकावलि छाई है ॥ बोली धर धीर बाग देखन द्वै कुँवर आये अंग अंग शोभा सभभांति सों सुहाई है॥श्याम गौर वय किशोर कैसे करि गाय कहूं बैन है अनैन नैन बैन नाहिं पाई है ॥ ६०४ ॥

रूठे क्यों न राजा वाते कछू नहीं काजा एक तूही महराजा और कौन को सराहिये ॥ रूठे क्यों न भाई वाते कछू न बसाई एक तूहीहै सहाई और कौन पास जाइये ॥ रूठे शत्रु मित्र उदासीन आठों याम एक रावरे चरणके नेहको निवाहिये ॥ संसार सब झूठा एक तूहीहै अनूठा सभ चूमेंगे अँगूठा प्रभु तू न रूठा चाहिये६०५॥

राग विहाग ।

अबकी राखि लेहु भगवान ॥ हम अनाथ बैठी द्रुम डरियां पारधी साध्यो बान ॥ ताके डर निकसन चाहतहों ऊपर रह्यो शचान ॥ दोऊ भांति दुख भयो कृपानिधि कौन उबारे प्रान ॥ सुमिरतही अहि डस्यो पारधी लाग्यो तीर शचान ॥ सूरदास गुण कहँ लग बरणों जैजै कृपानिधान ॥ ६०६ ॥

राग प्रभाती ।

उठ जाग घुराड़े मार नहीं ॥ यह सोण तेरे दरकार नहीं ॥ इक रोज जहानों जानाहै जा कबरे बिच्च समाना है तेरा गोशत कीड़े खाना है रख चेता मारग विसार नहीं ॥ तेरा साहा नेड़े आया है कछु चोली दाज रँगाया है की अपना आप बजाया है ऐ गाफल तैनूं सार नहीं ॥ तू सौंके उमर गँवाई है तेरी साइत नेड़े आई है तू चरखे तंद न पाई है क्या करसीं दाज तयार नहीं॥ तू जिस दिन योवन मत्ती सैं तेनाल हूरां दे रत्ती सैं हो गाफिल दुनिया सुत्ती सैं हुन वाहीं तेरी बहार नहीं ॥ तू मुड़ढों बहुत कुचज्जी सैं हर पूजा ते तू लज्जी सैं तू खाखा खाणे रज्जी सैं तैं कोलों कोण बेजार नहीं ॥ अज कल्ह तेरा मुकलावा नी क्यों सुत्ती हैं कर दावा नी अनडि-ठयां नाल मलावा नी यह भलके गर्म बजार नहीं ॥ तू एस जहानों जायेगी फिर कदम न एथे पायेगी यह योवन रूप बजायेगी तैं रहना बिच संसार नहीं ॥ बुल्लाशाह बिन कोई नाहीं एथे ओथे दोहीं सराईं संभल संभल कदम टिकाईं फिर आवन दूजी बार नहीं ६०७

राग होरी-भैरव ।

प्रातकाल नंदलाल खेलत हैं होरी ॥ आई आनंद भरी ब्रज की सब गोरी ॥ कंचन पिचकारी हाथ औ गुलाल झोरी ॥ शीश पाग लटक रही केसर रँग बोरी ॥ वल्लभ गोपाल निरख विहँसत मुख मोरी ॥ ६०८ ॥

राग भैरव ।

शोभा सदन वदन दोउ देखे ॥ आलस अंग अंग निशि जागे भरे विनोद अपार विशेखे ॥ भूषण वसन मणिन हारावलि ललित नैन काजर छबि रेखे ॥ रसिक खुशाल विलोकत या छबि राधावर सुखसार विशेखे ॥ ६०९ ॥

राग होरी-देश ।

वीर यह पीर न जाने री मोरी आंखिन मलत अबीर ॥ हटके ते आरोही अटकत भर पिचकारी ताने ॥ मुरझावत पट बूंद झपट हँस अतर कपोलन साने ॥ ललित किशोरी निपट हठीलो नट नँद को नहिं माने ॥ ६१० ॥

राग मालकौंस ।

आली दशरथसुत सुखदैना ॥ भरनैना देखो सो नैना ॥ सुरनर मुनिमनहरन वरनवर कोटिकाम सुंदर सुखमंदिर तन मन धन न्योछावर कीनो निरख सखिन मनचैना ॥ कमलनैन सुंदरकपोल अलकन झलकन कुंडल सुलोल मुसकानमंद सुखकंद चंद मुख मधुर मधुर वर बैना ॥ अंग अंग वारूं अनंग शिव धनुष भंग कर रंग आमन सिया अंग अंग रस रँग रंग मगे रत्नहरी सुख ऐना ॥ ६११ ॥

राग मलार ।

यह दोउ झूलत रंग हिंडोरें ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदनी चितवन में चित चोरें ॥ नान्ही नान्ही बूंदन पवन पुरवैया बरसत थोरें थोरें ॥ हरी हरी भूमि घटा झुक आई सरयू लेत हिलोरें ॥ हय

दल पैदल गज दल रथदल कोट बने चहुँओरें॥उपवन माहिं मधुर स्वर बोलें कोकिल मोर चकोरें ॥ रत्न जड़ितको बन्यो हिंडोरा रेशम लागी डोरें॥अरसपरस दोउ झूल झुलावें इक साँवर इक गोरें॥ वामें विमल सखी उरझानी अपनी अपनी ओरें ॥ तुलसिदास अनु-कूल जानके सियाजी हँसी मुख मोरें ॥ ६१२ ॥

राग प्रभाती ।

मैं विरागन श्याम दी लाल वे मेरा पीया बतला देयो ॥ इक अंधेरी कोठरी लाल वे जित्थे दीवा न बाती ॥ बाहोंफडके लै चले लालवे कोई संग न साथी॥ ऊंचा पीपल जाडला लालवे लागरां लैन हुलार ॥ कोठे चढ़के देखदी लाल वे प्यारा नजर न आवे ॥ दुलड़ी तिलड़ी चौलड़ी लाल वे गल प्रेम जंजीरी ॥ जा पुच्छो बुल्लेशाह नूं मुशकल बनी है फकीरी ॥ ६१३ ॥

शब्द ।

जिन्हां नूं शौक साईंदा लग्गा सभ कुछ शिर पर झलदे ॥ झक्ख झेडे बाय अंधेरी बांग पर्वत ना हलदे ॥ मुख विच रज्ज नंग विच कज्जन भुखवे हैं इस गल दे ॥ कहे ग्वार जिन्हां अखूखीं देख्या क्या कहे सुख पल दे ॥ ६१४ ॥

श्याम बिना ऊधो ऐसे भई मैं ज्यों मछली विन पानी ॥ पत्ती रेता पई तड़फूफां वैद किसे ना जानी ॥ कुंडी दरद फराकत वाली देही दरद रजानी ॥ महासिंह साडा जीवन ताहीं मिलसी सारँगपानी ॥ ६१५ ॥

माए नी मैं रहां कुआरी बांदी की सुख पाया ॥ सोना देके लाल व्याहज्या तांबा निक्कल आया ॥ खुल्ले केश गले विच मेरे जो लिख्या सो पाया ॥ मयाराम जदतों सातों बिछडे तदतों योग कमाया ॥ ६१६ ॥

माए नी सुन मेरिये माए आप पैयां शिर भारे ॥ लोक जानन हथ मेहँदी रँगुली लौहू भिन्ने हथ सारे ॥ मारां लत्त बुझावां बत्ती

अग लावां इस खारे शगनां वारे ॥ जिन्हांदे नाल मुहब्बत साडी लद्द चले बनजारे ॥ ६१७ ॥

माय नी सुन मेरीये माए की तदबीरां करिये ॥ योगन बनके न मिल्या सांवरा केहड़े पंथ नूं फड़िये ॥ जा तप करिये माधो वन में वहां सांवरा वरिये ॥ गयाराम साडा जीवन ताहीं जा यमुना डुब मरिये ॥ ६१८ ॥

जबकी श्यामां तैं बंशी बजाई तब मैं आइयां वन में ॥ सुन सुन तेरी मुरली दीयां घनघोरां ताकत रही न तन में ॥ रंग रँगीला छैल छबीला ठाकुर मेरा गौंआं चारे बन में ॥ उस दिन ते बलिहारी ऊधो जिस दिन ठाकुर जन्में ॥ ६१९ ॥

बाएनी तूं बग्ग सवेले छम छम वगदी जाईं ॥ जो कछु हाल असाडा देख्या प्यारे नूं आख सुनाईं ॥ साडी वलों तूं मिन्नत करके गल बिच पलड़ा पाईं ॥ सूरदास प्रभु रोंदी नूं छड गये एह गल आख सुनाईं ॥ ६२० ॥

शिर धर मटकी जानीयां लटकी ॥ श्याम मिल्या मैंनूं खिलदा॥ सांवल कोलों नैन छिपाये उस डेरा मल्या दिलदा ॥ सांवल मैंडा मैं सांवल दी फरक न रह्या विच तिलदा ॥ लख ग्वार पई झख मारे दिल दित्यां ते दिल मिलदा ॥ ६२१ ॥

राग जंगला ।

हटड़ी छोड़ चल्या बनजारा ॥ इस हटड़ी बिच मानक मोती कोइ विरला परखन हारा ॥ इस हटड़ी के नौ दरवाजे दशवां ठाकुरद्वारा ॥ निकल गई थंमी ढेह पया मंदर रल गया चिक्कड़ गारा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो झूठा जगत पसारा ॥ ६२२ ॥

राग कान्हरो ।

तन मन धन वारों सांवरी सूरत माधुरी मूरत कुंडल की झलक पर ॥ मुकुट लटक धरन रह्यो मतवारो रह्यो मतवारो ऐन सैन बैन नैन जग में उजियारो ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत मयाराम प्यारो ॥ ६२३ ॥

राग सोरठ ।

पढ़ो भैयारे कृष्ण गोविंद मुरार ॥ कह प्रह्लाद सुनोरे बालक लीजो जन्म सुधार ॥ को है हरनाकुश अभिमानी जो सकिहै तुम्हें मार ॥ राखन हार और है कोऊ श्याम धरे भुज चार ॥ पूरण पुरुष नरायण स्वामी सो करिहै रखवार ॥ सूरदास प्रभु हरि सों मीता कभूं न आवे हार ॥ ६२४ ॥

राग मालकोश ।

निपट बंकट छबि अटके मेरे नैना ॥ देखत रूप मदन मोहन को पियत पियूष न मटके ॥ बारिज भवां अलक टेढ़ी मनो अति सुगंध रस अटके ॥ टेढ़ो कटि टेढ़ी कर मुरली टेढ़ी पाग लर लटके ॥ मीरा प्रभुके रूप लुभानी गिरिधर नागर नटके ॥ ६२५ ॥

राग बसंत ।

खेलत विपिन बसंत लाडिले नेह भरे पिय प्यारी ॥ रत्न जड़ित सिंहासन बैठे मध्य फूली फुलवारी ॥ तन सुख केसर भीने बागे अनुरागे छबि धारी ॥ भूषन भूषित अंग अंग द्युति दमक चमक मन हारी ॥ ताल मृदंग उपंग बजावत गावत अलि सुख कारी ॥ रस सरिता ललितादिक निर्तत आनँद मगन महारी ॥ उड़त अबीर गुलाल लाल घन बन छबि छाय बिहारी ॥ निरखत लाल रूप हित दंपति प्राण संपदा वारी ॥ ६२६ ॥

कवित्त ।

गगनके मंडलमें चंद्रमा मसालची किये लाख तारे वाके दीपक दरबार हैं ॥ ब्रह्मा वजीर विष्णु कारदार शंकर दिवान जाके गणेश चोबदार हैं ॥ शील हूंकी लक्ष्मी सो सदा अंग संग रहे कुबेर जैसे भंडारी और इंद्र जमींदार हैं ॥ कहै अवधूत प्यारे समझके विचार देखो राजन पति राजा महाराजा करतार हैं ॥ ६२७ ॥

राग बसंत ।

फूली बनराई बेलरियां कोयल बोले अंब की डार ॥ भौंरा

सुभग गेरे सबको मन हरे देख कुंडलकी झलक गाल ॥ आभूषण अंग सोहे मोतिनके हार पोहे कंठसिरी मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी कुवँर नंद सुवन गाइनके पाछे पाछे धरत हैं लटकीली चाल ॥ ६३७ ॥

राग देश ।

चार बरन में सोई बड़ा जिन राधाकृष्ण रटा रटा ॥ काहेको जोड़े माल खजाने काहेको छावत ऊंची अटा ॥ जब यमकी तलबी आवेगी छोड़जाय सभ लटा पटा ॥ यह दम हीरा लाल अमोलक पल पल जाता घटा घटा ॥ वहां आया तू कौल करार कर यहां फिरता तू नटा नटा ॥ अपने कुटुंबको ऐसा देखे पलक उठाये पटा पटा ॥ जब तेरा हंसा चल्या जातहै छोड़ जाय तू राज पटा ॥ यह संसार मतलबका गरजी बातां करता झूठ मठा ॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि कानन कुंडल मुकुट जड़ा ॥ ६३८ ॥

राग होरी जंगला ।

कैसे होरी खेलों पिया संग दुविधा रार मचाय रही रे ॥ पांच पचीसों फाग रच्योहै ममता रंग बनाय रही रे ॥ नाचत लाज कर्म के आगे संशय भाव बताय रही रे ॥ करके शृंगार कुमति बैठी भर्मके घुंघुरू बजाय रही रे ॥ यह तीनों ताल मृदंग बजावें मैं मैं रागिनी छाय रही रे ॥ कपट कटोरा मधु विष भर भर तृष्णा मन को छकाय रही रे ॥ याहि जीव को वश कर अपने हंसको काग बनाय रही रे ॥ जान बूझके सुनो भाई साधो संत जनां ने पीठ दई रे ॥ दास कबीर कहैं कर जोरी हमरी तो ऐसीही बीत गई रे ॥ ६३९ ॥

चौबोला ।

कोइ हाल मस्त कोइ माल मस्त कोइ तूती मैना सूये में ॥ कोइ खानमस्त पहिरान मस्त कोइ राग रागिनी धूये में ॥ कोइ अमल मस्त कोइ रमल मस्त कोइ सतरँज चौपड़ जूये में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब गिरे अविद्या कूये में ॥ ६४० ॥

कोइ अकल मस्त कोइ शकल मस्त कोइ चंचलताई हासी में ॥
कोइ वेद मस्त कोइ तिब्ब मस्त कोइ मक्के में कोइ कासी में ॥
कोइ ग्राम मस्त कोइ धाम मस्त कोइ सेवक में कोइ दासी में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या फाँसी में॥६४१॥

कोइ पाट मस्त कोइ ठाठमस्त कोइ भैरव में कोइ काली में ॥
कोइ ग्रंथ मस्त कोइ पंथ मस्त कोइ श्वेत पीत रँग लाली में ॥
कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोइ पूरण में कोइ खाली में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब बँधे अविद्या जाली में ॥६४२॥

कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोइ वन पर्वत औजारा में ॥
कोइ जात मस्त कोइ पात मस्त कोइ तात भ्रात सुत दारा में ॥
कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त कोइ मसजिद ठाकुरद्वारा में ॥
इक खुद मस्ती बिन औ मस्त सब बहे अविद्या धारामें ॥ ६४३ ॥

कोइ राज मस्त गज वाजि मस्त कोइ छप्पर में कोइ फूले में ॥
कोइ युद्ध मस्त कोइ क्रुद्ध मस्त कोइ खड्ग कुठार बसूले में ॥
कोइ प्रेम मस्त कोइ नेम मस्त कोइ छींके में कोइ झूले में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब पड़े अविद्या चूले में ॥ ६४४ ॥

कोइ साक मस्त कोइ खाक मस्त कोइ खासे में कोइ मल मल में ॥
कोइ योगमस्त कोइ भोगमस्त कोइ स्थिति में कोइ चलचल में ॥
कोइ ऋद्धि मस्त कोइ सिद्धि मस्त कोइ लेन देन की गल गल में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥

कोइ ऊर्द्ध मस्त कोइ अधःमस्त कोइ बाहरमें कोइ अंतर में ॥
कोइ देश मस्त बीदेश मस्त कोइ ओषधि में कोइ मंतर में ॥
कोइ आप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जंतर में ॥६४६॥

कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में ॥
कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा मस्त कोइ तूँबे में कोइ लोटे में ॥
कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ असली में कोइ खोटे में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में ॥ ६४७ ॥

यह लौकिक मस्त कहां लौं वरणों है मायाके दंगल में ॥ कौन करै तिनकी गिनती सब जकड़े हैं दृढ़ संगल में ॥ छिनमें रुष्ट तुष्ट इक छिन में स्थिति सदा अमंगल में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सभ भूले अविद्या जंगल में ॥ ६४८ ॥

शब्द ।

तर तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या ॥ जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या ॥ खुदमस्ती कर मस्त तो मदिरा पान क्या ॥ किंचा जिनको देहअध्यास तो आतमज्ञान क्या ॥ ६४९ ॥

वीतरागको संसारकी लोड़ क्या ॥ तृणवत् जान्यो जगत तो लाख करोड़ क्या ॥ चाह रजू सों बँध्यो तो फेर मरोड़ क्या ॥ किंचा भ्रांति साथ विवाद तो फिर होड़ क्या ॥ ६५० ॥

तत्पद त्वंपद अर्थ भली विधि जानिये ॥ बाच्य लक्ष का भेद युगल पहिचानिये ॥ विरोधी अंश को त्याग अविरोधी मेलिये ॥ किंचा या विधि भव संसार युगत सों हेलिये ॥ ६५१ ॥

राग कान्हरा ।

होत सो जो रघुनाथ ठटी ॥ पच पच रहे सिद्ध अरु साधक मुनि तबहूं बधी न घटी ॥ योगी योग धरत मन अपने शिर पर राख जटी ॥ ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूं पै न घटी ॥ यती तपी तापस आराधे कोउ पुनि रहै पती ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन कर्म फांस न कटी ॥ ६५२ ॥

राग बिलावल ।

रे मन जन्म पदारथ जात ॥ बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरुवरके पात ॥ सुनत बात कफ कंठ विरोधी रसना टूटी बात ॥ प्राण लिये यम जात मूढ़ मति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत पीछे नरककी बात ॥ यह जग प्रीति सुआ सेमरको चाखत ही उड़ि जात ॥ यमके फंद नहीं पड़ बौरे चरणन चित्त लगात ॥ कहत सूर बिर्था यह देही अंतर क्यों इतरात ६५३॥

राग रामकली ।

अपनो आप मैंने जो बिसरचो ॥ जैसे श्वान कांच मंदिर में भ्रमि भ्रमि भूंकिमरचो ॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखके आपन कूपपरचो ॥ जैसे गज लख फटिक शिला में दशनन जाय अरचो ॥ मर्कट मूठ छांड नहिं दीनी घर घर भ्रमत फिरचो ॥ सूरदास नलिनीको सुअना कहु कौने पकरचो ॥ ६५४ ॥

राग भूपाली ।

विश्वपतीके ध्यानमें जिसने लगाईहो लगन ॥ क्यों नहो उसको शांती क्यों नहो उसका मन मगन ॥ काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महाबली ॥ इनके हननके वास्ते जितनाहो तुझसे कर यतन ॥ ऐसा बना सुभावको चित्तकी शान्तीसे तू ॥ पैदा न ईर्षाकी आंच दिल में करे कहीं जलन ॥ मित्रता सबसे मन में रख त्यागके वैर भावको ॥ छोड़दे टेढ़ी चालको ठीक कर अपना तू चलन ॥ जिससे अधिक न है कोई जिसने रचाहै यह जगत॥उसकाही रख तू आसरा उसकी ही तू पकड़ शरन ॥ छोड़के राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ॥ तुझपै दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ॥ जैसा किसीका हो अमल वैसाही पाता है वह फल ॥ दुष्टों को कष्ट मिल ताहै शिष्टों का होता दुखहरन ॥ आप दया स्वरूप हैं आपही का है आसरा ॥ किरपा दृष्टि कीजिये मुझपै हो वक्त जब कठिन ॥ मनमें हो मेरे चांदना मोक्ष का रस्तामिले ॥ मारके मन जो केवला इंद्रियों को करे दमन ॥ ६५५ ॥

अथ रागरत्नाकर की आरती ।

जय जगदीश हरे ॥ भक्त जनोंको संकट छिन में दूर करे ॥ जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का ॥ सुख संपति गृह आवे कष्ट मिटै तन का ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ॥ तुम बिन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अंतर्यामी ॥ पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकरता ॥ मैं मूरख खल कामी कृपा

करो भरता ॥ तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ॥ किस विधि मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ दीनबंधु दुखहरता ठाकुर तुम मेरे ॥ अपने हाथ उठावो द्वार परचो तेरे ॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा ॥ श्रद्धा भक्ति बढ़ावो संतनकी सेवा ॥ ६५६ ॥

जय सच्चिदानंद ॥ ॐ तत् सत् ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे चतुर्थ भाग संपूर्णम् ॥

इति

समाप्तोऽयंग्रंथः ।

छन्द ।

रामकृष्ण रस रसिक चकोरहु पियहु मधुर रस अमी अघाय ॥
जाते क्षुधा तृषा नहिं लागै कोह मोह रुज जाय नशाय ॥
पियतहि जगै भक्ति उर प्रभुकी कलिमल भगै लगै नहिं देर ॥
भवनिधि तरन उपाय अन्य जग यहि ते सुलभ न दूसर हेर ॥
कृत युग ध्यान यज्ञ त्रेता महँ द्वापर किये चरणकी सेव ॥
जो गति लहत जीव सो कलिमहँ प्रभु गुण गाय सहज महँ लेव ॥
रागनको भंडार ग्रंथ यह अति उदार लखि सज्जन वृंद ॥
पढैं सुनैं गावैं लवलावैं पावैं परम ब्रह्म आनंद ॥
बाल चरित्र कृष्ण रघुवरको लीला ललित लिखी यहि माहिं ॥
अहै गायकनको जीवन धन भगतन भगति सिंधु शक नाहिं ॥
मति अनुसार सुधारि यथा विधि रामकृष्ण पदरज लवलीन ॥
शोधन कियो वंदि कवि याकहँ जस कछु प्रभु उर प्रेरणकीन ॥
खेमराजकी विनय कान करि धरि उर ध्यान गुनहिं मतिमान ॥
भूल चूक लखि करहिं क्षमापन प्रभु गुण ग्रथित ग्रंथ यह जान ॥

आपका कृपाभिलाषी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालयाध्यक्ष—मुंबई.